

भोट-भारतीय ग्रन्थमाला-९

(57)

आचार्यकमलशीलप्रणीतः

## भावनाक्रमः

( भोटिय-संस्करण, संस्कृत उद्धार एवं हिन्दी अनुवाद )

ॐ । स्त्रोम दमोद गमय मीयस महेद मर मल्लोम मिस घेवा  
मघद मर मशुम मलुमस सो॥



भोट विद्या संस्थानम्

संस्कृत-पुनरुद्धारक, हिन्दी-अनुवादक एवं सम्पादक  
आ० जलछेन नमडोल

केन्द्रीय उच्च तिब्बती-शिक्षा-संस्थान, सारनाथ, वाराणसी

बुद्धाब्द-२५२९ • सन्-१९८५



BIBLIOTHECA-INDO-TIBETICA-IX  
BHĀVANĀKRAMAḤ  
OF  
ĀCĀRYA KAMALAŚĪLA

(Tibetan Version, Sanskrit Restoration and Hindi Translation)



RESTORED, TRANSLATED AND EDITED

BY

ĀCĀRYA GYALTSEN NAMDOL

CENTRAL INSTITUTE OF HIGHER TIBETAN STUDIES  
SARNATH, VARANASI

1985



भोट-भारती ग्रन्थमाला-९

प्रधान सम्पादक : भिक्षु समबोड् रिनपोछे

प्रथम संस्करण : ५०० प्रतियाँ

मूल्य : ( १ ) सजिल्द : रु०

( २ ) अजिल्द : रु०

सर्वाधिकार सुरक्षित

१९८५

प्रकाशक :

केन्द्रीय उच्च तिब्बती-शिक्षा-संस्थान  
सारनाथ, वाराणसी

---

मुद्रक : शिवम् प्रिंटर्स, मलदहिया वाराणसी-२  
भोटभाषा का कम्पोज-सुशील प्रिंटिंग प्रेस, सारनाथ



ཞི་དཀར་ཆག

(༡) དབར་སྐྱུན་པའི་ཆེད་བཞིན།- སློབ་སློ་ཟམ་གདོང་རིན་པོ་ཆེ།

༡-བོད་སྐད།	”	”	༡-ཨ
༢-ནིན་དྲི།	”	”	༡-ཅ

(ཁ) སློན་སླང་།

༡-བོད་སྐད།			༡-ང
༢-ནིན་དྲི།			ཅ-ང

(ག) སླང་བཞིན།

༡-བོད་སྐད།			༡-༡༣༠
༢-ནིན་དྲི།			༡༣༡-༡༣༡

(ང) གཞུང་དངོས་གཞི།

(༡) བོད་སྐད།			
༡-བསྐྱོམ་རིམ་དང་བོ།			༡-༡༢
༢-བསྐྱོམ་རིམ་བར་བ།			༡༢-༡༧
༣-བསྐྱོམ་རིམ་ཐ་མ།			༡༧-༡༩



## (༡) ལེགས་སྦྱར།

༡- བསྐྱོམ་རིམ་དང་བོ།

༡༩༧-༢༠༠

༢- བསྐྱོམ་རིམ་བར་བ།

༢༠༡-༢༢༢

༣- བསྐྱོམ་རིམ་ཐ་མ།

༢༢༣-༢༤༤

## (༢) ཉིན་དེ།

༡- བསྐྱོམ་རིམ་དང་བོ།

༢༤༧-༢༧༠

༢- བསྐྱོམ་རིམ་བར་བ།

༢༧༡-༢༩༢

༣- བསྐྱོམ་རིམ་ཐ་མ།

༢༩༣-༣༡༤

## (༣) ཁ་སྐོང་ལྟན་ཐབས།

(༡) ཞི་རྒྱལ་གཉིས་ཀྱི་དཀའ་གནད་རྒྱལ་བའི་དགོངས་པ་བཞིན་བཤད་བ།

༡- བོད་སྐད།

༣༡༧-༣༣༨

༢- ཉིན་དེ།

༣༣༩-༣༦༠

(༢) ཞི་གནས་ཀྱི་དབེ་རིས།

༣༦༡-༣༨༢

(༣) འཕགས་བོད་སྐད་གཉིས་ཆོག་མཇོད།

༣༨༣-༣༠༤

(༤) ལུང་འདྲེན་ལེན་ལུལ་གྱི་མདོ་སྟེའི་མཚན་བྱང་།

༡- བོད་སྐད།

༣༠༥-༣༢༦

༢- ལེགས་སྦྱར།

༣༢༧-༣༤༨



## विषयानुक्रमणी

प्रकाशकीय	भिक्षु समदोड् रितपोछे	पृष्ठ सं०
1. तिब्बती	" " "	1-4
2. हिन्दी	" " "	5-6
प्राक्कथन		
1. तिब्बती		क-ड
2. हिन्दी		च-ज
भूमिका		1-142
1. तिब्बती		1-130
2. हिन्दी		131-142
मूलग्रन्थ ( तीन भाषाओं में )		1-314
I भोट भाषा		1-164
1. प्रथम भावनाक्रम		1-72
2. द्वितीय भावनाक्रम		73-118
3. तृतीय भावनाक्रम		119-164
II संस्कृत भाषा		165-244
1. प्रथम भावनाक्रम		165-200
2. द्वितीय भावनाक्रम		201-222
3. तृतीय भावनाक्रम		223-244
III हिन्दी भाषा		245-314
1. प्रथम भावनाक्रम		245-274
2. द्वितीय भावनाक्रम		275-294
3. तृतीय भावनाक्रम		295-314



## परिशिष्ट

शमथ-विषयनादुःस्थल-जिनाभिप्राय-अविपरोतभाष्यम्	315-376
I तिब्बती      "      "      "	315-322
II हिन्दी      "      "      "	223-326
III शमथ-भावना-विधि : चित्र के रूप में	327-330
IV भोट-संस्कृत-शब्दकोश	331-370
उद्धृत ग्रन्थों की सूची	
V तिब्बती      "	371-374
VI संस्कृत      "	375-376



ཞོ་དབར་སྐྱོན་པའི་ཆེད་བཞིན།

༡། སྐྱོབ་དཔོན་ཆེན་པོ་བསྐྱེད་ངང་ཚུལ་མཆོག་ནི། བོད་ཡུངས་སུ་  
 གྲུལ་བསྐྱོན་ཁྲབ་སྤེལ་དག་ཐེར་གྱི་མཛད་རྒྱུས་ཐོག་མཁན་ཆེན་ཞི་བ་འཕྲོ་དང་།  
 སྐྱོབ་དཔོན་བསྐྱེད་འབྱུང་གནས་སོགས་དང་འཕྲིན་ལས་ཀྱི་བཀའ་དྲིན་མཉམ་བ་ལྟ་  
 བྱར་ཡོད་པས། བོད་རིགས་སྤེལ་འབྱོར་ཡོངས་ཀྱིས་ཁོང་གི་བཀྲིན་ནམ་ཡང་  
 བཞིན་ཐབས་མེད། བོད་དུ་ཐོག་བ་གསུམ་དང་རྒྱུད་སྤེལ་བཞིན་བསྐྱེད་པའི་གྲུལ་  
 པའི་བསྐྱོན་བ་ཡོངས་སུ་རྒྱུགས་ཤིང་། འབྲུལ་པའི་དྲི་མ་དང་བྲུལ་བ། སྐྱོན་  
 རྒྱུད་ཀྱི་མན་ངག་དང་བཅས་བ་དར་གྱིས་ཁྲབ་སྤེལ་ཆད་ལྷན་བྱུང་བ་འདི་ནི་ཞི་འཕྲོ་  
 དཔོན་སྐྱོབ་གྱི་མཁའ་མཆོག་ཐེ་ཐབས་མཁས་ཀྱི་མཛད་བྱས་ཉག་གཅིག་གི་བཀའ་དྲིན་  
 ལས་བྱུང་བ་ལས། ལེགས་དུ་ན་གངས་ཡུངས་ཀྱི་བསྐྱོན་བའང་ཡུལ་གྱི་ལེགས་  
 ལྷར་སྤྱོད་པ་རེ་བའས། འདྲིས་བསྐྱེད་ཅན་ཞིག་དུ་གྱུར་བ་གདོན་མི་ཟ།

མཁན་ཆེན་ཞི་བ་འཕྲོ་སྐྱེ་ཆེ་སྤྲད་ཀྱི་དགྲུང་གྲངས་མང་པོ་བོད་དུ་གདན་  
 བཞུགས་ཀྱིས་འོ་གྲུལ་ལ་མ་དགོངས་པར་གྲུལ་བསྐྱོན་ཁྲབ་སྤེལ་གྱི་མཛད་བཟང་གྱི་  
 ཆེར་བསྐྱེད་ནའང་། བསྐྱོན་བཅོས་ཁག་བོད་ཡུལ་དུ་བཞུགས་རིང་ལྷགས་ཅོམ་  
 མཛད་པའི་ལོ་རྒྱུས་མི་སྤྲང་། བསྐྱེད་ངང་ཚུལ་མཆོག་གི་གསུང་ཅོམ་ནམས་ཀྱི་  
 ཉང་ནས་སྤེལ་དུ་བྱུང་བ་བསྐྱོན་རིམ་གསུམ་བོད་ཡུལ་རང་དུ་སྐབས་དེའི་ལོག་པར་  
 སྤེལ་བ་ནམས་ཀྱི་ལོག་དོག་དང་། གཤུལ་བྱའི་ཁམས་མོས་དབང་བོ་དང་འཕྲོ་མས་  
 བར་ལྷགས་ཅོམ་གནང་བས། ཆོག་སྤྱོར་ཡང་རང་ཉིད་ཀྱི་བསྐྱོན་བཅོས་ལེགས་དང་



མི་འདྲ་བར་གོ་བདེ་ཞིང་འཇུག་སྒྲ་བར་ཡོད་ཅིང་། འདི་ནི་རྒྱ་གར་གྱི་མཁས་  
 བས་བོད་ལུལ་དུ་ཡེགས་སྒྲར་གྱི་བཟུན་བཅོས་རྩོམ་པའི་ཐོག་མ་ཉིད་དུ་མངོན།  
 དེ་ལྟ་བུས་ན་བསྐྱོམ་རིམ་གསུམ་པོ་འདི་ནི་བཟོད་བྱའི་ཟབ་ཁུད་དང་། ལུང་  
 རིགས་མཐའ་བཙན་པའི་སྒྲ་ནས་ཁུད་བར་དུ་འཕགས་པ་ཙམ་དུ་མ་ཟད། བོད་  
 ཀྱི་སྐྱེ་རྒྱུ་སེམས་ཚོར་དང་འབྲེལ་ལམ་གྱི་དུ་ཆེ་བའི་གཞུང་ལུགས་ཞིག་ཡིན་པ་  
 བས། གནའ་དུས་སུ་བོད་ལྗོངས་མཐའ་དབུས་ཀྱི་གཙུག་ལག་ཁང་པལ་ཆེར་  
 འདི་ཡི་དཔེ་རྒྱན་རྒྱ་ཁུད་དུ་བཞུགས་པ་དང་། འཆད་ཉན་ཀྱང་དར་ཞིང་། བོད་  
 ཀྱི་གཞུང་ཆེན་པལ་ཆེར། འདིའི་ལུང་ཁྲངས་མ་དངས་པ་མེད་པ་ལྟ་བུར་ཡོད་ཀྱང་།  
 རིམ་བས་དུས་ཀྱི་འགྱུར་བས་བོད་ནང་ཡེགས་སྒྲར་གྱི་འཆད་ཉན་ཇི་ཉམས་སུ་ཕྱིན་  
 པ་དང་ཆབས་ཅིག་གཞུང་ལུགས་འདི་རིགས་ཀྱི་འཆད་ཉན་དང་། བ་ན་སྐྱེགས་  
 བས་ཚུན་རིམ་བརྒྱགས་ཀྱིས་དེད་དུས་མ་ཕྱི་ཙམ་ཡང་མི་རྒྱེད་པའི་གནས་སྐབས་པ་  
 འདི་འདྲ་བུང་ཞིང་། རུབ་སྒྲིང་ཨི་ཏེ་ཡིའི་མཁས་དབང་ཏུ་ཅིས་འབད་བཙོན་  
 ཐབས་འཛོལ་གྱི་འབྲས་བུར། བོད་ནས་བསྐྱོམ་རིམ་དང་བོ་དང་། ཅུ་སྐྱེ་ནས་  
 བསྐྱོམ་རིམ་ཐ་མའི་རྒྱ་དཔེ་ལག་གིས་རྒྱུང་སྤོང་དག་རྒྱེད་པ་དབུ་ཞབས་ཀྱི་ཤོག་པ་  
 བུ་རེ་རྒྱང་མ་ཆང་ཡང་། འཕྲོས་ཇི་རྒྱེད་བོད་དཔེ་དང་བསྐྱུར་ནས་དག་ཞུས་ཐག་  
 རོ་མན་ཡིག་གཞུགས་སུ་དཔར་འབྲེམས་མཛད་འདུག་ཅུང་། བསྐྱོམ་རིམ་བར་  
 པ་མ་ཆང་བ་དང་། ཡིག་གཞུགས་ཀྱང་ནམ་པ་གཞན་དུ་གནས་པ་བཙས་ལ་བརྟེན།  
 ཕྱོགས་འདིའི་དོན་གཉེར་ཅན་ནམས་ལ་པན་རྒྱབས་རྒྱང་བར་མཐོང་ཞིང་། སློབ་  
 དཔོན་བསྐྱའི་ངང་རྩལ་གྱི་བཀའ་དྲིན་རིམ་སུ་བྱན་པའི་སྒྲོས་ཉེ་བར་བསྐྱལ་དེ།



བསྐྱེམ་རིམ་གསུམ་ཀ་ལེགས་སྤྱར་གྱི་སྐད་དུ་ཚང་བ་བཟོ་གྱུ་དང་། ཉིན་  
 སྐད་དུ་བསྐྱར་གྱུ་བཅས་འདི་གའི་སློབ་གཉེར་ཁང་གི་ལེགས་སྤྱར་གཞུང་ལུགས་...  
 བསྐྱར་གསོའི་ལས་རིམ་ནང་གལ་འགངས་ཆེ་བྱས་སུ་ཅིས་ཏེ། ཚུལ་བ་ལ་  
 ཞུགས་པ་ན། ཁོ་བོའི་བཅེ་བའི་སློབ་མ་ཆོ་དང་ལྷན་བ་བྱལ་མཚན་ནས་གྲོལ་  
 གྱིས་གསུང་བཤུ་གྱི་བཅེན་བ་མི་འདོར་བས་བསྐྱེམ་རིམ་གསུམ་ཀ་འདི་བོད་སྐད་དང་།  
 ཐོག་མཐའི་ལེགས་སྤྱར་ལ་ཞུས་དག། བསྐྱེམ་རིམ་བར་བ་ལེགས་སྤྱར་དུ་བསྐྱར་  
 གསོ། གསུམ་ཀ་ཉིན་རྒྱུ་སྐད་དུ་སྤྱོད་བཅས་ཀྱི་བྱེད་སྒོ་ནམས་སྤྲོ་ཆོས་སུ་  
 མ་སོང་བར་ནན་དན་བྱས་པའི་ཁར། ལུང་ཁྲུངས་འཚོལ་ཞིབ་དང་། མཚན་བྱ།  
 ཆོག་མཛོད་སོགས་དེང་རབས་དང་མཐུན་པའི་ཞུ་ཆེན་གྱི་བྱ་བ་ནམས་ཡང་དག་...  
 བར་བྱས་པ་འདི་ཉ་ཅང་སློ་ཁ་ཆོསས་པའི་གནས་སུ་གྱུར་བ་མ་ཟད། དག་ཞུས་  
 དང་ཚུམ་བསྐྱར་གྱི་ལས་དོན་འདིར་ངས་ཀྱི་ལས་གྲོགས་བཅིང་ཀླུ་ཤར་ལྷན་པོ་གསུང་  
 ལལ་བ་ལྟར་ལེན་གྱིས་ཐོག་མཐའ་བར་གསུམ་དུ་མཐུན་འགྱུར་གྲོགས་དན་ཚད་...  
 མེད་གནང་བར་ཡང་ལེགས་གསོའི་བསྐྱེམས་བཅོམ་ཡོད། འདིའི་སྒོན་སྒྲིང་གྱིས་  
 བཤད་སོགས་སུ་སྐབས་འགར་ཆོག་འགྲོས་དང་། དོན་གནད་རེ་རྒྱུ་ཁོ་བོའི་  
 འདོད་ཚུལ་དང་མི་མཐུན་བའང་འདུག་མོད། རང་སློབས་ཀྱིས་དབྱེད་མཐར་ཆེད་  
 བའི་འདོད་ཚུལ་སྐྱབ་བྱེད་དང་ལྷན་བར་བསམ་སྟེ། དགག་སྐྱབ་བཅོས་བསྐྱར་གྱི་  
 ལལ་བ་མ་བྱས་པར་རང་སོར་བཞག།

ཐབས་ཤེས་ཡོད་ཀྱི་བྱས་ཅང་། འཕུལ་བར་གྱི་སྤྱོད་བ་སློ་ཁ་ཆོས་བ་ཞིག་  
 བྱང་མི་འདུག་ཀྱང་། མཐུན་ཀྱིན་དེ་རྒྱག་འགྱུར་རེ་མི་འདུག་གཤིས། གང་



བྱང་དེ་ཉིད་ལ་ཚོག་ཤེས་པར་བྱ་བྱ་ཉིད་དགོ་པར་བསམ་དེ་སྒྲུབ་བརྒྱུངས།

དཔར་འགྲེམས་འདིས་དོན་གཉིས་ཅན་ནམས་ལ་མཁོ་ཕན་གང་འཚམས་.....  
ཡོང་རེ་དང་བཅས་ཚལ་འདིར་འབད་བ་ལས་བྱང་བའི་ནམ་དཀར་དགོ་ཚོགས་ཀྱི་..  
ཐུང་བོ་ཅི་མཆིས་མཁའ་ཁྱབ་སྒྲེ་འགྲོར་སྒྲན་བའི་རྒྱར་བཟོ་ཏེ།      སྒྲོབ་དཔོན་  
ཆེན་པོ་བརྒྱའི་ངང་ཚལ་གྱི་བཞེད་དགོངས་ཡོངས་སུ་ཆོགས་པར་སྒྲན་བའ་.....  
མཚམས་སྒྲོར་དང་བཅས་ཤུག་ཉི་དགོ་སྒྲོང་ཟམ་གདོང་བ་སྒྲོ་བཟང་བརྒྱན་འཛིན་དུ་  
འབོད་བས་ཕྱི་ལོ་ ༡༩༥༣ གྲོ་བ་ ༧ ཚེས་ ༢༡ ལ་བྱིས།



## प्रकाशकीय

भोटदेश में बुद्धशासन के प्रचार-प्रसार कार्य में आचार्य कमलशील का योग-दान आचार्य शान्तरक्षित और पद्मसंभव के समकक्ष ही रहा है। इनकी कृपा और ऋण का भोट-वासियों के वंशज कभी भी विस्मृत नहीं कर सकते। त्रियान एवं चतुस्तन्त्रों में निबद्ध श्रुतिपरम्परा सहित समस्त बौद्धवाङ्मय सर्वांगतः भोटदेश में विकसित करने का श्रेय आचार्यपाद शान्तरक्षित एवं आचार्य कमलशील के उपाय-कौशल्य को जाता है। अन्यथा वहाँ पर भी बुद्धशासन एकांगी या दूषित ही रह जाता।

आचार्य शान्तरक्षित ने अपने जीवन के अन्तिम अनेक वर्ष भोट देश में बुद्धशासन के प्रसार में अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुये बिताये, परन्तु उन्होंने अपने किसी महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ की रचना भोटभूमि में बैठ कर नहीं की। उनकी समस्त रचनाएँ भोटदेश में उनके पहुँचने के पूर्व ही सम्भवतः सम्पूर्ण हो चुकी थीं। आचार्य कमलशील ने अपनी प्रमुख रचना “भावना-क्रम” को भोटभूमि में ही बैठ कर वहाँ के विनेयजनों की पात्रता एवं क्षमता को देखते हुये लिखी और यथासंभव अपने प्रौढ़ पाण्डित्यमयी श्लिष्टशैली से हटकर भाषा की सरलता पर भी ध्यान दिया जिससे इनके अन्य ग्रन्थों की भाषा की तुलना में यहाँ अधिक सुगमता दिखाई देती है। यह किसी भारतीय आचार्य के द्वारा, भोटदेश में रहकर लिखा गया प्रथम संस्कृत-ग्रन्थ है। इस आचार्य ने अपना सारा जीवन भोटवासियों के लिये न्योछावर कर दिया था, अतः यह ग्रन्थ भोटवासियों के लिये न केवल अपने गम्भीर विषय के कारण महत्त्वपूर्ण है, अपितु इससे सभी विनेयजनों की भावना भी जुड़ी हुई है।

कालान्तर में भोटदेश में भी इस ग्रन्थ के साक्षात् पठन-पाठन का क्रमशः ह्रास हुआ, यद्यपि इसके उद्धरण अधिकांश भोटविद्वानों की रचनाओं में मिलते हैं और इसके मूल विषय “शमथ-विषयना” की भावना के अध्ययन-अध्यापन की परम्परा आज भी पूर्ण रूप से जीवित है। इसके मूलसंस्कृत की पाण्डुलिपियाँ कुछ समय तक सर्वत्र भोट-विहारों में उपलब्ध थीं, परन्तु संस्कृतज्ञों की कमी के साथ-साथ ये ग्रन्थ भी क्रमशः दुर्लभ या अनुपलब्ध होने लगे। फलतः “भावना-क्रम” के प्रथम एवं तृतीय क्रमों को छोड़कर द्वितीय भावनाक्रम वर्तमान में अनुपलब्ध ही रहा। स्व० प्रोफेसर जी० दूची ने सतत परिश्रम करके भोट देश से प्रथम भावनाक्रम तथा



रूस से तृतीय भावनाक्रम का मूल लाकर रोमन लिपि में प्रकाशित किया, किन्तु इसके "द्वितीय भावनाक्रम" का न रहना और शेष का देवनागरी लिपि में न होना भारतीय विद्वानों एवं जिज्ञासुओं के लिये विशेष असुविधा का कारण बनता रहा। आचार्य कमलशील के प्रति कृतज्ञता से प्रेरित होकर इस संस्थान ने भावनाक्रम-द्वितीय का भोटभाषान्तर से पुनरुद्धार, तीनों भावना-क्रमों का देवनागरी लिपि में सम्पादन तथा हिन्दो-अनुवाद कार्य को संस्थान की शोधयोजना में प्राथमिकता दी। मेरे प्रिय शिष्य आयुष्मान् जलछेन नमडोल ने पूरे मनोयोग से इस कार्य में अपने को समर्पित करके मेरी आशाओं के अनुसार कार्य सम्पन्न किया, जिससे मैं सन्तोष का अनुभव कर रहा हूँ। भोट-भाषा में जो विस्तृत भूमिका लिखी गयी है, उनमें उनके कुछ प्रतिपाद्यों से मेरा कदाचित् वैमत्य भी है, तथापि उनके परिश्रम एवं दृष्टिकोण का सम्मान करते हुये मैंने परिवर्तन की चेष्टा नहीं की। संभव है उनकी ही मान्यता अधिक संगत हो।

मेरे निकट सहयोगी प्रो० डा० कामेश्वरनाथ मिश्र ने निरन्तर परिश्रम से इस कार्य में योगदान करके इसे सफल बनाया है। वह अनेक साधुवाद के पात्र हैं।

यथासंभव चेष्टा करने पर भी मुद्रण-व्यवस्था से मैं सम्पूर्ण-रूप से सन्तुष्ट नहीं हो पाया हूँ, जिसका कोई निराकरण संभव न होने से जैसा है उसी से सन्तुष्ट रहने में कल्याण समझता हूँ। आशा है, इस प्रकाशन से सुधीजन को बौद्ध भावना-विधि के अध्ययन में सहायता मिलेगी। इस कार्य से प्राप्त समस्त पुण्य की सम्पूर्ण जगत् के कल्याण के लिये परिणामना करता हूँ, जिससे आचार्य कमलशील की मनःकामना सिद्ध हो सके।

बुद्धाब्द—२५२९

सन्—१९८५

स० रिनपोछे

( प्राचार्य/निदेशक )



[illegible]



མཚུངས་སྒྲིམ་མཚིས་པ་སྐྱབས་རྗེ་ཟམ་གདོང་རིན་པོ་ཆེ་མཆོག་ནས་གཡ་འགངས་  
 ཅི་ཆེར་ཅིས་དེ། ལས་དན་འདིའི་ཐོག་ཐུགས་འགན་ཀྱང་བཞེས་ཀྱི་སྒོ་ནས་ཕབ་  
 བརྒྱུར་ཅོམ་བསྐྱབས་སོགས་ཀྱི་ལས་འགྲུལ་གོ་སྐབས་གསར་འཛུགས་དང་འབྲེལ་  
 གཞིགས་དོག་ལམ་སྟོན་གྱི་ཆེ་གནང་བའི་བཀའ་དྲིན་ལ་བརྟེན་ནས། ད་ལམ་གོང་  
 གསལ་དམིགས་ཡུལ་ལ་སྒྲན་པའི་ཆ་ཀྱིན་མཆོན་ཕྱིན་ཅམ་དུ། བོད་གངས་ཅན་གྱི་  
 རྒྱུངས་སུ་དངོས་སུ་ཞབས་ཀྱིས་བཅག་པ། འཕའ་ཡུལ་གྱི་སློབ་དཔོན་གསེར་གྱི་  
 རི་བོ་ཆར་དུ་དངར་བ་ལྟ་བུ་རྗེ་སྟེན་ཅིག་བྱོན་པའི་ནང་ནས། མཁྱེན་རབ་ནམ་དཔྱིད་  
 ཀྱི་གཤོག་ཅལ་རབ་དུ་རྗོགས་པའི་མཁས་མཆོག་ཀམལ་གྱི་ལ་སྟེ་བསྐྱའི་ངང་ཚུལ་  
 དེ་ཉིད་ཀྱི་གསུང་གི་མཛད་པའི་ཐུག་རྗེས་ཀྱི་སྦྱིས་བཟང་། ཡུལ་གསུང་བདུད་  
 ཅིའི་དགོངས་དོན་ནམས་རྗེ་ལྟར་བསྐྱོམ་ཞིང་རྒྱུད་ལ་སྟེ་བའི་རིམ་པ་རབ་དུ་གསལ་  
 ཞིང་མད་དུ་བྱུང་བའི་ཐབས་བཟང་པོ་དཔུ་མའི་བསྐྱོམ་རིམ་ཐོག་མཐའ་བར་གསུམ་  
 ཞེས་ཡོངས་སུ་གྲགས་པ་དེ་ཉིད་ཀྱི་ཅ་བའི་མ་སྟེ་ལེགས་སྒྱར་གྱི་དཔེ་མ་ཆང་བ་  
 ནམས་ཉམས་གསོ་ཕབ་བརྒྱུར་དང་འབྲེལ་ཁ་བསྐྱང་གུངས་ཆང་བཟོ་བྱ་དང་།  
 བསྐྱོམ་རིམ་གསུམ་ཀ་ཉིན་སྐད་ཐོག་ཕབ་བརྒྱུར་བྱས་དེ། དེང་དུས་ཀྱི་ལམ་སྟེལ་  
 དང་མཐུན་པའི་དཔེ་དབ་དབར་སྒྲན་ཏུ་རྒྱུའི་གོ་སྐབས་ཐོབ་ཐུབ་པ་འདི་ནི་དགའ་  
 སྟོ་སྟེ་གཞིའི་རང་བཞིན་དུ་གྱུར།

འོན་ཀྱང་གཞི་ཅ་ངོས་རང་ལེགས་སྒྱར་གྱི་སྐད་ཡིག་སོགས་ལ་གོམས་.....  
 འདྲིས་དང་སྦྱངས་པ་དམན་པའི་དབང་གིས་གཡ་ཆེད་ལས་དོན་འདི་དག་རང་.....  
 ལྟུངས་རང་དབང་གི་སྒོ་ནས་ཕྱིན་ཏུས་གདན་ནས་མ་མཚིས་ཀྱང་། མཐོ་རིམ་  
 གཞུག་ལག་སློབ་གཉེར་ཁང་གི་སྐབས་ཆེད་དཔུ་འབྱིད་བཀྱིན་གཞུག་དུ་མ་མཚིས་



བ་སྐྱབས་ཆེ་ཟམ་གདོང་རིན་པོ་ཆེ་མཆོག་དང་། ལེགས་སྦྲར་སློབ་དཔོན་ཆེན་པོ་  
 བཞིན་ཀུམ་ལྷན་ལྷན་གྱི་སྐོག་ནས་ལས་དོན་འདིའི་མགོ་མཛུགས་བར་གསུམ་ཆོང་  
 མར་གཟིགས་དྲི་ལམ་ལྟོན་ཆོད་མེད་གནང་བ་ལ་བཀྲིན་རྗེས་དྲན་དང་འབྲེལ་སྦྱོང་  
 ཐག་བ་ནས་ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ཞུ་གྱུ་དང་། ལས་དོན་འདི་དག་གི་ཐོག་ལ་རང་གི་འབྲེན་  
 ཐང་ལ་གཞིགས་པའི་དོགས་པ་ཟབ་ནན་ཅི་ཆེ་བྱེད་ཁུལ་ལགས་ཀྱང་། མི་ཤེས་  
 རྒྱུངས་པའི་དབང་གིས་འགལ་འཁྲུལ་ཞོངས་པའི་ཚོགས་མཆིས་སོ་ཅོག་སྤྱ་.....  
 ཞིང་མཛོངས་ལ་རྒྱ་ཆེ་བའི་ནམ་དཔྱོད་དང་ལྷན་པའི་མཆུན་ལྷན་ནམས་ལ་བཟོད་.....  
 གསོལ་ཞུ་གྱུ་བཅས་ཕྱི་ལོ་ ༡༩༥༥ ཕྱི་ཟླ་ ༡ ཚེས་ ༢༡ ལྟེན་པ་ཡང་དག་པར་  
 རྒྱུགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་བཞུགས་པའི་ཆོས་འཁོར་བསྐྱོར་བའི་གནས་ཁུད་པར་ཅན་  
 བྱུང་ཆེན་པོ། ཏུས་ཆོས་ཁུད་པར་ཅན་གོང་སྐུང་ཟླ་བ་ ༦ ཚེས་ ༧ ལ་རྒྱུགས་  
 པར་བྱས་སོ། །

སངས་རྒྱས་འདས་ལོ། ༣༥༣༩  
 བཅུ་ལོ། ༣༧༧༣

ལྷ་ཅན་གྱིས་མཆོན་ནས་གྲོལ།  
 (ཕུ་ཁ་མཐོ་སློབ།)







## प्राक्कथन

हिमाच्छादित भोट देश में बुद्धवचन की विशालभूत विद्याराशि भोट-भाषा में सुरक्षित है। इसके अन्तर्गत सूत्र एवं तन्त्र ग्रन्थ भी सम्मिलित है। उनकी अनेक टीकाएँ हैं, जिनका प्रणयन भारतीय आचार्यों द्वारा हुआ है। प्राचीन भोट राजा, मन्त्री, लोचवा ( महान् अनुवादक ) और भारतीय पण्डितों के सम्मिलित प्रयास से इस विपुल ज्ञानराशि का भोट अर्थात् तिब्बती भाषा में अनुवाद, संशोधन तथा संरक्षण आदि महत्त्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हुए हैं। भोटदेशीय विद्वानों ने भी अपनी भाषा में इनकी अनेक टीकाएँ प्रस्तुत की हैं। बुद्धवचनस्वरूप यह अनुपम सम्पदा और उससे सम्बन्धित शास्त्र बहुमूल्य रत्न की भाँति भोटवासियों को अपने भाग्य से प्राप्त हुए हैं तथा उन्होंने प्राणप्रण से इनकी सुरक्षा भी की है। इस क्षेत्र में इस प्रकार के उदाहरण सम्पूर्ण विश्व में अनुपलब्ध हैं और भोट देश में अतीत में विद्या के क्षेत्र में सम्पन्न हुआ यह कार्य अपने में अनुपम है।

बौद्ध वाङ्मय अखिल जगत् के कल्याणार्थ एक बहुमूल्य एवं प्रेरणाप्रद सम्पत्ति-स्वरूप है। अतः इसके श्रवण, चिन्तन तथा मनन के द्वारा पुनः इस अध्ययन-परम्परा को विकसित करते हुए इसे संरक्षण एवं संवर्धन प्राप्त कराना हमारा पुनीत कर्तव्य है। इस क्रम में यह विशेष उल्लेखनीय है कि भोट भाषा में इसके ऐसे अनेक भाग तथा अंश सुरक्षित हैं, जिनका मूल लुप्तप्राय है और उन लुप्तांशों का पुनरुद्धार करके इस परम्परा तथा वाङ्मय को विश्व के समक्ष अवश्य प्रस्तुत करना चाहिए, जिससे जिज्ञासु इसके अध्ययन में प्रवृत्त हो सकें। इसी महत्त्वपूर्ण उद्देश्य की पूर्ति-हेतु परमपावन दलाई लामा जी एवं स्वर्गीय प्रधान मन्त्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू के सत्परामर्श के फलस्वरूप इस 'केन्द्रीय उच्च तिब्बती-शिक्षा-संस्थान' की स्थापना हुई थी।

अतः इस संस्थान की व्यापक योजनाओं में से एक अन्यतम कार्य है उन बुद्ध-वचनों तथा उन पर आधारित शास्त्रों का पुनरुद्धार तथा अनुवाद प्रस्तुत करना, जिनके मूल संस्कृत भाषा में प्राप्त नहीं हैं और लुप्त हो चुके हैं; किन्तु भोट-भाषा में उनके अनुवाद सुरक्षित हैं। इस मूलभूत उद्देश्य की पूर्ति-हेतु संस्थान के वर्तमान प्राचार्य/निदेशक प्रो० सम्दोङ् रिनपोछे ने यथोचित व्यवस्था की है और उनके कुशल कार्यसंचालन-द्वारा इस कार्य में विशेष प्रगति हो रही है।



इसी योजना के अन्तर्गत भारतीय आचार्य कमलशील के विश्रुत ग्रन्थ 'भावनाक्रम' को लिया गया है। इसके प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय क्रमों में से प्रथम तथा तृतीय के मूल तो प्रायः संस्कृत में उपलब्ध हैं, किन्तु द्वितीय भावनाक्रम अपने मूल रूप संस्कृत भाषा में सम्प्रति अनुपलब्ध है। अतः 'भावनाक्रम' ग्रन्थ को पूर्ण करने के उद्देश्य से इस लुप्रांश के पुनरुद्धार का कार्य मुझे सौंपा गया; साथ ही यह भी निश्चय किया गया कि संस्कृत में प्राप्तांशों को भी उनके भोट भाषा में प्राप्त अनुवाद से मिलाने हुए प्राप्त पाठभेदों को टिप्पणी-स्वरूप दे दिया जाय और मूल का ऐसी वैज्ञानिक पद्धति से सम्पादन प्रस्तुत किया जाय कि यह ग्रन्थ अपने यथार्थ रूप में जिज्ञासुओं को प्राप्त हो सके। इसके साथ ही इन तीन भावनाक्रमों का हिन्दी में अनुवाद प्रस्तुत करने एवं भूमिका तथा अनेक उपयोगी परिशिष्टों से संवलित करने का कार्य भी मुझे सौंपा गया।

आचार्य कमलशील द्वारा प्रणीत इन तीन भावनाक्रमों में समस्त बुद्धवचनों से सन्दर्भित गूढस्थलों का संग्रह कर सर्वज्ञता की शीघ्र प्राप्ति करने के इच्छुक प्रेक्षावानों को किस क्रम से भावना करनी चाहिए, इसकी विधि एवं क्रम क्या होने चाहिए, इस पर विशद तथा स्पष्ट प्रकाश डाला गया है। आचार्य कमलशील उन भारतीय आचार्यों में से अन्यतम आचार्य हैं जो भोट देश गये थे और वे अपार ज्ञानशक्ति से सम्पन्न थे। भोट देश में बुद्ध-शासन के सन्दर्भ में महत्त्वाकांक्षी चीनी भिक्षु ह्वशङ् द्वारा प्रस्तुत विपरीत दृष्टिमालाओं को उन्मूलित करते हुए इन्होंने भगवान् बुद्ध की यथार्थ सिद्धान्तभूत अभिप्राय-निष्ठाओं को सुस्पष्ट रूप से प्रतिष्ठापित किया था। यह अत्यन्त गौरव एवं हर्ष का विषय है कि बौद्ध भावनाविधि के आधार पर भोट देश में बुद्धशासन को प्रतिष्ठापित करने वाले महान् सुधारक आचार्य कमलशील का यह महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ अपने पूर्णरूप में प्रकाशित हो रहा है।

मैंने इस कार्य को अपनी क्षमतानुसार यथाशक्ति पूर्ण करने का प्रयास किया है, फिर भी अज्ञानतावश हुई त्रुटियों और असंगतियों को विद्वज्जन मेरी असमर्थता समझकर क्षमा करने का अनुग्रह करेंगे।

अपने परम-पूज्य गुरु तथा इस संस्थान को कुशल नेतृत्व प्रदान करने वाले प्राचार्य प्रो० सम्दोङ् रिन्पोछे का मैं हृदय से आभारी हूँ, जिन्होंने इस कार्य में अपना अमूल्य निर्देशन एवं कठिन स्थलों का अर्थबोध प्रदान करते हुए इसके प्रकाशन की व्यवस्था कर सदैव ही मुझे उत्साहित किया है। प्रस्तुत रूप में यह ग्रन्थ-रत्न उनके आशीर्वाद तथा महानुकम्पा का ही फल है। मैं उनके प्रति सदा ही श्रद्धावन्त एवं कृतज्ञ हूँ।



( ज )

संस्थान के संस्कृत विभाग के प्रोफेसर डॉ० कामेश्वरनाथ मिश्र के प्रति मैं अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ, जिन्होंने इस ग्रन्थ के संस्कृत में पुनरुद्धार कार्य तथा हिन्दी अनुवाद आदि कार्यों में अपना बहुमूल्य समय देकर हमारी सहायता की है।

मैं डॉ० जानकीप्रसाद द्विवेदी, प्राध्यापक संस्कृत विभाग, केन्द्रीय उच्च तिब्बती-शिक्षा-संस्थान का भी अत्यन्त आभारी हूँ, जिन्होंने इस ग्रन्थ के सम्पादन तथा संशोधन कार्य में यथोचित मार्गदर्शन देकर मुझे लाभान्वित किया है।

इस कार्य से प्राप्त समस्त पुण्य जगत् के कल्याणार्थ हों तथा इसके अभ्यास से विश्व के सभी सत्त्व शीघ्रतापूर्वक सर्वज्ञता-प्राप्ति की ओर उन्मुख हों, यही कामना है।

भवतु सर्वमङ्गलम्।

बुद्धाब्द २५२९

सन् १९८५ ई०

आ० जलछेन् नमडोल

( तिब्बती-संस्थान )







ཞི་གླང་བཟོད།

༡༡། རྩོམས་གཉིས་ཡོན་ཉན་ནོར་བྱས་ཡངས་གདམས་  
          ཀྱུལ་བ་ཀྱན་གྱི་མཁུན་བཙེ་ནུས་བའི་ཚུ་གཏོར་ལས།  
ལེགས་འབྱུངས་འདབ་ལྗོང་མཚོ་སྤྲེས་དབྱས་ན་  
          བད་དཀར་ལྗར་བསྐྱལས་འགྲོ་དོན་མཛད་ལ་མཚོག་དཔའ་བ།  
འདྲེན་བ་ཉིན་བྱེད་བྱེ་བའི་དབྱས་ན་འཕྲིན་ལས་  
          འོད་ལྗོང་དུས་ཀྱི་མཐར་ཡང་ལྷུ་མ་མེ་བ།  
སྤྲིགས་དུས་འགྲོ་བའི་སྤྲུག་བསྐྱལ་སྤྲུག་བསྐྱལ་ཡོངས་  
          སྤྲུ་སེལ་མཛད་ཤུག་རི་ཀྱུལ་བོར་གྲུས་ཕྱག་འཚལ།

          མཁུན་རབ་རབ་གསལ་འཇམ་དབལ་སྤྲུ་བའི་ལྷ།  
          ཐུགས་རྩི་རྩི་བཙུན་བཙེ་ཆེན་སྤྲིང་རྩི་གཏོར།  
          གསང་བདག་བདག་ཉིད་མཐུ་ལྗོབས་རིགས་གསུམ་གར།  
          ཀྱུལ་ཀྱུ་ན་ཀྱུ་ན་འདུས་འཇམ་མགོན་ཀྱུལ་བར་འདུད།

          ཕན་དང་བདེ་བའི་དབལ་དང་གཞིར་གྱུར་བ།  
          ཡོངས་རྩོགས་ཀྱུལ་བསྐྱལ་རིན་ཆེན་ལྷན་བོའི་ཁྲར།  
          གང་གི་ལྷག་བསམ་དབྱང་བས་ཡོངས་བརྒྱུད་བ།  
          གངས་ཅན་ལྷ་གཅིག་ཕྱག་ན་བསྐྱོར་འདུད།



མི་ཤེས་སྒོངས་པའི་ཚ་གདུང་ཀུན་སེལ་

ཉ་རྒྱས་ཁྲི་ལྟར་མངོན་པར་འཕགས་པའི་སྒྲི།

རབ་འབྱམས་རྒྱལ་པའི་མཛད་པའི་ཡང་སྟིང་

གསུང་གི་མཛད་པར་དབང་བསྐྱར་བསྐྱས་པའི་གསུང་།

ཟབ་རྒྱས་ཚས་ཚུལ་དམ་པའི་དོན་ལ་

དྲི་མེད་མཁྱེན་རབ་ཉི་ལྟར་གསལ་པའི་བྱགས།

རྒྱག་པའི་རྩ་མཚོག་འཇམ་པའི་དབྱངས་ཞེས་

སྐས་བཅས་རྒྱལ་བས་མཚོག་དུ་བསྒྲགས་ལ་འདུད།

ནམ་བཀྲའི་གཞུགས་ལ་འོད་ཆུབས་འཁྱུག་བ་བཞིན།

ནམ་མང་ཤེས་བྱའི་དཀྱིལ་འཁོར་མཐའ་དག་ལ།

ནམ་དབྱེད་མཁྱེན་རབ་ཐོགས་བ་མེད་པའི་དབལ།

དབལ་ལྟན་བརྒྱའི་ངང་ཚུལ་ལ་སྤྱག་འཛལ།

གང་གི་ནམ་དབྱེད་མཚོན་ནོན་འོད་ཆུབས་ཀྱིས།

ལྟ་ངན་ཚང་ཚིང་དུ་བ་སྤྱག་བོ་ཀུན།

ཅད་ནས་ཕྱང་ཞིང་ལམ་བཟང་གསལ་མཛད་བ།

ཁྱོད་ནི་གངས་ཅན་འགྲོ་བའི་ས་མཁན་མཚོག།

ཐབས་མཚོག་བྱང་ཆུབ་སེམས་དང་སྟིང་ཆེན་ཆུས།

ཡོངས་སུ་བརྒྱན་པའི་ཞེ་རྒྱག་ཁྲི་ལྟར་།

མེད་བྱང་སྒྲོམ་རིམ་གསུམ་གྱིས་ཁམས་གསུམ་དུ།

འཆར་མཛད་མཁས་མཚོག་ལྟན་པོ་གཙུག་ན་རྒྱལ།



ཅེས་གིས་བ་བརྗོད་བའི་དགེ་ལེགས་ཀྱི་སྒོ་འཕར་ཡངས་པོར་ཕྱེ་ཏེ། སྐབས་  
 དེན་གང་སྤྱོད་བར་བྱ་བ་ནི། དེ་ཡང་མཐའ་དང་མཉམ་པའི་ཕྱོགས་བཅུ་འཛིག་  
 རྟེན་གྱི་ཁྱེན་འདིར། གངས་དང་ཚད་མེད་བའི་བདེ་འགྲོ་དང་ངན་འགྲོ་འི་སེམས་  
 ཅན་ནམས་ནས། ཐོག་མ་དང་མཐའ་མ་མེད་བའི་དུས་དང་གནས་སྐབས་ཀུན་དུ།  
 བསལ་གས་གིང་གསོལ་བར་འགྱུར་བའི་བསོད་ནམས་དང་བསོད་ནམས་མིན་བའི་  
 ལས་ཀྱི་བྱེད་བ་ལ་བརྟེན་ནས། བྱང་ཞིང་འབྱུང་བར་འགྱུར་བའི་སྒྲོན་བསྐལ་དང་  
 སྒྲོན་བསྐལ་གྱི་རིམ་བ་ཟེམ་མ་ཆད་བའི་ནང་ཚན་མི་མཆེད་འཛིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་.....  
 འདིར། རྩ་ནམས་ཀྱིས་བསྐལ་བ་བཟང་པོར་བསྒྲགས་བའི་སྒྲོན་མེད་བསྐལ་  
 བ་འདིའི་ཆོ་ལོ་བཞི་ཁྲིའི་དུས་སྡེ་སངས་ཀྱིས་འཁོར་བ་འཛིག་ གསུམ་ཁྲིའི་  
 དུས་སྡེ་སངས་ཀྱིས་གསེར་བུལ། ཉིས་ཁྲིའི་དུས་སྡེ་སངས་ཀྱིས་འོད་སྤང་།  
 བཟུ་བའི་དུས་སྡེ་འཛིག་རྟེན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྒྲུ་མ། རྩལ་བར་སྒྲིགས་ཐུག་ཀྱིས་  
 ཆོགས་ཀྱིས་མནར་བའི་འགྲོ་བ་ནམས་ལ་གཅིག་དུ་བྱལ་ས་བརྩེ་ཆེ་བ། བྱལ་བ་  
 ཀུན་གྱིས་བད་དཀར་ལྟར་རབ་དུ་བསྒྲགས་པ། འདྲེན་བ་མཉམ་མེད་ཤུག་འི་  
 བྱལ་བོ་དེ་ཉིད། འཕགས་ཡུལ་དེ་རྗེ་གདན་གྱི་སྒོ་ལ་མངོན་པར་རྒྱགས་པར་  
 སངས་ཀྱིས་བའི་མཆེད་བ་བསྟན་ཅིང་། ཟབ་བ་དང་བྱ་ཆེ་བའི་ཆོས་ཀྱི་འཁོར་  
 ལོ་རིམ་བ་གསུམ་བསྐོར་ནས། བྱ་གར་འཕགས་བའི་ཡུལ་དུ་མངོན་པར་རྒྱགས་ཐུང་  
 འབྲེལ་གྱི་བསྟན་བའི་འོད་སྤང་ཐོག་མར་བྱུང་ངོ་། །

དེ་ནས་བྱང་ཕྱོགས་ཤམ་བླལ་བ་བྱལ་བོ་སྒྲུ་བ་བཟང་པོས་བསྟན་བ་སྤེལ་ཞིང་།  
 བོད་གངས་ཅན་གྱི་ཁྱོངས་སྡེ་བྱལ་བ་རིགས་གསུམ་མགོན་པོ་འུ་ལ་བ་ཆོས་བྱལ་  
 རིམ་བྱོན་ནམས་ནས། དང་པོར་བསྟན་བའི་དབུ་བརྟེན། བར་དུ་བསྟན་



མཛད་ཅིང་ཡོད་པའི་ཆོ་བོད་དུ་གདན་འདྲེན་གྱིས་པ་ཡིན་ལ། དེའི་ཚུལ་ནི། མཁན་  
 ཆེན་ཞི་བ་འཚོ་ཞིང་ལ་གཤེགས་ཚུལ་བསྟན་ཟེས་སུ་བྱ་ནག་ནས་དུ་གང་མ་དུ་ཡུན་  
 ཞེས་བྱ་བ་བོད་དུ་འོངས་དེ། ལུས་ངག་གི་དགོ་སྟོན་བྱས་པས་འཚང་མི་བྱ།  
 ཅི་ཡང་ཡོད་ལ་མི་བྱེད་པས་འཚང་བྱ་ཟེར་ནས་སྒྲོམ་བསྐྱབ་པས། བོད་འབངས་  
 མང་པོ་དེའི་ཟེས་སུ་གྱགས་ནས། བསྐྱབ་པ་སྟོབ་གཉིས་དང་། ལུས་ངག་གི་  
 དགོ་སྟོན་གྱི་རྒྱན་ཆད། བརྒྱ་དང་། བེར་ཚུན་སོགས་ཉུང་ཤས་ཤིག་མཁན་  
 པོའི་ཟེས་སུ་འབྱུང་ནས་ཡོད་པ་ལ། དེ་དག་པན་ཚུན་ལྟ་བ་མ་མཐུན་པར་ཅོད་  
 ཅིང་འབྲུགས་པས། བཅན་པོ་ཡང་བཀས་བཅད་དཀའ་བར་གྱུར་དེ། རྫོང་བྲག་  
 ཁ་ཚུན་ནས་ནན་དན་ཆེན་བོས་ཡེ་ཤེས་དབང་པོ་འབོད་ནས། རྫོན་གྱི་བྱང་ཚུལ་  
 རྣམས་གསུངས་ཤིང་། ད་ཇི་ལྟར་བྱས་ན་ལེགས་གསུངས་པས། ཡེ་ཤེས་  
 དབང་པོ་ན་རེ། མཁན་བོ་སྐྱ་ངན་འདའ་ཁར་འདི་སྐད་གསུངས་དེ། “སངས་  
 རྒྱུ་ཀྱི་བསྟན་པ་གང་དུ་བྱུང་སར་སུ་སྟེགས་ཀྱི་གྲོམ་བ་རེ་འགྲན་རྒྱར་འོང་བ་ཡིན་  
 ན་ཡང་། བོད་ལྷུ་པ་དུ་བསྟན་པ་ལྟ་བུ་བརྒྱའི་ཐ་མ་ལ་བྱུང་སྟེ། ཚུང་ཟད་རྒྱས་པར་  
 འགྱུར་བ་ལ་སུ་སྟེགས་དངོས་ཀྱི་གྲོམ་བ་ནི་མི་འབྱུང་མོད། སངས་རྒྱུ་པ་ཉིད་  
 ལྟ་བ་མ་མཐུན་དེ་ཅོད་པར་འགྱུར་གྱི། དེ་ཅན་ངའི་སྟོབ་མ་ཀམ་ལ་ཤིལ་བྱ་བ་  
 ཞིག་བལ་ལྷུ་པ་ན་ཡོད་པ་དེ་སྟུན་ངོངས་ལ། དེ་དང་ཅོད་པ་བྱེད་དུ་བཅུག་ལ།  
 རྒྱལ་པོས་བསྐྱམ་པར་གྱིས་ཤིག་ ཅོད་པ་ཆོས་སྟོགས་སུ་ཞི་བར་འགྱུར་རོ།” །  
 ཞེས་གསུངས་པས། དེ་ལྟར་མཛད་དུ་གསོལ་ཞེས་གྱིས་པས། རྒྱུ་པོས་དེ་མ་  
 ཐག་སྟོབ་དཔོན་ཀམ་ལ་ཤིལ་གདན་འདྲེན་པའི་པོ་ཉ་བདང་པས། མི་རིང་བར་གདན་  
 འདྲོངས་དེ། བྲག་དམར་དུ་ཕེབས་པ་ན། ཇི་སྟོན་རྣམས་ཀྱིས་མདུན་བསྐྱུས་སོ།



(2) གྱུ་ཤང་གི་ཤང་ཚར་བཅད་ཚུལ།

དེ་ནས་བྱང་ཆུབ་སྒྲིང་དུ་གྲོལ་བའི་དགྲིལ་འཁོར་གསལ་མས་ཤིང་། མེང་གའི་ཁྲི་བཅས་དེ། བཅེན་པོ་གྲང་ལ་བཞུགས། གྱུ་ཤང་གསལ་གྱི་མེང་ཁྲིར་བཞུགས་ནས། དེའི་རྗེས་འབྲངས་སྟོན་མིན་དེ་ཅིག་ཅར་བའི་སྟོབ་མ་མང་དུ་ཡོད་པ་ནས་མ་གྲུབ་རིང་པོ་བརྒྱུགས་དེ་བཞག། གསལ་གྱི་མེང་ཁྲི་ལ་སྟོབ་དཔོན་ཀམ་ལ་གྲོལ་བཞུགས་སུ་གསོལ་ནས། དེའི་རྗེས་ལ་ཅེན་མིན་དེ་རིམ་གྱིས་པའི་སྟོབ་མ་ཡོ་ཤེས་དབང་པོ་དང་། དབལ་དབྱངས་དང་། བེའུ་ཅན་སོགས་ཀྱང་གསལ་གྱིག་ལས་མ་བྱུང་། དེ་ནས་བཅེན་པོས་སྟོན་གྱི་བྱུང་པ་ནས་མ་ཞིབ་དུ་གསུངས་ནས་གཉིས་ཀའི་ལག་དུ་མེ་རྟོག་དཀར་པོ་འི་སྤེང་བ་རེ་གཏད་དེ། ཁྱེད་གཉིས་གསལ་གྱིས་ལ། གང་གཏན་ཆོག་བཟང་བ་དེ་ལ་ཅིག་ཤོས་ཀྱིས་ང་གྲུལ་མ་བྱེད་བར་ཆོས་བཞིན་དུ་མེ་རྟོག་གི་སྤེང་བ་སྐྱལ་ཅིག། སམ་བ་དེ་འདྲིར་མ་སྟོད་ཅིག་ཅས་བཀའ་བརྩལ་བ་དང་། གྱུ་ཤང་ན་རེ། ང་གཞིས་ལ་སྐྱབས་ངས་འདྲི་འཇུག་འདེབས་གསུངས་པས། ཀམ་ལ་གྲོལ་ཞེས་ཞུ། ཁྱེད་ཀྱི་དགོངས་པའི་ལྷ་བ་ལ་གསལ་ཐོབ་ཅིག་གསུངས་པ་ན། གྱུ་ཤང་ན་རེ།

“ཐམས་ཅད་སེམས་ཀྱི་ནམ་པར་རྟོག་པས་བསྐྱེད་པའི་ལས་དག་མི་དགོས་མཐོ་རིམ་དང་། ངན་སོང་གི་འབྲས་བུ་སྤྱིང་ཞིང་འཁོར་བ་ན་འཁོར་ངོ། ནམ་རྟོག་ཡིན་ཕྱིན་ཆད་ངན་རྟོག་ལྷ་ཅི་སྟོས་བཟང་རྟོག་ཡིན་ན་ཡང་འཁོར་བར་འཆིང་... བས་དེའི་འབྲས་བུ་འཁོར་བ་ལས་མི་འདའ་ལྟེ། དཔེར་ན་སྟོན་དཀར་ནག་གང་གིས་ཀྱང་ནམ་མཁའ་སྟོབ། གསེར་སྟོག་དང་ལྷགས་སྟོག་གང་གིས་ཀྱང་ཀྱང་བ་

འཛིང་། ཁྱི་དཀར་ནག་གང་གིས་ཀྱང་རྒྱུ་ལ་ལྷུག་ན། སྤྱུག་བསྐྱེལ་བསྐྱེད་པ་  
 དང་འདྲའོ། དེས་ན་བྱ་བྱེད་ཀྱི་ཆོས་ཀྱི་འཛིང་མི་རྒྱ་བས། གང་ཞིག་ཅི་ཡང་  
 མི་སེམས་མི་རྟོག་ཅིང་། ཅི་ཡང་ཡིད་ལ་མི་བྱེད་བར་བཞག་པ་ཉིད་ཀྱིས་འཛིང་  
 གྱུ་བ་ཡིན་ལ། སྤྱིན་པ་དང་ཚུལ་ཁྲིམས་ལ་སོགས་པ་ཆོས་སྤྱོད་བཅུ་ལ་སྤྱོད་པའི་  
 སྤྱོས་བཅས་ནམས་ནི། དེས་དོན་སྒྲོམ་མི་ཉུས་པའི་སྤྱོ་བོ་སྤྱོ་བོ་འི་དོན་དུ་  
 གསུངས་པས། དེས་དོན་རྟེན་ནས་སྤྱོད་པ་དེ་དག་ལ་འཇུག་པ་ནི། རྒྱལ་པོ་  
 དམངས་སུ་བབས་པ་འདས། སྤྱང་པོ་ཆེ་རྟེན་ནས་སྤྱང་པོ་ཆེའི་རྗེས་འཛོལ་བ་དང་  
 འདྲའོ། །དེས་ན་ངེད་ཀྱི་འདྲ་ན། ཁྱུང་ནམ་མཁའ་ནས་གིང་ཅེར་འབབ་པ་  
 དང་འདྲ་བ་ཡས་བབས་ཅིག་ཅར་བའི་ཆོས་ཡིན། གཞན་ནམས་སྤྱེུ་གིང་ཅེར་  
 མས་ནས་ཡར་འཛོགས་པ་དང་འདྲ་བར་མས་འཛོགས་རིམ་གྱིས་བའི་ཆས་ཡིན་  
 ཞེས་སྒྲུབ་སོ།།

དེའི་ལན་དུ་སྤྱོ་བ་དཔོན་ཀམ་ལ་ཤྱི་ལས་གསུངས་པ། “ཁྱོད་ཀྱི་དཔེ་མི་འཐད་དེ།  
 ཁྱུང་ནམ་མཁའ་ལ་སྤྱོ་བྱར་དུ་འདབ་ཤོག་ཞོགས་པར་སྤྱེས་ནས་གིང་ཅེར་འབབ་  
 བས། འོན་ཏེ་བྲག་ལ་ཆངས་བཅས་ནས་རིམ་གྱིས་འདབ་གཤོག་གྱིས་ནས་གིང་  
 ཅེར་འབབ། དང་པོ་མི་སྤྱིད་ལ། ཕྱི་མ་ལྟར་ན་རིམ་གྱིས་བའི་དཔེར་འགྱུར་དེ།  
 ཁྱོད་ཀྱི་དཔེ་ནོར་བར་མ་ཟད་དོན་ཡང་ནོར་དེ། མི་རྟོག་པ་སྒྲོམ་པ་དེ་ཅི། རྣམ་  
 རྟོག་གི་སྤྱོགས་གཅིག་བཀག་པ་ཅམ་ཡིན་ནས། མཐའ་དག་བཀག་པ་ཡིན།  
 དང་པོ་ལྟར་ན་གཉིད་དང་བརྒྱལ་བ་ལ་སོགས་པ་ཡང་མི་རྟོག་བར་ཐལ་ཡོ། ཕྱི་མ་  
 ལྟར་ན་མི་རྟོག་པ་བསྒྲོམ་པའི་ཆོ། མི་རྟོག་པ་བསྒྲོམ་སྒྲུབ་པའི་སྤྱོ་སྤྱོ་བ་ཀྱང་  
 དགོས་སམ་མི་དགོས། དགོས་ན་དེ་ཉིད་རྟོག་པ་ཡིན་པས། རྟོག་པ་མཐའ་



དག་འགོགས་པའི་དམ་བཅའ་ཉམས་དེ། དཔར་ན་སྤྱོད་བ་བཅད་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་  
 བཟུང་ན་སྤྱོད་བཅད་ཤོར་བའམ། ཅ་ཅོ་མ་བྱེད་ཅེས་པ་ཅ་ཅོར་འགྲུ་བ་བཞིན་ནོ། །  
 སྒོ་སྒྲིན་དུ་གཏོང་མི་དགོས་ན། མེས་མ་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་བསྒྲོམ་སྤྱོད་བར་ཐལ་ཡོ། །  
 འདི་ལྟར་ཅི་ཡང་ཡིད་ལ་མི་བྱ་བར་སྤྱོད་བས་ནི། ཡང་དག་པར་སོ་སོར་དྲོག་  
 པའི་ཤེས་རབ་སྤངས་པ་ཡིན། ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་གནས་ལུགས་ཆོས་དབྱིངས་  
 རྣམ་པར་མི་དྲོག་པ་དེ་ནི། སོ་སོར་དྲོག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་དྲོགས་པ་ཡིན་ན།  
 དེ་སྤངས་པས་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་ཡེ་ཤེས་སམ་ཤེས་རབ་ཀྱང་སྤང་བར་  
 འགྱུར་རོ། །སོ་སོར་དྲོག་པའི་ཤེས་རབ་མེད་པར་ནལ་འབྱུང་བས་ཐབས་གང་  
 གིས་རྣམ་པར་མི་དྲོག་པ་ལ་གནས་པར་འགྱུར། གལ་དེ་ཆོས་ཐམས་ཅད་དྲན་པ་  
 མེད་པ་དང་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་མེད་པས་འཇུག་གོ་ཞེ་ན། དེ་ཡང་མི་རིགས་དེ། ཡང་  
 དག་པར་སོ་སོར་དྲོག་པ་མེད་པར་ཉམས་སུ་སྒྱུང་བའི་ཆོས་ཐམས་ཅད་མི་དྲན་པར་  
 བྱ་བ་དང་། ཡིད་ལ་མི་བྱ་བར་བྱེད་མི་ལུས་སོ། །

གལ་དེ་བདག་གིས་ཆོས་འདི་དག་དྲན་པར་མི་བྱའོ། །ཅི་ཡང་མི་བསམ་  
 ཞིང་ཡིད་ལ་མི་བྱའོ་སྟེ་དུ་བསམ་ཞིང་སྒྲོམ་པར་བྱེད་པ་དེའི་ཆོ། དེས་དེ་དག་  
 འིན་དུ་དྲན་པ་དང་ཡིད་ལ་བྱས་པར་འགྱུར་རོ། །ཅི་སྟེ་དྲན་པ་མེད་པ་དང་ཡིད་ལ་  
 བྱེད་པ་མེད་པ་ཅམ་རྣམ་པར་མི་དྲོག་པའི་རྒྱར་འདོད་པ་སྐད་དུ་བྱ་ན། དེ་ནི་རྣམ་  
 པ་ཐམས་ཅད་དུ་མི་རུང་སྟེ། མེད་པ་རྒྱར་རུང་བའི་སྐབས་མི་སྲིད་པའི་ཕྱིར་རོ། །  
 དེ་ལས་གཞན་དུ་དྲན་པ་མེད་པ་ཅམ་གྱིས་རྣམ་པར་མི་དྲོག་པར་འགྱུར་དུ་ཟིན་ན་ནི་  
 བརྒྱལ་བའི་ཆོ་དྲན་པ་དང་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་མེད་པས་རྣམ་པར་མི་དྲོག་པ་ཉིད་དུ་.....  
 འཇུག་པར་འགྱུར་རོ། །ཆོས་རྣམས་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་སྒྱུང་བར་གནས་པ་ཁོ་ན་

ཡིན་ཏུ་ཟིན་ཀྱང་སོ་སོར་རྟོག་པ་དེ་མེད་ན། དེ་དག་གི་སྤོང་བ་ཉིད་རྟོགས་པར་མི་  
འགྱུར་རོ། །སྤོང་བ་ཉིད་རྟོགས་པ་མེད་པས་ནི་སྦྱིབ་པ་སྤོང་བར་མི་འགྱུར་རོ། །  
སྤོང་བ་ཉིད་རྟོགས་པ་ལ་མི་ལྟོས་པར་དེ་ལྟར་གྱུར་ཏུ་ཟིན་ནི་ནི། ཐམས་ཅད་ཀྱང་  
དུས་ཐམས་ཅད་ཏུ་རང་ཐར་བར་འགྱུར་རོ། །ཆོས་གང་ལ་ཡང་དུན་པ་དང་ཡིད་  
ལ་བྱེད་པ་མེད་པར་གིན་ཏུ་སྤོངས་པ་བསྒྲུམ་ནས་སྤོང་བ་ནི། ཡང་དག་པའི་ནལ་  
འབྱུང་ཏུ་ཇི་ལྟར་འགྱུར། དུན་པ་ཉམས་པའམ་སྤོངས་པའི་ངང་ཚལ་ཁོ་ན་བསྒྲུམ་  
པས་ནི་ཡང་དག་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྤྱང་བ་བྱུང་རིང་ཏུ་བསྤོངས་པར་འགྱུར་རོ། །

ཅི་སྟེ་དུན་པ་ཉམས་པ་དང་། སྤོངས་པ་ས་ཡིན་ན་ནི། དེའི་ཆོ་ཡང་  
དག་པར་སོ་སོར་རྟོག་པ་མེད་པར་ཇི་ལྟར་དུན་པ་མེད་པ་དང་། ཡིད་ལ་བྱེད་པ་  
མེད་པར་བྱེད་ཀྱས་པར་འགྱུར། དུན་པ་ཞིན་ཏུ་ཡང་མི་དུན། མཐོང་བ་ཞིན་ཏུ་  
ཡང་མི་མཐོང་ཞེས་མངོན་སུམ་ལ་བསྟོན་ཏུ་མི་བྱང་ངོ་། །དེ་ལྟ་བུས་ན་ནལ་  
འབྱུང་པས་ཡང་དག་པར་རྟོགས་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་བརྟགས་ཤིང་དབྱུང་ན།  
དུས་གསུམ་ཏུ་གཏོགས་པའི་ཆོས་ཐམས་ཅད་སྤོང་བར་རྟོགས་ཤིང་ལྟ་བུ་ལ་ངན་པ་...  
ཐམས་ཅད་སྤངས་པར་འགྱུར་རོ། །ཐམས་དང་ཤེས་རབ་རྒྱང་ཏུ་འབྲེལ་བའི་ལམ་  
བསྒྲུམས་པ་ལ་བརྟེན་ནས་སྦྱིབ་པ་ཐམས་ཅད་ཟད་པའི་སངས་བྱུས་ཀྱི་ཆོས་ཕུན་...  
སུམ་ཚོགས་པ་ཐམས་ཅད་ཐོབ་པར་འགྱུར་རོ། །” ཞེས་གསུངས་པས་ཏུ་ཤང་  
གི་ལན་ས་བྱུང་ངོ་། །

དེ་ནས་བཙན་བོས་འཁོར་ཀྱན་གྱིས་ཡང་མཆིད་ཤགས་ཐོབ་ཅིག་ཅེས་  
གསུངས་པས་ཡེ་ཤེས་དབང་བོས་སྦྱས་པ། “ཅིག་ཅར་བ་དང་རིས་གྱིས་

1. ལྟ་བུ་ཐ་ཐ་བཞེད་ཏུ་མཉེན་པ་ལྟོ་བྱེད་པ་ལོ་དཔག་དབང་མ་ཞེན་པར་གསུངས་ཞེད་ཀྱང་། ལོ་

ལྟ་བུ་གཞན་པ་ལ་ཆེ་བའི་ནང་གོང་གསལ་ལྟར་བཞེད་ཞེད་པས་དབྱུང་པར་བྱེད།



འཇུག་ཅེས་བྱ་བ་གཉིས་དབྱེད་དགོས་དེ། རིས་གྱིས་འཇུག་ན་ཙོད་རྒྱ་མ་མཆིས་  
 དེ་ངེད་དང་འདྲའོ། །ཅིག་ཅར་འཇུག་ན་ཁྱེད་ད་དྲུང་ཅི་བྱེད། དང་པོ་ནས་  
 སངས་རྒྱས་ན་ཅི་ཉེས། དེ་བས་ན་རི་ལ་འཛེགས་པ་ཡང་གོས་པ་རེ་རེ་ནས་འཛེག་  
 དགོས་དེ། གོས་པ་གཅིག་གིས་བགྱོད་མི་རྒྱས་པ་ལྟར་ས་དང་པོ་ཐོབ་པ་ཡང་  
 རབ་དུ་དཀའ་ན། ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ཐོབ་པ་ལྟ་བུ་སྟེ། ངེད་བཅེན་མེན་  
 གྱི་ལྷགས་ལ། གསུང་རབ་ཀུན་ལ་བསྐྱབ། ཤེས་རབ་གསུམ་ལ་བདེན་ནས་  
 དོན་མ་ནོར་བར་ཤེས། ཆོས་སྟོན་བཅུ་ལ་བསྐྱབ་དེ་བསྐྱོམས་པས་བཟོད་པ་ཐོབ།  
 ས་དང་པོ་སྟོན་མེད་པ་ལ་ལྷགས་དེ། ས་བཅུ་རིས་གྱིས་སྤངས་པས་ཆོགས་གཉིས་  
 ཆོགས་ནས་འཆང་བྱ་བ་ཡིན་པས། ཁྱེད་ལྟར་ཆོགས་མ་བསགས། གློ་  
 མ་སྤངས། འཛེག་དེན་གྱི་བྱ་བ་ཡང་མི་ཤེས་ན་ཤེས་བྱ་ཐམས་ཅད་ཤེས་པར་རི་  
 ལྟར་འགྱུར། ཅི་ཡང་མ་བྱས་པར་ཉལ་ནས་བསྐྱེད་པས་ཟན་ཡང་མི་སྤྱོད་བར་  
 ལྟོགས་དེ་འཆི་ན། ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་དེ་ཡི་ཤེས་ཐོབ་པ་དང་། །མེས་ཅན་  
 གྱི་དོན་དབག་དུ་མེད་པ་མཛད་པ་སོགས་ཇི་ལྟར་རྒྱས་པར་འགྱུར།” ཞེས་སོགས་  
 རྒྱས་པར་གསུངས་པས། ལྟོན་ལྟན་པས་ལན་སྟེ་མ་རྒྱས་པར་མེ་དོག་གི་སྤེང་བ་  
 སྤུལ་ནས་པམ་ཁ་སྤངས་སོ།།

དེ་ནས་བཅན་པོས་དང་སྟོན་ཆད་ལྟ་བུ་བྱ་བྱེད་གྱི་ལྷགས་བརྒྱུད་པ་མ་  
 རོལ་དུ་ཕྱིན་པ་དུག་ལ་བགྱིས་ལ་ཆོས་སྟོན་བཅུ་ཉམས་སུ་ལོངས། བསྐྱོམ་པ་  
 ཤེས་རབ་གསུམ་ལ་གློ་སྟོངས་ལ། ཐམས་ཅད་ཤེས་རབ་རྒྱུད་དུ་འབྲེལ་བའི་ཞི་  
 གནས་དང་ལྷག་མཐོང་སྟོམས་ཤིག་ཅེས་སོགས་བཀའ་ནན་དུ་བསྐྱེད་དེ་རྟེན་  
 ཤང་བྱེད་ལྟུང་བརྒྱུད་པ་སོ།།

དེ་ནས་ཀྱལ་པོས་སློབ་དབོན་ཀམལ་ཤྱེལ་ར་ཚོས་ཐམས་ཅད་ཐོས་པས་མ་གྱིས་  
 བདག་མེད་པར་གདན་ལ་པབ་པའི་ཚོས་དེ་ཆེ་ལྟར་ལགས་ཡི་གེར་འགོད་པར་ཁྱས་  
 པས། སློམ་རིམ་དང་པོ་བཅུ་མས་ནས་གནང་། ཀྱལ་པོས་གཟིགས་པས་དོན་  
 དགོངས་ནས་ཐུགས་དབྱེས་དེ། དེའི་དོན་ལྟར་ཐོག་གཅིག་ཏུ་སློམ་ན་ཆེ་ལྟར་སློམ་  
 ཁྱས་པས། སློམ་རིམ་པར་པ་བཅུ་མས་ནས་གནང་། དེ་ལྟར་བསྐྱམས་པས་  
 དེ་ལ་འབྲས་བུ་ཆེ་ལྟ་བུ་མཆིས་ཁྱས་པས། སློམ་རིམ་ཐ་མ་འབྲས་བུ་བཅུ་ན་པའི་  
 ཞར་ལ་ཏུ་ཤང་གི་ལྟ་བ་ནོར་བ་དེ་སྟུན་རྒྱངས་ནས་གནང་བས་བཅན་པོ་ཤིན་ཏུ་  
 དབྱེས་སོ། །དེ་ནས་སློ་རྟོག་དེ་དགོངས་པ་ལ་གྲོལ་བ་འབྱུང་གི་དུགས་ནས།  
 དེའི་དོན་ཏུ་ལྷང་དང་རིགས་པའི་བཅུ་ན་བཅོས་དབྱེས་སྒྲུང་བ་<sup>1</sup>བཅུ་མས་ནས་གནང་  
 བ་སོགས་སངས་རྒྱུས་ཀྱི་བཅུ་ན་པ་ལ་དག་ཐེར་རྒྱབས་པོ་ཆེ་མཛད་པའི་བཀའ་རྒྱུན་  
 གཞུལ་དུ་མ་མཆིས་སོ། །

(3) བདག་ཉིད་ཆེན་པོ་འདིའི་ནམ་ཐར་དང་འབྲེལ་བའི་བསྐྱར་ཞིབ་དུགས་གཙོད།

བདག་ཉིད་ཆེན་པོ་འདིའི་ནམ་ཐར་གྱི་སྐོར་ལ་དབྱེད་གཞི་ཆེ་བའི་བཤད་ཚུལ་  
 མི་མཐུན་པ་ཆེ་སྟེད་ཅིག་སྒྲུང་སྟེ། དེ་ཡང་པཎ་ཆེན་ཤུག་མཆོག་ལྟུང་གིས་མཛད་  
 བའི་རིང་ཕྱོག་གྱི་ནམ་ཐར་ལས།<sup>2</sup> “ཅོད་པ་ཐམས་ཅད་དང་བུལ་བའི་མཁས་  
 པ་ཆེན་པོ་ཀམལ་ཤྱེལ་མཆོན་ཉི་ཁྲུ་ལྟར་གྲགས་པ་དེ་ལྟ་བུ་སྤྱོད་ལྟ་བུ་བཅན་གྱིས་……  
 བོད་ལྷ་པ་དུ་སྟུན་དངས། ལྟ་བ་ངན་པ་སྟུན་རྒྱང་། དབྱེས་པའི་བཅུ་ན་བཅོས་

1. ལྟུང་དཔམ་ཐུ་བཞེད་ལོགས་ཐུ་དབྱེས་སྒྲུང་བ་བསྐྱོམ་རིམ་གྱི་དོན་འབྲེལ་དུ་གསུངས་པ་དབྱེད་  
 པར་བྱལ། 2. བོད་མ་ 302 (ཕྱི་ལོ་-དེ་བ་གཟིགས་)



མང་དུ་མཛད། སྤྱི་མཐུན་ལྷན་པུ་ལ་གཤེགས་པའི་ལམ་ཁར་གྲུབ་ཆེན་དམ་པ་  
 རྒྱ་གར་དང་མཇུག། དུས་དེར་སྤྱི་ན་པའི་རོ་ཆེན་པོ་ཞིག་གིས་ལམ་པོ་ཆེ་བཅད་  
 ཅས། རོ་དེ་ལ་རེས་འགའ་འབྱུང་བོ་དག་ཞུགས་ནས་སྤྱོད་ཀྱི་འགྲོན་བོ་ནམས་  
 ལ་ཉེ་བར་འཛེབས་གཟིགས་ཅས། སློབ་དཔོན་དེས་རོ་ལ་གྲོང་འཇུག་མཛད་  
 ཅས་ཐག་རིང་པོར་བསྐྱེད་བཤམ་གཤེགས་སོ། དེའི་ཤུལ་དུ་སློབ་དཔོན་དེའི་སྐུ་  
 ལུས་ཤིན་དུ་མཛེས་ཤིང་ཡིད་དུ་འོང་བར་གཟིགས་ཅས། སྐུ་ལུས་དེ་ལ་དམ་པ་  
 རྒྱ་གར་གྱིས་ཞུགས་ནས་རང་གི་ལུས་མི་མཛེས་པ་དེ་ཤུལ་དུ་བཞག་གོ། སློབ་  
 དཔོན་སྤྱིར་འཁོར་བ་ན་རང་གི་སྐུ་ལུས་གཞན་གྱིས་འཁྱེར་བར་གཟིགས་ཅས་ཇི་...  
 བཅུན་དམ་པ་རྒྱ་གར་གྱི་སྐུ་ལུས་དེ་ཉིད་ལ་ཞུགས་སོ། །དེའི་སྤྱིར་བོད་ལྷན་དུ་  
 སྤྱོན་པའི་ཇི་བཅུན་དམ་པ་རྒྱ་གར་ཞེས་མཚན་ཉི་མ་ལྟར་གྲགས་པ་དེ་ཉིད་ཀྱི་.....  
 ཐུགས་ནས་པར་མི་རྟོག་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ངོ་བོ་ནི་མཁས་པའི་དབང་པོ་ཀམལ་ཤྱི་ལ་  
 ཡིན་ནོ། ། །ཞེས་གསུངས་སོ། །

དེ་ལྟར་ན་བྱ་སྤྱོན་ཆོས་འབྱུང་དང་། དབང་པོ་གཙུག་ལག་སྤེང་བའི་ཆོས་  
 འབྱུང་མཁས་པའི་དགའ་སྟོན། རྒྱལ་རབ་སྤྱོད་བཞེད། བད་དཀར་ཆོས་འབྱུང་།  
 ངོར་ཆོས་འབྱུང་། སུམ་པ་མཁན་པོ་འི་ཆོས་འབྱུང་། བདུད་འཛེས་  
 རིན་པོ་ཆེའི་རྒྱལ་རབ་དངས་ཤེས་འབྱུང་གི་མེ་ལོང་སོགས་རྒྱལ་རབས་ཆོས་.....  
 འབྱུང་པལ་ཆེ་བའི་ནང་སློབ་དཔོན་ཀམལ་ཤྱི་ལས་རྒྱ་ནག་དུ་ཤང་ཚར་བཅད་ཇེས་...  
 སུ་མི་རིང་བ་ཞིག་ན་དུ་ཤང་གིས་བདང་བའི་རྒྱུད་བཤན་པ་མི་བཞིས་སློབ་དཔོན་  
 རུབ་མོ་སྐྱ་སྐྱར་ཁང་དུ་གཟིམ་མལ་དུ་མཁལ་མ་མཉེས་ནས་བཀྲོང་བར་གསུང་པ་  
 དང་འགལ་བར་འབྱུར་ལ། གཞན་ཡང་། ཤུག་མཚོག་ལྷན་རང་ཉིད་ཀྱི་གསུང་

རོང་ཕྱོད་གྱི་གསང་བའི་ནམ་མཐར་དུ། “ཇི་བཙན་དམ་བ་རྒྱ་གར་གྱིས་འཛམ་གྱི་  
 སྒྲིང་འདིར་མིའི་སྤེལ་བ་བདུན་བར་མ་ཆད་པར་བཞེས་པའི་ཐ་མ་ལ་བུམ་ཟེའི་རིགས་  
 འིག་དུ་འབྱུངས་དེ། དེའི་མིང་ལ་སྤྱོད་པའི་མིང་གི་དང་། མི་པམ་མགོན་པོ་དང་།  
 ལས་ཀྱི་དོ་ཇི་ཞེས་བྱ་བ་གསུམ་བདགས་སོ། །དེ་དུས་རེ་ཞིག་གི་ཆོ་གྲུ་ལྟེན་  
 གཙུག་ལག་ཁང་ཆེན་པོ་ལྷོ་ཁྱམ་གྱི་ལ་ཞེས་ཡོངས་སུ་གྲགས་པ་དེར་རྒྱུ་ལྷོ་ལ་……  
 དང་། སློབ་དཔོན་ཀམ་ལ་རྟུང་ཞེས་བྱ་བ་གཉིས་ཀྱི་དུང་དུ་རབ་དུ་བྱུང་བར་  
 མཛད་པའི་མཚན་ནི། ཀམ་ལ་གྱི་ལ་ཞེས་བདགས་སོ། ད་ནས་རིམ་གྱིས་རིགས་  
 པའི་གནས་ལྷ་ལ་མཁས་པའི་བརྟུང་ཆེན་པོར་གྱུར་དེ་འཕགས་ལྷ་ལ་དུ་བསྟན་བ་……  
 ལ་བྱ་བ་མང་དུ་མཛད། བསམ་ལས་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་འི་དུས་སུ་བོད་དུ་བྱོན། རྒྱ་  
 ནག་མཁན་པོ་འི་ཆོས་ཁྲགས་སུན་ཕུང་། སར་ཕྱིན་ཐེག་པའི་བསྟན་བཅོས་མང་  
 དུ་བཅུམས། དུས་དེར་སློབ་དཔོན་དེས་གསང་སྒྲགས་ཀྱི་ཆོས་མ་བསྟན།” ཞེས་  
 སོད་གསུངས་པ་དང་། ཡང་ཀུན་མཁྱེན་བད་དཀར་གྱིས་མཛད་པའི་ཆོས་འབྱུང་<sup>3</sup>  
 དུ། “དམ་བ་སངས་རྒྱས་ནི་སློབ་དཔོན་ཀམ་ལ་གྱི་ལ་བོད་དུ་སྤྱོད་གཤེགས་ནས་སྤེལ་  
 བ་རྒྱ་གར་ལྷོ་ཕྱོགས་ཀྱི་བྱེ་བྲག་ཙར་སིང་ཞེས་བྱ་བར་ཆོང་དཔོན་གྱི་རིགས་སུ་……  
 འབྱུངས། ལྷོ་ཁྱམ་གྱི་ལ་མཁན་པོ་དགེ་བའི་རྩ་ལས་རབ་དུ་བྱུང་།” ཞེས་  
 གསུངས་པས། སྤྱི་མ་ལྟར་ན། ཇི་བཙན་དམ་བ་རྒྱ་གར་དང་། སློབ་དཔོན་  
 ཀམ་ལ་གྱི་ལ་གཉིས་ལོགས་སུ་མེད་པར་སློབ་དཔོན་གཅིག་ཉིད་འཕགས་ལྷ་ལ་ནས་

1. བོད་—མ་ 366 (ཕྱོ་ལོ་—དེ་བ་གཟུགས་) 2. ལྷོ་ཁྱམ་དང་། ལྷོ་ཁྱམ་ཐོ་ལ་གཟུགས་ཡོངས་གྲགས་  
 རྒྱ་གཙུག་ལག་ཁང་མི་འདྲ་བ་གཟུགས་ཡོན་ཞིང་། མ་ཁྱུང་གནས་དུས་ཀྱི་འབྱུངས་བར་ཆེན་པོ་ཡོད་  
 བ་དངོས་མཐོང་ཡང་། འདི་དེ་གཅིག་དུ་མཛད་འདུག་པ་མཁས་པ་ཐུགས་མ་གཟུང་བའི་གཟུང་  
 ཡོན་ཆོད། གཞན་དུ་ན་དཔྱད་བཅོད་དགའོ། 3. བད་དཀར་ལ་ 300 (ཕྱོ་ལོ་—དེ་བ་)



བསམ་ཡས་ཀྱི་པོ་འི་དྲུང་དུ་བོད་ལ་བྱོན་ནས་ཀྱི་ནག་མཁན་པོ་འི་ཆོས་ལུགས་...  
 སྤྱི་མ་བད་དཀར་ཆོས་འབྱུང་དུ། སློབ་དཔོན་  
 ཀམ་ལ་ཤྱི་ལ་བོད་དུ་ཞིང་ལ་གཤེགས་ནས་སྤྱི་བ་ཀྱི་གར་དུ་བཞུགས་པ་དེ་དམ་བ་ཀྱི་  
 གར་རམ་པ་དམ་བ་སངས་རྒྱས་ཡིན་པར་གསུངས་པས་ཁྱད་པར་ཤིན་དུ་ཆེད།

གཞན་ཡང་སྤྱི་བ་དང་ས་པའི་ཤུ་མཆོག་ལྷན་གྱི་རོང་ལྷོན་གྱི་ནམ་ཐར་སྤྱི་བྱིངས་  
 ནས་བཤད་པ་དང་། གསང་བའི་ནམ་ཐར་དུ་བཤད་པ་གཉིས་ཀྱང་མི་མཐུན་དེ།  
 གསང་བའི་ནམ་ཐར་དུ་ཆེ་བཅུན་དམ་བ་ཀྱི་གར་འཛམ་སྤྱིང་འདྲིར་མའི་སྤྱི་བ་བདུན་  
 བར་མ་ཆད་པར་བཞུགས་པའི་ཐ་མ་དེ་རབ་དུ་བྱུང་བའི་མཚན་ལ་ཀམ་ལ་ཤྱི་ལ་ཞེས་...  
 བདགས་པ་དེ་ཉིད་བསམ་ཡས་ཀྱི་པོ་འི་དྲུང་སྤྱི་བོད་ལ་བྱོན་ནས་ཀྱི་ནག་མཁན་པོ་འི་  
 ཆོས་བཅད་པར་བཤད་པས། སློབ་དཔོན་གྱི་མཚན་ལ་དམ་བ་ཀྱི་གར་རམ་  
 ཀམ་ལ་ཤྱི་ལ་གང་བཞེད་ཀྱང་གང་ཟེག་རྒྱུད་གཅིག་ཡིན་པ་ལས་རྒྱུད་ཐ་དད་པའི་...  
 བཤད་ཚུལ་མེད་ལ། འོན་ཀྱང་ནམ་ཐར་སྤྱི་བྱིངས་བཤད་པའི་སྐབས། ཆོས་འབྱུང་  
 ནམ་ཐར་གཞན་དང་མི་མཐུན་པ་སློབ་དཔོན་ཀམ་ལ་ཤྱི་ལས་ཀྱི་ནག་མཁན་པོ་འི་...  
 ལྷ་བ་སྤྱི་བ་སྤྱི་བ་ནས་འཕགས་ལྷུ་ལ་དུ་ཕྱིར་ཐེབས་མཛད་སྐབས་ལས་ཁར་པ་དམ་བ་  
 སངས་རྒྱས་སམ་དམ་བ་ཀྱི་གར་མཇལ་བ་དང་། གཅིག་གི་སྤྱི་བ་ལ་གཅིག་  
 གྲོང་མཚུག་མཛད་པར་བཤད་པས། དུས་གཅིག་དུ་ཡོད་པའི་གང་ཟེག་རྒྱུད་ཐ་  
 དད་པ་གཉིས་ཡོད་པ་གསལ་བར་བཤད་པའི་ཕྱིར་རོ། །

སྤྱི་བ་ནམ་ཐར་ཐུན་མོང་བ་དང་། གསང་བའི་ནམ་ཐར་གཉིས་ལ་ཁྱད་པར་  
 ཆེན་པོ་ཡོད་པ་ཅིད་མེད་ཡོངས་གྲགས་ཡིན་ཡང་། འདྲིར་རོང་ལྷོན་གྱི་གསང་ནམ་  
 བཤད་པའི་སྐབས་ཡིན་པ་ལས། དམ་བ་ཀྱི་གར་དང་སློབ་དཔོན་ཀམ་ལ་ཤྱི་ལའི་

གསང་ནས་བཤད་པའི་སྐབས་ཀྱང་མིན་ལ། ཐུན་མོང་དང་ཐུན་མོང་མ་ཡིན་པའི་  
 སྐབས་གང་དུ་ཡང་དམ་པ་རྒྱ་གར་དང་། ཀམལ་ཤྱིལ་གཉིས་གང་ཟག་གཅིག་  
 ཡིན་ནམ་ཐ་དད་ཡིན་འདིའི་གནད་ལ་མི་མཐུན་པ་ཡོང་བའི་གནས་མི་སྤང་ངོ་། །

གོང་གི་གསང་ནས་དུ་དམ་པ་རྒྱ་གར་མིའི་སྤྱི་བ་བདུན་པར་མ་ཆད་དུ་བཞེས་  
 པའི་ཐ་མ་ཀམལ་ཤྱིལ་ཞུ་བ་བོད་དུ་བསམ་ཡས་རྒྱལ་པ་འི་དུང་དུ་བྱོན་པར་གསུང་  
 པ་དེ། ཞི་བྱེད་ཀྱི་ཆོས་འབྱུང་ཁྱད་སྤངས་སུ་དམ་པ་རྒྱ་གར་བོད་ལ་ལན་ལྔ་  
 བྱོན་པར་བཤད་པའི་བྱོན་ཐོང་གང་ཡང་མིན་པར་མ་ཟད། ཆོ་བརྟན་ལྷབས་དུང་གི་  
 བསྟན་ཅིས་ཀྱན་བདུས་སུ། རབ་བྱུང་དང་བོ་འེ་ཤིང་ད། སྤྱི་ལོ་ ༡༠༥༥ མཉམ་  
 མེད་ཇོ་བོ་ཇེ་ཐུང་ན་ལས་འདས་པའི་ལོ་དེར་དམ་པ་རྒྱ་གར་བོད་ལ་བྱོན་པར་...  
 གསུངས་པས་དུས་མི་འགྲིག་ཅིང་། ལྷག་པར་དུ་བསམ་ཡས་རྒྱལ་བོ་འི་དུས་སུ་  
 བོད་ལ་བྱོན་ནས་རྒྱ་ནག་དུ་ཤང་གི་ལྟ་བ་སུན་སྤངས་ཤིང་། སར་ཕྱིན་ཐོག་པའི་  
 བསྟན་བཅོས་མང་དུ་མཇེད་ཅིས་གསུངས་ཚུལ་འདིའི་ཤུགས་ཀྱིས་ཞི་འཚོ་འི་སློབ་...  
 མ་ཀམལ་ཤྱིལ་ལས་མ་འདས་པར་ཆེས་གསལ་ཡོ། །

ཆོས་འབྱུང་ནས་ཐར་པལ་ཆེ་བའི་ནང་པ་དམ་པ་སངས་རྒྱས་ནི། རྒྱ་གར་  
 རྩོ་ཕྱོགས་ཅན་སངས་ཞེས་བྱ་བར་སྐུ་འབྱུངས། བློ་གྲུམ་ཤྱིལ་འི་མཁན་པོ་དགོ་  
 བའི་ལྟ་ལས་རབ་དུ་བྱུང་། ལྷ་མ་གསེར་སྤྱིང་བ་ལས་སེམས་བསྐྱེད། མཁན་པོ་  
 དགོ་བའི་ལྟ་དང་། བླ་མ་ཟེ་ཞུ་དེ་བ་སོགས་ལ་བརྟེན་ནས་རིག་པའི་གནས་ལྔ་  
 ལ་མཁས་པར་སྤྱངས། རྒྱ་རོ་དང་མི་དེ་ལ་སོགས་པའི་ལྷ་མ་ལྔ་ཅ་ཅ་བཞི་  
 བསྟེན་བ་སོགས་གསུང་ཚུལ་མཐུན་པར་སྤང་ཡང་། ཤུ་མཚོག་ལྷན་གྱི་རིང་



སྟོན་ནས་ཐར་དུ། རྗེ་བཙུན་དམ་པ་རྒྱ་གར་གྱིས་འཛམ་གླིང་འདིར་མིའི་སྤྱི་  
 བ་བདུན་བར་མ་ཆད་པར་བཞེས་པའི་ཐ་མ་བུམ་ཟེའི་རིགས་ཤིག་དུ་འབྱུངས་དེ།  
 དེའི་མིང་ལ་སྤྱི་བའི་སེང་གེ་དང་། མི་པམ་མགོན་པོ་དང་། ལས་ཀྱི་དོ་རྗེ་ཞེས་  
 བྱ་བ་གསུམ་བདགས་པ་སོགས་དང་། ཡང་པ་དམ་པས་སློབ་དཔོན་ཀམལ་ཤྱིལ་འི་  
 རྒྱ་ལུས་ཤིན་དུ་མཛེས་ཤིང་ཡིད་དུ་འོང་བར་གྲོང་འཆུག་མཛད་པ་སོགས་གསུང་།  
 ཚུལ་གཞན་དང་མི་མཐུན་པ་འདི་དག་ལ་ངས་པ་ཐོབ་དཀའ་བ་མ་ཟེ། དོན་  
 འདི་ལ། ཀྱན་མཆེན་པད་དཀར་གྱིས་མཛད་པའི་ཚོས་འབྱུང་བལྟན་པའི་བསྐྱེ་  
 རྒྱས་པའི་ཉིན་བྱེད་ལས་༥ “འདི་ལ་གཞན་གྱིས་དགྲུང་ལོ་མང་པོ་བར་བྱས་  
 བ་དང་། ཀམལ་ཤྱིལས་གྲོང་འཆུག་བྱས་པར་བཤད་པ་ནམས་ལ་གདམ་ཆད་  
 མ་གཞོད་བྱེད་དུ་སྤང་ངོ་” །ཞེས་གསུངས་སོ།

གལ་དེ་པ་དམ་པ་སངས་རྒྱས་དང་། སློབ་དཔོན་ཀམལ་ཤྱིལ་གཉིས་ཐུགས་  
 རྒྱུད་ཐ་དད་ཡིན་པའི་དབང་དུ་བྱས་ནས་ཞི་བྱེད་སྒྲོལ་མ་དགུ་སྟོར་མཛད་པ་པོ་དང་།  
 བོད་དུ་ལན་ལྔ་བྱོན་པ་པོ་དེ་པ་དམ་པའི་རྒྱ་ལུས་ལ་གྲོང་འཆུག་མཛད་པའི་སློབ་  
 དཔོན་ཀམལ་ཤྱིལ་ཡིན་པར་འདོད་ན། པ་དམ་པ་སངས་རྒྱས་ཀྱིས་ཞི་བྱེད་སྒྲོལ་  
 མ་དགུ་སྟོར་མ་མཛད་པ་དང་། བོད་ལ་ལན་ལྔ་མ་བྱོན་པར་འགྱུར་ལ། དེ་  
 ལྟར་ན། ཚོས་འབྱུང་ནས་ཐར་པལ་ཆེ་བའི་གསུང་ཚུལ་དང་ཡང་འགལ་བར་  
 འགྱུར་སོ། །གལ་དེ་གྲོང་འཆུག་གང་དུ་མཛད་པའི་རྒྱ་ལུས་དེ་པ་དམ་པ་སངས་  
 རྒྱས་ཀྱི་ཡིན་པས་རྒྱ་ལུས་ཙམ་གྱིས་པ་དམ་པ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་གོ་ཆོད་དོ་སྙམ་ན་ནི་  
 ཉ་ཅང་ཐལ་བར་འགྱུར་སོ།

མདོར་ན་པ་དམ་པ་སངས་རྒྱུ་གྱི་མཚན་ལ་ཀམལ་གྱི་ལ་དང་། ཀམལ་གྱི་  
 ཞེས་འབྲུང་བ་དང་། དེ་བཞིན་དུ་སློབ་དཔོན་ཀམལ་གྱི་ལ་བོད་དུ་ཞིང་ལ་གཤེགས་  
 ཅས་སློབ་བ་རྒྱ་གར་དུ་བཞེས་པ་པ་དམ་པ་སངས་རྒྱུ་ཡིན་པར་གསུངས་པ་དང་།  
 ཡང་། “འདི་<sup>1</sup>རྒྱ་གར་དུ་བཞུགས་ཀམལ་གྱི་ལ་གྲགས། བོད་དུ་དམ་པ་རྒྱ་གར་རེར་”  
 ཞེས་སོགས་དང་། ཡང་སློབ་དཔོན་ཀམལ་གྱི་ལ་བོད་ནས་རྒྱ་གར་ལ་ཕྱིར་ཕེབས་  
 མཛད་སྐབས་པ་དམ་པ་སངས་རྒྱུ་གྱི་སྐུ་ལྔ་ལ་གྲོང་འཇུག་མཛད་དགོས་བྱུང་།  
 བ་སོགས་གསུངས་ཚུལ་འདྲ་མིན་སྒྲ་ཚོགས་པ་འདི་དག་ལ་གཞིགས་ན་གཞི་རྩ་ཅན་  
 གྱི་འབྲེལ་བ་ཞིག་ཡོད་པ་གདོན་མི་ཟ་བ་ཡིན་མོད། འོན་ཀྱང་དངོས་ཡོད་གནས་  
 ཚུལ་ལ་མཐའ་གཅིག་དུ་འདི་འཐད་དང་འདི་མི་འཐད་ཅེས་བཞུགས་དགའ་བས།  
 ཁ་ཚོན་བཅད་མ་སྒྲ་བར་དབྱུང་གཞིར་བཞུགས་པ་འདི་དག་ལ་རྣམ་དབྱེད་ཀྱི་ཅུལ་.....  
 གཞན་ལས་ཁྱད་ཉུགས་པ་རྣམས་ཀྱིས་དབྱུང་བར་འཚལ་ཡོ།

(༧) ཚུལ་པ་ལེགས་བཤད་ཀྱི་ཕྱིང་བ་ཇི་ལྟ་བུ་ཚུལ་དང་། དེའི་བསྐྱར་ཞིབ་

### དུགས་གཅོད།

བདག་ཉིད་ཆེན་པོ་འདིའི་གསུང་གི་མཛད་པའི་ཕྱག་རྒྱེས་ཚུལ་པ་ལེགས་.....  
 བཤད་<sup>2</sup>ཀྱི་ཕྱིང་བ་ཇི་ལྟ་བུ་ཡོད་སྟེ་ན། འདི་ལྟར་།—

1. གཅོད་ལུག་ཉིད་མོངས་ཞེ་བྱིན་གྱི་བཀའ་གཉིད་སྒྲ་མ་རྒྱུད་བའི་རྣམ་ཐར་—༡༦

(ཕྱི་ལོ་—དེ་བ་གཟུགས་)

2. གཤམ་གསལ་གསུང་རྩོམ་ཕྱག་དཔེ་དེ་དག་གི་བོད་དང་། བོག་གྲངས་ནི་སྟེ་དགེ་བཅུན་འབྱུང་གཞིར་བཞུགས་པ་ཡོ།



## (ཀ) འདུལ་བ།

- (༡) ༡-དག་སྤོང་གི་ཀླུ་ཀླུ་ལྷ་ཅུ་པའི་ཚོག་གི་བཞེད་བྱང་དུ་བྱས་པ།  
(‘སྤྱ’ ༧-༢༤)

## (ཁ) ཤེར་ཕྱིན།

- (༡) ༡-འཕགས་པ་ཤེས་རབ་ཀྱི་པ་རོལ་དུ་ཕྱིན་པ་བདུན་བརྒྱ་བ་བྱ་ཆེར་བཤད་  
བ་(‘ས’ ༤༧-༡༧༤)
- (༢) ༢-འཕགས་པ་ཤེས་རབ་ཀྱི་པ་རོལ་དུ་ཕྱིན་པ་ནི་རྗེ་གཅེན་པའི་རོན་བདུན་……  
བྱི་བྱ་ཆེར་འབྲེལ་བ། (‘ས’ ༢༠༧-༢༩༧)

## (ག) དབྱ་མ།

- (༧) ༡-དབྱ་མ་བྱན་བྱི་དཀར་འབྲེལ་ (‘ས’ ༤༧-༡༢༢)
- (༨) ༢-དབྱ་མ་སྤང་བ། (‘ས’ ༡༢༢-༢༧༧)
- (༩) ༣-དེ་ཁོ་ན་ཉིད་སྤང་བ་ཞེས་བྱ་བའི་རབ་དུ་བྱེད་བ། (‘ས’ ༢༧༧-༢༧༢)
- (༡༠) ༤-ཚོས་ཐམས་ཅད་རང་བཞིན་མེད་པར་སྤྱུབ་བ། (‘ས’ ༢༧༢-༢༧༡)
- (༡༡) ༥-བྱང་ཅུབ་ཀྱི་སེམས་བསྐྱེད་བ། (‘ཀྱི’ ༡༩-༡༧)
- (༡༢) ༦-བསྐྱེད་རིམ་དང་བོ། (‘ཀྱི’ ༢༢-༧༡)
- (༡༣) ༧-བསྐྱེད་རིམ་བར་བ། (‘ཀྱི’ ༧༡-༧༧)
- (༡༤) ༨-བསྐྱེད་རིམ་ཐ་མ། (‘ཀྱི’ ༧༧-༩༤)
- (༡༥) ༩-རྣམ་འབྱེད་བསྐྱེད་པ་ལ་འཇུག་བ། (‘ཀྱི’ ༩༤-༡༠)

## (ང) མདོ་འབྲེལ།

- (༡༦) ༡-འཕགས་པ་ནམ་པར་མེདྲོག་པར་འཇུག་པའི་གཞུངས་ཀྱི་བྱ་ཆེར་

འབྲེལ་བ། ('ཇི' ༡༣༣-༡༣༣)

(༡༣) ༣-འཕགས་པ་སྤྲུལ་ལྷུང་པའི་གྲུ་ཆེར་འབྲེལ་བ། ('ཇི' ༡༣༣-༡༣༣)

(ཅ) སྤྲུལ་ཡིག

(༡༤) ༡-སྒྲོ་ཟ་མོ་ཆངས་དབྱངས་ལ་སྤྲུག་བསྐྱེད་བརྒྱུད་ཀྱི་བྱེ་བྲག་བཞུན་པ་

ཞེས་བྱ་བ། ('ཇི' ༡༣༣-༡༣༣)

(༡༥) ༣-དད་སྤྱོད་སྒྲོན་མ། ('ཇི' ༡༣༣-༡༣༣)

(ཆ) ཆད་མ།

(༡༦) ༡-རིགས་པའི་ཐིག་པའི་བྱོགས་སྤྲུལ་མ་མདོར་བསྐྱེད་བ། ('ཇི' ༡༣༣-༡༣༣)

(༡༧) ༣-ཆད་མའི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་བསྐྱེད་བའི་དཀའ་འབྲེལ། ('ཇི' 'ཇི' ༡༣༣-

༡༣༣, ༡-༡༣༣)

(ཇ) སྤྲུལ་མ།

(༡༨) ༡-སྒྲོན་ལམ་སྤྲུག་ཉིས་མ། ('ཇི' ༡༣༣) བཅས་སོ། །

འདིར་དབྱུང་ཞིབ་བྱེད་དགོས་པ་ཞིག་ལ་སྤྲུལ་དགོས་པ་བཞུན་འགྱུར་བྱེད་འབྲེལ་

('ཇི' ༡༣༣-༡༣༣) བཅས་ལ་ལྟར་གྱི་པ་དམ་པ་སངས་རྒྱུས་ཀྱིས་མཛད་པའི་

བཞུན་བཅོས་ (༡) མན་ངག་སྤྲུལ་མ། (༢) ཐིག་པ་གསུང་གི་སྤྲུལ་མ།

(༣) ཡང་དག་ལྟ་བུའི་སྤྲུལ་མ། (༤) རིན་པོ་ཆེའི་སྤྲུལ་མ། (༥) མཉམ་ཉིད་གཞིའི་

སྤྲུལ་མ། (༦) མཐར་ཐུག་འབྲས་བུའི་སྤྲུལ་མ། (༧) བྱང་ཆུབ་སྤྱོད་པའི་སྤྲུལ་མ།

(༨) རྣམ་འབྱོར་ལམ་གྱི་སྤྲུལ་མ། (༩) གསང་བ་ཐུགས་ཀྱི་སྤྲུལ་མ། (༡༠) མཚུལ་

གྱི་ཆོག་དང་། (༡༡) དེ་ཁོ་ན་ཉིད་སྤྲུག་གྱུ་ཆེན་པོ་ཡི་གེ་མཛད་པའི་མན་ངག་

བཅས་ཞི་བྱེད་ཀྱི་མན་ངག་སྤྲུལ་མ་དགྱུ་སྤྱོད་དང་། (༡༢) ཞེས་རབ་ཀྱི་པ་རོལ་



དུ་ཕྱིན་པའི་སྐྱབ་ཐབས། (༡༣) རྩེ་བཙན་མ་འཕགས་མ་སྒྲོལ་མའི་སྐྱབ་ཐབས།  
 (༡༤) རྩེ་རྩེ་འཕགས་མའི་སྐྱབ་ཐབས་དང་། (༡༥) འཇམ་དཔལ་ཁྲོ་བོར་སྐྱབ་  
 པ་བཅས་བསྐྱེད་རིམ་གྱི་ཆོས་སྒོར་དེ། གོང་གསལ་ཞི་བྱེད་ཀྱི་གཞུང་དེ་དག་  
 ལས་མཛད་བྱང་དངོས་སུ་གསལ་བ་ནམས། ཉི་ཉོང་ནས་དངར་བསྐྱེད་ཞུས་པའི་  
 སྡེ་དགོ་དགའ་བསྐྱེད་དཀར་ཆག་དེབ་གཞུགས་ནང་བསྒྲོམ་རིམ་མཛད་པོ་འི་ཀམལ་  
 གྲིལས་མཛད་པ་གཞི་བཞག་གི་ཐོག་ནས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཛད་པའི་གཞུང་གི་ཁྲིངས་  
 སུ་གྲངས་འདྲིན་བྱས་འདུག་ཅིང་།

སྡེ་དགོ་བསྐྱེད་འགྲུར་བོད་དཔར་དཀར་ཆག་ནང་། ཕྱག་དཔེ་ངོ་མའི་  
 མཞུག་དུ་མཛད་བྱང་དངོས་སུ་གསལ་ལ་མིན་ལ་མ་ལྟོས་པར། དང་པོ་བཅུ་གཅིག་  
 ནྤལ་འབྱོར་གྱི་དབང་ཕྱག་ཆེན་པོ་ཀམལ་གྲིལས་མཛད་ཅེས་དང་། ཕྱི་མ་བཞི་  
 རྩེ་བཙན་ཀམལ་གྲིལས་མཛད་ཅེས་བཀོད་འདུག་ཀྱང་། ཕྱག་དཔེ་ངོ་མའི་ནང་  
 དང་པོ་ལྔ་ལ་མཛད་བྱང་མེད་ཅིང་། དགྲུ་པ་དང་བཅུ་གཅིག་གཉིས་ནྤལ་འབྱོར་  
 གྱི་དབང་ཕྱག་ཆེན་པོ་ཀམལ་གྲིལས་མཛད་ཅེས་དང་། དེ་བྱིངས་ནམས་རྩེ་བཙན་  
 ཀམལ་གྲིལས་མཛད་ཅེས་བཀོད་ཡོད་ལ།

པེ་ཀིང་དཔར་མའི་དཀར་ཆག་དང་ཕྱག་དཔེ་ངོ་མ་གཉིས་ཀའི་ནང་མཛད་བྱང་  
 དངོས་སུ་གསལ་བ་ནམས་ཀམལ་གྲིལས་མཛད་ཅེས་བཀོད་འདུག་པས། ‘ཀམལ་གྲི་’  
 དང་‘ཀམལ་གྲིལ’གཉིས་མཚན་རྒྱུ་མི་འདྲ་བའི་ཁྲུང་པར་ཆེན་པོ་ཡོད་ལ། བྱ་  
 ལྟོན་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པས་མཛད་པའི་སྐར་ཐང་བསྐྱེད་འགྲུར་གྱི་དཀར་ཆག་ཡིད་  
 བཞིན་ནོར་བུ་དབང་གི་བྱུལ་བོ་འི་སྤྱང་བའི་ནང་།<sup>1</sup> “དེ་ནམས་ཐམས་ཅད་རྩེ་

1. ཕྱ་ལྟོན་—‘པ’ ༤༤༤ (སྐྱ་ལ་—དེབ་གཞུགས་)

བཙན་ཀམལ་གྱིས་མཛད།” ཅེས་བཀོད་ཡོད་དོ།

དེས་ན་གཞུང་དེ་དག་ཀམལ་གྱི་ཡེ་མཚན་ཅན་གྱི་གིས་མཛད་དུ་ཆུག་ཀྱང་།  
བསྐྱོམ་རིམ་མཛད་པ་བོ་དང་གཅིག་ཡིན་མིན་དང་། སློབ་དཔོན་ཀམལ་གྱི་དང་།  
ནལ་འབྱོར་གྱི་དབང་ཕྱག་ཆེན་པོ་ཀམལ་གྱི་དང་། རྗེ་བཙན་ཀམལ་གྱི་ལ་གསུམ་  
གཅིག་ཡིན་མིན་དང་། །ཡང་ན་དེ་དག་ལས་གཞན་པའི་ཀམལ་གྱིས་མཛད་  
སྟུང་བའི་དྲུག་ལ་གཞི་ཆེ་ཞིང་། དཔར་མ་འདྲ་མིན་གྱི་དཀར་ཆག་ནང་པན་ཆུན་མི་  
མཐུན་པ་དང་། དཀར་ཆག་དང་ཕྱག་དཔེ་ངོ་མ་གཉིས་མི་མཐུན་པ་སོགས་མི་  
མཐུན་པ་ཆེས་མང་ཞིང་། ཡིད་བདྲན་འཕེར་བའི་གནས་སུ་མི་སྤྲང་བས་དབྱེད་པ་  
ཞིབ་དུ་བྱེད་དགོས་པར་སྤྲང་ངོ་།

དེ་ལ་བྱ་སྟོན་ཐམས་ཅད་མཐུན་པས་མཛད་པའི་ཆོས་འབྱུང་གསུང་རབ་རིན་  
བོ་ཆེན་མཛད་པ་དང་། ཞི་བྱེད་སློབ་མ་དག་སྐོར་མཛད་པ་བོ་དེ་ཀམལ་གྱི་  
ཞེས་པ་དམ་པ་རྒྱ་གར་བ་ལྟེ། པ་དམ་པ་སངས་རྒྱུས་ཀྱི་མཚན་ཡིན་པར་གསུངས་  
པ་དང་། དེ་བཞིན་དུ་ཀོང་སྤལ་ཡིན་ཏན་རྒྱ་མཚོས་མཛད་པའི་ཤེས་བྱ་ཀུན་ཁྲབ་  
ཅ་འབྲེལ་ལས།<sup>2</sup>

“གྲུབ་ཐོབ་ང་བཞི་མཁའ་སློབ་སོ་དྲུག་གི།

བཙན་བརྟེས་དམ་པ་བོད་དུ་ལན་ལྔ་ཐེབས།

ནམ་ཐར་ཆུལ་མཐུན་འགྲོ་མང་བསྐྱལ་མཛད་པའི།

དམ་ཆོས་སྤྲུག་བསྐྱལ་གྱི་བྱེད་ཅེས་བྱ་བ། ཞེས་པ་ལྟེ། རྗེ་

1. བྱ་སྟོན་—ལ་ ༡༠༩༠ (སློབ་པོ་—དེབ་གཟུགས་)

2. ཀོང་སྤལ་—ཆེ་ ༡༩༠ (སློབ་པོ་—དེབ་ཐུང་)



བཙུན་ཀམལ་ཤིལ་སྒྲུབ་ཐོབ་པོ་མོ་ལྟ་བུ་ཙུ་ཙུ་བཞི་བཞེན། བཙུན་ལེན་སོགས་  
 ཐུན་མོང་གི་སྒྲུབ་པ་བརྟུན་བཞེས་པས་དགྲུང་ལོ་ལྟ་བུ་བརྟུན་དང་བརྟུན་ཙུ་བཞུགས།”  
 ཞེས་པ་དམ་པའི་མཚན་དུ་ཇི་བཙུན་ཀམལ་ཤིལ་ཞེས་གསུངས་པ་དང་། དེ་བཞིན་  
 དུ་འགོས་ལོ་རྒྱུ་བ་གཞིན་ནུ་དབལ་གྱིས་མཛད་པའི་དེབ་ཐེར་སྟོན་པོ་ལས།<sup>1</sup>  
 “བར་དུ་བྱུང་བའི་རྒྱུད་ཐུན་ལ། གྲ་བ་དང་། རྩེ་དང་། ལྷུང་ལུགས་གསུམ་ལས།  
 གཉིས་པ་བཟང་ལྷུང་གྱི་དགོ་བཤེས་རྩེ་བ་ཞེས་བྱ་བ་ཡབ་སྐུ་གཉིས་ལས། སྐུ་  
 རྩེ་བ་གྲགས་པ་སྐྱུངས་པའི་ཡོན་ཏན་དང་ལྷན་ཞིང་། སྐུགས་ཀྱི་ཡོན་ཏན་ཡང་སྐུན་  
 སྐུ་ཚོགས་པ་ཡོད་པ་ལ་པ་དམ་པ་སངས་རྒྱས་མ་མཐལ་བས་ཡིད་གདུངས་དེ།  
 གང་ན་བཞུགས་ཅད་བཅད་པས། ཡེར་བ་ན་བཞུགས་པ་ཐོས་ཤིང་། ནམ་  
 མཁའ་ནས་མཁའ་འགོ་མས་ཀྱང་ལུང་བསྟན་དེ། དེགས་ཀྱི་བྱ་ཇི་བཙུན་  
 ཀམལ་ཤིལ་སྒྲུབ་པ་གསུམ་ལྷན་གྱི་ནལ་འབྱོར་བ་ཡིན་དེ། སངས་རྒྱས་ཀྱི་  
 དགོངས་པ་ཕྱིན་ཅི་མ་ལོག་པ་མཐུན་པ། སྟོབ་དཔོན་འཕགས་པ་ཁྱ་སྐུ་ཡབ་  
 སྐུ་ནས་བརྟུན་པའི་སྐུ་བ་བརྟུན་གྱི་གདམས་པ་བར་མ་ཆད་པ་ཡིན་པས། ཇི་  
 བཙུན་དེ་ལ་ཆོས་ཀྱིས་ཤིག།” ཅས་བྱ་བའི་ལུང་བསྟན་བྱུང་བར་གསུངས་སོ།  
 དེས་ན་ལུང་བསྟན་གྱི་ཆོག་ཟིན་ལ་ཡང་པ་དམ་པའི་མཚན་ལ་ཇི་བཙུན་ཀམལ་  
 ཤིལ་གསུངས་པ་ནམས་དགོངས་པ་གཅིག་དུ་མཐུན་ཞིང་། དེ་ཙམ་དུ་མ་ཟད་  
 ཆོས་འབྱུང་ལོ་རྒྱུས་ནམས་སུ་ཞི་བྱེད་སྒྲུབ་པར་གསུམ་ལས། སྐུ་མར་པ་དམ་  
 པས་ཁ་ཆེ་རྒྱན་གྲུ་ལ་ཞི་བྱེད་སྟོལ་མ་སྟོར་གསུམ་སོགས་གསུངས་པ་དང་།  
 དེ་གཉིས་ཀ་ལས་ཨོང་པོ་ལོ་རྒྱུ་བས་གསུམ་པར་གསུངས་པ་དང་། གཞུང་དེ་

1. དགོས་པོ་རྒྱུ་བ་— ལོར་ (སྟོ་པོ་—དེབ་གཞུགས་)

དག་གི་འགྲུར་བྱང་དུ་གྱུ་གར་གྱི་མཁན་པོ་རྣམས་ཀྱི་དང་། མོང་པོ་ལོ་ཙཱ་  
 བས་བརྒྱུར་ཅེས་བཀོད་པ་དང་འབྲེལ་ཆེ་ཞིང་མཐུན་པར་སྤང་བ་དང་། དེ་བཞིན་  
 དུ་གྱུར་པ་བར་མའི་རྒྱུད་ཐུན་གྱི་པ་མངོན་གྱིས་ལ་པ་དམ་པ་སངས་རྒྱས་ཀྱིས་གོང་  
 དུ་བཀོད་པའི་ཞི་བྱེད་སྒྲོལ་མ་དགུ་སྟེར་གྱི་གདམས་པ་གནང་ཞེས་ཤིན་དུ་གསལ་...  
 བར་བཀོད་འདུག་པས། ཆོས་འབྱུང་ལོ་རྒྱུས་པལ་ཆེ་བའི་གསུང་ཚུལ་ལ་གཞིགས་  
 ན་གཞུང་དེ་དག་གི་མཛད་པ་པོ་བསྟོམ་རིམ་མཛད་པོ་འི་ཀམལ་ཤིལ་མིན་པར་.....  
 མངོན་ནོ།

གོང་གསལ་ཞི་བྱེད་ཀྱི་གཞུང་དེ་དག་ལྷོན་ཐམས་ཅད་མཆེན་པས་མཛད་  
 པའི་སྤྱར་ཐང་དཀར་ཆག་དུ། “དེ་ནམས་ཐམས་ཅད་རྗེ་བཙུན་ཀམལ་ཤིས་མཛད་”  
 ཅེས་གསུངས་པ་བཞིན་གཞུང་དེ་ནམས་ཀྱི་མཆུག་དུ་མཛད་བྱང་དངོས་སུ་གསལ་...  
 མིན་ལ་མ་ལྟོས་པར་ཅོམ་པ་པོ་སྟོབ་དཔོན་གཅིག་ཡིན་པ་ནི་གཞུང་དེ་ནམས་ཀྱི་...  
 ཅོམ་འགྲོས་དང་། ཆོག་སྟོར་སོགས་ལ་གཟིགས་ནའང་མཆེན་པར་འགྲུར་རོ།

པ་དམ་པ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་མཚན་གྱི་ནམ་གངས་སུ་རྗེ་བཙུན་ཀམལ་ཤི་དང་།  
 ‘ཀམལ་ཤིལ་’ཞེས་མཚན་རྩེ་མི་མཐུན་པ་གཉིས་འབྱུང་བ་ལས་གང་འཐད་མཐུན་  
 གཅིག་དུ་ཁ་ཚོན་བཅད་དཀར་ནའང་། འགོས་ལོ་རྒྱུ་བ་དང་། ལྷ་སྟོན་  
 ཐམས་ཅད་མཆེན་པའི་གསུངས་ནམས་ཁྲངས་ཐུབ་ཆེ་བས་དེར་གསུངས་པ་སྤྱར་...  
 འཐད་ཕྱོགས་སུ་བརྒྱུད་དགོས་པར་སྤང་ངོ་།



བདག་ཉིད་ཆེན་པོ་འདི་དེ་གསུང་ཚུལ་ལ་འབྲེལ་བ་དང་འབྲེལ་བ་ཤད་སོགས་  
 ཇི་ལྟ་བུ་མཆིས་ཤིང་། དེ་ཡང་དབྱུ་མའི་བསྐྱེད་རིམ་གསུམ་ལ་རོང་ལྷོན་ཤེས་བྱ་  
 ཀྱན་རིག་གས་ཤུགས་ཀྱི་ལ་མཆོན་གྱིས་མཛད་པའི་འབྲེལ་བ་ཤིན་ཏུ་བྱས་པ་ཞིག་  
 ཡོད་པ་ནི། བཀ་ཆེན་ཤུགས་ཆོག་ལྷན་གྱིས་མཛད་པའི་རོང་ལྷོན་གྱི་ནམ་ཐར་  
 དད་པའི་རོལ་མཆོལས་ཀྱི། “སྤྱིར་དབྱུ་མ་རང་རྒྱུད་ཀྱི་བསྟན་བཅོས་དང་། རྒྱད་  
 བར་ཀམ་ལ་གྱི་ལའི་གསུང་རབ་ལ་ལྟ་བུའི་བྱ་བ་དེ་མཛད་། བསྐྱེད་བ་ཉམས་སྤྱི་  
 ལེན་པའི་རིམ་བ་ཡང་བསྐྱེད་རིམ་ཐོག་མཐའ་བར་གསུམ་གྱི་ལུགས་དང་མཐུན་པ་  
 བར་ཉམས་སྤྱི་བཞེས་ཤིང་གཞན་ལ་འདོམས་པར་མཛད་། དེ་གསུམ་གྱི་ནམ་  
 བཤད་བྱས་པ་མཛད་པ་པོ་སྤོན་མ་རྒྱུད་ཡང་། ཇི་འདི་ཉིད་ཀྱིས་མཛད་པའི་དང་།  
 དེ་ལྟ་བུའི་ནམ་བཤད་པོ་མཛར་ཅན་དེ་ནི་ཇི་ཇི་དེ་ཀྱིས་མཛད་པའི་གསུང་རབ་ནམས་  
 ཀྱི་ནང་ནས་རྒྱད་པར་དུ་འཕགས་པ་ཞིག་ཡིན་ནོ།” །ཞེས་གསུངས་སོ། །  
 ཡང་བསྟན་དར་སྤྲུགས་རམ་གྱིས་མཛད་པའི་དབྱུ་མ་སྤྱང་བའི་གཞུང་དོན་ནམས་པ་  
 ཚོད་ལན་གྱི་སྒྲོ་ནས་བསྟན་པ་དབྱུ་མ་སྤྱང་བའི་བཞེད་ཐོ་ཞེས་པ་དང་། འཇམ་  
 དབྱངས་མཁའ་བཞེད་ཀྱི་གསུང་འབུམ་ཆ་བར་བསྐྱེད་རིམ་བར་པའི་ས་བཅད་ཞིག་  
 ཀྱང་མཆིས་སོ། །

དབྱུ་མ་རྒྱན་གྱི་དཀར་འབྲེལ་འདི་སྤོབ་དཔོན་ཉིད་ཀྱི་གསུང་ཚུལ་ཡིན་མིན་  
 ལ་དོགས་གཞི་ཆེ་ལྟོ། དེ་ཡང་བཀའ་འབྲེལ་དེའི་བསྟན་དོན་དང་དབྱུ་མ་སྤྱང་བ་

1. ཆོས་འབྲུང་པོ་ལྷན་མང་བོར་རོང་ལྷོན་སྤྱི་བའི་མེད་པོ་འདི་ཉིད་ཀྱི་བྱ་བ་མས་པ་དང་།

སྤོབ་རིམ་ལ་ཐུགས་སྤྲུག་པར་མེས་ཤིང་། བ་དམ་བ་མངས་བྱས་དང་སྤོབ་དཔོན་ཀམ་ལ་ཤེས་ཀྱི་

སྤོབ་ཤིན་པར་གསུངས་སོ། 2. བོད་—མ་ 300 (ལྟོ་ལོ་—དེ་པ་)

གཉིས་མི་མཐུན་པར་གསུངས་ཏེ། རྗེ་བདག་ཅིང་ཆེན་པོ་འི་དབུ་མ་གྱི་ཕྱི་ཕྱོད་  
 བྱིས་ལས།<sup>1</sup> “དེས་ན་དཀར་འབྲེལ་ལས་སྤར་ལྷར་བཤད་པ་འདི་དབུ་མ་སྤར་  
 བ་དང་མི་མཐུན་ནོ། །དཀར་འབྲེལ་འདི་ཀམ་ལ་གྱི་ལའི་ཡིན་པར་ཆོས་ཀྱི་བཤེས་  
 གཉིན་ཡང་བཞེད་པས། འདི་ནི་སློབ་དབོན་གྱུགས་མ་རྒྱུགས་པའི་སྐབས་གཅིག་དུ་  
 མཛད་དམ་བདག་གོ།” ཞེས་དང་། ཡང་མཁས་གྲུབ་རྗེའི་རྒྱུད་སྡེ་སྡེ་ནས་ལས།<sup>2</sup>  
 “སློབ་དབོན་ཞི་བ་འཛོམས་དབུ་མ་གྱི་རང་འབྲེལ་དང་བཅས་པ་མཛད་ཅིང་།  
 དེའི་འབྲེལ་བཤད་སློབ་དབོན་ཀམ་ལ་གྱི་ལས་མཛད་ཟེར་བ་ནི་རྒྱན་མ་ཡིན་ནོ།”  
 ཞེས་དང་། ལྷང་རྒྱ་གྲུབ་མཐར་འཁོར་དེ་བཞེན་དུ་གསུངས་པའི་ཕྱིར་བོ།  
 ཞོ་གཉིས་པ། གསུང་རབ་ལ་དང་བ་བསྐྱེད་པའི་ཕྱིར་བཅུན་བཅས་ཀྱི་བཞེད་  
 བྱའི་ཆེ་བ་མདོར་བསྡུས་པའི་སྒྲོམ་བཅུན་པ་ལ་བཞི་ཏེ། (༡) སྒྲིར་སྒྲོམ་གྱི་ནམ་  
 བཞག་དང་། (༢) གང་བསྒྲོམ་པར་བྱ་གྱུརི་ཆོས་ཀྱི་ནམ་གངས་བཤད་པ།  
 (༣) འདིར་བཅུན་བསྒྲོམ་བྱའི་གཙོ་བོ་ཞི་ལྷག་གི་ནམ་བཞག་བཤད་པ།  
 (༤) བསྒྲོམ་རིམ་གྱི་བཞེད་བྱའི་ཆེ་བ་མདོར་བསྡུས་ནས་བཅུན་པ་དངོས་སོ།  
དང་པོ་སྒྲིར་སྒྲོམ་གྱི་ནམ་བཞག་བཅུན་པ་ནི།

དེ་ཡང་རྒྱལ་བའི་གསུང་རབ་དགོངས་འབྲེལ་དང་བཅས་པའི་བཞེད་བྱ་ཟེར་  
 ཅིང་བསྒྲིང་ལ་གྱུ་ཆེ་བ་དེ་དག་ནི་ཐོས་བསམ་ཅམ་དང་། ཕྱིར་གོ་བྱ་གཙོད་པ་  
 ཅམ་གྱི་ཆེད་དུ་མ་ཡིན་པར། ཐོས་བསམ་སྒྲོམ་གསུམ་གྱི་ཤེས་རབ་རིམ་གྱིས་  
 བསྐྱེད་པའི་སྒྲོམ་སྒྲིབ་པ་སྤྱང་བ་དང་། ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ཐོབ་པའི་ཕྱིར་དུ་

1. རྗེ་བ་སྤར་ཆ་ ༤༢༤ (བཟ་རྒྱན་—དེ་བ་)
2. མཁས་གྲུབ་ཉ་ ༤༠༩ (སྒྲི་བ་—དེ་བེ་གཞུགས་)
3. ནང་གཞིས་ཀྱི་ ༣༡༡ (སྒྲི་བ་—དེ་བེ་གཞུགས་)



གསུང་པ་ཤ་སྟག་ཡིན་དེ། དེ་དག་ཐམས་ཅད་ཀྱང་སྐྱབ་པ་ལ་གཞིལ་བ། སྐྱབ་  
པ་ལ་འབབ་པ་ཁོ་ན་ཡིན་པའི་སྤྱིར་རོ།

འོན་འདྲིར་ཚུལ་དེ་རིལ་ལྟར་འཆད་པར་བྱེད་ཅེ་ན། སློབ་དཔོན་ཉིད་ཀྱིས་  
མཛད་པའི་བསྒྲུབ་རིམ་བར་པ་ལས།<sup>1</sup> “འབྲས་བུ་ཐམས་ཅད་མཁུན་པ་ཉིད་ཀྱི་རྒྱ་  
དང་རྒྱེན་དེ་དག་གང་ཞེ་ན། སྒྲུབ་པ། བདག་ལྷ་བྱ་དཔུང་ལོང་དང་འབྲ་བས་དེ་  
དག་བསྟན་པར་མི་བྱས་མེད་ཀྱི། འོན་ཀྱང་བཅོམ་ལྷན་འདས་ཉིད་ཀྱིས་མངོན་པར་  
རྒྱུགས་པར་སངས་རྒྱས་ནས་གདུལ་བྱ་ནམས་ལ་རི་སྐད་བཤད་པ་དེ་བཞིན་དུ་བདག་  
གིས་བཅོམ་ལྷན་འདས་ཉིད་ཀྱི་བཀའ་ཉིད་ཀྱིས་བཤད་དོ།” ཞེས་མཁུན་རབ་ནམ་  
དབྱེད་ཀྱི་དཔལ་ལ་མཐུ་སྤུལ་དུ་བྱིན་པ། ཚད་མེད་ཡོངས་གྲགས་ཀྱི་མཁས་པའི་  
དབང་བོ་དེས་ཀྱང་དེ་ལྟར་གསུངས་པར་མཛད་ན། ཟབ་རྒྱས་གསུང་རབ་ཀྱི་ཚུལ་  
ལ་སྒྲུབ་སྤངས་ཡོན་ཏན་བྱིས་ཤིན་དུ་ཡོངས་ཤིང་། མོངས་པ་བས་ཀྱང་ཆེས་  
མོངས་པ་བདག་ལྷ་བྱས་ཚུལ་དེ་རིལ་བ་བཞིན་བསྟན་མི་བྱས་པ་ལྷ་ཅི་སློམ། འོན་  
ཀྱང་རྒྱལ་བའི་བཀའ་དང་། དེའི་དགོངས་འགྲེལ་འཕགས་བོད་མཁས་པའི་གཞུང་  
ལུགས་ཚད་ལྷན་ནམས་ཁྲངས་སུ་བྱས་པ་ཉིད་ཀྱི་སྒྲོན་པ་བཤད་པར་བྱའོ།

### (༡) ཐོས་བསམ་སྒྲུབ་གསུམ་ལ་རིམ་བྱིས་སློབ་དགོས་ཚུལ།

དེ་ཡང་བསྒྲུབ་བྱ་ས་ལམ་གྱི་ནམ་བཞག་ཟབ་ཅིང་རྒྱ་ཆེ་བ་རི་སྐད་ཅིག་ཡོད་  
པ་ནམས་ཐོག་མར་ཐོས་བསམ་བྱིས་གདན་ལ་པབ་སྟེ་སྒྲུབ་པ་གནད་ཆེ་བས་ཐོག་...

1. ཐཱི་-བཙུན་ (དབྱ་མ་ 'ཀེ' ༤༢)

མར་ཐོས་པ་གཡ་ཆེ་ཤི། དེ་ཡང་རི་རྒྱུད་དུ།

ཐོས་ཏུང་དཔུས་ཡོང་སྒྲོམ་པའི་ཚལ་མི་ཤེས། །

དེ་མེད་དེས་གོ་ཅི་ཞིག་བསམ་པར་བྱ། །

དེ་བས་ཐོས་ལ་བཙོན་བྱ་དེ་རྒྱུ་ལས། །

བསམ་བཞིན་བསྒྲོམས་ལས་ཤེས་རབ་ཡངས་པ་འབྱུང་། །

ཞེས་གསུངས་ཤིང་། དེ་བཞིན་དུ་མངོ་སྤེ་བྱན་ལས།<sup>2</sup>

འདིན་དང་པོ་ཐོས་ལ་བཙོན་ནས་ཚལ་བཞིན་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་འབྱུང་། །

ཚལ་བཞིན་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་གོམས་ལས་ཡང་དག་དོན་ཡུལ་ཡེ་ཤེས་འབྱུང་། །

ཞེས་ཐོས་པའི་དོན་ནམས་བསམ་བྱུང་གི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་ཚལ་བཞིན་དུ་ཡིད་ལ་བྱས་

པ་ལས་ཡང་དག་པའི་དོན་མངོན་སུམ་དུ་དོགས་པའི་སྒྲོམ་བྱུང་འབྱུང་བར་གསུངས་

པའི་ཕྱིར་པོ། །དེས་ན་གང་ཉིས་སུ་སྒྲུང་གྱུ་དེ་དང་པོར་གཞན་ལས་མཉན་ནས་གཞན་

སྟོབས་ཀྱིས་ངེས་པར་བྱེད། དེ་ནས་ཐོས་པའི་དོན་དེ་རང་གིས་ཁྱང་དང་རྟེན་པས་

ཚལ་བཞིན་དུ་བསམས་ཏེ་རང་སྟོབས་ཀྱིས་ངེས་པར་བྱེད། དེ་ལྟར་ཐོས་བསམ་གྱིས་

ངེས་པར་བྱས་ཏེ། ཐེ་ཚོམ་དང་བྲམ་བ་ན་ཡང་དང་ཡང་དུ་འདྲིས་པར་བྱེད་པ་ལ་

སྒྲོམ་པ་ཞེས་བྱ། །དེ་ལྟར་ཐོས་བསམ་ལས་བྱུང་བའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་ཚོས་ནམས་

ཀྱི་རང་དང་སྦྱིའི་མཚན་ཉིད་དང་། ཟབ་མོ་འི་ལྟ་བའི་གནད་ལ་སྒྲོ་འདོགས་ཆོད་

ཅིང་ངེས་པ་རྙེད་པའི་དོན་དེ་ཉིད་སྒྲོམ་པས་སྐྱེད་ལ་སྦྱོར་ཞིང་ཉམས་སུ་སྒྲུང་བར་……

- 
1. བྱང་འཕྲིན་འདི་གཞུང་འགན་ཞུགས་ཏུ་‘མར་ཐོན་བཅུས་པ་ལས་’ཞེས་དང་། འགན་ཞུགས་ཏུ་  
‘སྒྲོམ་དབུན་དཔུས་པོ་འི་གསུང་ལས་’ ཞེས་གསལ་ཡང་དངོས་དོན་གཞུང་གང་གི་ཚོགས་ཡོན་ཚོས་  
ཞེས་ངེས་རྙེད་པ་བྱུང་བས་དཔྱད་པར་བྱ། 2. རྟེ་—བཅུན་(ཞེས་པ་ཙམ་པོ་ 2 )



བྱ་དགོས་ཀྱི། སྒྲིམ་པ་དང་བྲལ་བའི་ཐོས་བསམ་ཆེ་ལྷན་ཟེལ་ཀྱང་ཉོན་མོངས་པའི་  
འཆིང་བ་ལས་གྲོལ་བར་མི་འགྱུར་དེ། དཔེར་ན། ཉན་པ་གཏར་སྟེག་སོགས་  
སྒྲིམ་དབྱུང་དང་། སྒྲིམ་སྒྲུབ་ལ་ཆེ་ལྷན་མཁས་ཀྱང་ཉན་གསོ་བའི་སྒྲིམ་ཡོངས་སུ་  
མ་སྒྱུད་ན་ནད་ཀྱི་ཆུག་རྩ་སེལ་མི་ཉུས་པ་བཞིན་ནོ།

### ༡) སྒྲིམ་དང་སྒྲིམ་བྱུང་གི་ཁྱད་པར།

དེ་ལ་སྒྲིམ་དང་སྒྲིམ་བྱུང་གཉིས་ཀྱི་ཁྱད་པར་ཆེ་ལྷ་བྱ་ཞེ་ན། དང་བོ་སྒྲིམ་  
གྱི་ངོ་བོ་ནི།<sup>1</sup> ཐོས་བསམ་གྱི་དོན་ལ་ཆད་མས་སྒྲོ་འདོགས་བཅད་དེ། ཇེས་  
པའི་དོན་ལ་དབྱུང་འཛུགས་ཅི་རིགས་ཀྱི་སྒྲོ་ནས་ཡིད་དོན་དེ་ལས་གཞན་དུ་མི་གཡེང་  
བར་ཁ་ནད་དུ་སྒྱེགས་དེ། དོན་དེ་ཉིད་བནན་དེ་ཡིད་ལ་འདྲིས་པར་བྱེད་པ་ལ་བྱའོ།  
དེ་ཡང་ལམ་རིམ་ཆེན་མོ་ལས་<sup>2</sup> “དེ་ལྷན་ཐོས་བསམ་གྱིས་ཇེས་པར་བྱས་དེ།  
ཐེ་ཚོས་དང་བྲལ་བ་ན་ཡང་དང་ཡང་དུ་འདྲིས་པར་བྱེད་པ་ལ་སྒྲིམ་པ་ཞེས་ཟེར་……  
བས།” ཞེས་གསུངས་སོ།

གཉིས་པ་སྒྲིམ་བྱུང་གི་ངོ་བོ་ནི། བསམ་བྱུང་གིས་ཇེས་པའི་དོན་ལ་དབྱུང་  
འཛུགས་ཅི་རིགས་ཀྱི་སྒྲོ་ནས་ཅི་གཅིག་དུ་དམིགས་དེ་གོམས་པ་ལས་བྱུང་བ་དེ་ཡིན་  
པའི་ཕྱིར་དེ། ལེགས་བཤད་གསེར་བྲང་ལས་<sup>3</sup> “ཇེས་པ་རྟེན་པ་དེ་ཉིད་ཅི་  
གཅིག་པའི་དྲིང་ངེ་འཛིན་གྱིས་བསྒྲོམས་པ་ལས་བྱུང་བ་ནི་སྒྲིམ་བྱུང་གི་ཤེས་རབ་……  
དུ་འདོད་པར་བྱའོ” ཞེས་གསུངས་པའི་ཕྱིར་རོ།

1. འཇམ་དབྱངས་བཞུགས་པའི་གསུངས་ཐོས་བསམ་སྒྲོམ་གསུམ་གྱི་ནམ་བཞུགས་སོ།

(གསུང་‘ན’ ༤༩༢ ཐེ་ལོ་—དེ་བ་གཟུགས་) 2. ཆེ་‘པ’ ༤༢ (བཟ་ལྷན་—དེ་བ་)

3. ཆེ་‘ཙ’ ༡༡ (བཟ་ལྷན་—དེ་བ་)

(3) གློ་ལ་དབྱུང་གློ་དང་འཛོལ་གློ་གཉིས་འབྲུག་པའི་རྒྱ་མཚན།

དེ་ཡང་གསུང་རབ་ཀྱི་དོན་ལ་དབྱུང་གྱིན་གློ་པ་དང་། མི་དབྱུང་པའི་  
འཛོལ་གློ་གཉིས་ཀ་དགོས་དེ། ཐོས་བསམ་གྱིས་གདན་ལ་ཕབ་པ་དེ་ལ་མི་  
དབྱུང་པར་འཛོལ་པ་དང་། སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་དབྱུང་ནས་གློ་  
པ་གཉིས་ཀ་སྤང་བའི་ཕྱིར་རོ། །གློ་ཞེས་པ་རྒྱ་རྒྱུང་ཞིག་ལ་མི་བརྟུང་དེ།  
དང་པ་གློ་པ་དང་། ཚད་མེད་བཞི་དང་། བྱང་རྒྱུ་ཀྱི་སེམས་གློ་པ་དང་།  
མི་རྟོག་པ་དང་རྒྱལ་བསྐལ་གློ་པ་ཞེས་གསུངས་པ་ལྟ་བུ་ཡང་དང་ཡང་དུ་དབྱུང་།  
ནས་སྦྱོང་དགོས་པ་ལ་གློ་དུ་གསུངས་པ་མཐའ་ལས་པ་ཞིག་སྤང་བའི་ཕྱིར་རོ། །

དེས་ན་ཐེག་པ་ཆེ་རྒྱུ་གི་ཡོན་ཏན་ཐམས་ཅད་སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཤེས་རབ་  
ཀྱིས་དབྱུང་ནས་སྦྱོང་བ་དང་། མི་དབྱུང་པར་དམིགས་པ་ལ་ཅེ་གཅིག་དུ་འཛོལ་  
པ་གཉིས་ཀྱིས་བསྐྱབ་དགོས་པ་ཡིན་གྱི། དབྱུང་འཛོལ་ཕྱོགས་རེ་བས་བསྐྱབ་པ་  
མིན་ནོ། །དོན་དེ་ལ་དགོངས་ནས་ཇེ་བདག་ཉིད་ཆེན་པོས། དག་སྦྱོར་གྱི་གནད་ཀྱི་  
དྲི་བ་སྟན་བསྐལ་ལྟག་བསམ་རབ་དཀར་ལས།<sup>1</sup> “གཞན་ཡང་གློ་ལ་དབྱུང་གློ་  
དང་འཛོལ་གློ་གཉིས་འོང་ངམ་མི་འོང་། མི་འོང་ན་རྒྱ་གར་བའི་ཚད་ལྡན་ནམས་  
ཀྱིས་གསུངས་པ་འདི་འགོག་གས། འོང་ན་གློ་ལ་དེ་གཉིས་སུ་འབྱེད་པའི་རྒྱ་  
མཚན་ཅི་ཡིན། ཡང་དབྱུང་གློ་གློ་ཡིན་ནམ་མ་ཡིན། མ་ཡིན་ན་རྒྱ་གར་མཁས་  
པ་ནམས་ཀྱིས་གློ་དུ་གསུངས་འདུག་པ་དེ་ནོར་རམ།” ཞེས་གསུངས་ཞིང་།  
དོན་དེ་ཉིད་ཆ་ཁོ་དབོན་པོ་མཁན་ཆེན་ངག་དབང་གྲགས་པས་མཛད་པའི་དྲི་བ་……  
ལྟག་བསམ་རབ་དཀར་དེ་ཉིད་ཀྱི་ལྟ་གློ་དྲི་ལན་ལས།<sup>2</sup> “གློ་ལ་དབྱུང་གློ་

1 ཇེ་ཁ་ཐོན་ཕ་ ༡༤༩ (ཐམ་ལྟན་-དེབ་)

2. ཐོན་ཁ་ ༤༧ (ཐོ་ཐོ་-དེབ་)



འཛིག་སྒྲོམ་གཉིས་ངེས་པར་ཡོད་ལ། དང་པོ་སྒྲོམ་མཚན་ཉིད་པ་ཡིན་དེ། དེ་  
 ལྟ་མཉན་ན་གྲུ་གར་བའི་མཁས་པས་དེ་སྒྲོམ་དུ་གསུངས་པ་དང་འགལ་བ་མ་ཟད།  
 ལྟ་བུ་མཐོང་སྒྲོམ་མིན་པར་ཐལ་བའི་ཕྱིར་རོ། སྒྲོམ་ལ་དེ་གཉིས་སུ་འབྱེད་པའི་  
 རྒྱ་མཚན་ཡང་། རྒྱའི་འཛིན་སྤངས་ཤུགས་དྲག་གཙོ་བོར་སྐྱབ་པ་དང་། དམིཏ་  
 བའི་གསལ་སྤང་གཙོ་བོར་སྐྱབ་པའི་དབང་གིས་ཡིན་དེ། བཤེས་གཉིན་ལ་དད་པ་  
 སྒྲོམ་པ་དང་། འཁོར་བའི་སྤྲུག་བསྐྱེད་དང་། ལས་རྒྱ་འབྲས་སེམས་པ་སོགས་  
 ལ་སྤྲུམ་གཙོ་ཆེ། ཞི་གནས་ལྟ་བུའི་འཛིག་སྒྲོམ་ལ་སྤྱི་མ་གཙོ་བོར་དགོས་པའི་  
 ཕྱིར།” ཞེས་གསུང་། དེ་བཞིན་དུ་བཀ་ཆེན་སྒོ་བཟང་ཆོས་རྒྱན་གྱིས་མཛོད་པའི་  
 ལྟ་བུ་བསམ་རབ་དཀར་གྱི་བྱི་ལན་སྒོ་བཟང་བཞུད་པའི་སྒྲུ་དབྱངས་ལས་ཀྱང་།

དེས་ན་སྒྲོམ་ལ་དབྱད་འཛིག་གཉིས། །

བྱེད་ཅིང་བྱེད་པའི་རྒྱ་མཚན་ཡང་། །

ཐར་པ་འདོད་པས་ཞི་གནས་དང་།

ལྟ་བུ་མཐོང་ངེས་པར་བསྐྱབ་དགོས་ཕྱིར། ཁེས་སྒྲོམ་ལ་དབྱད་

འཛིག་གཉིས་འཐད་པའི་སྐྱབ་བྱེད་རྒྱ་མཚན་དང་བཅས་དེ་གསུངས་སོ། །

དེ་ཡང་སྒྲོམ་ཐམས་ཅད་འཛིག་སྒྲོམ་དུ་འདོད་པ་ནི། སྒྲོམ་གྱི་ངོས་འཛིན་ཅུལ་  
 རྩལ་ཅུང་བ་ཡིན་དེ། ལས་རིམ་ཆེན་མོ་ལས།<sup>1</sup> “དེས་ན་སྒྲོམ་ཐམས་ཅད་འཛིག་  
 སྒྲོམ་དུ་འདོད་པ་ནི། དཔེར་ན། བས་དོག་གཅིག་བརྒྱུད་ནས་འབྱུང་ཐམས་ཅད་  
 འདི་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ། ཞེས་ཟེར་བ་དང་འདྲ་བ་ཡིན་ནོ།” ཞེས་གསུངས་པས་སོ། །  
 དེས་ན་དབྱད་འཛིག་སྤྱོད་པའི་བས་ཆོསས་པར་ས་བྱས་པར་མཁས་པའི་དབང་པོ་

1. བོད་ཡང་། ༥ (བོད་པོག་-དཔེ་རིང་) 2. ཆེ་ལ་ ༤༩ (བཀ་སྐྱར་དེ་བ་གཞུགས་)

ཀམ་ལ་གྱི་ལས་སྒྲིམ་རིམ་དུ་གསུངས་པ་བཞིན་དབྱེད་སྒྲིམ་དགོས་པ་ལ་དབྱེད་སྒྲིམ་...  
 དང་། འཛེག་སྒྲིམ་དགོས་པ་ལ་འཛེག་སྒྲིམ། དབྱེད་འཛེག་སྒྲིམ་ལ་དགོས་པ་  
 ལ་དེ་བཞིན་དུ་སྒྲིམ་པའི་སྒྲིམ་ཉིང་འཛེག་སྒྲིམ་མེད་པ་བརྒྱུ་དགོས་སོ།

(=) དབྱེད་སྒྲིམ་དང་འཛེག་སྒྲིམ་གྱི་ཁྱད་པར།

དབྱེད་སྒྲིམ་ནི་—དབྱེད་བྱའི་གཞི་གང་ཡིན་བསམ་བྱུང་གིས་ཐེ་ཚོམ་ཆོད་པར་  
 བྱས་པ་དེ་ལ། འཕྲོ་ཆོད་ཀྱིས་བར་མ་ཆོད་ཅིང་བྱིང་མྱུགས་ཀྱི་གཞན་དབང་དུ་མ་  
 སོང་བར་བྱན་ཤེས་ངར་ལྷན་གྱུན་དུ་བཞུགས་པའི་སྒྲིམ་གྱི་མཚན་ནམས་སོ་སོར་...  
 རྟོག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་བརྟེན་ཤིང་དབྱེད་པའི་སྒྲིམ་ངས་ཤེས་ཡང་ཡང་འདྲན་...  
 བར་བྱེད་ཅིང་སྒྲིམ་པའོ། འཛེག་སྒྲིམ་ནི་—དམིགས་དེན་ངས་ཟིན་པ་དེ་གཅིག་  
 ལྷ་ལ་འཕྲོ་ཆོད་ཀྱིས་བར་དུ་མ་ཆོད་ཅིང་། བྱིང་མྱུགས་ཀྱི་གཞན་དབང་དུ་མ་སོང་  
 བར་ཅེ་གཅིག་དུ་འཛེག་པའོ། རྟེན་ལྷན་ཡིན་པ་ཡང་སྒྲིམ་སྒྲིམ་གྱིས་བྱུང་མཚན་  
 ཀྱིས་མཛོད་པའི་སྒྲིམ་གཞན་པན་དོན་གཉིས་ལས།

བསམ་བྱུང་ཤེས་རབ་ཀྱིས་རྟོགས་པའི།

ཐེ་ཚོམ་བྲལ་བའི་དོན་ཉིད་ལ།

སྒྲིམ་ཡང་བརྟགས་ཤིང་དབྱེད་བྱས་ནས།

བརྟན་བར་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་ལ།

དབྱེད་སྒྲིམ་ཞེས་བྱར་བཤད་པ་ཡིན།

མི་དབྱེད་ཅེ་གཅིག་འཛེག་པ་ནི།

འཛེག་སྒྲིམ་ཞེས་བྱར་མཁས་ནམས་བཞེད། ཁེས་གསུངས་པའི་



ཕྱིར་རོ། །འདི་ལ་ཁ་ཅིག་གིས་དང་པོ་ནས་མི་དབྱེད་པ་མི་འདོད་ཀྱང་། ཐོས་  
 བསམ་གྱིས་གཏན་ལ་ཕབ་ཟིན་ནས་སྒྲོམ་པའི་ཆེ་དབྱེད་སྒྲོམ་མི་དགོས་སོ་སྒྲུམ་ན།  
 དེ་ལྟ་ན་མཐོང་ལས་དུ་བདག་མེད་པ་མངོན་སུམ་དུ་རྟོགས་པ་ཡིན་པས། དེ་ནས་  
 བདག་མེད་མཐོང་ཟིན་སྒྲོམ་པ་དོན་མེད་པར་འགྱུར་རོ། །གལ་ཏེ་དེ་ནི་དགོས་  
 ཏེ། སྒྲོམ་སྤངས་ནམས་སྒྲོམ་པས་སྤོང་གི། མཐོང་བ་ཙམ་གྱིས་མི་སྤོང་ངོ་སྒྲུམ་ན།  
 འདིར་ཡང་མཚུངས་ཏེ། སྤར་ཐོས་བསམ་གྱིས་གཏན་ལ་ཕབ་དེ་ངེས་ཟིན་ཀྱང་།  
 བདག་མེད་པའི་དོན་ལ་སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཤེས་རབ་གྱིས་བརྟགས་ཤིང་དབྱེད་པའི་  
 སྒྲོ་ནས་སྒྲོམ་པར་མ་བྱས་ན། བསྒྲོམ་བྱའི་དོན་ལ་ངེས་ཤེས་གྲགས་དྲག་པ་  
 དང་། རྒྱུན་རིང་བ་དང་། རྣམ་པར་གསལ་བ་དང་བརྟན་པར་འགྱུར་བ་སོགས་  
 མི་འབྱུང་བའི་ཕྱིར་རོ།

(༡) བྱེ་བྲག་དུ་དབྱེད་སྒྲོམ་འཐད་པའི་སྐྱབ་བྱེད་བཅུན་པ།

དེ་ལ་དང་པོ་ཁྱང་གེ་སྐྱབ་བྱེད་ནི།— དེ་ཡང་བདག་མེད་པའི་དོན་ལ་སོ་  
 སོར་རྟོག་པའི་ཤེས་རབ་གྱིས་དབྱེད་ནས་སྤོང་ཚུལ་འདི་ལ་གྲུལ་བའི་བཀའ་དང་།  
 དེའི་དགོངས་འགྲེལ་འཕགས་བོད་མཁས་པའི་གཞུང་ལྷགས་ཆད་ལྷན་གྱི་ཁྱད་སྤངས་...  
 རི་ལྟར་ཡོད་ཅེ་ན། འདི་ལྟ་སྟེ། འཕགས་པ་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྲུལ་བོའི་མདོ་ལས།

གལ་ཏེ་ཆོས་ལ་བདག་མེད་སོ་སོར་རྟོག་།

སོ་སོར་དེ་བརྟགས་གལ་ཏེ་བསྒྲོམ་པ་ནི། །

དེ་ཉིད་བྱ་ངན་འདས་ཐོབ་འབྲས་བྱའི་རྒྱ།

ལྷ་གཞན་གང་ཡིན་དེས་ནི་ཞི་མི་འགྱུར། །ཞེས་བདག་མེད་པའི་  
 རྟོན་ལ་སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་བདག་ས་ཤིང་རབྱུང་བའི་སྒྲོ་ནས་སྒྲོས་.....  
 ན་ཐོབ་བྱའི་འབྲས་བུ་ཐུང་འདས་ཐོབ་ཀྱས་ཀྱི། ལྷ་གཞན་གྱིས་ནི་མ་ཡིན་པར་  
 གསུངས་སོ།།

འཕགས་པ་དགོངས་པ་ངེས་པར་འགྲེལ་བ་ལས་<sup>1</sup>། “དེ་ལྟར་དྲིང་ངེ་འཛིན་  
 གྱི་སྦྱོད་ལྷལ་གཟུགས་བརྟན་དེ་དག་ལ་ཤེས་བྱའི་རྟོན་དེ་ནམ་པར་འབྱེད་པ་དང་།  
 རབ་དུ་ནམ་པར་འབྱེད་པ་དང་། ཡོངས་སུ་རྟོག་པ་དང་། ཡོངས་སུ་སྦྱོད་པ་  
 དང་། བཟོད་པ་དང་། འདོད་པ་དང་། བྱེད་པ་འབྱེད་པ་དང་། ལྷ་བ་  
 དང་རྟོག་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་ལྷ་ག་མཐོང་ཞེས་བྱ་ཏེ། དེ་ལྟར་ན་བྱང་ཆུབ་སེམས་  
 དཔའ་ལྷ་ག་མཐོང་ལ་མཁས་པ་ཡིན་ནོ།” ཞེས་ཇི་ལྷ་ཇི་སྦྱོད་ཀྱི་ཆོས་ནམས་ཀྱི་  
 གཟུགས་བརྟན་དེ་དག་ལ་སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་རབ་དུ་ནམ་པར་འབྱེད་  
 པ་དང་། བྱེད་པ་འབྱེད་པར་བྱེད་པ་ལ་ལྷ་ག་མཐོང་དུ་གསུངས་པས་སོ། །དེ་  
 བཞིན་དུ་ཇི་བཙན་བྱམས་པའི་མངོན་རྟོགས་རྒྱུ་ལས་<sup>2</sup>།

ངེས་འབྱེད་ཡན་ལག་དང་མཐོང་བའི་ །

ལམ་དང་སྒྲོས་པའི་ལམ་ཉིད་ལ། །

ཡང་དང་ཡང་དུ་སེམས་པ་དང་། །

འཇམ་དང་ངེས་རྟོག་སྒྲོས་པའི་ལམ། །ཞེས་གསུངས་ཞིང་།

ཇི་ལྷ་ལམ་རིམ་ཆེན་མོར་<sup>3</sup>ལྷང་དེ་དྲངས་མ་ཐག་དུ་འདི་ལྟར་གསུངས་ཏེ། “ཐེག་

1. ལྷ་-བཀའ་(མདོ་ 'ཅ' 25) 2. ལྷ་-བརྟན་(ཤིང་བྱེད་ 'ཀ' 2)

3. ཇི་- 'བ' 28 (བཟ་ལྷན་-དེབ་)



ཆེན་འཕགས་པའི་སྒྲོམ་ལས་ཡིན་པའི་ཡང་ཡང་སེམས་པ་དང་། འཇལ་བ་དང་།  
ངས་པར་དྲི་བ་ཡོད་པར་གསུངས་པ་ལ། དབྱུང་ནས་སྤང་བ་དང་སྒྲོམ་གཉིས་  
འགལ་བར་འདོད་པ་ནི་བཞུགས་ཀྱི་གནས་སོ།” །ཞེས་གསུངས་སོ། །

རེན་ཆེན་འབྲུང་གནས་ཞི་བས་མཛད་པའི་ཤེར་ཕྱིན་མན་ངག་ལས།<sup>1</sup> “ཆེ་  
སྤྱིད་གཞུགས་ཀྱི་ཁམས་ནས་ཡིད་ཀྱི་ཁམས་ཀྱི་བར་ལ་མང་དུ་རྣམ་པར་དབྱེ་བར་བྱ།  
ཡོངས་སུ་རྣམ་པར་བརྟག་པར་བྱ། ཡོངས་སུ་དབྱོད་པའི་ཡིད་ཀྱིས་ལྷག་མཐོང་  
ཆོགས་པར་བྱའོ།” །ཞེས་དང་། མདོ་སྤྱི་རྒྱན་ལས།<sup>2</sup>

ཡང་དག་གནས་པ་ལ་བརྟེན་ནས།

སེམས་ལ་སེམས་ནི་འཛོལ་ཕྱིར་དང་།

ཆོས་རབ་རྣམ་པར་འབྱེད་པའི་ཕྱིར།

ཞི་གནས་དང་ནི་ལྷག་མཐོང་ཡིན།

ཞེས་ཆོས་རབ་དུ་རྣམ་

པར་འབྱེད་པའི་ཤེས་རབ་ལ་ལྷག་མཐོང་དུ་གསུངས་སོ། །དུས་འཁོར་འགྲེལ་

ཆེན་འི་མེད་འདོད་ལས་<sup>3</sup>ཀྱང་། “དེའི་ཕྱིར་ཡོངས་སུ་བརྟག་པ་དང་བྲལ་བ་འདི་

ནི་བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱི་གསུང་དུ་མི་འགྱུར་དེ། བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱི་གསུང་ནི་

ཐོག་མར་དགེ་བ་བར་དུ་དགེ་བ་ཐ་མར་དགེ་བའོ།” །ཞེས་དང་། འཕགས་

པ་དགའ་བོ་མངལ་ན་གནས་པར་བཟུན་པའི་མདོ་ལས།<sup>4</sup> “འདི་སྐད་དུ། དགེ་

སྤྱོད་གྲོ་ཏ་མ་ནི་བདག་གི་ཕྱོད་པ་ཆེན་པོ་ཡིན་ནོ་ཞེས་མ་ཟེར་བར། ངས་མངོན་

པར་ཆོགས་པར་སངས་རྒྱས་པའི་ཆོས་གང་ཡིན་པ་དེ་གཅིག་གི་ཕྱ དབེན་པར་སང་...

1. ཐཱ་-བཟུན་(ཁེམས་ཅམ་ 'དེ' ༡༣༢) 2. ཐཱ་-བཟུན་(ཁེམས་ཅམ་ 'ཐཱ' ༣༡)

3. ཐཱ་-བཟུན་(ཐཱ་'ཐཱ་ཐཱ་ཐཱ' ༤༠༤) 4. ཐཱ་-བཟུན་(དཀོན་བཙུགས་'ག' ༢༢༦)

ཡི་ཡིད་ལ་བསམས་དེ། འཇམ་བར་གྱིས་ཤིག། སོ་སོར་རྟོགས་ཤིག། །  
 དྲག་བར་མང་དུ་སྒྲོམས་ཤིག། །སེམས་ཅེ་གཅིག་དུ་ཆོས་རྣམས་སོ་སོར་བདར་དེ།  
 ཆོས་དེ་དག་ལས་སྒྲོམ་བའི་འདུ་ཤེས་ཡོངས་སུ་རྫོགས་བར་བྱས་དེ། ཡང་  
 དྲག་བའི་དྲན་བ་ལ་གནས་ནས་བདག་ཉིད་ཀྱི་སྒྲིང་བྱས་ཤིག། བདག་ཉིད་ཀྱི་  
 གནས་དང་སྒྱབས་བྱས་ཤིག།” ཞེས་དང་། དེ་བཞིན་དུ་བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱིས་  
 དག་སྒྲོང་དག་གས་མཁས་རྣམས་ཀྱིས། །  
 བསྐྱེད་པས་བཅད་བདར་བའི་གསེར་བཞིན་དུ། །  
 ལྷགས་བར་བདགས་ལ་ང་ཡི་བཀའ། །  
 སྒྲིང་བར་བྱ་ཡི་གུས་ཕྱིར་མེན། ཞེས་གང་ཟག་ལ་མི་རྟོན་བར་

1. དེ་དང་ཀྱི་མཁས་པ་མང་པོས་ཁྱང་ལྟ་མཐོ་ཆོག་མ་ཡིན་ཞིང་བརྟན་བཅོས་ཞིག་གི་ཆོག་ཡིན་  
 བར་དོགས་ཀྱང་། དུས་འཁོར་འགྲེལ་ཆེན་མོ་མེད་འོད་ (ཁྱད་མེ་ ༩༩) དང་། འཇགས་པ་  
 རྒྱུ་ཡི་ཤེས་ཀྱིང་པོ་ཀྱན་ལས་བདུས་པ་ (དབུ་མ་ཆ་ ༢༥) དེའི་བཤད་སྒྲུབ་དབུ་དབུ་བྱང་  
 རྒྱུ་པ་མང་པོས་མཛད་པ་ (དབུ་མ་ཆ་ ༩༩) མཁན་ཆེན་ཞི་བ་འཛོའི་ཆོད་མའི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་  
 བསྐྱེད་པ་ (ཆོད་མ་ཟེ་ ༡༣༠) དེའི་དཀའ་འགྲེལ་སྒྲུབ་དབུ་དབུ་ཀམ་པ་ཤེས་མཛད་པ་ (ཆོད་མ་  
 'འི་ ༣༢༣) ཡང་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཛད་པའི་དོགས་པའི་ཐོག་པའི་ཕྱི་གས་སྒྲུབ་མ་མཐོང་བསྐྱེད་པ་  
 (ཆོད་མ་ཟེ་ ༩༢) བཅས་སུ་ཁྱང་ལྟ་མཐོ་ཆོག་གྲུང་གི་དཀྱིལ་གྱི་བཀོད་ནས་སྒྲིང་བ་དང་། དེ་  
 དག་གི་ཐུང་ཀྱི་འགྲེལ་བ་དང་། ཐུང་ཀའ་ཁྱང་ལྟ་མཛད་པ་བཅས་ཆོང་མར་མཐོ་ཆོག་ཡིན་  
 བཀ་གས་སྒྲིང་བ་འདུག་པ་མ་ཟད། ལྷགས་སྒྲིང་དུ་ཡོད་པའང་མཐོ་ཆོག་དུ་འདོད་པར་ཁྱང་བས།  
 བརྟན་བཅོས་ཀྱི་ཆོག་ཡིན་པའི་དོགས་གཞི་ཙུ་བ་ནས་མེད། འོན་ཀྱང་མཐོ་ཆོག་གི་ཆོག་ཡིན་པ་  
 གང་ལྟོད་ཀྱི་གྲུང་གི་ཁྱང་ལྟ་མཛད་པ་དཀྱིལ་གྱི་ཁྱེད་མཐོ་ཆོག་དུ་ཡོད་པར་ཁྱང་བས། ཐུ་སྒྲིང་མངས་ཀྱིས་ཀྱི་  
 མཆོད་པའི་དུང་སྒྲིང་པོར་ (པོར་ཀ་ ༥ དེ་བ་ཀྱི་ཐུགས་) “མཐོ་སྒྲིང་པོ་བཀོད་པ་ལས་” ཞེས་  
 སྒྲིང་འདུག་པ་བཀའ་འདུག་ཐུ་ཐུ་དེ་ཐུ་དཔར་མར་“ཀྱན་སྒྲིང་པོ་བཀོད་པའི་མཐོ་”ཞེས་པ་ཞིག་  
 བཞུགས་པ་དེར་ནི་ཁྱང་ཆོག་འདོད་མེད་ཅང་། དེ་མེད་པོར་འདུག་ཀྱི་མཐོ་གཞན་དུ་ཡང་མ་རྟོག་  
 བས་སྒྲིང་རྟོག་ཆོག་ལས་པ་འདུག་ཀྱིས་ས།



ཆོས་ལ་དོན་པའི་སྒོ་ནས་བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱིས་ལེགས་པར་གསུངས་པའི་ཆོས་...  
ལ་སོ་སོར་དོག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་བདགས་ཤིང་དབྱེད་ནས་སྒོམ་པས་ཉམས་སྲུ་  
ལེན་དགོས་པ་ཤིན་ཏུ་གསལ་བར་གསུངས་སོ། །

དོན་དེ་ནི་འཕགས་པ་གོ་ཆའི་བཀོད་པ་བསྟན་པ་ལས།<sup>1</sup>

བྱང་ཆུབ་སེམས་དབང་སྒོ་ལྷན་དག །

ཐམས་ཅད་ཆོས་ནི་རབ་བདགས་ན། །

སྒྲེ་ཞིང་ཞི་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར། །

གསལ་བར་མཐོང་ནས་གཞིལ་བར་འགྱུར། ། ཞེས་དང་། ཡང་  
དེ་ཉིད་ལས།<sup>2</sup> “ཤེས་རབ་ཀྱི་མིག་གིས་སོ་སོར་བདགས་ནས་ཤེས་རབ་ཀྱི་ལྷས་  
གསལ་བར་གྱུར་པས། འོད་ཟེར་ཆེན་པོ་བཀྱེན་སྒྲུབ་ན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་  
ཐོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ལ་རབ་ཏུ་གཞིལ་བར་བྱེད་དོ།” ཞེས་གནས་ལུགས་ཀྱི་  
དོན་ལ་ཤེས་རབ་ཀྱི་མིག་གིས་སོ་སོར་བདགས་ནས་ཡང་དག་པར་ཐོགས་པའི་...  
བྱང་ཆུབ་ལ་གཞིལ་དགོས་པར་གསུངས་སོ། །

དེས་ན་གཞུང་དེ་དག་གི་བསྟན་དོན་གཙོ་བོ་ནི། སོ་སོར་དོག་པའི་  
ཤེས་རབ་དོར་ནས་ཅི་ཡང་ཡིད་ལ་མི་བྱེད་པ་ཟབ་མོ་འི་དོན་སྒྲོམ་པར་འདོད་པ་རྒྱ་  
ནག་མཁན་པོ་འི་ལུགས་འགོག་པ་ལ་དམིགས་སྤྱད་པའི་དགག་པ་གནད་ཆེ་.....  
ཤོས་སྲུ་སྒྲུང་ངོ་། །དེ་ལྟར་ཡིན་པ་རྒྱ་མཚན་གང་ལས་ཤེས་ཞེ་ན། དེ་དག་གི་  
འདོད་ཚུལ་གྱི་བྱང་བ་ཆོས་འབྱུང་ལོ་རྒྱུས་ནམས་སྤྱུ་གསལ་བ་བཞིན་རྒྱ་ནག་གི་...  
མཁན་པོ་ཉུ་ཤང་གིས། མདོ་སྤེ་དགོངས་འབྱེད་ཏུ་ལྷག་མཐོང་སོ་སོར་དོག་པའི་

1. ཐུ་-བཀའ་ (དཀོན་བརྟམས་ཀྱི་ ༩༩) 2. ཐུ་-བཀའ་ (དཀོན་བརྟམས་ཀྱི་ ༩༩)

ཤེས་རབ་ལ་བཤད་པ་དེ་ཉིད་རང་གི་ཙུང་བའི་བྱུང་མཐུན་དང་ཆེས་མི་མཐུན་པར་...  
 མཐོང་ནས། མདོ་སྡེ་དགོངས་འབྲེལ་དོག་པས་བྱིལ་ནས་འདི་ནམས་བཀའ་མིན་  
 བར་འདུག་ཅེས་ཟེར་བའི་ཕྱིར་རོ། །དོན་འདི་ནི་ལམ་རིམ་ཆེན་མོ་ལས།<sup>1</sup> བོང་  
 ཏུ་བཀོད་བའི་དགོངས་འབྲེལ་གྱི་ལུང་དེ་བྲངས་མ་ཐག་ཏུ་འདི་སྐད་ཅེས་གསུངས་  
 ཏེ། “མདོ་འདིས་ལྷག་མཐོང་སོ་སོར་དོག་བའི་ཤེས་རབ་ལ་བསྟོན་ས་མེད་པར་  
 ཤིན་ཏུ་གསལ་བར་བཤད་པ་འདི་མཐོང་ནས། གྱུ་ནག་གི་མཁན་པོ་ཏུ་གྲང་  
 གིས་འདི་མདོ་སྡེ་ཨེ་ཡིན་མི་ཤེས་ཞེས་སྒྲིམ་ནས་ཀང་བས་བྱིལ་ཞེས་གྲུ་དེ།  
 དེས་ནི་དོག་པ་གང་ཡིན་ཐམས་ཅད་མཆན་འཛིན་ཏུ་བརྒྱང་ནས་སོ་སོར་དོག་བའི་  
 ཤེས་རབ་དེར་དེ། ཅི་ཡང་ཡིད་ལ་མི་བྱེད་པ་ཟབ་མོ་དེ་དོན་སྒྲོམ་པར་འདོད་  
 བ་དང་མ་མཐུན་པས་དེ་ལྟར་བྱས་པའོ།” །ཞེས་གསུངས་པའི་ཕྱིར་རོ།

དབྱུང་སྒྲོམ་གྱི་ཚལ་ལྷགས་འདི་ནི། ཞི་གནས་མ་གྲུབ་པའི་སྔན་ཏུ་སྦྱོང་  
 དགོས་པར་མ་ཟད། བསམ་གཏན་གྱི་འོག་ཤེས་རབ་ཀྱི་སྐབས་སུ་ལྟ་བའི་དབྱུང་  
 བ་ནམས་གསུངས་པས། དེའི་རིམ་པའི་གནད་ཀྱིས་བསམ་གཏན་གྱི་ངོ་བོ་ཞི་  
 གནས་བསྐྱབས་པའི་ཇེས་སུ་ཡང་། བདག་མེད་པ་གཉིས་ཀྱི་དོན་ལ་སོ་སོར་དོག་  
 བའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་དབྱུང་ནས་སྦྱོང་དགོས་པ་ཡིན་དེ། སྤྱོད་དཔོན་ལེགས་ལྷན་  
 འབྱེད་ཀྱི་དབྱུང་སྒྲོམ་སྦྱོང་པོ་ལས།<sup>2</sup>

ཆོ་བྱས་མཉམ་བཞག་འོག་ཏུ་ནི།

ཐ་སྙད་སྒྲོ་ནས་གཞུང་བྱ་ཡི།

ཆོས་ནམས་དངོས་པོ་འདི་དག་ལ།

1. ཇི་བ་སྐད་ཆ་ 3 (བཏ་ལྷན་-དེབ་) 2. ཐུ་-བཏན་(དབྱ་མ་ལྷ་ ༩)



ཤེས་རབ་ཀྱིས་ནི་འདི་ལྟར་བདག་། ཅེས་གསུངས་པའི་ཕྱིར་རོ། །  
 དེ་བཞིན་དུ་རྗེའི་ལམ་རིམ་ཆེན་མོ་ལས།<sup>1</sup> “སྟོན་འཇུག་ལས་ཀྱང་ཞི་གནས་  
 བསམ་གཏན་ལུང་འབྱུང་བ་བཞིན་བསྐྱབས་ནས། དེ་ནས་ཤེས་རབ་སྒྲོམ་པ་  
 ན་རིགས་པའི་དབྱུང་བས་སྒྲོམ་པར་གསུངས་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེས་ན་པར་སྤྱོད་  
 བྲམ་གཉིས་ཀྱི་རིམ་པ་དང་། བསྐྱབ་པ་སྤྱོད་པ་གཉིས་ཀྱི་རིམ་པ་བསམས་ཅད་དྲིང་  
 རེ་འཛིན་སྟོན་དུ་བསྐྱབས་ནས་ཤེས་རབ་བསྒྲོམ་པའི་རིམ་པ་ཡིན་ལ། ཤེས་རབ་  
 དེའི་བསྒྲོམ་ཚུལ་ལ་རྗེ་ལྟ་བུ་དང་། རྗེ་སྟེང་པ་ལ་དབྱུང་བའི་སྒྲོ་ནས་གསུངས་པ་  
 བསམས་ཅད་བསྒྲོམ་པའི་རིམ་པ་ཡིན་པས་ལོག་པར་བདག་པར་མི་བྱའོ།” །ཞེས་  
 གསུངས་པས་སོ། །

མདོར་ན་རྒྱལ་བའི་གསུང་རབ་མཐའ་དག་དེ་བཞིན་ཉིད་ལ་གཞིལ་ཞིང་དེ་  
 བཞིན་ཉིད་ལ་བབས་པ་ཤ་སྟག་ཡིན་པས། ཞི་གནས་ཙམ་གྱིས་མི་ཆོག་པར་དེ་  
 ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་རོན་ལ་སོ་སོར་དོག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་ནམ་པར་དབྱུང་དེ་སྒྲོམ་……  
 དགོས་པ་ཡིན་དེ། དེ་ཡང་སྟོབ་དབོན་ཉིད་ཀྱིས་མཛད་པའི་བསྒྲོམ་རིམ་པར་བ་ལས།<sup>2</sup>  
 “བཅོས་ལྷན་འདས་ཀྱི་བཀའ་བསམས་ཅད་ནི་ལེགས་པར་གསུངས་པ་སྟེ། མངོན་  
 སུམ་མས་བརྒྱད་པས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་མངོན་སུམ་དུ་གསལ་བར་བྱེད་པ་དང་། དེ་  
 ཁོ་ན་ལ་གཞིལ་བ་ཉིད་དོ། །དེ་ཁོ་ན་ཤེས་ན་སྒྲུང་བ་བྱུང་བས་སུན་པ་བསལ་བ་  
 བཞིན་དུ་ལྟ་བའི་བྲ་བ་བསམས་ཅད་དང་བྲལ་བར་འགྱུར་རོ། །ཞི་གནས་ཙམ་གྱིས་  
 ནི་ཡེ་ཤེས་དག་པར་མི་འགྱུར་ཞིང་། སྒྲིབ་པའི་སུན་པ་ཡང་སེལ་བར་མི་འགྱུར་གྱི།  
 ཤེས་རབ་ཀྱིས་ནི་དེ་ཁོ་ན་ལྟར་བར་བསྒྲོམས་ན་ཡེ་ཤེས་ནམ་པར་དག་པར་འགྱུར།

1. རྗེ་ལ་སྟེང་པ་ ༣༤ (བཟ་ལྷན་—དེ་བ་) 2. རྗེ་—བཟ་ན་ (དབྲུག་—ཞེ་ ༤༤)

ཤེས་རབ་ཁོ་ནས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་རྟོགས་པར་འགྱུར། ཤེས་རབ་ཁོ་ནས་སྒྲིབ་པ་ཡང་  
 དག་པར་སྤོང་བར་འགྱུར་དེ། དེ་ལྟ་བུས་ན་བདག་གིས་ཞི་གནས་ལ་གནས་དེ།  
 ཤེས་རབ་ཀྱིས་དེ་ཁོ་ན་ཡོངས་སུ་བཅལ་བར་བྱའི། ཞི་གན་སེམས་ཀྱིས་ནི་ཆོག་  
 བར་འཇིན་པར་མི་བྱའོ།” །ཞེས་དང་། ཡང་བསྒྲོམ་རིམ་དང་པོ་ལས་  
 ཀྱང་། “དེ་ལྟར་དམགས་པ་དེ་ལ་སེམས་བདུན་པར་བྱས་ནས་ཤེས་རབ་ཀྱིས་ནས་  
 བར་དབྱེད་བར་བྱ་སྟེ་འདི་ལྟར་ཤེས་པའི་སྒྲིབ་པ་བྱུང་བས་ཀྱན་དུ་སྤོངས་པའི་ས་  
 བོན་ཤིན་དུ་སྤོང་བར་འགྱུར་རོ། །དེ་ལྟ་བུ་ཡིན་ན་སྟེ་གསུམ་ཅན་ནས་སྟེ་བཞི་ན་  
 དུ་དྲིང་ངེ་འཇིན་ཅམ་གྱིས་ཉིན་སྤོངས་པ་སྤོང་བར་མི་འགྱུར་རོ།” །ཞེས་དང་།  
 ཡང་བསྒྲོམ་རིམ་བར་པ་ལས།<sup>2</sup> “གང་ཞིག་ཤེས་རབ་ཀྱིས་དངོས་པོ་འདི་ངོ་བོ་ཉིད་  
 སོ་སོར་བདགས་ནས་མི་སྒྲོམ་གྱི། ཡིད་ལ་བྱེད་པ་ཡོངས་སུ་སྤོང་བ་ཅམ་འབའ་  
 ཞིག་སྒྲོམ་པར་བྱེད་པ་དེའི་ནས་པར་རྟོག་པ་ནས་ཡང་མི་སྒྲོག་ཅིང་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་  
 པ་ཉིད་རྟོགས་པར་ཡང་མི་འགྱུར་དེ། ཤེས་རབ་ཀྱི་སྤྱང་བ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །འདི་  
 ལྟར་ཡང་དག་པར་སོ་སོར་རྟོག་པ་ཉིད་ལས་ཡང་དག་པ་རི་ལྟ་བུ་བ་བཞིན་དུ་ཤེས་  
 བའི་མེ་བྱང་ན་གཙུབ་ཤིང་གཙུབས་པའི་མེ་བཞིན་དུ་རྟོག་པའི་ཤིང་བསྟེན་གོ་ཞེས་  
 བཅོམ་ཐུན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་བསྩལ་དོ།” །ཞེས་ཤིན་དུ་གསལ་ཞིང་ཟབ་པའི་  
 གསུང་ཚུལ་མད་དུ་བྱུང་བ་འདི་དག་ལ་ངས་པ་བྱང་བར་བྱའོ།

གཉིས་པ་རིགས་པའི་སྒྲུབ་བྱེད་ནི་— དེ་ཡང་ཤེས་བྱའི་ནས་བཞག་གི་ཁྱོན་  
 སྒྲིབ་དང་། ལྟག་པར་ཟབ་ཅིང་སྤྲ་ལ་གདིང་དཔོག་པར་དཀའ་བའི་ནང་དོན་རིག་  
 པའི་ཆོས་ཚུལ་ལ་སྒྲོ་གྲོས་ཀྱི་འཇུག་པ་ཐོགས་པ་མེད་པར་བྱེད་པ་ལ་དེ་དག་གི་



ཚུལ་རྟོགས་དགོས་ཤིང་། དེ་རྟོགས་པ་ལ་རིགས་པ་ཡང་དག་གི་ལམ་ནས་བདེ་  
 ཤིང་དབྱེད་པར་བྱེད་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱི་བསྐྱབ་པ་ལ་སློབ་དགོས་སོ། །ཚུལ་དེ་  
 ལས་ཐོག་དེ་ཅི་ཡང་ཡིད་ལ་མི་བྱེད་པར་སྒྲིངས་གཉིད་ཀྱི་གཞན་དབང་ཁོ་ནས་དུས་  
 འདྲའ་བར་བྱེད་པ་ནི། ཐུན་ཤིང་གཏི་ཐུག་པ་དུད་འགྲོ་ལི་ངང་ཚུལ་ལས་ཁྱད་  
 བར་འབྱེད་བྱེད་ཀྱི་ཤེས་རིག་རབ་དུ་བཀྲ་བ་དང་། ལེགས་ཉེས་སྒྲང་དོར་གྱི་  
 གནས་ནམས་ཇི་བཞིན་འབྱེད་པའི་ནམ་དབྱེད་སྒྲོ་གྲོས་ཀྱི་གཤམ་ཅལ་དང་ཐུན་པའི་  
 དགོས་པ་ཡོངས་སུ་ཕྱོར་བ་ཡིན་ནོ། །

དེས་ན་དྲི་མ་མེད་པའི་རིགས་པས་བདགས་ཤིང་དབྱེད་ནས་སྒྲོམ་པའི་ལམ་  
 སྒྲུལ་འདི་ནི་ཤིན་དུ་གཅེས་པའི་གནས་ཡིན་དེ། དེ་ཡང་ཚད་མའི་གཞུང་ལུགས་  
 ཀྱི་ཉིན་བྱེད་ཆེན་པོ་ཕྱོགས་སྒྲང་ཡབ་སྐས་སོགས་ཀྱིས་ཕྱི་ནང་གི་གྲུབ་མཐའ་བྱ་  
 མཚེ་ལྟ་བུའི་གནས་ལ་བདགས་ཤིང་དབྱེད་པར་བྱེད་པའི་རིགས་པ་ཡང་དག་གི་  
 ལམ་པོ་ཆེ་ལ་བརྟེན་ནས། གཞན་ལུགས་མི་འཐད་པ་དང་། རང་ལུགས་འཐད་  
 ཐུན་དུ་བསྐྱབ་པའི་སྐྱབ་བྱེད་ཚད་མ་ལ་ཚོས་མཐུན་གྱི་གྲོལ་བས་ནམ་ཡང་བཞི་.....  
 བར་མི་རྒྱས་པའི་རིགས་པའི་སྐྱ་ཆེན་འཇིག་རྟེན་གསུམ་ན་རབ་དུ་བསྐྱབས་པར་  
 མཛད་ཅིང་། ཐུག་པར་དུ་ཟབ་དོན་གྱི་ཚུལ་ལ་བདག་ཉིད་ཆེན་པོ་སྐྱ་སྐྱབ་ཡབ་  
 སྐས་ཀྱི་དབྱ་མ་རིགས་ཚོགས་སོགས་སུ་ཞིབ་ཅིང་སྤ་བའི་རིགས་པའི་ནམ་གངས་་  
 མཐའ་ལས་པའི་སྐྱ་ནས་ལན་གཅིག་མ་ཡིན་པར་ཡང་དང་ཡང་དུ་དབྱེད་ཅིང་གཏན་  
 ལ་པག་དེ། འདོམས་པར་མཛད་པའི་ཕྱིར་རོ། །

སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་བདགས་ཤིང་དབྱེད་ནས་སྒྲོང་བའི་ངང་ཚུལ་  
 དེ་ལས་ཐོག་དེ་ཚོས་གང་ལའང་འདི་ཡིན་འདི་མིན་སོགས་གང་ཡང་ངོས་བརྒྱང་བུ་

ས་མེད་པར། ཅི་ཡང་ཡིད་ལ་བྱས་མེད་ཀྱི་ངང་དུ་སྡོད་པ་ཁོ་ནས་ཅི་ཡང་མི་མཆེན་  
 པ་མེད་པའི་ཀུན་མཆེན་ཡེ་ཤེས་འབྱུང་བ་ནི་གནས་མ་ཡིན་ནོ། །དོན་དེ་ལ་  
 དགོངས་དེ་མཁས་གྲུབ་སྤྱོད་པའི་ཉི་མའི་སྡོམ་གསུམ་གྱི་ནམ་བཞག་ཐུབ་བཅུན་གྱི་...  
 རོར་ལས།<sup>1</sup> “གང་ཡང་ཡིད་ལ་མ་བྱས་པར་བསྐྱད་པས་གང་ཡང་མི་མཆེན་པ་  
 མེད་པའི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་རྒྱུད་ལ་སྦྱེ་འོང་ན། མི་མཐུན་པའི་རྒྱུ་ལས་མི་  
 མཐུན་པའི་འབྲས་བུ་འབྱུང་བས་མཚང་དེ་ལས་ཆེ་བ་ཅི་ཞིག་ཡོད།” ཅེས་དང་།  
 དེ་བཞིན་དུ་རྗེ་བདག་ཉིད་ཆོན་པོ་འེའི་བ་སྦྱན་སྦྱུང་གསུམ་རབ་དཀར་ལས།<sup>2</sup>  
 “གང་ཡང་ཡིད་ལ་མ་བྱས་པར་ཉེ་བསྐྱད་པ་རང་གིས་དུས་གསུམ་ཅིག་ཅར་...  
 དུ་མཆེན་པའི་ཀུན་མཆེན་ཐོབ་འོང་ན་ཡིགས་ཀྱི། །ཁོ་བོས་ནི་དེ་ལྟའི་སྡོམ་དེ་ལྟ་  
 ཤང་གི་ལྷགས་ལས་ཁྱད་པར་གདན་ནས་མ་ཐུང་དོ།” །ཞེས་གསུངས་སོ།

དོན་དེ་ནི་སྦྱན་སྦྱོ་གྲོམ་རྒྱལ་མཆོན་གྱི་ཐེག་ཆེན་སྦྱོང་གི་ལྷན་ཐབས་...  
 མན་ངག་རབ་གསལ་ལས།<sup>3</sup>

འཛོག་སྡོམ་ཙམ་ལ་ཐོས་པ་ཡི། །

དགོས་པ་མེད་པ་ཁྱོད་བདེན་ཡང་། །

འཛོག་སྡོམ་ཙམ་གྱིས་གྲོལ་བྱུང་ན། །

སྡོམ་ཆེན་འཕྱི་བའང་གྲོལ་འབྱུང་ཞིང་། །

འདུ་ཤེས་མེད་པའི་སེམས་ཅན་དང་། །

གཞུགས་མེད་ཁམས་པའི་སེམས་ཅན་ཀུན། །

1. མཁས་‘‘ཉ’’ ༤༢༠ (ཕྱོ་ལོ་དཔེ་གཞུགས་) 2. རྗེ་‘‘ཁ་ཐོད་ཐུ’’ ༡༤༤ (བཀྲ་སྦྱན་དེབ་)

3. སྦྱན་སྦྱོ་‘‘ག’’ ༣༤༡ (ཕྱོ་ལོ་དཔེ་གཞུགས་)



གྲོལ་བར་རིགས་ཀྱང་མི་གྲོལ་བས། །

གྲོལ་བའི་ཐར་བ་ཐོབ་བ་ལ། །

དབྱུང་སྒྲོམ་ངེས་པར་དགོས་མཐོང་ཞིང་། །ཞེས་གསུངས་པ་ལྟར་གཞུང་།  
དེ་དག་གིས་ཟབ་དོན་གྱི་གནས་ལ་སོ་སོར་དོག་བའི་ཤེས་རབ་ཀྱི་དབྱུང་བ་དོར་.....  
ནས་ཅི་ཡང་ཡིད་ལ་མི་བྱེད་བ་ཟབ་མོའི་དོན་སྒྲོམ་པར་འདོད་བ་ཀྱི་ནག་ཏུ་ཤང་.....  
གི་འདོད་བ་འགོག་བ་ལ་དམིགས་སྤྱད་པའི་རིགས་པའི་གཞོད་བྱེད་གནད་ཆེ་ཤོས་  
སྤྲུང་ངོ་། །

### (༩) དབྱུང་སྒྲོམ་ངེས་པར་དགོས་པའི་རྒྱ་མཚན།

དེ་ཡང་ནལ་འབྱོར་བས་བདག་མེད་པའི་དོན་ལ་ཞི་གནས་ཀྱི་མཐུས་གནས་  
སྐབས་སེམས་མི་གཡོ་བའི་གནས་ཆ་འབྲུབ་བ་ཅན་གྱིས་མི་ཆོག་པར་ལྟ་བ་ངན་བ་  
གཞན་གྱི་དྲང་དུ་མེད་པའི་ངེས་པ་བདན་པོ་རྟེན་པ་སོ་སོར་དོག་བའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་  
དབྱུང་བའི་མཐུ་ལས་འབྱུང་དགོས་ཤིང་། ཤེས་རབ་དེ་དང་ལྡན་པའི་སྒྲོ་ནས་སྤྱིད་  
པའི་ཅ་བ་བདག་འཛིན་མ་རིག་པའི་དམིགས་གཏད་ཐམས་ཅད་དྲུང་ནས་རྒྱང་བ་ལ་  
དངོས་སྤྱ་བདག་འཛིན་ལ་གཞོད་བ་འབྱོལ་བ་ཞིག་ངེས་པར་དུ་དགོས་ཤིང་། དོན་  
དེ་ལ་དགོངས་ནས་ཇི་གྲང་ཐང་བསྟན་པའི་སྒྲོན་མའི་བསྟོད་བ་དོན་ལྡན་མའི་རྒྱ་.....  
ཆེར་འབྲུལ་བསྟན་པའི་དེ་ཉིད་སྤྱང་བ་ལས།<sup>1</sup> “བདག་དུ་འཛིན་པའི་དགྲ་བོ་  
གཞེས་པ་ལ་སྒྲོ་གྲོས་ཀྱི་མིག་ཕྱེ་སྟེ། ཚུལ་བཞིན་དབྱོད་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱི་མཚན་  
ཆས་པར་བསྟན་བ་ཞིག་དགོས་ཀྱི། ཅི་ཡང་ཡིད་ལ་མི་བྱེད་བ་མིག་བཙུམ་ནས་

1. ཀྱང་‘ཀ’ ༥༠ (སྒྲ་ཐེ་-དེབ་)

དེ་གི་མ་མཐོང་བར་བྱས་པ་ཙམ་གྱིས་པ་རེ་ལ་ཅི་ཡང་མི་གནོད་ཅིང་རང་ཉིད་……  
 ཉམས་པར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ།” །ཞེས་དང་། ཇི་རིན་པོ་ཆེས་བཤེས་གཉིན་ཆེན་  
 བོ་བྱང་ཆུབ་སྒྲུ་མ་ལ་གནང་བའི་འཕྲིན་ཡིག་ལས།<sup>1</sup> “ཐོག་མར་ལྟ་བ་བཙལ་བའི་  
 དགོས་པ་ཡང་ངེས་པའི་དོན་སྒྲུབ་པའི་དོན་དུ་ཡིན་ལ། དེ་ཡང་བདག་འཛིན་ལྷོག་  
 བའི་ཆེད་ཡིན་པས་སྒྲུབ་པའི་དུས་སུ་ཡང་བདག་དུ་འཛིན་པ་གཉིས་ཀྱི་ཡུལ་ལ་སོ་  
 སོར་དོག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱི་ལེགས་པར་དབྱུད་པ། བདག་གཉིས་ཀྱི་མཚན་མ་ཅི་  
 ཡང་མ་གྲུབ་པའི་ངེས་པ་ཆེད་པའི་ཆོ་ལྟ་ཐོག་དེར་བཞག་ནས་ངེས་པའི་རྒྱན་སྦྱང་……  
 དགོས་ཀྱི། ལྟ་བའི་ངེས་པ་དོར་བའི་ཞི་གནས་ཙམ་བསྐྱངས་ཀྱང་འཁོར་བའི་  
 ཙམ་བ་བདག་འཛིན་ལ་ཅི་ཡང་མི་གནོད་དོ།” །ཞེས་གསུངས་ཤིང་། དེ་  
 བཞིན་དུ་ལམ་རིམ་ཆེན་མོར་ཡང་།<sup>2</sup> “གཞན་ཡང་བདག་གཉིས་སུ་མཚན་མར་  
 བརྒྱང་བའི་སྒྲོས་ཇི་ལྟར་བརྒྱང་བ་དེ་ཇི་འདྲ་བ་ཞིག་ཡིན་པ་དེ་ལེགས་པར་དབྱུད་……  
 ནས། རྣམ་པར་དག་པའི་ལུང་རིགས་ཀྱིས་ཁོ་བོས་བརྒྱང་བ་ལྟར་མེད་པ་ལ་ངེས་  
 པ་དངས་པའི་སྒྲོ་ནས་འབྱུང་བའི་རྒྱན་སྦྱགས་དེ་བ་པ་ཞིག་དགོས་ཀྱི། དེ་འདྲ་  
 བའི་ངེས་པ་ཅི་ཡང་མ་ཆེད་པར་སེམས་བརྒྱང་བ་ཙམ་ནི། དེའི་ཆོ་བདག་གཉིས་  
 ཀྱི་ཡུལ་ལ་མི་འཕྲོ་བ་ཡིན་དུ་ཆག་ཀྱང་། དེ་ཙམ་གྱིས་བདག་མེད་པའི་དོན་  
 དོགས་པ་མ་ཡིན་དེ། དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་གཉིད་འཐུག་བོ་ལོག་པ་དང་། བརྒྱལ་བ་  
 ལ་སོགས་པའི་ཆོ་ཡང་། དེ་དག་ལ་སེམས་འཕྲོ་བ་མེད་པས་དེ་དག་གིས་ཀྱང་  
 བདག་མེད་དོགས་པར་ཏ་ཅང་ཐལ་བར་འགྱུར་རོ།” །ཞེས་གསུངས་སོ། །

1. ཇི་ཁ་ཐོར་བྱ་ 300 (བཟ་ལྷན་-དེབ་) 2. ཇི་བ་སྒྲུང་ཆ་ 306 (བཟ་ལྷན་-དེབ་)



མདོར་ན་སྒྲོབ་དཔོན་ཉིད་ཀྱི་བསྐྱོམ་རིམ་མཐའ་མ་ལས།<sup>1</sup> “དེ་ལྟ་བུ་ན་ནལ་  
 འབྱོར་བས་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་མིག་ཕྱེ་ལ་ཤེས་རབ་ཀྱི་མཚན་གྱིས་ཉན་མོངས་པའི་དགྲ་...  
 རྣམས་པས་བར་བྱས་ཏེ་འཇིགས་པ་མེད་བར་གནས་བར་བྱ་ཡི། མི་སྒྲར་ས་  
 བཞིན་མིག་བཙུམ་བར་མི་བྱའོ།” །ཞེས་གསུངས་པ་ལྟར་བདག་ཡིགས་སུ་འདོད་  
 པའི་དབྱེད་ལྷན་རྣམས་ཀྱིས་སྒྲོ་གྲོས་གི་མིག་ཡིགས་བར་ཕྱེ་སྟེ། བདག་དང་བདག་  
 མེད་པའི་ཚལ་ལ་ལུང་རིགས་རྣམ་དག་ཀྱི་ལམ་ནས་བྱངས་པའི་ཡིན་ཚལ་དབྱེད་...  
 པའི་རིགས་པས་ཡིགས་བར་དབྱེད་པའི་སྒྲོ་ནས་གནས་ལུགས་ཀྱི་དོན་ལ་ངེས་ཐག་  
 ཚོད་བར་བྱེད་པའི་ཐབ་གསལ་སྒྱུར་བའི་ཤེས་རབ་ཀྱི་མཚན་ནོན་ཐོགས་དེ།  
 བདག་དྲུ་འཇོན་པའི་དགྲ་བོ་དེ་ཉིད་ཅད་ནས་འབྱིན་བ་ཞིག་དགོས་ཀྱི། ཅི་ཡང་  
 ཡིད་ལ་མི་བྱེད་བར་མིག་བཙུམ་ནས་སྒྲོད་པས་ནི། བདག་དྲུ་འཇོན་པའི་སྒྲུ་  
 མཁར་བདེན་དྲུ་གཏོང་བ་ལས་མ་འདས་བར་མངོན་ནོ། །

དེས་ན་བསྐྱོམ་བྱའི་དོན་ལ་ངེས་ཤེས་ཀྱི་སྒྲོ་སྒྲུ་ཤུགས་བྲག་བ་དང་། རྒྱན་  
 རིང་བ་དང་། རྣམ་བར་གསལ་བ་དང་། བདེན་བར་འབྱུང་བ་སོགས་འབྱུང་  
 བ་དང་། སྤང་བྱ་བྱིན་ཅི་ཡོག་གི་སྒྲོ་སྒྲུ་རྣམས་འགོག་པ་ལ་གཉིན་བོ་ནུས་བ་  
 མཐུ་ཅན་དྲུ་གྱུར་བ་སོགས་སོ་སོར་དོག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་རྒྱ་མཚན་སྒྲོ་དུ་མ་...  
 རྣམ་དབྱེད་ཅིང་བསྐྱོམས་པ་ལས་འབྱུང་དགོས་པས་དབྱེད་སྒྲོམ་མེད་དུ་མི་བྱང་བ་  
 ཡིན་ནོ། །དེ་ལྟར་ཡིན་པ་ཡང་སྒྲུན་སྒྲུ་སྒྲོ་གྲོས་ཀྱིས་མཚན་ཀྱི་ཐེག་ཆེན་སྒྲོ་སྒྲོང་  
 གི་རྒྱན་ཐབས་མན་ངག་རབ་གསལ་ལས།<sup>2</sup>

ཤུགས་བྲག་རྒྱན་རིང་འབྱུང་བ་ལ། །

1. ལྟེ་—བཏུན་(དབ་མ་ཀེ་ཅཱ) 2. རྒྱན་སྒྲུ་ཀ་ ༤༠༨ (ལྟེ་ཐེ་—དཔེ་གཟུགས་)

དབྱུང་ནས་སྒྲོམ་པ་ཉིད་དགོས་ཏེ།

དགྲ་ཡིས་གནོད་པ་བྱས་པ་ཡི།

རྒྱ་མཚན་ཡང་དང་ཡང་བསམ་ན།

ཞེས་པ་འདྲེས་པ་སྤྱི་བ་བཞིན། ཞེས་དཔེ་དང་བཅས་ད་

གསལ་བར་གསུངས་སོ།

དོན་གྱི་གནད་འདི་ལ་ཁ་ཅིག་གིས། བདག་མེད་པའི་དོན་ལ་སོ་སོར་དབྱེད་  
 པ་དོག་པ་ཡིན་པས། དེ་ལས་ནམ་པར་མི་དོག་པའི་ཡེ་ཤེས་སྤྱི་བ་འགལ་དེ།  
 འབྲས་བྱ་དང་རྒྱ་གཉིས་རྗེས་སུ་མི་མཐུན་པའི་ཕྱིར་རོ་སྒྲུབ་ན། སྒྲོན་མེད་དེ།  
 འོད་སྤང་གི་ལེབ་ལས། “འོད་སྤངས། འདི་ལྟ་སྟེ། དཔེར་ན་གྲིང་གཉིས་  
 རྒྱང་གིས་བྱད་པ་དེ་ལས་མི་བྱང་སྟེ། བྱང་ནས་གྲིང་དེ་གཉིས་སྟེག་པ་དེ་བཞིན་  
 དུ། འོད་སྤངས། ཡང་དག་པར་སོ་སོར་དོག་པ་ཡོད་ན་འཕགས་པའི་ཤེས་  
 རབ་ཀྱི་དབང་པོ་སྤྱི་ལྟ། དེ་སྤྱིས་པས་ཡང་དག་པར་སོ་སོར་དོག་པ་དེ་ཉིད་  
 སྟེག་པར་བྱེད་དོ།” ཞེས་གྲིང་དང་འདྲ་བའི་དོག་པ་སྤྲོ་ཚོགས་པམ་ཚན་བྱད་  
 པ་ལྟར་དབྱུང་བས། མི་ལྟ་བུའི་འཕགས་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱི་དབང་པོ་སྤྱིས་ནས།  
 ནམ་པར་དོག་པའི་གྲིང་མ་ལུས་པ་སྟེག་པར་བྱེད་དོ་ཞེས་དཔེ་དང་བཅས་དེ་……  
 གསུངས་སོ། དེ་བཞིན་དུ་བསྒྲོམ་རིམ་མཐའ་མ་ལས་<sup>2</sup>ཀྱང་། “དེ་ནམ་པར་  
 དོག་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡིན་དུ་ཟིན་ཀྱང་། ཚལ་བཞིན་ཡིད་ལ་བྱེད་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་  
 ཡིན་པའི་ཕྱིར་དེ་ལས་ནམ་པར་མི་དོག་པའི་ཡེ་ཤེས་འབྱུང་བར་འབྱུང་བས་ན།  
 ཡེ་ཤེས་དེ་འདྲོད་པས་དེ་ལ་བདེན་པར་བྱའོ།” ཞེས་གསུངས་པས་སོ་སོར་

1. ལྷོ་-བཀའ་(དཀོན་བརྩམས་‘ཆ’ ༡༣༩) 2. ལྷོ་-བཀའ་(དབྱ་མ་‘ཀ’ ༩༦)



རྟོག་པས་དབྱད་ནས་སྒྲོང་བ་འདི་ནས་པར་རྟོག་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡིན་དུ་ཟིན་ཀྱང་།  
 རྒྱལ་བཞིན་ཡིད་བྱེད་ཀྱི་སྒྲོ་ཡིན་པས། མི་རྟོག་ཡི་ཤེས་དང་ཤིན་དུ་རྗེས་སུ་  
 མཐུན་ཞིང་དེའི་རྒྱ་ཡིན་པས། རྣམ་པར་མི་རྟོག་པའི་ཡི་ཤེས་དེ་འདོད་པ་དག་  
 གིས་སོ་སོར་རྟོག་པས་དབྱད་ནས་སྒྲོམ་པ་དེ་ལ་ངེས་པར་དུ་བརྟེན་དགོས་སོ། །  
 དེ་ལྟར་མ་ཡིན་ན་ལས་ཟག་བཅས་ལས་ཟག་མེད་ཀྱི་ལས་འབྱུང་བ་ཡང་མི་སྲིད་...  
 པས། སོ་སོ་སྐྱེ་བོས་འཕགས་ལས་ཐོབ་པ་མེད་པར་འགྱུར་དེ། རྒྱ་འབྲས་  
 གཉིས་མི་འདྲ་བའི་ཕྱིར་ལོ། །དེ་བཞིན་དུ་ས་བོན་སྐྱོ་བོ་ལས་སྐྱ་གྲུ་ལྗང་ཁྱ་སྐྱེ་བ་  
 དང་། མེ་ལས་དུ་བ་སྐྱེ་བ་དང་བྱད་མེད་ལས་སྐྱེས་པ་སྐྱེ་བ་སོགས་རྣམ་པ་མི་འདྲ་  
 བའི་རྒྱ་འབྲས་མཐའ་ཡས་པ་ཞིག་ཡོད་པ་དེ་དག་བཞག་དུ་མེད་པར་འགྱུར་ལོ། །

(ཕ) དབྱད་སྒྲོམ་དང་འཕྲོ་བ་དོན་གཅིག་དུ་འདོད་པ་དགག་པ།

དེ་ཡང་བསྒྲོམ་བྱའི་དོན་ལ་སྒྲོ་འི་འཛིན་སྣངས་ཤུགས་དྲག་པ་དང་། གསལ་  
 པ་དང་། ངེས་ཤེས་བརྟན་པོ་འདྲིན་པར་བྱེད་པའི་སོ་སོར་རྟོག་པའི་དབྱད་སྒྲོམ་  
 དང་། སེམས་གང་ལ་གདད་པའི་བྱོགས་དེར་འགྲོ་མི་ཉན་པར་ཡུལ་གཞན་ལ་  
 རྒྱང་ལྟར་འཕྱོ་བའི་འཕྲོ་བ་གཉིས་གདན་མི་འདྲ་སྟེ། དེ་ཡང་བཞ་ཆེན་སྒོ་བཟང་  
 ཆོས་བྱན་གྱིས་མཛད་པའི་ལྷག་བསམ་རབ་དཀར་གྱི་དྲི་ལན་སྒོ་བཟང་བཞད་པའི་  
 རྒྱ་དབྱངས་ལས།

སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས། །

ཡང་ཡང་དབྱད་ཅིང་སྒྲོམ་པ་དང་། །

དང་ངེ་འཇིག་གི་དགུར་གྱུར་བའི།

འཕྲོ་གོད་གཅིག་པར་མི་འགྱུར་ལགས། །ཞེས་གསུངས་

བའི་ཕྱིར་དོ།

ལྷག་མཐོང་སྒོམ་བ་སོགས་སྒོམ་ནམ་དག་ལ་དབྱད་སྒོམ་ངེས་པར་དགོས་  
 ཀྱང་། དབྱད་སྒོམ་དང་འཕྲོ་གོད་ཀྱི་ཁྱད་པར་ལེགས་པར་མ་བྱེད་བ་དག་གིས་  
 འཕྲོ་གོད་སྒོམ་གྱི་བགའ་སློང་བྱེད་པ་དེ་བཞིན་དུ། དབྱད་སྒོམ་དང་ཐོས་བསམ་སོར་  
 ཀྱང་སྒོམ་གྱི་བགའ་སློང་ལྷན་འདྲེན་པ་ཆེས་མི་འཐད་དེ། དེ་ཡང་མཁན་ཆེན་པོ་གི་  
 དབང་གཤམ་བའི་ལྷག་བསམ་རབ་དཀར་གྱི་ལྟ་སྒོམ་དྲི་ལན་ལས། “དབྱད་སྒོམ་  
 དང་འཕྲོ་གོད་གཉིས་དོན་གཅིག་དུ་བརྟེན་ན། རི་ལྷར་མཁས་པ་ཅམ་གྱིས་དབྱད་  
 སྒོམ་མང་། དེ་མང་བ་ཅམ་གྱིས་འཕྲོ་གོད་མང་། དེ་མང་བ་ཅམ་གྱིས་གོར་  
 བྱེད་མང་བས། མཁས་པ་བས་ལྷན་པོ་དབྱད་སྒོམ་ཉུང་བའི་ཕྱིར་སྒོམ་གྱི་བགའ་  
 བྱེད་ཉུང་བས། སྒོམ་སྒྲེ་བ་ལ་ལྷན་པོ་ལྷན་པོ་དབྱད་སྒོམ་དུ་བརྟེན་ནས། ཐོས་བསམ་  
 སྒོམ་གྱི་བགའ་སློང་ཡིན་ནོ་ཞེས་ཆོས་སྤོང་བའི་ལས་ཀྱི་སྒྲིབ་པ་སྒོམ་མི་འཁྱུར་བ་……  
 རྣམས་སོག་བ་སོགས་འབྱུང་བ་ཡིན་པས། འཕྲོ་བ་དང་དབྱད་སྒོམ་གཉིས་ཀྱི་  
 ཁྱད་པར་བྱེད་པ་གཤམ་ཆེདོ།” ཞེས་གསུང་། དེ་བཞིན་དུ་བཀ་ཆེན་སྒོ་བཟང་  
 ཆོས་རྒྱལ་གྱི་ལྷག་བསམ་རབ་དཀར་གྱི་དྲི་ལན་དེ་ཉིད་ལས།<sup>2</sup>

རི་ལྷར་མཁས་པ་ཅམ་གྱིས་ཀྱང་།

ལྱང་དང་རིགས་བའི་དབྱེད་པ་མང་།

དེ་འདྲ་རི་ཅམ་མང་བས་ཀྱང་།

1. བོད་ཀྱི་འུ་འུ་འུ་ (ཕྱི་ཕྱི་-དེ་བ་གཞུགས་) 2. བོད་ཀྱི་འུ་འུ་ (བོད་ཀྱི་ཕྱི་ཕྱི་-དེ་བ་དང་)



འཕྲོ་ཁོད་མང་ཕྱིར་མཁས་བ་ལས།

རྒྱན་པོ་དྲོགས་བ་སྤེ་བྱར་ཞེས།

ཐོས་བསམ་སྒོམ་བའི་གོགས་བྱེད་བ།

དམ་ཚུལ་སྤོང་བའི་ནམ་ཐར་ལགས། ཞེས་གསུངས་བའི་

ཕྱིར་དོ།

དེས་ན་སྤྱིར་འཕྲོ་ཁོད་གཉིས་མི་གཅིག་སྟེ། དེ་གཉིས་ཀྱི་ཁྱད་པར་བཞ་  
ཆེན་གྱི་བྱི་ལན་དེ་ཉིད་ལས།<sup>1</sup>

འཕྲོ་ཁོད་མི་གཅིག་ཁོད་བ་ནི།

འདོད་ཆགས་ཆར་གདོགས་མ་ཞི་བར།

ཀུན་ལས་བདུས་སུ་གསུངས་བ་ཡིན།

འཕྲོ་བ་དེ་ལས་གྱུ་ཆེ་སྟེ།

ཞེ་སྤང་སོགས་ཀྱི་འཕྲོ་བའང་ཡོད།

གཉིས་ཀྱིས་འཛོལ་སྒོམ་མ་ཟད་ཀྱི།

དབྱེད་སྒོམ་ལ་ཡང་བར་དུ་གཅོད། ཁེས་ཁོད་བ་ནི་སྤྱི་ག་

བའི་མཚན་མ་ལ་ཇེས་སུ་འཇུག་བའི་འདོད་ཆགས་ཀྱི་ཆར་གདོགས་བ་ཡིན་པས་

འཕྲོ་བ་ལ་དེས་མ་ཁྱབ་ཅིང་། དེ་གཉིས་ཀྱིས་འཛོལ་སྒོམ་མ་ཟད་དབྱེད་སྒོམ་

ལ་ཡང་གོགས་བྱེད་བ་ཡིན་ནོ།

འདི་ལ་ཁ་ཅིག་གིས་དབྱེད་སྒོམ་སྤྱིར་སྒོམ་གྱི་གོགས་མ་ཡིན་དུ་རྒྱག་ཀྱང་།

འཕྲོ་ཁོད་གཉིས་བཞིན་དུ་གནས་ཆ་བསྐྱབ་པར་བྱེད་བའི་འཛོལ་སྒོམ་གྱི་གོགས་

1. བོད་-འང་ 3 (བོད་ཞོག་-དབེ་རིང་)

ཡིན་ནོ་སྒྲུལ་ན། དེ་ཡང་མི་འཐད་དེ། འཛོལ་སྒྲོམ་གྱི་སྐབས་སུ་སེམས་དམིགས་  
 བ་ལ་གདན་ཆགས་བར་གནས་པའི་འགལ་རྒྱུ་གྱི་གཙོ་བོ་ནི་གཉིས་དེ། བྱིང་  
 བ་དང་གློད་པའོ། །དེ་ལ་དབྱུང་སྒྲོམ་གྱི་མཐུས་དཀོན་མཆོག་ལ་སོགས་པའི་ཡོན་  
 དན་མཐོང་བའི་སྒོ་ཤུགས་དྲག་ལ་རྒྱུན་རིང་བ་ཡོད་ན་བྱིང་བ་གཙོད་བ་ཤིན་དུ་སྒྲོ་  
 གྱེ། བྱིང་བ་ནི་གདོ་སྒྲག་གི་ཆར་གདོགས་བ་སེམས་ལས་སུ་མི་བྱང་བ་ཡིན་པས།  
 དེའི་གཉེན་བོ་ཡོན་དན་མཐོང་བའི་སྒོ་ནས་སེམས་གཟེངས་བསྟོད་བ་ཡོད་པའི་……  
 ཕྱིར་རོ། །དེ་བཞིན་དུ་དབྱུང་སྒྲོམ་གྱི་མཐུས་མི་དྲག་བ་དང་སྒྲག་བསྐལ་ལ་སོགས་  
 པའི་ཉེས་དམིགས་མཐོང་བའི་སྒོ་ཤུགས་དྲག་ལ་རྒྱུན་རིང་བ་ཡོད་ན་གློད་བ་གཙོད་  
 བ་ཡང་ཤིན་དུ་སྒྲོ་གྱེ། གློད་བ་ནི་འདོད་ཆགས་ཀྱི་ཆར་གདོགས་པའི་སེམས་  
 གཡེང་བ་ཡིན་པས། དེའི་གཉེན་བོ་སྒྲོ་ཤས་ཤུགས་དྲག་དང་ལྷན་པའི་ཕྱིར་རོ།  
 དེ་ལྟར་ཡིན་པ་ཡང་སྒྲོ་བ་དཔོན་ལེགས་ལྷན་འབྱེད་ཀྱི་དབྱ་མ་སྙིང་བོ་ལས།

གློད་བ་མི་དྲག་ལ་སོགས་པ།

ཡོད་ལ་བྱེད་པས་ཞི་བར་བྱ།

ཞུས་པ་དམིགས་བ་གྱུ་ཆེན་དག །

བསྒྲུམས་པས་སྤངས་བ་ཉིད་དུ་བྱ། །ཞེས་གསུངས་སོ། །རྒྱ་

མཚན་དེ་དག་ལ་བདེན་ནས་འཛོལ་སྒྲོམ་གྱི་དབྱ་མཐར་ཐུག་བ་བྱིང་གློད་གཙོད་བ་  
 ལ་དབྱུང་སྒྲོམ་གྱོགས་སུ་འགྲོ་བའི་ཚལ་ཤེས་པར་བྱའོ།



(༤) ཡིད་བྱེད་ཐམས་ཅད་འགོག་པ་དང་། དབྱེད་སྒྲོམ་མི་འདོད་པའི་

སྒྲོགས་ལ་གནོད་བྱེད་བལྟན་པ།

དེ་ཡང་སྤྱིར་མི་དག་གི་དང་ལུང་མ་བལྟན་གྱི་ནམ་བུ་དོག་པ་ལྟ་ཞིག །  
 དག་པའི་ནམ་བུ་དོག་པ་ཡང་འཁོར་བར་འཆིང་བྱེད་ཡིན་ཏེ། དཔེར་ན། གསེར་  
 སྒྲོག་དང་ལྷགས་སྒྲོག་གང་གིས་བཅིངས་ཀྱང་བཅིངས་པ་མཚུངས་པས་ཅི་ཡང་.....  
 ཡིད་ལ་མི་བྱེད་པ་ཁོ་ནས་གྲོལ་བར་འདོད་པ་དང་། ལྷག་པར་བདག་མེད་པའི་  
 ལྟ་བུ་སྒྲོམ་པ་སོགས་ཀྱི་ཆེ་ཡང་། སོ་སོར་དོག་པས་དབྱེད་ནས་སྒྲོང་བ་ལ་སྒྲོན་  
 ཏུ་བརྒྱུང་ནས། བཟང་དོག་དང་འདྲ་དོག་ཐམས་ཅད་མཚན་འཛིན་ཡིན་པས་འཚང་  
 གྱུ་བ་ལ་གོགས་སུ་འགྱུར་ར་ཟེར་ནས། གནས་ལྷགས་ཀྱི་དོན་ལ་སྤྱུ་ཐག་ཆོད་  
 པའི་ངེས་པ་འདྲན་པ་ལ་སྒྲོ་འགོགས་པར་བྱེད་པ་ནི་ཆེས་མི་འཐད་དོ། །

ཚུལ་འདི་ལ་སྒྲོབ་དཔོན་ཉིད་ཀྱི་བསྒྲོམ་ངེས་ཐ་མ་ལས།<sup>1</sup> “འདི་ལྟར་

ཅི་ཡང་མི་བསམ་མོ་ཞེས་སྒྲུབ་ནི། ཡང་དག་པར་སོ་སོར་དོག་པའི་མཚན་  
 ཉིད་ཀྱི་ཤེས་རབ་སྤངས་པར་འགྱུར་རོ། །ཡང་དག་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཅ་བ་ནི་  
 ཡང་དག་པར་སོ་སོར་དོག་པ་ཡིན་པས་ན། དེ་སྤངས་ན་ཅ་བ་བཅད་པའི་ཕྱིར་  
 འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་ཤེས་རབ་སྤངས་པར་འགྱུར་རོ།” །ཞེས་དང་། “དེ་  
 ལྟ་བུ་ན་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་སྒྲོང་བ། ཐོས་པ་ཉུང་བ། བདག་གི་ལྟ་བུ་མཚན་གྱི་  
 ཏུ་འཇིན་པ། སྒྲི་བོ་མཁས་པ་ལ་བསྟེན་བཀུར་མ་བྱས་པ། དེ་བཞིན་གཤེགས་  
 པའི་གསུང་རབ་ཀྱི་ཚུལ་མ་དོགས་པ། བདག་སྤང་བར་བྱས་ནས། གཞན་

1. ཐུ་-བལྟན་ (དབྱ་མ་ལེ་ ༩ )

ཡང་སྤང་བར་བྱེད་པ། རིགས་པ་དང་ལྷང་དང་འགལ་བའི་དྲུག་གིས་བདབ་པའི་  
 ཚོག་ནི་མཁས་པ་བདག་ལེགས་སུ་འདོད་པས་ཟས་དྲུག་ཅན་བཞིན་དུ་གྱུར་རིང་དུ་  
 ཡོངས་སུ་སྤང་བར་བྱུང༌།” །ཞེས་སོགས་དམིགས་སྤྱད་པའི་དགག་པ་གྲས་  
 བར་མཛད་དོ། །

དེར་ས་ཟང་ཇེ་བདག་ཉིད་ཆེན་པོ་འི་ལམ་རིམ་ཆེན་མོར་ཡང་གིན་དུ་ཉེས་་་  
 ཚབ་ཆེ་བའི་གནས་སུ་གཟིགས་ནས་དགག་པ་མཛད་པ་འདི་ལྟ་སྟེ།<sup>1</sup> “གཞན་  
 ཡང་རྟོག་པ་ཐམས་ཅད་མཚན་འཛིན་ཡིན་པས། འཚང་བྱ་བའི་གོགས་སུ་བརྒྱུང་  
 བས་སོ་སོར་རྟོག་པའི་སྒྲོམ་ཐམས་ཅད་འདོར་བའི་ལོག་རྟོག་གི་ཐ་ཆད་འདི་ནི་གྱ་  
 བ་གི་མཁན་པོ་ཏུ་ཤང་གི་ལྷགས་ཡིན་ལ། དེ་དགག་པ་ནི་ཞི་གནས་དང་རྒྱག་  
 མཐོང་གི་སྒྲུབས་སུ་བཤད་པར་བྱུང༌། །གཞུང་ཆེན་མོ་རྣམས་ལ་གྲུས་པ་ཆེན་པོ་  
 གྱེ་བའི་གོགས་ཀྱང་ལོག་རྟོག་འདིས་བྱེད་དེ། གཞུང་དེ་དག་གི་དོན་ནི་པལ་སོ་  
 ཆེ་སོ་སོར་རྟོག་པས་དབྱེད་དགོས་པ་ཁོ་ནར་སྤང་ལ། དབྱེད་པ་རྣམས་ཀྱང་ཉམས་  
 ལེན་གྱི་ཆོ་དགོས་པ་མེད་པར་མཐོང་བས་སོ། །བསྟན་པ་རྒྱབ་པའི་རྟེན་དུ་འང་  
 འདི་ཆེ་སྟེ། གསུང་རབ་དགོངས་འབྱེད་ཆེན་མོ་རྣམས་གདམས་ངག་དུ་མི་འགྲོ་  
 བར་མཐོང་ནས་ཞེ་ཅིགས་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ།” །ཞེས་གསུངས་སོ། །

དེ་བཞིན་དུ་ཇེ་གྱང་ཐང་གིས་མཛད་པའི་བསྟོད་པ་དོན་ལྡན་མའི་གྱ་ཆེར་འབྱེད་  
 བསྟན་པའི་དེ་ཉིད་སྤང་བ་ལས།<sup>2</sup> “མདོར་ན་ཅི་ཡང་ཡིད་ལ་མི་བྱེད་པ་ལྟ་བུའི་སྒྲོམ་  
 གྱི་ཡང་ཅེར་བརྒྱུད་པ་འདི་རྣམ་གྲོལ་སྒྱུབ་པའི་དོན་དུ་ངལ་བ་བྱས་ཆད་ཅུང་ཟེས་་་  
 སུ་གཏོང་བའི་ལོག་རྟོག་ཆེན་པོ་ཡིན་དེ།” །ཞེས་སོགས་དང་། མཁས་གྲུབ་

1. ཇེ་པ་ ༤༩ (བཏ་ལྟན་-དེབ་) 2. གྱང་ཐང་-ཀ་ ༩༠ (ཇེ་པ་-དེབ་)

176



ཆེན་དབང་མ་སྟོང་ཕུན་བསྐལ་བཟང་མིག་འབྱེད་ལས་<sup>1</sup>ཀྱང་། “འདི་ལྟར་གཞུང་  
བས་སྦྱོན་པ་ཚུལ་བྱིས་སྤྱད་དང་མཆོད་པ་སོགས་ཐམས་ཅད་རྟོགས་པས་བྱ་……  
དགོས་པས་སྤང་བྱར་འཛིན་པ་དང་། སྤྱད་ཀྱི་སྤྱད་སྤྱད་ལྟེན་རིམ་སངས་  
ཀྱས་ཀྱི་རྒྱ་མ་ཡིན་པར་བལྟ་བ་སོགས་ཐམས་ཀྱི་ཆ་ཐམས་ཅད་ལ་བསྐྱར་བ་……  
འདེབས་པ་ནམས་བྱང་བ་ཡིན་པས། གང་དུ་ཡང་གཞུང་དུ་མི་བྱང་བར་བལྟ་བ་  
འདི་ལས་ཐ་ཆད་པའི་གནས་གཞན་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ནོ།” །གསུངས་པའི་ཕྱིར་རོ།

དེས་ན་ཅི་ཡང་ཡིད་ལ་མི་བྱེད་པའི་འདོད་ཚུལ་ཐ་ཆད་འདིས་ནི་ཐམས་ཀྱི་ཆ་  
ཐམས་ཅད་དང་། རྒྱལ་བའི་བལྟན་པའི་སྟོང་པོ་གནས་ལྷགས་སྟོང་པ་རྟོན་རྟོགས་  
པར་བྱེད་པའི་ལམ་གྱི་སྟོག་དམ་པ་སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཤེས་རབ་འགོག་པར་བྱེད་……  
པ་ཐུགས་ཀྱིས་མ་བཟོད་ནས་བདག་རྟོན་ཆེན་པོ་ཀམལ་ཤྱིལ་སྤྱོད་ལ་འདི་ཅད་ནས་……  
འབྱོན་པར་མཆོད་པ་ཡིན་དེ། དེ་ཡང་མཁས་གྲུབ་སྤྱོད་པའི་ཉི་མའི་གསུང་ཐུབ་  
བལྟན་བྱེད་པ་ལས།<sup>2</sup> “འདིས་ནི་ཐམས་ཀྱི་ཆ་ཐམས་ཅད་སངས་ཀྱི་ལམ་ནལ་མ་  
མ་ཡིན་ཞེས་སྐར་བ་ཆེན་པོ་བདེ་བ་ཅིང་། རྒྱལ་བའི་བལྟན་པའི་སྟོང་པོ་བདག་  
མེད་རྟོགས་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་གནས་ལྷགས་ཀྱི་རྟོན་ལ་ནམ་པར་དབྱེད་པ་བཀག་  
བས་བསོད་ནམས་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཚོགས་གཉིས་ཀ་ལྷག་མ་མེད་པར་བྱང་རིང་དུ་  
སྤངས་པ་དེ་རྟོན་ཀམལ་ཤྱིལ་སྤྱོད་སྤྱོད་ལྟེ། རྒྱལ་བ་དབྱེས་པའི་ལམ་དྲི་མ་མེད་  
པ་རྒྱས་པར་མཆོད།” ཅེས་སོགས་གསུངས་པའི་ཕྱིར་རོ།

གལ་དེ་ཡིད་བྱེད་ཐམས་ཅད་འགོག་པ་མིན་ཡང་ཟེབ་དོན་བསྟོམ་པའི་ཆོ་སོ་  
སོར་རྟོག་པས་དབྱེད་ནས་སྟོང་པ་ལ་སྟོན་དུ་བརྒྱང་ནས། རྟོག་པས་གང་བརྒྱང་ཤིས་

1. མཁས་—‘ཀ’ 202 (ཐེ་བེ་—དཔེ་གཞུགས་) 2. མཁས་—‘ཉ’ 270 (ཐེ་བེ་—དཔེ་གཞུགས་)

ཅད་དགག་བྱར་འཛིན་པ་ནི། ཚལ་མིན་ཡིད་བྱེད་ཀྱི་བདེན་འཛིན་གྱི་ནམ་རྟོག་དང་།  
 ཚལ་བཞིན་ཡིད་བྱེད་ཡང་དག་པར་སོ་སོར་རྟོག་པའི་དབྱེད་སྒྲོམ་གཉིས་ཀྱི་ཁྱད་...  
 པར་ལེགས་པར་མ་བྱེད་པའི་སྒྲོན་ཡིན་དེ། དེ་ཡང་ལམ་རིམ་རྒྱུ་ལས།<sup>1</sup> “རྟོག་  
 པ་ཐམས་ཅད་མཚན་མར་འཛིན་པ་ཡིན་པས་འཚང་བྱ་བ་ལ་གོགས་བྱེད་པའི་སྒྲོམ་  
 ཏུ་འཛིན་པ་ནི། ཚལ་མིན་ཡིད་བྱེད་བདེན་འཛིན་གྱི་རྟོག་པ་དང་། ཚལ་བཞིན་  
 ཡིད་བྱེད་ཡང་དག་པའི་རྟོག་པ་གཉིས་མ་བྱེད་པའི་སྒྲོན་ནོ།” །ཞེས་གསུངས་སོ།  
 དེས་ན་དགག་བྱའི་མཚན་མས་འཛིན་ལེགས་པར་ངོས་མ་ཟིན་པར་ན་ཅང་ཐལ་ཆེས་...  
 ནས་དགག་པར་བྱ་བའི་ཚད་མ་ཟིན་པར་བཀག་ན་ནི་རྒྱ་འབྲས་རྟོན་འབྲེལ་གྱི་རིམ་  
 པ་མཐའ་དག་སྒྲུན་ཕྱང་བས་ཆད་ལྷའི་ཉེན་གྱི་ཆེའོ། །དོན་དེ་ལ་དགོངས་ནས་  
 རྩི་སྒྲགས་རིམ་ཆེན་མོ་ལས།<sup>2</sup> “རིགས་པའི་དགག་བྱའི་ཚད་མ་ཟིན་པར་འདྲོད་  
 སྒྲུམ་ཏུ་གང་བརྒྱུང་ཐམས་ཅད་བདེན་འཛིན་ཡིན་པས། དབྱེད་མའི་གཞུང་ནས་ཀྱང་  
 དེ་དག་ཐམས་ཅད་བཀག་འདུག་གོ་སྒྲུམ་ཏུ་བསམ་ནས། སོ་སོར་རྟོག་པའི་  
 དབྱེད་སྒྲོམ་ཐམས་ཅད་འཚང་བྱ་བའི་གོགས་སུ་འཛིན་པ་བྱ་ནག་གི་མཁན་པོ་འི་...  
 ལུགས་ཀྱང་མི་བརྒྱུང་ངོ་།” །ཞེས་གསུངས་སོ།

འདི་ལྟར་རྟོག་པས་གང་བརྒྱུང་ཐམས་ཅད་དགག་བྱར་འདྲོད་པ་དེས་ནི་གནས་  
 ལུགས་གཏན་ལ་འབེབས་པའི་ཆོ་བདག་མཉེན་དུ་འང་གཏན་ལ་འབེབས་མི་རྒྱུ་བར་...  
 འདྲོད་དགོས་ལ། དེ་ལྟ་ན་སོ་སོར་རྟོག་པའི་གྲུ་རབ་ཀྱིས་བརྟགས་གྲིང་དབྱེད་  
 པའི་སྒྲོན་མ་གཏན་ལ་དབབ་ཏུ་ཡང་མི་རྒྱུང་བར་ཁས་སྒྲུང་དགོས་གིང་། ཉེས་  
 པ་མཐའ་ཡས་པའི་འབྱུང་ཁུངས་ཡིན་དེ། སྒྲུན་སྒྲོ་སྒྲོ་བྱས་ཀྱིས་མཚན་གྱི་ཐེག་

1. རྩི་བ་ r. (བཏང་སྒྲུན་-དེ་བ་) 2. རྩི་ག་ རྩི་བ་ (བཏང་སྒྲུན་-དེ་བ་)



ཆེན་མོ་སྤྱོད་གི་ལྷན་ཐབས་མན་ངག་རབ་གསལ་ལས།<sup>1</sup> “དབྱེད་སྒྲོམ་མི་འདོད་  
 བ་དག་ལ་རིགས་པའི་གནོད་བྱེད་ཉེར་གཉིས་བསྟན་པ་འདི་ལྟ་སྟེ། (༡) སྒྲོ་  
 འདོགས་ནས་ཡང་སེལ་མི་ཉུས་པའི་སྒྲོན་བསྟན་བ། (༢) གཉིད་འབྱུག་གིས་  
 ཀྱང་ཉན་མེད་སྤྱོད་ཉུས་པར་ཐལ་བ། (༣) མངོན་སྲུང་དང་སྤྱོད་བས་གནོད་  
 བར་བསྟན་པ་དང་། (༤) ཡང་དག་པའི་དོན་སྒྲོམ་པ་མི་སྤྱོད་པར་ཐལ་བ།”

ཞེས་སོགས་ཞིབ་ཅིང་བྱས་པར་གསུངས་པ་ལ་གཞིགས་ན་མཆོད་པར་འབྱུང་རོ།

མདོར་ན་རྩ་ལྷན་སྤྱོད་ཀྱི་ཆོས་ནམས་མ་འདྲེས་པར་འབྱེད་པ་ཤེས་རབ་ལ་  
 རག་ལུས་ཤིང་། དེ་ཡང་སོ་སོར་དོག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་བརྟགས་ཤིང་  
 དབྱེད་པའི་སྒྲོམ་པ་མེད་པའས། ཉུང་ན་ལམ་གྱི་སྒོག་དམ་པ་དྲི་མ་མེད་པའི་ཤེས་  
 རབ་མི་སྟེ་སྟེ། དེ་ཡང་ལམ་རིམ་ཆེན་མོ་ལས།<sup>2</sup> “ཅུལ་དེས་སྒྲོམ་པ་མེད་  
 པའས། ཉུང་ན་ལམ་གྱི་སྒོག་དམ་པ་དྲི་མ་མེད་པའི་ཤེས་རབ་མི་སྟེ་བ་དང་།  
 ཅུང་ཟད་སྤྱོད་ཀྱང་ཤེས་རབ་རྩི་ཆེར་མི་འཕེལ་བས། ལམ་ལ་ས་ཆོད་ཅི་ཡང་མི་  
 འབྱུང་སྟེ། ལམ་གྱི་བསྐྱབ་བྱ་མཐར་ཐུག་པ་ནི། ཤེས་རབ་ནང་ན་ཀྱན་མཆོད་  
 ལྟར། ཞེས་སྒྲོབ་དབོན་མ་ཁོལ་བྱིས་གསུངས་པ་ལྟར། རྩ་ལྷན་སྤྱོད་ཐམས་  
 ཅད་མ་འདྲེས་པར་འབྱེད་པའི་ཤེས་རབ་ཏུ་འདུག་པའི་ཕྱིར་རོ།” ཞེས་གསུངས་  
 པའི་ཕྱིར་རོ།

1. ལྷན་སྤྱོད་—‘ཀ’ ༣༩ (སྒྲོ་མོ་—དཔེ་གཞུགས་) 2. རྩི་ལ་—‘པ’ (བཀྲ་ལྷན་—དཔེ་)

## (༡) དབྱུང་སྒྲིམ་གྱི་ཕན་ཡོན་བསྟན་བཤ

དེ་ཡང་སྤྱིར་བཙུག་པའི་ཕན་ཡོན་གྱི་གསུང་རབ་ལ་དྲང་ངེས་ཀྱི་ཁྱད་པར་དང་།  
 འདོད་ཡོན་ལ་ཐེག་པ་ཆེ་ཆུང་གི་གནང་བཀལ་གི་ཁྱད་ཆེ་བ་དང་། བྱང་སེམས་  
 ལ་དགོས་དབང་གིས་ལུས་ངག་གི་ཉེས་པ་སྒྲིག་གཅོད་སོགས་གནང་བའི་སྒྲིམས་  
 ཡོད་པ་སོགས་ཆོས་ཀྱི་གནད་གསང་མང་པོ་ཞིག་ལ་མི་མཛངས་པར་བྱེད་པ་ཡང་།  
 བདག་ས་ཤིང་དབྱུང་བར་བྱེད་པའི་ནམ་དབྱེད་སྤྱན་སྤྱུམ་ཆོགས་པ་འདི་ཡོད་མེད་ལ་  
 རག་ལས་བར་མཐོང་ལྟོ། དེ་ཡང་སྤྱན་སྤྱུ་སྤྱོ་སྤྱོས་ཀྱི་ལ་མཚན་གྱི་སྤྱོ་སྤྱོང་རིགས་  
 བའི་ཆུ་གདོར་ལས་<sup>1</sup> “ཕྱ་ཞིང་མཛངས་བའི་ནམ་དབྱེད་ཡོད་ན། འདོད་ཡོན་  
 གྱིས་མི་གཞོད་ཅིང་ཕན་འདོགས་བས། སྤྱགས་ཀྱི་ཐེག་པར་འདོད་ཡོན་ལ་ཅི་  
 དགར་རྩལ་བས་ཆོ་གཅིག་ལ་སངས་ཀྱི་བ་གསུངས་ཀྱི། ཉོག་དབྱེད་བྲལ་བའི་  
 སྤྱན་པོ་ལ་ཡང་འདོད་ཡོན་ཅི་དགར་རྩལ་བ་གནང་ན། ལྷེབ་འདྲེ་མ་ཡང་མེ་ལ་  
 ཅི་དགར་རྩལ་བས་ཉེས་སྤོན་མེད་པའི་སྤྱིང་དུ་གནས་སྒྲིམས་དང་མཐར་ཐུག་གི་  
 རོན་ཐམས་ཅད་འགྲུབ་པ་ཞིག་ཅིའི་རོན་ལ་མི་འོང་། ཚུལ་འདི་ལྟ་བུའི་དབྱུང་བ་  
 གི་འདོད་ཡོན་ལ་ཐེག་པ་ཆེ་ཆུང་གི་གནང་བཀལ་ཁྱད་ཆེ་བར་བྱང་བ་གོ་བའི་གནད་  
 ཁྱད་པར་ཅན་ནོ།” །ཞེས་གསུངས་པའི་ཕྱིར་རོ།

ཁྱད་པར་དུ་གནས་ལུགས་ཀྱི་དོན་ལ་སོགས་པ་ཐབ་པ་དང་ཁྱད་ཆེ་བའི་ཆོས་  
 ཚུལ་ལ་སོ་སོར་ཉོག་པས་དབྱུང་ནས་བསྒྲིམ་པས་ནི། བསྒྲིམ་བུའི་དོན་ལ་ངེས་  
 ཤེས་ཡེ་མ་འདྲོངས་པ་འདམ་ལ་བདབ་པའི་ཕྱར་བ་ལྟ་བུའི་ངང་ཚུལ་མ་ཡོན་བར་

1. སྤྱན་སྤྱུ་—‘ཀ’ ༤༤༦ (སྤྱོ་སྤྱོ—དབ་གཟུགས་)



ལོག་དུ་མེད་པའི་ངེས་ཤེས་ནལ་མ་འདྲེན་ཐུབ་པའི་དགོས་པ་བྱུང་བར་ཅན་དང་...  
 ལྷན་པ་ཡིན་དེ། རྒྱུ་ལྡན་ཉིད་ཆེན་པོའི་ལས་རིས་ཆེན་མོ་ལས།<sup>1</sup> “གཞན་  
 ཡང་དཀོན་མཆོག་གསུམ་ལ་སོགས་པ་ལ་ཡོན་ཏན་གྱི་བྱུང་བར་མང་པོ་ཤེས་...  
 གས་དེ་ལ་བརྟེན་པའི་དད་པའང་མང་པོར་འཕེལ་བ་དང་། འཁོར་བའི་ཉེས་  
 དམིགས་དུ་མ་ཁོང་དུ་ཆུད་ནས་ཡིད་འབྱུང་ཞིང་སྒྲོ་བ་མང་བ་དང་། ཐར་པའི་  
 སན་ཡོན་ཡང་སྒྲོ་དུ་མ་ནས་མཐོང་བས་དེ་ལ་དོན་གཉིས་དྲག་པོ་དང་། བྱང་ཆུབ་  
 གྱི་སེམས་དང་ཕྱིན་དྲག་ལ་སོགས་པའི་སྒྲོད་པ་ངོ་མཚར་བའང་དུ་མ་ཁོང་དུ་ཆུད་  
 གས། དེ་དག་ལས་བརྒྱུག་དུ་མེད་པའི་དད་པ་དང་འདུན་པ་དང་བརྟོན་པ་ནམས་  
 རྒྱུ་སྒྲུ་འགྲོ་བ་ཐམས་ཅད་ཀྱང་སོ་སོར་དོག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་གསུང་རབ་...  
 གྱི་དོན་ལ་དབྱུད་ནས་བསྐྱེད་པ་ཁོན་ལ་རག་ལས་པས། རྒྱུ་དང་ལྷན་པ་ནམས་  
 ཀྱིས་ཚལ་འདི་ལ་གཞན་གྱིས་བཀྱི་བར་མི་རྒྱས་པའི་ངེས་པ་དྲང་བར་བྱའོ”<sup>2</sup> །  
 ཞེས་གསུངས་པའི་ཕྱིར་རོ།

དེ་ཡང་སྤང་བུ་ཉེས་སྒྲོན་གྱི་རིགས་ལོག་པ་དང་། ཐོབ་བྱའི་ཡོན་ཏན་སྐྱབ་  
 པ་སོགས་གང་བྱེད་ཀྱང་དབྱུད་སྒྲོམ་གཙོ་ཆེ་ཞེ། སྐྱེས་སྤྲེལ་གྱིས་བྱལ་མཆོན་གྱི་  
 རྒྱུ་སྒྲོང་རིགས་པའི་ཆུ་གཉེར་ལས།<sup>2</sup> “སྐྱིར་སྒྲོམ་ཐམས་ཅད་དབྱུད་སྒྲོམ་དང་  
 འཛོག་སྒྲོམ་གཉིས་སྒྲུ་འདུས་ལ། དེ་གཉིས་ལས་ཀྱང་དབྱུད་སྒྲོམ་གཙོ་བོ་དང་།  
 མཆོག་དང་། དངོས་གཞི་ཡིན་ཞིང་། འཛོག་སྒྲོམ་ནི་དེའི་གོགས་ཅམ་ཡིན་ནོ།  
 དེ་ཡང་ཅི་ཡིན་ཞེ་ན། སྐྱེས་སྤྲེལ་བ་དང་ཡོན་ཏན་སྐྱབ་པ་གང་བྱེད་ཀྱང་དབྱུད་  
 སྒྲོམ་གཙོ་བོ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་དང་། ཆགས་པ་དང་འཛོན་སྤངས་དངོས་སྒྲུ་འགལ་

1. རྒྱུ་ལྡན་(པམ་ལྷན་-དེབ་) 2. སྐྱེས་སྤྲེལ་-ཀྱི་ ༡༠༠ (སྐྱེ་ལོ་-དཔེ་གཞུགས་)

བའི་དངོས་གཉིན་ནི་མ་ཆགས་པ་དང་། ཞེ་སྤང་ལ་བྱམས་པ། གདི་སྤྱལ་ལ་  
གཉིན་པོ་ཡང་དག་པའི་ཤེས་རབ་ཡིན་ལ། དེ་ནམས་འབྱུང་བའི་རྒྱུའི་གཙོ་བོ་  
ཤེས་རབ་ཀྱིས་དབྱེད་པ་ཡིན་པའི་སྤྱིར་དང་། ཅིར་ཡང་མི་རྟོག་པ་ཙམ་གྱིས་མ་  
ཆགས་པ་དང་། བྱམས་པ་དང་། ཤེས་རབ་ཀྱིས་བར་ཅན་འོངས་ས་མེད་པའི་  
སྤྱིར་རོ” ཞེས་སོ།

དེས་ན་དབྱེད་སྒྲོམ་དྲ་བདུན་གྱི་རབང་བོ་དེ་ཉིད་འཛེག་སྒྲོམ་རི་རབ་ཀྱི་ལྷན་  
བོ་ལས་ཀྱང་བར་ཇི་ལྟར་འཕགས་ཤེ་ན། གཞུང་དེ་ཉིད་ལས།<sup>1</sup> “གཞན་ཡང་།  
ཡང་དག་པའི་དབྱེད་སྒྲོམ་ནི་འཛེག་སྒྲོམ་ཙམ་ལས་ཀྱང་བར་ནས་པ་བཅས་ཀྱང་...  
བར་དུ་འཕགས་པར་ཤེས་པར་བྱ་སྟེ། ཆོ་འདོད་དོན་དང་། ཕྱི་མའི་དོན་དང་།  
འབྲུལ་དང་། སྤྱལ་དང་། གནས་སྐབས་དང་། མཐར་ཐུག་དང་། མངོན་  
བར་མཐོ་བ་དང་། དེས་བར་ལེགས་པ་དང་། རྒྱུན་སྤོང་བ་དང་། ཡོན་ཏན་  
རྒྱལ་བ་ཐམས་ཅད་ལ་མི་རྟོག་པའི་འཛེག་སྒྲོམ་ཙམ་གྱིས་དབེར་མི་ཐོད་པའི་ཡོན་...  
ཏན་སྟེ་རྒྱས་པ་སྟེ། གོང་འོག་དུ་བཤད་པ་ནམས་ཀྱིས་ཤེས་པར་རྒྱས་ཤིང་།”  
ཞེས་སོགས་ཞིབ་ཅིང་བྱས་པ་གཞུང་དེ་ཉིད་ལ་གཟིགས་ན་མཁྱེན་བར་འབྱུར་རོ།

མདོར་ན་མདོ་རྒྱུད་དགོངས་འབྲེལ་གྱི་དོན་ལ་སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཤེས་རབ་...  
ཀྱིས་བདགས་ཤིང་དབྱེད་པའི་སྒྲོ་ནས་གདམས་ངག་དུ་འཆར་ཞིང་སྒྲོམ་བར་བྱེད་...  
པ་ནི་སྤྱན་སྤྲུམ་ཆོགས་པ་ཐམས་ཅད་འབྱུང་བའི་སྒྲོ་ཡིན་པས་ཚུལ་ལྷགས་འདི་ལ་...  
ཅིས་སྤྱིར་བྱེད་པ་གལ་ཆེ་སྟེ། དེ་ཡང་ལས་རིམ་ཆེན་མོ་ལས།<sup>2</sup> “གསུང་རབ་  
ཐམས་ཅད་གདམས་ངག་དུ་འཆར་མི་འཆར་ནི་སྤྱོད་ཚུལ་འདི་ལ་དེས་པ་རྟེན་མ་...”

1. སྤྱན་སྤྲུམ་—ཀྱི་ ༡༠, (ཕྱི་ལོ་—དཔེ་གཞུགས་) 2. ཇི་ལ་ ༩༢ (གསུ་སྤྱན་—དཔེ་)



ཉིད་ཁོ་ནའི་རྗེས་སུ་བྱེད་པར་སྒྲུབ་ཞིང་།” ཞེས་སོགས་གསུངས་ཤིང་། དེ་  
བཞིན་དུ་སྤྱན་རློབ་གྲོས་རྒྱལ་མཚན་གྱི་ཐེག་ཆེན་ལྷོ་སྤྱོད་གི་རྣམ་ཐབས་མན་ངག་  
རབ་གསལ་ལས།<sup>1</sup>

ཚུལ་ལྷགས་འདི་ནི་མཚོག་ཡིན་པས།

མདོ་རྒྱུད་བསྟན་བཅོས་ཀྱན་དུ་ཡང་།

རིགས་པའི་ནམ་གྲངས་མཐའ་ཡས་ཀྱིས།

དབྱུང་ནས་སྒྲོམ་བ་ཉིད་གསུངས་ཤིང་། ཞེས་གསུངས་པའི་

ཕྱིར་དོ།

(༡༠) ལྷུ་པ་གང་ལ་ཚུལ་རི་རྣམ་དབྱུང་སྒྲོམ་བྱེད་ཚུལ་དང་། དེ་དགོས་པའི་

རྒྱ་མཚན།

དེ་ཡང་བསྒྲོམ་བྱའི་གཞི་གང་ཡིན་པ་དེ་ལ་འཕྲོ་གོད་ཀྱིས་བར་མ་ཆོད་ཅིང་  
བྱིང་སྤྲུགས་ཀྱི་གཞན་དབང་དུ་མ་སོང་བར་དཔེ་ཤེས་རྒྱུན་ལྡན་དུ་བསྟན་པའི་སྒྲོ་  
ནས་རྒྱ་མཚན་ནམས་དཔེ་བར་བྱེད་ཅིང་། ལེགས་པར་དབྱུང་དེ་ངེས་ཤེས་ནལ་མ་  
འདྲན་བ་ཞིག་བྱེད་དགོས་པ་ཡིན་དེ། དེ་ཡང་ཕྱིན་ཅི་ཡོག་གི་སྒྲོ་སྒྲུ་ནམས་འགོག་  
པར་བྱེད་པ་ལ་དེའི་གཉེན་པོ་དམིགས་ནས་བྱས་པ་མཐུ་ཅན་འབྱུང་དགོས་པའི་  
ཕྱིར་དོ། །དེ་ལྟར་ཡང་ལམ་རིམ་ཆེན་མོ་ལས།<sup>2</sup> “དེ་ལྟར་ན་ལམ་སྒྲོམ་བ་ལ་  
དབྱུང་ནས་སྒྲོམ་བ་དང་། མི་དབྱོད་པར་འཛོག་པའི་སྒྲོམ་གཉིས་ཡོད་ན། ལམ་  
རིམ་བཟོ་བ་ནི་དབྱུང་སྒྲོམ་ཡིན་ལ། རིམ་བཟོ་བ་ཞིག་ནི་འཛོག་སྒྲོམ་ཡིན་ཞེས།

1. སྤྱན་རློབ་—‘༡’ ༤༠༤ (སྒྲོ་བོ་—དཔེ་གཟུགས་) 2. རིམ་—‘མ’ ༤༩ (བསྟན་པ་—དཔེ་)

བཤད་པར་བྱ་ཤི། བཤེས་གཉིན་ལ་དད་པ་བསྐྱེད་པ་དང་། དལ་འབྱོར་དོན་  
 ཆེ་ཞིང་རྟེན་དཀའ་བ་དང་། འཆི་བ་མི་དྲག་པ་དང་། ལས་འབྲས་དང་།  
 འཁོར་བའི་ཉེས་དམིགས་དང་། བྱང་རྒྱལ་གྱི་སེམས་བསྐྱེད་པ་ལྟ་བུ་ལ་ནི་དབྱེད་  
 སྐྱོམ་དགོས་སོ། །འདི་ལྟར་དེ་དག་ལ་ནི་སྐྱོ་ཤུགས་དྲག་ལ་རྒྱན་རིང་བའི་ཡིད་  
 འབྲལ་རྒྱས་པ་རེ་དགོས་དེ། དེ་མེད་ན་དེ་དག་གི་ཐོག་སྤྱོད་མ་གྲུས་པ་སོར་  
 འགོག་མི་རྒྱས་པའི་སྤྱིར་དང་། སྐྱོ་དེ་ལྟ་བུ་བསྐྱེད་པ་ནི་ཡང་དང་ཡང་དུ་སོ་  
 སོར་དྲིག་པས་དབྱེད་ནས་བསྐྱེད་པ་ཁོ་ན་ལ་རག་ལས་པའི་སྤྱིར་དོ། །དཔེར་ན་  
 ཆགས་ཡུལ་ལ་སྤྱུག་པའི་མཚན་མ་སྐྱོ་འདོགས་པ་མང་ན་འདྲོད་ཆགས་དྲག་པོ་སྐྱེ་  
 བ་དང་། དག་ལ་ཡིད་དུ་མི་འོང་བའི་མཚན་མ་མང་དུ་བསམས་ན་ཞེ་སྤང་དྲག་  
 པོ་སྐྱེ་བ་བཞིན་ནོ། །དེས་ན་ལམ་དེ་དག་བསྐྱེད་པ་ལ་ནི་ཡུལ་གྱི་ནུམ་པ་གསལ་  
 མི་གསལ་འདྲ་ཡི། སྐྱོ་འི་འཛིན་སྤངས་ཤུགས་དྲག་ལ་རྒྱན་རིང་བ་དགོས་པས་  
 དབྱེད་སྐྱོམ་བྱའོ། །ཞེས་གསུངས་པས་སོ། །

དེ་ཡང་བདག་མེད་པའི་དོན་ལ་དབྱེད་སྐྱོམ་ཇི་ལྟར་བྱ་ཞེ་ན། རྒྱལ་བའི་སྲས་  
 པོ་ཞི་བ་ལྷ་འི་སྤྱོད་འཇུག་ལས།

བདགས་པའི་དངོས་ལ་མ་རེག་པར།

དེ་ཡི་དངོས་མེད་འཛིན་མ་ཡིན། །ཞེས་ཇི་སྐད་གསུངས་པ་

བཞིན། དཔེར་ན་བྱུང་པས་དག་པའི་ས་སྤྱོད་ས་སྤྱོད་པ་མེད་པར་ངེས་པ་ལ།  
 དེར་བྱུང་པ་ཡོད་ན་འདི་ལྟ་བུ་ཞིག་ཡོད་དགོས་སྟུང་དེས་དགོས་པ་བཞིན་དུ།  
 བདེན་གྲུབ་བས་རང་བཞིན་གྱིས་གྲུབ་པ་བཀག་པའི་སྤོང་ཉིད་ངེས་པ་ལ་ཡང་རང་...



བཞིན་གྱིས་གྲུབ་པའི་དོན་སྤྱོད་ལྟུང་དུ་འཆར་དགོས་པས། ཐོག་མར་དོན་དམ་  
 དབྱེད་བྱེད་ཀྱི་དྲགས་ཀྱི་དགག་བྱའི་ཚད་ངོས་བརྒྱུ་། དེ་ངོས་ཟིན་ནས་རིགས་  
 ཚོགས་ནས་བཤད་པའི་ནམ་ལྔའས། འཇུག་པ་ནས་བཤད་པའི་ནམ་བདུན།  
 གཞན་ཡང་མཐའ་བཞི་སྟེ་འགོག་ ཡོད་མེད་སྟེ་འགོག་གི་རིགས་པ། གཅིག་  
 ཏུ་བྱལ་དང་དེན་འབྲེལ་གྱི་རིགས་པ་ལ་བདེན་ནས་དགག་བྱ་དེ་ལེགས་པར་བཀག་  
 སྟེ། རང་བཞིན་མེད་པའི་དོན་ལ་ངེས་པ་དང་ས་པའི་ངེས་ཤེས་དེའི་རྒྱན་བསྐྱངས་  
 པ་ལ་སྟོང་ཉིང་སྒྲིམ་པའི་ཐ་སྙད་བྱེད་ཅིང་། ངེས་ཤེས་ཚུང་དུ་སྟོང་ན་སྒྲར་རིགས་  
 པས་དབྱད་པ་བྱེད་ཅིང་ངེས་པ་དང་ས་ནས་དབྱད་སྒྲིམ་བྱེད་དགོས་པས། དབྱད་  
 སྒྲིམ་མེད་པར་སྟོང་ཉིང་མི་དྲགས་པའི་དོན་ཡང་དེ་ལྟར་ཡིན་པར་གསུངས་སོ། །

(༢༢) ལྟུང་གང་ལ་ཚུལ་ཇི་ལྟར་འཇོག་སྒྲིམ་བྱེད་ཚུལ་དང་། དེ་དགོས་

པའི་རྒྱ་མཚན།

དེ་ཡང་སེམས་དགེ་བའི་དམིགས་པ་ལ་ཇི་ལྟར་འདོད་འདོད་དུ་བཞག་པས་  
 ཚོག་པའི་ལས་ཚུང་འབྱུང་བའི་ཕྱིར་དུ་དམིགས་དེན་ངོས་ཟིན་པ་དེ་གཅིག་བྱུ་ལ་...  
 འཕྲོ་གོད་ཀྱིས་བར་མ་ཚོད་ཅིང་བྱིང་སྒྲུགས་ཀྱི་གཞན་དབང་དུ་མ་སྟོང་ཞིང་། མི་  
 དྲིག་མི་དབྱེད་པའི་ངང་ནས་དམིགས་པ་ལ་ཅེ་གཅིག་དུ་འཇོག་པ་ཞིག་དགོས་དེ།  
 དེ་ཡང་ལས་རིམ་ཆེན་མོ་ལས།<sup>1</sup> “སེམས་དམིགས་པ་གཅིག་ལ་གནས་སུ་མི་  
 བདུབ་པ་དམིགས་པ་གཅིག་ལ་ཇི་ལྟར་འདོད་འདོད་དུ་བཞག་པས་ཚོག་པའི་ལས་  
 ཚུང་དུ་བྱེད་པའི་ཞི་གནས་བསྐྱབ་པ་ལ་སོགས་པའི་སྐབས་སུ་ནི། ཡང་དང་ཡང་

1. ཇི་“བ” ༥༦ (བཟ་རྒྱན་—དེབ)

དུ་དབྱང་ན་སེམས་གནས་པ་སྒྲེར་མི་ཉན་པས། དེ་ལ་ནི་འཛོག་སྒྲོམ་བྱ་དགོས་པ་  
ཡིན་ཏེ། འདྲ་ནི་ཞི་ལྷག་གི་སྒྲུབས་སུ་བཤད་པར་བྱའོ།” །ཞེས་གསུངས་པས་སོ།

དེ་ཡང་བདག་མེད་པའི་དོན་ལ་འཛོག་སྒྲོམ་བྱེད་པའི་ཆོ་དབྱང་སྒྲོམ་གྱི་དུས་  
སུ་བདག་མེད་པའི་དོན་ལ་ཡིན་ཚུལ་དབྱེད་པའི་རིགས་པས་ངེས་ཐག་ཆོད་པ་……  
བཞིན་དུ་འཛོག་སྒྲོམ་གྱི་དུས་སུ་ཡང་བདག་རང་བཞིན་གྱིས་གྲུབ་པ་མེད་པ་ལས་……  
གཞན་དུ་མི་རྟོག་པའི་ཅེ་གཅིག་དུ་མཉམ་པར་བཞག་པ་ཞིག་དགོས་ཀྱི། དབྱེད་  
པའི་ཆོ་བདག་མེད་པའི་དོན་དང་། འཛོག་པའི་ཆོ་མི་རྟོག་པ་ཅམ་དང་ལྷ་སྒྲུ་  
ལྷ་བྱར་འཛོག་པ་སོགས་གང་འདྲ་འདྲིས་མི་ཆོག་ལྟེ། བྱལ་བ་ལྷ་བ་ཆེན་པོ་འི་  
ལས་ཁྲིད་འཇམ་དབལ་ཞལ་ལྟངས་ལས།<sup>1</sup> “སྒྲོམ་ཆེན་དུ་སྒྲོམ་པ་མང་པོ་ཞིག་གིས་  
རིགས་པས་དབྱང་ནས་ལྷ་བ་གདན་ལ་ཐབ། སྒྲོམ་པའི་དུས་སུ་མི་རྟོག་པ་འབའ་  
ཞིག་སྒྲོམ་ཟེར་བ་ནི། གཞིས་ལ་སྒྲོད་དུས་དྲ་ལེགས་པར་གསེས་ནས་བྱས་  
ལ་འགྲོ་དུས་ཀྱང་ཐང་ལ་འགྲོ་ཟེར་བ་དང་ཁྱད་པར་ཅི་ཡང་མེད་པས། ཞི་གནས་  
ལ་བཞེན་ནས་ལྷག་མཐོང་སྒྲུབ་ཚུལ་གྱི་གནད་ཅང་ཟད་ཀྱང་མ་གོ་བའི་རང་མཚང་དུ་  
ཟད་དོ།” །ཞེས་གསུངས་པའི་བྱིར་རོ།

དེས་ན་འཛོག་སྒྲོམ་བྱེད་པའི་ཆོ་མི་རྟོག་པ་གལ་ཆེ་ཞིང་རྟོག་པ་དགག་ཅེས་  
པའི་དོན་ཡང་། སྒྲུ་གཟུགས་ལྷ་བྱ་གང་ལ་དམིགས་པ་གཏོད་པའི་ཡུལ་དེ་ག་ལས་  
གཞན་པའི་རྟོག་པ་གཞན་དུ་མི་འཕྲོ་བའི་དོན་ཡིན་གྱི། རྟོག་པ་ཡིན་ཆད་དགག་  
དགོས་ན་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་སྒྲུའི་ནམ་པ་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་དེ་ག་རྟོག་པ་ཡིན་……  
པས། དེ་ཡང་བཀག་ན་དམིགས་པ་སྒྲུར་བར་འགྱུར་བས་མི་འཐད་དོ། །

1. ཐོད་-‘ན’ ༥༦ (ཐོད་ཐོག་-དམེ་དང་)



(༡༩) ཟུང་ལྷན་ཉམས་སུ་ལན་པ་ལ་དབྱུང་འཛུགས་རྒྱུ་འབྲེལ་

ཤི་ལམ་མེད་མི་རུང་བར་བསྟན་པ།

དེ་ཡང་ངེས་དོན་གྱི་ལྷ་བ་ནས་དག་གྱུར་ལ་བསྐྱེད་པར་འདོད་པ་དག་གིས་  
 བདག་དུ་འཛིན་པ་གང་ལ་སྐྱེ་བའི་གཞི་ཤིན་ཀྱང་གི་ཆོས་ནམས་རང་བཞིན་མེད་པའི་  
 རྒྱལ་ལ་སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་མང་དུ་དབྱུང་ནས་མཐར་དེད་དོན་ལ་ངེས་  
 བའི་ཤུགས་བསྐྱེད་དེ་མི་འབྲོ་བར་འཛིན་པའི་འཛུགས་སྒྲིམ་དང་། སོ་སོར་རྟོག་  
 བའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་དབྱུང་པ་སྤེལ་མར་བྱེད་པ་གཤམ་ཆེ་སྟེ། སྤྱོད་དངོན་ཡེ་ཤེས་  
 སྤྱིང་པོ་འི་གསུང་ནལ་འབྱོར་བསྒྲིམ་པའི་ལམ་ལས་<sup>1</sup> “གང་གི་ཆོ་གཉིད་ཀྱི་ཐུན་  
 བས་ནོན་དེ་དམིགས་པ་ལས་ལྡོག་པར་བྱེད་པ་སེམས་ལས་སྐྱེ་བ་དེའི་ཆོ། ཆོས་  
 ལ་དབྱུང་པའི་མཚན་ཉིད་ལྷག་མཐོང་གི་སེམས་གཟེངས་བསྟེད་ལ། སྤྱོད་པ་ཉིད་  
 ལ་མཉམ་པར་བཞག་པར་བྱའོ། །འོན་དེ་ཡུལ་ནམས་ཀྱི་ནམ་པར་དབྱུང་བས་གློད་  
 བར་གྱུར་ན། དེ་ཡང་དོན་དམ་པ་ལ་དབྱུང་བས་དེ་ལ་དམིགས་པ་བོར་དེ་ཞི་གནས་  
 དང་ལྡན་པས་གནས་པར་བྱའོ། །གང་གི་ཆོ་ན་ཅང་དབྱུང་ཆེས་པས་ཤེས་རབ་  
 ཤས་ཆེ་བར་གྱུར་བ་དེའི་ཆོ། ཡང་དབྱུང་པའི་དུས་དེ་མ་ཡིན་དེ། ཞི་གནས་ཀྱི་  
 དུས་ཡིན་པས་དུས་དང་དུས་མ་ཡིན་པ་བདང་སྒྲིམས་སུ་བྱ་བ་ཚད་མར་བྱས་ནས།  
 ཡང་ཞི་གནས་ལ་གནས་པར་བྱའོ།” །ཞེས་གསུངས་ཞིང་། ལམ་རིམ་ཆེན་མོ་  
 ལས་<sup>2</sup>གྲང་། “དབྱུང་སྒྲིམ་མང་པས་གནས་ཆ་རྒྱུ་སྤོང་ན་འཛུགས་སྒྲིམ་མང་

1. རྟེན་བསྟན་(དམ་མ་ཀ་ ༥) 2. རྟེན་བསྟན་ཆ་-༣༠༠ (བཟུང་ཐུན་-དཔ་)

ཏུ་བྱས་ལ་གནས་ཆ་སོར་གཞུགས། འཛོག་སྒྲོམ་མང་ཏུ་བྱས་པའི་སྐབས་གནས་  
 ཆ་ཆེ་བར་སོང་ནས་དབྱེད་སྤྱིང་མི་འདོད་པས་ས་དབྱེད་ན་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ལ་ངེས་པ་……  
 བདེན་ལ་བྱགས་དྲག་པ་མི་འོང་ཞིང་། དེ་ས་བྱང་ན་ངེས་པའི་ལྷོག་ཕྱོགས་བདག་  
 གཉིས་ཡོད་པར་འཛིན་པའི་སྒྲོ་འདོགས་ལ་དེ་ཅས་ཏུ་མི་གནོད་པས་དབྱེད་སྒྲོམ་……  
 མང་ཏུ་བྱས་པའི་སྒྲོ་ནས་ཞི་ལྷག་གཉིས་ཆ་མཉམ་ལ་སྒྲོམ་སྟེ།” ཞེས་སོགས་  
 དང་། རྒྱགས་རིམ་ཆེན་མོ་ལས་ཀྱང་། “བདག་མེད་པའི་ལྷ་བས་ཉ་ཅང་དབྱེད་  
 དྲགས་ན་གོད་པ་སྟེ་ནས་གཡོ་བར་བྱེད་པས་བདག་མེད་ཀྱི་དོན་ལ་ངེས་པ་དྲངས་……  
 པའི་ངེས་པ་དེ་ཉིད་ཅེ་གཅིག་ཏུ་བསྐྱང་ཞིང་ཉ་ཅང་མི་དབྱེད་དོ། དེ་ལྷར་འཛོག་  
 སྒྲོམ་བྱས་པ་ན་ཉ་ཅང་བཞག་དྲགས་པས་ཆོས་སོ་སོར་འབྱེད་པར་མི་སྒྲོ་ཞིང་ཕར་……  
 སྒྲོམ་པ་ན་འབྲོ་མི་ཉན་པར་མི་དོག་པར་བྱིལ་བྱིལ་འགྲོ་ན་ཞི་གནས་ཤས་ཆེ་བས་ཞི་  
 ལྷག་ཆ་ས་སྒྲོམས་པ་ཡིན་ལ། དེ་ལ་བཞག་དྲགས་ན་ཞུམ་བཤམ་བྱང་བ་དང་  
 རྒྱགས་པ་འདྲིན་པས་དེ་དག་ཏུ་འགྱུར་དེ། དཔེར་ན་དབྱེད་དྲགས་ནས་ལྷག་  
 མཐོང་ཤས་ཆེ་ན་དེའི་མཐར་གོད་པ་སྟེ་བ་བཞིན་ནོ། །དེས་ན་སོ་སོར་དོག་པའི་  
 ཤེས་རབ་ཀྱི་ཅལ་སྒྲོང་པའི་དབྱེད་པ་དང་། ཅེ་གཅིག་ཏུ་འཛོག་པ་གཉིས་ཀ་བྱ་  
 སྟེ།” ཞེས་གསུངས་སོ། །

དེ་བཞིན་ཏུ་སྒྲོབ་དཔོན་ཉིད་ཀྱིས་མཛད་པའི་བསྒྲོམ་རིམ་ཐ་མ་ལས་<sup>2</sup> “ཡང་  
 གང་གི་ཆོ་ལྷག་མཐོང་བསྒྲོམས་པས་ཤེས་རབ་ཤིན་ཏུ་ཤས་ཆེ་བར་གྱུར་པ་དེའི་ཆོ།  
 ཞི་གནས་རྒྱང་པའི་ཕྱིར་མར་མེ་རྒྱང་ལ་བཞག་པ་བཞིན་ཏུ་སེམས་གཡོ་བས་དེ་ཁོ་  
 ན་ཤིན་ཏུ་གསལ་བར་མི་མཐོང་བར་འགྱུར་དེ། དེའི་ཕྱིར་དེའི་ཆོ་ཞི་གནས་བསྒྲོམ་

1. ཆེ་ག་ ༡༤ (བཟ་ལྷན་-དེབ་) 2. ལྷ་-བཟླན་ (དབྱམ་-ཀུ་ ༡༠)



བར་བྱའོ། །ཞི་གནས་ཀྱི་ཤས་ཆེན་ཡང་གཉིད་ཀྱིས་ལོག་པའི་མི་བཞིན་དུ་དེ་ཁོ་  
ན་ཤིན་དུ་གསལ་བར་མཐོང་བར་མི་འགྱུར་དེ། དེ་ལྟ་བུས་ན་དེའི་ཆོ་ཡང་ཤེས་  
རབ་བསྐྱེད་པར་བྱའོ།” །ཞེས་དབྱུང་འཛིག་སྤེལ་མའི་ལམ་སྒྲོམ་དགོས་པའི་ལྷ་  
མཚན་དཔེ་དང་བཅས་པ་ཤིན་དུ་གསལ་བར་གསུངས་སོ། །

འདི་ལྟར་འཛིག་སྒྲོམ་གྱིས་གནས་ཆ་བསྐྱབ་པ་དང་། དབྱུང་སྒྲོམ་གྱིས་སྒྲོ་  
འདོགས་གཅིད་པ་གཉིས་སྒྲ་མ་སེམས་སྤྱད་བྱེད་དང་། བྱི་མ་སེམས་འཕྲོ་བྱེད་  
ཡིན་པས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་དོན་སྒྲོམ་པ་ལ་འགལ་ཁྲར་སྒྲ་བ་ནི་ཆེས་མི་དུགས་དེ།  
བསྐྱེད་རིམ་དང་བོ་ལས།<sup>1</sup> “འདི་ལྟར་གང་གི་ཆོ་ཞི་གནས་ཀྱིས་དམིགས་པ་ལ་  
སེམས་བདྲན་པར་བྱས་པ་དེའི་ཆོ་ཤེས་རབ་ཀྱིས་རབ་དུ་བདྲགས་ན་ཡང་དག་པའི་  
ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྒྲུང་བ་འབྱུང་ཏེ། དེའི་ཆོ་སྒྲུང་བ་འབྱུང་བས་སྒྲན་པ་བསལ་བ་བཞིན་  
དུ་སྒྲིབ་པ་མི་འབྱུང་ངོ་། །དེ་གཉིས་ཀ་ཡང་མིག་དང་སྒྲུང་བ་བཞིན་དུ་ཡང་དག་  
པའི་ཡེ་ཤེས་འབྱུང་བ་ལ་ཕན་ཚུན་མཐུན་པར་གནས་པ་ཡིན་གྱི། སྒྲུང་བ་དང་  
སྒྲན་པ་བཞིན་དུ་མི་མཐུན་པ་མ་ཡིན་ནོ།” །ཞེས་སོ། །དེ་བཞིན་དུ་ཆེ་བདག་  
ཉིད་ཆེན་པོའི་གསུང་ཞི་ལྷག་གཉིས་ཀྱི་དཀའ་གནད་རྒྱལ་བའི་དགོངས་པ་བཞིན་...  
བཤད་པ་ལས།<sup>2</sup> “དེ་བས་ན་ཞི་གནས་བསྐྱེད་པས་སེམས་བདྲན་པོ་རྟེན་པ་  
ནི་སྒྲུང་བ་དང་འདྲ། ཤེས་རབ་ཀྱིས་དེ་ཁ་ན་ཉིད་ལ་དབྱེད་པ་ནི་མིག་དང་འདྲ་  
བར་ཤེས་པར་བྱ་ཡི། ཞི་གནས་ནི་སེམས་མི་གཡོ་བར་ཅེ་གཅིག་དུ་གནས་  
པ་ཡིན་ལ། ལྷག་མཐོང་ནི་ཡུལ་ལ་དབྱེད་པ་ཡིན་པས་གཅིག་གིས་གཅིག་  
ལ་གནོད་པ་ཡིན་ནོ་སྒྲུམ་དུ་མི་བརྒྱུང་ངོ་།” །ཞེས་ཞི་གནས་ཀྱིས་དམིགས་པ་ལ་

1. སྤེ་—བཟུན་ (དབྱ་མ་—‘ཀོ’ ༣༤) 2. ཆེ་—‘མ’ ༤༡ (བཟུ་ལྷན་—དེ་བ་)

སེམས་བདེན་པར་བྱས་པ་དང་། སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་དེ་ཁ་ན་ཉིད་ལ་  
བདེགས་ཤིང་དབྱེད་པ་གཉིས་གཅིག་གྲོགས་སུ་གཅིག་འགྲོ་བའི་ཚུལ་གསལ་བར་  
གསུངས་སོ། །

དེ་ཡང་སེམས་ལ་གནས་ཆ་བདེན་པོ་མེད་པར་དབྱེད་པ་ཤུགས་ཚུང་བ་དང་།  
མི་དབྱེད་པར་གྲོད་ནས་འཛོག་པ་ཙམ་གྱིས་གནས་ལུགས་ཀྱི་དོན་ལ་སྒྲོ་འདོགས་...  
ཚུང་ཟད་ཀྱང་མི་ཆོད་པའི་ཕྱིར་དེ། དཔེར་ན་ལག་པ་བདེན་པོ་འི་ཤུགས་མེད་  
པར་སྙེ་རེ་གཏོང་དུ་བསྐྱུན་མི་བྱུང་ལ། སྙེ་རེ་བདེན་པོར་བྱས་དེ་བཟུང་བསྐྱེད་པ་ཁོ་  
ནས་ཀྱང་ཤིང་སྒོང་ཆོད་མི་བྱུང་བ་བཞིན་དུ། དོན་གྱི་སྐབས་འདྲིར་ཡང་རྗེ་གྲང་  
ཐང་བསྐྱུན་པའི་སྒྲོན་མེས་མཛད་པའི་འཇམ་མགོན་གྲུལ་བ་གཉིས་པ་ལ་བསྐྱུན་པའི་  
སྒྲིང་པོ་གསལ་བར་མཛད་པའི་ཚུལ་ལས་བཅས་ཤིང་བསྐྱེད་པའི་བསྐྱེད་པ་དོན་...  
ལྷན་ས་ལས།<sup>1</sup>

ཉོན་མོངས་འཆིང་གཅོད་ཀྱི་སྒྲུབ་ཀྱི། །

ལྷ་བའི་རལ་གྱི་འཛོན་བྱེད་པ། །

སྒྲོམ་པའི་དབྱེད་པ་བདེན་པོ་འི་ཐབས། །

མཐའ་ཡས་ས་སྡེ་བཞིན་དུ་གསུངས། །ཞེས་དང་། དེའི་ཐད་  
ཀྱི་བསྐྱེད་པ་དེ་ཉིད་ཀྱི་རྒྱ་ཆེར་འགྲེལ་བསྐྱུན་པའི་དེ་ཉིད་སྒྲུང་བ་ལས་<sup>2</sup>ཀྱང་། “ཉོན་  
མོངས་པའི་འཆིང་བ་གཅོད་པ་ལ་གཅོད་བྱེད་དངོས་ཀྱི་སྒྲུབ་ལུགས་ཀྱི་ཟབ་མོ་ལྷ་...  
བའི་རལ་གྱི་ཡིན་ཡང་། དེ་འཛོན་པའི་ཐབས་སུ་ཞི་གནས་སྒྲུབ་ཚུལ་སོགས་བསྒྲོམ་  
པའི་རིམ་བ་ནམས་ས་སྡེ་ནས་འབྱུང་བ་ལྟར་ཉམས་སུ་ལེན་དགོས་པའི་ཕྱིར།”

1. གྲང་ཐང་ ‘ཀ’ ༩ (སྡེ་ཐོ་-དེལ་) 2. གྲང་ཐང་ ‘ཀ’ ༡༠ (སྡེ་ཐོ་-དེལ་)



ཞེས་ཆེས་སྐད་གསུངས་པ་བཞིན་སྤྱད་ཞེས་གྲུབ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཅ་བ་བདག་འཛིན་...  
 མ་རིག་པ་ཅད་ནས་སྤོང་བ་ལ་དེ་དང་འཛིན་སྤངས་དངོས་སུ་འགལ་བ་བརྟན་པའི་  
 སྤྱིང་པོ་གནས་ལྷགས་སྤོང་བ་ཉིད་ཀྱི་དོན་དེ་ཉིད་ལེགས་པར་དབྱེད་ནས་ཚུལ་བཞིན་  
 གློམ་པ་ལ་རག་ལས་བས། དེ་ཡང་ཟབ་རྒྱས་ཀྱི་བཀའ་བབ་ཚུལ་མི་འདྲ་བའི་  
 དབང་གིས་རྗེ་བཙུན་འཇམ་དབལ་དབྱངས་ནས་མགོན་པོ་སྐུ་སྐྱབ་ལ་བརྒྱད་པའི་...  
 ཟབ་མོ་དེ་ལྟ་བུའི་མཚན་རྟོན་དེ་ཉིད་ལེགས་པར་འཛིན་པ་ལ། རྒྱལ་བ་བྱམས་པ་  
 མགོན་པོ་ནས་འཕགས་པ་ཐོགས་མེད་ལ་བརྒྱད་པའི་བསྒྲོམ་པའི་མན་ངག་ལ་ངེས་  
 བར་བརྟེན་དགོས་ཤིང་། དེ་དག་པན་ཚུན་འགལ་བ་མེད་པར་གྲོགས་སུ་ཁྱེད་  
 དགོས་ཚུལ་ཆེས་གསལ་པར་གསུངས་པའི་གནད་ནི། ཞི་ལྷག་རྒྱང་འབྲེལ་ལམ་  
 དབྱེད་འཛིག་རྒྱང་འབྲེལ་དགོས་ཚུལ་དེ་ཉིད་ཡིན་ནོ།

དེས་ན་འཛིག་གློམ་གྱིས་སེམས་དམིགས་པ་ལ་བརྟན་ཆགས་པར་སྤྱོད་པའི་  
 གནས་ཆ་སྐྱབ་པ་དང་། མོ་མོར་རྟོག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་བརྟགས་ཤིང་དབྱེད་  
 པ་གཉིས་དང་ལྷན་ན་སྤང་བུ་མི་མཐུན་པའི་ཕྱོགས་འཛོམས་པ་ལ་སྟོབས་དང་ལྷན་  
 བར་འགྱུར་དེ། རྗེ་གསུང་ཞི་ལྷག་གཉིས་ཀྱི་དཀའ་གནད་ལས།<sup>1</sup> “དབང་ན་  
 ལག་པས་སྟེ་བརྒྱངས་ནས་ཤིང་སྤོང་གཅོད་པ་ན། ལག་པ་ཤིན་དུ་འདར་ན་སྟེ་  
 ཤིང་སྤོང་ལ་རྗེ་ཅམ་བརྒྱབ་ཀྱང་ཤིང་སྤོང་གཅོད་མི་རྒྱས་པ་བཞིན་དུ། ཞི་གནས་  
 སྤོན་དུ་མ་བསྐྱབས་ན། དབྱེད་པའི་སེམས་ལ་གནས་པའི་ཅི་འབྱར་གྱི་མེད་པས་རྗེ་  
 ཅམ་དབྱེད་ཀྱང་མི་མཐུན་ཕྱོགས་འཛོམས་པའི་སྟོབས་མི་འཕྱུང་ངོ་། །སྟོབས་ལྷན་  
 ཀྱི་ལག་པ་ཤིན་དུ་བརྟན་པས་རྟོ་བའི་སྟེ་བརྒྱངས་ནས་བཅད་ན་ཤིང་སྤོང་སྐྱར་དུ་

1. རྗེ་གསུང་ ༤༠༩ (གཟུ་ལྷན་-དེབ་)

གཅོད་ལྷན་པ་བཞིན་དུ། ཞི་གནས་ཀྱི་དྲིང་ངེ་འཛིན་གིན་དུ་བརྟན་པའི་ལག་པས་  
 བརྒྱང་བའི་སེམས་ཀྱིས་ཤེས་རབ་ཀྱི་མཚན་རྟོན་པོ་བྲགས་དེ། དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ལ་  
 དབྱུང་བ་གོམས་ན། མི་མཐུན་ཕྱོགས་འཇམས་པའི་སྟོབས་དང་ལྷན་པར་འགྱུར་  
 རོ།” །ཞེས་དང་། དེ་བཞིན་དུ་བསྐྱོམ་རིམ་དང་པོ་ལས། “དེ་ལྟ་བུས་ན་དྲིང་  
 ངེ་འཛིན་གྱི་ལག་གིས་སེམས་བརྒྱང་སྟེ། གིན་དུ་ཆ་ཕྱ་བའི་ཤེས་རབ་ཀྱི་མཚན་  
 གྱིས་གཞུགས་ལ་སོགས་པ་ལ་ལོག་པར་ནམ་པར་རྟོག་པའི་ས་བོན་གྱི་རྒྱལ་རྒྱ་……  
 སེམས་དེ་ལ་ཡོད་པ་བསལ་བར་བྱའོ། །དེ་ལྟར་བྱས་ན་རྩ་བ་ནས་སྤྱང་བའི་གིང་  
 དག་ས་ལས་མི་སྐྱེ་བ་བཞིན་དུ་རྩ་བ་མེད་བས་ན་ལོག་པར་ནམ་པར་རྟོག་པའི་……  
 སེམས་ཀྱང་སྐྱེ་བར་མི་འགྱུར་རོ།” །ཞེས་གིན་དུ་གསལ་བར་གསུངས་པའི་ཕྱིར་རོ།

མདོར་བསྡུས་ན་ཇི་བདག་ཉིད་ཆེན་པོ་འི་ལམ་རིམ་བསྡུས་དོན་ལས།<sup>3</sup>

ཆེ་གཅིག་བསམ་གཏན་ཅུམ་ལ་འཁོར་བ་ཡི། །

རྩ་བ་གཅོད་པའི་ལྷན་པ་མ་མཐོང་ཞིང་། །

ཞི་གནས་ལམ་དང་བྲལ་བའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས། །

ཇི་ཅུམ་དབྱུང་ཀྱང་ཉོན་མོངས་མི་ལྡོག་བས། །

ཡིན་ཕྱགས་སུ་ཐག་ཆོད་པའི་ཤེས་རབ་དེ། །

གཡོ་མེད་ཞི་གནས་ཏྲ་ལ་བསྐྱོན་ནས་ནི། །

མཐའ་བྲལ་དབྱུང་བའི་རིགས་པའི་མཚན་རྟོན་གྱིས། །

མཐར་འཛིན་དམིགས་གཏད་ཐམས་ཅད་འཇིག་བྱེད་པའི། །

1. ཐཱི་-བཏུན་ (དབྱུང་པ་ཀེ་ 30) 2. ཇི་ལ་ 730 (བཏུན་ཐུན་-དེབ་)



ཚུལ་བཞིན་དབྱེད་པའི་ཡངས་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས། །

དེ་ཉིད་དོགས་པའི་སྒྲ་བྲིས་བྱས་པར་མཛད། །ཅེས་སེམས་  
དམིགས་པ་ལ་ཅེ་གཅིག་དུ་འཛོག་པའི་ཞི་གནས་ཅམ་ཤིས་འཁོར་པའི་ཅ་བ་……  
བདག་འཛིན་སྤོང་མི་ལུས་ལ། དེ་བཞིན་དུ་ཞི་གནས་དང་བྲལ་བའི་སོ་སོར་དོག་  
པའི་ཤེས་རབ་ཅམ་ཤིས་ཀྱང་ཉན་མོངས་པ་ལྡོག་མི་ལུས་སོ། །དེས་ན་གནས་  
ལུགས་ཀྱི་དོན་ལ་སྤྱ་ཐག་ཆོད་པའི་ཤེས་རབ་དེ་ཉིད་ཅེ་གཅིག་དུ་འཛོག་པའི་ཞི་……  
གནས་ཀྱི་དྲ་ལ་བསྐྱོན་ནས་སྟེ་དེ་གཉིས་རྒྱང་དུ་སྒྲེལ་དོ། །དྲག་ཆད་ཀྱི་མཐའ་དང་  
བྲལ་བའི་དབྱ་མའི་རིགས་པའི་མཚོན་རྟོན་ལ་བདེན་ནས་བདག་དུ་འཛིན་པའི་ཞེན་  
ལུལ་ཅད་ནས་འབྱེད་པར་བྱེད་པའི་ཚུལ་བཞིན་དབྱེད་པའི་ཡངས་པའི་ཤེས་རབ་……  
འབྱུང་ལ། ཤེས་རབ་དེ་ཉིད་ཀྱིས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དོགས་པའི་སྒྲ་བྲིས་བྱས་པར་མཛད་  
ཅེས་ཇི་སྐད་གསུངས་པའི་དོན་ལ་ངས་བ་དྲང་བར་བྱུངོ། །

གཉིས་པ་གང་བསྐྱོམ་པར་བྱ་བྱའི་ཆོས་ཀྱི་ནམ་གངས་བཤད་པ།

དེ་ཡང་རང་རྒྱུད་ལ་གང་མངོན་དུ་གྱུར་སྒྲ་ཞིང་གོམས་འདྲིས་ཆེ་བའི་ཉན་མོངས་  
དེ་དག་གི་གཉེན་པོ་དེ་ཆོས་སྤྱ་གང་ཞིག་བསྐྱོམ་པར་བྱ་ཞེ་ན། དེ་ཡང་འཕགས་  
པ་ཐོགས་མེད་ཀྱིས་མཛད་པའི་ཉན་ཐོས་ཀྱི་ས་ལས།<sup>1</sup> “གལ་དེ་འདྲོད་ཆགས་  
སྤྱད་པ་ཞིག་ཡིན་ན་ནི། མི་རྒྱུག་པ་ལ་སེམས་ཉེ་བར་གཏོད་པར་བྱེད་དོ། །ཞེ་  
སྤང་སྤྱད་པ་ཞིག་ཡིན་ན་ནི་བྱམས་པ་ལའོ། །ནམ་པར་དོག་པའི་བར་དུ་སྤྱད་པ་  
ཞིག་ཡིན་ན་ནི། དབྱགས་རྒྱུ་བ་པ་དང་། དབྱགས་འབྱུང་བ་དྲན་པའི་བར་ལའོ། །

1. ཐཱ་-བཏུན་ (མེམས་ཅམ་-འཛོ་ ༡༤༢)

ཆ་མཉམ་པར་སྤྲད་པ་དང་། ཉེན་མེད་པ་ཆུང་བའི་རང་བཞིན་ཅན་ཞིག་ཡིན་ན་ནི།  
 དམེད་པ་གང་ལ་དགའ་བ་སྤྱི་བར་འགྱུར་བ་དེར་རབ་དུ་བརྩོན་པར་བྱེད་པ་སྟེ།”  
 ཞེས་སོགས་གསུངས་པ་བཞིན་འདོད་ཆགས་ཀྱི་གཉེན་པོར་མི་སྤྲུག་པ་དང་། ཞེ་  
 སྤང་གི་གཉེན་པོར་བྱམས་པ་སྒྲོམ་པ་སོགས་གསུངས་སོ།།

སྤྱིར་བསྒྲོམ་བྱའི་ཆོས་ལ་དེན་འབྲེལ་ལྷགས་འབྱུང་ལྡོག་དང་། དལ་འབྱུར་  
 རྟེན་དཀར་དང་འཆི་བ་མི་དྲག་པ། བྱམས་སྤྱིང་ཇི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་དང་།  
 ཡང་དག་པའི་ལྷ་བ་དང་ཞི་ལྷག་སོགས་མཐའ་ཡས་པ་ཞིག་ཡོད་པས་བཟོད་ཀྱི་...  
 མི་ལང་མོད། འོན་ཀྱང་འདྲིང་སྐབས་འབྲེལ་གཞུང་འདྲིའི་བཟོད་བྱའི་གཙོ་བོ་  
 དང་། དྲིང་ངེ་འཛིན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྤྱིའི་ཆིངས་སམ་དེ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྤྱད་བྱེད་ཞི་  
 གནས་དང་ལྷག་མཐོང་གི་ནམ་བཞག་ཅུང་ཟད་བཤད་པར་བྱའོ།།

གསུམ་པ་འདྲིང་བསྟན་བསྒྲོམ་བྱའི་གཙོ་བོ་ཞི་ལྷག་གི་ནམ་བཞག་བཤད་པ།

### (༡) ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་གི་ཕན་ཡོན།

ཐེག་པ་ཆེ་ཆུང་གི་ཡོན་ཏན་འཛིག་དེན་དང་འཛིག་དེན་ལས་འདས་པ་ཇི་སྟེད་  
 ཅིག་གསུངས་པ་ཐམས་ཅད་བསམ་གཏན་གྱི་ངོ་བོ་ཞི་གནས་དང་། ཤེས་རབ་  
 ཀྱི་ངོ་བོ་ལྷག་མཐོང་གི་འབྲས་བྱ་ཡིན་པར་དགོངས་འབྲེལ་ལས་<sup>1</sup>གསུངས་དེ།  
 “བྱམས་པ། ཡང་ཉན་ཐོས་ནམས་ཀྱི་འཕམ། བྱང་ཆུབ་སེམས་དབའ་ནམས་  
 ཀྱི་འཕམ། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ནམས་ཀྱི་དགོ་བའི་ཆོས་འཛིག་དེན་པ་དང་།  
 འཛིག་དེན་ལ་འདས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་གི་འབྲས་བྱ་...”

1. ཐྱི་-གཏན་ (མདོ་ཙ་ ༣༤)



ཡིན་པར་རིག་བྱའོ” ཞེས་དང་། ཡང་དེ་ཉིད་ལས།<sup>1</sup>

སྤྱི་བ་པོ་ཡི་ལྷག་མཐོང་དང་།

ཞི་གནས་གོམས་པར་བྱས་ན་ནི།

གནས་ངན་ལེན་གྱི་འཛིང་བ་དང་།

མཚན་མའི་འཛིང་ལས་ནས་གྲོལ་འགྱུར། ཞེས་གསུངས་

ཤིང་དོན་དེ་ཉིད་ཤུན་ཏི་བ་ལྟེ། རིན་ཆེན་འབྱུང་གནས་ཞི་བས་མཛད་པའི་ཤེས་

རབ་ཀྱི་པ་རྩ་དུ་ཕྱིན་པ་བསྐྱེད་པའི་མན་ངག་ལས་<sup>2</sup>ཀྱང་།

ཞི་གནས་དང་ནི་ལྷག་མཐོང་དག།

བསྐྱེད་པས་གནས་ངན་ལེན་དང་ནི།

མཚན་མ་ཡིན་འཛིང་བ་ལས།

ནལ་འབྱོར་བ་ནི་གྲོལ་བར་འགྱུར། ཞེས་གསུངས་པ་བཞིན་

ཡུལ་ཅན་ཕྱིན་ཅི་ལོག་གོང་ནས་གོང་དུ་བསྐྱེད་པའི་ནལ་བ་སེམས་རྒྱད་ལ་གནས་

བའི་བག་ཆགས་གནས་ངན་ལེན་གྱི་འཛིང་བ་དང་། དེ་གསོ་བར་བྱེད་པ་ཡུལ་

ཕྱིན་ཅི་ལོག་ལ་མངོན་པར་ཞེན་པའི་བག་ཆགས་མཚན་མའི་འཛིང་བ་གཉིས་ལས་

སྤྱི་མ་ལྷག་མཐོང་དང་། སྤྱི་མ་ཞི་གནས་ཀྱིས་སྤོང་བ་བཀྲུང་དེ་ཉིད་ཀྱི་ཐུས་

བཤད་དུ་ཡང་གསལ་བར་གསུངས་སོ།

དེ་དག་ནི་ཞི་ལྷག་གི་ཐ་སྙད་བདག་པའི་ཕན་ཡོན་ཡིན་གྱི། ཐ་སྙད་དེ་མ་

བདག་པ་ཀྱང་དོན་འདྲ་བས་བསམ་གཏན་དང་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕན་ཡོན་གང་གསུངས་

པ་ནམས་ཀྱང་འདི་གཉིས་ཀྱི་ཕན་ཡོན་དུ་ཤེས་དགོས་པར་གསུངས་སོ།

1. ཟེ་—བཀའ་ (མདོ་ཙ་ ༩) 2. ཟེ་—བཀའ་ (སེམས་ཅིམ་ཏེ་ ༡༣༠)

(2) དེ་གཉིས་དྲིང་ངེ་འཛིན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་བསྐྱུང་བྱེད་དུ་བསྟན་པ།

དེ་ཡང་ཐེག་པ་ཆེ་ཆུང་གི་དྲིང་ངེ་འཛིན་མཐའ་ཡས་པ་ཞིག་བཀའ་སྤྱུལ་བ་...  
 ཐམས་ཅད་ཀྱང་གང་དུ་འདུས་པའི་གནད་རམ་པ་ནི་ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་...  
 ཡིན་ཏེ། དགོངས་འགྲུལ་ལས།<sup>1</sup> “བུམས་པ། ངས་ཉན་ཤིས་ནམས་དང་། བྱང་  
 རྩལ་སེམས་དཔའ་ནམས་དང་། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ནམས་ཀྱི་དྲིང་ངེ་འཛིན་  
 རྣམ་པ་དུ་མ་བསྟན་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་དག་ཐམས་ཅད་ཞི་གནས་དང་། ལྷག་  
 མཐོང་གིས་བསྐྱུས་པར་རིག་པར་བྱའོ།” ཞེས་གསུངས་སོ། །དེ་བཞིན་དུ་བསྐྱེལ་  
 རིམ་བར་པ་ལས་<sup>2</sup>ཀྱང་། “དེ་གཉིས་ཀྱིས་དྲིང་ངེ་འཛིན་ཐམས་ཅད་བསྐྱུས་པའི་  
 ཕྱིར་ནལ་འབྱོར་བ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་དུས་ཐམས་ཅད་དུ་ངེས་པར་ཞི་གནས་དང་ལྷག་  
 མཐོང་བསྟེན་པར་བྱ་སྟེ།” ཞེས་གསུངས་ཤིང་། དོན་དེ་ཉིད་ཀྱང་སྤྱུལ་ཡོན་  
 དན་གྱི་མཚོ་འི་ཤེས་བྱ་ཀུན་ཁྲབ་ལས།<sup>3</sup>

ཐེག་པ་ཆེ་ཆུང་དྲིང་ངེ་འཛིན་གྱི་མཚོ་འི་ཆེངས།

ཞི་གནས་ལྷག་མཐོང་གཉིས་ཀྱིས་ངེས་པར་བཅུལ། ཞེས་སོགས་  
 གསུངས་པའི་ཕྱིར་རོ།

(3) ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་གི་ངོ་བོ།

དེ་ཡང་བསྐྱེལ་རིམ་བར་པ་ལས།<sup>4</sup> “ཕྱི་རོལ་གྱི་ཡུལ་ལ་ནམ་པར་གཡེང་  
 བ་ཞི་ནས་ནང་དུ་དམིགས་པ་ལ་རྒྱན་དུ་རང་གི་ངང་གིས་འཇུག་པ་ལ་དགའ་བ་...”

1. ཐེ་-བཀའ་ (མདོ་‘ཅ’ 30) 2. ཐེ་-བཙན་ (དབུ་མ་‘ཀ’ 100)

3. ཀོང་སྤྱུལ་‘མ’ 333 (ཐེ་ལེ་-དཔེ་བྱང་) 4. ཐེ་-བཙན་ (དབུ་མ་‘ཀ’ 100)



དང་ཤིན་ཏུ་སྤངས་པ་དང་ལྷན་པའི་སེམས་ཉིད་ལ་གནས་པ་ནི་ཞི་གནས་ཞེས་བྱའོ།  
 ༡ ཞི་གནས་དེ་ཉིད་ལ་དམིགས་པའི་ཆོ་དེ་ཁོ་ན་ལ་ནམ་པར་དབྱེད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་  
 ཉི་ལྷག་མཐོང་ཡིན་ཏེ།” ཞེས་གསུངས་པ་ལྷན་སེམས་ཕྱི་རེལ་གྱི་ཡུལ་ལ་ནམ་  
 བར་གཡང་བ་ཞི་ནས་ནང་དུ་དམིགས་པ་ལ་ཅེ་གཅིག་དུ་འཛོལ་བའི་དགའ་བ་དང་  
 ཤིན་སྤང་གིས་ཟིན་པའི་དྲིང་ངེ་འཛིན་ཞི་གནས་ཀྱི་དོན་དང་། ཞི་གནས་ཀྱི་ངང་  
 ནས་རང་གི་དམིགས་པ་ལ་སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་དབྱེད་པ་བྱས་སྟོབས་  
 ཀྱིས་བྱངས་པའི་ཤིན་སྤང་གིས་ཟིན་པའི་ཤེས་རབ་ལྷག་མཐོང་གི་དོན་ཡིན་ཏེ།  
 འཕགས་པ་དཀོན་མཆོག་གྲིན་ལས།<sup>1</sup> “ཞི་གནས་ནི་སེམས་ཅེ་གཅིག་པ་ཉིད་དོ།  
 ལྷག་མཐོང་ནི་སོ་སོར་རྟོག་པའོ།” ཞེས་གསུངས་ཤིང་། མདོ་སྡེ་བུན་ལས་<sup>2</sup>ཀྱང་།

ཆོས་ཀྱི་མིང་ནི་བསྟོམས་པའང་འདི།

ཞི་གནས་ལས་དུ་ཤེས་པར་བྱ།

ལྷག་མཐོང་ལས་ནི་དེའི་དོན་རྣམས།

ནམ་པར་དབྱེད་པར་ཤེས་པར་བྱ། ཞེས་ཡང་དག་པའི་

དྲིང་ངེ་འཛིན་ལ་བརྟེན་ནས་སེམས་ཅེ་གཅིག་དུ་འཛོལ་བ་ཞི་གནས་དང་། ཆོས་  
 རབ་དུ་ནམ་པར་འབྱེད་པའི་ཤེས་རབ་ལ་ལྷག་མཐོང་དུ་གསུངས་སོ། །ཤུན་ཏི་  
 བའི་ཤེས་ཕྱིན་མན་ངག་ལས་<sup>3</sup>ཀྱང་མདོ་སྡེ་དགོངས་འབྲེལ་ཁྱངས་སུ་མཛད་ནས།  
 ཇི་ལྟ་བ་དང་། ཇི་སྟེད་པའི་དོན་ལ་མི་རྟོག་པར་ཅེ་གཅིག་དུ་འཛོལ་བ་ཞི་གནས་  
 དང་། ཡུལ་དེ་གཉིས་ལ་ནམ་པར་དབྱེད་པ་ལྷག་མཐོང་དུ་གསུངས་སོ།

1. ལྷོ་པག་ (མདོ་ལྷོ་ ༡༢) 2. ལྷོ་པག་ (ཞེས་པ་ཆོས་ལོ་ ༡༠)

3. ལྷོ་པག་ (ཞེས་པ་ཆོས་ལོ་ ༡༢༤)

(༧) ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་གཉིས་ཀྱི་སྒྲིམ་དགོས་པའི་བློ་མཚན།

དེ་ཡང་མར་མེ་ཆེས་གསལ་བ་དང་། རྒྱུ་གིས་མི་གཡོ་བ་གཉིས་དང་  
ལྷན་ན། གང་བལྟ་བུའི་གཞུགས་ནས་གསལ་བར་མཐོང་ནུས་པ་དེ་བཞིན་དུ།  
དོན་གྱི་སྐབས་འདྲིར་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་དོན་ལ་བལྟ་བའི་ཆོན་ལང་། ཡང་དག་པའི་  
དོན་ཕྱིན་ཅི་མ་ལོག་པར་ངེས་པའི་ཤེས་རབ་དང་། དམིགས་པ་ལ་ཇི་ལྟར་འདོད་  
པ་བཞིན་དུ་གནས་པའི་བསམ་གཏན་གཉིས་དང་ལྷན་ན། གནས་ཁྱགས་སྤོང་བ་  
ཉིད་ཀྱི་དོན་ཇི་ལྟར་བཞིན་གསལ་བར་མཐོང་བའི་ཕྱིར་དེ། ཁོ་དེ་ལ་དགོངས་  
ནས་སློབ་དཔོན་ཉིད་ཀྱི་བསྒྲུལ་རིམ་བར་བ་ལས།<sup>1</sup> “ཞི་གནས་དང་བྲལ་བའི་  
ལྷག་མཐོང་འབའ་ཞིག་གིས་ནི་ནྟེ་འགྱུར་བའི་སེམས་ཡུལ་ལ་ནམ་པར་གཡེང་...  
བར་འགྱུར་གྱི། རྒྱུ་གི་ནང་ན་འདུག་པའི་མར་མེ་བཞིན་དུ་བདན་པར་མི་འགྱུར་  
དེ། ཁོ་བས་ན་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྤང་བ་ཤིན་དུ་གསལ་བར་མི་འགྱུར་སྟེ། དེ་ལྟ་  
བས་ན་གཉི་ཀ་འདྲ་བར་བསྟེན་པར་བྱའོ” ཞེས་གསུངས་ཤིང་། དེ་བཞིན་  
དུ་ཀོང་སྤུལ་གྱི་ཤེས་བྱ་ཀུན་ཁྲབ་ལས།<sup>2</sup>

རྒྱུ་གིས་མི་གཡོ་མར་མེ་གསལ་བ་བཞིན། །

གཉིས་ཀྱི་ཆོགས་བས་གནས་ཁྱགས་དེ་ཉིད་དོགས། ཞེས་དང་།

ཟླ་བ་སྒྲོན་མའི་མདོ་ལས་<sup>3</sup>ཀྱང་ཇི་སྟེད་དུ།

1. ལྟེ་-བཏུན་ (དབ་མ་ཀྱི་ ༤༦) 2. ཀོང་སྤུལ་-‘སྤུ’ ༣༣༦ (སྟེ་ལོ་-དཔེ་ཐུང་)

3. ལྟེ་-བཏུན་ (མདོ་དུ་ ༢༠) ཟླ་བ་སྒྲོན་མའི་མདོ་དང་ཏང་ཏེ་འཛོན་ལྷན་པོ་འི་མདོ་ཞེས་པ་མཚན་  
ཐ་དང་དུ་བཞུགས་པ་ལས་མདོ་ཐ་དང་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ།



ཞི་གནས་སྟོབས་ཀྱིས་གཡོ་བ་མེད་པར་འགྱུར།།

ལྷག་མཐོང་གིས་ནི་རི་དང་འདྲ་བར་འགྱུར། །ཞེས་ཟབ་བྱས་

ཀྱི་དོན་སྟོས་པའི་ཆོ་སེམས་དམིགས་པ་ལ་མི་གཡོ་བར་གར་བཞག་དུ་བདན་པར་...  
གནས་པའི་ཞི་གནས་ཀྱི་ལག་རྩིས་དང་། བདག་དུ་ལྷ་བ་ལ་སོགས་པ་ལྷ་བ་ངན་  
པའི་པས་ཀྱི་གོལ་བས་བསྐྱལ་མི་ཉུས་པ་རི་དང་འདྲ་བའི་ལྷག་མཐོང་གི་ལག་རྩིས་  
དང་ལྷན་དགོས་པའི་ཕྱིར་རོ།

(༡) ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་གི་གོ་རིམ་ངེས་ཚུལ།

བྱུང་བའི་སྐུ་པོ་ཞི་བ་ལྟའི་སྟོན་འཇུག་ལས།<sup>1</sup>

ཞི་གནས་རབ་དུ་ལྷན་པའི་ལྷག་མཐོང་གིས།།

ཉོན་མོངས་ནམ་པར་འཛོམས་པ་གཤམ་བྱས་ནས།།

ཐོག་མར་ཞི་གནས་བཅའ་བྱ་.....། །ཞེས་གསུངས་པ་ལྷར་སྟེན་

ལ་ཞི་གནས་བསྐྱབས་ནས། དེ་ལ་བདེན་ནས་ལྷག་མཐོང་བསྟོམ་དགོས་པ་ཡིན་ནོ།།

དེ་ཡང་གཞུང་འདིའི་ཐད་ཀྱི་བྱུང་ཚབ་རྩིས་སྟོན་འཇུག་འབྲེལ་པར།<sup>2</sup> “དགོ་བའི་

དམིགས་པ་གང་ལ་ཅེ་གཅིག་པ་གོམས་པར་བྱས་པས་བྱིང་གོད་དང་བྲལ་དེ།

ལུས་སེམས་ཤིན་དུ་སྦྱངས་པའི་བདེ་བ་འདྲེན་པའི་ཞི་གནས་ཀྱི་དྲ་དང་རབ་དུ་ལྷན་

པའི་སྟོང་ཉིད་དོགས་པའི་ལྷག་མཐོང་གིས་ཁམས་གསུམ་གྱི་ཉོན་མོངས་པ་ས་བོན་

དང་བཅས་པ་ནམ་པར་འཛོམས་པར་གཤམ་པར་བྱས་ནས། ་གནས་ལྷགས་ཀྱི་

དོན་ལ་དབྱེད་པ་བྱས་པའི་སྟོབས་ཀྱིས་ཤིན་སྦྱངས་འདྲེན་ཉུས་པའི་ལྷག་མཐོང་.....

1. ཉེ་བཅུན་ (དབྱ་མ་ལ་ 23) 2. བྱུང་ཚབ་པ་ 727 (སྟེ་གོ་དཔེ་གཞུགས་)

བློ་བ་བར་བྱ་ལ། དེ་ལ་ཡང་ཐོག་མར་ཞི་གནས་བཅའ་བར་བྱ་སྟེ། ཞི་གནས་  
 སྟོན་ལ་མ་བསྐྱབས་པར་ལྷག་མཐོང་སྟེ་མི་སྲིད་པའི་སྤྱིར་དོ།” ཞེས་དང་།  
 མཁས་གྲུབ་ཆེད་ཀྱི་གསུང་ལྟ་བུར་སྟོན་སེལ་སྟོན་མེ་ལས།<sup>1</sup> “དེ་ལ་ཞི་གནས་ནི་ལྷག་  
 མཐོང་ཐོག་མར་རྒྱུད་ལ་སྟེ་བའི་ཐབས་དང་། སྟེས་ནས་ལྷག་མཐོང་གིས་སྤང་  
 བྱ་སྟོང་བ་དང་། ཡོན་ཏན་རྒྱུ་བ་པའི་གྲོགས་སྤྱི་རྒྱུ་དུ་འབྲེལ་དགོས་པ་ཡིན་  
 གྱི། དེ་གཉིས་ལས་ཀྱང་གཙུག་པོ་ནི་ལྷག་མཐོང་ཡིན་ཞིང་།” ཞེས་ལྷག་མཐོང་  
 རྒྱུད་ལ་སྟེ་བ་ལ་ཞི་གནས་སྟོན་དུ་འགྲོ་དགོས་དེ་དེའི་ཐབས་སམ་རྒྱུར་གསུངས་……  
 པའི་སྤྱིར་དོ།

དོན་དེ་ལ་དགོངས་ནས་རྩི་བདག་ཉིད་ཆེན་པོ་འི་དགོ་སྟོར་གྱི་གནད་ཀྱི་དེ་བ་  
 ལྷན་བསྐྱེད་ལྷག་བསམ་རབ་དཀར་ལས།<sup>2</sup> “དེ་ལོན་སྟོས་ཆེན་ནས་ལྷ་སྟོས་  
 ལ་གཙུག་པོར་འབད་བ་ལགས་ན། ལྷ་བ་སྟོང་ཉིད་དྲགས་པའི་སྟོ་དེ་སྟོས་པ་ཞི་  
 གནས་དང་མ་བུལ་བ་ཞིག་དགོས་དེ། དེ་བྱུང་ན་ལྷ་སྟོས་རྒྱུ་འབྲེལ། ཞི་ལྷག་  
 རྒྱུ་འབྲེལ་དུ་འགྲོ་བ་ཡིན་ལ། དེ་ལ་ཡང་དང་པོར་འབྱར་ཅི་དང་འདྲ་བའི་ཞི་  
 གནས་བདེན་པོ་མེད་ན་སྟོང་བ་ཉིད་ལ་སེམས་བཅར་དེ་སྟོན་མི་ཉུས་ལ། སྟོང་ཉིད་  
 ལ་སེམས་བཅར་གནས་པའི་མཉམ་བཞག་བཟང་པོ་མེད་ན་རྩིས་ཐོབ་དུ་སྤང་བ་……  
 རྩིས་སྤྱོད་ལྷ་བྱུར་འཆར་ས་མེད་པས་ན། ལྷག་མཐོང་ངམ་ངས་དོན་སྟོས་པའི་  
 སྟོན་ལ་ཞི་གནས་གཤམ་ཆེ་ཞིང་།” ཞེས་གསུངས་སོ།

དེས་ན་གསུང་རབ་དགོངས་འབྲེལ་རྩིས་སྤྱོད་པར་སྟོན་དུག་གི་ནང་ཆོན་བསམ་  
 གནད་དང་ཤེས་རབ་གཉིས་ཀྱི་རིས་པ་དང་། ལྷག་པ་དྲིང་འཛིན་གྱི་བསྐྱེད་བ་

1. མཁས་གྲུབ་‘5’ ༤༢༠ (སྟོ་མེ་—དཔེ་གཞི་གསུངས་) 2. ཆེ་ཁ་ཐོན་བྱ་ 720 (བཀའ་རྒྱུན་—དེ་བ)



ལ་བདེན་ནས་ལྷག་པ་ཤེས་རབ་ཀྱི་བསྐྱབ་པ་སྤེལ་བའི་རིམ་པ་ནམས་ཀྱང་། ཞི་  
གནས་སྤྲན་ལ་བསྒྲུབས་ནས་ལྷག་མཐོང་ཕྱིས་སྒྲུབ་པའི་རིམ་པ་དང་གནད་གཤིག་  
གོ།

(༦) ཞི་ལྷག་གཉིས་ཀྱི་བསྒྲུབ་ཚུལ་དངོས་བཤད་པ།

དང་པ་ཞི་གནས་བསྒྲུབ་ཚུལ་ནི།— དེ་ཡང་བསྒྲུབ་རིམ་ནས་གསུངས་པ་  
ལྟར་གྱི་ཚུལ་ཁྲིམས་ནས་བར་དག་པ་སོགས་ཞི་གནས་ཀྱི་ཚོགས་ནམས་ལ་ལེགས་  
བར་གནས་ནས། ཡིད་དང་མཐུན་པའི་གནས་སྤྲན་པ་མངོན་དུ་བྱས་ཏེ། ལུས་  
ཀྱི་འདུག་ལུགས་ལུས་ནམ་ལྟར་ཆོས་བརྟན་ལྷན་གྱི་སྒྲོན་སྒྲུབ་དགོས་ལ། དེ་  
ཡང་སེམས་དམིགས་པ་ལ་གཏོད་པའི་སྤྲན་དུ་རི་ལྟར་བྱ་བ་དང་། དམིགས་པ་  
ལ་སེམས་གཏོད་པའི་དུས་སྤྲན་སེམས་གང་ལ་འཛོལ་པའི་གཞི་དམིགས་པ་དངོས་...  
བརྒྱང་བ་དང་། དེ་ལ་སེམས་རི་ལྟར་གཏོད་པའི་ཚུལ་དང་། གཏོད་པའི་འོག་  
དུ་བྱིང་ཆོད་བྱུང་པའི་དུས་སྤྲན་དེའི་རྒྱ་དངོས་བརྒྱང་ནས་དེ་མི་འབྱུང་པའི་ཕྱིར་གཉེན་  
པོ་བསྐྱེད་ཚུལ་དང་། བྱིང་ཆོད་བྱུང་པའི་དུས་སྤྲན་རི་ལྟར་བྱ་བ་དང་། དེ་ལ་  
བདེན་ནས་སེམས་གནས་དབྱ་སྤེལ་བའི་ཚུལ་དང་། དེ་དག་སྤོབས་དུག་གིས་འགྲུབ་  
ལུགས་དང་། ཡིད་བྱེད་བཞིས་རྒྱད་ཚུལ་ནམས་ལེགས་བར་ཤེས་ནས་སྒྲུབ་ན་  
ཏིང་ངེ་འཛིན་སྒྲོན་མེད་པ་བདེ་ལྷག་དུ་འགྲུབ་པར་འགྱུར་ངོ། །

གཉིས་པ་ལྷག་མཐོང་བསྒྲུབ་ཚུལ་ནི།— དེ་ཡང་ལྷག་མཐོང་གི་རྒྱ་ཚོགས་  
གསུམ་བསྒྲུབ་རིམ་ལས་གསུངས་པ་ལྟར། གསུང་རབ་ཀྱི་གནད་ཕྱིན་ཅི་མ་ལོག་  
བར་མཐུན་པའི་མཁས་པ་ལ་བདེན་ནས། སྤྲི་མ་མེད་པའི་གཞུང་ལུགས་ལ་ཐོས་

བསམ་གྱི་སྒོ་ནས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དོར་པའི་ལྷ་བ་བསྐྱེད་པ་ནི་ལྷ་ག་མཐོང་གི་རྒྱ་ཚོགས་  
མེད་དུ་མི་རུང་བ་ཡིན་དུ། ཡིན་ལུགས་ཀྱི་དོན་ལ་སྤྱུ་ཐག་ཚད་པའི་ལྷ་བ་མེད་པར་  
ཇི་ལྷ་བ་དོགས་པའི་ལྷ་ག་མཐོང་གི་དོགས་པ་སྤེལ་མི་སྤྱིད་པའི་སྤྱིར་རོ།

དེ་འདྲ་བའི་ལྷ་བ་དེ་ཡང་རུང་དོན་ལ་མི་དོན་ངེས་དོན་ལ་དོན་པ་ཞིག་གིས་  
བཅའ་དགོས་པས་རུང་ངེས་ཀྱི་ཁྱད་པར་ཤེས་ནས། ངེས་དོན་སྤོང་བ་ཉིད་ཀྱི་ལྷ་  
བ་དེ་ཉིད་གཏན་ལ་འབེབས་དགོས་སོ། །དེ་ལ་ཡང་རིགས་པའི་རིགས་བྱ་ལེགས་  
པར་ངོས་ཟིན་པར་བྱས་ནས། དེ་འགོག་པ་ཐལ་རང་གང་གི་བྱེད་པ་ལ་བརྟེན་ཚུལ་  
དང་། བྱེད་པ་དེ་ལ་བརྟེན་ནས་ལྷ་བ་རྒྱུད་ལ་བསྐྱེད་ཚུལ་ལ། ཚེས་དང་གང་  
ཟག་གི་བདག་མེད་པ་གཏན་ལ་འབེབས་ཚུལ་དང་། བདག་མེད་པའི་ལྷ་བ་དེ་  
བསྐྱེས་པ་ལ་བརྟེན་ནས་སྤྱིབ་པ་སྤོང་ཚུལ་ནམས་གཞུང་ཆེན་པོ་འི་དགོངས་པ་……  
བཞིན་ལེགས་པར་ཤེས་པར་བྱས་ནས། བདག་མེད་པའི་དོན་ལ་རིགས་པའི་  
ནམ་གངས་མཐའ་ཡས་པའི་སྒོ་ནས་བརྟགས་ཤིང་དབྱེད་པར་བྱེད་པའི་སོ་སོར་དོག་  
པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་ལེག་པར་དབྱེད་ནས་སྤོང་བའི་བདག་མེད་པའི་ནམ་པ་ཅན་གྱི་  
ལྷ་ག་མཐོང་སྒོམ་པ་ནི། ཇི་ལྷ་བ་ལ་དམིགས་པའི་ལྷ་ག་མཐོང་བསྐྱེས་ཚུལ་ཡིན་ནོ།

ཉོན་མོངས་མངོན་འགྱུར་བ་སྤོང་བའི་སྤྱིར་ཞི་རགས་ནམ་ཅན་དུ་སྒོམ་པ་དང་།  
ཤེར་སྤྱིན་མན་ངག་སོགས་སྤྱུ་གསུངས་པ་ལྟར་ཁམས་བཅོམ་བྱེད་ཀྱི་མཚན་ཉིད་……  
ནམ་པར་འབྱེད་པ་སོགས་ཇི་སྟེད་པའི་དོན་ནམས་ནམ་པར་སྤེལ་སྒོམ་པའི་ལྷ་ག་  
མཐོང་ནི། ཇི་སྟེད་པ་ལ་དམིགས་པའི་ལྷ་ག་མཐོང་བསྐྱེས་ཚུལ་དུ་གསུངས་སོ། །



(v) ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་རྒྱུ་འབྲེལ་ཚུལ།

དེ་ལ་ཞི་གནས་གཉིས་མ་ཐོབ་ན་རྒྱུ་འབྲེལ་གྱི་མི་འོང་བས་རྒྱུ་འབྲེལ་བ་  
ལ་དེ་གཉིས་ངེས་པར་ཐོབ་དགོས་སོ། །དེ་ཡང་སྒྲོམ་བྱུང་གི་དྲི་གས་པ་ཐོབ་ཆེས་  
སྲུ་ཞི་གནས་ལ་བདེན་ནས་དབྱེད་སྒྲོམ་བྱས་པའི་མཐུས་ཆེ་ལྷ་བ་ལ་དམིགས་པའི་...  
ཆོས་རབ་དུ་ནམ་པར་འབྱེད་པའི་ལྷག་མཐོང་དང་། རི་ལྷ་བ་ལ་ཅེ་གཅིག་དུ་བདེན་  
པར་གནས་པའི་དྲི་ངེ་འཛིན་གྱི་ཞི་གནས་གཉིས་མཚུངས་པར་འཇུག་པར་གྱུར་བ་  
དེའི་ཆོ་ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་གཉིས་རྒྱུ་འབྲེལ་བར་གསུངས་དེ། འཕགས་  
པ་ཐོགས་མེད་ཀྱིས་མཛད་པའི་ཉན་ས་ལས།<sup>1</sup> “འདི་ལྷ་མྱེ། མཉམ་པར་བཞག་  
པའི་ནམ་པ་དགུ་བོ་གང་ཡིན་པ་ཐོབ་པར་གྱུར་ཅིང་དྲི་ངེ་འཛིན་ཡོངས་སུ་གྱུབ་པ་  
དེ་ལ་བདེན་ནས་ལྷག་པའི་ཤེས་རབ་ཆོས་ནམ་པར་འབྱེད་པར་བྱེད་པ་ལ་རབ་དུ་...  
བཙོན་པར་བྱེད་དེ། དེའི་ཆོ་རྒྱུ་ཆོས་ནམ་པར་འབྱེད་པར་བྱེད་པ་དེའི་ལམ་རང་  
གི་ངང་གིས་འཇུག་པ་དང་ཚོལ་བ་མེད་པར་འཇུག་པར་འགྱུར་ཞིང་། ཞི་གནས་  
ཀྱི་ལམ་ཆེ་ལྷ་བ་བཞིན་དུ་མངོན་པར་འདུ་བྱེད་པ་མེད་པས་ལྷག་མཐོང་ཡོངས་སུ་...  
དག་པ་དང་། ཡོངས་སུ་བྱང་བ་དང་། ཞི་གནས་ཀྱི་རྒྱུ་འབྲེལ་སོང་བ་དང་།  
ཉམས་བདེ་བས་ཡོངས་སུ་ཟིན་པར་འགྱུར་དེ། དེའི་ཕྱིར་དེའི་ཞི་གནས་དང་ལྷག་  
མཐོང་གཉིས་འདྲེས་པར་གྱུར་ཅིང་མཉམ་པར་རྒྱུ་འབྲེལ་བ་དང་། ཞི་གནས་  
དང་ལྷག་མཐོང་རྒྱུ་འབྲེལ་བར་འཇུག་པའི་ལམ་ཞེས་བྱའོ” །ཞེས་སོ། །

དེ་བཞིན་དུ་བསྒྲོམ་རིམ་གྱི་ལམ་ལས་<sup>2</sup>གྱུང་། “ཆེ་མྱེ་གང་གི་ཆོ་བྱིང་བ་དང་

1. མྱེ་—བཟུན་(ཞེས་ས་ཅམ་ཆོ་ ༡༤༤) 2. མྱེ་—བཟུན་(དབྱ་མ་ཀ་ ༡༨)

གོད་པ་ལས་དབེན་པའི་ཕྱིར་མཉམ་པར་བྱས་ཤིང་རང་གི་ངང་གིས་འཇུག་པས་  
 དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ལ་སེམས་ཤིན་དུ་གསལ་བར་གྱུར་པ་དེའི་ཚེ། ཅུལ་བ་སྒྲོད་ལ་བརང་  
 ལྷོས་སུ་བྱ་སྟེ། དེའི་ཚེ་ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་རྒྱུ་ཡིན་པའི་ལས་གྲུབ་  
 པ་ཡིན་པར་རེག་པར་བྱའོ།” །ཞེས་གསུངས་སོ། །དེས་ན་ཞི་ལྷག་མཚན་ཉིད་  
 པ་མ་ཐོབ་པའི་གོང་དུ་སོ་སོར་རྟོག་པའི་དབྱེད་སྒྲོམ་གྱི་རང་སྟོབས་ཀྱིས་སྤྲོག་གི་  
 པའི་གནས་ཆ་འདྲེན་མི་རྒྱས་པས་དབྱེད་སྒྲོམ་དང་འཇོག་སྒྲོམ་གཉིས་ཅུལ་བ་སོ་  
 སོ་སོ་སོར་བསྒྲོམ་དགོས་པ་ལ། དེ་གཉིས་ཐོབ་ནས་ལྷག་མཐོང་གི་ངོ་བོར་གྱུར་  
 པའི་སོ་སོར་རྟོག་པའི་དབྱེད་སྒྲོམ་བྱས་པ་ཉིད་ཀྱིས་གནས་ཆ་བདེན་པོའི་ཞི་གནས་  
 འདྲེན་པར་རྒྱས་པས་ན་ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་རྒྱུ་ཡིན་པར་གསུངས་སོ། །

དེ་ལྟར་བསམ་གཏན་གྱི་ངོ་བོ་ཞི་གནས་དང་། ཤེས་རབ་ཀྱི་ངོ་བོ་ལྷག་མཐོང་  
 གི་ནམ་བཞག་དང་། རི་ལྟར་བསྒྲོམ་ཚུལ་སོགས་ཞིབ་ཅིང་བྱས་པ་ས་སྟེ་ལྟ་དང་།  
 ལྷོས་ནམ་གཉིས། རེགས་ཚོགས་དུག །བྱམས་ཚོས་སྟེ་ལྟ། དབྱ་མ་སྟིང་བོ།  
 སྒྲོད་འཇུག་དང་བསྒྲོམ་རིམ་གསུམ་སོགས་ཤིང་དྲ་ཆེན་བོད་ག་དང་། མཁས་  
 པའི་དབང་བོ་ནམས་ཀྱི་གཞུང་ལུགས་ལ་ངེས་པར་བདེན་པར་བྱའོ། །དོན་དེ་ལ་  
 དགོངས་ནས་རྗེ་གྲུང་ཐང་གི་གསུང་བསྟོད་པ་དོན་ལྡན་མའི་གྱ་ཆེར་འབྲེལ་ལས།<sup>1</sup>  
 “དེ་སོ་སོར་ཤིང་དྲ་ཆེན་པོ་གཉིས་ལ་གཙོ་བོར་བདེན་དགོས་པའི་གྱ་མཚན་ནི།  
 སྦྱིར་གཉིས་ཀས་གཉིས་ཀ་གསུངས་མོད་ཀྱང་། རང་རང་ལ་ཟབ་བྱས་ཀྱི་གདམས་  
 པའི་བཀའ་བབ་ཚུལ་མི་འདྲ་བ་ཡོད་པས་གདམས་པའི་གནད་ཡོངས་སུ་རྗེགས་...  
 པར་འབྱུང་བ་དེ་དང་དེར་མེད་མི་རྒྱུ་དབེན་དགོས་པ་ཡིན་ནོ།” ཞེས་ཟབ་མོའི་

1. གྲུང་ཐང་ ‘ཀ’ ༡༥༤ (ཕྱི་ལོ་-དེ་ལོ་)



ལྟ་བུ་དང་དེ་བསྐྱོས་པའི་ཐབས་ཀྱི་ཆེ་བའི་ལམ་གྱི་རིམ་པ་ནམས་ཤིང་དྭ་ཆེན་པོ་སོ་  
 སོ་འི་གཞུང་ལ་གཙོ་བོར་བདེན་དགོས་པའི་རྒྱ་མཚན་ནི། སྤྱིར་ཤིང་དྭ་ཆེན་པོ་  
 གཉིས་ཀྱིས་ཟབ་རྒྱས་ཀྱི་ལམ་གྱི་རིམ་པ་གཉིས་ཀྱི་གསུངས་ཡོད་ཀྱང་། རྩེ་བཙན་  
 འཇམ་པའི་དབྱངས་ནས་ཀྱང་སྤྱོད་པའི་ཟབ་མོ་འི་ལྟ་བུ་དང་། རྒྱལ་བ་  
 དྲམས་པ་ནས་འཕགས་པ་ཐོགས་མེད་ལ་བརྒྱད་པའི་རྒྱ་ཆེ་བའི་ལམ་གྱི་རིམ་པ་...  
 ལྟེ། ཤིང་དྭ་ཆེན་པོ་གཉིས་རང་རང་ལ་ཟབ་རྒྱས་ཀྱི་གདམས་པའི་བཀའ་བབ་ཚུལ་  
 མི་འདྲ་བ་ཡོད་པའི་དབང་གིས་ཡིན་ལ། དེ་ཡང་གདམས་པའི་གནད་ཡོངས་  
 སྤྱི་ཚོགས་པ་ཆང་བ་ལ་དེ་གཉིས་ཀྱི་གཞུང་ལ་ངེས་པར་དུ་བདེན་དགོས་པར་.....  
 གསུངས་སོ།།

དེས་ན་གཞུང་ལུགས་སྤྱི་དང་། རྒྱད་པར་དུ་ཟབ་རྒྱས་ཀྱི་ལམ་གྱི་རིམ་པ་  
 ཡོངས་སྤྱི་ཚོགས་པ་ལ་སྤྱི་ཐག་ཆོད་པའི་ངེས་པ་འདྲེན་པའི་སྒོ་ནས་ཉམས་སྤྱོད་  
 བ་ལ། ཤིང་དྭ་ཆེན་པོ་གཉིས་སོགས་མཁས་པའི་གཞུང་ལུགས་ཀྱི་མཚོ་ལྟ་བུ་  
 ཉམས་བཞག་ནས་མན་ངག་དུ་གྲགས་པ་ཐན་ཐུན་རེ་ལ་ངལ་བ་བྱེད་བཞི། ས་སྤྱི་  
 བརྟེ་དཔ།<sup>1</sup>

ཡན་ལག་བརྒྱད་ལྟ་ཆུང་འབྲས་དུ། །

བ་ཚཱི་ཁྲོན་པ་བཞོ་བ་བཞིན། །ཞེས་གསུངས་པ་བཞིན་ནོ།

རོན་དེ་ལ་དགོངས་ནས་རྩེ་བཙན་ཉིད་ཆེན་པོས་ལམ་རིམ་ཞི་གནས་ཀྱི་མཚུག་  
 དུ་འདི་ལྟར་གསུངས་<sup>2</sup>དེ།

1. ས་པར་ཤ' 278 (ས་སྤྱི་བཀའ་འབྲས་-དབ་-r) 2. རྩེ་-པ' སྤྱི་ཆ' 772 (བཀའ་ལྟན་-དེ་བ')

མད་དང་དགོངས་འབྲེལ་བསྟན་བཅས་ཆེན་མོ་ལས།

ལེགས་གསུངས་དྲིང་འཛིན་བརྒྱུ་བའི་རིམ་པ་ནི།

རྩོད་བྱེད་བརྒྱུང་བས་སློ་གྲོས་ཅུང་ནམས་ཀྱིས།

ཆེ་བཞིན་མ་རྟོགས་རང་གི་སློ་ཡི་སྟོན། །

གཞན་ལ་བསྐྱོས་བས་གཞུང་བཟང་དེ་དག་ལ།

མེད་ཀྱི་སློང་བའི་གདམས་པ་མེད་སྟུང་ནས།

ཡོད་བའི་གཞུང་དུ་མ་བཅའ་མེད་བའི་སར།

འབད་བ་དུ་མས་ཆོལ་ཞིང་རྟེན་བར་སེམས། །ཞེས་དང་།

གཞུང་ལུགས་ཆེ་ལ་ལོ་མང་སྤངས་ཡི། །

གྲོགས་དག་རང་གི་ནོར་བུ་རིན་པོ་ཆེ།

དོར་ནས་གཞན་གྱི་འཆིང་བུ་མ་ལེན་བར།

རང་ལ་རིན་ཆེན་ཡོད་པ་མཐུན་པར་མཛོད། །ཅེས་གསུངས་སོ། །

དེ་བཞིན་དུ་ཅུལ་འདི་དག་ལ་བརྟེན་བའི་གོལ་སའི་གནས་ལེགས་བར་གཤམ་བའི་...

ཆེད་དུ་མཁས་གྲུབ་སྤྱུ་བའི་ཉི་མས་སྟོམ་གསུམ་གྱི་ནམ་བཞག་གྲུབ་བསྟན་བྱི་.....

དར་ལས།<sup>1</sup> “འཕགས་པ་ཁྲུ་སྤྱུ་ལ་བསྟན་གྱི་དགོངས་དོན་དཔལ་ལྷན་ཆུ་བ་

གྲགས་པས་བཀལ་བ་ཆེ་ལ་བ་བཞིན་དུ་རང་བཞིན་གྱིས་གྲུབ་པ་ཐ་སྟོད་དུ་ཡང་.....

ཁྲིགས་ཀྱང་། ལས་འབྲས་ལ་སོགས་པའི་བྱ་བྱེད་ཐམས་ཅད་གཞན་ངོ་ཅམ་ལ་

སྟེལ་མི་དགོས་པར་རང་ལུགས་ལ་ཡང་ཆོད་གྲུབ་དུ་ཁས་སྤངས་པས་ཆོག་བའི་...

དོན་འབྲེལ་དང་སྟོང་ཉིད་རྒྱང་འཇུག་དྲི་མ་མེད་བའི་རིགས་པས་ལེགས་བར་གདན་

1. མཁས་གྲུབ་ '9' ༤༡༤ (སྟོ་ལོ་—དཔེ་གཞན་གསུམ་)



ལ་ཐེབས་པའི་ལྷ་བ་ལས་གཞན་པ་མཁས་སྒྲོངས་གང་གིས་བཞག་པའི་ལྷ་བ་ཡིན་  
 ཀྱང་ལྷ་བ་ནོར། མདོའི་དོན་བྱམས་ཆོས་དང་ས་སྤེ་དང་དབྱ་མ་སྒྲོམ་རིམས་སོར་  
 ཀྱིས་རྒྱས་པར་བཀྲལ་བ་ལྷ་བ་ཞི་ལྷག་སོ་སོའི་ཆོགས་བཞེན་པ་དང་། དམིགས་  
 ཉིན་གྱི་ཁྱད་པར་དང་། དབྱད་སྒྲོམ་དང་འཛོག་སྒྲོམ་གྱི་ནམ་དབྱེ་དང་། སེམས་  
 གནས་པའི་ཐབས་དགུ་དང་སྒྲོང་བའི་འདྲ་བྱེད་བརྒྱད་དང་ལྷན་པར་བྱས་ནས་.....  
 བསྒྲུམས་པས་ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་རིམ་མཐུན་གྲུབ་པའི་ཚད། དེ་ནས་ཞི་  
 ལྷག་མཚན་ཉིད་ཚང་བ་ཐོག་མར་སོ་སོར་གྲུབ་པའི་ཚད། དེ་དག་གི་གོ་རིམ།  
 དེ་ནས་ཞི་ལྷག་རྩང་འབྲེལ་གྱི་དྲིང་ངེ་འཛོན་མཚན་ཉིད་ཚང་བར་གྱུར་པའི་ཚད།  
 དེ་དག་གི་ཐོག་མཐའ་བར་གསུམ་དུ་སྒྲོང་བ་ཆེ་ལྷར་སྒྲེ་བའི་ཚལ། ལུས་སེམས་  
 ལ་བྱུང་བའི་དྲགས་ཀྱི་ཁྱད་པར། བྱིང་སྒྲུགས་གཉིས་ཀྱི་ངོས་འཛོན་དང་ཁྱད་པར།  
 འཕྲོ་གོད་གཉིས་ཀྱི་ངོས་འཛོན་དང་ཁྱད་པར། དེ་དག་གཉིས་པོ་གང་གིས་ཆེ་ལྷར་  
 སེལ་ཚལ། དེ་ན་ཤེས་བཞིན་གཉིས་ཀྱི་ངོས་འཛོན་དང་ཁྱད་པར། དེ་གཉིས་སྐབས་  
 གང་དུ་ཚལ་ཆེ་ལྷར་བཞེན་ཚལ་སོགས་མཐའ་དག་པར་ཤིང་དྲ་ཆེན་པོ་དེ་དག་གི་...  
 དགོངས་པ་ཆེ་ལྷ་བ་བཞིན་དུ་ཕྱིན་ཅི་མ་ལོག་པར་ཤེས་ནས་གདན་ལ་འབེབས་པ་...  
 ཞིག་མེད་པའི་ཐོས་བསམ་པ་དག་གིས་ཞི་ལྷག་གི་བཤད་པ་དང་། བསམ་གདན་  
 ཕ་དག་གིས་མན་ངག་ཟབ་མོར་མིང་བདགས་པའི་དྲིང་ངེ་འཛོན་བསྐྱབ་པའི་ནམ་...  
 བཞག་ཆེ་ཅས་ཞིག་བྱས་ཀྱང་ཕལ་ཆེར་ནོར་བ་ལས་མ་འདས།” ཞེས་སོགས་  
 གསུངས་སོ། །

དེ་དག་གི་དོན་གྱི་སྒྲིང་བོ་མདོར་བསྟུན། ཞི་ལྷག་གི་བསྒྲུམ་ཚལ་དང་  
 དེའི་གནད་ནམས་ལ་ནང་བྱན་དུ་ཆུད་པར་བྱས་ནས། ཞི་གནས་དང་འབྲེལ་

བའི་སྒྲོམ་པ་ནས་དག་ཇི་ལྟ་བུ་ཞིག་དགོས་སྟེན་ན། ཇི་བཙན་དཀོན་མཆོག་  
 འཇིག་མེད་དབང་པོ་འི་གསུང་ཆོས་འབྱུང་ནོར་བུ་འི་སྤེང་བ་ལས།<sup>1</sup> “འཕགས་  
 པ་ཐོགས་མེད་སྒྱ་མཆེད་ཀྱི་གཞུང་གི་རྒྱུ་འབྱུངས་ཏེ། ཏིང་ངེ་འཛིན་གསར་  
 ཏུ་སྐྱུ་བ་པའི་ཆོ་གནས་ཆ་ཙམ་གྱིས་མི་ཆོག་པར་གསལ་ཆའི་ངར་དང་ལྷན་པ་……  
 དགོས་ལ། དེ་ཡང་སེམས་གནས་པ་དགུ་ལྟོས་དུག་ཡིད་བྱེད་བཞིའི་སྒོ་ནས་  
 ཏིང་ངེ་འཛིན་གསར་ཏུ་བསྐྱུ་བ་ཚུལ་དང་། དུན་པ་དང་ཤེས་བཞིན་གྱིས་བོགས་  
 འདོན་ཚུལ་དང་། སྤྱིང་གོད་སྤྲ་རགས་ཀྱི་ངོས་འཛིན། ཞི་ལྷག་རྩེད་འབྲེལ་གྱི་  
 རྣམ་འབྱོར་བསྐྱུ་བ་ཚུལ་སོགས་གྲུལ་བའི་དགོངས་པ་བཞིན་ལེགས་པར་གདན་ལ་……  
 སལ་བས། ལྷག་པ་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་ཡོན་ཏན་ཁྱད་པར་དུ་འཕགས་པ་དང་ལྷན་  
 པས་སོ།” །ཞེས་གསུངས་པ་ལྟར་རོ།

དེ་ལ་བརྟེན་ནས་ལྷག་མཐོང་དང་འབྲེལ་བའི་ལྟ་བུ་ནས་བར་དག་པ་ཇི་ལྟ་  
 བུ་ཞིག་དགོས་སྟེན་ན། དེ་ཉིད་ལས།<sup>2</sup> “དབལ་མགོན་འཕགས་པ་ཁྲུ་སྐྱུ་བ་  
 ཀྱི་གཞུང་གི་རྒྱུ་འབྱུངས་ཏེ། འཁོར་འདས་ཀྱི་ཆོས་ཐམས་ཅད་རང་རང་གི་  
 གདགས་གཞིའི་ངོས་ནས་དོན་དམ་པར་གྲུབ་པ་དུལ་ཙམ་ཡང་མི་དམིགས་ཀྱང་།  
 གདགས་གཞིའི་སྤྱིང་དུ་མིང་དང་རྟོག་པས་པར་བཞག་ཙམ་དེ་ཐ་སྟོན་དུ་ཆད་མས་  
 གྲུབ་ལ། ཆོས་རྣམས་རང་རང་གི་ངོ་བོས་སྤོང་བའི་སྒྱ་མཚན་གྱིས་ཐ་སྟོན་དུ་  
 ཆོས་དེ་དང་དེར་གྲུབ་ཅིང་བྱ་བྱེད་སོགས་འཕད་ལྷན་དུ་འཇོག་ཤེས་པ་དང་། རྟོན་  
 འབྲེལ་གྱི་ཆོས་ལ་ངས་པ་དྲངས་པ་ཉིད་གྱིས་རང་བཞིན་མེད་པ་ལ་ངས་པ་ཆེར་……  
 འགྲོ་བས་སྤོང་པ་དང་རྟོན་འབྱུང་གཅིག་གྲོགས་སྒྱ་གཅིག་ཁྱེར་ཤེས་པའི་ཐབ་མོ་འི་

1. གཞུང་ 'ཅ' རྩེ་གཉིས་ (ཐུ་གཉིས་-དེབ་) 2. གཞུང་ 'ཅ' རྩེ་གཉིས་ (ཐུ་གཉིས་-དེབ་)



གདམ་འདི་ནི།” ཞེས་དང་། “སྒྲོམ་བྱས་དང་ཉི་ཆོ་བའི་སྒྲོང་བ་ཙམ་མ་ཡིན་པར་  
གཟུང་ནས་ནམ་མཁུན་གྱི་བར་གྱི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྒྲིང་དུ་དབལ་གྱི་རང་བཞིན་...  
བྱིས་གྲུབ་བ་བཀག་པའི་སྒྲོང་བ་ཉིད་རྒྱལ་བའི་དགོངས་པ་མཐར་ཐུག་པ་ཟབ་མོ་...  
དབུ་མའི་ལྟ་བ་ཐུན་སྒྲུབ་ཆོགས་པ་དང་ལྷན་པས་སོ།” །ཞེས་ཇི་སྒྲིང་གསུངས་  
པ་བཞིན་སྒྲོམ་པ་ནམ་དག་བྱིང་མཁས་ཀྱི་ཐུན་པ་དང་བྲལ་བའི་ཞི་གནས་ལ་བརྟེན་  
ནས། ལྟ་བ་ནམ་དག་དྲག་ཆད་ཀྱི་མཐའ་ཀྱན་དང་བྲལ་བ་རྟོགས་པའི་ལྷག་མཐོང་  
སྒྲོམ་པ་ལ་འབད་པར་བྱའོ།

བཞི་པ་བསྒྲོམ་རིམ་གསུམ་གྱི་བརྗོད་བྱའི་ཆེ་བ་མདོར་བསྒྲུས་ནས་བསྟན་པ།

### (༡) བསྒྲོམ་རིམ་དང་པོ།

འདིར་རྒྱལ་བའི་གསུང་རབ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྒྲིང་པོ་འདི་དོན་ཇི་ལྟར་བསྒྲོམ་.....  
པའི་རིམ་པ། ཤིང་རྩ་ཆེན་པོ་ནམ་གཉིས་ཀྱིས་ལེགས་པར་སྤེ་བའི་ལམ་གྱི་  
གནད་བསྒྲུས་པ། བསྐལ་ལྷན་གྱི་གདུལ་བྱ་ནམས་སྒྲུར་དུ་ནམ་པ་ཐམས་ཅད་  
མཁུན་པའི་སར་བབྱོད་པར་བྱེད་པའི་ཐེག་པ་མཆོག་གི་དམ་པའི་ཚལ་ལྷགས།  
དབུ་མའི་བསྒྲོམ་རིམ་གསུམ་སོ་སོའི་བརྗོད་བྱ་མདོར་བསྒྲུས་ན། བསྒྲོམ་རིམ་དང་  
པོར། རྟེན་གྱི་གང་ཟག་གང་ཞིག་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་འདི་ལས་ལ་ཐོག་མར་འཇུག་པར་  
འདོད་པའི་ལས་དང་པོ་བ་དེས། ཐམས་ཅད་མཁུན་པ་ཉིད་སྒྲུར་དུ་སྐོབ་པར་འདོད་  
པས་མདོར་ན། སྒྲིང་ཇི་དང་། བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་དང་། རྒྱལ་བ་སྟེ་གནས་  
འདི་གསུམ་ལ་འབད་པར་བྱའོ། །ཞེས་གསུངས་པའི་དང་པོ་སྒྲིང་ཇི་ཆེན་པོ་ནི།  
སངས་རྒྱུས་ཀྱི་ཆོས་མ་ལུས་པའི་རྒྱའི་ཅ་བ་ཡིན་པ་སོགས་སྒྲིང་ཇི་ཆེན་པོ་དང་.....

དེའི་ཡན་ལུ་བསམ་གྱི་མི་ཁྱབ་པ་དག་འཕགས་པ་ཆོས་ཡང་དག་པར་བསྐྱད་ཀྱི་  
 བའི་མདོ་དང་། འཕགས་པ་སྒྲོ་བུས་མི་ཟད་པའི་མདོ་དང་། འཕགས་པ་  
 ག་ཡུ་མགོ་རིའི་མདོ་དང་། འཕགས་པ་དད་པའི་སྟོབས་བསྐྱེད་པའི་མདོ་ནམས་  
 ཁྱེད་སྐྱེད་པའི་སྒྲོ་ནས་གསལ་བར་མཛད་ཅིང་། དེ་ཉིད་ཐོག་མ་ཁོ་ནར་  
 བསྐྱོམ་དགོས་པར་བཞུགས་ོ།

དེ་འདྲ་བའི་རྒྱལ་པོ་ཆེའི་རྒྱ་ཚགས་དེ་ཉིད་ཇི་ལྟར་བསྐྱོམ་པའི་ཚུལ་ནི།  
 སྦྱིར་ཁམས་གསུམ་ན་སྦྱོད་པའི་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་སྐྱུག་བསྐྱེད་གསུམ་གྱིས་་་  
 ཇི་ལྟར་མཐུན་པར་མནར་བའི་ཚུལ་དང་། ཁྱད་པར་དུ་རིགས་དུག་སོ་སོའི་  
 སྐྱུག་བསྐྱེད་ལུགས་དུག་ཅིང་ཚུལ་ལྟར་རིང་བ་སོགས་ཆོས་བཟེད་པར་དཀའ་་་  
 བའི་ངང་ཚུལ་བསམ་ནས་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་སྦྱིང་བཅེ་བ་ཁོ་ན་སྐྱོམ་་་་་་་  
 དགོས་པ་དང་། དེ་ཡང་ཐོག་མར་མཛད་བཤེས་ཀྱི་སྦྱོགས་ནས་བརྩམས་ཏེ་རིས་  
 གྱིས་དགྲ་དང་པལ་པ་ནམས་ལ་ཡང་སྦྱིང་ཇི་མཚངས་པར་འཇུག་པ་དེའི་ཆོ་སྦྱོགས་  
 བཅའི་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་སྐྱོམ་དགོས་པ་དང་། གང་གི་ཆོ་ཤིན་དུ་གཅེས་  
 བའི་བྱ་མི་བདེ་བའི་མ་བཞིན་དུ་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་སྐྱུག་བསྐྱེད་གཏན་ནས་་་  
 དབྱུང་བར་འདོད་པའི་ནམ་པའི་སྦྱིང་ཇི་རང་གི་ངང་གིས་འཇུག་པ་དེའི་ཆོ། དེ་  
 ཇིགས་པ་ཡན་བས་སྦྱིང་ཇི་ཆེན་པོ་འི་མིང་ཐོབ་པོ་ཞེས་སྦྱིང་ཇི་ཆེན་པོ་འབྱུང་བའི་  
 ཆད་བཞུགས་པར་མཛད་ོ།

གཉིས་པ་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་བསྐྱེད་ཚུལ་ནི། དེ་ལྟར་སྦྱིང་ཇི་ཆེན་པོ་  
 བསྐྱོམས་པའི་སྟོབས་ཀྱིས་སེམས་ཅན་མ་ཁྱེད་པ་སྒྲོ་ན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་ཇོ་་་  
 བའི་བྱང་ཆུབ་དུ་འགོད་པར་དམ་བཅའ་བའི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་བསྐྱེད་དགོས་པ་་



དང་། དེ་བསྐྱེད་པའི་ཚལ་ལ་ཡང་། གཞན་གྱིས་ཡང་དག་པར་འཛིན་དུ་  
བཅུག་པ་ལས་དང་། བདག་ཉིད་ཀྱིས་བྱང་ཆུབ་དུ་སེམས་བསྐྱེད་པ་གཉིས་ལས་  
ཕྱི་མ་ཁྱད་ཆེ་བར་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་འཕགས་པ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་ཡི་  
ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱའི་དྲིང་ངེ་འཛིན་ལས་བཀའ་བསྟུལ་དོ་ཞེས་གསུངས་སོ།

དེ་འདྲ་བའི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་དེ་རྒྱུ་བ་པ་དང་མི་ལྡན་པ་དང་། རྒྱུ་བ་པ་  
ཡོངས་སུ་ཆོགས་པ་དང་མི་ལྡན་ན་ཡང་འཁོར་བ་ན་འབྲས་བྱ་ཆེ་བར་བཅོམ་ལྡན་  
འདས་ཀྱིས་བྱམས་པའི་ནྟམ་པར་ཐར་པ་དང་འཕགས་པ་རྒྱལ་བོ་ལ་གདམས་པའི་  
མདོ་བྲངས་སུ་བྲངས་ནས་བསྟན་པར་མཛད་ཅིང་། རྒྱུ་བ་པ་སྤྱིང་བོར་བྱེད་པའི་  
བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་ཀྱི་འབྲས་བྱ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་ཤིན་དུ་གྱ་ཆེན་པོ་དང་ལྡན་པ་.....  
འཕགས་པ་དབལ་སྦྱིན་གྱིས་ཉུས་པ་དང་། སྤྱིང་བོ་བཀོད་པའི་མདོས་བརྒྱབས་  
པར་མཛད་དོ།

གསུམ་པ་རྒྱུ་བ་པ་ལ་སྦྱོར་ཚལ་ནི། དེ་ལྟར་སེམས་བསྐྱེད་པའི་བྱང་ཆུབ་  
སེམས་དབའ་བདག་ཉིད་མ་དུལ་ན་གཞན་མི་དུལ་བར་ཤེས་ནས་བདག་ཉིད་སྦྱིན་  
པ་ལ་སོགས་པ་རྒྱུ་བ་པ་ལ་སྦྱོར་དགོས་པ་དང་། རྒྱུ་བ་པ་མེད་པར་བྱང་ཆུབ་མི་  
ཐོབ་པའི་ཚལ་འཕགས་པ་གཡུ་མགོ་རིའི་མདོ་དང་། དྲིང་ངེ་འཛིན་རྒྱལ་བོའི་  
མདོ་བྲངས་སུ་མཛད་ནས་བསྟན་དོ།

བྱང་ཆུབ་སེམས་དབའི་རྒྱུ་བ་པ་དེ་ཡང་པ་རྣམས་དུ་བྱིན་པ་དང་། ཆད་མེད་  
པ་དང་། བསྐྱེད་པའི་དངོས་པོ་སོགས་ཇི་སྟེད་ཅིག་ཡོད་པ་ལས། མདོར་བསྐྱེད་  
ན་ཐབས་དང་ཤེས་རབ་གཉིས་ཡིན་ལ། དེ་ཡང་ཐབས་ཤེས་སྦྱོགས་རེ་བས་མི་  
ཆོག་པར་གཉིས་ཀ་བསྟེན་དགོས་པ་དང་། གང་ཐབས་སུ་འཛོལ་རྒྱུའི་ཆོས་དང་།

ཤེས་རབ་ཏུ་འཛོལ་རྒྱུ་འོས་ཀྱི་ངོས་འཛིན་དང་། དེ་གཉིས་ཀྱི་བྱེད་ལས་དང་།  
 དེ་གཉིས་བྱང་སེམས་སོ་སྐྱེའི་གནས་སྐབས་སུ་མ་ཟད་སར་ཆུད་བ་ནམས་ཀྱིས་...  
 ཀྱང་དུས་ཐམས་ཅད་ཏུ་བསྟན་དགོས་པར་གསུངས་ལ། དོན་དེ་དག་སྐྱབ་པའི་  
 རྒྱུར་འཕགས་པ་བྱི་མ་མེད་པར་གྲགས་པས་བསྟན་པ་དང་། འཕགས་པ་གཡུ་  
 མགོ་རིའི་མདོ་དང་། འཕགས་པ་དད་པའི་ལྟོབས་བསྐྱེད་པའི་མདོ་དང་།  
 འཕགས་པ་ས་བཅུ་པའི་མདོ་དང་། འཕགས་པ་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཤིན་ཏུ་རྒྱས་  
 པར་བསྐྱས་པའི་མདོ་ནམས་བྱང་སེམས་སུ་མཛོད་ནས་རྒྱས་པར་བསྟན་དོ། །

དེ་དག་གི་ཞར་ལ་འཕགས་པ་བྱི་མ་མེད་པར་གྲགས་པའི་མདོ་ལས་ཐབས་...  
 ཤེས་བྱུགས་རེ་ལས་མ་བསྟན་པ་འཆིང་བར་གསུང་པའི་བྱུགས་ཀྱིས་ཐབས་ཤེས་...  
 གཉིས་ཀ་ལ་བདེན་དགོས་པ་དང་། འཕགས་པ་དད་པའི་ལྟོབས་བསྐྱེད་པ་ལས་  
 ཐབས་ཤེས་གཉིས་སར་ཆུད་བ་ནམས་ཀྱིས་ཀྱང་དུས་ཐམས་ཅད་ཏུ་བསྟན་དགོས་...  
 པར་གསུངས་པ་དང་། འཕགས་པ་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཤིན་ཏུ་རྒྱས་པར་བསྐྱས་  
 པ་ལས་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་སྤྱད་པ་སྤྱོད་པ་ན་ཤེས་རབ་ཀྱི་པ་རོལ་ཏུ་སྤྱོན་པ་...  
 ཁོ་ན་ལ་བསྐྱབ་པས་མི་ཆོག་པར་པ་རོལ་ཏུ་སྤྱོན་པ་དུག་དང་ལྷན་པའི་དགོ་པའི་...  
 ཅ་བ་ཐབས་ཤེས་དགོས་པར་གསུངས་པ་དེ་དག་དང་། ས་བཅུ་པའི་མདོ་ལས།  
 “གལ་དེ་སངས་རྒྱས་བཙུགས་ལྷན་འདས་དེ་དག་གིས་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་དེ།  
 དེ་ལྟར་ཐམས་ཅད་མཆོད་པའི་ཡེ་ཤེས་མངོན་པར་སྐྱབ་པའི་སྐོ་དག་ལ་ཉུགས་པར་  
 མ་མཛོད་ཏུ་ཟིན་ན། དེ་ནི་དེ་ཉིད་ཏུ་ཡོངས་སུ་སྤྱང་ན་ལས་འདའ་བར་འགྱུར་དེ།  
 སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་དོན་བྱ་བ་ཡང་རྒྱུན་ཆད་པར་འགྱུར་དེ།” ཞེས་བྱང་  
 སེམས་ས་བརྒྱད་པ་བ་ཞི་བར་སྟོམ་པར་འཇུག་པ་ལ་རྒྱལ་བ་ནམས་ཀྱིས་སྟོང་བར་



མཛད་དགོས་པར་གསུངས་པ་དང་འགལ་བ་ཡིན་ཡང་། སྤྱི་མ་ནམས་སྤྱིར་  
བཤད་པ་དང་། འདྲིར་དམིགས་ཀྱིས་བསལ་བ་ཡིན་པས་སྤྱིར་བཏང་དང་དམིག་  
བསལ་གྱི་དགོས་པ་ཅན་ཏུ་བསྟན་དོ། །

དེ་ལྟར་ལས་ཐབས་ཤེས་གཉིས་སམ་རྒྱ་ཚོགས་གཉིས་ལ་བརྟེན་ནས་འབྲས་  
དུས་སུ་ཐབས་ཀྱི་ལག་རྩིས་གཞུགས་སྤྱོད་པ་དང་། ཤེས་རབ་ཀྱི་ལག་རྩིས་  
ཚོས་སྤྱོད་པ་ལྟེ་དམ་པ་སྤྱོད་པ་གཉིས་ཐོབ་པར་བྱེད་པ་ལ། ལས་དུས་སུ་ཐབས་ལ་  
བརྟེན་ནས་ཞི་མཐའ་དང་། ཤེས་རབ་ལ་བརྟེན་ནས་སྤྱིར་མཐའ་སྟེ་སྤྱིར་ཞིའི་མཐའ་  
གཉིས་ལ་མི་གནས་པ་ཞིག་དགོས་སོ། །དེ་ཡང་གཞི་དུས་སུ་ཤེས་རབ་ཀྱིས་སྤྱོད་  
འདོགས་ཀྱི་མཐའ་དང་། ཐབས་ཀྱིས་སྤྱོད་འདོགས་ཀྱི་མཐའ་སྟེ་མཐའ་གཉིས་  
སྤངས་པའི་དབྱ་མའི་ལས་ལ་བརྟེན་དགོས་སོ། །ཚུལ་འདྲི་འཕགས་པ་ཚོས་  
ཡང་དག་པར་སྤྱད་པའི་མདོ་དང་། རྣམ་པར་སྤྱང་མཛད་མངོན་པར་བྱང་ཆུབ་པའི་  
རྒྱུད་ཁྲངས་སུ་མཛད་ནས་བསྟན་ཅིང་། དེའི་ཞར་ལ་མདོ་དོན་འབྲུལ་གཞི་འབྱུང་  
ཉི་བ་རྣམས་ལ་དགོངས་གཞི་དགོས་པ་སོགས་བསྟན་པའི་སྒོ་ནས་འགལ་སྤོང་.....  
གསལ་བཤད་ཀྱང་མཛད་དོ། །

དེ་ལ་སྤྱིན་ལ་སོགས་པ་ཡོངས་སུ་དག་པ་དང་། ས་རོལ་དུ་སྤྱིན་པའི་མིང་  
ཐོབ་པ་ལ་ཤེས་རབ་ཀྱིས་ཡོངས་སུ་རྩིན་པ་ཞིག་དགོས་ཀྱི། གཞན་དུ་མ་ཡིན་ནོ། །  
ཤེས་རབ་དེ་བསྐྱེད་པ་ལ། ལྷང་གི་དོན་ཀྱན་དུ་འཛིན་པར་བྱེད་པ་ཐོས་པ་ལས་  
བྱུང་པའི་ཤེས་རབ་དང་། དེས་པ་དང་བྱང་པའི་དོན་རྣམ་པར་འབྱེད་པ་བསམ་  
པ་ལས་བྱུང་པའི་ཤེས་རབ་དང་། ཡང་དག་པ་ཁོ་ནའི་དོན་སྒྲུམ་པར་བྱེད་པའི་  
སྒྲུམ་བྱང་གི་ཤེས་རབ་གསུམ་རིམ་གྱིས་བསྐྱེད་དགོས་པ་སྤྱིར་བསྟན་ནས། བྱེ་

བྲག་དུ་བསམ་བློ་གི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་ཡང་དག་པའི་དོན་ལ་རིགས་པ་དང་ལུང་...  
གིས་བདགས་ནས་གདན་ལ་ཐབ་དེ་བསྒྲོམ་ཚུལ་རྒྱས་པར་གསུངས་སོ། །

དེ་ལ་ལུང་གི་སྐབས་སུ་ཆོས་ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་མ...  
སྒྲེས་པ་དང་། དུས་གསུམ་དུ་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་མཉམ་པ་ཉིད་ཀྱིས་མཉམ་པ་  
སོགས་ཡིན་དུ་ཟིན་ཀྱང་། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་བྱགས་ཆེ་ཆེན་པོ་དང་ལྷན་པས་  
འཇིག་རྟེན་གྱི་སྒྲག་པའི་གནས་བསལ་པའི་ཕྱིར་ཐ་སྙད་ཀྱི་དབང་གིས་སྒྲེའོ། །  
འགག་གོ། །ཞེས་སོགས་གསུངས་པའི་དོན་དེ་དག་འཕགས་པ་ཆོས་ཡང་དག་  
པར་སྤྱད་པའི་མདོ་དང་། བདན་པ་གཉིས་ནས་པར་འབྱེད་པ་དང་། ཤེར་ཕྱིན་  
གྱི་མདོ་དང་། སྤང་བོ་རྩལ་གྱི་མདོ་དང་། ཡབ་སྐུ་མཇུག་པའི་མདོ་ནས་  
ཁྲུངས་སུ་བྱངས་ནས་ལུང་གིས་བདག་ཚུལ་བསྟན་དོ། །

དེ་ལྟ་བུའི་ལུང་གི་དོན་དེ་ཉིད་རིགས་པས་བདག་པར་བྱས་ན་ལུང་གི་དོན་གྲུང་  
དུ་བཀྲི་མི་རྒྱས་སོ། །དེ་བས་ན་རིགས་པས་སོ་སོར་བདག་པར་བྱའོ། །དེའི་  
ཚུལ་ནི་ཕྱི་མང་གི་དངོས་པོ་ཀྱན་རྒྱ་མེད་དང་། སྤྱོད་པ་དང་། དུས་མཉམ་  
པ་དང་། བར་དུ་མ་ཆད་པ་ལས་ཆེ་ལྷོད་མི་སྒྲེ་པའི་ཚུལ་རྒྱས་པར་བདགས་ནས་  
དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་མ་སྒྲེས་པ་དང་། ཀྱན་རྩལ་དུ་སྒྲེ་བ་ཡོད་པར་  
བསྒྲུབས་པའི་སྒྲོ་ནས་ལུང་དང་མི་འགལ་པར་བསྟན་དོ། །

ཡང་ནས་པ་གཅིག་དུ་ན་འདི་ལྟར་རིགས་པས་ནས་པར་དབྱེད་པར་བྱ་སྟེ།  
གཞུགས་ཅན་དང་གཞུགས་ཅན་མ་ཡིན་པའི་དངོས་པ་འདི་དག་ཕྱི་རོལ་དོན་དུ་གྱུབ་  
པས་སྟོང་ཞིང་ནས་པར་རིག་པ་ཅམ་དུ་དོན་དམ་པར་གཅིག་དང་དུ་མའི་ངོ་བོ་ཉིད་  
ཀྱིས་སྟོང་པར་བསྒྲུབས་པའི་སྒྲོ་ནས་ནས་འབྱོར་སྟོད་པའི་དབྱེད་པར་གྱུར་པའི་ཐུན་



མང་མ་ཡིན་པའི་བཞེད་པ་གསལ་བར་བསྟན་ཅིང་། དོན་དེ་འཕགས་པ་ལང་  
 ཀར་གཤེགས་པའི་མདོ་ཚན་ཅི་སྟེད་ཅིག་གིས་བསྐྱབས་པར་མཛད་ནོ། །དེ་ལྟར་  
 བསམ་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་ཡང་དག་པའི་དོན་ལ་བདགས་ཤིང་དབྱད་པའི་སྒྲོ་ནས་  
 སྒྲོ་འདོགས་ཚད་པའི་དོན་དེ་ཉིད་མངོན་སུམ་དུ་བའི་ཕྱིར་སྒྲོས་པའི་ཤེས་རབ་  
 བསྐྱེད་དགོས་པ་དང་། དེ་དགོས་པའི་རྒྱ་མཚན་དང་བཅས་འཕགས་པ་དཀོན་  
 མཆོག་སྒྲིན་དང་། ཉིང་ཇེ་འཛིན་རྒྱལ་པོའི་མདོ་ཁྲངས་སུ་བྲངས་ནས་བསྟན་པར་  
 མཛད་ནོ། །

ཐོས་བསམ་ཙམ་གྱིས་མི་ཆོག་པར་སྒྲོས་པ་ལ་འཇུག་པའི་ཚུལ་ནི། རྣལ་  
 འབྱེད་པས་ཐོག་མར་སེམས་གནས་པར་བའི་ཕྱིར་ཞི་གནས་བསྐྱབ་དགོས་ལ།  
 དེ་ཡང་ཚུལ་ཁྲིམས་ནས་པར་དག་པ་སོར་ཞི་གནས་ཀྱི་ཆོགས་ནམས་ལ་གནས་དེ།  
 ཡིད་དང་མཐུན་པའི་གནས་སུ་ལུས་བྲང་བོར་བསྐྱངས་ལ་བྲན་པ་མངོན་དུ་བྱས་དེ་  
 རྣམ་པ་ཅི་སྟེད་ཀྱིས་ནམ་པར་དབྱད་པར་བའི་ཆོས་འདུ་བར་གྱུར་པ་དང་རྒྱས་  
 པར་བྱེ་བ་རྣམས་ལ་རེས་གྱིས་དམིགས་དེ་ཞི་གནས་སྒྲོས་དགོས་པར་བསྟན་ནོ། །

ཞི་གནས་སྒྲོས་པ་ལ་བར་དུ་གཅོད་པ་འགོག་ཚུལ་ནི། ཆགས་སོགས་  
 ཀྱི་དབང་གིས་སེམས་ནམ་པར་གཡོང་བའི་ཆོ་མི་སྤྲུག་པ་དང་། ཞི་གནས་སྒྲོས་  
 པ་ལ་མི་དགའ་བར་མཐོང་བ་དེའི་ཆོ་དྲིང་ཇེ་འཛིན་ལ་ཡིན་དན་དུ་ལྷས་ནས་དགའ་  
 བ་སྒྲོས་པ་དང་། ལྷགས་པ་དང་གཉིད་ཀྱིས་གཞོན་པའི་ཆོ་སྤང་བའི་འདུ་ཤེས་  
 སོགས་དང་། ཆོད་པའི་ཆོ་མི་དྲག་པ་སོགས་ཡིད་འབྱུང་བར་འབྱར་བའི་དངོས་  
 པོ་ཡིད་ལ་བྱས་ནས་ཆོད་པ་ཞི་བར་བྱའོ། །དེ་ལྟར་བྱིང་ཆོད་ལ་སོགས་པའི་  
 སྒྲིན་དང་བྲལ་བའི་སྒྲོ་ནས་དམིགས་པ་གང་ལ་སེམས་མངོན་པར་འདུ་བྱེད་པ་མེད་

པར་ཇི་མྱོད་འདོད་ཀྱི་བར་དུ་སེམས་འཇུག་པར་འགྱུར་བ་དེའི་ཆོ་ཞི་གནས་ཇོགས་  
པར་གསུངས་སོ།

ཞི་གནས་བསྒོམ་ཚུལ་པར་ཕྱིན་སོགས་ལས་བསྐྱེད་བ་ལྟར་གྱི་སེམས་གནས་  
དགུ་ཇི་ལྟར་བསྒོམ་ཚུལ། དེ་སྒོམ་བ་ལ་བར་དུ་གཙོད་བའི་ཉེས་བ་དུག་དང་།  
དེ་དག་གི་གཉེན་པོ་སྤོང་བའི་འདུ་བྱེད་བརྒྱད་ཀྱིས་སྤོང་གཉེན་བྱེད་ཚུལ་དང་།  
ཅེ་གཅིག་བའི་སེམས་དེ་ཉིད་ལས་སྤྱུ་རུང་བ་ཉིད་དང་ལྡན་བ་ལས་ཡོན་དན་གྱི་……  
ཁྱད་པར་བསམ་གཏན་བཞི་དང་། གཞུགས་མེད་བའི་སྒོམ་པར་འཇུག་བ་སོར་  
ཇི་ལྟར་བསྐྱེད་ཚུལ་གྱིས་པར་གསུངས་སོ།

འདི་ལྟར་ཞི་གནས་ཀྱི་སྒྲོབས་ཀྱིས་སེམས་བདེན་བར་བྱས་བའི་འོག་དུ་ཤེས་  
རབ་ཀྱིས་རྣམ་པར་དབྱུང་བར་བྱ་སྟེ། ཤེས་རབ་ཀྱི་སྒྲུང་བ་མེད་པར་ཀུན་དུ་  
སྤོངས་བའི་ས་བོན་ཅད་ནས་སྤོང་མི་བྱས་སོ། །དེས་ན་སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཤེས་  
རབ་ཀྱིས་གནས་ལྷགས་ཀྱི་དོན་ལ་ཇི་ལྟར་བདེགས་ཚུལ་ནི། ལང་ག་ཤེགས་ལས་  
གསུངས་བ་ལྟར།

སེམས་ཅམ་ལ་ནི་རབ་བདེན་ནས།

ཕྱི་རོལ་དོན་ལ་མི་བདེག་གོ། ཞེས་སོགས་ཀྱི་བསྐྱེད་དོན་

ལ་གཙོ་བོར་ཁྱདས་སྤྱུ་མཛོད་ནས། ཆོས་གཞུགས་ཅན་རྣམས་ཆ་ཤས་ཀྱིས་སོ་  
སོར་བདེགས་ནས་ཤེས་བ་ལས་དོན་གཞན་དུ་མེད་པས། ཆོས་གཞུགས་ཅན་ལ་  
དམིགས་བའི་རྣམ་པར་རྟོག་བ་སྤོང་བར་བྱའོ། །དེ་ལྟར་གཞུང་བ་མེད་པར་འཇོན་



པ་མི་འཕྲད་པས་འཛིན་པའི་རྣམ་པ་ལས་ཤིན་ཏུ་འདས་འདྲ། གཉིས་སུ་སྤང་བ་  
མེད་པའི་ཤེས་པ་ལ་གནས་པར་བྱ་ཞིང་། དེ་ལྟར་གཟུང་འཛིན་གཉིས་སུ་སྤང་བ་  
མེད་པའི་ཤེས་པ་དེ་ལ་ཡང་མངོན་པར་ཞེན་པ་དོར་ནས། དེ་ལས་ཀྱང་འདས་ཏེ་  
གཉིས་མེད་པའི་ཤེས་པ་སྤང་བ་མེད་པའི་ཤེས་པ་ཁོ་ན་ལ་གནས་པར་གྱུར་པ་དེའི་  
ཆོ། ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་རྟོགས་པ་ལ་གནས་པ། ཡང་དག་  
པ་ཉིད་ཀྱི་མཆོག་ལ་ཞུགས་པ་ཡིན་པས་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པའི་དྲི་ངེ་འཛིན་ལ་.....  
ཞུཏེ་པ། མཐོང་པའི་ལམ་ལ་གནས་པས་ཐེག་པ་ཆེན་བོ་མཐོང་པར་གསུངས་སོ།  
གང་གི་ཆོ་རྒྱལ་འབྱུང་པས་སོ་སོར་རྟོག་པའི་རྣམས་མཐོང་གིས་རབ་དུ་.....  
བརྟེན་ནས་རྣམ་པར་རྟོག་པའི་སྒྲིམ་པའི་མཚན་ས་ཐམས་ཅད་ཉི་པར་ཞི་བ་དེའི་ཆོ།  
ཉིན་མངས་པ་དང་ཤེས་བྱའི་སྒྲིབ་པ་མཐའ་དག་སྒྲོང་བར་འགྱུར་རོ། །དེ་སྤངས་ན་  
གོགས་མེད་པའི་ཕྱིར་སྒྲིན་དང་བྲལ་བའི་ནམ་མཁའ་ལ་ཉི་མའི་འོད་ཐོགས་པ་མེད་  
པར་སྤང་བ་བཞིན་དུ། དངོས་བོ་དེ་ངོ་བོ་ཉིད་རྟོགས་པ་ལ་མཐུན་ཁྱད་པར་  
བསམ་གྱིས་མི་བྱུང་བ་དག་ཐོབ་ནས། ཀྱན་ཆེན་དང་དོན་དམ་པའི་ཚུལ་གྱི་དངོས་  
བོ་མཐའ་དག་ཇི་ལྟ་བུ་བཞིན་དུ་ཤེས་པས་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ཉིད་ཐོབ་པར་.....  
འགྱུར་རོ། །དེ་ལྟར་རྣམ་པར་རིག་པ་ཅན་གྱི་ཚུལ་ལ་བརྟེན་པའི་རྣམ་པར་མི་རྟོག་

1. 'སེམས་ཅམ་ལས་ནི་འདས་ནས་ལྷ།' | 'ཞེས་པའི་ཁང་གསེགས་ཀྱི་མདོ་ཚྭ་འདྲི་མུང་པག་ཏུ་  
འབྱུང་མུང་མ་པལ་ཆེ་པའི་ནང་། "སེམས་ཅམ་ལས་ནི་བཟླས་ནས་ལྷ།" | 'ཞེས་པཀོད་ཡོད་ཀྱང་འམད་  
པར་མི་ཐུང་ཐུ། 'བཟླས་ཞེས་པ་ལྷགས་སོགས་བཟླས་པའི་དོན་ཡིན་ལ། འདྲི་མུང་ཀྱི་སྟེགས་  
མུང་ལྷ་དཔེར་'अतिक्रम्य = འདས་ནས་'ཞེས་དང་། 'अतिक्रमेत = འདད་པར་བྱ་'ཞེས་གསལ་  
པ་མ་ཟད་འདྲི་མུང་ཀྱི་སྟོབ་དབང་ཡོ་སེས་རྫོ་རྩེའི་ཁང་གསེགས་ཀྱི་འབྲེལ་པར་ཡང་། (མདོ་འབྲེལ་  
'མི' ༢༠༠) 'སེམས་ཅམ་ལས་'འདད་པར་བྱ་'དང་'འདས་ནས་'ཞེས་གསལ་པའི་ཕུང་དོ།

པའི་ནལ་འབྱོར་དམ་པ་འདི་ནི། ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ཉིད་ཐོབ་པར་འགྱུར་པའི་  
ལམ་གྱི་མཚོག་ཡིན་པར་གསུངས་ཤིང་། ཉན་ཐོས་ལ་སོགས་པའི་ལམ་གྱིས་ནི་  
སྒྲིབ་པ་མཐའ་དག་སྤོང་མི་ཉུས་པ་ལང་ག་ཤེགས་ཀྱི་ཁྲུངས་དང་བཅས་མཐར་ཐུག་  
ཐེག་པ་གཅིག་དུ་ངེས་པར་གསུངས་སོ།།

གལ་ཏེ་ཆོས་ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་གྲུབ་པ་མེད་དུ་ཟེན་ན།  
ལྷན་གྱིས་གྲུབ་ཅིང་ཞི་བའི་ཡེ་ཤེས་དམ་པ། གཉིས་མེད་པའི་ཤེས་པ་སྒྲུབ་  
མེད་པའི་ཤེས་པས་མཐོང་བར་འགྱུར་པའི་ནལ་འབྱོར་པ་དེ་ཐུར་འཐུང་ཅེ་ན།  
བདེན་དེ། དོན་དམ་པར་བདག་ལ་སོགས་པ་རང་དབང་པའི་ངོ་བོ་མེད་དུ་ཟེན་  
ཀྱང་། ཀུན་རྫོབ་དུ་ནལ་འབྱོར་པའི་ཤེས་པ་དང་། སོ་སོ་སྒྲེ་བའི་ཤེས་པ་  
དག་མི་འདོད་པ་མ་ཡིན་ནོ། །འདི་ལྟར་གང་ལ་ཀུན་རྫོབ་དུ་ཡང་རྒྱ་མེད་པ་དེ་ནི་  
ཀུན་རྫོབ་དུ་ཡང་མི་སྒྲེ་སྟེ། རི་བོང་གི་རྩ་ལ་སོགས་པ་བཞིན་ནོ། །གང་ལ་རྒྱ་  
རྒྱུན་དེན་འབྲེལ་ཡོད་པ་དེ་དོན་དམ་པར་བརྟུན་པ་ཡིན་ཡང་སྒྲེ་བ་ཁོ་ན་སྟེ། རྒྱ་  
མ་དང་། གཞུགས་བརྟུན་ལ་སོགས་པ་བཞིན་ནོ། །ཞེས་བདེན་གཉིས་ཀྱི་ཚུལ་  
ལ་བདགས་ཤིང་དབྱེད་པའི་སྒྲོ་ནས་ཐུར་བསྒྲོམ་པའི་ཚུལ་དང་། གང་གི་ཆོ་  
ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་དམིགས་པ་ལ་བྱིང་གོད་ལ་སོགས་པའི་སྒྲོན་  
དང་བྲལ་ཞིང་། མངོན་པར་འདུ་བྱེད་པ་མེད་པར་ཤེས་པ་འཇུག་པར་གྱུར་པ་དེའི་  
ཆོ་ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་རྒྱང་དུ་འབྲེལ་བར་འཇུག་པའི་ལམ་རྫོགས་པ་ཡིན་.....  
པར་གསུངས་སོ།།

དྲིང་ངེ་འཛིན་ལས་ལྡང་ཞིང་ཐོབ་ཀྱི་གནས་སྐབས་སུ་ཆོགས་གཉིས་ཀྱི་  
བརྒྱབ་པ་རྒྱ་ཆེན་པོ་དག་ལ་འཇུག་ཚུལ་ནི། སེམས་ཅན་གྱིས་པའི་སྒྲོ་ཅན་འདི་



དག་དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པའི་ཆོས་ནམས་ལ་མངོན་པར་ཞེན་པའི་དབང་  
གིས་འཁོར་བ་ན་ཀུན་དུ་འདྲམ་ཞིང་། སྤྱག་བསྐྱེལ་སྤྱོད་ཆོག་པ་དག་ཉམས་སྤྱོད་  
སྤོང་ངོ་སྤྱོད་དུ་སྤྱིང་ཆེ་ཆེན་བོ་མངོན་དུ་བྱས་ལ། བདག་གིས་ཅི་ནས་ཀྱང་  
ཐམས་ཅད་མཁུལ་བ་ཉིད་ཐོབ་ནས། འདི་དག་ཆོས་ཉིད་ཁོང་དུ་ཆུད་པར་གྱུར་བ་  
དེ་ལྟར་བྱའོ་སྤྱོད་དུ་བསམ་ཞིང་། སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབའ་  
ཐམས་ཅད་ལ་མཆོད་བ་དང་བསྟོད་བ་གསོལ་དེ། འཕགས་པ་བཟང་བོ་སྦྱོད་བ་  
ལ་སོགས་པའི་སྦྱོན་ལམ་གྱི་ཆེན་པོ་གདབ་བ་དང་། སྦྱོང་བ་ཉིད་དང་སྦྱིང་ཆེན་སྦྱིང་  
བོ་ཅན་གྱི་སྦྱོན་པ་ལ་སོགས་པ་བསོད་ནམས་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཆོག་པ་མཐའ་དག་...  
སྤྱབ་པ་ལ་འཇུག་དགོས་པ་དང་། ཚུལ་དེ་དག་འཕགས་པ་ཆོས་ཡང་དག་པར་  
བསྟུན་པ་དང་། དཀོན་མཆོག་སྦྱོན་དང་། རྒྱུ་གྲོལ་མི་ཟད་པས་བསྟན་པའི་  
མདོ་ནམས་ཁྲངས་སྤྱོད་མཆོད་ནས་རྒྱས་པར་བསྟན་ནོ།

དེ་ལྟར་རྒྱུ་ཆོག་པ་གཉིས་སམ་ཐབས་ཤེས་རྒྱུ་འབྲེལ་གྱི་ལམ་ལྷན་རིང་དུ་  
སྦྱོས་པར་བྱེད་པའི་གནས་སྐབས་ཀྱི་བྱེ་བྲག་བཅུ་གཉིས་སྤྱོད་འཇུག་དེ། མོས་  
བས་སྦྱོད་པའི་ས་ནས་སངས་རྒྱས་ཀྱི་སའི་བར་དུའོ། །གནས་སྐབས་དེ་དག་ནི་  
གོང་མ་གོང་མའི་ཡོན་ཏན་ལ་གནས་པའི་ཕྱིར་སར་ནས་པར་བཞག་གོ། དེ་  
ཡང་མོས་སྦྱོད་ཀྱི་ས་ལ་གནས་པའི་བྱང་སེམས་དེས་ངེས་པར་འབྱེད་པའི་ཆ་དང་  
མཐུན་པ་བྱེད་སོགས་བཞི་རིམ་གྱིས་བབྱོད་དེ། ཆོས་ཉིད་མངོན་སྤྱོད་དུ་དོགས་  
པ་ཐོག་མར་བྱང་བ་དེའི་ཆོ་བྱང་སེམས་དེ་ཡང་དག་པ་ཉིད་སྦྱོན་མེད་པ་ལ་ཞུགས་  
པ་ཡིན་པས་འཕགས་པའི་ལམ་ཐོབ་ཅིང་ས་དང་བོར་ཆུད་པ་ཡིན་ནོ། །ས་དེར་  
མཐོང་བས་སྤང་བར་བྱ་བའི་ཉོན་མོངས་པ་གྱི་ཅ་བཅུ་གཉིས་སྦྱོང་ཞིང་། ས་རྒྱག་

མ་ནམས་ནི་བསྐྱེས་པའི་ལམ་གྱི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡིན་པས་དེ་དག་དུ་སྒྲིམ་པས་སྤང་.....  
 བར་བྱ་བ་ཁམས་གསུམ་པའི་ཉོན་མོངས་པ་བཅུ་དྲུག་སྤྱོད་ངོ་། །ས་བཅུ་པོ་དེ་  
 དག་གི་གནས་སྐབས་སུ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཀྱན་དུ་འགྲོ་བ་  
 ཉིད་རྟོགས་པས་བདག་གི་དོན་དང་འདྲ་བ་གཞན་གྱི་དོན་ལ་འཇུག་པའི་སྤྱིར་སྤྱོན་  
 བ་ལ་སོགས་པ་པ་རེའ་དུ་སྤྱོན་བ་བཅུ་རིམ་ལྟར་ཆུལ་དང་། ས་སོ་སོའི་ངོ་  
 སྐལ་གྱི་སྤང་བྱ་སྤྱོད་ཆུལ་སོགས་ཞིབ་ཅིང་རྒྱས་པ་གསུངས་ཡོད་ཀྱང་འདིར་ཡི་  
 གེ་མངས་ཀྱིས་དྲོགས་ནས་མ་བྲིས་སོ།།

སངས་རྒྱས་ཀྱི་ས་འདེན་ཉི་ཐུན་སུམ་ཆོགས་པ་ནམ་པ་ཐམས་ཅད་མཐའ་དག་  
 རབ་ཀྱི་མཐར་སྤྱོན་པའི་སྤྱིར་འདི་ལས་གོང་ན་ནམ་པ་གཞན་མེད་པས་དེ་ཕན་ཆད་  
 ས་ནམ་པར་བཞག་པ་མེད་ཅིང་། སངས་རྒྱས་ཀྱི་ས་དེའི་ཡོན་ཏན་གྱི་སྤྱོད་རབ་དུ་  
 དབྱེ་བ་དཔག་དུ་མེད་པས་ནམ་པ་ཐམས་ཅད་སུས་ཀྱང་བརྗོད་མི་ཉུས་སོ། །མདོར་  
 བསྟུས་ན་བདག་དང་གཞན་གྱི་དོན་སུན་སུམ་ཆོགས་པ་མཐའ་དག་རབ་ཀྱི་མཐར་  
 སྤྱོན་པ། ཉེས་པ་ས་ལུས་པ་བསལ་བའི་མཐར་ཐུག་པ་བརྟེས་ནས་སངས་རྒྱས་  
 བཅོམ་ལྷན་འདས་ནམས་ཆོས་ཀྱི་སྐུ་ལ་བཞུགས་དེ། ཡོངས་སྤྱོད་རྫོགས་པ་དང་  
 སྐུ་ལ་བའི་སྐུས་འགྲོ་བ་ས་ལུས་པའི་དོན་ལྟན་གྱིས་གྲུབ་པའི་ཆུལ་གྱིས་མཛོད་.....  
 ཅིང་འཁོར་བ་རིམ་བུར་བཞུགས་སོ། །དེ་ལྟ་བུས་ན་དོག་པ་དང་ལྷན་པ་ནམས་  
 ཀྱིས་ཡོན་ཏན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་འབྱུང་གནས་སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྷན་འདས་ནམས་ལ་  
 དད་པ་བསྐྱེད་ལ། དེ་དག་གི་ཡོན་ཏན་ཡོངས་སུ་བསྐྱབ་པའི་སྤྱིར་ནམ་པ་ཐམས་  
 ཅད་དུ་འབད་དགོས་པར་གདམས་པའི་སྒོ་ནས་བསྐྱེས་རིམ་དང་བོད་མཆུག་བསྐྱ་  
 བར་མཛོད་དོ།།



(2) བསྐྱོམ་རིམ་བར་པ།

ནིན་གྱི་གང་ཟག་གང་ཞིག་ཐོག་པ་ཆེན་པོ་འི་མདོ་སྟེང་ཚུལ་གྱི་རྗེས་སུ་འཇུག་  
 བཞིན་པ། ཐམས་ཅད་མཆེན་པ་ཉིད་ཤིན་ཏུ་སྤྱད་ཏུ་ཐོབ་པར་འདོད་བརྟོག་པ་དང་  
 ལྷན་པ་དེས་དེ་ཐོབ་པར་བྱེད་པའི་སྐྱེ་ནམས་དང་རྒྱུན་ནམས་ལ་མངོན་པར་བཙོན་...  
 པར་བྱ་དགོས་ཤིང་། དེ་ཡང་སྐྱེ་མེད་པ་དང་། སྐྱེ་ལ་མ་ལྟོས་པ་དང་། སྐྱེ་རྒྱུན་  
 རྟེན་པ་དང་མ་ཆང་བ་ལས་མི་འབྱུང་བར་སྐྱེ་མ་རྟེན་པ་དང་། མཐའ་དག་པ་བསྟེན་  
 པ་ལ་ངེས་པར་ལྟོས་དགོས་ན། དེ་འདྲ་བའི་འབྲས་བུ་ཐམས་ཅད་མཆེན་པ་ཉིད་  
 གྱི་སྐྱེ་དང་རྒྱུན་དེ་དག་གང་ཞེ་ན། དེ་ནི་བཙོམ་ལྷན་འདས་ཉིད་ཀྱིས་རྗེ་སྒྲིབ་བལྟན་  
 པ་བཞིན་ཏུ་སྟོང་རྗེ་དང་། བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་དང་། ཐབས་ཀྱིས་མཐར་ཐྱིན་  
 པ་གསུམ་པོ་འདི་དག་ལ་བསྐྱེད་དགོས་པར་གསུངས་སོ།།

དེ་ལ་དང་པོ་སྟོང་རྗེ་བསྐྱོམ་ཚུལ་ནི། ཐོག་མར་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་  
 རྗེས་སུ་ཆགས་པ་དང་། ཁོང་ཁོ་བ་བསལ་དེ། སེམས་སྟོམས་པ་ཉིད་སྐྱེ་བ་  
 པའི་ཕྱིར་བཏང་སྟོམ་སྟོམ་དགོས་ཤིང་། དེ་ནས་བྱམས་པ་བསྐྱོམ་པར་བྱ་སྟེ།  
 བྱམས་པའི་ཚུས་སེམས་ཀྱི་སྤྱད་བཞུན་དེ། གསལ་ཡོད་པའི་ས་གཞི་བཞིན་ཏུ་  
 བྱས་ལ། སྟོང་རྗེའི་ས་བོན་བདེ་ན་བདེ་སྒྲིག་ཏུ་ཤིན་ཏུ་ཡོངས་སུ་བྱས་པར་འགྱུར་  
 བས་སེམས་སྤྱད་བྱམས་པས་སྐྱོམ་ནས་སྟོང་རྗེ་བསྐྱོམ་དགོས་པར་གསུངས་སོ། །  
 སྟོང་རྗེ་བསྐྱོམ་པའི་རིམ་པ་དངོས་དང་། དེ་རྗེས་པའི་ཆད་སོགས་བསྐྱོམ་རིམ་  
 དང་པོ་ལྟར་རོ།།

གཞིས་པ་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་བསྐྱོམ་ཚུལ་ནི། དེ་ཡང་ཙ་པའི་སྟོང་རྗེ་ཆེན་

བོ་གོམས་པར་བྱས་ནས་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་བསྐྱེད་དགོས་ལ། དེ་ལ་ཡང་ཀུན་  
 རྒྱུ་བ་དང་། དེས་དམ་པ་གཉིས་ཀྱི་དང་པོ་འོ་འོ་བོ་འོ་བོ་བཞིན་དང་། རི་ལྷ་ར་  
 བསྐྱེད་ཆུལ་པལ་ཆེར་བསྐྱེད་རིམ་དང་པོ་དང་འདྲ་ཞིང་། ཕྱི་མ་དོན་དམ་པའི་བྱང་  
 ཆུབ་ཀྱི་སེམས། འཛིག་དེན་ལས་འདས་པ། སྒྲོས་པ་མཐའ་དག་དང་བྲལ་བ།  
 དོན་དམ་པའི་སྒྲོད་ལྷལ་དུ་གྱུར་པ་དེ་འབྱུང་བ་ལ་དྲག་དུ་གྱུས་པས་ལྷན་རིང་དུ་ཞི་  
 གནས་དང་། ལྷག་མཐོང་གི་ནལ་འབྱོར་སྒྲོས་དགོས་པ་འཕགས་པ་དགོངས་  
 བ་ངེས་པར་འབྲེལ་བའི་མདོ་ཁྲུངས་སུ་མཛད་ནས་བསྟན་ནོ། །དེ་ཡང་ཞི་ལྷག་  
 གཉིས་ཀྱིས་དྲིང་ངེ་འཛིན་ཐམས་ཅད་བསྐྱེད་ཤིང་། སྒྲིབ་པ་མཐའ་དག་སྤངས་པ་  
 དང་། ཡང་དག་པའི་ཡེ་ཤེས་འབྱུང་བ་ལ་ནལ་འབྱོར་པ་ནམས་ཀྱིས་བསམ་  
 གནས་བྱེད་པོ་བོ་ཞི་གནས་དང་། ཤེས་རབ་ཀྱི་ངོ་བོ་ལྷག་མཐོང་གཉིས་ཀྱི་ལ་  
 འབད་དེ། དེ་གཉིས་རྩེད་དུ་འབྲེལ་བའི་ལས་བསྐྱེད་པ་ལ་འཇུག་པ་ནི་གནད་  
 ཀྱི་དམ་པའོ། །དོན་དེ་དག་དགོངས་པ་ངེས་འབྲེལ་དང་། དྲིང་ངེ་འཛིན་བྱུལ་  
 པོ་འོ་མདོ་དང་། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་སྡེ་སྡོད་དང་། དཀོན་བཅེགས་འོད་  
 སྤང་གི་ལེན་དང་། ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ལ་དད་པ་བསྐྱེད་པའི་མདོ་དང་། ཡོངས་  
 སུ་བྱ་ངན་ལས་འདས་པ་ཆེན་པོ་འོ་མདོ་ནམས་ཁྲུངས་སུ་མཛད་ནས་བྱས་པར་……  
 བསྟན་ནོ།

ཞི་ལྷག་གཉིས་བདེ་ལྷག་དུ་འབྱུང་བ་ལ་དེ་གཉིས་ཀྱི་རྒྱ་ཚོགས་ལ་ངེས་པར་  
 ལྷོས་དགོས་པས། དེ་ལ་ཞི་གནས་ཀྱི་རྒྱ་ཚོགས་གང་ཞེ་ན། ཡོན་དན་ལྔ་དང་  
 ལྷན་པའི་མཐུན་པའི་ལྷལ་དང་། འདོད་པ་རྩེད་པ་དང་། ཚོག་ཤེས་པ་དང་།  
 བྱ་བ་མང་པོ་ཡོངས་སུ་སྤངས་པ་དང་། ཆུལ་ཁྲིམས་ནས་པར་དག་པ་དང་།



འདོད་པ་ལ་སོགས་པའི་ནམ་པར་དོག་པ་ཡོངས་སུ་སྤངས་པའོ། །ལྷག་མཐོང་  
གི་རྒྱ་ཚོགས་གང་ཞེ་ན། སྤེལ་བྱ་དཔལ་པ་ལ་བདེན་པ་དང་། མང་དུ་བྲོས་  
པ་ཡོངས་སུ་བཅའ་བ་དང་། ཚུལ་བཞིན་སེམས་པའོ། །ཞེས་དེ་དག་གི་  
ངོས་འཛིན་ཆེས་གསལ་ཞིང་གནད་བརྒྱས་པ་དེ་གསུངས་པའི་སྒོ་ནས་ནལ་འབྱེར་...  
པ་ཞི་ལྷག་གི་རྒྱ་ཚོགས་མཐའ་དག་དང་ལྷན་པ་དེས་བསྒོམ་པ་ལ་འཇུག་དགོས་...  
པར་བཞུན་ནོ།

དེ་ལ་ཞི་གནས་བསྒོམ་ཚུལ་ནི། དེའི་སྤྱོད་བའི་བྱ་བར་སྤྱིང་ཇེ་དང་སེམས་  
བསྐྱེད་མངོན་དུ་བྱས་ནས། བྲོགས་བཅའི་སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་  
ཐམས་ཅད་ལ་མཆོད་པ་དང་བསྐྱེད་པ་སོགས་བྱས་ལ། ལྷན་གྱིན་དུ་བདེ་བ་ལ་  
ལུས་ནམ་སྤང་ཆོས་བདུན་ལྷན་དུ་བྱས་ནས། དངོས་གཞི་ཞི་གནས་ཀྱི་དམིགས་  
པ་ལ་སེམས་གནས་པར་བྱེད་པ་ལ། ཐོག་མར་ཞི་ལྷག་གི་ངོ་བོ་མདོར་བཞུན་  
ནས། ངོ་བོ་དེ་ལྷན་གྱི་ཞི་གནས་ཀྱི་དམིགས་པ་དེ་ཡང་དགོངས་འབྲེལ་ནས་  
གསུང་པ་ལྟར་གྱི་གསུང་རབ་ཀྱི་དོན་བརྒྱས་དེ་དེ་ལ་སེམས་ཉེ་བར་བཞག་པ་དང་།  
ནམ་པ་གཅིག་དུ་ན་སངས་རྒྱས་ཀྱི་རྒྱ་གཞུང་སོགས་གང་ལ་འདོད་པའི་དམིགས་...  
པ་དེ་ལ་ཕྱི་ཕྱིར་ཞིང་རྒྱན་དུ་སེམས་བཞག་དགོས་པར་གསུངས་ཤིང་། ཞི་གནས་  
སྒོམ་པ་ལ་བར་དུ་གཅོད་པ་འགོག་ཚུལ་དང་དེ་གྲུབ་པའི་ཚད་བཅས་པལ་ཆར་.....  
བསྒོམ་རིམ་དང་པོ་ལྟར་གསུངས་སོ།

ལྷག་མཐོང་བསྒོམ་པའི་ཚུལ་ལ། དེ་སྒོམ་དགོས་པའི་འཕྲད་པ་ནི།  
བཅོས་ལྷན་འདས་ཀྱི་པག་འཕམས་ཅད་དངོས་སམ་རྒྱུད་པས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་གསལ་...  
པར་བྱེད་པ་དང་། དེ་ཁོ་ན་ལ་གཞིལ་བ་ཡིན་པས། དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དོགས་ན་སྤང་

བ་བྱང་བས་སྒྲིན་པ་བསལ་བ་བཞིན་དུ་ལྷ་བ་ངན་པའི་དྲ་བ་ཐམས་ཅད་བྲལ་བར་...  
 འབྱུར་རོ། །དེ་ལྷ་བས་ན་ཞི་གནས་ལ་གནས་ནས་སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཤེས་རབ་  
 ཀྱིས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཡོངས་སུ་བཅལ་བར་བྱ་ཡི། ཞི་གནས་ཅན་གྱིས་ཚོགས་པར་  
 འཛིན་མི་རིགས་པར་བསྟན་ནོ།

ལྷག་མཐོང་སྒྲོམ་པ་དངས་ནི། ཚོས་ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པར་གང་ཟག་  
 དང་ཚོས་ཀྱི་བདག་དུ་མ་གྲུབ་པ་སྒྲོམ་དགོས་ཤིང་། དེ་ཡང་དགོངས་འབྲེལ་  
 ལས་གསུངས་པ་ལྷར་བདག་དུ་མ་གྲུབ་པའི་ཚལ་འདི། ཤེས་རབ་ཀྱི་པ་རོལ་དུ་  
 ལྷན་པ་ཁོ་ནས་རྟོགས་པར་འབྱུར་གྱི། གཞན་གྱིས་མ་ཡིན་པས། རྣལ་འབྱོར་  
 པ་རྣམས་ཀྱིས་སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་འདི་ལྷར་དབྱེད་པར་བྱ་སྟེ། གང་  
 ཟག་ནི་སྤང་བོ་དང་གཅིག་པ་དང་གང་དུ་འང་མ་གྲུབ་པ་དང་། རྟག་པ་བ་དང་།  
 གཅིག་ཕྱ་བ་དང་བཞིན་དུ་མེད་པ་སོགས་སུ་མི་རུང་པའི་ཚལ་ལེགས་པར་བརྟགས་  
 ཅས་གང་ཟག་གི་བདག་མེད་སྒྲོམ་པ་དང་། ཚོས་ཞེས་བྱ་བ་སྤང་ཁམས་སྒྲེ་  
 མཆེད་རྣམས་ལས་གང་དག་གཞུགས་ཅན་ཡིན་པ་དེ་དག་ནི། དོན་དམ་པར་  
 སེམས་ལས་གྲུད་ན་མེད་ཅིང་། སེམས་དེ་ཡང་དོན་དམ་པར་གཅིག་དང་དུ་མའི་  
 རོ་བོ་ཉིད་དུ་མེད་ཅིང་། ལྷ་མ་ལ་སོགས་པའི་རོ་བོ་དང་འབྲ་བ་ཁོ་ནའི་ཞེས་  
 དབྱེད་དོ། །དེ་ལྷར་སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་རྣམ་པར་དབྱེད་དེ། ཚོས་  
 ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པར་ངས་པར་མི་འཛིན་པ་དེའི་ཚོ་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པའི་དྲིང་  
 འཛིན་ལ་འཕུག་དགོས་པར་གསུངས་སོ།

དེ་ཡང་འདིར་གནད་དུ་ཆེ་བ་ནི། སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་དངོས་  
 པོའི་རོ་བོ་ཉིད་ལ་བརྟགས་ཤིང་དབྱེད་ནས་མི་སྒྲོམ་པར་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་མེད་པ་...



ཅམ་ཞིག་སྒྲོམ་པར་བྱེད་པས་ནི་བདེན་འཛིན་གྱི་ནམ་པར་དོག་པ་ནམ་ཡང་མི་.....  
 ལྷོག་ཅིང་། ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཡང་དོགས་པར་མི་འགྱུར་རོ། དེས་ན་གནས་  
 ལུགས་ཀྱི་དོན་ལ་སོ་སོར་དོག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་དབྱེད་པ་ལས་བྱུང་བའི་ཡེ་.....  
 ཤས་ཀྱི་མེས་ནམ་པར་དོག་པའི་བྱད་ཤིང་མཐའ་དག་སྟེག་པར་བྱ་ཞིང་། ཤེས་  
 རབ་ཀྱིས་དངོས་བོ་མཐའ་དག་གི་ངོ་བོ་ཉིད་ལ་སོ་སོར་བདགས་ནམ་མི་དམིགས་  
 བར་བསམ་གཏན་བྱེད་པ་དེའི་སྤྱིར་ཤེས་རབ་མཚོག་གི་བསམ་གཏན་ཞེས་བྱ་སྟེ།  
 དོན་འདི་དག་འཕགས་པ་དཀོན་མཚོག་སྤྱིན་དང་། ནམ་མཁའ་མཛེད་དང་།  
 གཞུག་ན་རིན་པོ་ཆེས་ལྷན་པ་སོགས་ཀྱི་མདོ་ཚིག་དངོས་སུ་ལྟང་འདྲིན་མཛེད་པ་  
 དང་། ཞལ་འཕངས་མཛེད་པ་ཅི་རིགས་ཀྱི་སྒྲོ་ནས་བསྟན་ནོ།

དེ་ལྟར་བདག་མེད་པ་གཉིས་ཀྱི་དོན་སྒྲོམ་ཞིང་འདུག་པའི་ཆོ། བར་སྐབས་  
 སུ་ཆགས་སོགས་ཀྱི་དབང་གིས་སེམས་སྤྱི་རེལ་དུ་ནམ་པར་གཡེང་བ་སོགས་.....  
 འགལ་ཁྱེན་ཇི་ལྟར་བྱུང་ཚུལ་དང་། དེ་དག་སེལ་ཚུལ་ཕལ་ཆེར་བསྒྲོམ་རིམ་རང་  
 བོ་དང་འདྲ་ལ། འདིར་སེམས་མཉམ་པར་ལྷགས་པ་ལ་བརྩལ་བར་བྱས་ན་ནམ་  
 བར་གཡེང་བ་དང་། བྱིང་བར་གྱུར་བ་ལ་བརྩལ་བར་མ་བྱས་ན་ཤིན་དུ་བྱིང་བས་  
 ལྷག་མཐོང་མེད་པར་སེམས་དཔྱུས་ཡོང་བཞིན་དུ་འགྱུར་རོ། དེས་ན་བྱིང་གོད་ཀྱི་  
 དབང་དུ་གྱུར་ན་གཉིན་པོ་མངོན་པར་འདུ་བྱེད་པ་དང་། མཉམ་པར་ལྷགས་པ་  
 ལ་གཉིན་པོ་མངོན་པར་འདུ་མི་བྱེད་པའས་བརྩལ་བར་མི་བྱ་བ་དང་། ལྷག་མཐོང་  
 སྒྲོམ་པས་ཤེས་རབ་ཤས་ཆེ་བའི་ཆོ་ཞི་གནས་བསྒྲོམ་པ་དང་། ཞི་གནས་ཤས་  
 ཆེ་བའི་ཆོ་ཤས་རབ་སྒྲོམ་པ་དང་། ལུས་ལ་གནོད་པར་གྱུར་པའི་ཆོ་འཇིག་  
 ཉིན་མཐའ་དག་སྒྲུ་མ་ཉུ་བྱར་ཉུ་བ་སོགས་ནམ་པར་དོག་པ་དང་བཅས་པ་དང་།

ནམ་པར་མི་རྟོག་པའི་གཞུགས་བརྟན་ལ་དམིགས་པ་ཞེས་བྱ་བའི་རིམ་པ་འདི་ལྟར་  
 སྒྲིམ་པ་ནི། “དོན་རབ་དུ་ནམ་པར་འབྱེད་པའི་བསམ་གཏན་དེ།” འཕགས་  
 ལང་ཀར་གཤེགས་པ་ལས་གསུངས་སོ། །ཞེས་ཞལ་འཕངས་མཛད་པའི་སྒྲོ་ནས་  
 བཟུན་ན།

རྗེས་ཐོབ་དུ་བསམ་པ་ཇི་ལྟ་བུས་ཚོགས་གཉིས་ཀྱི་བསྐྱབ་པ་བྱ་ཆེན་པོ་དག་  
 ལ་བསྐྱབ་ཆུལ་པལ་ཆེར་བསྒྲོམ་རིམ་དང་པོ་དང་འདྲ་ལ། འདིར་སྤྱོད་པ་ཉིད་  
 དང་སྤྱོད་ཇི་ཆེན་པོ་འདི་སྤྱོད་པོ་ཅན་གྱི་སྤྱིན་པ་ལ་སོགས་པ་བསོད་ནམས་དང་ཡེ་  
 ཤེས་ཀྱི་ཚོགས་མཐའ་དག་བསྐྱབ་པ་ལ་མངོན་པར་བཙོན་པའི་བསམ་གཏན་དེས།  
 ནམ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་མཚོག་དང་ལྷན་པའི་སྤྱོད་པ་ཉིད་མངོན་པར་བསྐྱབས་པ་  
 ཡིན་པ་འཕགས་པ་གཙུག་ན་རིན་པོ་ཆེས་ཁྱས་པའི་མདོ་ཁྲངས་སུ་དྲངས་ནས་  
 བཟུན་པར་མཛད་དོ།

གསུམ་པ་ཐམས་ཀྱིས་མཐར་ཕྱིན་པར་བྱ་བ་ནི། སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་  
 ཡངས་སུ་སྒྲིན་པར་བྱེད་པ་དང་། སངས་བྱུས་ཀྱི་ཞིང་ཡོངས་སུ་དག་པ་དང་།  
 ནམ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་མཚོག་དང་ལྷན་པའི་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི་ཡེ་ཤེས་སོགས་

1. འདིར་“ནམ་ཀུན་མཚོག་ལྷན་གྱི་སྤྱོད་པ་ཉིད་”ཅེས་པ། ལྱང་ཇི་ཆེན་པོ་དང་། ལྱང་ཟབ་བྱ་  
 སེམས་དང་། ལྷན་པ་ལ་སོགས་པ་ཐུན་བྱས་ཚོགས་པའི་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཚོགས་ཀྱི་ནམ་པ་མཚོག་དུ་  
 བྱུང་བ་ཀུན་དང་ལྷན་པའི་སྤྱོད་པ་ཉིད་མངོན་པར་བསྐྱབ་པ་ལ་བྱ་བྱེ། འཕགས་པ་གཙུག་ན་  
 “དོན་པོ་ཆེས་ཁྱས་པའི་མདོ་ལས། “དེ་ལ་ནམ་པ་ཀུན་གྱི་མཚོག་དང་ལྷན་པའི་སྤྱོད་པ་ཉིད་”  
 གང་ཞེ་ན། ལྷན་པ་མ་ཚང་བ་མེད་པ། ཚུལ་ཁྲམས་མ་ཚང་བ་མེད་པ།” ཞེས་སོགས་པ་  
 “ཐོབ་དུ་བྱེད་པ་ནམས་དང་། ཚད་མེད་པ་ཞེ་དང་། ལྱང་ཟབ་བྱ་སེམས་དང་། བསྐྱ་བའི་  
 དངོས་པོ་བཞེ་དང་། ལྱང་བྱོགས་སོ་བདུན་སོགས་ལ་སྤྱད་ནས་བྱུས་པར་གྱུངས་སོ།།—

(ནྟེ་—བཀའ་—དཀོན་བཞེགས་‘ཆ’ 220)



སྤྱན་སྤྱུམ་ ཚོགས་པ་གང་བཀའ་བསྟུལ་བ་ཐམས་ཅད་སྤྱིན་པ་ལ་སོགས་པ་ཐབས་...  
 གྱིས་མཐར་སྤྱིན་པ་ལས་འབྱུང་ངོ། ། །དེའི་ཕྱིར་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབས་ཐབས་  
 དང་ཤེས་རབ་གཏིས་ཀྱི་ལ་བསྟུབ་པར་བྱ་དགོས་ཏེ། དཔེར་ན་སྤྱོད་པོས་ཟིན་  
 པའི་བྱུལ་པོ་ནམས་དགོས་པ་ཐམས་ཅད་བྱེད་པ་དེ་བཞིན་དུ་ཐབས་ལ་མཁས་པས་  
 ཡོངས་སུ་ཟིན་པའི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབའི་ཤེས་རབ་གྱིས་སངས་རྒྱས་ཀྱི་མཛོད་...  
 པ་ཐམས་ཅད་བྱེད་ཀྱས་གྱིས། ཐབས་ཤེས་སྤྱོད་གསུམ་དེ་བའི་ལམ་ནི་བྱང་ཆུབ་སེམས་  
 དབའ་ནམས་གྱིས་འཛིང་བའི་གནས་སུ་གཟེགས་པ་དང་། སྤྱིར་ཞིག་ཅུང་གི་  
 མཐར་ལྷུང་བ་ལས་མ་འདས་པར་གསུངས་ཤིང་། དེ་ལྟ་བུས་ན་བྱང་ཆུབ་སེམས་  
 དབས་ཐབས་དང་ལྷན་པའི་ཤེས་རབ་ལ་བསྟུབ་ན་ཐོབ་བྱ་མཐར་ཐུག་མི་གནས་...  
 པའི་བྱང་འདས་ཐོབ་ཀྱས་ཏེ། ཤེས་རབ་ཀྱི་སྤྱོད་པ་གྱིས་ནི་འཁོར་བར་མི་ལྷུང་ལ།  
 ཐབས་ཀྱི་སྤྱོད་པ་གྱིས་ནི་བྱ་ངན་ལས་འདས་པར་མི་ལྷུང་བའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ནི་དེ་  
 དག་གི་ཤེས་བྱེད་དུ་འཕགས་པ་ཚོས་ཐམས་ཅད་ཤིན་དུ་རྒྱས་པར་བསྟུས་པ་དང་།  
 དཀོན་བཅེགས་འོད་སྤང་གི་ལེན། གཡལ་མགོ་འི་རིས་ཞུས་པ། དབལ་མཚོག་  
 དང་བོ། གྲི་མ་མེད་པར་གྲགས་པས་བསྟན་པའི་མདོ། ཚོས་བཅུ་པའི་མདོ།  
 ནམ་མཁའ་མཛོད་དང་དགོངས་པ་ངེས་འགྲེལ་བཅས་ཀྱི་ཁྱད་སྤངས་ནས་རྒྱས་...  
 པར་བསྟན་ཏེ།

གོམས་པས་ཐབས་ཤེས་རྒྱང་འབྲེལ་དུ་འགྲོ་ཆུལ་ནི། བྱང་ཆུབ་སེམས་  
 དབས་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་ལྟ་བའི་སྤྱིང་ཇི་ཆེན་པོས་ཡོངས་སུ་ཟིན་པའི་སྒོ་...  
 ནས་འཛིག་དེན་ལས་འདས་པ། སྤྱོས་པ་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བ་དོན་དམ་པའི་  
 སྤྱོད་ལྷུལ་གྱི་ལམ་བསྟེན་པ་དང་། ཇིས་ཐོབ་ཀྱི་གནས་སྐབས་སུ་ཐབས་བསྟེན་

པའི་དུས་ན་ཡང་རྒྱ་མ་མཁན་བཞིན་དུ་ཕྱིན་ཅི་མ་ལོག་པ་ཁོ་ནའི་ཕྱིན་པ་ལ་སོར་པ་  
ལ་བཞིན་པ་སྟེ། དེ་ཡང་འཕགས་པ་སྒོ་གྲོས་མི་ཟད་པས་བསྟན་པའི་མདོ་དང་།  
བདུན་བདུལ་བའི་ལུ་དང་། ཆོས་ཡང་དག་པར་སྟུན་པའི་མདོ་ནམས་ཁྲངས་  
སྟུ་དྲངས་ནས་བསྟན་པར་མཛད་པོ།

ཐབས་ཤེས་རྒྱུ་འབྲེལ་གྱི་ལམ་ལུན་རིང་དུ་བསྐྱེམས་པ་ལས་འབྲས་བྱ་.....  
འགྲུབ་ཚུལ་སྒྲིབ་བཤད་པ་ནི། དེ་ལྟར་སྟོང་ཆེ་དང་། དྲང་རྒྱལ་གྱི་སེམས་དང་  
ཐབས་ཀྱིས་མཐར་ཕྱིན་པ་ལ་གོམས་པར་བྱས་པས། ཆོ་འདི་ལ་གདོན་མི་ཟ་བར་  
ཁྱད་པར་དུ་འགྱུར་དེ། མི་ལམ་ན་དག་དུ་སངས་གྲུས་དང་དྲང་སེམས་མཐོང་  
བར་འགྱུར་བ་དང་། ཉོན་མོངས་པའི་སྒྲིབ་པ་དང་དེའི་གནས་ངན་ལེན་བྱང་བ་དང་།  
ལྷས་སེམས་ལས་སྟུ་རྒྱང་བ་དང་། མངོན་ཤེས་དང་རྒྱུ་ལ་ལ་སོགས་པའི་  
ཡོན་དན་ཁྱད་པར་ཅན་ཐོབ་པ་དང་། འབད་མི་དགོས་པར་བསོད་ནམས་དང་  
ཡེ་ཤེས་གྱི་ཚོགས་ཡོངས་སྟུ་རྒྱུ་གས་པ་སོགས་པན་ཡོན་ཚད་མེད་པ་མདོ་ལས་.....  
གསུངས་པ་ཁོང་དུ་རྒྱད་དགོས་པར་གསུངས་སོ།

ཁྱད་པར་དུ་ཡང་དག་པའི་དོན་ལ་གོམས་པ་རབ་ཀྱི་མཐར་ཕྱིན་པར་གྱུར་...  
པའི་འབྲས་བྱའི་ཁྱད་པར་ཆེ་ལྟ་བུ་ཞེ་ན། འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་ཡེ་ཤེས་  
རྟོག་པའི་བྱ་བ་མཐར་དག་དང་བྲལ་བ། ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་སྒྲོས་པ་མེད་པར་ཤིན་  
དུ་གསལ་བར་རྟོགས་པ། རྒྱ་མ་མེད་ཅིང་མི་གཡོ་ལ། ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་  
བདག་མེད་པའི་ངོ་བོ་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་མངོན་དུ་བྱེད་པ། མཐོང་བའི་ལམ་གྱིས་  
བསྐྱེས་པ་དོན་དམ་པའི་དྲང་རྒྱལ་གྱི་སེམས་ཀྱི་ངོ་ཉིད་འབྱུང་བས་དངོས་པ་འི་...  
མཐར་ལ་དམིགས་པ་ལ་ཞུགས་པ་ཡིན། དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་རིགས་སྟུ་སྟེས་



བ་ཡིན། བྱང་རྒྱལ་སེམས་དཔའི་སྦྱོན་མེད་པ་ལ་ཞུགས་པ་ཡིན། འཇིག་རྟེན་  
 གྱི་འགྲོ་བ་ཐམས་ཅད་ལས་ཡོག་པ་ཡིན། བྱང་རྒྱལ་སེམས་དཔའི་ཆོས་ཉིད་དང་  
 ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་རྟོགས་པ་ལ་གནས་པ་དང་། ས་དང་བོ་ཐོབ་པ་སོགས་མན་  
 ཡོན་མཐའ་ལས་སོ། །འདི་ནི་དེ་བཞིན་ཉིད་ལ་དམིགས་པའི་བསམ་གཏན་'དེ།  
 འཕགས་པ་ལང་ཀར་གཤེགས་པ་ལས་བསྐྱེད་ནོ། །ཞེས་གསུངས་སོ། །

དེ་ལྟར་ས་དང་བོར་ལྷུང་བ་དེས་ཕྱིས་སྒྲོམ་པའི་ལམ་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་  
 པ་ལ་བརྟེན་ནས། སྒྲོམ་པས་སྤང་བར་བྱ་བའི་སྒྲིབ་པ་བསགས་པ་སྤྱི་བ་བས་  
 ཀྱང་ཆེས་སྤྱི་བ་རྣམས་སྤངས་ནས། ཡོན་ཏན་ཁྱད་པར་ཅན་གོང་མ་གོང་མ་རྣམས་  
 ཐོབ་པའི་ཕྱིར་ས་འོག་མ་རྣམས་ཡོངས་སུ་སྤྱོད་བས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་ཡེ་  
 ཤེས་ཀྱི་བར་ལ་ཞུགས་ནས་ཐམས་ཅད་མཆུན་པ་ཉིད་ཀྱི་གྱུ་མཚོར་འཇུག་ཅིང་.....  
 དགོས་པ་ཡོངས་སུ་འགྲུབ་པའི་དམིགས་པ་ཐོབ་པར་གསུངས་སོ། །

ཆོགས་གཉིས་བསྒྲོམས་པ་རབ་ཀྱི་མཐར་ཕྱིན་པའི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་སའི་  
 འབྲས་བུའི་ཁྱད་པར་རི་ལྷ་བྱ་ཞེ་ན། རྒྱ་ཕུན་སུམ་ཆོགས་པ་བསོད་ནམས་དང་ཡེ་  
 ཤེས་ཀྱི་ཆོགས་ཡོངས་སུ་རྫོང་བ་ལ་བརྟེན་ནས། འབྲས་བུ་ཕུན་སུམ་རྫོང་བ་སྤྱི་  
 བཞི་ཡེ་ཤེས་ལྷ་ལྷན་གྱི་དཔལ་ལ་མངའ་བརྟེན་གྲིང་། ཐམས་ཅད་མཆུན་པ་ཉིད་  
 ཀྱི་གྱུ་མཚོར་ཞུགས་པ་ན། ཡིད་བཞིན་གྱི་ནོར་བུ་ལྷ་བྱར་སེམས་ཅན་མཐའ་དག་  
 ཉེ་བར་འཛོལ་བའི་ཡོན་ཏན་གྱི་སྤང་བོ་དང་ནི་ལྷན། སྒྲོན་གྱི་སྒྲོན་ལམ་གྱི་འབྲས་  
 བུ་ཡོད་པར་ནི་མཛད། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོའི་རང་བཞིན་དུ་ནི་གྱུར། ལྷན་གྱིས་  
 གྲུབ་པའི་ཐབས་སྤྱི་ཆོགས་དག་དང་ལྷན། སྤྱུལ་པ་དཔག་དུ་མེད་པ་དག་གིས་  
 འགྲོ་བ་མ་ལུས་པའི་དོན་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་ནི་མཛད། ཡོན་ཏན་ཕུན་སུམ་

ཚོགས་པ་མ་ལུས་པ་རབ་ཀྱི་མཐར་ཕྱིན་པར་ནི་གྲུང་། བག་ཆགས་དང་བཅས་  
 བའི་ཉེས་པའི་དྲི་མ་མཐའ་དག་བསལ་ནས། སེམས་ཅན་གྱི་ཁམས་ཀྱི་མཐར་  
 གཏུགས་པར་བཞུགས་པར་མཛད་པ་ཡིན་པས། རྟོག་པ་དང་ལྷན་པ་དག་གིས་  
 སངས་རྒྱས་བཙུང་ལྷན་འདས་ཡོན་ཏན་མཐའ་དག་གི་འབྲུང་གནས་ལ་དད་པ་.....  
 བསྐྱེད་ལ། ཡོན་ཏན་དེ་དག་ཡོངས་སུ་བསྐྱབ་པའི་སྤྱིར་བདག་ཉིད་ཐམས་ཅད་  
 ཀྱིས་འབད་དགོས་པར་གདམས་པའི་སྐོན་ས་བསྐོས་རིམ་བར་པའི་མཆུག་བསྐྱ་...  
 བར་མཛད་དོ།

### (3) བསྐོས་རིམ་ཐ་མ།

འདིར་རྟོག་གི་གང་ཟག་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་འི་མདོ་སྡེའི་ཚུལ་ལ་བྱུགས་ཟིན་པ་  
 རྣམས་ཀྱི་སྤྱིར་བསྐོས་པའི་རིམ་པ་བསྟན་པར་མཛད་དེ། དེ་ལ་བཙུང་ལྷན་འདས་  
 ཀྱིས་དྲིང་ངེ་འཛིན་ཐ་དད་པ་དབག་དུ་མེད་པ་ཞིག་བསྟན་པར་མཛད་པ་ལས། ཞི་  
 ལྷག་གཉིས་ཀྱིས་དྲིང་ངེ་འཛིན་ཐམས་ཅད་ལ་ཁུབ་པ་དང་། ཞི་གནས་ཀྱིས་དམིཌ་  
 པ་ལས་སེམས་མི་གཡོ་བ་དང་། ལྷག་མཐོང་གིས་ཆོས་ཀྱི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཇི་ལྟ་བ་  
 བཞིན་རབ་དུ་རྟོགས་པའི་སྐོན་ས་སྐྱབ་པ་མཐའ་དག་སྤྱོད་བར་བྱེད་པས་ཞི་གནས་  
 དང་ལྷག་མཐོང་སྐོས་དགོས་པར་གསུངས་སོ།

དེ་ལ་བཙུང་ལྷན་འདས་ཀྱིས་རྣལ་འབྱོར་པ་རྣམས་ཀྱི་དམིགས་པའི་དངོས་...  
 བོ་བཞི་བསྟན་དེ། རྣམ་པར་མི་རྟོག་པའི་གཞུགས་བརྟན་དང་། རྣམ་པར་རྟོག་  
 པ་དང་བཅས་པའི་གཞུགས་བརྟན་དང་། དངོས་པོ་འི་མཐའ་དང་། དགོས་  
 པ་ཡོངས་སུ་གྲུབ་པའོ། །དང་པོ་ནི། ཞི་གནས་ཀྱིས་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་གཞུང་



བརྟན་དང་། སངས་བྱུང་གི་སྤྱུ་གཞུགས་སོགས་ལ་དམིགས་ཀྱང་། ཡང་དག་  
 པའི་དོན་ལ་ནམ་པར་དོག་པ་མེད་པས་ན་ནམ་པར་མི་དོག་པའི་གཞུགས་བརྟན་.....  
 ཞེས་བྱའོ། །གཉིས་པ་ནི། ལྷག་མཐོང་གིས་གཞུགས་བརྟན་དེ་ཉིད་ལ་དབྱེད་པ་  
 དེའི་ཚོ། ལྷག་མཐོང་གི་མཚན་ཉིད་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ལ་དབྱེད་པའི་ནམ་པར་དོག་པ་  
 དེ་ན་ཡོད་པས་ན། ནམ་པར་དོག་པ་དང་བཅས་པའི་གཞུགས་བརྟན་ཞེས་བྱའོ། །  
 གསུམ་པ་ནི། གཞུགས་བརྟན་དང་འདྲ་བའི་ཚས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་  
 རིལ་བ་བཞིན་དུ་དོགས་པ་ནི། དངོས་པོ་འི་མཐའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་དེ་བཞིན་ཉིད་  
 དོགས་པ་ཡིན་པས། དེའི་ཚོ་དངོས་པའི་མཐའ་ཁོང་དུ་ཆུད་པས་ན་ས་དང་པོ་  
 ལ་དངོས་པོ་འི་མཐའ་ལ་དམིགས་པ་ཞེས་བྱའོ། །བཞི་པ་ནི། སྒྲོམ་པའི་  
 ལས་གྱིས་བསྐྱུས་པའི་ས་ལྷག་མ་ནམས་རིས་གྱིས་བབྱོད་དེ། གང་གི་ཚོ་སྒྲིབ་པ་  
 མ་ལུས་པ་སྤངས་པའི་མཚན་ཉིད་དགོས་པ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པར་གྱུར་པ་དེའི་ཚོ།  
 སངས་བྱུང་གི་སའི་ཡེ་ཤེས་དེ་ཉིད་ལ་དགོས་པ་ཡོངས་སུ་གྱུབ་པ་ལ་དམིགས་པ་  
 ཞེས་བྱའོ།

དམིགས་པ་བཞི་པོ་འདིས་ཅི་བསྟན་པ་ཡིན་ཞེ་ན། ཞི་ལྷག་གཉིས་བསྒྲོམས་  
 པ་ལས་དངོས་པོ་འི་མཐའ་ལྟེ། དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་དོན་རིལ་བ་བཞིན་དུ་དོགས་པ་  
 དང་། དེ་བསྒྲོམས་པ་ལས་སྒྲིབ་པ་མཐའ་དག་སྤོང་བའི་མཚན་ཉིད་དགོས་པ་ཡོངས་  
 སུ་གྱུབ་པ་ལྟེ། ལྷན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་བྱུང་གི་གོ་འཕང་  
 ཐོབ་པར་བསྟན་ནོ།

འབྲས་བུ་དེ་ཐོབ་པར་འདོད་པ་དག་གིས་ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་སྒྲོམ་  
 དགོས་ལ། དེ་ཡང་ཚུལ་བྲིམས་ནམ་པར་དག་པ་སོགས་ཞི་ལྷག་གི་རྒྱ་ཚོགས་

ནམས་ཚང་བའི་སྒོ་ནས་སྤྱིང་ཆེ་དང་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་བསྐྱེད་ནས་ཐོས་བསམ་སྒོམ་  
 བ་ལ་སྦྱོར་དགོས་ཤིང་། དེ་ཡང་བསྒོམ་རིམ་བར་བ་སོགས་སྤྱི་བཟུན་བ་བཞིན་  
 སྒོམ་པའི་ཆེ་ལུས་ནས་སྤྱང་ཆོས་བདུན་ལྟན་གྱི་སྒོ་ནས། རྒྱུ་བར་བྱེ་བ་དང་།  
 བཟུས་བར་གྱུར་བའི་ཆོས་དག་ལ་དམིགས་ནས་ཞི་གནས་དང་། རིགས་  
 བའི་ནས་གྲངས་མཐའ་ཡས་པའི་སྒོ་ནས་ཆོས་དང་གང་ཟག་གི་བདག་མེད་གདན་  
 ལ་ཕབ་དེ། རྣམ་མཐོང་བསྒོམ་ཚུལ་དང་། བྱིང་གྲོད་ལ་སོགས་པའི་འགལ་  
 རྒྱུ་སེལ་ཚུལ་དང་། ཞི་རྣམ་འགྲུབ་པའི་ཚད་དང་། བྱིང་གྲོད་དང་བུལ་ཞིང་  
 མཉམ་བར་ཞུགས་ན་རང་གི་ངང་གིས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ལ་སེམས་གསལ་བར་འཇུག་  
 པ་དེའི་ཆོ། ཞི་གནས་དང་རྣམ་མཐོང་རྒྱུ་འབྱེལ་བའི་ལམ་གྲུབ་པ་ཡིན་པ་  
 སོགས་གསུངས་སོ། །

ཞི་རྣམ་གཉིས་གང་གས་ཆེ་བ་དེའི་ཆོ་ཅིག་ཤོས་བསྒོམ་བར་བྱ་ཞིང་། གཉིས་  
 ཀ་མཉམ་བར་ཞུགས་པར་གྱུར་བ་དེའི་ཆོ་ཆེ་སྤྱིད་ཀྱི་ལུས་སེམས་ལ་གནོད་བར་མ་  
 གྱུར་བ་དེ་སྤྱིད་ཀྱི་མངོན་བར་འདུ་བྱེད་བ་མེད་བར་གནས་བར་བྱ་བ་དང་། ཉིང་  
 འེ་འཇོན་ལ་བར་གཅོད་པའི་ཉེས་བ་བྱུག་དང་། དེ་དག་གི་གཉེན་པོ་སྤོང་བའི་  
 འདུ་བྱེད་བརྒྱུད་བསྒོམ་ཚུལ་དང་། ལུས་སེམས་ལ་གནོད་བར་གྱུར་བ་དེའི་ཆོ་ཆེ་  
 ལྟར་བྱ་བ་དང་། ཉིང་འེ་འཇོན་ལས་ལྷང་བའི་ཆོ་དང་། རིས་ཐོབ་ཀྱི་གནས་  
 སྐབས་སྤྱི་བསམ་བ་ཆེ་ལྟར་སྤྱང་བ་དང་། ཆོགས་གཉིས་ཀྱི་སྦྱོད་པ་རྒྱ་ཆེན་པོ་  
 ལ་ཆེ་ལྟར་སྦོབ་ཚུལ་སོགས་ཕལ་ཆེར་བསྒོམ་རིམ་དང་པོ་དང་། བར་བ་བཞིན་  
 བཟུན་ཅིང་། འདྲིར་སེམས་ཅན་མཐའ་དག་ལ་ཕན་བ་དང་བདེ་བ་བསྐྱེད་པའི་  
 ཐབས་སྒྲིན་མེད་པ། སྤྱི་ཞིའི་མཐའ་ལས་འདས་པའི་མི་གནས་པའི་བྱང་



འདས་ཐོབ་པའི་ཕྱིར་བསོད་ནམས་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཚྭ་གས་རྒྱ་ཆེན་པོ་ལ་ཇི་ལྟར་...  
སློབ་ཚུལ་འཕགས་པ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་གསང་བའི་མདོ་དང་། དེ་བཞིན་  
གཤེགས་པ་སྐྱེ་བ་འབྱུང་བའི་མདོ་དང་། གྲི་མ་མེད་པར་གྲགས་པས་བསྟན་པ་  
ནམས་ཁྱུངས་སུ་བྱངས་ནས་བསྟན་ནོ།

དེ་ལྟར་ཇེས་ཐོབ་དུ་ཚྭ་གས་གཉིས་རྒྱ་ཆེན་པོ་ཇི་ལྟར་གསོག་ཚུལ་ལས་...  
འབྲེས་དེ། ‘གང་ཞིག་སེམས་ཀྱི་ནམ་པར་རྟོག་པས་བསྐྱེད་པའི་དགེ་བ་དང་མི་  
དགེ་བའི་ལས་ཀྱི་དབང་གིས་སེམས་ཅན་ནམས་མཐོ་རིས་ལ་སོགས་པའི་འབྲས་’  
བྱ་སྐྱོང་ཞིང་འཁོར་བ་ན་འཁོར་རོ། །གང་དག་ཅི་ཡང་མི་སེམས་ཞིང་ཅི་ཡང་  
ཡིད་ལ་མི་བྱེད་པ་དེ་དག་ནི་འཁོར་བ་ལས་ཡོངས་སུ་ཐར་བར་འབྱུང་རོ།’ ཞེས་  
སོགས་ཡོག་པའི་ལས་ལ་ཡོངས་སུ་འབྱུན་པ་རྒྱ་ནག་ཏུ་གང་གིས་སྐྱེལ་བའི་ལྷ་བ་  
ངན་པའི་ཆང་ཆོང་སྒྲུག་བོ་མཐའ་དག་གྲི་མ་མེད་པའི་ལྷང་དང་རིགས་པའི་མཚོན་...  
ནོན་གྱིས་ཇི་ལྟར་སྒྲུན་དབྱང་ཚུལ་ཟབ་ཅིང་གྲས་པར་གསུངས་ཡིད་པ་ལས་ཕྱོགས་  
ཅུམ་གོང་དུ་སློས་ཟིན་པས་འདིར་མ་སློས་སོ།

དེ་ཡང་ཡང་དག་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་རྩ་བ་ནི་སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཤེས་རབ་ཡིན་  
པས། དེ་སྤངས་ན་རྩ་བ་བཅད་པ་ཡིན་པས། ཚོས་རབ་དུ་ནམ་པར་འབྱེད་པ་  
ཞེས་བྱ་བ་ཡང་དག་པར་ཇོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཡན་ལག་དམ་པ། འཇིག་རྟེན་  
དང་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་ཤེས་རབ་མཐའ་དག་སྤངས་པར་འབྱུང་རོ། །  
དེ་ལྟ་བུས་ན། ཐེག་པ་ཆེན་པོ་སྤོང་བ། ཐོས་བ་ཉུང་བ། བདག་གི་ལྷ་བ་  
མཚོག་དུ་འཇིན་པ། སྐྱེ་བོ་མཁས་པ་ལ་བསྟེན་བཀུར་མ་བྱས་པ། དེ་བཞིན་  
གཤེགས་པའི་གསུང་རབ་ཀྱི་ཚུལ་མ་རྟོགས་པ། བདག་སྤང་བར་བྱས་ནས་

གཞན་ཡང་སྤང་བར་བྱེད་པ། རིགས་པ་དང་ལྷང་དང་འགལ་བའི་དྲག་གིས་  
བདེ་བ་བའི་ཆོག་ནི། མཁས་པ་བདག་ལེགས་སུ་འདོད་པས་ཟས་དྲག་ཅན་བཞིན་  
དྲ་རྒྱུང་རིང་དྲ་ཡོངས་སུ་སྤང་དགོས་པར་གསུངས་སོ།

དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་གསུང་རབ་ཀྱི་ཇེས་སུ་སློབ་པ་དག་གིས་ཐབས་དང་  
ལུན་པའི་ཤེས་རབ་བརྟེན་པས། ཀུན་རྫོབ་དང་དོན་དམ་པའི་བདེན་པ་ལ་ཤིན་དུ་  
མཁས་ཤིང་། སློབ་པ་ཐམས་ཅད་ཉེ་བར་ཞི་བ་སྒྲིབ་པ་མེད་པའི་ཡེ་ཤེས་ཐོབ་  
པའི་ཕྱིར་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཐོབ་པར་འགྱུར་རོ། །དེ་ལས་གཞན་  
དྲ་ཡང་དག་པར་སོ་སོར་དྲིག་པའི་ཤེས་རབ་སྤངས་ན་ཡང་དག་པའི་ཡེ་ཤེས་……  
འགྱུར་བར་མི་འགྱུར་ལ། ཉོན་མོངས་པའི་སྒྲིབ་པ་ཡང་སྤོང་བར་མི་འགྱུར་རོ། །  
དེ་ལྟ་བུས་ན་ཆོས་ནམས་ཀྱི་གནས་ལུགས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་དོན་ལ་སོ་སོར་དྲིག་……  
པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་བདགས་ཤིང་དབྱེད་ནས་སྒྲོམ་པ་དེ་ཉིད་གནད་ཀྱི་དམ་པར་……  
བརྒྱུད་ནས། གནས་ལུགས་ཀྱི་དོན་ལ་དབྱེད་པ་ནི་ཚུལ་བཞིན་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་དང་།  
སྒྲོ་འདོགས་དང་བསྐྱར་འདེབས་ཀྱི་མཐའ་གཉིས་སྤོང་བར་བྱེད་ཅིང་། རྣམ་པར་  
མི་དྲིག་པའི་ཡེ་ཤེས་འགྱུར་བར་འགྱུར་པས། ཡེ་ཤེས་དེ་འདོད་པས་སོ་སོར་  
དྲིག་པའི་ཤེས་རབ་ལ་བརྟེན་པར་བྱའོ། །ཞེས་ལུགས་འགྱུར་ལྡོག་གི་སྒྲོ་ནས་བདག་  
མེད་པའི་དོན་ལ་སྒྲོ་ཁ་རྒྱས་པའི་ཐབས་ལན་གཅིག་ས་ཡིན་པར་གསུངས་སོ། །དེ་  
དག་གི་ཤེས་བྱེད་དྲ་འཕགས་པ་འཇམ་དབལ་རྣམ་པར་རྒྱལ་བ་དང་། ཉིང་ངེ་  
འཛིན་རྒྱལ་པོ་འི་མདོ་དང་། མདོ་ཀུན་ལས་བདུས་པ་དང་། དཀོན་མཆོག་  
སྒྲིན་དང་། ལང་ཀར་གཤེགས་པ་དང་ཚངས་པས་བྱས་པ་མདོ་ཚན་རིམ་ཉིད་ཅིག་  
ཁྱེད་སུ་དྲངས་ནས་རྒྱས་པར་བསྟན་ནོ།



ཡང་དགོ་བ་ལ་སོགས་པ་ཅི་ཡང་མི་བྱ་ཟེར་བ་དེ་ནི་ལས་ཟད་ནས་གྲོལ་བར་  
 སྒྲིབ་པའི་སྒྲིབ་གས་པ་ཀུན་དུ་འཛོལ་བའི་ལྷ་བ་འདོད་བར་འདུག་པས་དེ་མི་འཐད་དེ།  
 བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱི་གསུང་རབ་ལ་ཉོན་མངས་ཟད་ནས་གྲོལ་བ་ལས། ལས་ཟད་  
 ནས་གྲོལ་བ་མེད་དེ། ཐོགས་མ་མེད་པ་ནས་བསགས་པའི་ལས་མཐའ་ཡས་ཤིང་།  
 ལས་མི་དགོ་བ་དགག་པའི་ཆོ་དགོ་པའི་ལས་ཅིའི་སྤྱིར་དགག་དགོས་དེ་མི་དགོས་  
 པའི་སྤྱིར་དང་། འཁོར་བའི་རྒྱ་བྱེད་པས་དགག་པ་སྐད་དུ་བྱས་ན་ཡང་མི་ཅད་དེ།  
 བདག་འཛིན་སོགས་སྤྱིན་ཅི་ཡོག་གིས་བསྐྱད་པའི་ཟག་བཅས་ཀྱི་དགོ་བའི་ལས་...  
 འཁོར་བའི་རྒྱ་བྱེད་དུ་ཆུག་ཀྱང་། བྱང་ཆུབ་སེམས་དབང་ནམས་ཀྱི་དགོ་བའི་  
 ལས་སྤྱིང་ཆེ་ཆེན་བོས་ཀུན་ནས་སྤང་བ། ཟག་པ་མེད་པ་ཡང་དག་པར་རྒྱུགས་  
 པའི་བྱང་ཆུབ་དུ་ཡོངས་སུ་བསྐྱོས་པ་དེ་དག་ནམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་འཁོར་བའི་རྒྱ་...  
 མི་བྱེད་པའི་སྤྱིར་རོ། འོན་དེ་ས་བཅུ་པའི་མདོ་དང་དཀོན་བཅུགས་འོད་སྤང་གི་  
 ལེབ་ཁྲུངས་སུ་མཛད་ནས་བསྟན་ནོ།

གཤམ་དེ་གྲོལ་བའི་འབྲས་བུ་ཐོབ་པ་ལ་ལས་ཟད་དགོས་ན། སངས་བྱུས་  
 དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་པའི་གཞུགས་ཀྱི་སྒྲིབ་དང་། འཁོར་དང་ཡོངས་སྤྱོད་ཆེན་པོ་  
 སོགས་སྤྱན་སྤྱུམ་ཆོགས་པ་ཐམས་ཅད་སྤྱིན་པ་ལ་སོང་བའི་ལས་ཀྱི་འབྲས་བུ་ཉིད་དུ་  
 བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱི་མདོ་སྡེ་དག་ལས་གསུངས་པ་དང་འགལ་ཞིང་། དགོ་བའི་  
 ལས་དང་། སེམས་ཅན་གྱི་དོན་བྱ་བ་ལ་ཀུན་དུ་མི་སྤྱོགས་པ་དང་། ཡང་དག་པའི་  
 བྱང་ཆུབ་ཀྱང་བྱང་རིང་དུ་བསྐྱེངས་བར་འགྱུར་བའི་སྤྱིར་རོ། ཆུལ་དེ་ནི། མདོ་སྡེ་  
 དགོངས་འགྲེལ་དང་། ཉེ་བར་འཁོར་གྱིས་ཞུས་པ་དང་། གྲི་མ་མེད་བར་གྲགས་  
 བས་བསྟན་པ་དང་། ནམ་མཁའ་མཛོད་ཀྱིས་ཞུས་པ་དང་། མདོ་ཀུན་ལས་བདུས་

བ་དང་། སྤང་བོ་གསུམ་ཡོངས་སུ་བསྡོས་བ་དང་། ཚངས་པ་ཁྱད་པར་སེམས་  
 ཀྱིས་ཉུས་བ་མདོ་ཚན་རི་སྟེད་ཅིག་དང་ས་བཅུ་པའི་མདོ་སོགས་དྲངས་ནས་བྱས་  
 བར་བསྟན་དོ།

མདོ་སྟེ་དེ་དག་གི་ཚིག་རིམ་ལ་འདྲ་ཤེས་ཅན་གྱི་སྦྱོན་བ་ལ་སོགས་བ་ནི་  
 བདུད་གྱི་ལས་སོ། །ཞེས་སེེ་གསུངས་བ་ནི། ཕྱིན་ཅི་ཡོག་དུ་མངོན་པར་ཞེན་བས་  
 ཀྱན་ནས་བསྐྱང་བའི་ཡོངས་སུ་མ་དག་སྦྱོན་བ་ཅམ་ལ་དགོངས་གྱི། སྦྱོན་བ་ཐམས་  
 ཅད་དགག་བ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། དེ་ལས་གཞན་དུ་ན་བཅོམ་ཐུན་འདས་སྟོན་སྟོབ་  
 བ་ལམ་གྱི་གནས་སྐབས་སུ་སངས་རྒྱས་གྲངས་མེད་པ་ལ་བསྟེན་བཀུར་བ་སོགས་  
 རྒྱལ་སྐས་གྱི་སྟོད་བ་ནམས་སངས་རྒྱས་མར་མེ་མཛད་སོགས་ཀྱིས་དགག་དགོས་  
 བ་ལ་ཅིའི་ཕྱིར་དགག་བར་མ་མཛད་ཅེས་སོགས་ལྟར་དོན་གྲུ་དུ་མི་བགྱི་བའི་ཕྱིར་  
 ཡང་དག་བའི་རིགས་བའི་དགག་བཞག་གིས་མཐའ་བཅན་པར་མཛད་དོ།

དེ་ལྟར་འབྲས་བུ་སངས་རྒྱས་གྱི་སའི་གྲོང་ཁྱིམ་དུ་འཇུག་པར་བྱེད་བ་ལ་ས་  
 དང་པ་རེལ་དུ་ཕྱིན་པའི་ལམ་མ་གཏོགས་པའི་འཇུག་སྒོ་གཞན་མེད་པས། བ་  
 རེལ་དུ་ཕྱིན་བ་དུག་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པར་བྱ་ཞིང་། གནས་སྐབས་ཐམས་ཅད་  
 དུ་ཐབས་དང་ཤེས་རབ་རྒྱུད་དུ་འབྲེལ་བའི་ལམ་སྒྲོམ་བ་ལས། གཅིག་ཁོ་ནས་  
 ཚིག་པར་འཛིན་བ་ཆེས་མི་འཐད་པའི་ཚུལ་འཕགས་བ་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཤིན་དུ་  
 རྒྱས་བ་དང་། མདོ་ཀྱན་ལས་བདུས་བ་དང་། གཙུག་མ་ན་རིན་པོ་ཆེས་ཉུས་  
 བ་དང་། དཀོན་བཅེགས་འོད་སྤང་ལེའུ་དང་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་གསང་བའི་  
 མདོ་སོགས་ཀྱིས་བསྐྱབས་པར་མཛད་དོ།

1. བར་སྦྱོན་ཐིག་པའི་དང་ལམ་གྱི་དབང་དུ་བྱས་ནས་གསུངས་བའོ།



དེ་ལྟར་ཐབས་དང་ཤེས་རབ་ལ་དྲག་དུ་གྱུས་པས་ཡུན་རིང་དུ་གོས་པར་...  
 བྱས་པས་སེམས་ཀྱི་རྒྱ་རིམ་གྱིས་དག་ནས་ཡང་དག་པའི་དོན་ལ་བསྐྱོམས་པ་...  
 རབ་ཀྱི་མཐར་ཕྱིན་པར་གྱུར་ནས་འཛིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་ཡེ་ཤེས་རྟོག་པའི་བྱ་  
 བ་མཐའ་དག་དང་བྲལ་བ། ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཤིན་དུ་གསལ་བར་རྟོགས་པ་དངོས་  
 བོ་འི་མཐའ་ལ་དམིགས་པ་སྟེ་ས་དང་པོ་ཐོབ་པར་འགྱུར་ཞིང་། དེ་ནས་ས་  
 གོང་མ་ནམས་རིམ་གྱིས་སྦྱངས་ནས། བག་ཆགས་དང་བཅས་པའི་སྒྲིབ་པ་མཐའ་  
 དག་ཟད་དེ། ཆགས་ཐོགས་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་པའི་ཡེ་ཤེས་གང་ལ་མངའ་བ།  
 ཡོན་ཏན་མ་ལུས་པའི་གཞི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ས་སྟེ་དགོས་པ་ཡོངས་སུ་གྱུབ་པའི་...  
 དམིགས་པ་ཐོབ་པར་འགྱུར་རོ། །དེ་ལྟར་ན་ཐམས་ཅད་མཆེན་པ་ཉིད་ཐོབ་  
 པར་འདོད་པ་སྤྱོད་མཛུངས་ལ་གྱུ་ཆེ་པའི་ནམ་དབྱེད་དང་ལྷན་པ་ནམས་ཀྱིས་...  
 ཟབ་མོ་དབྱ་མའི་ལས་ལ་མངོན་པར་བརྟེན་དགོས་པར་གདམས་པ་དང་། དག་  
 བ་བསྐྱོམ་པ་བཅས་ཀྱི་བསྐྱོན་པ་བསྐྱོམ་རིམ་ཐ་མའི་མཆུག་བསྟུ་བར་མཛད་དོ།

༥ གསུམ་པ། ཞར་བྱང་འཕྲོས་དོན་ཚུང་ཟད་བཤད་བ།

(༡) བསྐྱོམ་རིམ་གསུམ་མཛད་དགས་པའི་རྒྱ་མཚན།

དེ་ཡང་ཆོས་འབྱུང་ལོ་རྒྱུས་ཀྱི་བཤད་ཚུལ་ལྟར་བྱས་ན། ཆོས་རྒྱལ་ཁྲི་  
 སྟོང་ལྷེ་བཙན་གྱིས་མཁས་མཆོག་ཀམལ་ཤིལར། ཆོས་ཐམས་ཅད་ཐོས་བསམ་  
 གྱིས་བདག་མེད་པར་གདན་ལ་འབེབ་ཚུལ་དང་། དོན་དེ་ཉིད་སྟན་ཐོག་གཅིག་  
 དུ་རི་ལྟར་བསྐྱོམ་ཚུལ་དང་། དེ་ལྟར་བསྐྱོམས་པས་འབྲས་བུ་རི་ལྟ་བུ་མཆིས་ཞེས་  
 གྲིབ་གསུམ་ཞུས་པའི་ལན་དུ་བསྐྱོམ་རིམ་གསུམ་རིམ་པ་བཞིན་མཛད་པར་གསུངས་

སོ། །དེ་ལྟར་ན་བསྐྱེམ་རིམ་ཐ་མར་དང་པོ་གཉིས་ལ་ལྟོས་དེ་འབྲས་བུ་དེ་ནས་  
 བཞག་རྒྱས་ཅམ་ཞིག་བསྟན་དགོས་པ་ལ་དེ་མ་བསྟན་པར་འདུག་པའི་ཕྱིར་རོ་ཞེ་  
 བ། བདེན་མོད་ཀྱི། འོན་ཀྱང་བསྐྱེམ་རིམ་གསུམ་བསྟན་བཅོས་གཅིག་གི་ཆ་  
 འས་སུ་གྱུར་པའི་ལེའུ་ལས་རབ་བྱེད་དང་གཉིས་ལྟ་བུ་མ་ཡིན་པར། གཞུང་རང་  
 མཚན་པ་ཤ་སྟག་ཡིན་པས་གདུལ་བྱ་ལས་ལ་བཀྱི་བའི་རིམ་པ་ལ་གཟིགས་ནས།  
 རྒྱས་བསྐྱེམ་དང་། གཙོ་ཆེ་ཆུང་ཅམ་ལས་གསུམ་ཀར་ལས་བསྐྱེམ་པའི་རིམ་པ་  
 ཆ་ཆང་བ་རེ་བསྟན་པར་མཛད་དོ།

གལ་དེ་བསྐྱེམ་རིམ་ཐ་མ་ལྟ་བུ་གཞུང་རང་མཚན་པ་ཞིག་གི་ནང་ཁྲེང་གཞི་རྒྱ་  
 རྒྱུན་སོགས་འབྲེལ་བ་ཆེ་བའི་ལས་ཀྱི་ནམ་བཞག་གང་ཡང་མ་བསྟན་པར་འབྲས་བུ་  
 སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཡོན་ཏན་བསམ་གྱིས་མི་བྱལ་བ་ཁོ་ན་ཐོལ་བུང་བཞིན་པར་བསྟན་ན།  
 རྒྱུ་བོ་བསོད་ནམས་ཀྱི་བསམགས་བྱལ་གིན་དུ་ཆུང་ཞིང་། མདུན་གྱི་ལྟོ་སྟོད་སོར་  
 མངོན་སུམ་གྱི་སྟོད་ཡུལ་དུ་གྱུར་བ་ནམས་ལས་སྐྱེག་དུ་གྱུར་པའི་གནས་ཚུལ་རི་  
 འདྲ་བ་ཞིག་ལ་ཡང་ཡིད་ཆེས་རྒྱ་བཞག་ནས། འདི་འདྲ་བའང་ཡོད་སྟེད་སྟུམ་  
 པའི་དྲོགས་པ་ཅམ་ཡང་སྐྱེ་བའི་སྒོ་གྲོས་ཀྱི་མཐུ་མེད་པ་དག་རི་ལྟར་རིས་སུ་  
 འཛིན་ཀྱས་སམ། དོན་དེ་འདྲ་བ་དག་ལ་དགོངས་ནས་གཞུང་རང་ཚན་པ་མང་པོར་  
 གཞི་ལས་འབྲས་གསུམ་གྱི་ནམ་བཞག་ཆ་ཆང་བ་ལྟོན་པ་ལས་གཅིག་ཁོ་ན་ཐོལ་  
 བུང་དུ་བསྟན་པ་མེད་ལ། སངས་རྒྱས་འཛིག་དེན་དུ་བྱོན་པའི་ཆོན་ཡང་། རྒྱ་  
 འབྲུང་མ་ཐག་དུ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་མཛད་པ་ཤ་སྟག་མི་སྟོན་པར། ཐོག་མར་ཡིག་  
 ཅིས་སྟོབ་པ་དང་། ཁྱིམ་ལས་རབ་དུ་བུང་བ་དང་། དཀའ་བ་སྦྱད་པ་སོགས་  
 མཛད་ནས་རིམ་གྱིས་སངས་རྒྱས་ཀྱི་མཛད་པ་བསྟན་པའི་གནད་གང་ལ་ཐུག། དེ་



བཞིན་དུ་སྦྱོར་བྱ་དཔེ་བ་བསམ་བཞིན་དུ་སེམས་ཅན་གྱི་དོན་དུ་བྱོན་པ་ཐམས་ཅད་...  
 ཀྱང་། སྦྱོན་བྱོན་སྦྱོན་པའི་ནམ་ཐར་དང་། རྗེས་འཇུག་གདུལ་བྱའི་ཉམས་ལེན་  
 བྱེད་ཚུལ་གྱི་ལམ་བཟང་པོ་དེ་ཉིད་བསྟན་པའི་ཆེད་དུ་བྱུང་བ་སྟན་ཡོངས་རྫོགས་ལ་  
 རིམ་གྱིས་བསྐྱབས་ནས་མཁས་ཚུལ་བཞེས་པ་ལས། རྒྱ་མེད་རང་བྱུང་ལྟ་བུ་  
 མི་མཛད་པ་འདི་དག་རབ་འབྱིང་པ་མའི་སློབ་ཅན་གྱི་གདུལ་བྱ་ལས་ལ་བགྱི་བའི་.....  
 ཐབས་མཁས་པ་ཆེན་པོར་མངོན་ནོ།

གཞུང་དོན་བསྟན་ཚུལ་གྱི་ཆ་ནས་བདག་ས་ན་བསྐྱོམ་རིམ་གསུམ་མཛད་.....  
 དགོས་པའི་རྒྱ་མཚན་འདི་ལྟར་སྤང་སྟེ། དེ་ཡང་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་ལམ་ལ་འཇུག་  
 པའི་དྲན་གྱི་གང་ཟག་ལས་དང་པོ་བ་དང་། ལམ་ལ་འཇུག་བཞིན་པ་དང་།  
 རྒྱགས་ཟིན་པ་གསུམ་གྱི་སློབ་མཐོ་དམན་དང་བསྟན་ནས་གསུངས་པ་ཞིག་དུ་.....  
 མངོན་དེ། བསྐྱོམ་རིམ་དང་པོ་ནི་སྐབས་སུ་འདི་ལྟར་གསུངས་སྟེ།

ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ་སྟེ་ཡི།

ཚུལ་དབྱེད་ལས་ནི་དང་པོ་བ།

དེ་ལས་བརྩམས་དེ་བསྐྱོམ་པ་ཡི།

རིམ་པ་མདོ་ཅམ་བཟེད་པར་བྱ། ཞེས་གདུལ་བྱ་ལས་དང་

པོ་བ་དེ་དག་གི་དོན་དུ་ཐོག་མར་སྒྲིང་རྗེ་དང་སེམས་བསྐྱེད་སྐྱོམ་ཚུལ་གྱིས་བར་.....

བསྟན་ནས། དེ་ནས་གཙོ་བོ་ཐོས་བསམ་གྱི་སློབ་ཅན་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་བདག་

མེད་པའི་ལྟ་བ་གདན་ལ་དབབ་ཚུལ་དང་། དེ་རི་ལྟར་བསྐྱོམ་ཚུལ་ས་ལམ་གྱི་

རིམ་པ་དང་བཅས་པ་གྱུས་བར་བསྟན་ནོ།

བསྐྱོམ་རིམ་བར་པའི་སྐབས་སུ་“ཐེག་པ་ཆེན་པོ་མདོ་སྟེ་ཡི་ཚུལ་གྱི་རྗེས་སུ་

འཇུག་པ་ནམས་ཀྱི་བསྐྱེད་པའི་རིམ་པ་མདོར་བཤད་དོ།” ཁྱེད་མེད་པ་ཆེན་  
 པོའི་ལམ་ལ་འཇུག་བཞིན་པ་དེ་དག་གི་ཕྱིར་དུ་ཐམས་ཅད་མཆེན་པ་ཉིད་ཐོབ་པའི་  
 གྱུ་ཀྱེན་ངོས་བརྒྱུད་ཚུལ་དང་། སེམས་བསྐྱེད་ལ་གཉིས་ཀྱི་ཕྱི་མ་དོན་དམ་སེམས་  
 བསྐྱེད་གཙོ་བོར་བསྐྱེད་དགོས་པ་དང་། དེ་བསྐྱེད་པའི་ཚུལ་ཡང་། ཞི་ལྷག་  
 གི་གྱུ་ཚོགས་མཐའ་དག་ལེགས་པར་ཆང་བའི་སྒོ་ནས་དེ་གཉིས་སྟན་ཐོག་གཅིག་  
 ལ་ཅེ་གཅིག་དུ་བསྐྱེད་ཚུལ་གྱིས་པར་བསྟན་ནོ།

བསྐྱེད་རིམ་ཐ་མའི་སྐབས་“ཐོག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ་སྤེའི་ཚུལ་ལ་ཞུགས་པ་  
 ནམས་ཀྱི་ཕྱིར་བསྐྱེད་པའི་རིམ་པ་མདོར་བཅུད་པར་བྱའོ།” ཁྱེད་མེད་པ་ཆེན་  
 པོའི་ལམ་ལ་ཞུགས་ཟིན་པ་སྒོ་ཁ་མཐོ་བ་ནམས་ཀྱི་ཕྱིར་དུ་ཐུན་འགྲོ་སྤྱིང་རྩེ་དང་  
 སེམས་བསྐྱེད་སོགས་ཀྱི་བཤད་པ་མ་མཛད་པར། གྱུ་ལ་བས་དྲིང་ངེ་འཛིན་མཐའ་  
 ཡས་པ་ཞིག་བསྟན་པ་ཐམས་ཅད་ཞི་ལྷག་གཉིས་སུ་འདུས་པས་དེ་གཉིས་བསྐྱེད་  
 དགོས་པ་དང་། དེ་ཡང་དགོངས་འགྲེལ་ལས་གསུངས་པ་ལྟར་དམིགས་པའི་  
 དངོས་པོ་བཞི་ལྟེ། ནམ་པར་མི་དོག་པ་དང་། ནམ་པར་དོག་པ་དང་བཅས་  
 པའི་དམིགས་པ་དང་ལྟན་པའི་ཞི་ལྷག་གཉིས་གོམས་པ་ལ་བརྟེན་ནས་དངོས་པོའི་  
 མཐའ་སྟེ་ཆོས་ཉིད་མངོན་སུམ་དུ་དོགས་པའི་འཕགས་ལམ་ཐོབ་ཚུལ་དང་། དེ་  
 ལ་བརྟེན་ནས་སྒྲིབ་པ་མཐའ་དག་སྤང་བའི་མཚན་ཉིད་དགོས་པ་ཡོངས་སུ་གྱུབ་པ་  
 གླེན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་རྒྱོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་རི་ལྟར་ཐོབ་ཚུལ་བསྟན་པར་……  
 མཛད་དོ།

དེ་ལྟར་བསྐྱེད་རིམ་གསུམ་ཀའི་ནང་བཅོད་བྱ་མཚུངས་པ་རི་སྟེད་ཅིག་བསྟན་  
 པ་ལ་ལ་མཚན་དང་། མི་འོས་པ་སྟེ་གཞི་གང་ཡང་མེད་དེ། དུམ་གྱི་མདོ་



ནམས་སྤྱི་འགྲེས་ཀྱི་དབྱེ་བའི་བུ་ཡང་དང་ཡང་དུ་བཟུག་པའི་ཕྱིར་དང་། འཛིག་  
རྟེན་གྱི་ཁ་སྐད་ལ་ཡང་གཤམ་བོ་ཆེ་ལ་ནན་དན་དང་། དམ་པའི་ཆོས་ལ་བརྒྱ་ཆར་  
གྱི་དབེ་ལྟར་དགོས་པ་མཉན་དུ་བྱུང་བ་ཆེ་སྟེ་དེ་ལ་ཡོད་པའི་ཕྱིར་རོ།

(३) བསྐྱེད་ཅིང་དང་པོ་དང་གཉིས་ཀྱི་ལེགས་སྦྱར་མ་དཔེ་རྟེན་ཅིང་།

མཁས་མཆོག་ཀམ་ལ་ལྷུ་ལས་མཛད་པའི་བསྐྱོམ་རིམ་གྱི་མཐའ་བར་གསུམ་  
ལས་དང་པོ་དང་ཐ་མ་གཉིས་དང་གི་དུས་སུ་ཡང་ཡེ་ཟུར་སྐད་གྲག་ལ་པལ་ཆེ་  
ཉམས་མེད་ཆེད་སོན་བྱུང་ཡོད་པ་ལས། བསྐྱོམ་རིམ་དང་པོ་ནི་ཨི་ཏ་ལའི་མཁས་  
པ་རུ་ཅི་ཞེས་བ་དེ་ཉིད། ཕྱི་ལོ་༡༩༣༩ ལར་བོད་ནང་བསྐྱེད་སྐབས་སྤྱི་ཁབ་དགོན་  
པར་བཞུགས་པའི་ཀྱུ་དཔེ་ཤིང་ཡེ་ཨི་གྲིས་པ་ཞིག་ལག་སོན་བྱུང་ཡོད་ཅིང་།  
དེའི་དབུ་ཤོག་མ་ཆང་ཡང་ངོས་གཉིས་པར་‘དབུ་མའི་བསྐྱོམ་རིམ’ ཞེས་ཡིག་ཆུང་  
འཁོད་ཡོད་པས་དེ་ཉིད་བོད་དཔེ་སྐར་མ་དང་ཞིབ་བསྐྱར་བྱེད་སྐབས་བསྐྱོམ་རིམ་  
དང་པོ་ཡིན་པར་ར་འཕྲོད་བྱུང་ནས་ཕྱིས་སུ་མཁས་པ་དེས་སྒྲིང་བཞིན་དང་བཅས་  
རོམན་ཡིག་ཤོག་དུ་སྐར་འདེབས་བྱས་ཡོད། རོམན་ཡིག་ཐག་དུ་ཡོད་པའི་ཀྱུ་  
དཔེ་དེ་དང་བོད་པའི་སྐར་མ་གཉིས་བསྐྱར་ནས་སྐར་ཞིབ་བྱེད་སྐབས་དབུ་ཤོག་……  
གཅིག་མ་ཆང་བ་ཅམ་དུ་མ་ཟད། ཞབས་ནའང་ངོས་ཤོག་བྱེད་ཅམ་ཆང་མེད་ལ།  
དེ་བཞིན་དུ་མུང་འདྲན་མཛད་མཚམས་མི་མཐུན་པ་དང་། ངོས་ཤོག་རེ་རྒྱང་གི་  
གཞུང་དོན་བཞུན་མཚམས་མི་མཐུན་པ་སོགས་ཁྱད་པར་རི་ཆེད་ཅིག་མཆིས་སོ།།

བསྐྱེད་ཅིང་ཐ་མ་ཡང་གོང་སྐྱེས་མཁས་པ་དེ་ཉིད་ལ་ཅུ་ཡུན་ཆེད་མེན་.....  
ཡུང་རྒྱལ་རོ་མན་ཡིག་ཐོག་དུ་སྤར་བསྐྱེད་བྱས་ཡོད་ཅིང་། རོ་མན་ལྷན་རོ་མན་

ཡིག་ཐོག་དུ་ཡོད་པའི་བྱ་དཔེ་དེ་གཉིས་ལེགས་སྒྱར་གྱི་ཡིག་ཐོག་དུ་ཕབ་བཤུས་  
 དང་འབྲེལ་བོད་པའི་སྒྱར་མ་ཁག་དང་བསྐྱར་ནས་སྒྱར་ཞིབ་བྱེད་སྐབས། གཞུང་  
 འདི་དག་གི་ཐོག་མའི་ལེགས་སྒྱར་མ་དཔེ་གིང་ཡོད་ཐོག་བྱས་པ་དེ་དག་གི་ཡིག་  
 གཞུགས་ཆེས་རྩིང་པའི་དབང་གིས་ཡིག་ངོ་ཤེས་དཀའ་བ་དང་། ཤིང་ལོར་  
 ཆག་སྟོན་དང་། ཅུལ་བ་དང་། འབྲས་ཟོས་པ་སོགས་ལ་བདེན་ནས།  
 གསར་དུ་ཕབ་བཤུས་སྒྱར་འདེབས་བྱས་པ་དེ་དག་ལ་ཡང་། མགོ་མཇུག་མ་ཚང་  
 བ་དང་། ཆོག་དོད་ཆད་པ་དང་། ཆོག་གི་གཅོད་མཚམས་དང་ཁྱང་འདྲིན་  
 འཛོག་མཚམས་མི་མཐུན་པ་སོགས་ཁྱད་པར་ཆེན་པོ་ཡོད་ཅིང་། ཟུ་མཚན་དེ་དག་  
 ལ་བདེན་ནས་སྐབས་མང་པོར་བྱ་དཔེ་ལས་བོད་དཔེ་དག་པ་དང་འཕྲད་ཆེ་བ་ཡོད་  
 ཅིང་། སྒྱར་བྱ་དཔེ་དང་བོད་དཔེའི་དབར་ཁྱད་པར་མང་དག་ཡོད་པ་གཞུང་འདི་  
 ཅམ་མིན་པ་ནི། ད་ཡོད་ཀྱི་ལེགས་སྒྱར་གྱི་བྱ་དཔེ་མ་ཉམས་པ་ཁག་དང་བོད་དཔེ་  
 བསྐྱར་ནས་དངོས་སུ་བདག་པ་བགྱིས་ན་མཁྱེན་པར་འགྱུར་རོ།

### (3) བསྐྱོམ་རིམ་བར་པ་ཉམས་གསོ་དང་ཕབ་བསྐྱར་བྱེད་ཚུལ།

དེ་ཡང་ཐོག་མར་བསྐྱོམ་རིམ་ཐོག་མཐའ་གཉིས་དང་མཐུན་པའི་གཞུང་ཚན་  
 རིམ་ཡོད་དང་། བར་པ་དེ་ཉིད་དུ་ཁྱང་འདྲིན་མཛད་པ་ལེགས་སྒྱར་སྐད་ཐོག་དུ་  
 ཡོད་པ་ནམས་ཚོལ་ཞིབ་བྱས་ཤིང་། དེ་ནས་གསར་དུ་ཉམས་གསོ་བྱེད་  
 དགོས་པ་ནམས་བསྐྱོམ་རིམ་ཐོག་མཐའ་གཉིས་ཀྱི་གསུང་རྩིས་ངོ་མའི་འགྲེམ་དང་  
 གང་མཐུན་ཅི་མཐུན་འགྱུར་ཐབས་སུ། བར་པ་དེ་ཉིད་ཀྱི་ཆོས་ཆོག་གལ་ཆེ་ཁག་  
 གི་སྐད་དོད་ནམས། ཐོག་མཐའ་གཉིས་ཀྱི་ཆོས་ཆོག་གི་ཆོག་མཛོད་བཟོས་པ་



དང་ཞིབ་བསྐྱར་བྱས་ཤིང་སྤྱིངས་ནམས་པའ་བསྐྱར་དང་འབྲེལ་བྱ་བོད་ཀྱི་མཁས་  
པ་ཁག་གི་སྤྱན་ལས་དུ་ལྷན་དག་སྤྱིངས་བཏང་ཤིང་སྤྱིངས་ཀྱི་འབྲེལ་བྱས་སོ།

དེའི་ཤིང་སྤྱིངས་བསྐྱོམ་རིམ་གསུམ་ཀ་ཉིན་སྐད་ཐོག་པའ་བསྐྱར་དང་འབྲེལ་.....  
ཆོས་ཆོག་གལ་ཆེ་ཁག་གི་སྐད་དོད་ནམས་ལེགས་སྐྱར་སོར་བཞག་བྱས་ཤིང་།  
བྱ་དཔེ་དང་བོད་དཔེ་བསྐྱར་ནས་མི་མཐུན་པ་ཡོད་སར་གཞུང་གི་སྐབས་དོན་དང་...  
གང་རན་ཞིང་འཆོམ་པ་དེ་ཉིད་གཙོ་བཟུང་གི་ཐོག་ནས་གཏན་འབེབས་བྱས་སོ།

### (༧) འགོར་གཞི་ཆེ་བའི་ལུང་འདྲན་ཆོལ་ཞིབ་བྱས་པའི་དགོས་པ།

ལས་དོན་འདི་དག་དང་འབྲེལ་བ་ཆེ་ཞིང་། དུས་རབས་གསར་པའི་དཔེ་དཔ་  
བཟོ་སྤྱངས་ཀྱི་གོས་འགྲོས་དང་མཐུན་པ་ཞིག་བྱེད་དགོས་དུས། ལུང་འདྲན་ཆོལ་  
ཞིབ་དང་། སྤར་མ་ཁག་བསྐྱར་བྱ། ཟུར་མཆན་འགོད་བྱ། མིང་ཆོག་གལ་  
ཆེའི་ཆོག་མཛོད་དང་། འབྲེལ་ཡོད་དཔེ་ཐོ་བཀོད་བྱ་སོགས་ཁ་སྐོང་ངམ་ཟུར་  
བཀོལ་ཁག་གིས་མཆོན་ལས་དོན་མང་དག་ཅིག་ཡོད་པ་ལས། ལུང་འདྲན་འཆོལ་  
ཞིབ་བྱེད་སྐྱའི་ལས་དོན་འདིའི་ཐད་མཆན་རིག་གི་འཕེལ་དང་མཐུན་པའི་ཆ་.....  
ཀྱིན་དགོས་ངེས་ཅན་མ་ཆང་བའི་དབང་གིས་འགོར་གཞི་ཆེ་ཞིང་། ལུང་པར་དུ་  
གཞུང་འདི་ཡང་ལུང་འདྲན་ཆོས་མང་པོ་ཡོད་པའི་གྲས་ཤིས་ཡིན་པས་ད་དུང་....  
དཀའ་ཆོགས་སུ་གྱུར་དོ།

དེ་ལྟར་འགོར་གཞི་ཆེ་བའི་ལུང་འདྲན་ཆོལ་ཞིབ་ཀྱི་ལས་དོན་འདིར་འབད་  
བས་འཇུག་པ་ལ་དགོས་པ་ཅི་ཡོད་ཅེ་ན། གང་གི་ཤེས་བྱེད་དུ་དྲངས་སྐྱའི་ལུང་  
ཆོག་དེ་དག་ཁྱད་མེད་ལྡན་བཟོས་དང་། རང་གི་འདོད་གཏམ་བྱུང་བྱལ་དུ་སྦྱོར་

བ་དང་། རག་རྒྱན་དང་ཟེར་སྒྲོམ་ཙམ་ལས་བྱུང་བ་དང་། བཀའ་གདེར་བཙུག་  
མ་སོགས་ལས་བདེན་པ་ལྟ་བུ་མ་ཡིན་པར། བཀའ་བསྟན་བཙུག་གི་ཁྲུངས་ཚད་  
ལྷན་དངོས་སུ་བསྟན་རྒྱ་ཡོད་པ་ལ་ངེས་པ་བདེན་པོ་རྟེན་བྱུང་བ་དང་། ལུང་འདྲིན་  
དེ་ལྷན་གྱི་བསྟན་བཙུག་དེ་ཡང་ཁྲུངས་སྟབས་ཚད་ལྷན་ཞིག་ཡིན་པ་ལ་ངེས་པ་འདྲིན་  
བྱུང་བ་དང་། ལྷག་པར་དུ་ནང་ཚོས་ལ་དད་མོས་མེད་མཁན་དང་། བསམ་  
ཚུལ་འདྲ་མིན་ཅན་གྱི་ཕྱི་མི་ནམས་གྱི་ངོར་ཁྲུངས་སྟེལ་ར་འཕྲོད་གསལ་པོ་མེད་  
པར་སྒྲོམ་འཛོག་བྱས་པ་ཁོ་ནས་ཁྲུངས་འཁྱུལ་ཐབས་མེད་པས་དེ་ལྟར་བྱས་སོ། །

ལུང་འདྲིན་ཚལ་ཞིབ་གྱི་སྒྲོ་ནས་ལུང་ཚོག་ཡིན་པར་ར་འཕྲོད་ཇི་བཞིན་མ་  
བྱུང་ཆོ། མཚམས་རེ་སམ་པུའི་རྒྱུད་གྱི་ཚིག་<sup>1</sup>:- “ནམ་དྲིག་མ་རིག་ཆེན་པོ་ལྟེ།  
འཁོར་བའི་རྒྱ་མཚོར་ལྷུང་བྱེད་ཡིན།” །ཞེས་པ་ལྟ་བུ་བཙུག་ལྷན་འདས་གྱི་  
བཀའ་དངོས་ཡིན་ཀྱང་། དེ་ཁ་ཅིག་གི་འདོད་པར་བཀོད་ནས་ཐད་ཀར་དགག་  
བ་བྱེད་པའི་མཁས་པ་དག་ཀྱང་སྤང་མོད། གཤམ་དེ་དེ་ལུང་འདྲིན་ཚལ་ཞིབ་གྱི་  
ལས་ནས་སངས་རྒྱས་ཀྱི་བཀའ་ཡིན་པར་ངེས་ན། ལྷས་ཟིན་ལྟར་ཁས་སྤང་བ་ལ་  
མི་བདེ་བ་ཡོད་རིགས་ཀྱང་། དགོངས་གཞི་དགོས་པ་སོགས་གྱི་སྒྲོ་ནས་དྲང་དོན་  
དུ་འགྲེལ་བ་ལས། ཐད་ཀར་དགག་པ་དེ་ལྟར་མི་བྱེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །སྐབས་  
འགར་གང་དྲངས་རྒྱུའི་ལུང་ཚོག་དང་། གང་ནས་དྲངས་སའི་བྱུག་དཔེའི་མཚན་  
བྱང་གཉིས་མི་མཐུན་པ་དང་། ལྷས་ཆེན་དམ་པ་ནམས་ཚད་མའི་སྒྲེས་བུའམ།  
ཅ་ཆེན་པོ་ཞིག་ཡིན་པར་བསྟུན་པ་ལ་སྟུབ་བྱེད་དུ་གཤམ་ལྟ་བུར་མདོ་རྒྱུད་ནམས་  
སུ་ལུང་བསྟན་པའི་ཚིག་ཞིག་ཨེ་རྟེན་གཟིགས་རྒྱ་ལ་ཤིན་དུ་དབྱེས་ཚོར་ཆེན་པོ་

1. ལྟེ་-བཀའ་ (རྒྱུད་ཀྱི་ ༡༢༤)



བྱེད་པ་དག་ནས། མདོ་རྒྱུད་ཀྱི་ཚིག་ལ་འཕྲི་བསྟོན་བྱས་མིན་དང་། སྤར་མེད་  
གསར་བཟོ་བྱས་མིན་སོགས་ཀྱང་ལུང་འདྲིན་ཚུལ་ཞིབ་ཀྱིས་བརྟགས་པ་བྱས་ན་.....  
གཤོན་མི་ཟ་བར་དངོས་ར་འབྲེད་ཐུབ་པ་འབྱུང་ངེས་སོ།

སྤྱིར་ན་སྦྱོས་ཆེན་དམ་པ་ནམས་ཚད་མའི་སྦྱོས་བྱ་ཡིན་པར་བསྐྱབ་པ་ལ་ཐོག་  
མར་དེ་དག་གིས་གང་བསྟན་པའི་ལུང་རྟོགས་ཀྱི་བསྟན་པ་དེ་ཉིད་སྦྱོན་མེད་དུ་ཚད་  
མས་ངེས་པར་བྱས། དེ་ལ་བརྟེན་ནས་དེ་སྟོན་པ་པོ་ཡང་ཚད་མའི་སྦྱོས་བྱ་ཡིན་  
པ་ལ་ངེས་པ་རང་སྟོབས་ཀྱིས་འདྲིན་པར་བྱེད་པའི་དམ་པའི་ཚུལ་ལུགས། ཡང་  
དག་པའི་རིགས་པའི་གཞུང་ལམ་ཆེན་པ་དག་དོར་ནས། ལུང་བསྟན་ཙམ་ལ་  
སྦྱབས་སུ་རེ་བའི་ངང་ཚུལ་འདི་ནི། གློ་གྲོས་ཀྱི་འཇུག་པ་ཆེས་དོག་པར་  
མངོན་ནོ།

དེ་ལྟ་བུའི་ངང་ཚུལ་ལ་བརྟེན་མ་དགོས་པའི་དབུར་མཚོན་ཞིག་བཞེད་ན།  
གངས་ཅན་གིང་དའི་སྟེལ་འབྱེད་ཇེ་བདག་ཉིད་ཆེན་པོ་ལྟ་བུ་ཚད་མའི་སྦྱོས་བྱ་འཕམ་...  
སྦྱོས་ཆེན་དམ་པ་ཞིག་ཡིན་པར་བསྐྱབ་པ་ལ། ཆོས་ལ་མ་རྟོན་པར་གང་ཟག་ལ་  
རྟོན་པའི་ངང་ཚུལ་ལོག་པ་བརྒྱུད་བ་དང་། ལུང་བསྟན་ཙམ་ལ་སྦྱབས་སུ་རེ་བའི་  
ཐབས་ལམ་ཁོ་ན་ལ་རེ་ལྟོས་བྱ་མ་དགོས་པར་རང་ལ་ནམ་དུའང་གློ་གྲོས་ཀྱི་ཅུལ་  
ཡོད་ན། དམ་པ་དེའི་སྒྲ་གསུང་བྲགས་གསུམ་གྱི་མཛད་པ་ནམ་ཐར་སྤྱི་དང་།  
ཁྱེད་པར་དུ་མཛད་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡང་སྤྱིང་གསུང་གི་མཛད་པའི་ཕྱག་ཇེས་ལྷན་  
མེད་པ། རྒྱལ་བ་སྤྲུལ་དང་བཅས་པའི་དགོངས་པའི་གནད་ཡོངས་སུ་ཇོགས་པའི་  
ཟབ་རྒྱས་ཀྱི་གསུང་རབ་ནམས་ལ་གཞུང་བོར་གནས་པའི་གློ་གྲོས་ཀྱིས་འཇུག་ན་དེ་  
གས་འབྲས་པར་མངོན་ཞིང་། ཚུལ་འདིས་མཁས་པའི་དབང་པོ་གཞན་ནམས་ལ་

ཡང་རིགས་བསྐྱེ་བར་བྱའོ། །མདོར་ན་ཇི་བདག་ཉིད་ཆེན་བོས།<sup>1</sup>

བཟུན་བའི་ངང་ཚུལ་གྱིས་ནས་སྟོན་པ་ལ།

ཡིད་ཆེས་རྟེན་བས་དྲུག་གང་བར་གྲོག་ །ཅེས་གསུངས་བའི་  
གནད་ཀྱང་འདི་ཡིན་ནོ།

(༧) ལུང་འདྲེན་ཇི་ལྟར་མཛད་ཚུལ་ལ་དབྱེད་བ།

ཀྱི་བོད་ཀྱི་མཁས་གྲུབ་ནམས་ནས་རང་རང་གི་བཟུན་བཅོས་སུ་ལུང་འདྲེན་  
མཛད་ཚུལ་སྒྲ་ཆོགས་གྲིག་སྒྲུང་སྟེ། འདི་ལྟར་ཀྱུ་བའི་བཀའ་མདོ་རྒྱུད་གཉིས་  
དང་། དེའི་དགོངས་འབྲེལ་ནམས་ལས་བཀའ་ཁྲི་ན་མ་གཏོགས་བཟུན་བཅོས་  
ཀྱི་ལུང་འདྲེན་གདན་ནས་མ་མཛད་པ་དང་། སྐབས་དོན་གྱི་སྒྲུབ་བྱེད་དུ་འབྲོག་  
བཀའ་བཟུན་བཅོས་སོགས་འཕགས་བོད་ཀྱི་མཁས་པ་སྤྱི་གསུངས་ཡིན་ཡང་……  
ལུང་འདྲེན་མཛད་ཀྱང་གནང་བ་དང་། གང་དངས་རྒྱུ་གཞུང་དེའི་མཚན་ཅམ་  
ལས་མཛད་པ་བོ་འི་མཚན་མ་བཀོད་པ་དང་། མཛད་པ་བོ་འི་མཚན་ཅམ་ལས་  
གཞུང་གི་མཚན་མ་བཀོད་པ་དང་། མཛད་པ་བོ་དང་གཞུང་མཚན་གང་ཡང་མ་  
བཀོད་པར་‘ཇི་སྟེན་དུ་’ ཞེས་སོགས་ཀྱིས་དབྱ་བཅམས་དེ་ལུང་འདྲེན་མཛད་པ་……  
དང་། གང་དངས་རྒྱུ་གཞུང་དེའི་ཆོག་སྒྲ་བསྐྱུས་ནས་བཀོད་པ་དང་། སྐབས་  
འགར་གཞུང་དེའི་ཆོག་མགོ་ཅམ་སྒྲིམ་ནས་ ‘ཞེས་སོགས་ནས་ཞེས་བའི་བར་དོ།  
ཞེས་བ་དང་། ཡང་‘དེར་བཀོད་པ་ནམས་འདིའི་ཡང་སྒྲུབ་བྱེད་དོ།’ ཞེས་  
ཞུལ་འཕངས་མཛད་པ་དང་། ལུང་འདྲེན་དངས་སའི་གཞུང་མཚན་དངོས་སུ་

1. ཇི་‘ཁ’ ཐོད་ཕ་ ༣༧ (བཟུན་ལྟན་-དེབ་)



བཀོད་ཤིས་སུ་གང་དངས་རྒྱུ་ལྷུ་ཆོག་དངོས་སུ་མ་བཀོད་པར་ལྷུ་དེའི་དོན་.....  
 ཐོབ་ཅམ་རང་ཆོག་གི་ལམ་ནས་བཀོད་པ་དང་། ཡང་སྐབས་དོན་དང་གང་འབྲེལ་  
 ཆེ་བའི་གཞུང་ཆོག་ནམས་ཆ་སྤྱེ་ནས་དང་བ་ལས་དེའི་བར་ན་ཡོད་པའི་འབྲེལ་བ་  
 རྒྱུ་བའི་ཆོག་ནམས་མ་དངས་བར་འཛོག་པ་དང་། ཡང་གཞུང་མང་པོར་མཛོད་  
 ལས་ཀྱི་རྒྱུ་ལས་ཀྱི་བསྟན་བཅོས་ལས་ཀྱི་ཞེས་པ་ལྟ་བུ་སྤྱི་ཁྱབ་ཅམ་ལས་གཞུང་.....  
 ཚན་བྱེ་བྲག་གི་མཚན་མ་བཀོད་པ་དང་། ‘འོད་སྤང་གི་ལེའུ་ལས་’་དཔྱད་བདུལ་  
 བའི་ལེའུ་ལས་’་ཤེས་རབ་ལེའུ་ལས་’་ཞེས་པ་ལྟ་བུ་ཆ་ཤས་ཉི་ཆེ་བའི་མཚན་.....  
 ཅམ་ལས་གཞུང་ངོ་མའི་མཚན་མ་སྤྱོས་པ་སོགས་མཁས་པ་ནམས་ཀྱི་ཕྱག་བཞེས་  
 མི་འདྲ་བ་མཐའ་ཡས་པ་ཞིག་སྤང་ཡང་འདྲིར་བཀོད་པ་ནི་མཚན་པ་ཅམ་སོ།།

སྐབས་འབྲེལ་བསྐྱོམ་རིམ་དུ་དངས་པའི་ལྷུ་འདྲེན་ནམས་གོང་གསལ་.....  
 དང་ཚུལ་དེ་དག་ལས་གང་དང་མཐུན་ཞེ་ན། གཞུང་འདྲིར་དངས་པའི་ལྷུ་  
 འདྲེན་དེ་དག་ནི། རྒྱལ་བའི་བཀའ་མཛོད་རྒྱུ་གཉིས་ཁོ་ན་ལ་ཁྲུངས་སུ་མཛོད་པ་  
 ལས་བསྟན་བཅོས་ཀྱི་ལྷུ་འདྲེན་གཏན་ནས་མ་མཛོད་པ་ཞིག་སྤྱེ། དེ་ཡང་བསྐྱོམ་  
 རིམ་བར་བ་ལས། “འབྲས་བུ་ཐམས་ཅད་མཐུན་པ་ཉིད་ཀྱི་རྒྱ་དང་རྒྱེན་དེ་དག་  
 གང་ཞེ་ན། སྤྱོད་པ། བདག་ལྟ་བུ་དཔྱད་པའི་ཡོང་དང་འདྲ་བས་དེ་དག་བསྟན་  
 བར་མི་ཉུས་མོད་ཀྱི། འོན་ཀྱང་བཅོས་ལྡན་འདས་ཉིད་ཀྱིས་མངོན་བར་ཐོགས་  
 བར་སངས་རྒྱས་ནས། གཏུལ་བྱ་ནམས་ལ་ཇི་སྐད་བསྟན་པ་དེ་བཞིན་དུ་བདག་  
 གིས་བཅོས་ལྡན་འདས་ཀྱི་བཀའ་ཉིད་ཀྱིས་བཤད་དོ།” །ཞེས་གསུངས་པའི་  
 ཕྱིར་དོ།

གལ་ནི་གཞུང་འདིར་བཟུན་བཅས་ཀྱི་ལུང་འདྲེན་གཏན་ནས་མེད་པ་མི་འཐད་  
 དེ། སློབ་དཔོན་ཁྱུ་ལྟུང་གྱིས་མཛད་པའི་མདོ་ཀུན་བདུས་ཁྲུངས་སུ་དྲངས་པའི་  
 ཕྱིར་རོ། །ཞེ་ན། སློབ་མེད་དེ། འདིར་དྲངས་པའི་མདོ་ཀུན་བདུས་ཀྱི་ལུང་ཚིག་དེ་  
 དག་མདོ་ཀུན་བདུས་དེ་ཉིད་དུ་དྲངས་པའི་འཕགས་པ་བྲི་མ་མེད་པར་གྲགས་པས་  
 བཟུན་པའི་མདོ་དང་། འཕགས་པ་འཇམ་དཔལ་ནས་པར་འབྲུལ་བ་སོགས་ཀྱི་  
 མདོ་ཚིག་ཡིན་པ་ལས་སློབ་དཔོན་ཁྱུ་ལྟུང་ཉིད་ཀྱི་གསུང་མིན་པ་ནི་ཆེས་གསལ་ལ་  
 པར་གསུངས་སྟེ། བསྐྱེད་རིམ་ཐ་མ་ལས།<sup>1</sup> “འདིར་ཡང་འཕགས་པ་བྲི་མ་  
 མེད་པར་གྲགས་པས་བཟུན་པ་ལ་སོགས་པ་ཁྲུངས་བཟུན་ཅིང་བཤད་ཀྱི། དེ་  
 ཡང་སློབ་དཔོན་ཁྱུ་ལྟུང་གྱི་ཞལ་སྒྲ་ནས་ཀྱི་བཀའ་ནི་མ་ཡིན་ནོ།” །ཞེས་སོགས་  
 གསུངས་པའི་ཕྱིར་རོ།

སློབ་དཔོན་ཀམ་ལ་གྱི་ལའི་གཞུང་གཞན་ནམས་སུ་མདོ་བཟུན་བཅས་གཉིས་  
 ཀའི་ལུང་འདྲེན་མཛད་ཡོད་ཀྱང་། འདིར་བཟུན་བཅས་ཀྱི་ལུང་འདྲེན་གཏན་ནས་  
 མ་མཛད་པའི་རྒྱ་མཚན་ནི། སྐབས་དེར་ཡོག་པའི་ལམ་ལ་གཅིག་དུ་ཞེན་པ་སྒྱུ་  
 ནག་ཏུ་གང་ཆེས་འབྲངས་དང་བཅས་པས་ཆོས་བྱ་མི་དགོས་ཉལ་བས་ཆོག་ཅེས་  
 ལྟོན་པ་“བསམ་གཏན་ཉལ་བའི་འཁོར་ལོ་” ཞེས་བྱ་བ་བརྒྱམས་ནས། དེ་རིགས་  
 པས་སྒྱུབ་པ་“ལྟ་བའི་བྱ་བ་”དང་། ལུང་གིས་སྒྱུབ་པ་“མདོ་སྡེ་བརྒྱད་ཅུའི་  
 ཁྲུངས་”ཞེས་བྱ་བ་ནམས་བརྒྱམས་པ་ལས། བཟུན་བཅས་ལ་ཁྲུངས་དང་ཡིད་ཆེས་  
 ཀྱིས་ཁས་ལེན་དེ་ཙམ་མི་བྱེད་པའི་གནད་འདི་གཟིགས་ཤིང་། དེ་དག་གི་ཁམས་  
 དབང་བསམ་པ་ལ་ལྟོས་ནས། སློབ་དཔོན་གྱིས་ཀྱང་དེ་དག་གི་ལྟ་བ་ནོར་བ་དེ་

1. རྟེན་-བཟུན་ (དབུ་མ་ཀྱི་ 55)



སྤྱན་འབྱིན་པར་བྱེད་པའི་བསྟན་བཅས་འདིར།      རྒྱལ་བའི་བཀའ་ཉིད་ཁྲུངས་སུ་  
མཛེད་ནས་བསྟན་པར་མཛེད་དོ།

(༩) ལུང་འབྲེན་ཁྲུངས་གདུགས་བྱེད་དགོས་པའི་རྒྱ་མཚན་དང་དགོས་པ།

དེ་ཡང་རྒྱལ་བའི་བཀའ་མདོ་རྒྱད་གཉིས་ཀྱི་དགོངས་འགྲེལ་དུ་བཅུ་མས་པའི་  
བསྟན་བཅས་ཚད་ལྡན་ནམས་སུ།      རྒྱལ་གསུང་བདུད་ཅིའི་དགོངས་འདོན་ནམས་  
མི་དགྲུག་ཅང་།      དེ་དང་མི་འགལ་བའི་ཕྱིར་དུ་དེ་ལ་ཁྲུངས་སུ་མཛེད་དགོས་  
པའི་རྒྱ་མཚན་ནི།      དེ་ཡང་རྒྱད་གླེ་མ་ལས།<sup>1</sup>

གང་ཕྱིར་རྒྱལ་ལས་ཆེས་མཁས་འགའ་ཡང་འཇིག་རྟེན་འདི་ན་ཡོད་མི་ན་དེ།  
མ་ལུས་དེ་ཉིད་མཚོག་ནི་ཚུལ་བཞིན་ཀུན་མཁྱེན་གྱིས་མཁྱེན་གཞན་མིན་པ།  
དེ་ཕྱིར་དང་སྤྱོད་རང་ཉིད་ཀྱིས་གཞག་མདོ་སྤེལ་ཡིན་དེ་མི་དགྲུག།  
ཐུབ་ཚུལ་བཞིག་ཕྱིར་དེ་ཡང་དམ་ཚིས་ལ་ནི་གཞོད་པ་བྱེད་པར་འགྱུར། །

ཞེས་གསུངས་པ་བཞིན་རྒྱལ་བ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ལས་ཆས་  
མཁས་པའི་གང་ཟག་འགའ་ཡང་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་འདི་ན་ཡོད་པ་མ་ཡིན་དེ།  
རྒྱ་ཆེ་བ་ཤེས་བྱ་ཇི་སྟེད་པའི་དོན་མ་ལུས་པ་དང་།      ཟབ་པ་ཇི་ལྟ་བུའི་དོན་མཐའ་  
དག་ཕྱིན་ཅི་མ་ཡོག་པར་ནམ་བུ་ཀུན་མངོན་སུམ་དུ་མཁྱེན་པའི་ཡེ་ཤེས་ཉིད་ཀྱིས་  
མཁྱེན་གྱི། གཞན་གྱིས་མིན་པ་དེའི་ཕྱིར་དང་སྤྱོད་ཆེན་པོ་རྒྱལ་བ་ཉིད་ཀྱིས་གསུངས་  
པའི་དང་བ་དང་ངས་པའི་དོན་དུ་ནམ་བུ་བཞག་པའི་མདོ་སྤེལ་དོན་ནམས་རང་  
བཟོས་མི་དགྲུག་ཅང་།      དེ་ཉིད་ལ་ཁྲུངས་སུ་བྱེད་དགོས་པ་ཡིན་ནོ།

1. ལྟེ་—བསྟན་ (ཐམས་ཆོས་ 'མི' ༡༢)

དེ་བཞིན་དུ་བཀའ་དགོངས་འབྲེལ་དུ་བཅུམས་པའི་འཕགས་བོད་མཁས་་་་  
 བའི་བསྟན་བཅོས་ཚད་ལྡན་ནམས་ཀྱང་རྒྱལ་བའི་བཀའ་བཞིན་ཁྲུངས་སུ་བྱེད་དགོས་  
 བའི་རྒྱ་མཚན་ནི། དེ་ཡང་རྒྱད་སྟེ་མ་ལས།<sup>1</sup>

གང་ཞིག་རྒྱལ་བའི་བསྟན་པ་འབའ་ཞིག་གི།

དབང་བྱས་ནས་གཡེང་མེད་ཡིད་ཅན་གྱིས་བཤད།

ཐར་བ་ཐོབ་པའི་ལམ་དང་རྗེས་མཐུན་བ།

དེ་ཡང་དྲང་སྤོང་བཀའ་བཞིན་སྤྱི་བོས་སྤང་། ཞེས་གསུངས་  
 བ་བཞིན་སྟོན་པ་ཚད་མ་རྒྱལ་བ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་དང་།  
 དེའི་བསྟན་པ་ཚད་མ་འབའ་ཞིག་གི་དགོངས་དོན་བརྗོད་བྱ་ལྟར་ལེན་པའི་དབང་་་་  
 དུ་བྱས་ཏེ། ཅོམ་པ་བོ་འི་ཀྱན་སྤོང་གི་ཁྱད་པར་རྟེན་པ་དང་བཀྱར་སྟོན་དང་།  
 རྒྱགས་པ་ལ་བརྟུ་བ་སོགས་འཁོར་བའི་འདུ་འཛི་འི་ནམ་གཡེང་མེད་པའི་ཡིད་་་་  
 ཅན་གྱིས་བཤད་ཅིང་། བརྗོད་བྱའི་ཁྱད་པར་འབྲས་བུ་ཐར་བ་ཐོབ་པའི་ལམ་དང་  
 རྗེས་སུ་མཐུན་པ་སྟོན་པའི་བསྟན་བཅོས་དེ་ཡང་དྲང་སྤོང་སངས་རྒྱས་ཀྱི་བཀའ་་་་  
 བཞིན་དུ་སྤྱི་བོས་སྤང་དགོས་པར་གསུངས་པའི་ཕྱིར་རོ།

རྒྱ་མཚན་དེ་དག་ལ་བརྟེན་ནས་རང་ལུགས་འཐད་ལྡན་གཏན་སོ་ཡིད་པ་ཞིག་  
 འཛོག་སྟབ་པའི་དགོས་པ་ཡིད་དེ། དེ་ཡང་དོན་མེད་དོན་ལོག་སོགས་ཀྱི་འཁྲུལ་  
 བའི་བྱི་མ་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བའི་ཚད་ལྡན་གྱི་གཞུང་ལུགས་ཅེ་ཁྲུངས་དང་གཞི་  
 ཅུར་ངེས་བརྒྱུད་བྱས་ནས། གཞུང་གཞན་ནམས་དེ་དང་སྦྱར་དེ་ལྷང་རིགས་ཀྱི་རྒྱུ་  
 བྱེད་དང་ལྡན་པའི་དབྱེད་པའི་ལམ་ནས་དགག་བཞག་བྱེད་ཅིང་རང་ལུགས་འཛོག་་



བ་ལས། གང་བྱང་གི་དཔེ་ལ་བལྟ་ཞིང་རྗེས་སྤྱོད་འབྲང་བར་མི་རིགས་དེ། རྗེ་གུང་  
ཐང་གི་གསུང་སློབ་གཉེར་བསྐྱབ་བྱ་ལས།<sup>1</sup>

འཁྱལ་བྲལ་གཞུང་རེ་ངེས་བཟུང་གཞིར་བྱས་ནས།

གཞན་ནམས་དེ་དང་སྤྱར་དེ་དབྱོད་བ་ལས།

གང་བྱང་དཔེ་ལ་ལྟ་ཞིང་ཐམས་ཅད་ཀྱི།

རྗེས་སྤྱོད་འབྲངས་བ་ཤེས་རབ་འཆལ་འགྱུར་བས།

རང་ལུགས་གདད་སོ་ཡོད་བར་གྱིས་ཤིག་ཨང་། །ཞེས་གསུངས་

པའི་ཕྱིར་རོ།

དེ་བཞིན་དུ་ཟབ་དོན་གྱི་གནས་ལ་དབྱད་བ་མི་ཐལ་བའི་དགོས་པ་ཡོད་དེ།

དེ་ཡང་གོ་རིགས་ཐན་ཐུན་གྱི་དབྱད་པས་ངེས་བ་ལས་ཅམ་རྟེན་ན་ཡང་། ཆོས་

ཚུལ་གིན་དུ་ཟབ་པའི་གནས་ནམས་ལ་རང་དགར་ཐག་གཅོད་བྱེད་སྒྲ་ན། ཉན་དང་

གོལ་ས་གཞན་ལས་ཆེ་བས། ཆོས་ས་མ་སྤྱོད་བར་ཚད་ལྡན་ཁྲུངས་གདུགས་བྱེད་

འོས་ཀྱི་གཞུང་ལ་འབྲེལ་བཞིན་དུ་བདགས་ན། དབྱད་བ་བྱེད་ཚུལ་ཐལ་ཆ་མེད་བ་

ཞིག་འབྱུང་མེ། དེ་ཡང་རྗེ་གུང་ཐང་གི་གསུང་སློབ་གཉེར་བསྐྱབ་བྱ་ལས།<sup>2</sup>

དབྱད་པས་ངེས་བ་ལས་ཅམ་རྟེན་ན་ཡང་།

ཆོས་ཚུལ་ཟབ་པས་ཐག་ཆོད་མི་སྒྲ་ཞིང་།

འགྲིག་འགྲིག་མང་པོས་ནམ་དོག་གྱ་སྦྱེད་པས།

དབྱད་བ་མ་ཐལ་གཞུང་ལ་འབྲེལ་བཞིན་དུ།

གྱིས་བསྐྱུས་འཆམ་པའི་དབྱད་ཚུལ་གྱིས་ཤིག་ཨང་། །ཞེས་

1. གུང་ཐང་ 'ང' rs (ཐེ་ཐེ་-དེབ་) 2. གུང་ཐང་ 'ང' rs (ཐེ་ཐེ་-དེབ་)

གསུངས་པ་ལྟར་རོ།

མདོར་ན་བསྐྱབ་བྱའི་དོན་གང་ཞིག་མེད་པ་ལྟུང་བ་དེའི་སྐྱབ་བྱེད་བཅུན་  
པའི་ཕྱིར་དང་། བསྐྱབ་བྱ་གང་ཞིག་ཆེས་ཁྱད་སྤངས་ཕྱབ་དང་། ཚད་ལྡན་ཡིན་པ་  
བཅུན་པའི་ཕྱིར་དང་། བརྗོད་དོན་གང་ཞིག་རང་བཟོ་ཁོ་ན་མ་ཡིན་པའི་ཁྱད་སྤངས་  
ཡོད་པར་བཅུན་པའི་ཕྱིར་དང་། དོན་གྱི་བཅུན་ཚུལ་གང་ཞིག་གཞུང་འདྲི་དང་  
མཚུངས་པ་གཞན་ལ་ཡང་གསལ་ཡོད་པ་སྐྱུས་པར་བཅུན་འདྲོད་པ་སོགས་ཀྱི་.....  
དགོས་པ་ཡོད་པའི་ཕྱིར་རོ།

(༧) སྤར་མ་འདྲ་མེད་བཅུར་ཚུལ།

གཞུང་འདྲིའི་མ་ཕྱི་སྤེད་གོ་སྤར་མ་གཞི་ཅུར་བརྒྱུད་པའི་ཐོག་། ཅོ་ནེ་དང་།  
སྤར་ཐང་དང་། དེ་ཀིང་སྤར་མ་གསུམ་དང་བཅུར་པའི་ཚོ་ སྤེད་གོ་དང་ཅོ་ནེ་  
གཉིས་ཀྱི་དབར་ཁྱད་པར་ཕྱན་ཆོགས་རེ་རྒྱུད་ལས་ཁྱད་ཆེ་བ་མེད་པས་སྤྱོད་གས་.....  
གཅིག་ཅིང་། དེ་བཞིན་དུ་སྤར་ཐང་དང་དེ་ཀིང་སྤར་མ་གཉིས་ཀྱང་སྤྱོད་གས་གཅིག་དུ་  
བཞག་ན་མི་འཕྱས་པ་མེད་པས། སྤར་མ་སྤར་མ་གཉིས་དང་ཕྱི་མ་གཉིས་ཀྱི་དབར་  
ཞིབ་བཅུར་བྱེད་སྐབས་། བསྐྱོམ་རིམ་སྤར་མའི་ཐད་སྤར་ཐང་དང་དེ་ཀིང་གི་སྤར་  
མ་དེ་གཉིས་ཆོག་དོན་གཉིས་ཀྱི་ཆ་ལ་མ་དག་པ་དང་ཆད་སྐྱོན་ཇི་སྟེད་ཅིག་ཡོད་  
པས། དེ་དག་ངོས་ཤོག་སོ་སོའི་གཤམ་དུ་མཆན་བྱར་བདེ་བ་ཅིང་། སྐབས་  
འགར་སྤར་མ་སྤར་མ་གཉིས་ལས་ཕྱི་མ་གཉིས་ཀྱི་གཞུང་ཆོག་སྐབས་དོན་དང་རན་  
ཞིང་། རྒྱ་དབེ་དང་མཐུན་ཚབ་ཆེ་བ་ཡོད་སར་སྤར་མའི་ཆོག་ནམས་མཆན་བྱར་  
བདེ་བ་གོ། །ཡང་སྐབས་མང་པོར་གཞུང་གི་བཅུན་དོན་དང་གིན་དུ་མཐུན་ཞིང་རྒྱ་



དབེར་དངོས་སུ་གསལ་བ་ལ་བོད་བའི་སྤར་མ་བཞི་ཀའི་ནང་མི་གསལ་བ་དང་།  
 དེ་ལས་ཐོག་དེ་གཞུང་གི་སྐབས་དེན་དང་འཛམ་གླིང་བོད་དབེར་ཡོད་པ་ལ་གྱ་.....  
 དབེར་མི་གསལ་བ་ཡང་ཇི་སྟེད་ཅིག་ཡོད་པ་དེ་དག་གཞུང་ངོ་མར་ཤད་གྲག་གི་  
 ནང་དུ་བཅུག་ནས་བཀོད་དོ།

དེ་དང་སྟོགས་མཚའས་བསྟན་བཅོས་ཀྱི་ནང་དུ་དངས་བའི་ཁྲང་ཚིག་དང་།  
 མདོ་ཉིད་ཀྱི་ཚིག་རིས་དབར་དོན་མཐུན་ཡང་། ཚིག་སྒྱུར་གྱི་འགྲུལ་ལ་མི་འདྲ་  
 བའི་ཁྲད་པར་ཇི་སྟེད་ཅིག་ཡོད་ལ། དེ་ལྟར་འབྱུང་བའི་གྱ་མཚན་ནི། ཁྲང་  
 འདྲན་ལེན་ཡུལ་གྱི་མདོ་རྒྱད་བསྟན་བཅོས་བསྐྱར་བ་བོད་དང་། དེ་ལས་དངས་  
 བའི་ཁྲང་འདྲན་དེ་ལྟན་གྱི་བསྟན་བཅོས་བསྐྱར་བ་བོ་གཉིས་མི་འདྲ་བའི་དབང་.....  
 གིས་འབྱར་གྱི་ཁྲད་པར་ལས་བྱུང་བ་དང་། སྐབས་འགར་ཁྲང་འདྲན་ལེན་ཡུལ་  
 གྱི་མདོ་རྒྱད་མ་བསྐྱར་གོང་དེ་ལས་དངས་བའི་ཁྲང་འདྲན་དེ་ལྟན་གྱི་བསྟན་བཅོས་  
 བསྐྱར་ཟིན་པ་ཡང་ཡོད་ལ། གལ་དེ་ཁྲང་འདྲན་ལེན་ཡུལ་གྱི་མདོ་རྒྱད་སྟོན་ལ་  
 བསྐྱར་ཟིན་དུ་ཆུག་ཀྱང་། དེ་ལས་དངས་བའི་ཁྲང་འདྲན་དེ་ལྟན་གྱི་བསྟན་བཅོས་  
 བསྐྱར་བའི་ཚོ། དེར་དངས་བའི་ཁྲང་འདྲན་ནམས་ཐད་ཀར་ཐབ་བསྐྱར་བྱེད་པ་  
 ལས། དངས་ཡལ་གྱི་མདོ་རྒྱད་བསྐྱར་ཟིན་པ་དེ་དང་དའི་ཤོག་ངོས་གང་དུ་ཡོད་  
 མེད་འཛོལ་ཞིབ་བྱེད་རྒྱུ་དེ་དང་དུས་ཀྱི་ལམ་སྟེན་དེ་འདྲ་མེད་ཚོད་དུ་སྤང་ངོ་། །

སྤས་བཅས་ཀྱལ་ཀུན་གཤེགས་བའི་གཞུང་ལས་མཆོག་།

ཟབ་དང་གྱ་ཆེན་གསུང་རབ་སྟོང་པོ་འི་དོན་།

གཅིག་དུ་བསྒྲོམ་བའི་མདོ་བྱང་ཐབས་བཟང་པོ་།

སྟོན་མཛད་མཁས་མཆོག་ཀམལ་ཤིལ་གྱལ་།

སྒྲི་བའི་ཁྱུ་མཆོག་ནམ་དཔྱོད་ལུས་སྟོབས་ཀྱི།

གཤེག་ཅལ་རབ་ཆོག་མ་ཤེས་བྱའི་མཁའ་དབྱངས་སྒྲ།

སྒྲི་གྱུ་བྱ་ལས་རྒྱ་བ་ཡོངས་ཀྱི་ཁྱོད།

འདབ་བཟང་དབང་པོ་བཞིན་དུ་མངོན་པར་འཕགས།

གང་དེའི་མཁའ་རབ་དྲ་བུན་དབང་པོས་གངས་ཅན་ལོག་སྒྲིའི་སྒྲི་སྒྲི་གྱུ་ཀྱན།

བསལ་བྱེད་བཅོས་ལྷན་སྒྲི་བའི་སང་གའི་དྲི་སེད་བཀའ་ལུང་ཁྱོད་ཀྱན་དང་།

ནོ་ངར་ཚ་ཟེར་རིགས་ལས་སྟོང་གིས་དྲུང་ནས་ཕྱང་དང་ལྷན་གཅིག་དུ།

སྒྲི་ལྷན་གདུལ་བྱའི་ནམ་དཔྱོད་འཛིན་མར་ཡང་དག་ལྷ་བའི་འོད་ཆུབས་འཕྱོ།

ཅལ་འདྲིར་འབད་ལས་བྱང་བའི་དགེ་བ་ཡིས།

འགྲོ་ཀྱན་ཟབ་རྒྱས་ལས་གྱི་ཅལ་དོགས་ནས།

ཉིན་མཆོག་ཀྱན་དུ་སྒྲི་བ་བ་ལྷུར་ལེན་བ།

དག་དུ་རྒྱལ་བ་སྒྲི་བཅས་མཉེས་བྱེད་ཤོག །

སངས་རྒྱས་འདས་ལོ་ ༡༧༢༠

ཡུ་ཅུ་རྒྱལ་མཆོག་ནམ་གྲོལ།

བོད་རྒྱལ་ལོ་ ༡༧༧༢

( ལྷ་ཁ་མཐོ་སྒྲི་བ )

ཞོ་རྒྱལ་བཟུན་དབྱར་གྱི་མཆོ་བཞིན་འཕེལ་ཞིང་རྒྱས།

བཟུན་འཛིན་པད་དཀར་ཚལ་བཞིན་ནམ་ཐར་གཙང་།

བདེ་སྦྱིད་ཉི་མའི་འོད་བཞིན་སྒྲིགས་བཅུ་བ།

འགྲན་བཞིན་ཁུབ་བ་ཆོགས་ལྷན་དུས་བཞིན་ཤོག །

( རྟེན་རྒྱུ་མ་ལོ་ ༩༠༩ )

དགེ་ལེགས་འཕེལ།



## भूमिका

अन्त तथा कोटि से रहित दशदिशाओं वाले इस विशाल लोक में, असंख्य तथा अपरिमित सत्त्व सुखगति तथा दुर्गति प्राप्त करते रहते हैं, उनके द्वारा अनादि तथा अनन्त काल एवं अवस्थाओं में पुण्य तथा पाप कर्म संचित होते रहते हैं। उन कर्मों से प्राप्त तथा प्राप्तव्य फलरूपी प्रदीप-कल्प तथा अन्धकार-कल्पों के क्रम यहाँ निरन्तर ही चलते रहते हैं।

इनमें से इस लोक में सम्प्रति 'भद्रकल्प' के नाम से सुप्रसिद्ध प्रदीप-कल्प में मनुष्यों की चालीस हजार वर्षों की आयु में क्रकुच्छन्दबुद्ध, तीस हजार वर्षों की आयु में कनकमुनिबुद्ध, बीस हजार वर्षों की आयु में काश्यपबुद्ध तथा सौ वर्षों की आयु में महामुनि गौतमबुद्ध का आगमन हुआ। इन्होंने बोधगया में बुद्धत्व प्राप्त किया और विनेयजनों के लिए तीन धर्मचक्र-प्रवर्तन करके भारतवर्ष में सर्वप्रथम सूत्र तथा तन्त्र से युगनद्ध बुद्ध-शासन का उदय किया है।

इसके बाद शम्भल में 'धा-वा-सङ्-पो' ( चन्द्रभद्र ) नामक राजा ने बुद्धशासन का विकास किया। तिब्बत में त्रिकुल-बुद्धों के अवतार माने जाने वाले महाधर्मराजाओं ने क्रमशः बुद्धशासन का विकास किया। इसमें काल की दृष्टि से उसे दो भागों में विभक्त किया जाता है। पूर्वकालीन विकास को 'पूर्वोदय-शासन' तथा पश्चात् कालीन विकास को 'परोदय-शासन' कहते हैं।

### ग्रन्थकार का सामान्य परिचय

आचार्य कमलशील पूर्वोदय-शासन के अन्तर्गत सम्राट् ठिसोङ्-देऊचन ( ७४२-७९८ ई० ) के शासनकाल ( ७५४-७९८ ) में लगभग ७९२ ई० के आसपास भोट देश में पहुँचे थे। उस समय आर्यदेश से सुवर्ण पर्वतों की पङ्क्ति के सदृश अनेक महान् आचार्यों का आगमन हुआ था। इनमें से आचार्य कमलशील भोटदेशीय बुद्धशासन में बड़ी प्रतिष्ठा वाले महान् सुधारक माने जाते हैं, क्योंकि इन्होंने बुद्धशासन पर महत्त्वाकाङ्क्षी चीनदेशीय भिक्षु 'ह्वशङ्' आदि के द्वारा उपदिष्ट विपरीत दृष्टियों का उन्मूलन करके यथार्थ सिद्धान्तभूत भगवान् बुद्ध की अभिप्राय-निष्ठाओं पर अत्यन्त सुस्पष्ट प्रकाश डाला। जिसके आधार पर उन्होंने तीन भावनाक्रमों की रचना की। जिनमें समस्त धर्मों का श्रवण तथा चिन्तन के माध्यम से नैरात्म्य-दृष्टि की व्यवस्था का प्रति-

पादन किया, तथा उस अर्थ की एकासन में किस प्रकार भावना करनी चाहिए, और उससे प्राप्त होने वाले फल के विषय में भी समुचित प्रकाश डाला।

इसमें विक्रमशील महाविश्वविद्यालय के विद्वान् प्रवचनों की व्याख्या करते समय धर्म की प्रामाणिकता के स्रोत को प्रकट करने के लिए (१) धर्मग्रन्थकारों की विशेषता, (२) धर्म की विशेषता तथा (३) किस प्रकार से देशना देना तथा श्रवण करना चाहिए, ये तीन प्राथमिक आवश्यकताएँ मानने लगे। इस प्रकार यहाँ पर भी सर्वप्रथम धर्म की प्रामाणिकता के स्रोत को प्रकट करने के लिए प्रकृत ग्रन्थ 'भावना-क्रम' के रचयिता आचार्य कमलशील का संक्षेप में जीवन-वृत्तान्त देना आवश्यक है।

यद्यपि आचार्य जी का जन्म स्थान, जन्मकाल, अल्प वय में ही जिस प्रकार गम्भीर एवं विस्तृत प्रवचनों में बहुश्रुत होने के कारण आगम-गुणों की प्राप्ति, विधि-पूर्वक साधन होने से अधिगम-गुणों की प्राप्ति तथा तदाश्रित बुद्धशासन के विषय में जिस प्रकार जितने विशाल कार्य भारतवर्ष में किये गये हैं, उन सभी के विषय में पर्याप्त परिचय मिलना तो अत्यन्त दुर्लभ है, फिर भी वे लाखों विद्वानों के आश्रयभूत श्रीनालन्दा की विद्वन्मण्डली में से अद्भुत प्रतिभासम्पन्न तथा प्रकाण्ड विद्वान् रहे हैं। यह सिद्ध करना भविष्यवाणी या किंवदन्ती आदि अन्य उपायों पर निर्भर रहने की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि महापुरुषों के द्वारा शरीर, मन तथा वाणी से किए जाने वाले कर्मों में से वाणी का ही कर्म सर्वश्रेष्ठभूत एवं प्रधान है। जिसके फलस्वरूप निम्नलिखित इनकी प्रामाणिक तथा विद्वत्तापूर्ण अनेक अद्भुत महान् कृतियाँ हैं। जिनसे उनकी विद्वत्ता सुस्पष्टरूप में ज्ञात हो सकती है।

आचार्य कमलशील के जीवन-वृत्तान्त के संदर्भ में तिब्बत के विद्वान् 'शक्य-म्छोग्-ल्दन्' द्वारा विरचित 'रोङ्-स्तोन्' के जीवन-वृत्तान्त 'ङो-म्छर-दद्-पई-रोल्-म्छो' (पृ० ३०२) में आचार्य कमलशील ने चीनी भिक्षु 'ह्वशङ्' की विपरीत दृष्टि का उन्मूलन करने के बाद भारत वापस आते समय मार्ग में 'दस्-पा-ग्य-गर' अथवा 'फा-दम-पा-सङ्-ग्यस्' का मुलाकात होकर एक दूसरे के शरीर में परकायप्रवेश किया। वास्तव में परकायप्रवेश के बाद तिब्बत में आए हुए आचार्य कमलशील का शरीर तो सुप्रसिद्ध महासिद्ध 'दस्-पा-ग्या-गर' का था और चित्त अविकल्प-ज्ञान के स्वरूप तो उन्हीं महाविद्वान् कमलशील का अपना ही था। ऐसा कहा गया है।

'कुन्-म्ख्येन्-पद-मा-दक्-पो' द्वारा विरचित 'छोस्-ग्युङ्-ब्तन्-पई-पद्-मा-ग्यस्-पई-त्रिन्-व्येद्' नामक धर्म-इतिहास ('ख' पृ० ३०४) में आचार्य कमलशील का तिब्बत



में देहान्त होने के बाद भारत में अगले जन्म में वे उत्पन्न हुए और उनका नाम 'दम-पा-न्य-नगर' था, ऐसा कहा गया है।

शि-व्येद् ( शान्तिकर ) सम्प्रदाय की गुरुपरम्परा के धर्म-इतिहास 'ग्वोद्-युल-ओन्-मोङ्-शि-व्येद्-क्यो-ञ्का-न्तेर-ञ्जा-मा-न्युत-पई-रुनम्-थर' ( पृ० १९ ) में आचार्य कमलशील को भारत में रहते समय 'पण्डित कमलशील' तथा तिब्बत में रहते समय 'दम-पा-न्या-नगर' कहे जाने का उल्लेख मिलता है। इतना ही नहीं, अनेक धर्म-इतिहासों में 'दम-पा-न्या-नगर' को कमलशील, महायोगीन्द्र कमलशील, भट्टारक कमलशील, कमलश्री, भट्टारक कमलश्री तथा फा-दम्-पा-सङ्-ग्यस् इन पर्यायवची नामों का उल्लेख किया गया है। इन विभिन्न विचारणीय मतान्तरों के विषय पर मैंने भोट-भाषा वाली भूमिका में विस्तार से कहा है।

### आचार्य कमलशील जी की कृतियाँ

सभी कर्मों में वाणी का ही कर्म परम एवं श्रेष्ठ माना जाता है। अतः आचार्य कमलशील के श्रेष्ठ-कर्म सूचित करने वाले ग्रन्थरत्न इस प्रकार हैं।

#### 'विनय के विषय में'

- (१) ४१२८<sup>१</sup>—श्रमणपञ्चाशत्कारिकापदाभिस्मरण।

#### 'प्रज्ञापारमिता'

- (२) ३८१५—आर्यसप्तशतिकाप्रज्ञापारमिताटीका।  
(३) ३८१७—आर्यप्रज्ञापारमितावज्रच्छेदिकाटीका।

#### 'मध्यमक'

- (४) ३८८६—मध्यमकालंकारपञ्जिका।  
(५) ३८८७—मध्यमकालोकनाम।  
(६) ३८८८—तत्त्वालोकनामप्रकरण।  
(७) ३८८९—सर्वधर्मनिःस्वभावसिद्धि।  
(८) ३९१३—बोधिचित्तभावना।  
(९) ३९१५-१७—भावनाक्रम ( तीन ग्रन्थ )।  
(१०) ३९१८—भावनायोगावतार।

१. ऊपर लिखित ग्रन्थों की संख्या देगे तन-ग्युर संस्करण के सूचीपत्र के अनुसार है।

### ‘सूत्रवृत्ति’

- (११) ४०००—आर्याविकल्पप्रवेशधारणीटीका ।  
 (१२) ४००१—आर्यशालिस्तम्भटीका ।

### ‘लेख’

- (१३) ४१९३—ब्राह्मणीदक्षिणाम्बायै अष्टदुःखविशेषनिर्देशनाम ।  
 (१४) ४१९५—श्रद्धोत्पादप्रदीप ।

### ‘प्रमाण’

- (१५) ४२३२—न्यायबिन्दुपूर्वपक्षसंक्षिप्त ।  
 (१६) ४२६७—तत्त्वसंग्रहपञ्जिका ( यह ग्रन्थ मूल संस्कृत में भी सुरक्षित है ) ।

### ‘नाना वर्ग’

- (१७) ४३९३—प्रणिधानद्वयविधा ।

### ग्रन्थ का सामान्य परिचय

भावनाक्रम बौद्धसाधना का एक अतीव महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। भोट-देश के साधकों में इसका बहुत सम्मान है। इसकी रचना भारत के सुप्रसिद्ध विद्वान् आचार्य शान्तरक्षित के अप्रतिम प्रतिभासंपन्न मेधावी शिष्य आचार्य कमलशील ने की है। वे सम्राट् ‘ठि-सोङ्-देउ-चन’ के शासनकाल में लगभग ७९२ ई० के आस-पास भोट देश पहुँचे थे। उस समय इन भारतीय आचार्यों ने बौद्ध धर्म के मूल स्रोत भारत वर्ष की विशाल विद्याराशि को भोट-भाषा में अनुवाद कराने की समुचित प्रणाली का विस्तार किया।

आचार्य कमलशील ने ‘ब्सम्-यस्’ नामक महाविहार में तत्कालीन सम्राट् की प्रार्थना पर तीन भावनाक्रमों की रचना की। यह मूलतः संस्कृतभाषा में लिखा गया था, जिसका भारतीय पण्डित प्रज्ञावर्म तथा तिब्बत के लोचवा ‘ये-शेस्-स्दे’ ( ज्ञान-सेन ) ने मिलकर संस्कृत से भोटभाषा में अनुवाद किया। आज भी यह ग्रन्थ भोट-भाषा में प्राप्त संस्करण “स्दे-द्गे-स्तन्-ग्युर” संस्करण ( मध्यमक ‘कि’ पत्र सं० २२-६८, ग्रन्थ सं० ३९१५-१७ ), “स्नर्-थङ्-स्तन्-ग्युर” संस्करण ( ‘अ’ पत्र सं० २२-७४ ) “पिकिङ्ग-स्तन्-ग्युर” संस्करण ( मध्यमक ‘अ’ पत्र सं० २२-७४, ग्रन्थ सं० ५३१०, खण्ड १०२ ) आदि में सुरक्षित है।



यह ग्रन्थ आचार्य कमलशील ने मूलतः संस्कृत भाषा में लिखा था, किन्तु सम्प्रति यह ग्रन्थ अपनी मूल संस्कृतभाषा में पूर्णतः प्राप्त नहीं होता। प्रो० टूची (G. Tucci) ने सन् १९३९ ई० में तिब्बत जाकर 'पोस्-खङ्' मठ से प्रथम भावनाक्रम की मूल संस्कृत पाण्डुलिपि तथा रूस से तृतीय भावनाक्रम की मूल संस्कृत पाण्डुलिपि को प्राप्त करके रोमन लिपि में उसे छपवाया है।

इस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ की उपयोगिता तथा महत्त्व को देखते हुये मैंने इस रोमनलिपि से देवनागरी लिपि में लिप्यन्तर किया। इसके बाद भोट-संस्करणों के साथ तुलनात्मक अध्ययन करने पर मालुम हुआ कि प्रथम भावनाक्रम का पहला पृष्ठ तथा अन्तिम आधा पृष्ठ भी अनुपलब्ध है। एक-दो सूत्रों के उद्धरणों में भी भोट-भाषा और संस्कृत में स्थान-भिन्नता दिखाई देती है। कई पृष्ठों के अनुच्छेदों में भी अन्तर दिखाई पड़ता है। इतना ही नहीं, शब्दावली में भी काफी अन्तर देखने को मिलता है। पाण्डुलिपि बहुत पुरानी, अस्पष्ट तथा जीर्ण-शीर्ण होने के कारण प्रथम तथा तृतीय भावनाक्रम के कई स्थलों पर अपूर्ण वाक्य तथा कुछ शब्द छुटे हुए हैं। जिनको भोट-भाषा से मिलाकर पूर्ण किया गया है। जो शब्द और वाक्य भोट-भाषा से लिये गये हैं, वे सब बृहत् कोष्ठक [ ] के भीतर रखे गए हैं। कुछ शब्द ऐसे भी हैं, जो संस्कृत मूल ग्रन्थ में उपलब्ध हैं और अनूदित भोट-पाठ में नहीं हैं। वहाँ पर भी जो शब्द अतिसंगत लगते हैं वे सब भोट-पाठ में लघु कोष्ठक ( ) के भीतर रखने की चेष्टा की गयी है।

भोट-भाषा में प्राप्त देगे-संस्करण को आदर्श बनाकर स्नर-थङ्, पेकिङ्ग तथा 'चो-ने' संस्करणों के साथ मिलाने पर उनमें जितने पाठान्तर मिले, वे सब टिप्पणी के रूप में रखे गए हैं। देगे-संस्करण के अलावा अन्य तीन तिब्बती संस्करणों में जो शब्द मूल संस्कृत-पाठ में भी उपलब्ध हैं और अर्थ आदि की दृष्टि से अतिसंगत लगते हैं, वे सब आदर्श पाठ में रखकर देगे-संस्करण वाले शब्दों को टिप्पणी में रखा गया है। इस ग्रन्थ में उद्धृत जो सूत्र-वचन चाहे संस्कृत में उपलब्ध हों या भोट-भाषा में, उन्हें यथा-सम्भव खोज करके उन मूल ग्रन्थों के संस्करणनाम, पृष्ठसंख्या आदि सन्दर्भ टिप्पणी में राखा गया है।

### द्वितीय भावनाक्रम का पुनरुद्धार

सर्वप्रथम द्वितीय भावनाक्रम के जो अंश प्रथम तथा तृतीय भावनाक्रम में भी पूर्णतया समान हैं या प्रायः समान हैं, उन अंशों की खोज की और वे सब भिन्न अक्षर

( १४ काला ) में छापे गए हैं । तत्पश्चात् द्वितीय भावनाक्रम में उद्धृत लङ्कावतार आदि कुछ सूत्रग्रन्थ ऐसे हैं, जो संस्कृत में भी उपलब्ध होते हैं, उन ग्रन्थों के अन्तर्गत अपेक्षित सूत्रवचनों की खोज की और प्राप्त पाठान्तरों को टिप्पणी के रूप में प्रस्तुत किया । वर्तमान समय में जितना पुनरुद्धार करने की आवश्यकता पड़ती है, उसको यथासम्भव प्रथम तथा तृतीय भावनाक्रमों के साथ भाषा की अनुकूलता बनाए रखने के लिये द्वितीय भावनाक्रम के जितने भी परिभाषिक शब्द हैं, उन्हें प्रथम तथा तृतीय भावनाक्रम के पारिभाषिक शब्दों से मिलाकर तब पुनरुद्धार किया गया है । साथ ही भोट भारतीय विद्वानों के समक्ष इसे उपस्थापित करके ही कोई निर्णय लिया गया है ।

इसके बाद तीनों भावनाक्रमों का हिन्दी में अनुवाद किया गया है, इनमें मुख्य पारिभाषिक शब्दों को संस्कृत के अनुसार रखा है । संस्कृत और भोट-पाठों को मिलाकर उनका तुलनात्मक अध्ययन करते समय जहाँ किसी एक पाठ में कुछ शब्द बिल्कुल नहीं मिले उन्हें प्राप्त पाठ के अनुसार तथा जो भिन्न रूप में मिले वहाँ जो शब्द अर्थ आदि की दृष्टि से अधिक संगत लगे; उन्हीं को प्रधानता देकर रखा गया है ।

### तीनों भावनाक्रमों का संक्षिप्त अभिधेय

सभी बुद्धवचनों के मुख्य अभिधेय की एक आसन में किस प्रकार भावना करनी चाहिए, उसके आधार पर दो महारथियों द्वारा सुविभाजित विशाल मार्ग-व्यवस्था की गई है । जिसका सम्पूर्ण रहस्य संगृहीत करने वाले, सौभाग्यशाली विनेयजनों को शीघ्रता से सर्वज्ञता-पद प्राप्त कराने वाले तथा परमयान के सदनयरूप तीन भावना-क्रमों का संक्षिप्त अभिधेय यहाँ कहा जा रहा है -

सर्वज्ञता की प्राप्ति अतिशीघ्र ही करने के इच्छुक प्रेक्षावानों को उसे प्राप्त कराने वाले हेतुओं तथा प्रत्ययों में प्रयत्नशील होना चाहिए । उसमें भी अहेतुक, अपूर्ण हेतु, हेतु पर निरपेक्ष, और भ्रान्त तथा विकल हेतुओं से न होकर अभ्रान्त तथा अविकल सकल हेतु-प्रत्ययों पर ही अपेक्षित रहना परम आवश्यक है । इस फलरूपी सर्वज्ञता के हेतु तथा प्रत्यय कौन हैं ? वे भगवान् बुद्ध के वचनानुसार महाकरुणा, बोधिचित्त तथा प्रतिपत्ति इन तीनों की शिक्षा होना चाहिए ।

**महाकरुणा की भावना**—सामान्यतया त्रिधातु में आचरण करने वाले, तीन दुःखों से यथायोग्य ग्रस्त सभी सत्त्वों की और विशेषकर पङ्गतियों में होने वाले अतिदुःसह, अविच्छिन्न, दीर्घकालिक तथा तीव्र दुःखों से दुःखित प्राणियों की स्थिति को सोचकर समस्त सत्त्वों के प्रति सभी दुःखों से मुक्त करने की इच्छावाली महाकरुणा की भावना करनी चाहिए ।



वह भी पहले मित्रपक्ष से आरम्भ करके क्रमशः शत्रुपक्ष तथा सामान्य प्राणियों के प्रति भावना करे, इसके बाद समानरूप से करुणा की प्रवृत्ति हो सके, एतदर्थ दश दिशाओं के सभी सत्त्वों पर उसकी भावना करनी चाहिए। जब अत्यन्त दुःखित प्रिय पुत्र के प्रति माता की भाँति समस्त सत्त्वों को सर्वदा के लिए सभी दुःखों से मुक्त कराने की इच्छा वाली करुणा अनायास रूप से प्रवृत्त होती है, तब जिसकी निष्पत्ति होती है, उसे ही महाकरुणा का नाम प्राप्त होता है।

**बोधिचित्त की उत्पत्ति**—इस प्रकार महाकरुणा की भावना के बल से अनुत्तर-सम्यक्सम्बोधि में समस्त प्राणियों को स्थापित करने की प्रतिज्ञा वाले बोधिचित्त को उत्पन्न करना चाहिए। उसमें भी दूसरे के द्वारा सम्यग् ग्रहण कराना तथा स्वयं अपने द्वारा बोधिचित्त को उत्पन्न करना, इन दो में से बाद वाला अतिविशिष्ट है, ऐसा भगवान् बुद्ध ने 'आर्यतथागतज्ञानमुद्रासमाधि<sup>१</sup>' में कहा है। वह बोधिचित्त प्रतिपत्ति के बिना तथा सम्पूर्ण प्रतिपत्ति से युक्त न होने पर भी संसार में महाफल से युक्त होता है और जो बोधिचित्त प्रतिपत्तिसार से युक्त होता है, उस फल की अतिविपुलता का कहना ही क्या। जैसा कि भगवान् बुद्ध ने 'आर्यवीर्यदत्तपरिपृच्छा' में कहा है<sup>२</sup>—

बोधिचित्ताद् वै यत् पुण्यं तच्च रूपि भवेद् यदि।

आकाशधातुं सम्पूर्य भूयश्चोत्तरितं भवेत् ॥ इत्यादि।

**प्रतिपत्ति (साधना) में प्रवृत्ति**—इस प्रकार बोधिचित्त को उत्पन्न किये हुये बोधिसत्त्व स्वयं विनीत हुए बिना दूसरों को विनीत नहीं कर सकते हैं। इसलिए सर्वप्रथम उन्हें ही स्वयं दानादि प्रतिपत्तियों में प्रवृत्त होना है। उनके बिना अनुत्तर-सम्यक्सम्बोधि प्राप्त नहीं होती है। बोधिसत्त्वों की प्रतिपत्ति पारमिता, अप्रमाण, संग्रह-वस्तु आदि अनेक प्रकार की हैं, ये सभी प्रतिपत्तियाँ संक्षेपतः उपाय तथा प्रज्ञा में अन्तर्भूत हो जाती हैं। इन दोनों में से किसी एक से ही संतुष्ट न रहकर दोनों का सेवन करना अत्यावश्यक है।

प्रज्ञा के द्वारा परिगृहीत होने पर दानादि की परिशुद्धि तथा 'पारमिता' का नाम प्राप्त करते हैं, अन्यथा नहीं हो सकता है। अतः उस प्रज्ञा की उत्पत्ति के लिए

१. हेने—का० सूत्र - 'ब' ०३०-२५३)।

२. हेने—का० (रत्नकूट-'घ' २०२।

सर्वप्रथम आगम के अर्थ की अवधारणा करने वाली श्रुतमयीप्रज्ञा को उत्पन्न करना चाहिए। तदश्चात् नीतार्थ तथा नेयार्थों का विभाजन करने वाली चिन्तामयी प्रज्ञा तथा सम्यक् अर्थ की भावना करने वाली भावनामयी प्रज्ञा को उत्पन्न करना है।

**शमथ की भावना**—श्रुतमयी तथा चिन्तामयी प्रज्ञा के द्वारा भूतार्थ का परीक्षण करके निश्चय किये जाने पर, उसी अर्थ को प्रत्यक्ष करने के लिये भावनामयी प्रज्ञा को उत्पन्न करना चाहिये। बहुश्रुत होने मात्र से अर्थप्रत्यक्ष नहीं हो सकता है। अतः तत्त्व-साक्षात् करने के इच्छुक लोगों का श्रवण तथा चिन्तन मात्र से सन्तुष्ट न रहकर भावना में प्रवृत्त होना चाहिये। इसमें सर्वप्रथम ही योगी को चित्त स्थिर करने के लिए शमथ सिद्ध करना आवश्यक होता है।

इसमें पञ्चगुणों से युक्त अनुकूल देश, अल्प इच्छा, बहुक्रियाओं का परित्याग, शीलविशुद्धि आदि शमथ के सम्भारों में स्थित रहकर मन के अनुकूल स्थान में सभी बुद्धों तथा बोधिसत्त्वों को प्रणाम करके सकल जगत् के उद्धार के आशय से महाकृपा को अभिमुख करना चाहिए। तदनु शरीर सीधा करके स्मरण सहित जितने प्रकार से विचार करने का जो रूपी तथा अरूपी धर्म संगृहीत किया गया उस पर और स्कन्ध, आयतन, धातु आदि विस्तार से विभाजित किये गये धर्मों पर क्रमशः आलम्बित होकर शमथ की भावना करनी चाहिये।

**शमथ-भावना के विघ्नों का निवारण**—राग आदि के कारण चित्त के बाहर विक्षिप्त हो जाते समय अशुभ आदि की भावना हो तथा समाधि में चित्त को अनभिरत देखें, तब समाधि के गुणों को देखकर अभिरति की भावना करे। स्त्यान तथा मिद्ध से अभिभूत होते समय अलोकसंज्ञा आदि की भावना तथा औद्धत्य दिखलाई पड़ने पर अनित्यता आदि संवेग-वस्तुओं पर मनसिकार से औद्धत्य को प्रशान्त करना चाहिए। जब लय और औद्धत्य आदि दोषों से रहित होकर जिस आलम्बन में अनभिसंस्कार से चित्त जब तक इच्छानुसार प्रवृत्त रहने में समर्थ हो जाता है, तब शमथ की निष्पत्ति कही गयी है।

**विषयना की भावना**—शमथ के बल से आलम्बन पर चित्त स्थिर करने के बाद प्रज्ञा के द्वारा यथास्थिति को जानने के लिए परीक्षण करना चाहिए। प्रज्ञा का आलोक न होने से सम्मोह के बीज का उन्मूलन नहीं हो सकता है। अतः प्रत्यवेक्षण-प्रज्ञारूपी विषयना की भावना करनी चाहिए। वह भी सत्पुरुषों का आश्रय, बहुश्रुतों का अन्वेषण तथा योनिशोमनस्कार इन तीन विषयना-सम्भारों से युक्त होकर, परमार्थतः



सभी धर्मों के पुद्गल तथा धर्म आत्माओं से शून्य हैं, ऐसी भावना करनी चाहिये। वह भी आर्यसन्धिनिर्माचन में जैसा कहा गया है, वैसी ही प्रज्ञा के द्वारा जाना जा सकता है, अन्य से नहीं। इसलिए योगियों को प्रत्यवेक्षण प्रज्ञा के द्वारा इस प्रकार परीक्षण करना है। पुद्गल तो स्कन्ध आदि से एक तथा अनेक कहीं पर भी सिद्ध नहीं होता है। नित्यता, एकरूपता तथा अनिर्वचनीयता न होना आदि का समुचित रूप से परीक्षण करके पुद्गल-नैरात्म्य की भावना करनी चाहिए।

धर्म, संक्षेप में पञ्च स्कन्ध, बारह आयतन तथा अठारह धातुयें हैं। इनमें जो रूपी अंश हैं वे परमार्थतः चित्त के आकार से भिन्न नहीं हैं और जो चित्त है, वह भी परमार्थतः एक तथा अनेक स्वभाववाला नहीं है। इसलिए वह तो माया आदि के स्वभाव की भाँति है, ऐसा विचार करना चाहिए। इस प्रकार प्रत्यवेक्षणप्रज्ञा के द्वारा परीक्षण किये जाने पर सभी धर्मों में परमार्थतः स्वभावसत्ता का ग्रहण नहीं होता। तब निर्विकल्प-समाधि में प्रवेश करना चाहिये।

नैरात्म्य की भावना करते समय प्रत्यवेक्षण-प्रज्ञा के द्वारा वस्तुओं के स्वभाव का अनेक युक्तियों तथा आगमों के द्वारा परीक्षण करके यथार्थ-तत्त्व की भावना करनी होती है। परन्तु चोनीभिक्षु 'ह्वशङ्' आदि इस सम्यक् मार्ग से हटकर कुछ भी नहीं सोचकर अमनसिकार-मात्र की भावना करने पर संसार से मुक्त होना मानते हैं। इस कुदृष्टि का आचार्य कमलशील ने सम्यक् युक्ति तथा आगमों के द्वारा जड़ से उन्मूलन किया है। सम्यक्ज्ञान का मूल तो भूतप्रत्यवेक्षण है, अतः उसके प्रतिक्षेप से धर्मप्रविचय नामक सम्यक्संबुद्ध का परम-अवयव, लोक तथा लोकोत्तर वाली समस्त प्रज्ञाओं का प्रहाण हो जायेगा। इसलिए महायान का प्रतिक्षेप करने वाले, अल्प श्रवण वाले, आत्मदृष्टि परामर्श वाले, विद्वज्जनों की सेवा न करने वाले, तथागत के प्रवचन की नीतियों को धारण न करने वाले, स्वयं विनष्ट होकर और दूसरों को भी नष्ट करने वाले, युक्ति तथा आगम के आधार पर दूषित होने के कारण विष से मिले हुये वचनों का सविष भोजन की भाँति, अपना हित चाहने वाले बुद्धिमान् व्यक्तियों के द्वारा दूर से ही परित्याग करना कहा है।

जब सभी धर्मों का निःस्वभावता के रूप में आलम्बन करने पर लय तथा औद्धत्य आदि दोष नष्ट हो जाते हैं और अनभिसंस्कार ज्ञान अनायास प्रवृत्त होता है, तब शमथ तथा विपश्यना का युगनद्धवाही मार्ग निष्पन्न होता है।

समाधि से व्युत्थान होने पर पृष्ठलङ्घ की अवस्था में दो सम्भारों की विशाल प्रतिपत्ति—सभी धर्म परमार्थतः निःस्वभाव होने पर भी संवृति में विद्यमान



हो हैं। ये बालबुद्धि वाले इस प्रकार निःस्वभाव वस्तुओं में विपरीत अभिनिवेश के कारण संसार में परिभ्रमण करते हुए विविध दुःखों का अनुभव करते हैं, ऐसा समझकर महाकरुणा के अभिमुख होकर इस प्रकार सोचना चाहिए कि—मैं वैसा हो करूँगा जिससे सर्वज्ञता प्राप्त करके इन सत्त्वों को धर्मता का ज्ञान करा सकूँ। सभी बुद्ध तथा बोधिसत्त्वों की पूजा, स्तुति तथा सत्कार करके आर्यभद्राचार्य आदि के अनुसार महा-प्रणिधान करना, शून्यता और करुणा-गर्भ वाले दान आदि सभी पुण्य तथा ज्ञान-सम्भार के अर्जन के माध्यम से सर्वाकारवरोपेतशून्यता का अभिनिर्हार करना चाहिए।

**उपाय से निष्ठागत होना**—सभी सत्त्वों का परिपाक करना, बुद्धक्षेत्र की परिशुद्धि, सर्वाकारवरोपेत सर्वज्ञज्ञान आदि जो संपत्तियाँ कहीं गई हैं, वे सभी दान आदि उपायों के निष्ठागत होने से प्राप्त होती हैं। इसलिए बोधिसत्त्वों को उपाय तथा प्रज्ञा दोनों में शिक्षित करना चाहिए। मात्र प्रज्ञा या उपाय से नहीं हो सकता है। जैसे मन्त्रिसहित राजा सभी आवश्यक कार्य करता है, उसी प्रकार उपायकौशल से युक्त बोधिसत्त्वों की प्रज्ञा सभी बुद्धकार्य कर सकती है। एकाकी प्रज्ञा या उपाय वाले मार्ग तो बोधिसत्त्वों के बन्धनस्थल देखते हैं, और इस प्रकार उनका संसार में या हीननिर्वाण में पतन होना कहा गया है। इसलिए बोधिसत्त्व उपायसहित प्रज्ञा की शिक्षा करने पर निष्ठा-प्राप्य अप्रतिष्ठित निर्वाण प्राप्त कर सकता है, क्योंकि प्रज्ञा के बल से संसार में पतन नहीं होता है, और उपाय के बल से हीन-निर्वाण में पतन नहीं होता है।

**दीर्घकालतक उपाय-प्रज्ञा युगनद्ध-मार्ग की भावना करने पर फलप्राप्ति की व्यवस्था**—इस प्रकार महाकरुणा, बोधिचित्त तथा उपायनिष्ठा का अभ्यास करने से इस जन्म में अवश्य विशिष्ट होता है, और उसे स्वप्न में भी सदा बुद्ध तथा बोधिसत्त्व का दर्शन होगा, प्रतिक्षण में भी विपुलपुण्य तथा ज्ञान-सम्भारों का संचय हो सकेगा। क्लेश-आवरण तथा दौष्टुल्य का भी क्षय हो जायेगा। अभिज्ञता, ऋद्धि आदि विशिष्ट गुणों की प्राप्ति हो जायेगी। अनायास ही पुण्य तथा ज्ञानसम्भारों का परिपूर्ण हो जाना आदि अपरिमित अनुशंसाएँ सूत्र-ग्रन्थों में कही गयी हैं।

विशेषकर सम्यक् अर्थ का अभ्यास प्रकर्षपर्यन्त होने पर लोकान्तर-ज्ञान, समस्त विकल्प जालों की अपगति, निष्प्रपञ्च-धर्मधातु का अतिस्फुट अवगमन, सभी धर्मों के नैरात्म्य-तत्त्व का साक्षात्कार तथा दर्शन-मार्ग द्वारा संगृहीत परमार्थ बोधिचित्त के उत्पन्न होने से वस्तुपर्यन्तता में प्रविष्ट हो जाता है। तथागत गोत्र में उत्पन्न होता है। बोधिसत्त्वों की निर्दोषता में प्रवृत्ति होती है, जगत् की सभी गतियों से निवृत्ति



होती है, बोधिसत्त्व की धर्मता तथा धर्मधातु की अवगति में स्थिति होती है। बोधिसत्त्वों की प्रथम भूमि की प्राप्ति होती है। इस प्रकार की अनुशंसाओं को विस्तार से दशभूमिसूत्र आदि से जानना चाहिए।

इस प्रकार प्रथम भूमि में प्रविष्ट होकर वह बाद में भावनामार्ग में लोकोत्तर समाहित तथा इसके पृष्ठलब्ध-ज्ञान दोनों के द्वारा प्रज्ञा तथा उपाय की भावना करे, तब क्रमशः भावना-प्रहेय जो संचित आवरण उनका सूक्ष्म से भी अतिसूक्ष्म व्यवदान होगा। इस प्रकार वह उत्तरोत्तर विशिष्ट गुणों को प्राप्त करने के लिए अधोभूमियों का परिशोधन करता है और तथागत के ज्ञानपर्यन्त में प्रवेश करके सर्वज्ञता के सागर में प्रविष्ट होकर कार्यपरिनिष्पत्ति का आलम्बन भी प्राप्त करता है।

सर्वज्ञता के सागर में प्रवेश हो जाने पर चिन्तामणि की भाँति समस्त सत्त्वों के उपजीव्य गुण-स्कन्ध से युक्त, पूर्वप्रणिधान के फल से सत्कृत, महाकरुणा के स्वभाव-भूत, अनाभोग से ही नाना उपायों से युक्त, अपरिमित निर्माणों से अशेष जगत् के सभी अर्थकारों से सम्पन्न, सारी गुणसम्पत्तियों के प्रकर्षपर्यन्तता में पहुँचा हुआ, वासना सहित समस्त दोषमालाओं का निरास करके, सत्त्व-धातु की अन्तपर्यन्तता में सत्त्वहित के लिए विहार करने वाले हैं, ऐसा समझकर प्रेक्षावान् बुद्धिमान् पुरुष उस भगवान् बुद्ध के समस्त गुणों के आकार में श्रद्धा उत्पन्न करके उन गुणों की परिनिष्पत्ति के लिए स्वयं सभी तरह के प्रयत्न करे।

भवतु सर्वमङ्गलम्







༡། རྒྱལ་དབོན་ཀམ་ལ་གྱི་ལས་མཛད་པའི་བསྐོས་རིམ་ཐོག་  
མཐའ་བར་གསུམ་བརྒྱགས་སོ།





བསྐྱེད་པའི་མཁའ་མཁའ་

༡༩། །ཀྱུ་གཤམ་སྐྱེད་ཀྱི་ རྒྱུ་བཅུ་ལྔ་ལྟ་བུ་ བོད་སྐད་དུ། བསྐྱེད་པའི་

མཁའ་མཁའ་། འཇམ་དཔལ་གཞིན་ཀྱང་གྱུར་བ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ།

ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ་སྡེ་ཡི།

ཅུལ་སྟོན་ལས་ནི་དང་བོ་བ།

དེ་ལས་བཅུ་ལྔ་ལྟ་བུ་བསྐྱེད་པ་ཡི།

མཁའ་མཁའ་མདོ་ཅམ་བཞེད་པར་བྱ།

ཐམས་ཅད་མཁའ་མཁའ་པ་ཉིད་ཀྱི་སྐྱེད་ཀྱི་ཐོབ་པར་འདོད་པས་མདོར་ན་སྟོང་ཆེ་རང་།

བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་དང་། རྒྱུ་བ་བ་དང་། གནས་འདི་གསུམ་ལ་འབད་པར་

བྱའོ།

དེ་ལ་སངས་རྒྱུས་ཀྱི་ཆོས་མ་ལུས་པའི་རྒྱུ་ལྟ་བུ་ནི་ཅ་བ་ནི་སྟོང་ཆེ་ཁོ་ན་ཡིན་པར་

ཤེས་པར་བྱས་ལ། དེ་ཉིད་ལ་ཐོག་མ་<sup>2</sup>ཁོ་ནར་བསྐྱེད་མོ། །དེ་སྐད་དུ།

འཕགས་པ་ཆོས་ཡང་དག་པར་སྐྱེད་པ་ལས་<sup>3</sup>གསུངས་དེ། “དེ་ནས་བཅོམ་ལྷན་

འདས་ལ་འཕགས་པ་སྐྱེད་པས་གཟིང་དབང་ཕྱག་གིས་འདི་སྐད་ཅེས་གསོང་དོ། །

བཅོམ་ལྷན་འདས་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔས་<sup>4</sup>ཆོས་རབ་དུ་མང་བོ་ལ་བསྐྱེད་པར་མི་

བགྱིའོ། །བཅོམ་ལྷན་འདས་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔས་<sup>5</sup>ཆོས་གཅིག་རབ་དུ་གཞུང་

ཞིང་རབ་དུ་དོགས་པར་བགྱིས་ན་སངས་རྒྱུས་ཀྱི་ཆོས་རྣམས་ཅད་དེའི་ལག་མཛུགས་

དུ་མཆིས་པ་ལགས་མོ། །ཆོས་གཅིག་པོ་གང་ཞེ་ན། འདི་ལྟ་སྟེ། སྟོང་

1. ལྟ་བུ་-སྟེ། 2. ལྟ་བུ་-མདོ་བསྐྱེད་པའི་ 3. ལྟ་བུ་-བཀའ་(མདོ་ལྟ་ ༤༩)

4. ལྟ་བུ་-དཔལ་ 5. ལྟ་བུ་-དཔལ་

རྩེ་ཆེན་པོ་ལོ། །བཅོམ་ལྷན་འདས་སྟོང་རྩེ་ཆེན་པོས་ནི། སངས་བྱུས་ཀྱི་ཆོས་  
 ཐམས་ཅད་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ནམས་ཀྱི་ལག་མཐིལ་དུ་མཆིས་པ་ལགས་སོ། །  
 བཅོམ་ལྷན་འདས་དཔའ་བགྱིས་ན་འཁོར་ལོས་བསྐྱར་བའི་བྱུང་པོ་འཁོར་ལོ་  
 རིན་པོ་ཆེ་གང་དུ་མཆིས་པ་དེར་དབྱང་གི་ཚོགས་ཐམས་ཅད་མཆིའོ། །བཅོམ་  
 ལྷན་འདས་དེ་བཞིན་དུ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་སྟོང་རྩེ་ཆེན་པོ་གང་དུ་མཆིས་པ་  
 དེར་སངས་བྱུས་ཀྱི་ཆོས་ཐམས་ཅད་མཆིའོ། །བཅོམ་ལྷན་འདས་དཔའ་བགྱིས་  
 ན་སྟོག་གི་དབང་པོ་མཆིས་ན་དབང་པོ་གཞན་ནམས་འབྱུང་བར་འགྱུར་རོ། །  
 བཅོམ་ལྷན་འདས་དེ་བཞིན་དུ་སྟོང་རྩེ་ཆེན་པོ་མཆིས་ན་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ཆོས་  
 གཞན་ནམས་ཀྱང་འབྱུང་བར་འགྱུར་རོ།” །ཞེས་འབྱུང་ངོ་།

འཕགས་པ་ལྷོ་གྲོས་མི་ཟད་པས་བསྟན་པ་ལས་ཀྱང་གསུངས་དེ།

“བཙན་པ་ཤར་དུ་འདྲི་བྱ་གཞན་ཡང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ནམས་ཀྱི་སྟོང་རྩེ་ཆེན་པོ་  
 ཡང་མི་<sup>2</sup>ཟད་དོ། དེ་ཅིའི་ཕྱིར་ཞེ་ན། སྟོན་དུ་འགྲོ་བའི་ཕྱིར་རོ། །བཙན་པ་  
 ཤར་དུ་འདྲི་བྱ། འདི་ལྟ་<sup>3</sup>སྟེ། དཔའ་ན་དབྱུགས་ཕྱི་ནང་དུ་བྱུ་བ་ནི་མིའི་སྟོག་  
 གི་དབང་པོ་སྟོན་དུ་འགྲོ་བ་ཡིན་ནོ། །དེ་བཞིན་དུ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་སྟོང་  
 རྩེ་ཆེན་པོ་ནི་ཐོག་པ་ཆེན་པོ་འི་(ཚོགས་<sup>4</sup>)ཡང་དག་པར་འགྱུབ་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་  
 སྟོན་དུ་འགྲོ་བ་ཡིན་ནོ།” །ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་རྒྱས་པར་བཤད་དོ། །

འཕགས་པ་གཡ་མགོ་འི་རིའི་མདོ་ལས་ཀྱང་གསུངས་དེ། “འཇམ་དཔལ་

1. ལྟེ་—བཀའ་(མདོ་མ་༡༩༩) 2. ལྟེ་—ནི་ཟད་དོ། ཅེས་གསལ་ཡང་ཆུ་དཔེ་དང་མདོ་ངོ་མ་  
 གཉིས་ཀར་སྟོང་རྩེ་ཆེན་པོ་ཡང་མི་ཟད་དོ། ཅེས་གསལ་བ་བཞིན་འཐད་པར་སྟངས་ངོ་།
3. ཅོ་—འདི་ལྟེ་(ཆད་—འདི་ལྟེ་ལྟེ་) 4. ལྟེ་དཔའ་—महायान सम्भार = ཐོག་པ་ཆེན་པོའི་ཚོགས་
5. ལྟེ་—བཀའ་(མདོ་ཅ་༢༤༥)



བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ནམས་ཀྱི་སྒྲོན་པའི་ཙོམ་པ་ནི་ཅི། གནས་ནི་གང་།  
 འཇམ་དཔལ་གྱིས་སྦྱས་པ། ལྷའི་བྱ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ནམས་ཀྱི་སྒྲོན་པའི་  
 ཙོམ་པ་ནི་སྤྱིང་ཇི་ཆེན་པོ་ལོ། །གནས་ནི་སེམས་ཅན་ནོ།” །ཞེས་དེ་ལ་སོགས་  
 བ་སྐྱེ་ཆེར་འབྱུང་ངོ་།

དེ་ལྟར་སྤྱིང་ཇི་ཆེན་པོས་བསྒྲོན་པས་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་<sup>2</sup>ནམས་བདག་  
 ཉིད་ལ་མི་ལྟ་བར་གཞན་ལ་ཤིན་དུ་ཕན་པ་དོན་དུ་གཉེར་བའི་ཕྱིར་ཚྲོགས་བསཏ་  
 བ་ཤིན་དུ་<sup>3</sup>བྱ་དཀའ་ཞིང་ཡུན་རིང་ལ་དུབ་བར་འགྱུར་བ་ལ་འཇུག་གོ། འདམགས་  
 བ་དད་པའི་སྒྲོབས་སྒྲོན་པ་ལས་<sup>4</sup>གསུངས་བ་ལྟ་བུ་སྟེ། “དེ་ལ་སྤྱིང་ཇི་ཆེན་པོ་  
 ཉི་གང་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཡོངས་སུ་སྦྱོན་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར་རྒྱལ་བཤལ་སྒྲོ་<sup>5</sup>  
 བ་མི་ལེན་པ་ཅི་ཡང་མེད་དོ།<sup>6</sup> །དེས་བདེ་བ་སྦྱེ་བ་མི་འདོར་བ་ཅི་ཡང་མེད་དོ།”  
 ཞེས་ཤིན་དུ་<sup>7</sup>བྱ་དཀའ་བ་ལ་བྱུགས་ནས་རིང་བོར་<sup>8</sup>ཐོག་གསུམ་པར་  
 ཚྲོགས་ཡོངས་སུ་རྒྱུགས་དེ་གཤོན་མི་ཟ་བར་ཐམས་ཅད་མཆིན་པའི་གོ་འཕང་ཐོབ་  
 བར་འགྱུར་ངོ། །དེ་བས་ན་སངས་བུས་ཀྱི་ཚོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་<sup>9</sup>ཙོམ་པ་ནི་སྤྱིང་ཇི་  
 ཆེན་པོ་ཁོ་ན་ལོ། །སྤྱིང་ཇི་ཆེན་པོས་ཡོངས་སུ་རྒྱུན་པས་ན་སངས་བུས་བཅོམ་  
 ལྷན་འདས་ཀྱིས་ཐམས་ཅད་མཆིན་པའི་ཡེ་ཤེས་<sup>10</sup>ཀྱི་གོ་འཕང་བརྟེན་ནས་འགྲོ་

1. ལྷ་དཔེར་ཅན་ཡི་ཅན་ = དེ་ལྟར་དེས་

2. ལྷ་མེ་—དཔལ་བདག་ 3. ལྷ་མེ་—དུ་དཀའ་(ཆད་དུ་ཐ་དཀའ་)

4. ལྷ་མེ་—བཀའ་(མདོ་ཚུ་ཀྱི་) 5. ལྷ་མེ་—བསྒྲོན་པ་ 6. ‘རྒྱལ་བཤལ་སྒྲོ་བ་མི་ལེན་པ་ཅི་’

ཡང་མེད་དོ། ཞེས་བ་སྐྱེ་དཔེར་མེད། 7. ལྷ་མེ་—དུ་དཀའ་(ཆད་དུ་ཐ་དཀའ་)

8. ལྷ་མེ་—མོ་ 9. ལྷ་ཙོ་—ཀྱི་ཚོས་ཀྱི་ཙོམ་པ་ 10. ‘ཡེ་ཤེས་ཀྱི་’—ལྷ་དཔེར་ཅན་

བ་མ་ལུས་བའི་དོན་མཛད་ཅིང་བཞུག་སོ། །མི་<sup>1</sup>གནས་བའི་བྱ་ངན་ལས་འདས་  
བ་<sup>2</sup>ལྷ་བྱ་ཡང་བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱི་བྱགས་ཇི་ཆེན་པོ་འི་རྒྱས་བྱ་ངན་ལས་འདས་  
བ་ལ་མི་གནས་སོ།

དེ་ཡང་སྤྱག་བསྐལ་བའི་སེམས་ཅན་ལ་དམེགས་ཤིང་ཡིད་ལ་<sup>3</sup>བྱ་བ་མང་དུ་  
བྱས་པས་སྤེ་བར་<sup>4</sup>འགྱུར་དེ། སེམས་ཅན་འཛིག་དེན་གསུམ་ན་སྤྱོད་བ་ཐམས་  
ཅད་སྤྱག་བསྐལ་ནམ་པ་གསུམ་གྱིས་ཇི་ལྷར་མཐུན་བ་བཞིན་དུ་(ཤིན་དུ་<sup>5</sup>)སྤྱག་  
བསྐལ་ལོ། ཞེས་དེ་ལྷར་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་བསྐྱོམ་མོ། དེ་ལ་སེམས་  
ཅན་དཔུལ་བ་<sup>6</sup>པ་དེ་དག་ནི་རྒྱན་མི་ཆད་ཅིང་ཡུན་རིང་ལ་ཆ་བ་ལ་སོགས་བའི་  
སྤྱག་བསྐལ་སྒྲ་ཚོགས་ཀྱི་ཆ་<sup>7</sup>བོར་བྱེད་ངོ་། ཞེས་བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་  
སྤྱུལ་དོ། དེ་བཞིན་དུ་ཡི་དྲགས་ནམས་ཀྱང་པལ་<sup>8</sup>ཆེར་ཤིན་དུ་མི་བཟད་པའི་  
བཀྲེས་<sup>9</sup>པ་དང་སྐྱོམ་པའི་སྤྱག་བསྐལ་གྱི་མེས་<sup>10</sup>སྐམས་པའི་ལུས་ཤིན་དུ་སྤྱག་  
བསྐལ་མང་པོ་བྱེད་པེ། ལོ་བརྒྱར་ཡང་ལ་ལས་མཆིལ་མའི་ཐལ་བ་དང་།  
མི་གཙང་བ་ཅམ་<sup>11</sup>ཡང་བཟར་མི་རྒྱེད་དོ། ཞེས་<sup>12</sup>བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱིས་  
བཀའ་སྤྱུལ་དོ། འདྲ་འགྲོ་ནམས་ཀྱང་གཅིག་ལ་གཅིག་ཟེ་<sup>13</sup>པ་<sup>14</sup>དང་། ཁྱོ་  
བ་དང་། རྣམ་པར་འཛོལ་དང་། གསོད་བ་ལ་སོགས་པས་སྤྱག་བསྐལ་མང་  
པོ་བྱེད་བ་ཁོ་ནར་སྤྱེད་པེ། འདི་ལྷར་ཁ་ཅིག་སྒྲ་འབྲུགས་བ་དང་། བདེག་

1. 'མི་གནས་བའི་བྱ་ངན་ལས་འདས་བ་བྱ་བྱ་ཡང་' ཞེས་བ་བྱ་དཔེར་མེད།

2. ལྷ་པོ་-བ་དེ་ལྷ་བྱ་ 3. ལྷ་པོ་-ལ་བྱས་པས་ 4. ལྷ་དཔེར་-ལྷ་ཐུགས་ལྷེ་ལྷེ་ལ།

5. ལྷ་དཔེར་-འཕྲུལ་ཐུ་ཁྱིམ་=ཤིན་དུ་སྤྱག་བསྐལ་ 6. ལྷ་པོ་-བ་དེ་དག་

7. 'ཆ་བོར་'-ལྷ་དཔེར་མེད། 8. 'མཐུན་པེ'-ལྷ་དཔེར་མེད། 9. ཚོ་-བཀྲེས་སྐྱོམ་

10. 'མེས་'-ལྷ་དཔེར་མེད། 11. 'ཅམ་'-ལྷ་དཔེར་མེད། 12. ལྷ་དཔེར་-ལྷ་ཐུགས་ལྷེ་ལྷེ་ལ།

13. 'ཟེ་བ་'-ལྷ་དཔེར་མེད། 14. ལྷ་པོ་-ཟེ་བ་ཁྱོ་བ་(ཆད་-ཟེ་བ་དང་ཁྱོ་བ་)



པ་དང་། བཅིང་བ་དང་། གདགས་<sup>1</sup>པ་ལ་སོགས་པ་བདག་<sup>2</sup>ལ་དབང་ཅིང་  
 བར་<sup>3</sup>ཀྱན་གྱིས་བདའ་བ་ཡིན་དེ། མི་འདོད་བཞིན་དུ་ཁལ་ཆེན་པོ་ལྷོ་བ་བསྐྱར་  
 བས་སྒྲི་ཞིང་<sup>4</sup>ལ་ཡོ། །དེ་བཞིན་དུ་དགོན་པ་ན་འཁོད་པ་ཡང་ཉེས་པ་  
 མེད་བར་ཁ་ཅིག་ཆེད་<sup>5</sup>དུ་ཆོལ་ཞིང་གསོད་དེ། དྲིལ་དུ་འཇིགས་པས་ཡིད་  
 འབྱུགས་དེ་པན་ཚུན་འཁོད་<sup>6</sup>ཅིང་འབྲེས་པ་ཡང་གྲངས་<sup>7</sup>མེད་པའི་སྐྱུག་བསྐྱེད་...  
 དཔག་དུ་མེད་པ་<sup>8</sup>ཕྱོང་བ་<sup>9</sup>ཁོ་ནར་སྤང་ངོ་། །དེ་བཞིན་དུ་མི་ལ་ཡང་སེམས་ཅན་  
 དབྱལ་བའི་སྐྱུག་བསྐྱེད་ལ་སོགས་པ་ཡོད་པ་ཁོ་ན་སྟེ། འདི་ན་ཀྱན་པོ་ལ་སོར་  
 བ་གང་དག་ཡན་ལག་ག་དུ་བ་བ་དང་། གསལ་ཤིང་ལ་བསྐྱོན་བ་དང་།  
 དབྱངས་དེ་<sup>10</sup>བདགས་པ་ལ་སོགས་པས་དྲོན་<sup>11</sup>མོངས་པ་དེ་དག་ནི་སེམས་ཅན་...  
 དབྱལ་བའི་སྐྱུག་བསྐྱེད་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ། །གང་དག་དབྱལ་ཞིང་མོངས་པ་<sup>12</sup>དེ་  
 དག་ནི་ཡི་དུགས་དང་འདྲ་བར་བཀེས་ཤིང་སྐྱེས་པ་ལ་སོགས་པས་རྒྱལ་བསྐྱེད་...  
 ཡོ། །བྲན་པ་སོགས་པ་གང་དག་གཞན་གྱིས་ལུས་ལ་དབང་བྱས་པ་དང་། གང་  
 དག་<sup>13</sup>མཐུས་མནན་དེ་གཞོད་པར་བྱེད་པ་དེ་དག་ནི་དུད་འགྲོ་དང་འདྲ་བར་བརྟེན་  
 བ་དང་། གདགས་པ་ལ་སོགས་པས་རྒྱལ་བསྐྱེད་ཡོ། །དེ་བཞིན་དུ་བཅའ་བར་  
 བྱ་བ་དང་། གཅིག་ལ་གཅིག་གཞོད་པ་<sup>14</sup>བྱེད་པ་ལ་སོགས་པ་དང་། རྒྱལ་བ་

1. 'གདགས་པ་'—ཁྱ་དཔེར་མེད་ 2. ཁྱ་དཔེར་—अतस्त्रिकृतशरीराः = ལུས་ལ་དབང་མེད་པར་བྱེད་པ།  
 3. ལྷོ་བེ་—མོད་པ་ 4. ཁྱ་དཔེར་—परिखिलवपुष = ལུས་ཡོངས་སྤང་ལ་ལོ་  
 5. ལྷོ་བེ་—ལྷོ་བེ་དུ་ཞེས་དང་། འདི་ནི་ཐད་ཀྱི་ཁེར་སྐྱར་ཁྱ་དཔེར་གསལ་ཁ་མེད། 6. ལྷོ་བེ་—ལུ་ཁོ་ར་ཅིང་  
 7. 'གྲངས་མེད་'—ཁྱ་དཔེར་མེད། 8. ལྷོ་བེ་—པ་ཁོ་ནར། 9. 'ཕྱོང་བ་'—ཁྱ་དཔེར་མེད།  
 10. ལྷོ་བེ་—སྤངས། 11. 'དྲོན་མོངས་'—ཁྱ་དཔེར་མེད། 12. ཁྱ་དཔེར་—द्वारिद्रयादि = དབྱལ་ཞིང་  
 མོངས་པ་སོགས། 13. ཅོ་—དག་ལ་ 14. ཁྱ་དཔེར་—द्वीहोपघात = གཞོད་པ་དང་བརྟེན་པ།

དང་བུ་པ་དང་། མི་རྒྱལ་པ་དང་པུ་པ་ལ་སོགས་པ་དེ་དག་ལ་རྒྱལ་བུ་ལ་  
 དབལ་དུ་མེད་དོ། །གང་དག་ཁ་ཅིག་རྒྱལ་ཅིང་སྤྱོད་པ་དང་འདྲ་བར་རྒྱང་<sup>2</sup>པ་དེ་  
 དག་ཀྱང་འགྱོར་བའི་མཐའ་ནི་གྲུ་པ་རྩེ། ལྷ་བ་འན་པ་རྩེ་ཆོགས་གཞིང་གཞིང་  
 བར་རྒྱལ་ཅིང་སོམས་ཅན་དབུ་པ་པ་ལ་སོར་བའི་རྒྱལ་བུ་ལ་སྤྱོད་བར་འགྱོར་བའི་  
 རྒྱལ་པས་དང་ཉོན་མོངས་པ་<sup>3</sup>བསཏ་བས་གད་ཀ་ན་འདུག་པའི་(ཤིང་<sup>4</sup>)དང་འདྲ་  
 བར་རྒྱལ་བུ་ལ་གྱི་རྒྱར་གྱར་པ་ཡང་ཡང་དག་བར་རྒྱལ་བུ་ལ་བཞིན་ཡོན་ནོ།

ལྷ་ལ་ཡང་གང་དག་འདོད་པའི་ཁམས་ན་སྤྱོད་པ་དེ་དག་ནི་འདོད་པའི་  
 མེས་ཡོད་རབ་དུ་འབར་ཞིང་སོམས་འཁྲུགས་པ་དང་འདྲ་བར་<sup>6</sup>ག་ཤའ་མར་མི་  
 འདུག་ལ། སྤྱོད་ཅིག་ཀྱང་སོམས་མ་རྩེ་པར་འཛོག་པར་མི་འགྱུར་དེ།  
 རབ་<sup>7</sup>དུ་ཞི་བ་བདེ་བའི་ནོར་གྱིས་དབུ་པ་པ་དེ་དག་ལ་བདེ་བ་ཅི་ཞིག་ཡོད། དྲག་  
 དུ་འཆི་འཕོ་བ་དང་རྒྱང་བ་ལ་སོགས་པའི་འཛོགས་པའི་སྤྱོད་པ་གྱིས་ནོན་པ་དག་  
 རྩེ། དེ་དག་ཇི་ལྟར་བདེ། གང་དག་གཞུགས་དང་གཞུགས་མེད་པ་ན་སྤྱོད་  
 པ་དེ་དག་ཀྱང་<sup>9</sup>སྤྱོད་ཅིག་རྒྱལ་བུ་ལ་གྱིས་རྒྱལ་བུ་ལ་པས་འདས་མེད་ཀྱེ།  
 འོན་ཀྱང་དེ་དག་འདོད་པ་ན་སྤྱོད་པའི་བག་ལ་ཉལ་ནམས་ཤིན་དུ་མ་སྤངས་པས་  
 ཡང་སོམས་ཅན་དབུ་པ་པ་ལ་སོགས་པར་རྒྱང་བ་ཡོད་པས་<sup>10</sup>འགྱོར་བའི་རྒྱལ་  
 བུ་ལ་ཡོད་པ་ཉིད་དོ། །ལྷ་དང་མི་འདི་དག་མཐས་ཅན་ནི་ལས་དང་ཉོན་མོངས་

1. 'སོགས་པ་'-རྒྱ་མིར་མེད། 2. རྒྱ་དཔེར་-ཐུ་ལ་ཡོད་པའི་ལྷ་པོ་ལ་མེད་པ།

3. རྒྱ་དཔེར་-འཛིན་པ་ = རྒྱ་ཆོགས་ 4. རྒྱ་དཔེར་-འཛིན་པ་ལ་ཐུ་ལ་ཡོད་པའི་  
 ཤིང་དང་འདྲ་བར། 5. 'ཡང་'-རྒྱ་དཔེར་མེད། 6. རྒྱ་དཔེར་-འཛིན་པ་ལ་ཐུ་ལ་ཡོད་པའི་  
 ཤིང་དང་འདྲ་བར། 7. རྒྱ་པོ་-རབ་ཞི (ཆད་རབ་དུ་ཞི་བ། 8. རྒྱ་པོ་-དག་གཞུགས་མེད་པ་(ཆད་-གཞུགས་དང་གཞུགས་མེད་པ།)

9. རྒྱ་པོ་-ཀྱང་རྒྱལ་བུ་ལ་པས་(ཆད་-ཀྱང་སྤྱོད་ཅིག་རྒྱལ་བུ་ལ་པས་) 10. རྒྱ་པོ་-ལས་



པ་ལ་སོགས་པའི་རྒྱུས་<sup>1</sup>གཞན་གྱི་དབང་དུ་གྱུར་པས་ན་འདྲ་བྱེད་གྱི་རྒྱུ་ག་བསྐྱེད་ཀྱིས་རྒྱུ་ག་བསྐྱེད་པ་ཉིད་དོ།

དེ་ལྟར་འགྲོ་བ་ཐམས་ཅད་རྒྱུ་ག་བསྐྱེད་གྱི་མེ་ལྷེད་ཤེང་བའི་ས་<sup>2</sup>ཡིན་པར་བརྟུམ་ལ། རི་ལྟར་བདག་ཉིད་གྱི་རྒྱུ་ག་བསྐྱེད་མི་རྒྱུ་ག་པ་ལྟར་གཞན་དག་གི་ཡང་<sup>3</sup>དེ་དང་འདྲ་བ་སེམས་ཤིང་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་སྒྲིང་བཅི་བ་ཁོ་ན་.....བསྒྲུབ་པར་བྱ་སྟེ། ཐོག་མ་ཁོ་ནར་མཛའ་བཤེས་གྱི་ཕྱོགས་ལ་གོང་དུ་སྒྲུབ་པའི་རྒྱུ་ག་བསྐྱེད་སྒྲ་ཚོགས་གྱོང་བར་ལྟ་ཞིང་བསྒྲུབ་པར་བྱའོ།

དེ་ནས་སེམས་མཉམ་པས་བྱེ་བྲག་མེད་པར་ལྟ་སྟེ། ཐོག་མ་མེད་<sup>4</sup>པ་ཅན་གྱི་འཁོར་བ་<sup>5</sup>ན་ལན་བརྒྱར་ཡང་བདག་གི་གཉེན་དུ་མ་གྱུར་པའི་སེམས་ཅན་གང་ཡང་མེད་དོ་སྟུང་དུ་སེམས་<sup>6</sup>པས་པལ་པ་ལ་བསྒྲུབ་པར་བྱའོ། །གང་གི་ཆོ་མཛའ་བཤེས་གྱི་ཕྱོགས་དང་འདྲ་བར་པལ་<sup>7</sup>པ་ནམས་ལ་ཡང་<sup>8</sup>སྒྲིང་རྒྱུ་.....མཚུངས་པར་འཇུག་པ་དེའི་ཆོ་དགའི་ཕྱོགས་ལ་ཡང་དེ་བཞིན་དུ་སེམས་མཉམ་.....པ་ཉིད་ལ་སོགས་པ་ཡིད་ལ་བྱེད་པས་བསྒྲུབ་པར་བྱའོ། །གང་གི་ཆོ་མཛའ་བཤེས་གྱི་ཕྱོགས་དང་འདྲ་བར་དགའ་ལ་ཡང་མཉམ་པར་འཇུག་པ་དེའི་<sup>9</sup>ཆོ་རིམ་.....གྱིས་ཕྱོགས་བཅུའི་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་ཡང་<sup>10</sup>བསྒྲུབ་པར་བྱའོ། །

གང་གི་ཆོ་ཡིད་དུ་འོང་བའི་བྱ་མི་བདེ་བ་བཞིན་དུ་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་ཡང་.....རྒྱུ་ག་བསྐྱེད་གཞན་ནས་<sup>11</sup>དབྱུང་བར་འདོད་པའི་ནམ་པའི་སྒྲིང་རྒྱུ་རང་གི་ངང་གིས་

1. 'རྒྱུས'—རྒྱ་དཔེར་མེད། 2. རྒྱ་དཔེར་—अग्निज्वालीकृतम् = མེ་ལྷེད་འབར་པ་ཡིན་པར།

3. རྒྱ་དཔེར་—अन्येषामप्रियामिति = གཞན་དག་ལ་མེ་རྒྱུ་ག་པའོ་ཞེས། 4. རྒྱ་མི་—མེད་ཅན་

(ཆད་—མེད་པ་ཅན་གྱི་) 5. རྒྱ་མི་ཚོ་—འཁོར་བ་ལན་(ཆད་—འཁོར་བ་ན་ལན་) 6. རྒྱ་དཔེར་—

परिचिन्तयता = ཡོངས་སྒྲ་སེམས་པས། 7. རྒྱ་མི་—འབེལ་ 8. 'ཡང་'—རྒྱ་དཔེར་མེད། 9. རྒྱ་མི་—

དེའི་རིམ་(ཆད་—དེའི་ཆོ་རིམ་གྱིས་) 10. 'ཡང་'—རྒྱ་དཔེར་མེད། 11. 'གཉན་ནས་'—རྒྱ་དཔེར་མེད།

འཇུག་པ་བདག་ཉིད་<sup>1</sup> གྲིས་མཚུངས་པར་<sup>2</sup> འཇུག་པར་གྱུར་པ་དེའི་ཆོ་དེ་ཚོགས་...  
 པ་ཡིན་པས་སྤྱིང་ཆེ་ཆེན་པོ་འི་མིང་ཐོབ་སྟེ། འཕགས་པ་སྒོ་གོས་མི་ཟད་<sup>3</sup>  
 བས་བསྟན་པའི་མདོ་ལས་བསྡུགས་པ་བཞིན་ནོ། །འདི་ལྟར་སྤྱིང་ཆེ་བསྒོམ་པའི་  
 གོ་རིམ་<sup>4</sup> འདི་ནི་བཅོམ་ལྷན་འདས་གྲིས་ཆོས་མངོན་པའི་མདོ་ལ་སོགས་པ་ལས་  
 བཀའ་སྩལ་དོ།

དེ་ལྟར་སྤྱིང་ཆེ་གོམས་པའི་སྟོབས་གྲིས་སེམས་ཅན་མ་ལུས་པ་བྱང་བར་  
 དམ་བཅས་ན་ལྷན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་ཚོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་དུ་སྒྲོན་པའི་རང་...  
 བཞིན་གྲིས་བྱང་ཆུབ་གྱི་སེམས་སྒྲིམ་མི་དགོས་པ་ཁོ་ནར་སྒྲེ་སྟེ། འཕགས་པ་<sup>5</sup> བ་  
 ཆོས་བཅུ་པའི་མདོ་ལས།<sup>6</sup> “སེམས་ཅན་མགོན་མེད་པ། སྟོབས་མེད་པ།  
 སྤྱིང་མེད་པ་དག་མཐོང་ནས་ (སྤྱིང་ཆེ་ཆེན་སེམས་ཉི་ཤེས་བཞུག་ནས་<sup>7</sup>) ལྷན་མེད་པ་  
 ཡང་དག་པར་ཚོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་དུ་སེམས་བསྐྱེད་དོ།” ཞེས་གསུངས་པ་  
 བཞིན་ནོ། །ཀུན་གྲིས་ཡང་དག་པར་འཛིན་དུ་བཅུག་པ་ལས་ཀྱང་བྱང་ཆུབ་  
 སེམས་དཔལ་<sup>8</sup> ཡ་བྱང་ཆུབ་གྱི་སེམས་བསྐྱེད་མོད་གྱི། འོན་ཀྱང་སྤྱིང་ཆེ་ཆེན་པོས་  
 བོན་དེ། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔལ་བདག་ཉིད་གྲིས་བྱང་ཆུབ་དུ་སེམས་བསྐྱེད་པ་...  
 བྱང་ཆེ་བར་བཅོམ་ལྷན་འདས་གྲིས་འཕགས་པ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་ཡེ་ཤེས་...  
 གྱི་ཕུག་གྱུར་དྲིང་ཅེ་འཛིན་ལས་བཀའ་སྩལ་དོ།

1. ‘བདག་ཉིད་’-ལྟ་དཔེར་མེད། 2. ལྟ་-བར་གྱུར་ 3. ལྟ་-བཟད་

4. ལྟ་-རིམ་ 5. ‘འཕགས་པ་’-ལྟ་དཔེར་མེད། 6. ལྟ་-བཀའ་(དཔེན་བརྟེན་མ་ཁ’-༡༩༤)

7. ལྟ་དཔེར་-ཀུན་གྲིས་འཛིན་པའི་བྱང་ཆུབ་སེམས་ཉི་ཤེས་བཞུག་ནས་

8. ལྟ་དཔེར་-ཡེ་ཤེས་པའི་དཔལ་ལྡན་པའི་སེམས་

9. ལྟ་དཔེར་-ཐོག་མཐུག་པའི་མཚུངས་པའི་སེམས་ཉི་ཤེས་བཞུག་ནས་



བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་<sup>1</sup>དེ་སྐྱབ་བ་དང་མི་ལྷན་ཡང་འཁོར་བའི་ནང་ན་འབྲས་  
བྱ་ཆེ་བར་བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱིས་དེ་སྐད་བྱམས་པའི་རྣམ་པར་ཐར་བ་ལས་<sup>2</sup>  
བཀའ་སྩལ་དེ། “རིགས་ཀྱི་བྱ་འདི་ལྟ་སྟེ། དཔེར་ན་རྩོམ་པོ་ཆེ་<sup>3</sup>ཆག་ཀྱང་  
གསེར་གྱི་རྒྱན་ཁྲད་པར་དྲུ་འཕགས་པ་ཐམས་ཅད་ཟིལ་གྱིས་གཞོན་དོ། །རྩོམ་  
པོ་ཆེ་འི་མིང་ཡང་མི་འདོར་ཞིང་དབྱལ་བ་ཐམས་ཅད་ཀྱང་བཞྱོག་གོ། །རིཌ་  
ཀྱི་བྱ་དེ་བཞིན་དྲུ་ཐམས་ཅད་མཁུན་པ་ཉིད་དྲུ་སེམས་བསྐྱེད་པའི་རྩོམ་པོ་ཆེ་  
སྐྱབ་བ་དང་མི་ལྷན་པ་ཡང་ཉན་ཐོས་དང་རང་སངས་རྒྱས་ཀྱི་(ཡོན་ཏན་<sup>4</sup>) གསེར་  
གྱི་རྒྱན་ཐམས་ཅད་ཟིལ་གྱིས་གཞོན་དོ། །བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་མིང་ཡང་མི་  
འདོར་ཞིང་འཁོར་བའི་དབྱལ་བ་ཡང་ཞྱོག་པར་བྱེད་དོ།” ཞེས་འབྱུང་ངོ།

གང་<sup>5</sup>པ་རྩོམ་དྲུ་བྱིན་པ་རྣམས་ལ་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་<sup>6</sup>ཀྱི་<sup>7</sup>ཐམས་ཅད་དྲུ་  
སྐྱབ་མི་ལྷན་པ་དེས་ཀྱང་འབྲས་བྱ་ཆེ་བའི་ཕྱིར་ཐབས་ཀྱིས་ཡོངས་སུ་ཟིན་པར་  
བྱང་ཆུབ་དྲུ་སེམས་བསྐྱེད་པར་བྱ་སྟེ།<sup>8</sup> འཕགས་པ་རྒྱལ་པོ་ལ་གདམས་པའི་མདོ་  
ལས།<sup>9</sup> “འདི་ལྟར་རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ་ཁྱོད་ནི་བྱ་བ་མང་བྱེད་པ་མང་སྟེ། ཐམས་  
ཅད་ཀྱི་<sup>10</sup>ཐམས་ཅད་<sup>11</sup>རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐམས་ཅད་དྲུ་སྐྱབ་པའི་པ་རྩོམ་དྲུ་

1. ལྟ་པོ་—སེམས་སྐྱབ་ 2. ལྟ་—བཀའ་(ཐམ་ཆེན་པོ་—ཐུང་པོ་བཀའ་དེ་པའི་མདོ་—ཐུང་ er)
3. ལྟ་པོ་—ཆེན་ 4. རྒྱ་དཔེར་—འཕྲལ་ལྷན་འདས་ཀྱི་ཡོན་ཏན་གསེར་གྱི་
5. ལྟ་པོ་—གང་ལ་ 6. ལྟ་པོ་—ཅད་དྲུ་ 7. རྒྱ་དཔེར་—སྐྱོན་སྐྱོན་སྐྱོན་སྐྱོན་= ཐམས་ཅད་ཀྱིས་
- ཐམས་ཅད་དྲུ་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་) 8. ལྟ་པོ་—ལྟ་ལྟ་ལྟ་(ཆུང་—ཐུང་) འཕགས་པ་རྒྱལ་པོ་ལ་
- གདམས་པའི་མདོ་ལས། འདི་ལྟར་) 9. བྱང་ཆུབ་ཀྱི་འདི་ལྟར་འདི་ལྟར་མཚན་ཅན་གྱི་མདོ་གཟུགས་གང་
- དྲུ་ཡང་མ་རྟོག་པར་འབྱེད་པར་བྱུང་། 10. རྒྱ་དཔེར་ལྟར་ན་—སྐྱོན་= ཐམས་ཅད་ཀྱིས་ཞེས་
- དགོས་པར་རྟོག་ཞིང་། འདི་ལྟར་ཅད་ཅེས་པའི་ཆོག་གཟུགས་ལས་མེད་དོ།
11. ལྟ་པོ་—ཅད་དྲུ་སྐྱབ་པའི་(ཆུང་—ཅད་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐམས་ཅད་དྲུ་སྐྱབ་པའི་)

ཕྱིན་པ་ལ་བསྐྱབ་པ་ནས། ཤེས་རབ་ཀྱི་པ་རྒྱལ་དུ་ཕྱིན་པའི་བར་ལ་སྒྲོབ་མི་བཟོད་  
 ན་འདི་ལྟར་རྒྱལ་བོ་ཆེན་པོ་<sup>1</sup> རྒྱལ་པའི་བྱང་ཆུབ་ལ་འདུན་པ་དང་། དད་བ་  
 དང་། དོན་དུ་གཉིས་པ་དང་། སྒྲོན་པ་འདི་འགྲོ་ཡང་ཅང་། འགྲོང་ཡང་  
 ཅང་། འདུག་ཀྱང་ཅང་། ཉལ་ཡང་ཅང་། སད་ཀྱང་ཅང་། ཟ་ཡང་ཅང་།  
 འཐུང་ཡང་ཅང་། ཉལ་དུ་རྒྱན་མི་ཆད་པར་དྲན་པར་གྱིས་ཤིག །ཡིད་ལ་  
 གྱིས་ཤིག །སྒྲོམས་ཤིག །སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་དང་།  
 (འཕགས་པ་<sup>2</sup>) ཉན་ཐོས་དང་རང་སངས་རྒྱས་དང་། སོ་སོ་<sup>3</sup> ཐོ་བོ་ཐམས་ཅད་  
 དང་། བདག་གི་<sup>4</sup> འདས་པ་དང་། མ་འོངས་པ་དང་། ད་ལྟར་བྱང་བའི་དགོ་  
 བའི་ཅ་བ་ཐམས་ཅད་བསྐྱས་དེ། རྗེས་སུ་ཡི་རང་བའི་མཆོག་གིས་རྗེས་སུ་ཡི་  
 རང་བར་གྱིས་ཤིག །རྗེས་སུ་ཡི་རང་ནས་ཀྱང་སངས་རྒྱས་དང་། བྱང་ཆུབ་  
 སེམས་དཔའ་དང་། རང་སངས་རྒྱས་དང་། (འཕགས་པ་<sup>5</sup>) ཉན་ཐོས་རྣམས་<sup>6</sup>  
 ལ་མཆོད་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་དབུལ་ལོ། །སྤུལ་ནས་ཀྱང་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་  
 དང་ཐུན་མོང་དུ་གྱིས་ཤིག །དེ་ནས་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་  
 ཉིད་ཀྱི་བར་དུ་ཐོབ་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་དང་། སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཆོས་ཐམས་ཅད་  
 ཡོངས་སུ་རྒྱལ་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ཉིན་གཅིག་བཞིན་དུ་དུས་གསུམ་དུ་སྒྲུབ་ན་མེད་  
 པ་ཡང་དག་པར་རྒྱལ་པའི་བྱང་ཆུབ་དུ་ཡོངས་སུ་སྒྲུབ་<sup>7</sup> ཤིག །རྒྱལ་བོ་ཆེན་  
 པོ་ཁྱེད་དེ་ལྟར་ཞུགས་ལ་རྒྱལ་བོ་གྱིས་ཤིག །རྒྱལ་བོ་འདི་སྤྱིད་ཀྱང་མི་ཉམས་སོ།།

1. ལྷ་དཔེར་—ལྷ་= महा राज = ལྷ་པོ་ཆེན་པོ་ཁྱེད་

2. ལྷ་དཔེར་—आर्यश्रावक = འཕགས་པ་ཉན་ཐོས་ 3. ཐོ་ཅོ་—སོ་སོ་ཉི་ཐོ 4. ཐུ་ཐོ་—གོས་

5. ལྷ་དཔེར་—आर्यश्रावकाणां = འཕགས་པ་ཉན་ཐོས་རྣམས་ལ་ 6. ཐུ་ཐོ་—རྣམས་མཆོད་

7. ཐོ་ཅོ་—བསྐྱོབ་ཤིག་



བྱང་<sup>1</sup>ཆུབ་ཀྱི་ཚྭ་གས་ཀྱང་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པར་འགྱུར་རོ།” །ཞེས་དེ་ལ་སོཌ་  
 བ་རྒྱས་<sup>2</sup>པར་བཤད་ནས། ཡང་བཀའ་སྤྱུལ་བ། “རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ་ཁྱེད་  
 ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་ཀྱི་དགོ་བའི་ཙ་བ་དེའི་ནམ་པར་……  
 སྒྲིན་བས་ལན་དུ་མར་རྩ་དང་མེར་སྒྲེ་<sup>3</sup>པར་གྱུར་དོ། རྩ་དང་མེར་སྒྲེས་བ་ཐམས་  
 ཅད་ན་ཡང་དབང་བོར་གྱུར་ད།” །ཞེས་རྒྱས་པར་བཀའ་སྤྱུལ་བ་བཞིན་ནོ།

སྐུ་པ་སྤྱིང་བོར་བྱེད་པའི་བྱང་ཆུབ་<sup>4</sup>ཀྱི་སེམས་ཀྱི་འབྲས་བུ་གང་ཡིན་པ་དེ་  
 ཤིན་དུ་རྒྱ་ཆེ་བར་གྱུ་བ་སྟེ། འཕགས་པ་དབས་སྒྲིན་གྱིས་བྱས་པ་ལས།<sup>5</sup>

བྱང་ཆུབ་སེམས་ཀྱི་བསོད་ནམས་གང་།

དེ་ལ་གལ་དེ་གཟུགས་སེམས་ན།

ནམ་མཁའི་ཁམས་ནི་ཀུན་གང་སྟེ།

དེ་ནི་དེ་བས་ལྷག་པར་འགྱུར་།

(<sup>6</sup>གཞུང་གི་བྱེད་པའི་གངས་སྟེང་གྱི།

སངས་རྒྱས་ཞིང་ནམས་མི་གང་གིས།

དེ་ནི་ཆེན་དག་གིས་རབ་བཀའ་སྟེ།

འཇིག་རྟེན་སྐྱོན་ལ་སྤུལ་བ་བས།

གང་གིས་ཐལ་མོ་སྤར་བགྱིས་དེ།

བྱང་ཆུབ་དུ་ནི་སེམས་བདུད་ན།

1. “བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཚྭ་གས་ཀྱང་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པར་འགྱུར་རོ།”ཞེས་པ་རྒྱ་དཔེར་མེད།

2. ‘རྒྱས་པར’—རྒྱ་དཔེར་མེད་ 3. སྒྲེ་ཙོ་སྒྲེས་པར་ 4. རྩ་པོ་—ཆུབ་སེམས་ 5. སྒྲེ་—བཀའ་

(དཀོན་མཆོག་ལ་‘མ་མཁའ་’ 202) 6. ཚྭ་གས་པཅད་བྱི་མ་གཉིས་པོར་དཔེ་རྣམས་སུ་མི་གསལ་ཡང་རྒྱ་  
 དཔེར་ཡོད་པ་བཞིན་བཀོད་དོ།

མཚོད་པ་འདི་ནི་ཁྱུང་པར་འཕགས།

དེ་ལ་མཐའ་ནི་མ་མཆིས་སོ།)      ཞེས་གསུངས་པ་ལྟ་བུའོ།

མྱོང་པོ་བཞེད་པ་ལས་<sup>1</sup>ཁྱང་བསྐྱལ་མ་དེ། “རིགས་ཀྱི་བྱ་བུར་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་ནི་  
སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ས་བོན་རྩ་བུའོ།” ཞེས་རྒྱས་པར་བཤད་དོ།

བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་དེ་ཡང་རྣམ་པ་གཉིས་དེ།      སྒྲོན་པའི་སེམས་དང་།

ཞུགས་པའི་སེམས་དེ། འཕགས་པ་ལྷོང་བོ་བཞེད་པའི་མདོ་ལས་<sup>2</sup>གསུངས་པ།

“རིགས་ཀྱི་ཕྱ་སེམས་ཅན་གྱི་འཛིན་རྟོག་ན་གང་དག་སྒྲུ་ན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་...

ཆོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཏུ་སེམས་གིས་སྒྲུབ་པའི་སེམས་ཅན་དེ་<sup>3</sup>དང་དེ་དག་གི་ཆེད་

བར་དགའ། །སྐྱེས་ཅན་གང་དག་གི་ཉེས་པ་ཡང་དག་བར་ཐོགས་པའི་

[illegible][illegible][illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

$\frac{1}{2}, \frac{1}{3}, \frac{1}{4}, \frac{1}{5}, \frac{1}{6}, \frac{1}{7}, \frac{1}{8}, \frac{1}{9}, \frac{1}{10}, \frac{1}{11}, \frac{1}{12}, \frac{1}{13}, \frac{1}{14}, \frac{1}{15}, \frac{1}{16}, \frac{1}{17}, \frac{1}{18}, \frac{1}{19}, \frac{1}{20}, \frac{1}{21}, \frac{1}{22}, \frac{1}{23}, \frac{1}{24}, \frac{1}{25}, \frac{1}{26}, \frac{1}{27}, \frac{1}{28}, \frac{1}{29}, \frac{1}{30}, \frac{1}{31}, \frac{1}{32}, \frac{1}{33}, \frac{1}{34}, \frac{1}{35}, \frac{1}{36}, \frac{1}{37}, \frac{1}{38}, \frac{1}{39}, \frac{1}{40}, \frac{1}{41}, \frac{1}{42}, \frac{1}{43}, \frac{1}{44}, \frac{1}{45}, \frac{1}{46}, \frac{1}{47}, \frac{1}{48}, \frac{1}{49}, \frac{1}{50}, \frac{1}{51}, \frac{1}{52}, \frac{1}{53}, \frac{1}{54}, \frac{1}{55}, \frac{1}{56}, \frac{1}{57}, \frac{1}{58}, \frac{1}{59}, \frac{1}{60}, \frac{1}{61}, \frac{1}{62}, \frac{1}{63}, \frac{1}{64}, \frac{1}{65}, \frac{1}{66}, \frac{1}{67}, \frac{1}{68}, \frac{1}{69}, \frac{1}{70}, \frac{1}{71}, \frac{1}{72}, \frac{1}{73}, \frac{1}{74}, \frac{1}{75}, \frac{1}{76}, \frac{1}{77}, \frac{1}{78}, \frac{1}{79}, \frac{1}{80}, \frac{1}{81}, \frac{1}{82}, \frac{1}{83}, \frac{1}{84}, \frac{1}{85}, \frac{1}{86}, \frac{1}{87}, \frac{1}{88}, \frac{1}{89}, \frac{1}{90}, \frac{1}{91}, \frac{1}{92}, \frac{1}{93}, \frac{1}{94}, \frac{1}{95}, \frac{1}{96}, \frac{1}{97}, \frac{1}{98}, \frac{1}{99}, \frac{1}{100}$

$\sim$

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

1. 'सु-सगल' (सगल कल - 'स' ३००)

2. ལྷོ་—ཐགཞུ་(ཐལ་ཆེན་—ང་༣༠༤)    3. ལྷོ་མེ་—དེ་དག་    4. ལྷོ་མེ་—ཐའི་ན་

5. शुभमेव-दृश्यन्ते = अर्धेन 6. शुभमेव-संवरस्थितात् कल्याणमित्रात् = शुभमेव  
 मङ्गलमेव 7. शुभमेव-अर्धेन

8. कु० ५ मे०—असति प्रतिरूपे ग्राहके = अमुक मरि' (५०) म' मे' (५०) 'अम' (५०) 'अमुक' म' मे' (५०) 'अम' (५०)





འཛིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་བསམ་གཏན་ལ་སོགས་པ་ལྟ་ཅི་སྟོས་དེ། དེ་ལྟ་མ་  
 ཡིན་ན་སེམས་ཅན་གྱི་དོན་གྱི་ནམ་པ་ཐོས་ཅད་ཇི་ལྟར་བྱ། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་  
 སྐྱབ་པ་དེ་ཡང་མདོར་ན་ཐབས་དང་ཤེས་རབ་ཀྱི་ངོ་བོ་ཡིན་དེ། ཤེས་རབ་  
 འབའ་ཞིག་ཀྱང་མ་ཡིན་དེ། ཐབས་འབའ་ཞིག་ཀྱང་མ་ཡིན་ནོ། དེ་ཡང་  
 འཕགས་པ་རྩི་མ་མེད་པར་གྲགས་པས་བསྟན་པ་<sup>1</sup>ལས་ཀྱང་། “ཤེས་རབ་དང་  
 བྱལ་བའི་ཐབས་དང་། ཐབས་དང་བྱལ་བའི་ཤེས་རབ་ནི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་  
 འཛིང་བའོ།” ཞེས་གསུངས་སོ། “ཐབས་དང་བཅས་པའི་ཤེས་རབ་དང་།  
 ཤེས་རབ་དང་བཅས་པའི་ཐབས་ནི་ཐར་བའོ།” ཞེས་བསྟགས་སོ། འཕཌ་  
 པ་ག་ཡ་མགོ་འི་རི་<sup>2</sup>ལས་ཀྱང་གསུངས་དེ། “བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ནམས་  
 ཀྱི་ལམ་ནི་མདོར་བསྟན་ན་འདི་གཉིས་དེ། བྱང་ཆུབ་སེམས་<sup>3</sup>དཔའ་དག་ལ་ལམ་  
 འདི་གཉིས་དང་ལྷན་ན་སྐྱར་དུ་སྐྱ་ན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་དུ་  
 མངོན་པར་རྫོགས་པར་འཛང་བའོ། གཉིས་གང་ཞེ་ན། འདི་ལྟ་སྟེ། ཐབས་  
 དང་ཤེས་རབ་བོ།” ཞེའོ།

དེ་ལ<sup>4</sup>ཤེས་རབ་ཀྱི་པ་རྩལ་དུ་བྱིན་པ་མ་གཏོགས་པར་སྦྱོན་པ་ལ་སོགས་  
 པའི་པ་རྩལ་དུ་བྱིན་པ་དང་། བསྐྱ་བའི་དངོས་བོ་ལ་སོགས་པ་<sup>5</sup>དང་། ཞིང་  
 ཡོངས་སུ་དག་པ་དང་། ཡོངས་སྦྱོད་ཆེན་པོ་དང་། གཡོག་འཁོར་མང་<sup>6</sup>  
 པོ་སྦྱོར་སྦྱོར་ཚོགས་པ་ལ་སོགས་པ་དང་།<sup>7</sup> སེམས་ཅན་ཡོངས་སུ་སྦྱོན་པར་  
 བྱེད་པ་དང་། སྐྱལ་པ་ལ་སོགས་པ་མངོན་པར་མཐོ་བའི་ཆོས་སྐྱེད་པར་བྱེད་

1. ལྟེ་—བཀའ་(མདོ་—མ་ 207) 2. ལྟེ་—བཀའ་(མདོ་—མ་ 244) 3. ལྟེ་དཔའ་—

གཏིགས་སྐྱེད་པར་བྱེད་པ་དང་། བསྐྱ་བའི་དངོས་བོ་ལ་སོགས་པ་<sup>5</sup>དང་། ཞིང་

4. ལྟེ་པེ་—དེ་ལས་ 5. ལྟེ་པེ་—བ་ཞིང་(ཆད་—བ་དང་། ཞིང་) 6. མང་བོ་—ལྟེ་དཔའ་མེད་ 7. ལྟེ་ཙོ་—པ་དག་



པའི་དགེ་བ་ཐམས་ཅད་ནི་ཐབས་ཞེས་བྱའོ། །ཤེས་རབ་ནི་ཐབས་དེའི་ངོ་བོ་  
 ཉིད་ཕྱིན་ཅི་མ་ཡོག་པར་དྲིལ་བའི་རྒྱ་ཡིན་དེ། དེས་ཡང་དག་པར་ཐབས་ཀྱི་  
 བྱ་བྱེད་ཕྱིན་ཅི་ཡོག་མེད་པས་བདག་དང་གཞན་གྱི་དོན་ཇི་ལྟ་བུ་བཞེན་དུ་  
 བསྐྱབས་པས་སྒྲགས་ཀྱིས་བདབ་པའི་དུག་ཟ་བ་དང་འདྲ་ཟེ། ཀྱན་ནས་ཉིན་  
 མངས་པར་མི་འགྱུར་རོ། །དེ་སྐད་དུ་མདོ་སྡེ་དེ་ཉིད་ལས་<sup>1</sup>བཀའ་སྤྱུལ་དེ།  
 “ཐབས་ནི་བསྐྱབ་ཤེས་པའོ། །ཤེས་རབ་ནི་ཡོངས་སུ་གཅོད་པ་<sup>2</sup>ཤེས་པའོ།”  
 ཞེས་པའོ། །འཕགས་པ་དང་པའི་སྟོབས་བསྐྱེད་པ་ལས་<sup>3</sup>ཀྱང་གསུངས་དེ།  
 “ཐབས་ལ་མཁས་པ་(གང་ཞེ་ན།<sup>4</sup>) ཆོས་ཐམས་ཅད་ཡང་དག་པར་སྤྱད་པ་གང་  
 ཡིན་པའོ། །ཤེས་རབ་གང་ཞེ་ན། གང་ཆོས་ཐམས་ཅད་མ་འདྲེས་པ་ལ་མཁས་  
 པའོ།” (ཞེས་སོ།<sup>5</sup>) ཐབས་དང་ཤེས་རབ་འདི་གཉིས་ནི་སར་ཆུད་པ་ནམས་ཀྱིས་  
 ཀྱང་དུས་ཐམས་ཅད་<sup>6</sup>དུ་བསྟེན་པར་བྱ་ཟེ། ཤེས་རབ་འབའ་ཞིག་(དང་ཐབས་  
 འབའ་ཞིག་<sup>7</sup>) ནི་མ་ཡིན་ནོ། །འདི་ལྟར་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ས་བཅུ་པོ་ཐམས་  
 ཅད་ལ་ཡང་པ་རོལ་དུ་ཕྱིན་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱན་དུ་སྦྱོད་དེ། ས་བཅུ་པའི་མདོ་ལ་  
 སོགས་<sup>8</sup>པ་ལས་<sup>9</sup>ཀྱང་“སྒྲགས་མ་ནམས་ཀྱང་ཀྱན་དུ་མི་སྦྱོད་པ་མ་ཡིན་ནོ།”  
 ཞེས་འབྱུང་ངོ་།

1. ཟླ་—བཀའ (མདོ་‘ཅ’ 240) 2. ཟླ་མ་རིམ་པོ་དཔེར་ཡོངས་སུ་སྦྱོད་ཅེས་ཡོད་ཀྱང་མདོ་ཉིད་  
 དུ་ཡོངས་སུ་གཅོད་ཅེས་གསལ་བ་རྒྱ་དཔེ་དང་མཐུན་པས་དེ་ལྟར་བཀོད་དོ།
3. ཟླ་—བཀའ (མདོ་‘ཆ’ 24) 4. རྒྱ་དཔེར་—उपायकीशालं कतमम्? = ཐབས་ལ་མཁས་པ་གང་ཞེ་ན།
5. རྒྱ་དཔེར་—इति = ‘ཞེས་སོ།’ ཡང་ན་‘ཞེས་ཞེས་ཡོད་པས་བྱང་འདྲིན་རྒྱ་གས་མཚམས་སུ་ཆོག་’  
 འདི་ནི་གས་ངེས་པར་དུ་དགོས་པར་སྤང་ངོ་། 6. ཟླ་མེ་—ཅད་བསྟེན་(ཅད་—ཅད་‘དུ་’བསྟེན་) 7. རྒྱ་དཔེར་—  
 འུ་ཁྱེ་ཤུམ་ཁེས་པར་དུ་དགོས་པར་སྤང་ངོ་། 8. ཟླ་མེ་—སོགས་པས་(ཅད་—སོ་‘པ’ལས་) 9. ཟླ་—བཀའ (ཐལ་ཆེན་པུ་ལེན་སོ་གཅིག་པ་—722)

ས་བརྒྱད་པ་ལ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཞི་བར་གནས་པ་ལ།      སངས་  
 རྒྱུ་བཙུམ་ལྷན་འདས་<sup>1</sup>ནམས་ཀྱིས་བསྐྱང་བ་དང་ཡང་འགལ་དེ།      འདི་ལྟར་  
 དེ་ལས་<sup>2</sup>གསུངས་པ་ནི།      “ཀྱི་<sup>3</sup>ཀྱལ་བའི་སྤྲུལ་<sup>4</sup>དེ་ལྟར་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་  
 ས་མི་གཡོ་བ་འདི་ལ་གནས་པའི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སྤོན་གྱི་སྤོན་ལས་གྱི་……  
 ལྷོ་བས་བསྐྱེད་པ་དང་།      ཆོས་ཀྱི་སྤོན་འི་རྒྱན་དེ་ལ་གནས་པ་དེ་ལ་སངས་རྒྱུ་  
 བཙུམ་ལྷན་འདས་ནམས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་ཡེ་ཤེས་ཉི་ཤུ་བར་སྐྱབ་པར་མཛད་  
 དོ། །དེ་ལ་འདི་སྐད་ཅེས་ཀྱང་བཀའ་སྤྱུལ་དོ། །རིགས་ཀྱི་བྱ་ལེགས་སོ་ལེཌ་སོ་  
 སངས་རྒྱུ་ཀྱི་ཆོས་ཐམས་ཅད་རྗེས་སྤྱོད་གས་པར་བྱ་བ་ལ་འདི་ནི་དོན་དམ་པའི་  
 བཟོད་པ་ཡང་ཡིན་ན།      འོན་ཀྱང་<sup>5</sup>གང་ངེད་ཀྱི་སྤོ་བས་བཅུ་དང་མི་འཇིགས་པ་  
 ལ་སོགས་པ་སངས་རྒྱུ་ཀྱི་ཆོས་སྤྲུལ་སྤྲུལ་ཆོགས་པ་དེ་བྱིད་ལ་མེད་ཀྱི།      སངས་  
 རྒྱུ་ཀྱི་ཆོས་སྤྲུལ་སྤྲུལ་ཆོགས་པ་དེ་ཡངས་སྤྱོད་བཙུམ་ལྷན་འདས་ཀྱི་སྤོན་ལྷན་……  
 ཆོས་སྤོན་གྱི།      །བཟོད་པའི་སྤོན་འདི་ཉིད་ཀྱང་མ་དོར་ཅིག་<sup>7</sup>      །རིགས་ཀྱི་བྱ་བྱིད་  
 ཀྱིས་དེ་ལྟར་ཞི་བ་ནམ་པར་ཐར་པ་ཐོབ་ཀྱང་བྱིས་པ་སོ་སོའི་སྤོ་བོ་མ་ཞི་བ།  
 རབ་དུ་མ་ཞི་བ།      ཉན་མངས་པ་སྤྲོ་ཆོགས་ཀྱན་<sup>8</sup>དུ་འབྱུང་<sup>9</sup>པར་འགྱུར་བ།

- 
1. ‘བཙུམ་ལྷན་འདས’—རྒྱ་དཔེར་མེད།      2. ལྷོ་—བཀའ (ལམ་ཆེན་ཁྱེད་མེད་མོག་ཅིག་པ་ 20)  
 3. ཀྱི་རྒྱལ་བའི་སྤྲུལ་ཞེས་མོགས་ས་བཅུ་པའི་མདོའི་བྱང་འདྲན་དང་པོ་འདི།      བཀའ་སྤྱུར་རྒྱ་དཔེར་  
 ‘དེ་ནི་གཞུང་དེ་ཉིད་ལས་ཤེས་པར་བྱའོ’ཞེས་ཞུས་འཕངས་མཛད་པ་ལས་དངོས་ཀྱི་བཀའ་མེད།  
 4. ལྷོ་མི་—སྤྲུལ་བྱང་      5. རྒྱ་དཔེར་—ཀུལ་ཕུན་ཡཱ་= རིགས་ཀྱི་བྱ། གང་  
 6. རྒྱ་དཔེར་—པཐོག་ལཱ་ཨ་མི་ཡོག་ཀུལ་= ཡོངས་ཀྱི་བཙུམ་ལྷན་འདས་ཀྱི་སྤོན་ལྷན་གྱི་ཤོན་  
 7. ལྷོ་—ཤོན་      8. ལྷོ་མི་—ཀྱན་འབྱུང་      9. རྒྱ་དཔེར་—སྐབ་ལཱ་ལ་ཤཱ་ལ་ལཱ་= ཀྱན་དུ་སྤོན་  
 པ་འབྱུང་པའམ་སྤོ་བ་པར་འགྱུར་བ།



ནམ་པར་རྟོག་པ་ནམ་པ་སྒྲ་ཚོགས་ཀྱིས་གཡན་པ་འདི་དག་ལ་སོམས་ཤིག །  
 ཡང་རིགས་ཀྱི་བྱ་སྒྲན་གྱི་སྒྲན་ལས་དང་། སེམས་ཅན་གྱི་དོན་ཐོབ་པར་བྱ་བ་  
 དང་། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྒྲོ་བསམ་གྱིས་མི་ཁྲབ་པ་དྲན་པར་གྱིས་ཤིག །ཡང་རིང་  
 ཀྱི་བྱ་འདི་ནི་ཚོས་ནམས་ཀྱི་ཚོས་ཉིད་དེ། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ནམས་བྱང་ཡང་  
 ཅང་། མ་བྱང་ཡང་ཅང་། ཚོས་ཀྱི་དབྱངས་འདི་ནི་གནས་པ་ཉིད་དེ།  
 འདི་ལྟར་ཚོས་ཐམས་ཅད་སྤྱང་བ་ཉིད་དང་། ཚོས་ཐམས་ཅད་དམིགས་སྤྱ་  
 མེད་པའོ། །འདིས་ནི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ནམས་ཉི་ཚེ་4པ་རབ་དྲུ་དབྱེ་བར་  
 བྱ་བ་མ་ཡིན་གྱི། ཉན་ཐོས་དང་རང་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ནམ་པར་མི་  
 རྟོག་པའི་ཚོས་ཉིད་འདི་ཐོབ་བོ།

ཡང་རིགས་ཀྱི་བྱ་ངེད་ཀྱི་ལུས་ཚད་མེད་པ་དང་། ཡེ་ཤེས་ཚད་མེད་པ་  
 དང་། སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་ཚད་མེད་པ་དང་། ཡེ་ཤེས་མངོན་པར་སྒྲུབ་པ་  
 ཚད་མེད་པ་དང་། འོད་ཀྱི་དཀྱིལ་འཁོར་ཚད་མེད་པ་དང་། དབྱངས་ཀྱི་ཡན་  
 ལག་ནམ་པར་དག་པ་ཚད་མེད་པ་ལ་ལྟོས་དེ། ཁྱེད་ཀྱིས་ཀྱང་དེ་བཞིན་དུ་མངོན་  
 པར་སྒྲུབ་པ་བསྐྱེད་ཅིག །རིགས་ཀྱི་བྱ་གང་ཁྱེད་ཀྱི་ཚོས་ཐམས་ཅད་ལ་ནམ་  
 པར་མི་རྟོག་པའི་སྤང་བ་འདི་ནི་སྤང་བ་གཅིག་ཤུར་ཟད་དོ། རིགས་ཀྱི་བྱ་དེ་  
 བཞིན་བཤེགས་པ་ནམས་ལ་ནི་ཚོས་སྤང་བ་འདི་འདྲ་བ་མཐའ་ཡས་པར་འགྱུར་དེ།

1. ལྷ་དཔེར་—‘उपहृत’ཞེས་མ་མདོ་ཉིད་ཀྱི་ཡོངས་སྒྲུ་མནར་བ་ཞེས་ཡོད།
2. ལྷ་དཔེར་—स्थितैर्विषा धर्मता धर्मधातुस्थिति = ཚོས་ཉིད་དང་ཚོས་ཀྱི་དབྱངས་ཀྱི་གནས་ཉིད་  
 འདི་ནི་གནས་པ་ཉིད་དོ། (འདི་ནི་མདོ་ཉིད་ལས་ཚོས་ཀྱི་དབྱངས་དང་ཚོས་ཀྱི་གནས་ཉིད་འདི་  
 རི་དེ་བཞིན་དུ་འདྲག་པ་ཞི། ཞེས་གསལ། 3. ‘འདི་ལྟར་ཚོས་ཐམས་ཅད་སྤྱང་བ་ཉིད་དང་།  
 ཚོས་ཐམས་ཅད་དམིགས་སྤྱ་མེད་པའོ། ཞེས་མ་མདོ་འདི་ནི་ལྷ་དཔེར་གསལ་ཡང་། བོད་དམེ་བཀའ་  
 འགྱུར་ནང་མི་གསལ་བས་ཆད་པར་མངོན་ནོ། 4. ལྷ་པེ་—ཚོ་རབ་(ཆད་—ཉི་ཚེ་4པ་རབ་དྲུ་)

མཛད་པ་མཐའ་ཡས་ཤིང་འབྲེལ་བ་མཐའ་ཡས་པར་འགྱུར་དེ། གང་དག་  
 གངས་དང་། བགང་བ་དང་། ཚད་དང་། དཔེ་དང་། རྒྱ་ཡང་མེད་པ་  
 དེ་དག་ཐོབ་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་མངོན་པར་སྐྱབ་པ་སྦྱེད་ཅིག །རིགས་ཀྱི་བྱ་རེ་  
 ཞིག་སྤྱོད་པ་བཅུད་ཞིང་ཚད་མེད་པ་དང་། སེམས་ཅན་ཚད་མེད་པ་དང་།  
 ཚོས་ནམ་པར་སྤྱོད་པ་ཚད་མེད་པ་ལ་ལྟོས་དེ། ཇི་ལྟར་བ་བཞིན་བགང་བར་གྱིས་  
 ཤིག་ཅེས་དེ་སྒྲུབ་ཅེས་བཀའ་སྤྲུལ་དོ། །ཀྱི་ཀྱུ་ལ་བའི་སྐྱས་དག་དེ་ལྟར་བྱང་ཆུབ་  
 སེམས་དབང་དེ་ལྟར་ལ་སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྷན་འདས་དེ་དག་ཡེ་ཤེས་མངོན་  
 བར་སྐྱབ་པའི་(སྒྲོ་ཉི་ཤེས་མེད་པ་དེ་དག་ལ་སྐྱས་པ་གང་དག་གིས་བྱང་ཆུབ་  
 སེམས་དབང་ཡེ་ཤེས་ནམ་པར་སྤྱོད་པ་ཚད་མེད་པ་མངོན་པར་སྐྱབ་པའི་ལམ་  
 མངོན་པར་སྐྱབ་པ་དག་ཉི་ཤེས་སྐྱབ་པར་མཛད་དོ། །ཀྱི་ཀྱུ་ལ་བའི་སྐྱས་ཁྱེད་  
 མོས་པར་བྱའོ། །ཁྱེད་ཀྱིས་ཁོང་དུ་ཆུད་པར་བྱའོ། །གལ་དེ་སངས་རྒྱས་  
 བཅོམ་ལྷན་འདས་དེ་དག་གིས་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབང་དེ་དེ་ལྟར་བམས་ཅད་.....

1. 'མཛད་པ་ཞེས་པ་ནས་འགྱུར་དེ་'ཞེས་པའི་བར་ཀྱི་དཔེ་དག་སྐད་ཡང་བོད་དཔེ་བཀའ་འགྱུར་ནང་མེད།
2. ཀྱི་དཔེར་—'तत्सर्वमनुगणय'ཞེས་པའི་ཐད་མདོ་ཉིད་དུ་'མ་ནོར་བར་བགང་བར་གྱིས་ཤིག་ཅེས་ཡོད།
3. ཀྱི་དཔེར་—'यथावत्ताया अभिनिर्हार्मुत्पादय = ཇི་ལྟར་བ་བཞིན་དུ་མངོན་པར་སྐྱབ་པ་སྦྱེད་ཅིག་' ཅེས་པ་མདོ་འདིའི་ཀྱི་དཔེར་གསལ་ཡང་། བོད་དཔེ་བཀའ་འགྱུར་དང་། བྱང་འདྲན་འདིར་ཡང་ མེ་གསལ་བས་བརྟགས་དགོས་སོ།
4. ཀྱི་ཀྱུ་ལ་བའི་སྐྱས་ཞེས་སྐྱས་ནས་ཉི་ཤེས་སྐྱབ་པར་ མཛད་དོ། ཅེས་པའི་བར་ཀྱི་མདོ་ཚོག་འདོ། མདོ་འདིའི་ཀྱི་དཔེ་དང་། བོད་དཔེ་བཀའ་འགྱུར་དང་། བྱང་འདྲན་བོད་དཔེ་བཅས་གསུམ་གར་ཁྱེད་པར་ཆེ་བས་བརྟགས་པར་འཚུལ།
5. མངོན་པར་སྐྱབ་པའི་སྒྲོ་ཉི་ཤེས་མེད་པ་དེ་དག་ལ་སྐྱས་པར་སྐྱབ་པའི་ལམ་ ཞེས་པས་འདྲིར་ཡང་བཀོད་དོ།
6. མདོ་འདིའི་ཀྱི་དཔེ་དང་བོད་དཔེ་གཉིས་ཀར་ལས་མངོན་ བར་ཞེས་ཡོད།





[illegible]



ལྷ་བས་ན་གཉི་ག 1 ལྷ་བས་ལྷ་ཡང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབས་2 ལྷ་བས་བྱ་བ་  
ཁོ་ན་ཡིན་ནོ། །དེ་ལྷ་བས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་མི་གནས་པའི་བྱ་ངན་ལས་  
འདས་པ་ཡང་3 འགྲུབ་བོ།

འདི་ལྷ་བས་ལྷ་བས་མོགས་པའི་ཐབས་ཀྱིས་གཞུགས་ཀྱི་སྐྱ་དང་། ཞིང་  
དང་། གཤེགས་པའི་ལྷ་བས་ལྷ་བས་སྤྱད་ཆན་པོ་དེ་འབྲས་བྱ་སྤྱད་སྤྱད་  
ཆོགས་པ་ཡོངས་སུ་འཛིན་པས་བཅོས་ལྷ་བས་4 ཡོངས་སུ་བྱ་ངན་ལས་འདས་  
པ་ལ་ཡང་མི་གནས། ཤེས་རབ་ཀྱིས་སྤྱན་ཅི་ལོག་(མཐའ་དག་5)ཡང་དག་པར་  
སྤངས་པས་འཁོར་པ་ལ་ཡང་མི་གནས་ཏེ། འཁོར་བའི་ཅ་བ་ན་སྤྱན་ཅི་ལོག་  
ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །(གཞན་ཡང་6)ཤེས་རབ་དང་ཐབས་ཀྱི་རང་བཞིན་གྱི་ལས་  
འདིས་སྤྱོད་འདོགས་པ་དང་། སྐྱར་བའི་མཐའ་ནས་བར་སྤངས་ནས་དབྱ་མའི་  
ལས་བསྟན་ཏེ། ཤེས་རབ་ཀྱིས་ནི་སྤྱོད་འདོགས་པའི་མཐའ་སྤྱོད་ལ། ཐབས་  
ཀྱིས་ནི་སྐྱར་བའི་མཐའ་སྤྱོད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་བས་ན་འཕགས་པ་ཆོས་ཡང་  
དག་པར་བསྤྱད་པ་ལས་7 ཀྱང་བཀའ་སྤྱུལ་ཏེ། “མཆན་དང་དབྱ་བྱང་བཟང་པོ་དེ་  
གཞུགས་ཀྱི་སྐྱ་ཡོངས་སུ་གྲུབ་པ་ལ་མངོན་པར་དགའ་བ་ཡིན་གྱི། ཆོས་ཀྱི་སྐྱ་  
མངོན་པར་དོགས་པ་ཅུང་ལ་མངོན་པར་དགའ་བ་ནི་མ་ཡིན་ནོ།” །ཞེས་སོ།  
ཡང་བཀའ་སྤྱུལ་པ། “དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ནི་ཤེས་རབ་དང་ཐབས་ཀྱིས་བསྐྱེད་  
པ་སྟེ། གཞན་གྱི་དྲིང་ལ་འཛོག་པ་ཡང་སྤྱིད་པར་ཤེས་པར་བྱའོ།” ཞེས་།

1. ལྷ་བས་—གཉིས་ཀ 2. ལྷ་བས་—དབང་ལྷ་བས་ 3. ‘ཡང་’—སྐྱ་དབང་ལྷ་བས་ 4. ལྷ་བས་—འདས་སྐྱ་  
5. ལྷ་བས་—མཆན་ལྷ་བས་ = ལྷ་བས་ཅི་ལོག་མཐའ་དག་, 6. ལྷ་བས་—མཐའ་ནས་ཐབས་ = གཞན་  
ཡང་ཤེས་རབ་ 7. ལྷ་བས་—ཐབས་(མཐའ་དག་—ཐབས་)

ནས་པར་སྒྲུང་མཛད་མཛོན་པར་རྒྱལ་ས་པར་བྱང་ཆུབ་པ་ལས་<sup>1</sup>ཀྱང་། “ཐམས་  
ཅད་མཁྱེན་པའི་ཡེ་ཤེས་དེ་ནི་སྤྱིར་རྒྱུ་རྒྱུ་ཅ་པ་ལས་བྱུང་བ་ཡིན། བྱང་ཆུབ་ཀྱི་  
སེམས་ཀྱི་རྒྱ་ལས་བྱུང་བ་ཡིན། ཐམས་ཀྱི་མཐར་ཕྱིན་པ་ཡིན་ནོ།” །ཞེས་  
གསུངས་སོ།།

“2གང་ཚོས་གཞིངས་དང་འདྲ་བར་ཤེས་པ་ནམས་ཀྱིས་ཚོས་<sup>3</sup>ཉིད་ཀྱང་སྤང་  
བར་བྱ་ན། ཚོས་མ་ཡིན་པ་ལྟ་<sup>4</sup>ཅི་སྒྲོས།” །ཞེས་གསུངས་པ་དེ་ཡང་ཕྱིན་ཅི་ལོག་  
དུ་མངན་པར་ཞེན་པ་སྤང་བའི་ཕྱིར་དེ་ལ་དགོངས་དེ་སྤང་ངོ་ཞེས་བཀའ་སྤྱུལ་གྱི་  
དགོས་པ་སྒྲུབ་པའི་ཕྱིར་མི་བརྟེན་<sup>5</sup>པ་ཡང་མ་ཡིན་ནོ། །ཡང་འདྲི་སྐད་དུ་  
གསུངས་དེ། “ཚོས་ཡོངས་སུ་གཞུང་མཛད་ཀྱི་ལོག་པར་མི་གཞུང་ངོ་།” །ཞེས་<sup>6</sup>  
བྱ་བ་ནི་ལས་ལོག་པར་གཞུང་བར་མི་བྱ་བའི་དོན་དོ། །ཁ་ཅིག་ལས་སྒྲིན་པ་ལ་  
སོགས་པ་འཁོར་བའི་འབྲས་བུ་བཞེད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་ཤེས་རབ་དང་བྲལ་……  
བའི་སྒྲིན་པ་ལ་སོགས་པ་སྤར་བཞེད་པ་དང་། དེ་ཅས་ཀྱི་དག་བའི་ཅ་བས་  
ཚོག་པར་འཛིན་པ་ནམས་ཀྱི་དབང་དུ་མཛད་ནས། གོང་ནས་གོང་<sup>7</sup>དུ་དག་བའི་  
ཅ་བ་ལ་སྒྲོ་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལྟ་མ་ཡིན་དུ་ཟིན་ན་འཕགས་<sup>8</sup>པ་དེ་མ་  
མཛད་པར་གྲགས་པས་བསྟན་པ་ལ་སོགས་<sup>9</sup>པ་སྤར་སྒྲོས་པ་ཐམས་ཅད་དང་ཡང་……

- 
1. ལྟེ་—བཀའ (ལྟེ་‘མ’ ༡༢༩) 2. ལྟ་དཔེར་—‘यत् पुनरुक्तम् = ཡང་བཀའ་སྤྱུལ་པ་’ཞེས་ཡོད་ལ།  
ཁྱུང་འཛིན་འདི་དང་དོན་མཐུན་པ་ཞིག་རྟོ་རྟོ་གཏོང་བ་ (ཤིང་ཕྱིན་ལྟ་ཚོགས་‘ཀ’ ༡༢༩)ལ་ཡང་ཡོད།
  3. འདྲི་ཐད་རྟོ་རྟོ་གཏོང་བར་ཚོས་ནམས་ཀྱང་སྤང་བར་ཞེས་གསུངས།
  4. ལྟ་དཔེར་—प्रगु एवाधर्माः = ཚོས་མ་ཡིན་པ་སྒྲིན་ཉིད་ལ། 5. ལྟེ་ཅི་—བརྟེན་
  6. ལྟ་པ་—ཞེས་འབྱུང་བའི་ལོག་པར་མི་གཞུང་ངོ་ཞེས་བྱ་བ་ 7. ལྟ་དཔེར་—གོང་ཞེས་བ་གཏོག་  
ལས་མཛད། 8. ‘འཕགས་པ་’—ལྟ་དཔེར་མཛད་
  9. ལྟ་དཔེར་—སོགས་སྤར་སྒྲོས་པ་’ཞེས་པ་མཛད།



འགལ་བ་ཁོ་ནར་འགྱུར་དོ། །དེ་ལྟ་བུ་བས་ན་ཤེས་རབ་དང་ཐབས་གཉིས་ཀྱི་བསྐྱེན་  
དགོས་པ་ཁོ་ནར་གནས་སོ། །

དེ་ལ་ཤེས་རབ་ཀྱིས་ཡོངས་སུ་ཟིན་པའི་སྤྱིན་པ་ལ་སོགས་པ་པ་རོལ་དུ་...  
སྤྱིན་པའི་མིང་ཐོབ་པེ། གཞན་དུ་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་བས་ན་སྤྱིན་པ་ལ་སོགས་  
པ་ཡོངས་སུ་དག་པར་བྱ་བའི་སྤྱིར་མཉམ་པར་གཞག་པ་ལ་གནས་པར་བྱས་ལ།  
ཤེས་རབ་བསྐྱེད་པ་ལ་ཇི་འབད་བར་བྱའོ།

དེ་ལ་ཐོག་མར་རེ་ཞིག་ཐོས་པ་ལས་བྱུང་བའི་ཤེས་རབ་བསྐྱེད་པར་བྱ་པེ།  
དེས་རེ་ཞིག་ལྷང་གི་དོན་ཀྱན་དུ་འཛིན་པར་བྱེད་དོ། །དེ་ནས་བསམས་པ་ལས་  
བྱུང་བའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་ངས་པ་དང་དྲང་བའི་དོན་ནམ་པར་འབྱེད་པར་བྱེད་དོ། །  
དེ་ནས་དེས་བྱེད་པའི་དོན་ལ་བདེན་ནས་ཡང་དག་པ་ཁོ་ནའི་དོན་བསྐྱེམ་...  
པར་བྱའི། ཡང་དག་པ་མ་ཡིན་པ་དེ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལྟ་མ་ཡིན་དུ་ཟིན་ན་  
སྤྱིན་ཅེ་ལོག་དུ་བསྐྱེམས་ཤིང་ཐེ་ཆོས་ཡང་མ་བསལ་<sup>1</sup>བས་ཡང་དག་པའི་ཤེས་པ་  
ཡང་འབྱུང་བར་མི་འགྱུར་དེ། དེའི་སྤྱིར་བསྐྱེམ་པ་དོན་མེད་པར་འགྱུར་བས་སྤྱི་  
སྤྱེགས་ཅན་ནམས་ཀྱིས་བསྐྱེམ་<sup>2</sup>པ་དང་འདྲའོ། །བཙུམ་ལྷན་འདས་ཀྱིས་དྲིང་ཇི་  
འཛིན་གྱི་ཀྱུ་ལ་བོ་ལས་<sup>3</sup>ཀྱང་བཀའ་སྤྱུལ་དེ།

གལ་དེ་ཆོས་ལ་བདག་མེད་སོ་སོར་དོག་།

སོ་སོར་དེ་བདགས་གལ་དེ་བསྐྱེམ་པ་ནི།

དེ་ཉིད་སྤྱིར་འདས་ཐོབ་འབྲས་བྱའི་སྤྱི།

སྤྱི་གཞན་གང་ཡིན་དེ་ནི་ཞི་མི་འགྱུར། ། ཞེའོ།

1. ཐེ་ཆོ་—བསྐྱེམ་(གནད་པོ་ནི་བྱོས་སྤྱིལ་) 2. 'བསྐྱེམ་པ'—སྤྱི་དཔེར་མེད།

3. ཐེ་—བཀའ་(མདོ་—'5'20)

དེ་ལྟ་བུ་ན་བསམས་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་རིག་པ་དང་ལྷུང་གིས་བདགས་  
 ལ་ཡང་དག་པ་ཁོ་ནའི་དངོས་པོའི་རང་གི་ངོ་བོ་བསྐྱེད་པར་བྱའོ། །ཡང་དག་  
 པའི་དངོས་པོའི་རང་གི་ངོ་བོ་ནི་དོན་དམ་པར་<sup>1</sup>ན་སྐྱེ་བ་མེད་པ་ཁོ་ན་སྟེ།  
 རིགས་པ་དང་ལྷུང་གིས་གཏན་ལ་དབབ་བོ། དེ་ལ་ལྷུང་ནི་འཕགས་པ་ཆོས་  
 ཡང་དག་དག་པར་བསྐྱད་པ་ལས།<sup>2</sup> “སྐྱེ་བ་མེད་པ་ནི་བདེན་ནོ། སྐྱེ་བ་<sup>3</sup>ལ་  
 མོགས་པའི་ཆོས་གཞན་ནི་མི་བདེན་ནོ།” ཞེས་ཇི་སྒྲན་གསུངས་པ་ལྟ་བུའོ། །དེ་  
 ཡང་དོན་དམ་པ་དང་མཐུན་པའི་ཕྱིར་སྐྱེ་བ་མེད་པ་བདེན་ནོ་ཞེས་གསུངས་ཀྱི།  
 དོན་དམ་པར་ནི་སྐྱེ་བ་ཡང་ས་ཡིན། མི་སྐྱེ་བ་ཡང་ས་ཡིན་དེ། དེ་ཐ་སྐྱད་ཐམས་  
 ཅད་ལས་འདས་པའི་ཕྱིར་དོ། །ཡང་དེ་ཉིད་<sup>4</sup>ལས་བཀའ་སྒྲུལ་པ། “རིགས་  
 ཀྱི་བྱ་འཇུག་དེན་<sup>5</sup>ལ་གནས་པ་ནི་འཇུག་པ་དང་འབྱུང་བ་ལ་མངོན་པར་ཞེན་དེ།  
 དེའི་ཕྱིར་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་དང་ལྷན་པས་འཇུག་དེན་གྱི་……  
 སྐྱག་<sup>6</sup>པའི་གནས་བསལ་བའི་ཕྱིར་ཐ་སྐྱད་ཀྱི་དབང་གིས་སྐྱེའོ། ། འགག་གོ་  
 ཞེས་གསུངས་ཀྱི། འདི་ལ་ནི་ཆོས་གང་ཡང་སྐྱེ་བ་མེད་དོ།” །ཞེའོ། འཕགས་<sup>7</sup>  
 པ་སངས་རྒྱས་བགྲོ་བ་ལས་ཀྱང་བཀའ་སྒྲུལ་དེ། ཚུལ་བཞིན་<sup>8</sup>འདྲི་བ་ནི་གང་  
 ལགས། ཚུལ་བཞིན་ནི་གང་ལགས། བཀའ་སྒྲུལ་པ། སྐྱེ་བ་མེད་པ་ནི་ཚུལ་

1. ལྟ་བུ་—བར་སྐྱེ་ 2. ལྟེ་—བཀའ་(མདོ་‘ཞ’ 3) 3. རྒྱ་དཔེར་—‘སྐྱེ་བ་ལ་མོགས་པའི་ཆོས་’ཞེས་  
 པ་མེད། 4. ལྟེ་—བཀའ་(མདོ་‘ཞ’ 3) 5. ལྟ་བུ་—དོན་གནས་ 6. ལྟ་བུ་—བསྐྱག་པ་གནས་  
 (ཆད་—བསྐྱག་པའི་གནས་) 7. ལྟེ་ཙེ་—འཕགས་པ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཆོས་ཡང་དག་པར་སྐྱད་པ་  
 ལས་ཀྱིས་གསལ་ཡང་། རྒྱ་དཔེར་དང་། ལྟར་ཐང་པོ་ཀོང་གི་སྐར་མད་བཀོད་པ་ལྟར་གྱི་ཁྱུང་འདྲིན་  
 འདྲི་འཕགས་པ་སངས་རྒྱས་བགྲོ་བ་ཀྱིས་ཀྱིས་པའི་མདོར་གསལ་ཡོད་པས་དེ་ཉིད་འཕགས་ལྟར་ཐུགས་སོ།  
 (ལྟེ་—བཀའ་མདོ་‘ཞ’ 222) 8. ལྟ་བུ་—བཞིན་དུ་





དང་<sup>1</sup>སྒྲིབ་དང་བྲལ་བ་དག་གོ། ཚེས་ཐམས་ཅད་ནི་ངོ་<sup>2</sup>བོ་ཉིད་ཀྱི་སྒྲིབ་སྒྲེ།  
 ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་སྒྲོང་བ་ཉིད་ཀྱི་སྒྲིབ་རོ།” ཞེས་འབྲུང་ངོ་། འཕགས་པ་  
 བཅེན་པ་གཉིས་ནས་བར་འབྱེད་པ་ལས་<sup>3</sup>ཀྱང་། “སྒྲིབ་མེད་པར་མཉམ་པ་ཉིད་  
 ཀྱིས་ཚེས་ཐམས་ཅད་མཉམ་པ་ཉིད་རོ།” ཞེས་བཞེད་རོ། ཤེས་རབ་ཀྱི་  
 ས་རོལ་དུ་སྒྲིབ་པ་ལས་<sup>4</sup>ཀྱང་། “རབ་འབྱོར་གཞུགས་ནི་གཞུགས་ཀྱི་ངོ་བོ་  
 ཉིད་ཀྱིས་སྒྲོང་ངོ་། རྣམ་པར་ཤེས་པའི་བར་དུ་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་  
 ཀྱིས་སྒྲོང་སྒྲེ། རང་གི་མཚན་ཉིད་ཀྱིས་སྒྲོང་བ་ཉིད་ཀྱི་སྒྲིབ་རོ།” ཞེས་བཀའ་  
 ལྷན་ནོ། སྤྱང་བོའི་ཅལ་ལས་<sup>5</sup>ཀྱང་།

མདོ་འདི་དང་། འཇམ་དཔལ་མཚན་བཞེད་སྟེན་གྱི་དཔེ་མང་པོར་‘ཨ་ར་པ་ལ་’ = ཨ་ར་པ་  
 ཅ་ནའི་’ ཅ་ཤས་ཀྱི་ལྟགས་སྒྲུབ་’ལ་ = ཅ་ཡིག་གི་ཐད་དུ་བོད་ཡིག་ལ་‘ཅ་ཡིག་’ཉིད་ཐུབ་ནི་ལྟགས་  
 སྒྲུབ་ལ་’ ཅ་ཅ་སྟེན་མེད་པར་བཞེད་པའི་དཔེ་དང་དུ་བྱས་པར་མངོན་ཞིང་། གང་ལྟར་ལྟགས་སྒྲུབ་  
 ལ་‘ཅ་ཅ་’སྟེན་མེད་པ་ལས་‘ཅ་ཅ་’སྟེན་མེད་པར་འདོད་པ་ལ་དཔྱད་པ་ཞིབ་དུ་བྱེད་དགོས་པར་  
 སྤྱང་ཡང་ཆོག་མངས་སྒྲུབ་དྲགས་ནས་མ་སྤྱོད་སོ།

1. ལྷ་པེ་—དང་ཐལ་པ་ (ཅད་—འཛོལ་དང་‘སྒྲིབ་པ་’ཐལ་པ་) 2. ‘ཅ་ཡིག་ལ་སྒྲུབ་པའི་ཡིག་འི་  
 རྣམ་པའི་སྒྲོའི་ཆོག་དེ་བཞེད་མ་ཐག་དུ་སྒྲོམ་རིམ་བོད་དཔེར་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱི་སྒྲིབ་སྒྲེ’  
 ཞེས་གསལ་ཞིང་། དེའི་ཐད་ཀྱི་ལྟ་དཔེར་‘ཨ་མ་འབྱུང་། སུའོ་མ་མེད་པའི་སྒྲོ་  
 སྒྲེ’ཞེས་གསལ་ཡང་མདོ་ཉིད་དུ་ཨ་ར་པ་ཅ་ན་སྟེན་མེད་པའི་རྣམ་པའི་སྒྲོའི་རིམ་པ་དང་བསྒྲུབ་ན་  
 ‘ཅ་ཡིག་གི་འོག་དུ་’ན་ཡིག་གི་རྣམ་པའི་སྒྲོའི་ཆོག་“ནའི་སྒྲོ་ན་ཆོས་ཐམས་ཅད་མེད་དང་ཐལ་  
 པའོ།” ཞེས་སྟེན་འབྲུང་དགོས་ཆོད་དུ་སྤྱང་ཡང་དེ་མེད་ལ། མདོར་ན་ལྟ་དཔེ་དང་བོད་དཔེར་  
 སྤངས་པའི་ལྟངས་ཆོག་དང་། མདོ་ཉིད་ཀྱི་ཆོག་རིམ་པ་ཅས་གཞུགས་ཀྱི་མཐུན་མི་མཐུན་པུ་ཆོགས་  
 ཤིག་ཡོད་པས་དཔྱད་ཐུན་རྣམས་ཀྱིས་ཞིབ་དུ་དཔྱད་པར་ཐའོ།
3. ལྷ་—བཀའ་(མདོ་‘མ་’ 200) 4. ཆོས་ཞེས་ངོས་རྟེན་མ་ཐུང་།
5. ལྷ་—བཀའ་(མདོ་‘ཅ་’ 100)



གང་ལ་སྐྱེ་བ་སྐྱིད་པ་ཡི།

དངོས་པོ་གང་ཡང་མི་དམིགས་དེ།

འབྱུང་བ་མེད་པའི་དངོས་ནམས་ལ།

བྱིས་པ་དག་ནི་འབྱུང་བར་འདོད། །ཅེས་གསུངས་སོ། །

ཡབ་དང་སྐུས་མཇལ་བ་ལས་<sup>1</sup>ཀྱང་། “ཆོས་འདི་དག་ཐམས་ཅད་ནི་དུས་གསུམ་  
དུ་མཉམ་པ་ཉིད་ཀྱིས་མཉམ་པ་དག་སྟེ། འདས་པའི་དུས་ནི་ཡང་ཆོས་ཐམས་  
ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མད་པ་ནས་<sup>2</sup>དེ་ལྟར་བྱུང་བའི་དུས་ཀྱི་བར་དུ་ངོ་བོ་ཉིད་དང་བྲལ་  
བའོ།” །ཞེས་བཀའ་སྩལ་དེ། དེ་ལྟར་རེ་ཞིག་<sup>3</sup>ལྷང་གོས་བཏྲག་པར་བྱའོ།

རིགས་པས་བཏྲག་པར་བྱས་ནི་ལྷང་གི་དོན་གྱི་དུ་བཀྲི་མི་བྱས་དེ། དེ་  
བས་ནི་རིགས་པས་(ཀྱང་<sup>4</sup>)སོ་སོར་བཏྲག་པར་བྱའོ། །དེ་ལ་རིགས་པ་མདོར་  
བཞེད་པར་བྱ་སྟེ། དངོས་པོ་ནམས་ཀྱི་སྐྱེ་བ་རྒྱ་མེད་པ་ལས་འབྱུང་བ་ཞིག་གས།  
རྒྱ་ཡོད་པ་ལས་འབྱུང་བ་ཞིག་དུ་འབྱུར་གྲང་ན། རེས་འགའ་བ་ཡིན་པར་  
སྤང་བའི་ཕྱིར་རྒྱ་མེད་པ་ལས་འབྱུང་བ་མ་ཡིན་དེ། རྒྱ་ལ་མི་ལྟོས་པར་བྱེ་  
བྲག་མེད་པའི་ཕྱར་སྐྱེ་བའི་དུས་བཞིན་དུ་དེ་ལྟར་ཐམས་ཅད་དུ་དངས་པ་……  
ནམས་ཅིའི་ཕྱིར་མི་འབྱུང་། དངོས་པོ་མེད་པའི་དུས་དང་ཡང་བྱེ་བྲག་མེད་  
པས་སྐྱེ་བའི་དུས་ནི་ཡང་འབྱུང་བར་<sup>7</sup>མ་རགས་སོ། །དེ་ལྟར་རེ་ཞིག་རྒྱ་མེད་པ་  
ལས་འབྱུང་དུ་མ་རྒྱང་ངོ། རྒྱ་ཡོད་པ་ལས་འབྱུང་བའང་<sup>8</sup>མ་ཡིན་དེ། འདྲོ་

1. ཕྱི་བཀའ་(དཀོན་བརྩམས་-‘ང་’ 762) 2. ཕྱི་ན་5 (ཆད་-བ་‘ནས་’ད་‘ལྟར་’)

3. ཕྱི་པོ་-ཤིག་ 4. རྒྱ་དཔར་-ཡུལ་ལ་ཡི=རིགས་པས་ཀྱང་ 5. ཕྱི་པོ་-དུ་ཐམས་ཅད་

6. ཕྱི་ཙོ་-ཅད་དངོས་(ཆད་-ཐམས་ཅད་‘དུ་’-དངོས་པོ་ 7. ཕྱི་པོ་-འབྱུང་བའི་

8. ཕྱི་པོ་-བ་མ་ཡིན་(ཆད་-འབྱུང་‘བའང་’མ)

ལྷན་སྒྲིག་པ་ཅན་ནམས་ཀྱིས་དབང་སྐྱུ་ལ་སོགས་པ་དྲག་པ་རྒྱ་བདག་པ་  
 དེ་ལས་ཀྱང་དངོས་པོ་ནམས་མི་སྤྱེ་ཤི། རིམ་གྱིས་འབྱུང་བར་རྒྱ་བདག་པ་ལྷན་སྒྲིག་པ་  
 ལྷན་ཆེད་པ་མེད་པའི་འབྲས་<sup>1</sup> ལྷན་སྒྲིག་པ་ལྷན་ཆེད་པ་མི་རིགས་ཏེ། ལྷན་<sup>2</sup>  
 པ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དབང་སྐྱུ་ལ་སོགས་པ་བདག་ཉིད་ལ་མཐུ་ཡོད་པ་ནི་  
 གཞན་ལ་ལྷན་<sup>3</sup> པ་མེད་དེ། དྲག་པ་ཡིན་པས་དེ་ལ་གཞན་དག་གིས་མཉམ་གཤམ་  
 མི་དགོས་པའི་ཕྱིར་རོ། །པན་མི་འདོགས་པ་ལ་ལྷན་པར་ཡང་མི་རུང་ངོ། །  
 དེ་བས་ན་དབང་སྐྱུ་ལ་སོགས་པ་རྒྱས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་སྤོང་བའི་ཕྱིར་མོ་……  
 གཤམ་གྱི་བྱ་ལ་སོགས་པ་བཞིན་དུ་ང་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ། །དངོས་  
 པོ་ནི་དོན་བྱེད་རྒྱས་པའི་མཚན་ཉིད་ཡིན་ན་དེ་དག་ནི་གང་དུ་ཡང་འབྲས་བྱ་རིམ་……  
 གྱིས་སྤྱོད་<sup>4</sup> ཀྱང་མི་རྒྱས་ཏེ། གོང་དུ་བདག་པ་ཡིན་ནོ། །ཅིག་ཅར་ཡང་མི་  
 སྤྱེ་ཤི། འདི་ལྷན་འབྲས་བྱ་ཐམས་ཅད་ཅིག་ཅར་བསྐྱེད་ནས། ཕྱིན་ཆད་ཀྱང་  
 གཤམ་དེ་དེ་ཁོ་ན་བཞིན་དུ་དེ་ཉིད་བསྐྱེད་རྒྱས་ན་ནི་དེའི་ཆོ་རྒྱས་པའི་རང་བཞིན་རྗེས་……  
 སྐྱུ་འཇུག་པས་སྐྱུ་མ་བཞིན་དུ་འབྲས་བྱ་སྤྱོད་པར་འགྱུར་རོ། །རྗེས་སྐྱུ་མི་འཇུག་  
 ན་ནི་སྐྱུ་མའི་ངོ་བོ་ཉིད་བོར་བས་མི་དྲག་པར་འགྱུར་རོ། །

དེ་བས་ན་དྲག་པ་ཞེས་བྱ་བའི་དངོས་པོ་གང་ཡང་མེད་དོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་  
 བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་<sup>5</sup> ལྷན་པ་ “སྤྱོད་བྱས་ཆེན་པོ་འདི་ལྷན་སྤྱོད་ ནམ་  
 མཁའ་དང་། འགོག་པ་དང་། བྱ་ངན་ལས་འདས་པ་ལ་སོགས་<sup>7</sup> པ་མ་  
 བྱས་པའི་དངོས་པོར་མངོན་པར་ཞེན་ཅིང་སྤྱོད་འདོགས་པ་ནི་མེད་པ་ལས་སྤྱོད་འདོད་

1. ‘འབྲས་བྱ’—ཀྱི་དཔེ་མེད་ 2. ལྷན་སྒྲིག་—ལྷན་སྒྲིག་ 3. ལྷན་སྒྲིག་—ལྷན་སྒྲིག་

4. ལྷན་སྒྲིག་ 5. ལྷན་སྒྲིག་—ཆད་—ཆད་—ཅིག་ཅར་བསྐྱེད་

6. ལྷན་—ལྷན་(མཐོ་‘ཅ’ ཡང་གཤིགས་—ལཱ) 7. ‘ཐམས་ཅད’—ཀྱི་དཔེ་མེད་



པ་ཡིན་ནོ།” །ཞུས་པ་མོ། །དེ་ལྟར་རེ་ཞིག་དེ་དག་ནི་དྲག་པ་ལས་སྐྱེར་མི་  
 རུང་ངོ་། །མི་དྲག་པ་ལས་ཀྱང་མ་ཡིན་དེ། །དེ་ལས་འདས་པ་དང་མ་འོངས་  
 པ་ནི་དངོས་པོ་མེད་པས་དེ་ལས་སྐྱེ་ཞེས་བྱར་མི་རུང་སྟེ། །རྒྱ་མེད་པ་ལས་སྐྱེ་<sup>2</sup>  
 བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ། །དུས་མཉམ་པ་དང་མི་མཉམ་པ་དེ་ལས་མི་སྐྱེ་བའི་  
 ཕྱིར་དེ་ལྟར་གྱི་ལས་ཀྱང་མི་སྐྱེ་ལོ། །འདི་ལྟར་རེ་ཞིག་དུས་མཉམ་པ་ལས་མ་ཡིན་  
 པ་ནི་རྒྱུ་ཡི་ངོ་བོ་ཉིད་དང་འདྲ་བར་འབྲས་བུ་ཡང་དེ་དང་དུས་གཅིག་དུ་འབྱུང་སྟེ།  
 གྲུབ་པའི་ཕྱིར་རོ། །དུས་ཐ་དད་པ་ལས་ཀྱང་མི་སྐྱེ་སྟེ། །དུས་གཞན་གྱིས་  
 ཆོད་<sup>3</sup>དེ་སྐྱེ་ན་ནི་འདས་པ་ལ་སོགས་པ་ལས་སྐྱེ་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ། །པར་  
 དུ་མ་ཆོད་པར་སྐྱེ་ན་གཤམ་དེ་བདག་ཉིད་ཐམས་ཀྱིས་བར་དུ་མ་ཆོད་ན་ནི་སྐད་ཅིག་  
 གཅིག་དུ་སྐད་ཅིག་ཐམས་ཅད་ཆུད་པས་བསྐྱེལ་པ་ཡང་སྐད་ཅིག་ཅམ་དུ་འགྱུར་དེ།  
 དཔེར་ན་རྒྱལ་ཕྱ་རབ་ནམས་བདག་ཉིད་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་འདྲེས་ནས་གོང་བུ་རྒྱལ་...  
 ཕྱ་མོ་ཅམ་ཉིད་དུ་འགྱུར་བ་བཞིན་ནོ། །ཇི་སྟེ་ཕྱོགས་གཅིག་གིས་ཕྱང་<sup>4</sup>ན་ནི་དེའི་  
 ཆོ་སྐད་ཅིག་ལ་ཆ་ཤས་ཡོད་པར་འགྱུར་རོ། །བདག་ཉིད་ཀྱང་མི་སྐྱེ་སྟེ། །རྒྱ་  
 མེད་པ་ལས་བྱུང་བ་ཁོ་<sup>5</sup>ནའོ། །ཕྱོགས་ཀྱི་ནང་དུ་ཕྱོགས་འདི་འདྲུས་པའི་ཕྱིར་དེ།  
 བདག་ཉིད་ལ་བྱེད་པ་འགལ་བའི་ཕྱིར་རོ། །གཉིས་ཀ་ལས་ཀྱང་མ་ཡིན་དེ།  
 ཕྱོགས་གཉིས་ཀའི་སྐྱོན་<sup>6</sup>འདྲུ་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ། །

དེ་ལྟ་བུས་ན་དོན་དམ་པར་དངོས་པོ་འདི་དག་ཐམས་ཅད་ནི་མ་སྐྱེས་པ་  
 ཁོ་ན་ཡིན་ལ། །ཀྱན་རྫོབ་དུ་ནི་སྐྱེ་བ་ཡོད་པས་ལྷང་འ་སོགས་པ་དང་ཡང་མ་

1. ལྟ་པོ་—ཞེས་པོ། 2. ‘སྐྱེ་བར་’—རྒྱ་དཔེར་མེད་  
 3. ལྟ་པོ་—མཆོད་ 4. ‘ཕྱང་ན་’—རྒྱ་དཔེར་མེད་ 5. ལྟ་པོ་—ཁོ་ན་ནི་ཕྱོགས་  
 6. རྒྱ་དཔེར་—ཐོག་ཐོག་ = སྐྱོན་གཉིས་ཀ་ 7. ལྟ་པོ་—ཅད་མ་





དངོས་པོ་གཞུགས་ཅན་འདི་དག་ནི་མི་ལས་ལ་སོགས་པར་དམིགས་པའི་གཞུང་  
ལ་སོགས་པ་བཞིན་དུ་དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཁོ་ནའོ། །དེ་ཡང་འཕའ་  
བ་ལང་ཀར་གཤེགས་པ་ལས་<sup>1</sup>བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྤྱུལ་པ། “སློ་  
གྲོས་ཆེན་པོ་སྤྲུང་གི་དུ་ཡང་དུལ་ཕྱ་མོར་བཤེགས་ན་མི་འདུག་གོ། <sup>2</sup>དུལ་ཕྱ་མོ་  
ནམས་ཀྱང་སོ་སོར་བཤེགས་ན་དུལ་ཕྱ་མོ་འི་མཚན་ཉིད་ལས་མི་གནས་སོ།” །  
ཞེས་<sup>3</sup>སོ།

གང་དག་གཞུགས་མེད་པ་དེ་དག་ཀྱང་དེ་བཞིན་དུ་བདགས་ན་ངོ་བོ་ཉིད་  
མེད་པ་ཁོ་ན་སྟེ། འདི་ལྟར་བྱི་རོལ་གྱི་སྟེན་པོ་ལ་སོགས་པའི་དོན་མེད་པའི་  
སྟོབས་ཀྱིས་ནམ་པར་ཤེས་པ་ལ་སོགས་པ་སྤྲུང་བོ་གཞུགས་ཅན་མ་ཡིན་པ་དེ་……  
དག་ཉིད་སྟེན་པོ་ལ་སོགས་པའི་ངོ་བོར་(སྤྲུང་ངོ་ཞེས་4)ཁས་སྤྲུང་དགོས་སོ། །  
བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱིས་ཀྱང་<sup>5</sup>

བྱི་རོལ་གཞུགས་ནི་ཡོད་མིན་དེ།

རང་གི་སེམས་ནི་བྱི་རོལ་སྤྲུང་། ཞེས་བཀའ་སྤྱུལ་དོ། །  
དེ་བས་ན་སྟེན་པོ་ལ་སོགས་པ་སྤྲུང་ཆོགས་ཀྱི་ནམ་པར་སྤྲུང་བའི་བྱིར་དང་། །  
གཞུང་བ་དང་འཛིན་པའི་ནམ་པར་སྤྲུང་བའི་བྱིར་ངོ་བོ་ཉིད་གཅིག་དུ་མི་རུང་སྟེ།  
གཅིག་དང་དུ་མ་མི་མཐུན་པའི་བྱིར་གཅིག་ནི་དུ་མའི་ངོ་བོ་<sup>6</sup>ཉིད་ཁོ་ནར་མི་རུང་  
ངོ། །གང་གི་ངོ་བོ་ཉིད་གཅིག་དུ་མ་གྲུབ་པའི་བྱིར་དུ་མའི་ངོ་བོར་ཡང་མི་  
རུང་སྟེ། དུ་མ་ཉིད་ནི་གཅིག་འདུས་པའི་ངོ་བོ་<sup>7</sup>ཉིད་ཡིན་པའི་བྱིར་རོ།

- 
1. ཐུ་-དཀན་(མདོ་-ཅ', 15)
  2. ཐུ་དཔེར་-ཤུན་པེ = གཞན་ཁང་
  3. ཐུ་པེ་-ཞེནོ།
  4. ཐུ་དཔེར་-ཤུན་པེ = ཐུང་ངོ་ཞེས་
  5. ཐུ་-དཀན་(མདོ་-ཅ', 15)
  6. ཐུ་པེ་-ངོ་བོ་ཉིད་མི་རུང་
  7. ཐུ་པེ་-ངོ་བོ་ཁན་

(ཉལ་ཅིག་དང་གཞན་རྣམས་རྣམ་སྤངས་པ་ཞེས་པ་) གཅིག་པ་ཉིད་དང་དུ་མ་ཉིད་...

- [illegible]



བྲལ་ཞེས་བྱ་བའི་ཐ་<sup>1</sup>ཚོག་གོ། །ཡང་བཀའ་སྤྱུལ་<sup>2</sup>།  
 རྒྱ་ཡིས་ནམ་པར་གཞིགས་ན་གོ།  
 རོ་བོ་ཉིད་ནི་གཟུང་དུ་མེད། །  
 དེ་ཕྱིར་དེ་དག་བཟོད་མེད་ཅིང་། །  
 རོ་བོ་ཉིད་ཀྱང་མེད་པར་བཤད།། ཅེའོ།

དེ་ལྟར་བསམས་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་ཡང་དག་པའི་དོན་བྱེ་བྲག་བྱེད་པར་<sup>3</sup>  
 བྱས་ལ་དེ་མངོན་སུམ་<sup>4</sup>དུ་བྱ་བའི་ཕྱིར་བསྒྲུབས་པའི་ཤེས་རབ་བསྐྱེད་དོ། །  
 ཐོས་<sup>5</sup>པ་ལ་སོགས་པ་ཅམ་གྱིས་དོན་མངོན་སུམ་དུ་མི་འབྱུང་རོ། །ཞེས་འཕའ་  
 བ་དཀོན་མཆོག་སྤྱིན་ལ་སོགས་པ་ལས་བལྟན་པ་ཡིན་ནོ། །སྐྱབ་བ་བོ་ནམས་  
 ལ་ཡང་ཉམས་ཡོད་དེ། ཤེས་པའི་སྤང་བ་ནམས་ཤིན་དུ་གསལ་བ་འབྱུང་བ་  
 མེད་པ་ཡང་དག་པར་སྐྱབ་པའི་སྤྱན་པ་མི་སྤོངས་སོ། །བསྒྲུབ་པ་ལན་མང་དུ་  
 བྱས་ན་ཡང་དག་པ་མ་ཡིན་པའི་དོན་ལ་<sup>6</sup>ཡང་ཤེས་པ་ཤིན་དུ་གསལ་བ་འབྱུང་སྟེ།  
 དཔེར་ན་མི་སྤྱུག་པ་<sup>7</sup>དང་ཟད་པར་ས་ལ་སོར་བ་ལ་སྒྲོམས་པར་ཞུགས་པ་ནམས་  
 ཀྱི་ཤེས་<sup>8</sup>པ་འབྱུང་བ་ལྟ་བུ་ཡིན་ན་ཡང་དག་པའི་དོན་<sup>9</sup>ལ་ལྟ་ཅི་སྟོས། དེ་ལྟར་  
 བསྒྲུབས་<sup>10</sup>པའི་འབྲས་བྱ་ནི་ཡོངས་སུ་གསལ་བའི་ཤེས་པ་ཡིན་པས་འབྲས་བྱ་  
 དང་བཅས་པའི་དོན་<sup>11</sup>ཡིན་པར་བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱིས་དྲིང་ངེ་འཛིན་གྱི་བྱལ་པོ་  
 ལས་<sup>12</sup>བཀའ་སྤྱུལ་དེ།

- 
1. ཐེ་ཚོ་—བའི་ཚོག་གོ། 2. ཐེ་—བཀའ་(མདོ་'ཅ'—༡༩༩)  
 3. ཐུ་པེ་—བ་ཐུས་ 4. ཐེ་—གམ་ཐུ་ 5. ཐུ་དཔེར་—ཐུ་ཡུལ་=མང་དུ་ཐོས་པ་  
 6. ཐུ་པེ་—དོན་ལ་ཤེས་ 7. ཐུ་དཔེར་—ཐུ་ཡུལ་=མི་སྤྱུག་པ་སོགས་ 8. 'ཤེས་པ་འབྱུང་བ་  
 ཐུ་པེ་ཡོན་ན་'ཞེས་པ་ཐུ་དཔེར་མེད། 9. ཐེ་ཚོ་—དོན་ལྟ་ 10. ཐུ་པེ་—བསྒྲུབ་  
 11. 'དོན་'—ཐུ་དཔེར་མེད་ 12. ཐེ་—བཀའ་(མདོ་—'ད'—༡༩)

1. ཁྱེད་ལ་བསྐྱོད་ཞིང་ཁོང་དུ་ཆུད་བར་བྱ།

ཇི་ལྟ་ཇི་ལྟར་མང་དུ་སྐྱོད་བརྟགས་ན།

དེ་ལ་གནས་པའི་ནམས་པར་དོག་པ་དེས།

དེ་ལྟ་དེ་ལྟར་དེ་ལ་སེམས་2གཞིལ་3འགྱུར།

ཞེས་དེ་4ལ་སོགས་པ་ཀྱུ་ཆེར་འབྱུང་ངོ་། དེ་ལྟ་བུས་ན་དེ་ཁོ་ན་མངོན་  
སྤྲུལ་དུ་བྱ་བའི་5ཕྱིར་བསྐྱོད་པ་ལ་རབ་དུ་འཇུག་གོ།

དེ་ལ་ནལ་འབྱུར་བས་སེམས་གནས་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་བོག་མ་ཁོ་ནར་  
ཞིག་ཞིག་གནས་བསྐྱབ་པར་བྱའོ། །སེམས་ནི་ཆུ་བཞིན་དུ་གཡོ་བའི་ཕྱིར་ཞི་  
གནས་ཀྱི་གཞི་མེད་པར་གནས་པ་མེད་དོ། །མཉམ་པར་མ་བཞག་པའི་སེམས་  
ཀྱིས་ནི་ཡང་དག་པ་ཇི་ལྟ་བུ་6བཞིན་དུ་ཤེས་པར་མི་བྱས་དེ། བཅོམ་ལྷན་འདས་  
ཀྱིས་7ཀྱང་ “མཉམ་པར་བཞག་པའི་(སེམས་ཀྱིས་8)ཡང་དག་པ་ཇི་ལྟ་བུ་བཞིན་  
དུ་ཤེས་སོ།” ཞེས་བཀའ་སྤྲུལ་དོ། །ཞིག་གནས་དེ་ནི་རྟོག་པ་ལ་སོགས་པ་9

1. ལྟེ་དགེ་ཁོ་ནི། ལྟར་མང་། བེ་ཀོང་བཅས་པར་མ་བཞེ་ཀར་“ཁྱེད་ཀྱིས་ཁོང་དུ་ཆུད་བར་བྱ། མོས་པར་  
བྱ” ཞེས་ཆོག་ཀྱང་དང་པོ་ཆོག་སྤྱད་དུ་བཀོད་འདུག་ཀྱང་ཞིག་སྤྱད་ཀྱི་དཔེ་དང་། མདོ་ཉིད་  
དུ་ཆོག་སྤྱད་པཅད་ཡོན་བས་དེ་ཉིད་འཐད་པར་མཐོང་ངོ་།

2. ལྟ་བེ་—སོགས་ 3. ལྟེ་ཙོ་—གཞིལ་པར་འགྱུར་ 4. ‘དེ་ལ་སོགས་པ་’ཞེས་པ་ཀྱུ་དཔེར་མེད།

5. ལྟ་དཔེར་—ཀུའུ་ཀཱ་མོ་= ལྟ་དཔོན་པ། 6. ལྟ་བེ་—ལྟ་པར་

7. ལྟ་བཀའ་(མདོ་‘ཞེ་’—ཆོས་ཡང་དག་པར་བསྐྱུད་པ་’2) 8. ལྟ་དཔེར་—समाहितचित्तो =  
མཉམ་པར་བཞག་པའི་སེམས་ཀྱིས་’ ཞེས་གསལ་བ་བཞེན་སྐབས་དོན་དང་འཛམས་ཞིང་མདོ་ཉིད་དུ་  
གསལ་བ་མ་ཟད། ཇི་བདག་ཉིད་ཆེན་པོ་ནི་‘ཞེ་ལྷག་གཉིས་ཀྱི་དཀའ་གནད་’ཀྱི་སྐབས་ཀྱི་ཀྱང་  
འདྲ་བཀོད་ནས། ཀྱང་དོན་འཆད་པའི་ཆོ་“སེམས་ཕྱེ་གཅིག་པ་ལ་འཇོག་པ་ཙམ་ཞིག་གོམས་ན་  
ཡང་དག་པའི་དོན་རྟོགས་པར་འགྱུར་རོ་”ཞེས་པའི་དོན་མ་ཡོན་གྱི། མཉམ་པར་བཞག་པའི་སེམས་  
ཀྱིས་ཞེས་སྤྱད་ཀྱི་ཡོན་ལ་’ཞེས་གསུངས་པས་སོ། 9. ལྟེ་ཙོ་—པ་ལ་འདྲོད་



འདོད་པ་ལ་མི་ལྟ་ཞིང་ཚུལ་<sup>1</sup> བྱིས་པ་ལེགས་པར་གནས་ལ་སྤྲུག་བསྐྱེད་པ་.....  
 མོགས་པ་དང་དྲུ་ལེན་པའི་ངང་ཚུལ་ཅན་དྲུ་གྱུར་ལ་བཙོན་འགྲུས་བཅས་ན་གིན་  
 དྲུ་གྱུར་དྲུ་འགྲུབ་བོ། །དེ་བས་ན་འཕགས་པ་དགོངས་པ་ངེས་པར་འགྲུལ་བ་  
 ལ་མོགས་པ་ལས་ཀྱང་<sup>2</sup>སྤྱིན་པ་ལ་མོགས་པ་གོང་མའི་ཡང་གོང་མའི་སྤྱི་<sup>3</sup>ཉུང་.....  
 ཡིན་པར་བསྟན་ཏོ། །

དེ་ལྟར་ཚུལ་བྱིས་པ་ལ་མོགས་པ་ཞི་གནས་ཀྱི་ཚོགས་ནམས་ལ་གནས་ཏེ།  
 ཡིད་དྲུ་འོང་བའི་<sup>4</sup>ས་ཕྱོགས་སུ་སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཐམས་...  
 ཅན་ལ་ཕྱག་ལ་མོགས་པ་བྱ་ཞིང་། སྤྱི་ག་བ་བཤགས་པ་དང་། བསོད་ནམས་  
 ཀྱི་རྗེས་སུ་ཡི་རང་བ་ཡང་བྱས་ནས། སྤྱིང་རྗེ་ཆེན་པོ་ཁོ་ན་མངོན་སུམ་དྲུ་བྱས་  
 བས་འགྲོ་བ་མཐའ་དག་གཏོན་པའི་བསམ་པ་ཅན་དྲུ་གྱུར་ནས་ལྷན་དྲུང་བོར་.....  
 བསྐྱེད་པའི་སྤྱན་བདེ་བའི་སྤྱིང་དྲུ་འདྲུག་སྟེ། སྤྱིལ་<sup>6</sup>མོ་ཀྱང་བཅས་ལ་དྱིང་ངེ་  
 འཛིན་མངོན་པར་སྤྲུབ་བོ། །

དེ་ལ་ཐོག་མར་རེ་ཞིག་མདོར་བསྟུན་ནམས་པ་རྗེ་སྤྱིང་གིས་ནམས་པར་དབྱེད་  
 བར་བྱ་བ་དངོས་པོ་མཐའ་དག་འདྲུ་བར་འགྱུར་བའི་དངོས་པོ་གང་ཡིན་པ་དེ་ལ་  
 སེམས་གཞག་པར་བྱའོ། །དངོས་པོ་འདྲུས་པ་ནི་གཞུགས་ཅན་དང་། གཞུང་  
 ཅན་མ་ཡིན་པའི་བྱེད་བྱ་གིས་ནམས་པ་གཏོས་ཏེ། ལས་དང་བོ་བའི་ནམས་པར་  
 གཡེང་བའི་ཉེས་པ་བསལ་བའི་སྤྱིར་རེ་ཞིག་འདྲུས་པ་དེ་ལ་ནི་དམིགས་པའི་རིུ་  
 མོ། །གང་གི་ཆོ་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་ཁྲགས་པར་གྱུར་པ་དེའི་<sup>7</sup>ཆོ་སྤྱང་བོ་དང་ཁམས་

1. ལྟ་དཔེར་—सम्यक्प्रवृत्ती = ཡང་དག་པར་འདྲུག་པ་  
 2. 'ཀྱང་'—ལྟ་དཔེར་མེད་ 3. 'སྤྱི'—ལྟ་དཔེར་མེད་ 4. ལྟ་མོ་—བའི་ཕྱོགས་ 5. ལྟ་མོ་—སྤངས་  
 6. ལྟ་མོ་—དཀྱིལ་ 7. ལྟ་མོ་—དེའི་སྤྱང་

ལ་སོགས་པའི་བྱེ་བྲག་གིས་<sup>1</sup> རྒྱས་པར་ཡང་དམིགས་པར་བྱེད་པ་ཁོ་ན་ལྟེ།  
 འདི་སྐད་དགོངས་པ་ངེས་པར་འགྲེལ་པ་ལ་སོགས་པ་ལས་ཀྱང་ནལ་འབྱོར་བ་...  
 རྣམས་ཀྱི་སྤོང་བ་ཉིད་<sup>2</sup> རྣམ་པ་བཅོ་བརྒྱད་ལ་དམིགས་པ་ལ་སོགས་པའི་བྱེ་བྲག་  
 གིས་དམིགས་པའི་རྣམ་པ་<sup>3</sup> ཀྱན་དུ་བཀའ་སྤྱུལ་དོ།

དེ་བས་ན་བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱིས་<sup>4</sup> སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་ཕན་གདགས་  
 པའི་ཕྱིར་གཞུགས་ཅན་དང་གཞུང་ཅན་ས་ཡིན་པ་ལ་སོགས་པའི་བྱེ་བྲག་གིས་...  
 མདོར་བསྟུས་པ་དང་། བར་ས་དང་། རྒྱས་པ་དག་གིས་དངོས་པོར་བ་དུ་དབྱེ་བ་  
 ཆོས་མངོན་པ་ལ་སོགས་པ་ལས་བཟུན་དོ། །དེ་ཡང་དངོས་པོ་ལ་སྒྲོ་<sup>5</sup> འདོགས་པ་  
 དང་སྒྱར་བ་སྒྲང་པའི་ཕྱིར་སྒྲུང་བོ་དང་ཁམས་ལ་སོགས་པར་བསྟུས་པའི་སྒྲོ་ནས་  
 བགྲང་ངོ་། །དེ་ནས་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་བསྟུས་པའི་བྱེ་བྲག་ཕྱིར་ནས་དེ་ཉིད་  
 ལ་སེམས་ཡང་དང་ཡང་རྒྱན་དུ་འཇུག་པར་བྱའོ།

གང་གི་ཆོ་བར་སྐབས་སུ་འདོད་ཆགས་ལ་སོགས་པས་སེམས་ཕྱི་རོལ་དུ་  
 རྣམ་པར་གཡེང་བར་བྱེད་པ་དེའི་ཆོ་རྣམ་པར་གཡེང་བར་གྲེས་པར་བྱས་ལ་མི་...  
 རྒྱལ་པ་ལ་སོགས་པ་བསྒྲོམས་པས་རྣམ་པར་གཡེང་བ་ཞི་བར་བྱས་ཤིང་སྒྱར་དུ་  
 དེ་ཉིད་ལ་སེམས་ཕྱི་ཕྱིར་གཞུག་པར་བྱའོ། །མི་རྒྱལ་པ་ལ་སོགས་པ་བསྒྲོམ་  
 པའི་གོ་རིམས་འདིར་ཡི་<sup>6</sup> གོ་མངས་ཀྱིས་<sup>7</sup> རྟོགས་དེ་ས་བྱིས་སོ། །གང་གི་

- 
1. རྒྱ་དཔེར་—विशोध्य विस्तार = རྣམ་པར་དག་པ་རྒྱས་པར་ 2. ལྷ་པོ་—ཉིད་པཅོ་  
 3. རྒྱ་དཔེར་—नानाप्रकारम् = རྣམ་པ་ལྷ་ཆོར་པ་ 4. ལྷ་པོ་—ཀྱིས་ཐམས་(ཆད་—ཀྱིས་སེམས་  
 ཅན་ཐམས་ཅད་) 5. རྒྱ་དཔེར་—अव्यारोप = ལྷག་པར་སྒྲོ་འདོགས་  
 6. རྒྱ་དཔེར་—विस्तारमयान् = རྒྱས་པས་འཇུག་ནས་ 7. ལྷ་པོ་—ཀྱི་



ཆོ་<sup>1</sup>དེ་ལ་(སེམས་<sup>2</sup>)མི་དགའ་བར་མཐོང་བ་དེའི་ཆོ་དྲིང་ངེ་འཛིན་གྱི་ཡོན་ཏན་ལ་...  
 ལྟ་བུ་དེ་ལ་དགའ་བ་བསྐྱེམ་ཞིང་། རྣམ་པར་གཤམ་བ་ལ་ཉེས་པར་ལྟ་བུ་བས་  
 མི་དགའ་བ་རབ་དུ་ཞི་བར་བྱའོ། །ཇི་ལྟེ་གང་གི་ཆོ་སྤྲུགས་པ་དང་གཉིད་ཀྱིས་  
 རོན་དེ། དམིགས་པ་འཛིན་བ་ལ་མི་གསལ་ཞིང་སེམས་བྱིང་བར་གྱུར་བ་དེའི་  
 ཆོ་སྤྲུང་བའི་འདུ་ཤེས་བསྐྱེམ་<sup>3</sup>བ་འཇམ།<sup>4</sup> མཆོག་དུ་དགའ་བའི་དངོས་པོ་སངས་  
 གྱུས་ལ་སོགས་པའི་ཡོན་ཏན་ཡིད་ལ་བྱེད་པས་བྱིང་བ་བསལ་ལ་དམིགས་པ་དེ་...  
 ཉིད་དམ་དུ་བརྩེང་ངོ་། །ཇི་ལྟེ་གང་གི་ཆོ་དེ་སྤྲོན་དགོད་<sup>5</sup>བ་དང་ཅེ་བ་ལ་སོགས་  
 པ་བྲན་ཞིང་བར་བར་དུ་སེམས་གློད་པར་མཐོང་བ་དེའི་ཆོ་མི་དགའ་བ་ལ་སོགས་པ་  
 ཡིད་འབྱུང་བར་འགྱུར་བའི་དངོས་པོ་ཡིད་ལ་བྱེད་པས་གློད་པ་ཞི་བར་བྱའོ། །  
 དེ་ནས་ཡང་དམིགས་པ་དེ་ཉིད་ལ་སེམས་མངོན་པར་འདུ་བྱེད་པ་མེད་པར་འཇུག་  
 པ་ལ་འབད་བར་བྱའོ། །གང་གི་ཆོ་བྱིང་བ་དང་གློད་པ་གཉིས་<sup>7</sup>ཀ་དང་བྲལ་དེ་  
 མཉམ་པར་འཇུག་ཅིང་སེམས་རང་གི་ངང་གིས་འབྱུང་བར་མཐོང་བ་དེའི་ཆོ་རྩོལ་  
 བ་གློད་དེ་བདང་སྒྲོམས་སུ་བྱའོ། །གལ་དེ་མཉམ་པར་འཇུག་པ་ལ་རྩོལ་བ་བྱས་  
 ན་སེམས་རྣམ་པར་གཤམ་བར་འགྱུར་ངོ་། །

གང་གི་ཆོ་དམིགས་པ་དེ་ཉིད་ལ་མངོན་པར་འདུ་བྱེད་པ་མེད་པར་ཇི་སྲིད་  
 འདོད་པའི་བར་དུ་སེམས་འཇུག་པར་འགྱུར་བ་དེའི་ཆོ་ཞི་གནས་ཇོགས་པ་ཡིན་  
 བར་རིགས་པར་བྱ་སྟེ། ཞི་གནས་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་ནི་སེམས་ཅེ་གཅིག་པ་ཙམ་དུ་  
 ཟད་པའི་ཕྱིར་འདི་ནི་ཞི་གནས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྤྱིའི་མཚན་ཉིད་ཡིན་ནོ། །དེའི་

1. ལྟ་ཆོ་—ཆོ་ལ་(ཆད་—ཆོ་དེ་ལ་) 2. ལྟ་དཔེར་—ཁྱིམ་ཐུག་འཕྲིད་པའི་ཆོ་ལ་སེམས་མེ་

དགའ་བར་ 3. ལྟ་ཆོ་—བསྐྱེམས་ 4. 'འཇམ་'—ལྟ་དཔེར་མེད་

5. ལྟ་པེ་—གློད་ 6. 'དངོས་པོ་'—ལྟ་དཔེར་མེད་ 7. ལྟ་པེ་—གཉི་ཀ་











གཏན་གཉིས་པའི་སའི་སྤྱད་པ་དང་བུལ་བར་གྱུར་དེ་བདེ་བ་དང་། བདང་སྒྲིམས་  
 དང་། དུན་པ་དང་། ཤེས་བཞིན་<sup>1</sup>དག་དང་ལྷན་པར་གྱུར་པ་དེའི་<sup>2</sup>ཆོ་བསམ་  
 གཏན་གསུམ་པ་ཞེས་བྱའོ། །གང་གི་ཆོ་བསམ་གཏན་གསུམ་པའི་སའི་སྤྱད་པ་  
 དང་བུལ་དེ་སྤྱག་བསྐྱེད་ཡང་མ་ཡིན་བདེ་བ་ཡང་མ་ཡིན་ཞིང་། བདང་སྒྲིམས་  
 དང་། དུན་པ་དག་དང་ལྷན་པར་གྱུར་པ་དེའི་ཆོ་བསམ་གཏན་བཞི་པ་ཞེས་བྱའོ།  
 དེ་བཞིན་དུ་གཟུགས་སེད་པའི་སྒྲིམས་པར་འཇུག་པ་དང་། རྣམ་པར་ཐར་པ་དང་།  
 རྒྱལ་གྱིས་གནོན་པའི་སྤྱོད་མཆོད་ལ་སོགས་པ་ཡང་དམིགས་པ་དང་རྣམ་པ་ལ་སོགས་  
 པའི་བྱེ་བྲག་གིས་སྐྱར་བར་བྱའོ། །

དེ་ལྟར་དམིགས་པ་དེ་ལ་སེམས་བདུན་པར་བྱས་ནས་ཤེས་རབ་ཀྱིས་རྣམ་  
 པར་དབྱེད་པར་བྱ་ཏེ། འདི་ལྟར་ཤེས་པའི་སྤྱོད་པ་བྱང་བས་ཀྱུན་དུ་མེད་པའི་  
 ས་བོན་གྱི་ཉེ་དུ་སྤྱོད་པར་འགྱུར་རོ། །དེ་ལྟར་མ་ཡིན་ན་སྤྱོད་པས་ཅན་རྣམས་ཀྱི་  
 བཞིན་དུ་དྲིང་འཛིན་ཅམ་གྱིས་ཉེ་མེད་པ་སྤྱོད་པར་མི་འགྱུར་རོ། །མདོ་  
 སྤྱོད་ལས་<sup>3</sup>ཐེ་སྐད་དུ།

དྲིང་འཛིན་དེ་སྤྱོད་པར་བྱེད་མེད་གྱི།

དེ་ནི་བདག་དུ་འདྲ་ཤེས་འཇིག་<sup>4</sup>མི་བྱེད།

དེ་ཡི་ཉེ་མེད་པ་ཕྱིར་ཞིང་རབ་འཇུག་ཏེ།

ལྷག་སྤྱོད་འདི་ན་དྲིང་འཛིན་བསྐྱེད་པ་བཞིན། ཞེས་གསུངས་

པ་ལྟ་བུའོ།

1. ལྷ་མོ་—བཞིན་དང་ 2. ལྷ་མོ་—དེའི་བསམ་(ཆད་—དེའི་‘ཆོ’བསམ)

3. ལྷ་—བཀའ་(མདོ་ན་—‘དྲིང་འཛིན་ལྷ་མོ་’ 20) 4. ‘འཇིག་མི་བྱེད་’ཅེས་པ་སྤྱོད་པ་མ་ཆུ་

དཔེར་མེད་ཀྱང་མདོ་མའི་ལྷགས་སྤྱོད་ལྟ་དཔེར་ཡོད་རོ།

དེ་ལ་འཕགས་པ་ལང་ཀར་གཤེགས་པ་ལས།<sup>1</sup> ཤེས་རབ་བསྐྱེམ་པའི་  
རིམ་པ་མདོར་བཀའ་སྤྲུལ་དེ།

སེམས་ཚུལ་ནི་རབ་བརྟེན་ནས།

ཕྱི་རོལ་དོན་ལ་མི་བདག་གོ།

དེ་བཞིན་ཉིད་ཀྱི་དམིགས་གནས་ནས།

སེམས་ཚུལ་ལས་ཀྱང་འདྲ་བར་བྱ།

སེམས་ཚུལ་ལས་ནི་འདས་ནས་སུ།

སྤང་བ་མེད་ལས་འདྲ་བར་བྱ།

སྤང་མེད་གནས་པའི་ནལ་འབྱོར་བ།

དེ་ཡིས་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་མཐོང་།

ཞི་བ་ལྷན་གྱིས་བྱུང་བའི་གནས།

སྐྱོན་ལས་དག་གིས་ནམ་པར་སྤངས།

ཡེ་ཤེས་དམ་པ་བདག་མེད་བ།<sup>2</sup>

སྤང་བ་མེད་པས་མཐོང་བར་འགྱུར།

དེ་ལ་དོན་ནི་འདི་ཡིན་དེ། ཐོག་མར་ནལ་འབྱོར་པས་ཆོས་གཞུགས་ཅན་གང་

དག་གཞུགས་ལ་སོགས་པ་ཕྱི་རོལ་གྱི་དོན་དུ་གཞན་དག་གིས་བདགས་པ་དེ་དག་

ལ་ཅི་འདི་དག་ནམ་པར་ཤེས་པ་ལས་གཞན་ཞིག་ཡིན་ནས། འོན་དེ་ནམ་པར་

ཤེས་པ་དེ་ཉིད་དེ་ལྟར་སྤང་སྟེ། མི་<sup>3</sup>ལས་གྱི་གནས་སྐབས་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་ནམ་

1. ལྟེ་—བཀའ་(མདོ་ཙ་ ༡༩༤) 2. ལྟེ་མེ་—བར་ 3. ལྟེ་དཔེ་ལྟར་ར་ན་—यथा स्वप्नावस्थया-

यामिति । तत्र विज्ञानाद बहिः परमाणुशो विचारयेत् = དཔེར་ན་མི་གམ་གྱི་གནས་སྐབས་

བཞིན་ནོ། དེ་ལ་ནམ་པར་ཤེས་པ་ལས་ཕྱི་རོལ་བ་དྲུག་པ་རབ་ལ་ནམ་པར་འདྲ་བར་བྱ་



ཞེས་དབྱེད་པར་བྱའོ། །དེ་ལ་ནམ་པར་ཤེས་པ་ལས་ཕྱི་རོལ་བ་རྒྱལ་བ་རབ་དུ་  
གཤེགས་པེ། རྒྱལ་བ་རབ་ནམས་ཀྱང་ཆ་ཤས་ཀྱིས་སོ་སོར་བདག་ས་ན་ནལ་འབྱོར་  
བས་དོན་དེ་དག་གི་མཐོང་ང་། །དེས་དེ་དག་མ་མཐོང་བས་འདྲི་རྒྱུ་དུ་འདྲི་  
དག་ཐམས་ཅད་ནི་སེམས་ཅམ་ཕྱེ་ཕྱི་རོལ་གྱི་དོན་མེད་དོ་རྒྱུ་དུ་སེམས་སོ། །  
འདྲི་ལྟར།

སེམས་ཅམ་ལ་ནི་རབ་བདེན་ནས།

ཕྱི་རོལ་དོན་ལ་མི་བདག་གོ། །ཞེས་དེ་སྐད་འབྱུང་བ་ནི་ཆོས་  
གཞུགས་ཅན་ལ་ནམ་པར་དོག་བ་སྤོང་བའོ་ཞེས་བྱ་བའི་ཐ་ཆོག་གོ།

དམིགས་སུ་རྒྱང་བའི་མཚན་ཉིད་དུ་གྱུར་བ་དེ་དག་<sup>1</sup>ནམ་པར་དབྱེད་ན་མི་  
དམིགས་བའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལྟར་ཆོས་གཞུགས་ཅན་<sup>2</sup>ནམས་ནམ་པར་བཤེགས་ནས་  
གཞུགས་ཅན་མ་ཡིན་པ་ནམ་པར་བཤེགས་པར་བྱ་པེ། དེ་ལ་སེམས་ཅམ་གང་  
ཡིན་པ་དེ་ཡང་གཞུང་<sup>3</sup>བ་མེད་ན་འཛིན་པར་མི་རྒྱུ་པེ། འཛིན་པ་ནི་གཞུང་བ་  
ལ་ལྟོས་བའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལྟར་བས་ན་སེམས་ནི་གཞུང་བ་དང་འཛིན་པ་ལས་  
དཔེན་ཞིང་གཉིས་སུ་མེད་པ་ཁོ་ན་<sup>4</sup>ཡིན་པར་ནམ་པར་དབྱེད་ནས་གཉིས་སུ་མེད་  
བའི་མཚན་ཉིད།

དེ་བཞིན་ཉིད་ཀྱི་དམིགས་<sup>5</sup>གནས་ནས།

སེམས་ཅམ་ལས་ཀྱང་འདྲ་བར་བྱ།

- 
1. ལྟ་བུ་—དག་ལ་ནམ་ 2. ལྟ་བུ་—ཅན་ནམ་པར་(ཅན་—ཅན་ནམས་'ནམ་པར་)  
3. ལྟ་བུ་—གཞུང་ས་ 4. ལྟ་བུ་—མཐོང་མེད་ཐུགས་འཛིན་པ་ལོ་ན་སེམས་ཀྱི་  
ཆོད་མ་འཕམ་མཚན་ཉིད། 5. ལྟ་བུ་—དམིགས་ནས་(ཆད་—དམིགས་'གནས་'ནས་)





མཐོང་བ་<sup>1)</sup>གང་ཡིན་པའོ། །དེ་སྐད་མདོ་ལས་<sup>2</sup>ཀྱང་གསུངས་ཏེ། “དོན་དམ་པ་  
མཐོང་བ་གང་ཞེ་ན། ཆོས་ཐམས་ཅད་མཐོང་བ་མེད་པ་གང་ཡིན་པའོ།” ཞེས་  
འབྱུང་ངོ་། །འདིར་དེ་ལྟ་བུའི་མཐོང་བ་མེད་པ་ལ་དགོངས་ཏེ། མེ་མཐོང་བ་  
ཞེས་བཀའ་སྤྱུལ་བྱ། །མིག་བཅུ་མས་བ་དང་། དཔུང་ངོ་ལ་སོགས་པ་ལྟ་བུ་  
ཀྱིན་མ་ཆང་བ་དང་། ཡིད་ལ་མི་བྱེད་པས་མི་མཐོང་བ་ནི་མ་ཡིན་ནོ།

དེ་བས་ན་དངོས་པོར་མངོན་པར་ཞེན་པ་ལ་སགས་<sup>3</sup>པ་ཕྱིན་ཅི་འོག་གི་བག་  
ཆགས་མ་སྤངས་པས་འདྲ་ཤེས་མེད་པའི་སྒྲིམས་པར་འཇུག་པ་ལ་སོགས་པ་……  
ལས་ལངས་པ་བཞིན་ཀྱང་ས་པ་ལ་སོགས་པ་མངོན་པར་ཞེན་པའི་ཅུ་བ་ཅན་……  
འདྲོད་ཆགས་ལ་སོགས་པ་ཉིན་མོངས་པའི་ཚེ་ཡང་འབྱུང་བའི་ཕྱིར་ནལ་འབྱུང་……  
པ་མ་གྲོལ་བ་ཉིད་ཀྱི་འབྱུང་ངོ་། །འདྲོད་ཆགས་ལ་སོགས་པའི་ཅུ་བ་ནི་<sup>4</sup>དངོས་  
པོ་ལ་མངོན་པར་ཞེན་པ་ཡིན་ནོ། ཞེས་འཕགས་པ་བདེན་པ་གཉིས་བརྟན་པ་  
(སོགས་<sup>5</sup>)ལས་ཀྱང་བཀའ་སྤྱུལ་ཏོ། །ནམ་པར་མི་དྲིག་པ་ལ་འཇུག་པའི་གཞུང་  
ལས།<sup>7</sup> “ཡིད་ལ་མི་བྱེད་པས་གཞུགས་ལ་སོགས་པའི་མཚན་མ་སྤྱོད་ངོ་།”  
ཞེས་གསུངས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་ཤེས་རབ་ཀྱིས་བདགས་ན་མི་དཔྱད་པས་……  
གང་ཡིན་པ་<sup>8</sup>དེ། དེར་ཡིད་ལ་མི་བྱེད་པར་དགོངས་ཀྱིས། ཡིད་ལ་བྱེད་པ་  
མེད་པ་ཅུ་མ་ནི་མ་ཡིན་དེ། འདྲ་ཤེས་མེད་པའི་སྒྲིམས་པར་འཇུག་པ་ལ་སོགས་

- 
1. བོད་སྐད་བཞེ་ཀར་ཅི་ཡང་མཐོང་བ་མེད་པ་ཞེས་གསལ་ཡང་། རྒྱ་དབེར་‘सत्यदर्शनम्’ = བདེན་  
པ་མཐོང་བ་ཞེས་གསལ་པ་བཞིན་བཀོད་དོ། 2. ལྟེ་—བཀའ་(མདོ་‘མ’ ཚངས་པ་བྱུང་བར་སེམས་  
ཀྱིས་བྱས་པ། ༤༡ ) 3. ལྟ་བུ་—སོགས་ཕྱིན་ 4. ལྟ་བུ་—ནི་དངོན་པར་(ཆད་—ནི་དངོས་  
པོ་ལ་མངོན་པར་) 5. རྒྱ་དབེར་—निर्दोषादी = བརྟན་པ་སོགས། 6. ‘ཀྱང་’—རྒྱ་དབེར་མད་  
7. ལྟེ་—བཀའ་(མདོ་‘མ’<sup>3</sup>) 8. ལྟ་བུ་—བ་དེར་ཡིད་

པ་ལྟར་ཐོག་མ་མེད་པའི་དུས་ནས་གཞུགས་ལ་སོགས་པ་ལ་མངོན་པར་ཞེན་པའི་  
ཡིད་ལ་བྱེད་པ་སྤངས་པ་ཙམ་གྱིས་སྤོང་བ་ནི་མ་ཡིན་ནོ།

ཐེ་ཚོམ་མ་སྤངས་པར་ནི་སྤོན་དམིགས་པའི་གཞུགས་ལ་སོགས་པ་ལ་མངོན་  
པར་ཞེན་པའི་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་ཡོངས་སུ་སྤང་བར་མི་བྱས་ཏེ། མེ་མ་སྤངས་པར་  
ཆ་བ་སྤང་དུ་མི་རུང་བ་བཞིན་ནོ། །འདི་ལྟར་གཞུགས་ལ་སོགས་པར་ནམ་པར་  
རྟོག་པ་(1ཡོག་པ་)འདི་དག་ཆོར་མ་ལ་སོགས་པ་བཞིན་དུ་སེམས་ལས་ལག་.....  
པས་དབྱང་ཞིང་བསལ་དུ་མི་རུང་སྟེ། (2ཅི་ཞེན་)ཐེ་ཚོམ་གྱིས་བོན་སྤང་དགོས་  
པའི་ཕྱིར་རོ། །ཐེ་ཚོམ་གྱིས་བོན་དེ་ཡང་ནལ་འབྱོར་པའི་དྲིང་ངེ་འཛིན་གྱི་སྤང་  
བ་བྱུང་སྟེ། ཤེས་རབ་ཀྱི་མིག་གིས་བདགས་ན་གཞུགས་ལ་སོགས་པ་སྤང་  
དམིགས་པ་དམིགས་སུ་རུང་བའི་མཚན་ཉིད་དུ་གྱུར་བ་དེ་དག་མི་དམིགས་པའི་...  
ཕྱིར་ཐག་པ་ལ་3སྒྲུལ་དུ་ཤེས་པ་བཞིན་དུ་སྤང་གི། །གཞན་དུ་མ་ཡིན་ནོ། །  
དེའི་4ཆོ་ཐེ་ཚོམ་གྱིས་བོན་དང་བྲལ་བས་གཞུགས་ལ་སོགས་པའི་མཚན་མ་ཡིད་  
ལ་བྱེད་པ་སྤོང་བྱས་པར་འགྱུར་ཏེ། གཞན་དུ་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ཏེ།  
དྲིང་ངེ་འཛིན་གྱི་སྤང་བ་མ་བྱུང་། ཤེས་རབ་ཀྱི་མིག་གིས་མ་བརྟམས་ན་ཐུན་ཁུང་  
ན་འདུག་པའི་མི་ལྟར་ཁྲིམ་གྱི་ནང་ན་ཡོད་པའི་བྱམ་པ་ལ་སོགས་པ་སོམ་ཉི་ཟ་...  
པར་གྱུར་པ་བཞིན་དུ་ནལ་འབྱོར་བ་ཡང་གཞུགས་ལ་སོགས་པ་ཡོད་པར་སོམ་...

- 
1. ཐེ་ཚོ་—པ་འདི་དག་ (ཆད་—རྟོག་པ་ 'ལོག་པ་'འདི་དག་) གྱི་དཔེར་ཡང་ 'मिथ्याकल्प = རྟམ་  
པར་རྟོག་པ་'ལོག་པ་'ཞེས་གསལ། 2. གྱི་དཔེར་—ཀི་ཏཱ་ཱི = ཅ་ཞེན་ 3. ཐུ་པེ་—པ་ལས་  
4. གྱི་དཔེར་—तथा = དེ་ལྟར་



ཉི་ཟླ་བ་ལྷོག་པར་མི་འགྱུར་རོ། །དེ་མ་ལོག་ན་མིག་<sup>1</sup>རབ་རིབ་ཀྱི་སྐྱེན་མ་བསལ་  
བ་བཞིན་དུ་གཟུགས་ལ་སོགས་པ་མི་བདེན་<sup>2</sup>ལ། མངོན་པར་ཞེན་པ་འབྱུང་སྟེ་  
ཅིས་ཀྱང་མི་སྒྲིགས་སོ། །

དེ་ལྟ་བུས་ན་དྲིང་ངེ་འཛིན་གྱི་ལག་གིས་སེམས་བརྒྱང་དེ་ཤིན་དུ་ཆ་སྤྱ་བའི་...  
ཤེས་རབ་ཀྱི་མཚན་གྱིས་གཟུགས་ལ་སོགས་པ་ལོག་པར་<sup>3</sup>ནམ་པར་རྟོག་པའི་...  
ས་བོན་གྱི་<sup>4</sup>ཟུག་<sup>5</sup>ཏུ་སེམས་དེ་ལ་ཡོད་པ་བསལ་བར་བྱའོ། །དེ་ལྟར་བྱས་ན་  
ཙུ་བ་ནས་སྤྱང་བའི་ཤིང་དག་ས་ལས་མི་སྐྱེ་བ་བཞིན་དུ་ཙུ་བ་མེད་པས་ན་ལོག་...  
བར་ནམ་པར་རྟོག་པའི་སེམས་ཀྱང་སྐྱེ་བར་མི་འགྱུར་རོ། །དེ་བས་ན་སྐྱིབ་པ་  
སྤྱང་<sup>7</sup>བའི་ཕྱིར་ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་རྒྱང་དུ་འབྲེལ་བར་འཇུག་པའི་ལམ་...  
བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྤྱུལ་དེ། དེ་གཉིས་ནི་ཡང་དག་པའི་ཡེ་ཤེས་ནམ་  
པར་མི་རྟོག་པའི་རྒྱ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་སྐད་<sup>8</sup>དུ།

ཚུལ་བྲིམས་ལ་ནི་གནས་ནས་དྲིང་ངེ་འཛིན་འཐོབ་སྟེ།

དྲིང་ངེ་འཛིན་ཐོབ་ནས་ཀྱང་ཤེས་རབ་སྒྲོམ་<sup>9</sup>པར་བྱེད།

ཤེས་རབ་ཀྱིས་<sup>10</sup>ནི་ཡེ་ཤེས་ནམ་པར་དག་པ་ཐོབ།

ཡེ་ཤེས་ནམ་པར་དག་པས་ཚུལ་བྲིམས་སྤུན་སྤུམ་ཚོགས།

ཞེས་བཀའ་སྤྱུལ་དོ། །

འདི་ལྟར་གང་གི་ཚོ་ཞི་གནས་ཀྱིས་དམིགས་པ་ལ་སེམས་བདེན་པར་བྱས་

- 
1. 'མིག'—ཐུ་དཔེར་མེད། 2. ཐུ་དཔེར་—अयुक्तोऽलीकरूपादय = མི་བདེན་ཅིང་བརྒྱན་པའི་  
གཟུགས་ལ་སོགས་པ། 3. ཐུ་པེ—པར་རྟོག་པའི་ 4. ཐུ་པེ—གྱུས་  
5. 'ཟུག་ཏུ'—ཐུ་དཔེར་མེད་ 6. ཐུ་པེ—བཞིན་ཙུ་ 7. ཐུ་པེ—སྤངས་ 8. ཐུ་—བཀའ་(དཀོན་  
བརྟེན་—ཆ་ལོན་སྤང་གི་ལུང་—༡༩༩) 9. ཐུ་པེ—བསྒྲོམ་ 10. ཐུ་པེ—གྱེ་

བ་དེའི་ཚེ་ཤེས་རབ་ཀྱིས་རབ་དུ་བརྟགས་ན་ཡང་དག་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྤང་བ་.....  
 འབྱུང་ཤི། དེའི་ཚེ་སྤང་བ་འབྱུང་བས་ཐུན་པ་བསལ་བ་བཞིན་དུ་སྦྱོབ་པ་འབྱུང་<sup>1</sup>  
 འོ། །དེ་གཉིས་ཀྱི་ཡང་མིག་དང་སྤང་བ་བཞིན་དུ་ཡང་དག་པའི་ཡེ་ཤེས་འབྱུང་  
 བ་ལ་ཕན་ཚུན་མཐུན་པར་གནས་པ་ཡིན་གྱི། སྤང་བ་དང་ཐུན་པ་བཞིན་དུ་མི་  
 མཐུན་པ་མ་ཡིན་ནོ། །དྲིང་ངེ་འཛིན་ནི་ཐུན་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་མ་ཡིན་དེ། ཅི་ཞེ་ན།  
 སེམས་ཅེ་གཅིག་པའི་མཚན་ཉིད་དོ། །དེ་ནི་མཉམ་པར་བཞག་ན་ཡང་དག་པ་ཆེ་  
 ལྷ་བ་བཞིན་དུ་<sup>2</sup>རབ་དུ་ཤེས་སོ། །ཞེས་བཀའ་སྩལ་བའི་ཕྱིར་དེ་ཤེས་རབ་དང་  
 ཤིན་དུ་མཐུན་པ་ཡིན་གྱི། མི་མཐུན་པ་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལྷ་བས་<sup>3</sup>ན་མཉམ་པར་  
 བཞག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་བརྟགས་ན་ཆོས་ཐམས་ཅད་མི་དམིགས་པ་གང་ཡིན་....  
 བ་དེ་ཉིད་<sup>4</sup>མི་དམིགས་པའི་དམ་པའོ། །ནལ་འབྱུང་བ་ནམས་ཀྱི་<sup>5</sup>གནས་  
 སྐབས་ཀྱི་མཚན་ཉིད་དེ་འདྲ་བ་དེ་ནི་ལྷན་གྱིས་གྲུབ་པ་ཡིན་དེ། དེའི་པ་རལ་དུ་  
 བལྟ་བར་བྱ་བ་གཞན་མེད་པའི་ཕྱིར་འོ། །ཞི་བ་ནི་ཡོད་པ་དང་མེད་པ་ལ་སོགས་  
 བ་ནམ་པར་དོག་པའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་སྒྲིམ་པ་ཐམས་ཅད་ཉེ་བར་ཞི་བའི་ཕྱིར་འོ། །  
 འདི་ལྷར་གང་གི་ཆོ་ནལ་འབྱུང་བས་ཤེས་རབ་ཀྱིས་བརྟགས་ན་དངོས་པོ་འི་  
 ངོ་བོ་ཉིད་གང་ཡང་མི་དམིགས་པ་དེའི་ཚེ་དེ་ལ་དངོས་པོར་<sup>6</sup>ནམ་པར་དོག་པ་མི་...  
 འབྱུང་བ་ཉིད་དོ། །དངོས་པོ་མེད་པ་ནམ་པར་དོག་པ་ཡང་དེ་ལ་མེད་པ་ཉིད་དོ། །

1. གྱི་དཔེ་དེ་—‘अवतरणम् अवहीयते = སྦྱོབ་པ་འབྱུང་ནི་’ཞེས་སམ་སྦྱོབ་པ་འབྱུང་འོ། ། ཞེས་གསལ་  
 ཡང་བོད་པའི་ཐུན་པ་བཞི་ཀའི་ནང་‘སྦྱོབ་པ་འབྱུང་འོ། ། ཞེས་པ་ཀོད་ཡོད་པ་དེ་ནི་གཞུང་གི་  
 བཙུན་དོན་དང་འགལ་བས་མི་འཐད་དོ། ། 2. ལྷ་བེ་—དུ་ཤེས་ 3. ལྷ་བེ་—བས་མཉམ་  
 (ཆད་—བས་ན་མཉམ་) 4. ལྷ་བེ་—ཉིད་དམིགས་(ཆད་སྒྲིན་—ཉིད་མི་དམིགས་)  
 5. ལྷ་ཚེ་—ཀྱི་ཞི་གནས་སྐབས་’ཞེས་གསལ་ཡང་‘ཞི་གནས་’ཞེས་པ་གྱི་དབར་མེད་  
 6. ལྷ་བེ་—པོ་ནམ་ 7. ལྷ་བེ་—ཉིད་དེ་



གཤམ་ཏེ་བརྒྱུ་ལ་དངོས་པོ་འགའ་ཞིག་མཐོང་བར་གྱུར་ན་ནི་དེ་ལྟ་ན་ནི་བཀག་པས་  
 དངོས་པོ་མེད་པར་ནམ་པར་རྟོག་པ་འབྱུང་ངོ་། །གང་གི་ཆོ་ནལ་འབྱུར་བས་  
 ཤེས་རབ་ཀྱི་མིག་གིས་བརྟགས་ན་དུས་གསུམ་དུ་ཡང་དངོས་པོ་མི་དམིགས་པ་……  
 དེའི་ཆོ་ཅི་ཞིག་བཀག་པས་དངོས་པོ་མེད་པར་ནམ་པར་རྟོག་པར་བྱེད། དེ་བཞིན་  
 དུ་ནམ་པར་རྟོག་པ་གཞན་དག་ཀྱང་དེའི་ཆོ་དེ་ལ་མི་འབྱུང་བ་ཉིད་དེ། ཡོད་པ་  
 དང་མེད་པ་ནམ་པར་རྟོག་པ་གཉིས་ཀྱིས་ནམ་པར་རྟོག་པ་ཐམས་ཅད་ལ་ཁྱབ་པའི་  
 ཕྱིར་དེ། ཁྱབ་པར་བྱེད་པ་མེད་པས་ཁྱབ་པར་བྱ་བ་ཡང་མེད་པའི་ཕྱིར་དོ། །  
 དེ་ནི་ནམ་པར་མི་རྟོག་པའི་ནལ་འབྱུར་དམ་པ་ཡིན་དེ། དེ་ལ་གནས་པའི་ནལ་  
 འབྱུར་བ་ནི་ནམ་པར་རྟོག་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱབ་པས། ཉོན་མོངས་པའི་སྒྲིབ་པ་<sup>1</sup>  
 དང་ཤེས་བྱའི་སྒྲིབ་པ་ཡང་དག་པར་སྤོང་ངོ་། །འདི་ལྟར་ཉོན་མོངས་པའི་སྒྲིབ་  
 པ་ནི་མ་སྒྲིས་པ་དང་མ་འགགས་པའི་དངོས་པོ་ནམས་ལ་དངོས་པོ་ལ་སོགས་པར་  
 ཕྱིན་ཅི་ཡོག་པའི་ཙ་བ་སྟེ་རྒྱ་ཡིན་ནོ། །ཞེས་འཕགས་པ་བདེན་པ་གཉིས་བསྟན་པ་  
 ལ་སོགས་པ་ལས་བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྤྱུལ་དོ། །

ནལ་འབྱུར་གོམས་པ་འདྲིས་དངོས་པོ་ལ་སོགས་པ་ནམ་པར་རྟོག་པ་ཐམས་  
 ཅད་སྤངས་པའི་ཕྱིར་དངོས་<sup>2</sup>པོ་ལ་སོགས་པར་ཕྱིན་ཅི་ཡོག་པ་མ་རིག་པའི་ངོ་……  
 བོ་ཉིད་ཉོན་མོངས་པའི་སྒྲིབ་པའི་ཙ་བ་སྤོང་སྟེ། དེའི་ཕྱིར་ཙ་བ་བཅད་པས་ཉོན་  
 མོངས་པའི་སྒྲིབ་པའི་ཙ་བ་<sup>3</sup>ཡང་དག་པར་སྤོང་ངོ་། །ཇི་སྐད་དུ་ཡང་འཕགས་  
 པ་བདེན་པ་གཉིས་བསྟན་པ་ལས་<sup>4</sup>གསུངས་དེ། “འཇམ་དབལ་ཇི་ལྟར་ཉོན་

1. ཉོན་མོངས་པ་འདྲིས་དངོས་པོ་ལ་སོགས་པ་ནམ་པར་རྟོག་པ་ཐམས་ཅད་སྤངས་པའི་ཕྱིར་དངོས་པོ་ལ་སོགས་པར་ཕྱིན་ཅི་ཡོག་པ་མ་རིག་པའི་ངོ་……  
 2. ཉོན་མོངས་པའི་སྒྲིབ་པའི་ཙ་བ་སྤོང་སྟེ། དེའི་ཕྱིར་ཙ་བ་བཅད་པས་ཉོན་མོངས་པའི་སྒྲིབ་པའི་ཙ་བ་ཡང་དག་པར་སྤོང་ངོ་། །  
 3. ཉོན་མོངས་པའི་སྒྲིབ་པའི་ཙ་བ་སྤོང་སྟེ། དེའི་ཕྱིར་ཙ་བ་བཅད་པས་ཉོན་མོངས་པའི་སྒྲིབ་པའི་ཙ་བ་ཡང་དག་པར་སྤོང་ངོ་། །  
 4. ཉོན་མོངས་པའི་སྒྲིབ་པའི་ཙ་བ་སྤོང་སྟེ། དེའི་ཕྱིར་ཙ་བ་བཅད་པས་ཉོན་མོངས་པའི་སྒྲིབ་པའི་ཙ་བ་ཡང་དག་པར་སྤོང་ངོ་། །

མོངས་པ་ནམས་འདུལ་བར་འགྱུར། ཇི་ལྟར་ཉོན་མོངས་པ་ནམས་ཡོངས་སུ་ཤེས་  
 པ་ཡིན། འཇམ་དབལ་གྱིས་སྦྱས་པ། དོན་དམ་པར་གིན་དུ་མ་སྦྱེས་པ་དང་།  
 མ་བྱུང་བ་དང་། དངོས་པོ་མེད་པའི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ལ་ཀུན་རྫོབ་དུ་ཡང་དག་  
 པ་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིན་ཅི་ལོག་གོ། །ཡང་དག་པ་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིན་ཅི་ལོག་དེ་ལས་  
 ཀུན་དུ་རྟོག་པ་དང་། རྣམ་པར་རྟོག་པའོ། །ཀུན་དུ་རྟོག་པ་དང་། རྣམ་པར་  
 རྟོག་པ་དེ་ལས་ཚུལ་བཞིན་མ་ཡིན་པ་<sup>1</sup>ཉིད་ཡིད་ལ་བྱེད་པའོ། །ཚུལ་བཞིན་མ་ཡིན་  
 པ་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་དེ་ལས་བདག་དུ་སྒྲོ་འདོགས་པའོ། །བདག་དུ་སྒྲོ་འདོགས་པ་  
 དེ་ལས་ལྟ་བུ་ཀུན་ནས་ལྡང་ངོ། །ལྟ་བུ་ཀུན་ནས་ལྡང་བ་དེ་ལས་ཉོན་མོངས་པ་  
 རྣམས་འབྱུང་ངོ། །ལྟའི་བྱ་དོན་དམ་པར་ཆོས་ཐམས་ཅད་གིན་དུ་མ་སྦྱེས་པ་དང་།  
 མ་བྱུང་བ་དང་། དངོས་པོ་མེད་པར་རབ་དུ་ཤེས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་དོན་དམ་  
 པར་ཕྱིན་ཅི་མ་ལོག་པའོ། །གང་དོན་དམ་པར་ཕྱིན་ཅི་མ་ལོག་པ་དེ་མི་རྟོག་།  
 རྣམ་པར་མི་རྟོག་གོ། གང་མི་<sup>2</sup>རྟོག་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པ་དེ་ཚུལ་བཞིན་ལ་  
 བཞུགས་<sup>3</sup>པའོ། །གང་ཚུལ་བཞིན་ལ་ཞུགས་པ་དེ་བདག་དུ་སྒྲོ་འདོགས་པར་  
 མི་འགྱུར་རོ། །གང་བདག་དུ་སྒྲོ་འདོགས་པར་མི་འགྱུར་བ་དེ་ལྟ་བུ་ཀུན་ནས་  
 ལྡང་བར་མི་འགྱུར་ཏེ། དོན་དམ་པར་སྤངས་ལས་འདས་པར་ལྟ་བུའི་བར་  
 གྱི་ལྟ་བུ་ཀུན་ནས་ལྡང་<sup>4</sup>བ་ཡང་<sup>5</sup>འབྱུང་བར་མི་འགྱུར་རོ། །དེ་ལྟར་སྦྱོ་བ་མེད་  
 པར་གནས་པ་དེའི་ཉོན་མོངས་པ་རྣམས་གིན་དུ་བྱུལ་བར་བལྟ་<sup>6</sup>བར་བྱ་སྟེ། དེ་ནི་

1. ལྟ་བུ་—པ་ཡིད་ 2. 'མི་རྟོག་'—ཕྱི་དཔེར་མེད་ 3. ལྟ་བུ་—ཞུགས་ 4. ལྟ་བུ་—(ཞུགས་—ལྡང་  
 'བའི་བར་གྱི་ཀུན་ནས་ལྡང་བ་') 5. ཕྱི་དཔེར་—མཐོང་ཆེན་པོ་ལྟ་བུ་ = ལྟ་བུ་ཀུན་ནས་ལྡང་བ་  
 ཐམས་ཅད་ 6. ལྟ་བུ་—ལྟ་བུ་



ཉོན་མངས་པ་འདུལ་བ་ཞེས་བྱའོ། །ལྷའི་བྱ་གང་གི་ཆེ་ཉོན་མངས་པ་ནམས་  
སྤང་བ་མེད་པའི་ཡེ་<sup>1</sup>ཤེས་ཀྱིས་དོན་དམ་པར་ཤིན་དུ་སྤྱོད་པ་དང་། །ཤིན་དུ་  
མཚན་མ་མེད་པ་དང་། ཤིན་དུ་དངོས་པོ་མེད་པ་རབ་དུ་ཤེས་པ་དེའི་ཆེ་ལྷའི་བྱ་  
ཉོན་མངས་པ་ནམས་ཡོངས་སུ་ཤེས་པ་ཡིན་ནོ། །ལྷའི་བྱ་འདི་ལྟ་སྟེ། དཔེར་ན་  
གང་སྐུལ་གདུག་པའི་རིགས་རབ་དུ་ཤེས་པ་དེས་སྐུལ་གདུག་པ་དེའི་དུག་ཞི་བར་  
བྱེད་དོ། །ལྷའི་བྱ་དེ་བཞིན་དུ་ཉོན་མངས་པ་ནམས་ཀྱི་རིགས་རབ་དུ་ཤེས་པ་དེའི་  
ཉོན་མངས་པ་ནམས་རབ་དུ་ཞི་བར་འགྱུར་རོ། །ལྷས་བྱས་སྦྱས་པ། འཇམ་  
དབལ་ཉོན་མངས་པར་<sup>2</sup>གྱུར་པ་ནམས་ཀྱི་རིགས་<sup>3</sup>གང་། འཇམ་དབལ་གྱིས་  
སྦྱས་པ། ལྷའི་<sup>4</sup>བྱ་དོན་དམ་པར་ཤིན་དུ་མ་སྦྱོས་པ་དང་། མ་བྱུང་བ་དང་།  
དངོས་པོ་མེད་པའི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ལ་ཀྱན་དུ་དོག་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་ཉོན་མངས་  
པ་ནམས་ཀྱི་རིགས་ཡིན་ནོ།” ཞེས་བྱ་ཆེར་འབྱུང་ངོ་།

དངོས་པོ་ལ་སོགས་པར་སྤྱན་ཅི་ལོག་པས་སྤྱན་ཅི་ལོག་པ་མཐའ་དག་ལ་  
ཁུབ་པའི་སྤྱིར། དེ་སྤངས་ན་སྤྱན་ཅི་ལོག་ཐམས་ཅད་སྤྱོད་པར་འགྱུར་བའི་སྤྱིར་  
ཤེས་བྱའི་སྦྱིབ་པ་ཡང་འདིས་ཡང་དག་པར་སྤྱོད་པར་འགྱུར་དེ། སྦྱིབ་པ་ནི་  
སྤྱན་ཅི་ལོག་གི་མཚན་ཉིད་ཡིན་པའི་སྤྱིར་རོ། །ཤེས་བྱའི་སྦྱིབ་པ་སྤངས་ན་གཏེ་  
མེད་པའི་སྤྱིར་ཉི་མའི་འོད་སྤྱིན་(ཉལ་སོགས་པའི་སྦྱིབ་པ་) དང་བུལ་བའི་ནམ་……  
མཁའ་ལ་ཐམས་ཅད་དུ་ཐོགས་པ་མེད་པར་སྤང་བ་བཞིན་དུ་(ཆོས་འབྱོར་མངོན་……  
སྦྱས་བྱི) ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྤང་བ་འབྱུང་ངོ། །འདི་ལྟར་ནམ་པར་ཤེས་པ་ནི་དངོས་

1. ལྷ་པོ་—ཤེས་རབ་ 2. ལྷ་པོ་—བ་བྱུར་ 3. ལྷ་པོ་—རྟེན་འཇམ (ཆད་—རིགས་‘གང་’ འཇམ་དབལ་)
4. ‘ལྷའི་བྱ་’—ལྷ་དཔེར་མེད། 5. ལྷ་དཔེར་—མེག་ལྷ་པོ་འཇམ་པའི་སྦྱིབ་པ་
6. ལྷ་དཔེར་—ཧོག་ཀྱི་འཇམ་པའི་སྦྱིབ་པ་ = ལྷ་འབྱོར་མངོན་སྦྱས་བྱི་ཡེ་ཤེས་







ལམ་དག་གིས་ནམ་པར་སྤངས།” །ཞེས་གསུངས་དེ། སྤྱིང་ཇི་ཆེན་བོས་སེམས་  
 ཅན་མཐའ་དག་གི་དོན་(1)ཕྱ་བའི་ཕྱིར་) བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སྒྲོན་ལམ་བདུབ་  
 བ་གང་ཡིན་པའི་སྒྲོན་ལམ་དེའི་སྟོབས་ཀྱིས་ཕྱི་ཕྱིར་ཞིང་སྒྲིན་པ་ལ་སོགས་པ་……  
 དགོ་བ་ལ་གོམས་པར་བྱས་པས་གནས་<sup>2</sup>སྒྲུབས་དེ་དེ་ལྟར་ཡོངས་སུ་དག་པར་……  
 འགྱུར་དེ། དེས་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དུ་ཤེས་ཀྱང་སེམས་  
 ཅན་མཐའ་དག་(3)གི་བཞུས་པ་མ་བཞེས་གི་བར་) འཁོར་བའི་ཉེས་པ་ནམས་……  
 ཀྱིས་མི་གོས་པར་འཁོར་བ་ཇི་སྟོན་པར་གནས་པ་ཡིན་ནོ།

ཇི་<sup>4</sup>ལྟར་སྒྲུན་གྱིས་གྲུབ་ཅིང་ཞི་བ་ཡིན་ཞེ་ན།

ཡོ་ཤེས་དམ་པ་བདག་མེད་པར། །

སྤང་བ་མེད་པས་མཐོང་བར་འགྱུར། །ཞེས་འདྲར་<sup>5</sup>རྒྱ་བཀའ་

སྤུལ་དོ། །འདི་ལྟར་ནང་<sup>6</sup>གི་ཤེས་བྱ་སྤྱོད་པ་ནམས་ཀྱི་<sup>7</sup>གཉིས་མེད་པའི་མཆན་ཉིད་  
 ཀྱི་ཤེས་པ་དམ་པ་མཆོག་ཡིན་པར་འདོད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་བདག་མེད་དོ། །  
 ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་ནལ་འབྱོར་པས་གཉིས་མེད་པར་སྤང་བ་མེད་པའི་ཡོ་ཤེས་……  
 ཀྱིས་མཐོང་ངོ་། །དེ་པན་ཆད་བཟླ་<sup>8</sup>བར་བྱ་བ་མེད་པས་ན་སྒྲུན་གྱིས་གྲུབ་པའོ། །  
 ནམ་པར་དོག་པ་སྤྲོ་<sup>9</sup>ཆོགས་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བས་ཞི་བའོ།

གཤམ་དེ་ཇི་སྟོན་དེའི་ཆོག་པར་དེ་ལྟར་མཐོང་བའི་ནམ་འབྱོར་པ་དེ་སུ་ཡོད་ཅེ་ན།

1. ལྟ་དཔེར་—‘सर्वसत्त्वार्थकरणाय = མེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་དོན་བཤི་བྱེད་’ ཞེས་གསལ་  
 ཡང་། བོད་དཔེར་—‘དོན་ལ་ལྟ་བར་’ ཞེས་གསལ། 2. ‘གནས་སྒྲུབས་’—ལྟ་དཔེར་མེད་
3. ལྟ་དཔེར་—‘सकलसत्त्वापेक्षा न व्यावर्तते यावत् = མེམས་ཅན་མཐའ་དག་གི་བཞུས་པ་མ་བཞེས་  
 གི་བར་’ ཞེས་གསལ་ཡང་། བོད་དཔེར་‘མཐའ་དག་ལ་བློ་བྱོལ་ཅིང་’ ཞེས་གསལ།
4. ཐུ་ཐུ་མེ་—དེ་ལྟར་ 5. ཐུ་མེ་—འདྲར་བཀའ་ 6. ལྟ་དཔེར་—‘अद्वयवादिनां = གཉིས་མེད་  
 བར་སྤྱོད་པ་ནམས་’ 7. ཐུ་མེ་—ཀྱིས་ 8. ཐུ་མེ་—ལྟ་བར་ 9. ‘ཐུ་ཆོགས་’—ལྟ་དཔེར་མེད་



བདེན་<sup>1</sup>དེ། དེ་ནི་དམ་པར་ན་བདག་ལ་སོགས་པ་རང་དབང་ཡོད་པའི་ནལ་འབྱུང་  
 བ་གང་ཡང་མེད་དོ། །མཐོང་བ་ཅི་ཡང་མེད་དོ། །དེ་ལྟ་མེད་ཀྱི་ཀུན་རྫོབ་དུ་རྩི་  
 ལྟར་གཞུགས་ལ་སོགས་པ་ཡུལ་གྱི་ནམ་<sup>2</sup>པའི་ཤེས་པ་འབྱུང་བ་ཙམ་གྱིས་ནམ་  
 བར་ཤེས་པ་ཉིད་ལ་དེ་ལྟ་དེ་ལྟར་འཇིག་རྟེན་ན་ལྟ་སྤྱིན་ནམ་མཆོད་སྤྱིན་གྱི་ཤེས་  
 བས་མཐོང་ངོ་ཞེས་ཐ་སྙད་འདོགས་དེ། བདག་ལ་སོགས་པ་ནི་གང་ཡང་མེད་  
 དོ། །དེ་བཞིན་དུ་འདིར་ཡང་གཉིས་མེད་པའི་ཡེ་ཤེས་སྣང་བ་མེད་པའི་ཤེས་<sup>3</sup>  
 བ་ཁོ་ན་འབྱུང་བ་ན།<sup>4</sup> སྣང་བ་མེད་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱིས་མཐོང་ངོ་ཞེས་དེ་ལྟར་མང་  
 འདོགས་སོ། །ཆོས་ཐམས་ཅད་དེ་ནི་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་མེད་ཀྱི། ཀུན་  
 རྫོབ་དུ་ནལ་འབྱུང་བའི་ཤེས་པ་འཇམ། སོ་སོ་འི་སྤྱོད་པའི་ཤེས་པ་གཞན་ཡང་  
 རུང་སྟེ། མི་འདོད་པ་མ་ཡིན་ནོ། །ད་སྐད་<sup>5</sup>དུ་འཕགས་པ་བདེན་པ་གཉིས་  
 བསྟན་པ་ལས་<sup>6</sup>བཀའ་སྤྱུལ་དེ། “དེ་ནི་<sup>7</sup>དམ་པར་ཤིན་དུ་དངོས་པོ་མེད་ཀྱང་  
 ཀུན་རྫོབ་དུ་ཡང་ལམ་སྒྲོས་བར་བྱེད་དོ།” ཞེས་<sup>8</sup>བཤད་པ་ལ་སོགས་པ་འབྱུང་ངོ་།

དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་ཉན་ཐོས་དང་། རང་སངས་རྒྱས་དང་། དྲང་ཆུབ་སེམས་  
 དབའ་དང་། སངས་<sup>9</sup>རྒྱས་དང་། སོ་སོ་འི་སྤྱོད་པོ་ལ་སོགས་པའི་བྱེ་<sup>10</sup>བྱག་  
 ཀྱང་ཅིས་དབྱེ། འདི་ལྟར་གང་ལ་ཀུན་རྫོབ་དུ་ཡང་རྒྱ་མེད་པ་དེ་ནི་ཀུན་རྫོབ་དུ་  
 ཡང་མི་སྤྱོད་སྟེ། དེ་བོང་གི་རྩ་ལ་སོགས་པ་བཞིན་ནོ། །གང་ལ་རྒྱ་<sup>11</sup>ཡོད་པ་  
 དེ་དེ་ནི་དམ་པར་བརྟན་པ་ཡིན་ཀྱང་སྤྱོད་པ་ཁོ་ན་སྟེ། སྤྱོད་པ་དང་། གཞུགས་

1. ‘བདེན་དེ’—ཀྱི་དཔེར་མེད་ 2. ལྟ་ཅི་ལྟ་—བར་ཤིས་ 3. ‘ཤེས་པ’—ཀྱི་དཔེར་མེད་

4. ལྟ་ཅི་—ནམ་ 5. ལྟ་པེ—དེ་སྐད་འཕགས་ 6. ལྟ་—བཀའ་ (མདོ་—‘མ་’ or)

7. ལྟ་པེ—དེ་དེ་ 8. ‘ཞེས་ཐ་སྙད་འདོགས་’—ཀྱི་དཔེར་མེད་ 9. ‘སངས་རྒྱས་དང་’—ཀྱི་

དཔེར་མེད་ 10. ཀྱི་དཔེར་—ཡུལ་སྤུ་= ནམ་བཞག་ 11. ‘རྒྱ’—ཀྱི་དཔེར་མེད་

བཞུན་དང་། བྲག་<sup>1</sup>ཅ་ལ་སོགས་པ་བཞིན་ནོ། །སྐྱུ་མ་ལ་སོགས་པ་ཀུན་རྒྱུ་  
 ཏུ་དེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྱུང་བ་ཡིན་ཡང་དེ་དག་བདག་མི་བཟོད་བས་དེན་དམ་  
 བར་དངོས་པོ་ཡོད་པ་ཉིད་ཏུ་མི་འབྱུང་རོ། །དེ་བས་ན་འགྲོ་བ་ཐམས་ཅད་སྐྱུ་  
 མ་ལྟ་བུ་ཁོ་ནའོ་ཞེས་གསུངས་སོ། །དེ་ལ་འདི་ལྟར་ཉོན་མོངས་པ་དང་ལས་སྐྱུ་  
 མའི་དབང་གིས་སེམས་ཅན་གྱི་སྐྱེ་བ་སྐྱུ་མ་འབྱུང་ངོ་། །དེ་བཞིན་ཏུ་ནལ་འབྱོར་  
 བ་ནམས་ཀྱི་<sup>2</sup>བསོད་ནམས་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཚོགས་སྐྱུ་མའི་དབང་གིས་ནལ་འབྱོར་  
 བའི་ཡེ་ཤེས་སྐྱུ་མ་འབྱུང་བ་ཉིད་དོ། །དེ་སྐད་ཏུ། འཕགས་པ་ཤེས་རབ་ཀྱི་  
 ས་རེལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ལས་<sup>3</sup>ཀྱང་བཀའ་སྤྱུལ་དེ། “རབ་<sup>4</sup>འབྱོར་འདི་ལྟར་ཆོས་  
 ཐམས་ཅད་ནི་སྐྱུ་པ་ཡིན་དེ། ལ་ལ་ནི་ཉོན་ཐོས་ཀྱི་སྐྱུ་པ་ལོ། །ལ་ལ་ནི་རང་  
 སངས་བྱས་ཀྱི་སྐྱུ་པ་ལོ། །ལ་ལ་ནི་བྱང་ཆུབ་སེམས་པའི་སྐྱུ་པ་ལོ། །ལ་ལ་  
 ནི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་སྐྱུ་པ་ལོ། །ལ་ལ་ནི་ཉོན་མོངས་པའི་སྐྱུ་པ་ལོ། །  
 ལ་ལ་ནི་ལས་ཀྱི་སྐྱུ་པ་ལོ། །རབ་འབྱོར་ནམ་གངས་འདིས་ཆོས་ཐམས་ཅད་  
 སྐྱུ་པ་ལྟ་བུ་ལོ།” ཞེས་འབྱུང་ངོ་།

ནལ་འབྱོར་པ་ནམས་དང་སོ་སོ་ལྟེ་བོ་ནམས་ཀྱི་བྱེ་བྲག་ནི་འདི་ཡིན་དེ།  
 དེ་དག་ནི་སྐྱུ་མ་མཁན་བཞིན་ཏུ་སྐྱུ་མ་དེ་ཅི་ལྟ་བ་བཞིན་ཏུ་ཡོངས་སུ་ཤེས་པས་……  
 བདེན་པ་ཉིད་མངོན་པར་ཞེན་པ་མེད་དོ། །དེ་བས་ན་དེ་དག་ནལ་འབྱོར་པ་ཞེས་  
 བྱའོ། །གང་དག་བྱིས་<sup>6</sup>པ་ལྟར་མོ་བ་བཞིད་ཏུ་དེ་ལ་བདེན་པ་ཉིད་མངོན་པར་  
 ཞེན་པ་དེ་དག་ནི་ཕྱིན་ཅི་ལོག་ཏུ་མངོན་པར་ཞེན་པའི་བྱིས་བྱིས་པ་ཞེས་བྱ་སྟེ།

1. 'བྲག་ཅ'—ཐུ་དཔེར་མེད་ 2. ལྟ་བུ་—ཀྱས་ 3. ཚོས་ཞེས་ངེས་ཉིད་མ་བྱུང་བ།

4. 'རབ་འབྱོར'—ཐུ་དཔེར་མེད་ 5. ལྟ་བུ་—དེས་ན་ 6. ཐུ་དཔེར་—आलपृथग्जनवत्

कीतुहलं = ཐུས་པ་སོ་སོ་ལྟེ་བོ་བཞིན་ཉིད་མོ་པ་



དེ་དག་ཐམས་ཅད་འགལ་བ་མེད་པོ། །དེ་སྐད་<sup>1</sup>དུ་འཕགས་བ་ཚོས་ཡང་དག་<sup>2</sup>

པར་སྤྱད་བ་ལས་ཀྱང་བཀའ་སྤྱུལ་དེ།

དཔེར་ན་སྒྱུ་མའི་མཁན་པོ་ཞིག །

སྒྱུ་ལ་བ་ཐར་བར་བྱ་བྱིར་བཅོམ་། །

དེས་ནི་སྤར་ནས་དེ་ཤེས་བས། །

སྒྱུ་ལ་བ་དེ་ལ་ཆགས་བ་མེད། །

སྤྱིད་གསུམ་སྒྱུ་ལ་བ་འདྲ་བར་ནི། །

ཚོགས་བའི་བྱང་ཆུབ་མཁས་པས་ཤེས། །

འགྲོ་བའི་ཆེད་དུ་གོ་བགོས་དེ། །

འགྲོ་བ་དེ་ལྟར་སྤར་ནས་ཤེས། །ཞེས་གསུངས་སོ།

དེ་ལྟར་བསྒྲུབ་པའི་རིམ་བ་འདིས་དེ་ཁོ་ན་བསྒྲུབ་པར་བྱའོ།

དེ་ལ་བྱིང་བ་དང་གོད་བ་ལ་སོགས་བ་བྱང་<sup>3</sup>ན་སྤར་བལྟན་བ་བཞིན་དུ་ཞི་

བར་བྱའོ། །གང་གི་ཆོ་ཚོས་ཐམས་ཅད་པོ་ཉིད་མེད་པར་དམིགས་བ་ལ་བྱིང་བ་

དང་གོད་བ་ལ་སོགས་བ་དང་བྲལ་ཞིང་མངོན་པར་འདུ་བྱེད་བ་མེད་པར་ཤེས་བ་

འཇུག་པར་གྱུར་བ་དེའི་ཆོ་ཞེ་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་རྒྱང་དུ་འབྲེལ་བར་འཇུག་.....

པའི་ལམ་ཚོགས་བ་ཡིན་ནོ། །དེའི་ཆོ་ཞི་སྤྱིད་དུ་ལྷན་བ་དེ་སྤྱིད་དུ་མོས་བའི་

སྟོབས་ཀྱིས་མོས་བས་སྟོད་པའི་ས་ལ་གནས་བས་བསྒྲུབ་པར་བྱའོ། །

དེ་ནས་ཇི་ལྟར་འདོད་བ་བཞིན་དུ་སྦྱིལ་མོ་ཀྱང་ས་བཞིག་པར་ལངས་ལ་འདོད་

1. ལྟ་བུ་—སྤྱད་འཕགས་ 2. ལྟེ་—བཀའ་ (མདོ་ཞ' ༤༩) 3. ལྟ་དཔེར་—ཡུའི་མཁན་པོ་  
ལང་ནའམ་སྤར་ན་

སྒྲུབ་དུ་བསམ་པར་བྱ་ཤི། ཡང་<sup>1</sup>ནི་ཆོས་འདི་དག་གསུམ་ཅན་དེ་ན་དམ་པར་ངོ་  
 བོ་ཉིད་མེད་<sup>2</sup>མེད་ཀྱི། ཀྱན་རྩེ་དུ་ཡོད་པར་བསམ་མོ། ་<sup>3</sup>སྒྲུབ་འཕགས་  
 བ་དཀོན་མཆོག་སྒྲིན་ལས་<sup>4</sup>ཀྱང་བཀའ་སྤྱུལ་དེ། “ཐུ་རྩེ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབའ་  
 བདག་མེད་བ་ལ་མཁས་བ་ཡིན་ཞེ་ན། རིགས་ཀྱི་བྱ་འདི་ལ་བྱང་ཆུབ་སེམས་  
 དབའ་ཡང་དག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་གཞུགས་ལ་སོ་སོར་དོག་ ཆོར་བ་དང་།  
 འདུ་ཤེས་དང་། འདུ་བྱེད་རྣམས་དང་། རྣམ་པར་ཤེས་བ་ལ་སོ་སོར་དོག་དེ།  
 དེ་གཞུགས་ལ་སོ་སོར་དོག་བ་ན་གཞུགས་ཀྱི་སྦྱེ་བ་མི་དམིགས། ཀྱན་<sup>5</sup>འབྱུང་  
 བ་མི་དམིགས། འགོག་བ་མི་དམིགས་སོ། ་<sup>6</sup>འབྱུང་དེ་ཆོར་བ་དང་། འདུ་  
 ཤེས་དང་། འདུ་བྱེད་རྣམས་དང་། རྣམ་པར་ཤེས་བའི་སྦྱེ་བ་མི་དམིགས།  
 (ཀྱན་འབྱུང་བ་མི་དམིགས་འགོག་བ་མི་དམིགས་) སོ། ་<sup>7</sup>འཕྱུང་དེ་ན་དམ་པར་  
 སྦྱེ་བ་མེད་པར་གནས་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་ཡིན་གྱི། <sup>8</sup>ཐུ་རྩེ་བའི་ངོ་བོ་ཉིད་  
 ཀྱིས་ནི་མ་ཡིན་ནོ།” ་<sup>9</sup>ཞེས་བྱ་ཆེར་འབྱུང་ངོ་། ་<sup>10</sup>བྱིས་པའི་སྒྲོ་ཅན་འདི་དག་  
 ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པའི་དངོས་པོ་རྣམས་ལ་(<sup>11</sup>ཐུ་རྩེ་ཅི་ཡོག་དུ་) མངོན་པར་ཞེན་པའི་  
 དབང་གིས་འཁོར་བ་ན་ཀྱན་དུ་འབྱུང་ཞིང་སྤྱུག་བསྐྱེད་སྒྲུབ་ཆོག་པའི་ཉམས་སྤྱོད་  
 མྱོང་ངོ་སྒྲུབ་དུ་སྒྲིང་རྩེ་ཆེན་པོ་<sup>12</sup>མངོན་དུ་བྱས་ལ་འདི་སྒྲུབ་དུ་བསམ་པར་བྱ་ཤི།

1. ཐུ་མེ་—ཡོང་ནི་ 2. ཐུ་མེ་—མེད་པ་ཡིན་མེད་ 3. ཐུ་མེ་—དེ་ཉམས་གསུམ་

4. ཐུ་—ཤེས་པ་ (མེད་—ཐུ་མེ་) 5. ཐུ་དཔེར་—ཀྱན་འབྱུང་དང་འགོག་པའི་གོ་རིམ་འདི་གསུམ་  
 སྤྱུག་ཏེ་བཞུགས་ཡོད། 6. ཐུ་དཔེར་དང་མེད་ཉིད་དུ་གསུམ་པ་བཞེན་འདིར་བཞུགས་ཏེ།

7. ཐུ་རྩེ་འབྱུང་དཔེར་མ་བཞེན་གཞི་ནང་ཐུ་དཔེར་པའི་ངོ་བོ་ཞེས་གསུམ་པ་ཐུ་དཔེར་དང་མེད་ཉིད་དུ་  
 ཐུ་རྩེ་འབྱུང་དཔེར་བཞེན་ཞེས་གསུམ་པ་བཞེན་འབྱུང་པར་མངོན་ནོ། 8. ཐུ་དཔེར་—འཕྱུང་པའི་  
 འཕྱུང་པའི་ཐུ་རྩེ་ཅི་ཡོག་དུ་མངོན་པར་ཞེན་པའི་ཐུ་རྩེ། 9. ཐུ་དཔེར་—ཆོས་ཀྱི་འཕྱུང་པའི་ཐུ་རྩེ་ཅི་ཡོག་དུ་





གཅོད་ལ། ཀུན་རྒྱུ་མ་བཅད་པས་སྤྱིང་ཇི་ཆེན་པོ་སྤྱོད་ཏུ་འགྲོ་ཞིང་ཕྱིན་ཅི་  
 ལོག་མེད་པ་སེམས་ཅན་གྱི་དོན་བྱེད་པ་ལ་སོགས་<sup>1</sup>པ་ལ་འཇུག་གོ <sup>2</sup> །དེ་སྐད་  
 འཕགས་པ་དགོན་མཆོག་སྤྱིན་ལས་<sup>3</sup>ཀྱང་བཀའ་སྤྱུལ་དེ། “ཇི་ལྟར་ན་བྱང་ཆུབ་  
 སེམས་དབའ་ཐོག་པ་ཆེན་པོ་ལ་མཁས་པ་ཡིན་ཞེ་ན། འདི་ལ་བྱང་ཆུབ་སེམས་  
 དབའ་བསྐྱེད་པ་ཐམས་ཅད་ལ་སྤྱོད་ཀྱང་བསྐྱེད་པ་དེ་ཡང་མི་དམིགས། བསྐྱེད་  
 པའི་ལམ་<sup>4</sup>ཡང་མི་དམིགས། གང་སྤྱོད་པ་དེ་ཡང་མི་དམིགས་དེ། གྱུ་དེ་དང་  
 ཀྱུན་དེ་དང་གཞི་དེས་ཆད་པར་ལྟ་བར་མི་ལྟུང་ངོ” །ཞེས་འབྱུང་ངོ། །འཕའ་  
 པ་ཆོས་ཡང་དག་པར་སྤྱོད་པ་ལས་<sup>5</sup>ཀྱང་བཀའ་སྤྱུལ་དེ། “བྱང་ཆུབ་སེམས་  
 དབའ་ནམས་ཀྱི་སྐྱེད་པ་གང་ཞེ་ན། བཅོམ་<sup>6</sup>ལྟན་འདས་<sup>7</sup>བྱང་ཆུབ་སེམས་དབའ་  
 ནམས་ཀྱི་ལྷས་ཀྱི་ལས་གང་ཅི་ལགས་པ་དང་། དག་གི་ལས་གང་ཅི་ལགས་པ་  
 དང་། ཡིད་ཀྱི་ལས་གང་ཅི་ལགས་པ་དེ་དག་ཐམས་ཅད་ནི་སེམས་ཅན་ཐམས་  
 ཅད་ལ་ལྟ་བུས་འཇུག་པ་ལགས་སོ། །སྤྱིང་ཇི་ཆེན་པོ་སྤྱོད་ཏུ་འགྲོ་བ་ལགས་ས།  
 སྤྱིང་ཇི་ཆེན་པོ་འདི་དབང་ཏུ་གྱུར་པ་ལགས་སོ། །སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་སྤྱོད་  
 པ་དང་བདེ་བར་བཟྱི་བའི་སྐྱེད་པའི་བསམ་པ་ལས་བྱུང་བ་ལགས་སོ། །དེ་ལྟར་  
 སྤྱོད་པར་བཟྱི་བའི་བསམ་པ་དང་ལྟན་པ་དེ་འདི་སྤྱོད་ཏུ་འབྱུང་བའི་སྤྱོད་པའི་  
 སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་ཕན་པ་<sup>8</sup>སྐྱེད་པ་དང་བདེ་བ་སྐྱེད་པའི་སྐྱེད་པ་གང་ཡིན་

1. 'སོགས་'—ཕྱི་དཔེར་མེད་ 2. ཕྱི་དཔེ་ལྟར་ན་—མཚམས་འདིར་གྲགས་གསལ་“འཇིག་རྟེན་ལས་  
 འདས་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱི་གནས་སྐབས་ཞེས་སོགས་ནས་ལམ་འབྱུང་བ་ཁོང་ཏུ་ཆད་པར་བྱུང་།” ཞེས་  
 བའི་བར་བཞུགས་ཀྱང་། གཞུང་དོན་ལ་བརྟགས་ན་བོད་དབང་བཞུགས་པ་ལྟར་ལོགས་པར་མངན་ནོ།  
 3. ཕྱི་—བཀའ་ (མདོ་ལྔ་ 20) 4. ཕྱི་ཅི་—ལམ་ལ་ཡང་ 5. ཕྱི་—བཀའ་ (མདོ་ཉ་ 30)  
 6. 'བཅོམ་ལྟན་འདས་'—ཕྱི་དཔེར་མེད་ 7. ལྟ་བུ་—འདས་ཀྱིས་ 8. ལྟ་བུ་—བའི་སྐྱེད་པ་(ཆད་—  
 བན་པ་སྐྱེད་པ་དང་བདེ་བ་སྐྱེད་པའི་)



‘པ་དེ་བདག་གིས་བསྐྱེད་པར་བྱའོ་སྙམ་’<sup>1</sup>པ་ལང་སོ། །དེ་སྤང་བོ་ནམས་ལ་སྐྱེ་བ་  
 ལྷ་བྱར་སོ་སོར་རྟོག་པ་ཡང་སྐྱེ་བ་སྤང་བོ་ཡོངས་སུ་འདོར་བ་ཡང་མི་འཛེལ།  
 ཁམས་ནམས་ལ་སྐྱེ་བ་གདུག་པ་ལྷ་བྱར་སོ་སོར་རྟོག་པ་ཡང་སྐྱེ་བ་<sup>2</sup>པ་ཁམས་……  
 ཡོངས་སུ་འདོར་བ་ཡང་མི་འཛེལ། སྐྱེ་བ་ཆེད་ནམས་ལ་གྲོང་སྤོང་<sup>3</sup>པ་ལྷར་སོ་  
 སོར་རྟོག་པ་ཡང་སྐྱེ་བ་ལ་སྐྱེ་བ་ཆེད་ཡོངས་སུ་སྤོང་བ་ཡང་མི་འཛེལ། གཞུགས་  
 ལ་དབྱ་བ་རྟོག་པ་ལྷར་སོ་སོར་རྟོག་པ་ཡང་སྐྱེ་བ་ལ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་གཞུང་  
 གྱི་སྐྱེ་ནམ་བར་སྐྱེ་བ་པ་ཡང་མི་འདོར། ཆོར་བ་ལ་ཆུའི་ཆུ་བྱར་ལྷར་སོ་སོར་རྟོག་  
 པ་ཡང་སྐྱེ་བ་ལ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་བསམ་གཏན་དང་དྲིང་ངེ་འཛིན་ལ་སྐྱེ་བ་སྙམ་……  
 བར་འཇུག་པའི་བདེ་བ་བསྐྱེད་པའི་སྤྱོད་བ་མི་ཅོམ་པ་ཡང་མ་ལགས། འདྲ་  
 ཤེས་ལ་སྐྱིག་གྱུ་ལྷ་བྱར་སོ་སོར་རྟོག་པ་ཡང་སྐྱེ་བ་<sup>4</sup>ལ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་ཡེ་  
 ཤེས་སྐྱེ་བ་པ་མི་སྐྱེ་བ་པ་ཡང་མ་ལགས། འདྲ་བྱེད་ནམས་ལ་ཆུ་བྱིང་ལྷར་སོ་  
 སོར་རྟོག་པ་ཡང་སྐྱེ་བ་ལ་སངས་བྱེས་ཀྱི་ཆོས་<sup>5</sup>མངོན་བར་འདྲ་བའི་བའི་སྐྱེ་བ་པ་……  
 ཡང་མ་ལགས། ནམ་བར་ཤེས་པ་ལ་སྐྱེ་བ་ལྷ་བྱར་སོ་སོར་རྟོག་པ་ཡང་སྐྱེ་བ་ལ།  
 ཡེ་ཤེས་ཐོག་མར་འགྲོ་བའི་ལུས་དང་ངག་དང་ཡིད་ཀྱི་<sup>6</sup>ལས་སྐྱེ་བ་པ་མི་སྐྱེ་བ་……  
 ཡང་མ་ལགས་སོ།” ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་བྱེས་བར་འབྱུང་ངོ། །དེ་ལྷར་  
 མདོ་སྐྱེ་དེ་དང་དེ་དག་<sup>7</sup>ལས་ཐུབས་དང་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཚལ་སྐྱེ་བ་པ་མཐའ་ལས་པ་……  
 འབྱུང་བ་ཁོང་དུ་ཆུད་པར་བྱའོ།

1. ལྷ་བྱེད་—ལྷ་མ་ལགས་ 2. ལྷ་བྱེད་—བསྐྱེད་ 3. ལྷ་བྱེད་—སྤོང་ལྷར་ 4. ལྷ་བྱེད་—སྐྱེ་བ་  
 5. ‘མངོན་བར་’—ལྷ་དཔེར་མེད་ 6. ལྷ་བྱེད་—ལས་མི་(ཆུ་—ལས་སྐྱེ་བ་པ་མི་) 7. ལྷ་བྱེད་—དག་ལ་

“1 འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱི་གནས་སྐབས་ན་ཐབས་ལ་བརྟེན་  
 པ་མི་འབྱུང་མོད་ཀྱི། ཐབས་བརྟེན་པའི་རྒྱས་ན་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སྐྱུ་མ་  
 མཁན་ལྟར་ཕྱིན་ཅི་མ་ཡོག་པའི་ཕྱིར་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་ཡེ་ཤེས་ལ་སྦྱོར་  
 བ<sup>2</sup>དང་།<sup>3</sup> ཡེ་ཤེས་ལ་སྦྱོར་བའི་རྗེས་ལས་བྱང་བ་དངོས་པོ་འི་དོན་གྱི་དེ་ཁོ་ན་རི་  
 ལྟ་བ་བཞིན་དུ་རྟོགས་པའི་ཤེས་རབ<sup>4</sup>ཡོད་པ་ཉིད་དེ། ཐབས་དང་ཤེས་རབ་རྒྱང་དུ་  
 འབྲེལ་བར་འཇུག་པའི་ལམ་དེ་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ། །འཕགས་པ་སྒྲོ་བྲོས་མི་ཟད་པས་  
 བཟུན་པ་ལས་<sup>5</sup>ཀྱང་། བསམ་གཏན་མི་ཟད་པའི་སྐབས་ནས་ཐབས་དང་ཤེས་  
 རབ་རྒྱང་དུ་འབྲེལ་བར་འཇུག་པའི་ལམ་འབྱུང་བ་ཁོང་དུ་ཆུད་པར་བྱའོ། །རིམ་  
 པ་འདི་ལྟ་བུ་འདིས་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཐབས་དང་ཤེས་རབ་<sup>6</sup>ལ་དྲག་དུ་གྱུས་  
 བར་ཡུན་རིང་དུ་གོམས་པར་བསྒྲོམས་ན་གནས་སྐབས་ཀྱི་བྱེ་བྲག་བཅུ་གཉིས་སུ་  
 འགྱུར་རོ། །གནས་སྐབས་དེ་དག་ནི་གོང་མ་གོང་མའི་ཡོན་ཏན་གནས་པའི་ཕྱིར་  
 སར་ནས་བར་བཞག་ཟླ། མོས་པས་སྦྱོད་པའི་ས་ནས་སངས་རྒྱས་ཀྱི་སའི་བར་  
 དུའོ།

དེ་ལ་རི་སྟོན་དུ་གང་ཟག་དང་ཆོས་ལ་བདག་མེད་པའི་དེ་ཁོ་ན་མངོན་སུམ་དུ་  
 མི་བྱེད་མོད་ཀྱི། མས་པ་ཤིན་དུ་བརྟན་པ་ཅས་དུ་ཟད་དེ། བདུད་ལ་སོགས་  
 བས་མི་བྱེད་ལ། གང་གི་ཆེ་མས་པའི་སྦྱོབས་(<sup>7</sup>ཀྱིས་དེ་ཁོ་ན་)སྒྲོམ་པར་བྱེད་པ་

- 
1. ལེགས་སྦྱར་བྱ་དཔེ་ལྟར་ན་ 'འཇིག་རྟེན་ལས་ཞེས་སོགས་ནས་ཁོང་དུ་ཆུད་པར་བྱའོ།' ཞེས་པ་  
 ཁོང་དུ་བཞུགས་ཡོད། 2. ལྟ་བུ་—བཞི་རྗེས་ 3. ལྟ་དཔེར་—‘དང་ཡེ་ཤེས་ལ་སྦྱོར་བ’ ཞེས་པ་མེད་  
 4. ལྟ་བུ་—རབ་རྟེན་(ཆད་—ཤེས་རབ་ཡོད་པ་ཉིད་) 5. འདིར་བྱང་འདྲིན་མཛད་མཚམས་གསལ་ཁ་  
 མེད་པས་དཔུང་དགས་སོ། 6. རྟེན་ལྟ་—རབ་རྟེན་ 7. ལྟ་དཔེར་—‘ཐལ་པོ་འཇུག་པོ་’= སྦྱོབས་ཀྱིས་དེ་ཁོ་ན་





དམིགས་པར་ཞུགས་པའི་ཕྱིར་རོ། །གང་གི་ཆོ་<sup>1</sup>འཛིན་པའི་ནམ་པ་དང་གཉིས་སུ་  
མེད་པའི་ཤེས་པ་ཡང་<sup>2</sup>ནམ་པར་འཇིག་པ་དེའི་ཆོ་ངེས་པར་འབྱེད་པའི་ཆ་དང་...  
མཐུན་པ་ཆོས་ཀྱི་མཆོག་ཅེས་བྱ་བ་ཡིན་ནོ། །དེ་མ་ཐག་པའི་དྲིང་ངེ་འཛིན་ཞེས་  
ཀྱང་བྱ་སྟེ། དེ་མ་ཐག་ཁོ་ནར་དེ་ཁོ་ན་ལ་འཇུག་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེའི་བར་དུ་  
ནི་མོས་པས་སྒྲོད་པའི་ས་ཡིན་ནོ། །

ས<sup>3</sup>གཞན་དག་ནི་མདོར་ན་ཡན་ལག་བཅུ་གཅིག་ཡོངས་སུ་རྫོང་པའི་སྒོ་ནས་  
ནམ་པར་བཞག་གོ། །དེ་ལ་ས་དང་པོར་<sup>4</sup>ནི་ཐོག་མར་གང་ཟག་དང་ཆོས་ལ་བདག་  
མེད་པའི་དེ་ཁོ་ན་དོགས་པའི་ཡན་ལག་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ལས་ནམ་པར་བཞག་  
སྟེ། འདི་ལྟར་གང་གི་ཆོ་ཆོས་ཀྱི་མཆོག་གི་མཇུག་<sup>5</sup>ཐོགས་ཁོ་ནར་ཆོས་ཐམས་  
ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་མངོན་སུམ་དུ་བྱེད་པའི་ཡེ་ཤེས་ཤིན་དུ་གསལ་བ་འཇིག་  
རྟེན་ལས་འདས་པ་སྒྲོས་པ་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བ་ཐོག་<sup>6</sup>མར་བྱང་བ་དེའི་ཆོ་བྱང་...  
ཆུབ་སེམས་དབང་ཡང་དག་པ་ཉིད་སྒྲོན་མེད་པ་ལ་ཞུགས་པས་མཐོང་བའི་ལམ་...  
སྒྲིམ་པའི་ཕྱིར་ས་དང་པོར་ཆུད་པ་ཡིན་ནོ། །དེ་བས་ན་དེ་<sup>7</sup>ཁོ་ན་ཁོང་དུ་<sup>8</sup>མ་ཆུད་<sup>9</sup>  
བ་ས་འདི་ལ་ཐོག་མར་ཁོང་དུ་ཆུད་པའི་ཕྱིར་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབང་ས་<sup>10</sup>རབ་དུ་  
དགའ་བ་ཡིན་དེ། དེས་ན་ས་དེ་རབ་དུ་དགའ་བ་ཞེས་བྱའོ། །ས་དེར་མཐོང་  
བས་སྤང་བར་བྱ་བའི་ཉན་མོངས་པ་བརྟེན་ཅི་བཅུ་གཉིས་སྤྱོད་ངོ་། །

1. ལྷ་དཔེར་—ग्राह्यग्रहकाररहितम् = གཟུང་བ་དང་འཛིན་པའི་ནམ་པ་བྲལ་བ་

2. 'ཡང་—ལྷ་དཔེར་མེད་ 3. ལྷ་པེ—གཞན་དག་(ཆད་—'ས'་གཞན་དག་)

4. ལྷ་པེ—པོ་ན་ 5. ལྷ་པེ—འཇུག་ 6. ལྷ་པེ—ཐོག་མ་

7. ལྷ་པེ—དེ་ཁོང་(ཆད་—དེ་ཁོ་ན་ཁོང་དུ་) 8. ལྷ་པེ—དུ་ཆུད་(ཆད་—དུ་མ་ཆུད་)

9. ལྷ་པེ—ཆད་པས་འདྲི་ 10. 'ས'—ལྷ་དཔེར་མེད་



ས་ལྷག་ས་ནམས་ནི་བསྒྲུབ་པའི་ལམ་གྱི་ངོ་བོ་ཉིད་ནི། དེ་དག་དུ་བསྒྲུབ་ས་<sup>1</sup>  
 བས་སྒྲུབ་པར་བྱ་བ་ཁམས་གསུམ་པའི་ཉན་མོངས་<sup>2</sup>པ་བཅུ་དྲུག་སྒྲོང་ངོ་། ས་  
 དེར་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔལ་ཚོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཀྱན་དུ་འགོ་བ་ཉིད་དེ་གས་པས་བདག་  
 གི་དོན་དང་འདྲ་བར་གཞན་གྱི་དོན་ལ་འཇུག་པའི་སྤྱིར་སྤྱོད་པའི་པ་རེལ་དུ་སྤྱོད་  
 བ་ཤིན་དུ་ཤས་ཆེ་བ་ཡིན་ནོ། །བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔལ་དེས་དེ་ཁོ་ན་<sup>(3)</sup>ཡང་དག་  
 བར་)ཁོང་དུ་ཆུད་ཀྱང་ཇི་སྲིད་དུ་ལྷུང་བའི་འབྲུལ་པ་ཆ་སྤྲ་བ་ནམས་ལ་ཤེས་བཞིན་  
 དུ་གནས་པར་བྱེད་མི་ལྷུས་པ་དེ་སྲིད་<sup>4</sup>དུ་ས་<sup>5</sup>དང་བོ་འོ། །གང་གི་ཆོ་རྒྱས་པ་  
 དེའི་<sup>6</sup>ཆོ་ཡན་ལག་དེ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པས་ས་གཉིས་པར་ནམ་པར་གཞག་གོ། །  
 དེ་བས་ན་ས་དེ་ལ་ལྷུང་བའི་འབྲུལ་པ་ཆ་སྤྲ་བ་ཀྱན་དུ་མི་སྤྱོད་པས་ཚུལ་ཁྲིམས་  
 ཀྱི་པ་རེལ་དུ་སྤྱོད་པ་<sup>7</sup>ཤིན་དུ་ཤས་ཆེ་བ་ཡིན་ནོ། །འཆལ་བའི་ཚུལ་ཁྲིམས་ཀྱི་  
 དྲི་མ་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བའི་སྤྱིར་ས་དེ་དྲི་མ་མེད་པ་ཞེས་བྱའོ།

(<sup>8</sup>དེ་)ལྷུང་བའི་འབྲུལ་པ་ཆ་སྤྲ་བ་ནམས་ལ་ཤེས་བཞིན་དུ་གནས་པ་ཡང་<sup>9</sup>  
 ཡིན་ནོ། ཇི་སྲིད་དུ་འཇིག་རྟེན་པའི་དྲིང་ངེ་འཇིན་མཐའ་དག་ལ་སྒྲུབ་ས་པར་  
 འཇུག་པ་དང་། ཇི་སྒྲིད་ཐོས་པའི་དོན་ཀྱན་དུ་འཇིན་མི་ལྷུས་པ་དེ་སྲིད་དུ་ས་  
 གཉིས་པ་ཁོ་ན་འོ། །གང་གི་ཆོ་རྒྱས་པ་དེའི་ཆོ་ཡན་ལག་དེ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་  
 པས་ས་གསུམ་པར་ནམ་པར་གཞག་གོ། །ས་དེ་ལ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔལ་ཐོས་  
 པ་གཟུང་བའི་སྤྱིར་དང་། འཇིག་རྟེན་པའི་དྲིང་ངེ་འཇིན་ཐམས་ཅད་མངོན་པར་

1. ལྷ་མེ་—བསྒྲུབ་ 2. ལྷ་མེ་—ཉན་མོངས་པའི་ཉན་མོངས་པ་(ལྷག་—མོངས་པའི་ཉན་མོངས་པ་)  
 3. ལྷ་དཔེར་—མཐའ་ཁྲིམས་ཀྱི་ཁོང་དུ་ཆུད་ 4. ལྷ་མེ་—སྤྱོད་ས་  
 5. ལྷ་མེ་—པ་དང་བོ་ 6. ལྷ་མེ་—དེའི་ཆོ་ཡན་(ཆད་—དེའི་ཆོ་ཡན་ལག་) 7. ལྷ་མེ་—པ་ཤས་  
 8. ལྷ་དཔེར་ཁོང་ 9. 'ཁང་'—ལྷ་དཔེར་མེད་

སྐྱབ་པའི་ཕྱིར་རྩུག་བསྐྱལ་ཐམས་ཅད་བཟོད་པས་ན་བཟོད་པའི་པ་རྩུ་ཕྱིན་པ་  
ཤིན་དུ་ཤས་ཆེ་བ་ཡིན་ནོ། ཉིང་ངེ་འཛིན་དེ་དག་ཐོབ་པས་ས་དེ་ནི་འཛིག་དེན་  
ལས་འདས་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྒྲུང་བ་<sup>1</sup>ཆད་མེད་པ་བྱེད་པས་འོད་བྱེད་པ་ཞེས་བྱའོ།

དེ་འཛིག་དེན་པའི་ཉིང་ངེ་འཛིན་མཐའ་དག་ཐོབ་ཀྱང་ཇི་སྲིད་དུ་ཇི་ལྟར་ཐོབ་  
པའི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་<sup>2</sup>ཕྱོགས་ཀྱི་ཆོས་རྣམས་ཀྱིས་ལན་མང་དུ་གནས་པར་བྱེད་པ་དང་།  
ཆོས་<sup>3</sup>དང་སྒྲོམས་པར་འཇུག་<sup>4</sup>པའི་སེམས་བདང་སྒྲོམས་སུ་བྱེད་མི་རྒྱས་པ་དེ་སྲིད་  
དུ་ས་གསུམ་པའོ། །གང་གི་ཆོ་རྒྱས་པ་དེའི་ཆོ་ཡན་ལག་དེ་ཡོངས་སུ་ཆོག་པས་  
བས་ས་བཞི་པར་རྣམ་པར་གཞག་གོ། །ས་དེ་ལ་བྱང་ཆུབ་<sup>5</sup>སེམས་དཔའ་རྒྱན་  
མི་འཆད་པར་(<sup>6</sup>ལྷས་དང་) དག་དང་ཡིད་ཀྱི་བཟོད་པ་ལས་ཡང་དག་པར་འདའ་<sup>7</sup>  
བའི་ཕྱིར་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཕྱོགས་ཀྱི་ཆོས་རྣམས་ཀྱིས་གནས་པས་ན་བཙོན་འགྲུས་ཀྱི་  
པ་རྩུ་ཕྱིན་པ་ཤིན་དུ་ཤས་ཆེ་བ་ཡིན་ནོ། །ས་དེ་ནི་རྩོད་མོངས་པའི་ཤིང་མཐའ་  
དག་སྒྲེག་<sup>8</sup>པར་རྒྱས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཕྱོགས་ཀྱི་ཆོས་ཀྱི་འོད་འཕྲོ་བ་ཤིན་དུ་བྱང་  
བས་འོད་འཕྲོ་བ་ཅན་ཞེས་བྱའོ།

དེ་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཕྱོད་ཀྱི་ཆོས་ཀྱིས་རྒྱན་མི་འཆད་པར་གནས་པ་ཡང་ཡིན་ནོ། །  
ཇི་སྲིད་དུ་བདེན་པ་རྣམས་བསྒྲོམ་པ་ན་འཁོར་བ་ལ་མི་ཕྱོགས་པ་དང་། བྱང་ན་  
ལས་འདས་པ་ལ་མངོན་དུ་ཕྱོགས་པ་ལས་སེམས་བསྒྲོག་དེ། ཐབས་ཀྱིས་ཟིན་  
པའི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཕྱོགས་(<sup>9</sup>ཀྱི་ཆོས་) བསྒྲོམ་མི་རྒྱས་པ་དེ་སྲིད་དུ་ས་བཞི་པའོ། །

1. ལྟ་ཐེ་—བ་མེད་(ཆད་—ལྟ་བ་མེད་མེད་) 2. ལྟ་ཐེ་—ཀྱི་ཆོས་(ཆད་—ཀྱི་ཕྱོགས་ཀྱི་ཆོས་)

3. 'ཆོས་'—ལྟ་དཔེར་མེད་ 4. ལྟ་དཔེར་—सर्वसमापत्तिनां = ཐུམས་པར་འཇུག་པ་ཐམས་ཅད་

5. ལྟ་ཐེ་—ལྟ་བ་དཔེར་(ཆད་—བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་) 6. ལྟ་དཔེར་ཡོད་

7. ལྟ་ཐེ་ལྟ་ཐེ་—བསྒྲོག་ 8. ལྟ་ཐེ་—བསྒྲོག་ 9. ལྟ་དཔེར་ཡོད་



གང་གི་ཆོ་རྒྱལ་པ་དེའི་ཆོ་ཡན་ལག་དེ་ཡོངས་སུ་རྒྱུགས་པས་ས་ལྔ་པར་ནས་པར་  
བཞག་གོ། །དེ་བས་ན་ས་དེ་ལ་ཐབས་ཀྱིས་ཟིན་པའི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཕྱོགས་བསྐྱེད་  
པ་དེ་ཡོངས་<sup>1</sup>སུ་རྒྱུགས་པར་བྱེད་པ་ནི་ཤིན་དུ་སྤྱང་བར་དཀའ་བས་ན་ཤིན་དུ་  
སྤྱང་དཀའ་<sup>2</sup>པ་ཞེས་བྱའོ།

ས་དེ་ལ་<sup>3</sup>(འཕགས་པའི་) བདེན་པའི་ནམ་པ་སྐྱོམ་པ་ལན་མང་དུ་བྱེད་པས་  
བསམ་གཏན་གྱི་པ་རྩལ་དུ་ཕྱིན་པ་ཤིན་དུ་ཤས་ཆེ་བ་ཡིན་དེ། དེ་ཐབས་ཀྱིས་  
ཟིན་པའི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཕྱོགས་ཀྱིས་<sup>4</sup>ལན་མང་དུ་གནས་པ་ཡང་ཡིན་ནོ། །རྗེ་སྤྱིད་  
དུ་འཁྲུག་པར་འཇུག་པ་ལ་སོ་སོར་དྲི་བ་སྤྱོད་པ་དང་ལྷན་པས་སེམས་ཀྱི་རྒྱུད་  
ཀྱིས་མཚན་མ་མེད་པར་གནས་པ་ལ་མཉམ་པར་འཇོག་མ་རྒྱལ་པ་དེ་སྤྱིད་དུ་ས་  
ལྔ་པའོ། །གང་གི་ཆོ་རྒྱལ་པ་དེའི་ཆོ་ཡན་ལག་དེ་ཡོངས་སུ་རྒྱུགས་པས་ས་  
དྲུག་པ་ནས་པར་བཞག་གོ། །ས་དེ་ལ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབའ་དྲེན་ཅིང་འབྲེལ་  
བར་འབྱུང་བ་བསྐྱེད་པས་གནས་པས་ན་ཤེས་རབ་ཀྱི་པ་རྩལ་དུ་ཕྱིན་པ་ཤིན་  
དུ་ཤས་ཆེ་བ་ཡིན་ནོ། །དེ་བས་ན་ཤེས་རབ་ཀྱི་པ་རྩལ་དུ་ཕྱིན་པ་ཤིན་དུ་ཤས་  
ཆེ་བའི་ཕྱིར་ས་དེ་ལ་སངས་རྒྱུས་ཀྱི་ཆོས་ཐམས་ཅད་མངོན་དུ་གྱུར་པ་<sup>5</sup>(བྱང་བས་  
མངོན་དུ་གྱུར་པ་) ཞེས་བྱའོ།

དེ་མཚན་མ་མེད་པར་གནས་པ་ཐོབ་པ་ཡང་ཡིན་ནོ། །རྗེ་སྤྱིད་དུ་སྐབས་  
མེད་པར་མཚན་མ་མེད་པར་གནས་པ་ལ་མཉམ་པར་འཇོག་མ་རྒྱལ་པ་དེ་སྤྱིད་དུ་  
ས་དྲུག་པའོ། །གང་གི་ཆོ་རྒྱལ་པ་དེའི་ཆོ་ཡན་ལག་དེ་ཡོངས་སུ་རྒྱུགས་པས་ས་

1. 'ཡོངས་སུ་རྒྱུགས་པར་'—ཐུ་དཔེར་མད་
2. ཐུ་ཤེས་—དཀའ་ཞེས་(ཆད་—དཀའ་པ་ལྟར་)
3. ཐུ་དཔེར་མད་
4. ཐུ་ཤེས་—ཀྱིས་མང་དུ་(ཆད་—ཀྱིས་ལན་མང་དུ་)
5. ཐུ་ཆོས་—ཐུ་ཆོས་
6. ཐུ་དཔེར་མད་





པར་དང་ལྷན་པས་ན་སྒྲིབ་སྒྲིབ་ཀྱི་པ་རྒྱུ་པ་<sup>1</sup>ཤིན་ཏུ་ཤིས་ཆེ་བ་ཡིན་ནོ། །  
ནམ་པ་ཐམས་ཅད་ཏུ་ཆོས་སྒྲིབ་པ་ལ་མཁས་པ་འདི་ཕྱིར་ཁ་ན་མ་གྲོ་བ་མེད་པའི་སྒྲོ་  
གྲོས་ཀྱིས་ཁྱད་པར་བྱོབ་པའི་<sup>2</sup>ཕྱིར་ལེགས་པའི་སྒྲོ་གྲོས་ཞེས་ཏུ་འོ།

དེ་སོ་སོ་<sup>3</sup>ཡང་དག་པར་རྒྱུ་པ་བཞི་བྱོབ་པ་ཡང་ཡིན་ནོ། །རྩིས་དྲུ་  
སངས་ཀྱིས་ཀྱི་ཞིང་དང་། འཁོར་དང་། སྤྱུལ་པ་ལ་སོགས་པ་བསྒྲུན་པ་དང་།  
ཆོས་ཡོངས་སུ་རྒྱུགས་པར་ཡོངས་སྤྱད་པ་དང་། སེམས་ཅན་ཡོངས་སུ་སྒྲིན་  
པར་བྱེད་མི་རྒྱས་པ་དེ་སྤྱིར་དྲུ་ས་དགུ་པའོ། །གང་གི་ཆོ་རྒྱས་པ་དེའི་ཆོ་ཡན་  
ལག་<sup>4</sup>དེ་ཡོངས་སུ་རྒྱུགས་པས་ས་བཅུ་<sup>5</sup>པར་ནམ་པར་བཞག་གོ། །དེ་ལ་སྤྱུལ་  
པ་ལ་སོགས་པས་སེམས་ཅན་ཡོངས་སུ་སྒྲིན་པར་བྱ་བ་ལ་མཁས་པ་<sup>6</sup>འདི་ཁྱད་པར་  
དང་ལྷན་པས་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་པ་རྒྱུ་པ་ཤིན་ཏུ་ཤིས་་་་  
ཆེ་བ་ཡིན་ནོ། དེ་ནི་ཆོས་སྒྲིབ་པའི་སྒྲིན་ནམས་ཀྱིས་འཛིན་དེན་གྱི་ཁམས་མཐའ་  
ཡས་པ་ནམས་སུ་ཆོས་ཀྱི་ཆར་འབེབས་པས་ན་ཆོས་ཀྱི་སྒྲིན་ཞེས་ཏུ་འོ། །གཞན་  
ཡང་སྤྱང་བོ་ཡོངས་སུ་དག་པ་ལ་སོགས་པའི་ནམ་པར་གཞག་པ་ནམས་ཀྱིས་ས་་  
<sup>7</sup>ནམས་ནམ་པར་བཞག་པ་ཡོད་དེ་ ཡི་<sup>8</sup>གེ་སངས་ཀྱིས་དྲོགས་ནས་མ་བྲིས་སོ། །  
<sup>9</sup>དེས་སྤྱུལ་པ་ལ་སོགས་པའི་དབང་བྱོབ་ཀྱང་རྩིས་དྲུ་ཤེས་བྱ་ཐམས་ཅད་

- 
1. ལྷ་མོ་-བ་ཤས་(ཆད་-ཕྱིན་པ་ཤིན་ཏུ་ཤིས་)
  2. ལྷ་མོ་-བ་ལེགས་(ཆད་-བྱོབ་པའི་ཕྱིར་ལེགས་)
  3. ལྷ་མོ་-སོ་སོར་
  4. ལྷ་མོ་-ལག་ཡོངས་(ཆད་-ལག་དེ་ཡོངས་སུ་)
  5. ལྷ་མོ་-བཅུ་ནམ་(ཆད་-བཅུ་པར་ནམ་)
  6. ལྷ་མོ་དབང་-ཞུགས་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་པར་པ་མཁས་པའི་ལྷ་མོ་དབང་
  7. ལྷ་མོ་-ས་ནམ་པར་(ཆད་-ས་ནམས་ནམ་པར་)
  8. ལྷ་མོ་དབང་-ཤུལ་འཛིན་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་པར་པ་=
  9. ལྷ་མོ་དབང་-སྤྱི་དེ་

ལ་ནམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་ཆགས་པ་མེད་པ་དང་། ཐོགས་པ་མེད་པའི་ཡོ་ཤེས་  
 བསྐྱེད་པར་མི་ཉུས་པ་དེ་སྤྱོད་དུ་ས་བཅུ་པའོ། །གང་གི་ཆོ་རྒྱས་པ་དེའི་ཆོ་ཡན་  
 ལག་དེ་ཡོངས་སུ་ཐོགས་པས་སངས་རྒྱས་ཀྱི་སར་ནམ་པར་བཞག་གོ། །ས་ནམ་  
 བར་གཞག་པ་འདི་ནི་འཕགས་པ་དགོངས་པ་ངས་པར་འབྲེལ་བ་ལས་བསྐྱེད་ཏོ། །  
 སངས་རྒྱས་ཀྱི་ས་འདི་ནི་སྤྱན་སྤུམ་ཚོགས་པ་ནམ་པ་ཐམས་ཅད་མཐའ་དག་རབ་  
 ཀྱི་མཐར་ཕྱིན་པའི་ཕྱིར་འདི་ལས་གོང་ན་ནམ་པ་གཞན་མེད་པས་དེ་མན་ཆད་ས་  
 ནམ་པར་གཞག་པ་མེད་དོ། །

སངས་རྒྱས་ཀྱི་ས་དེའི་ཡོན་ཏན་གྱི་ཕྱོགས་རབ་དུ་དབྱེ་བ་དཔག་དུ་མེད་  
 བས་ནམ་པ་ཐམས་ཅད་བཞིན་པ་ནི་སངས་རྒྱས་ནམས་ཀྱིས་ཀྱང་མི་སྤྱོད་ན་བདག་  
 འདྲ་བས་ལྟ་སྒྲུབ་ཀྱང་ཅི་དགོས། །ཇི་སྐད་དུ། འཕགས་པ་སྤོང་བོ་བཞིན་པ་  
 ལས་<sup>2</sup>ཀྱང་།

ཤིན་དུ་བདགས་ཀྱང་རང་བྱུང་གི།

ཡོན་ཏན་ནམས་ཀྱི་ཕྱོགས་གཅིག་མཐའ།

མི་དོགས་<sup>3</sup>སངས་རྒྱས་ནམས་དང་ནི།

ཆོས་ནམས་བསམ་གྱིས་མི་བྱུང་བོ། ། ཞེས་བཀའ་སྤྲུལ་པ་

ལྟ་བུའོ། །མདོར་<sup>4</sup>ན་འདི་ཙམ་ཞིག་བཞིན་པར་ཉུས་དེ། “<sup>5</sup>བདག་དང་གཞན་  
 གྱི་དོན་སྤྱན་སྤུམ་ཚོགས་པ་རབ་ཀྱི་མཐར་ཕྱིན་པ་ཉེས་པ་མ་ལུས་པ་བསམ་པའི་”

1. ‘ད་མན་ཆད་ས་ནམ་པར་གཞག་པ་མེད་དོ།’ ཞེས་བ་རྒྱ་དཔེར་མེད།

2. ལྟ་—བཀའ་(ལམ་ཆེན་—‘ག’ 200) 3. ལྟ་—ཏོག་ 4. ལྟ་—མདོར་འདི་ཙམ་

5. བདག་དང་གཞན་གྱི་དོན་……ཞེས་ཞོགས་ནས་བཙན་བཤེས་བཀའ་སྤྲུལ་ནས་ཞེས་པའི་བར་རྒྱ་  
 དཔེར་ཆོང་མེད།



མཐར་ཐུག་པ་བརྟེན་ནས་མངས་གྲུས་བཅོམ་ལྷན་འདས་ནམས་ཆོས་ཀྱི་སྐུ་ལ་.....  
བཞུགས་དེ། ཡོངས་སྤྱོད་རྫོགས་པ་དང་སྐུ་ལ་བའི་སྐུས་འགྲོ་བ་མ་ལུས་བའི་  
དོན་ལྷན་གྱིས་གྲུབ་བའི་ཚུལ་གྱིས་མཛད་ཅིང་འཁོར་བ་ཆི་སྤྱད་པར་བཞུགས་སོ།

དེ་ལྟ་བུས་ན་དོག་པ་དང་ལྷན་པ་ནམས་ཀྱིས་ཡོན་ཏན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་འབྲུང་  
གནས་བཅོམ་ལྷན་འདས་ནམས་ལ་དད་པ་བསྐྱེད་ལ་དེ་དག་གི་ཡོན་ཏན་ཡོངས་སུ་  
བསྐྱབ་བའི་ཕྱིར་ནམ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་རབ་དུ་འབད་བར་བཤེལ། །སྐྱ་གསུམ་  
ལ་སོགས་བའི་ནམ་པར་དབྱེ་བ་ནི་ཡི་གེ་མངས་ཀྱིས་དོགས་དེ་མ་བྲིས་སོ།

མདོ་སྤེལ་གྱི་ཚུལ་གྱི་འཕགས་མཐུན་པ།

སྐུ་ལ་བའི་སྐུས་ཀྱི་ལས་འདི་ལེགས་བཤད་པས།

བདག་གིས་བསོད་ནམས་མི་རྒྱུད་གང་ཐོབ་དེས།

འགྲོ་བ་ཤེས་ཞན་མཆོག་སྐུར་ཐོབ་ཤོག །

སའི་མངའ་བདག་དབལ་ལྷ་བཙན་པོས་བཀའ་སྐུ་ལ་ནས་ཀྱུ་ལ་ཤྱི་.....  
ལས་བསྒྲུབ་བའི་རིམ་པ་མདོར་བསྐྱུས་པ་འདི་བཤིས་སོ། །བསྒྲུབ་རིམ་དང་པོ་  
རྫོགས་སོ། །ཁྱེད་ཀྱི་མཁན་པོ་བསྐྱེད་པ་དང་། ལྷ་ཆེན་གྱི་ལོ་ཙ་པ་  
བརྟེན་པའི་ཤེས་སྤེལ་སོགས་པས་བསྐྱུར་ཅིང་ལྷས་དེ་གཏན་ལ་ཐབ་བཤེལ། །

Handwritten text, likely a letter or document, starting with a salutation and followed by several lines of cursive script.

Continuation of the handwritten text, showing more lines of cursive script.

Continuation of the handwritten text, showing more lines of cursive script.

Continuation of the handwritten text, showing more lines of cursive script.

Continuation of the handwritten text, showing more lines of cursive script.



༡༣། རྒྱ་གར་སྐད་དུ། རྒྱ་བཀྲ་ཤིས་ཀྱི་མཛོད་དུ། བསྐྱེད་ཀྱི་

པའི་རིམ་པ། འཇམ་དཔལ་གཞིན་རྒྱུ་ལྷ་པ་ལ་ཕྱག་འཚུལ་ལོ། །

ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མཛོད་མཛོད་ཆུང་གི་མཛོད་སྐྱེས་སྐྱེས་པ་རྣམས་ཀྱི་མཛོད་ཀྱི་  
པའི་རིམ་པ་མདོར་བཤད་དོ། །འདི་ལ་ཐམས་ཅད་མཆེན་པ་ཉིད་ཤིན་ཏུ་རྒྱུ་དུ་  
ཐོབ་པར་འདོད་པ་དོག་པོ་དང་ལྷན་པས་དེ་ཐོབ་པར་བྱེད་པའི་རྒྱ་རྣམས་དང་རྒྱུ་  
རྣམས་ལ་མདོར་བར་བཙུན་པར་བྱའོ།

འདི་རྒྱུ་ཐམས་ཅད་མཆེན་པ་ཉིད་འདི་ནི་རྒྱ་མཛོད་པ་ལས་འབྱུང་བར་མི་  
ཅད་མེ། ཐམས་ཅད་ཀྱང་དུས་ཐམས་ཅད་དུ་ཐམས་ཅད་མཆེན་པ་ཉིད་དུ་འབྱུང་  
བར་ཐལ་བར་འབྱུང་བའི་ཕྱིར་དོ། ལྷོས་པ་མཛོད་པར་འབྱུང་ན་ནི་གང་དུ་ཡང་  
ཐོགས་པར་མི་ཅད་མེ། གང་གིས་ན་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཐམས་ཅད་མཆེན་པ་ཉིད་  
དུ་མི་འབྱུང་དོ། དེ་ལྟ་བུས་ན་ལ་ལར་བརྟུ་ལམ་ན་འགའ་ཞིག་འབྱུང་དུ་ཟད་  
པས་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་ནི་རྒྱ་ལ་ལྷོས་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ། ཐམས་ཅད་མཆེན་པ་  
ཉིད་དུ་ཡང་ལ་ལར་བརྟུ་ལམ་ན་འགའ་ཞིག་འབྱུང་དོ། དུས་ཐམས་ཅད་དུ་ཡང་  
མ་ཡིན། གནས་ཐམས་ཅད་དུ་མ་ཡིན། ཐམས་ཅད་ཀྱང་མ་ཡིན་པས་དེའི་  
ཕྱིར་དེ་ནི་རྒྱ་དང་རྒྱུ་ལ་ལྷོས་པ་པོ་དང་སོ། རྒྱ་དང་རྒྱུ་དེ་དག་གི་ནང་ནས་  
ཀྱང་མ་ནོར་ཅིང་མ་ཚད་བ་མཛོད་པ་རྣམས་བཞེན་པར་བྱའོ། རྒྱ་ནོར་བ་ལ་ནན་  
དན་བྱས་ན་ནི་ཡུན་ཤིན་ཏུ་རིང་པོ་ཞིག་གིས་ཀྱང་འདོད་པའི་འབྲས་བུ་འཐོབ་པ་  
མཛོད་དོ། དཔེར་ན། རྒྱ་ལས་འོ་མ་བཞེན་བ་བཞེན་ནོ། རྒྱ་མཐའ་དག་སྐྱེད་ཀྱི་

1. ལྷ་པོ་-ལྷོས་ 2. ལྷ་པོ་-པོ་ 3. ལྷ་པོ་-ལྷོས་ 4. ལྷ་པོ་-ལྷོས་ 5. ལྷ་པོ་-ལྷོས་  
6. ལྷ་པོ་-ལྷོས་ 7. ལྷ་པོ་-ལྷོས་ 8. ལྷ་པོ་-ལྷོས་

བ་ལས་ཀྱང་འབྲས་བྱ་འབྱུང་བ་མེད་དེ། ས་བོན་ལ་སོགས་པ་གང་ཡང་རྒྱང་བ་  
 ཞིག་མེད་ན་སྤྱ་གྲུ་ལ་སོགས་པ་འབྲས་བྱ་མི་འབྱུང་བའི་སྤྱིར་དོ། །དེ་ལྟ་བུས་ན་  
 འབྲས་བྱ་དེ་འདོད་པས་རྒྱ་དང་རྒྱུན་མ་ནོར་བ་དང་མཐའ་དག་ལ་བསྟེན་པར་བྱའོ།

འབྲས་བྱ་ཐམས་ཅད་མཐུན་པ་ཉིད་ཀྱི་རྒྱ་དང་རྒྱུན་དེ་དག་གང་ཞེ་ན།

སྒྲིམ་བ། བདག་ལྟ་བུ་དཔྱུས་ཡོང་དང་འདྲ་བས་དེ་དག་བསྟན་<sup>1</sup>པར་མི་རྒྱས་  
 མེད་ཀྱི། འོན་ཀྱང་བཅོས་ལྡན་འདས་ཉིད་ཀྱིས་མངོན་པར་རྫོགས་པར་སངས་

རྒྱས་ནས་གདུལ་བྱ་རྣམས་ལ་རྩིས་སྤྲོད་པ་དེ་བཞིན་དུ་བདག་གིས་བཅོས་ལྡན་  
 འདས་ཀྱི་བཀའ་<sup>2</sup>ཉིད་ཀྱིས་བཤད་དོ། །བཅོས་ལྡན་འདས་ཀྱིས་དེར་བཀའ་

སྤྲུལ་<sup>3</sup>བ། “གསང་<sup>4</sup>བའི་བདག་པོ་ཐམས་ཅད་མཐུན་པའི་ཡེ་ཤེས་དེ་ནི་སྤྱིང་

རྩིང་ཅ་བ་ལས་བྱུང་བ་ཡིན། བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་ཀྱི་རྒྱ་ལས་བྱུང་བ་ཡིན། ཐབས་  
 ཀྱིས་མཐར་ཕྱིན་པ་ཡིན་ནོ།” །ཞེས་འབྱུང་ངོ་། དེ་ལྟ་བུས་ན་ཐམས་ཅད་

མཐུན་པ་ཉིད་ཐོབ་པར་འདོད་པས་སྤྱིང་རྩིང་དང་། བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་དང་།

ཐབས་དང་གསུམ་པོ་འདྲི་དག་ལ་བསྐྱབ་པར་བྱའོ།

སྤྱིང་རྩིས་བསྐྱོད་ན་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་……

མངོན་པར་གཏོན་པའི་སྤྱིར་ངེས་པར་དམ་འཆའ་བར་འགྱུར་དོ། །དེ་ནས་

བདག་ཉིད་ལ་ལྟ་བུ་བསལ་ནས་གིན་དུ་བྱ་དཀའ་ཞིང་རྒྱུན་མི་ཆད་ལ་ཡུན་རིང་……

པོར་བསྐྱབས་<sup>5</sup>པའི་བསོད་ནམས་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་རྫོགས་ལ་གུས་པར་འཇུག་གོ།

དེར་<sup>6</sup>ཞུགས་ནས་ངེས་པར་བསོད་ནམས་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་རྫོགས་ཡོངས་སུ་རྫོགས་

1. ལྟ་ཅོ་—བསྟེན་ 2. ལྟ་—བདག་ཉིད་ 3. ལྟ་—བཀའ་(ལྟ་དུ་བྱ་བ་, ༡༣)

4. ལྟ་པོ་—གསང་བ་བའི་ 5. ལྟ་པོ་—བསྐྱབ་ 6. ལྟ་ལྟ་—དེ་



པར་སྐྱབ་<sup>1</sup>པོ། །ཆོག་མཁའ་ལོངས་སྤྱོད་ཆོག་མཁའ་ན་ཐམས་ཅད་མཆོག་པ་ཉིད་  
ལག་<sup>2</sup>མཐོལ་དུ་ཐོབ་པ་དང་འདྲ་བར་འགྱུར་རོ། །དེ་བས་ན་ཐམས་ཅད་མཆོག་  
པ་ཉིད་ཀྱི་ཅ་བ་ནི་སྤྱིང་ཇི་ཁོ་ན་ཡིན་པས་དེ་ནི་ཐོག་མའི་མ་ཁོ་ནར་གོམས་པར་བྱའོ། །  
ཆོས་ཡང་དག་པར་སྐྱབ་པ་ལས་<sup>3</sup>ཀྱང་བཀའ་སྤྱུལ་དེ། “བཅོམ་ལྷན་འདས་བྱང་  
ཆུབ་སེམས་དཔམས་<sup>4</sup>ཆོས་རབ་དུ་སང་པོ་ལ་བསྐྱབ་པར་མི་བཤྱོདོ། །བཅོམ་ལྷན་  
འདས་བྱང་ཆུབ་སེམས་<sup>5</sup>པས་ཆོས་གཅིག་རབ་དུ་གཞུང་ཞིང་རབ་དུ་རྟོགས་པར་  
བགྱིས་ན་<sup>6</sup>སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཆོས་ཐམས་ཅད་དེའི་ལག་མཐོལ་དུ་མཆོས་པ་ལགས་”  
སོ། །ཆོས་གཅིག་པོ་གང་ཞེ་ན། འདི་ལྟ་སྤྱིང་ཇི་ཆོན་པོ་འོ།” ཞེས་  
འབྱུང་ངོ་། །

སྤྱིང་ཇི་ཆོན་པོས་ཡོངས་སྤྱོད་ཆོན་པས་ན་སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྷན་འདས་ནམས་  
རང་གི་དོན་སྤྱན་སྐྱབ་སྐྱམ་ཆོག་པ་མཐའ་དག་བརྟེན་ཀྱང་སེམས་ཅན་གྱི་ཁམས་.....  
མཐར་ཐུག་པའི་བར་དུ་བཞུགས་པར་མཛད་དོ། །ཉན་ཐོས་བཞིན་དུ་སྤྱོད་པས་  
འདས་པའི་གྲོང་ཁྱེར་གིན་དུ་ཞི་བར་ཡང་འཇུག་པར་མི་མཛད་དེ། སེམས་ཅན་  
ལ་གཟིགས་ནས་སྤྱོད་པས་འདས་པའི་གྲོང་ཁྱེར་ཞི་བ་དེ་ལྟགས་ཀྱི་ཁང་པ་.....  
འབར་བ་བཞིན་དུ་ཐག་རིང་དུ་སྤྱོད་<sup>7</sup>པས་བཅོམ་ལྷན་འདས་ནམས་ཀྱི་<sup>8</sup>མི་གནས་  
པའི་སྤྱོད་པས་འདས་པའི་སྤྱོད་པ་སྤྱིང་ཇི་ཆོན་པོ་<sup>9</sup>དེ་<sup>10</sup>ཉིད་ཡིན་ནོ། །

དེ་ལ་སྤྱིང་ཇི་བསྐྱེད་པའི་རིས་པ་དེ་དང་པོ་འཇུག་པ་ནས་བཅུམས་དེ་བཞིན་

- 
1. ལྟ་བུ་-བསྐྱབ་ 2. ལྟ་བུ་-ལག་དུ་ 3. ལྟ་བུ་-བཀའ་ (མདོ་ཞེ་ ༥༤)  
4. ལྟ་བུ་-དཔམས་ 5. ལྟ་བུ་-སེམས་ཆོས་ (ཆད་-སེམས་པས་ཆོས་) 6. ལྟ་བུ་-ནས་  
7. ལྟ་བུ་-སང་ 8. ལྟ་བུ་-ཀྱིས་ 9. ལྟ་བུ་-པོ་ནི་ 10. ལྟ་བུ་-ཉིད་

པར་བྱའོ། །ཐོག་མར་རེ་ཞིག་བདང་སྟོམས་བསྟོམས་<sup>1</sup>པས་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་ཇེས་སྤྲུལ་གསུང་། །ཁོང་ཁྱོད་པ་བསལ་དེ་སྟོམས་བའི་སེམས་ཉིད་བསྐྱབ་པར་བྱའོ། །

སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་བདེ་བ་ནི་འདོད་རྒྱུག་བསྐྱལ་བ་ནི་མི་འདོད་ལ། ཐོང་མ་མེད་པ་ཅན་གྱི་འཁོར་བ་ན་<sup>2</sup>སེམས་ཅན་གང་ལན་བརྒྱར་བདག་གི་གཉིན་དུ་མ་གྱུར་པ་དེ་གང་ཡང་མེད་དོ་སྟུང་དུ་ཡོངས་སྤྲུལ་པས་མ་ཞིང་། །འདི་ལ་བྱེད་པ་ཅི་ཞིག་ཡོད་ན་ལ་ལ་ལ་ནི་ཇེས་སྤྲུལ་གསུང་། །ལ་ལ་ལ་ནི་ཁོང་ཁྱོད་པར་བྱུར་<sup>3</sup>པས། དེ་ལྟ་བུས་ན་བདག་གིས་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་སེམས་སྟོམས་བ་ཉིད་བྱུང་། །སྟུང་དུ་དེ་ལྟར་ཡོད་ལ་བྱ་ཞིང་བར་མའི་ཕྱོགས་ནས་བཅམས་དེ། །མཛེལ་བཤེས་དང་དགུ་ལ་ཡང་སེམས་སྟོམས་བ་ཉིད་བསྟོམ་མོ། །དེ་ནས་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་སེམས་སྟོམས་བ་ཉིད་བསྐྱབས་ནས་བྱམས་པ་བསྟོམ་མོ། །བྱམས་པའི་<sup>4</sup>རྒྱལ་སེམས་ཀྱི་<sup>5</sup>རྒྱུད་བརྒྱན་དེ་གསེར་ཡོད་པའི་ས་གཞི་བཞིན་དུ་.....བྱས་ལ་སྟོང་ཇི་འདི་ས་བོན་བདབ་ན་བདེ་བླག་དུ་ཤིན་དུ་ཡོངས་སྤྲུལ་པར་འགྱུར་རོ། །དེ་ནས་སེམས་ཀྱི་རྒྱུད་བྱམས་པས་བསྟོམ་ནས་སྟོང་ཇེ་བསྟོམ་པར་བྱའོ། །

སྟོང་ཇེ་དེ་ནི་སེམས་ཅན་རྒྱུག་བསྐྱལ་བ་ཐམས་ཅད་རྒྱུག་བསྐྱལ་དེ་དང་བྲལ་བར་འདོད་པའི་ནམ་པ་ཡིན་ན། །ཁམས་གསུམ་<sup>7</sup>པའི་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ནི་རྒྱུག་བསྐྱལ་ཉིད་ནས་བ་གསུམ་གྱིས་ཅི་རིགས་པར་ཤིན་དུ་རྒྱུག་བསྐྱལ་བ་དག་ཡིན་པས་དེའི་ཕྱིར་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་དེ་བསྟོམ་པར་བྱ་ཏེ། །འདི་ལྟར་རེ་

1. ལྟ་བུ་—བསྟོམ་ 2. ལྟ་བུ་—ནས་ 3. ལྟ་བུ་—གྱུར། དེ་ལྟ་

4. ལྟ་བུ་—བའི་སེམས་ (ཅན་—བྱམས་པའི་རྒྱལ་སེམས་) 5. ལྟ་བུ་—གྱིས་

6. ལྟ་བུ་—རྣམས་ལ་ 7. ལྟ་བུ་—གསུམ་སེམས་



གང་དག་འདི་ཅགས་ལ་མོགས་པའི་ཉི་མོངས་པས་ཀླན་ནས་དགྲིས་...  
 བ་མེ་མོགས་ཀྱིས་མེས་དགྲིས་པ་དག་དང་། གང་དག་ལྟ་བུ་འཛན་ནས་བ་  
 མེ་མོགས་གཞིང་གཞིང་བར་གྱུར་བ་དེ་ནས་ཅད་ཀྱང་རྒྱག་དཔལ་གྱི་གྲུ་ཡིན་...  
 པས་གད་ཀ་ན་འདྲུག་པ་བཞིན་དུ་ཤིན་དུ་རྒྱག་དཔལ་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ། །ལྟ་  
 ནས་ཀྱང་ཐམས་ཅད་འགྲུར་པའི་རྒྱག་དཔལ་ཉིད་ཀྱིས་རྒྱག་དཔལ་པ་དག་ནི།  
 འདི་དཔལ་ན་རྒྱུད་པའི་རྒྱ་གང་ཅད་ཀྱང་ཡིན་པ་དེ་དག་ནི་དྲག་དུ་འཆི་འཕོ་བ་དང་...

[illegible]

ལྷུང་བ་ལ་སོགས་པའི་འཛིགས་པའི་ཕྱང་གིས་སེམས་ལ་གཞན་ན་ཇི་ལྟར་བདེ།  
 འདྲ་བྱེད་གྱི་སྐྱུག་བསྐྱེད་ཉིད་ནི་ལས་དང་ཉན་མངས་པའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་ཁྱུའི་གཞན་  
 གྱི་དབང་གི་ངོ་བོ་ཉིད་དང་། སྐད་ཅིག་རེ་རེ་ལ་འཛིག་པའི་ངང་ཅན་གྱི་མཚན་  
 ཉིད་དེ། འགྲོ་བ་ཐམས་ཅད་ལ་ཁྱབ་པ་ཡིན་ནོ། །དེ་བས་ན་འགྲོ་བ་མཐའ་  
 དག་ནི་སྐྱུག་བསྐྱེད་གྱི་མེ་ལྗེ་འབར་བའི་ནང་དུ་བྱུང་བ་ཡིན་པར་བརྟུན་ལ་ཇི་ལྟར་<sup>1</sup>  
 བདག་སྐྱུག་བསྐྱེད་མི་འདོད་པ་ལྟར་གཞན་ཐམས་ཅད་ཀྱང་དེ་དང་འདྲའོ་སྟུང་དུ་  
 བསམ་ཞིང་། ཀྱི་མ་གྱི་རྒྱད་བདག་ལ་སྐྱུག་པའི་སེམས་ཅན་འདི་དག་སྐྱུག་བསྐྱེད་  
 ན། སྐྱུག་བསྐྱེད་དེ་ལས་ཇི་ལྟར་ཐར་བར་བྱ་ཞེས་བདག་ཉིད་སྐྱུག་བསྐྱེད་བ་བཞིན་  
 དུ་བྱེད་ཅིང་དེ་དང་ཐལ་བར་འདོད་པའི་ནམ་པའི་སྟོང་ཇི་དེས་<sup>2</sup>དྲིང་ངེ་འཛིན་ལ་<sup>3</sup>  
 འདྲུག་ཀྱང་ཅང་། སྟོད་ལམ་ཐམས་ཅད་དུ་ཡང་ཅང་ལྟེ། དུས་ཐམས་ཅད་དུ་  
 སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་བསྐྱོས་པར་བྱ་ལྟེ།<sup>4</sup> ཐོག་མ་ཁོ་ནར་མཆོང་བཤེས་གྱི་  
 ཕྱོགས་ནམས་ལ་ཇི་སྟོན་སྟོས་པའི་སྐྱུག་བསྐྱེད་སྟོ་ཚོགས་ཉམས་སུ་སྤྱོང་བར་.....  
 མཐོང་བས་བསྐྱོས་པར་བྱའོ། །

དེ་ནས་སེམས་ཅན་མཉམ་པ་ཉིད་ཀྱིས་བྱེད་བྱ་མེད་པར་མཐོང་ནས་སེམས་  
 ཅན་ཐམས་ཅད་ནི་བདག་གི་གཉེན་དུ་གྱུར་པ་ཁོ་ནའོ་སྟུང་དུ་ཡོངས་སུ་བསམ་.....  
 ཞིང་བར་མདུན་ཕྱོགས་ནམས་ལ་བསྐྱོས་པར་བྱའོ། །གང་གི་ཆོ་དེ་ལ་མཆོང་བཤེས་  
 ཀྱི་ཕྱོགས་བཞིན་དུ་སྟོང་ཇི་དེ་མཉམ་པར་ཞུགས་པར་གྱུར་པ་དེའི་ཆོ་ཕྱོགས་བཅའི་  
 སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་བསྐྱོས་པར་བྱའོ། །གང་གི་ཆོ་བྱ་ཅང་ཅ་སྟོང་དུ་སྐྱུག་

1. ལྟ་བུ་—ལྟར་སྐྱུག་(ཆད་—ཇི་ལྟར་'བདག་'སྐྱུག་) 2. ལྟ་བུ་—དེ་ 3. ལྟ་བུ་—ལས་ཀྱང་འདྲུག་ཀྱང་

4. ལྟ་བུ་—(སྐྱུག་—ཅང་ལྟེ། 'དུས་ཐམས་ཅད་དུ་ཡང་ཅང་ལྟེ།' དུས་ཐམས་ཅད་དུ་སེམས་ཅན་)

5. ལྟ་བུ་—མཐོང་བར་ 6. ལྟ་བུ་—གྱི་



པ་རྒྱལ་བསྐྱེམ་པར་གྱུར་བའི་མ་བཞིན་དུ་བདག་ཉིད་ཀྱིས་<sup>1</sup>ཤིན་དུ་རྒྱལ་<sup>2</sup>པ་རྒྱལ་  
བསྐྱེམ་པ་ལས་འདོན་པར་འདོད་པའི་ནམ་པ་རང་གི་ངང་གིས་འཇུག་པའི་སྡིང་  
རྩེ་དེ་སེམས་ཅན་མཐའ་དག་ལ་མཉམ་པར་བྱགས་པར་གྱུར་པ་དེའི་ཆོ་<sup>3</sup>རྩོགས་  
པ་ཞེས་བྱ་སྟེ། སྡིང་རྩེ་ཆེན་པོ་འི་མིང་ཡང་འབྲོབ་པོ།

བྱམས་པ་བསྐྱེམ་པ་ནི་མཇེའ་བཤེས་ཀྱི་ཕྱོགས་<sup>4</sup>པ་ཐོག་མར་བྱས་ནས་  
བདེ་བ་དང་ལྷན་པར་འདོད་པའི་ནམ་པ་སྟེ། རིམ་གྱིས་ཐ་མལ་པ་དང་དགྲ་ལ་  
ཡང་བསྐྱེམ་པར་བྱའོ། །དེ་ལྟར་དེ་སྡིང་རྩེ་གོམས་པར་བྱས་ནས། རིམ་གྱིས་  
སེམས་ཅན་མཐའ་དག་མངོན་པར་འདོན་པར་འདོད་པ་རང་གི་ངང་གིས་འཇུག་པ་  
ཉིད་དུ་འགྱུར་པོ།

དེས་ན་ཅ་བའི་སྡིང་རྩེ་གོམས་པར་བྱས་ནས་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་བསྐྱེམ་  
པར་བྱའོ། །བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་དེ་ནི་ནམ་པ་གཉིས་དེ། ཀྱུན་རྫོབ་དང་། རོན་  
དམ་པའོ། །དེ་ལ་ཀྱུན་རྫོབ་པ་ནི་སྡིང་རྩེས་སེམས་ཅན་མཐའ་དག་མངོན་པར་  
འདོན་པར་དམ་བཅས་ནས་འགྲོ་བ་ལ་ཕན་པ་གདགས་པའི་ཕྱིར་སངས་རྒྱས་སུ་  
གྱུར་ཅིག་སྟེ་ཐུག་ཏུ་ཐོན་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་འདོད་པའི་<sup>6</sup>  
ནམ་པས་སེམས་དང་པོ་བསྐྱེད་པའོ། །དེ་ཡང་ཆུལ་ཁྲིམས་ཀྱི་ལེན་ལས་བརྟན་  
པའི་ཆོ་ག་བཞིན་དུ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབའི་ཕྱོག་པ་ལ་གནས་པ་མཁས་པ་པ་ལོ་  
པོ་ལས་<sup>7</sup>སེམས་བསྐྱེད་པར་བྱའོ། །

- 
1. ལྷ་པོ་-ཀྱི་ 2. ལྷ་ཅོ་-རྒྱལ་བསྐྱེམ་(ཆད་-ཤིན་དུ་རྒྱལ་'པ་རྒྱལ་'བསྐྱེམ་)
  3. ལྷ་པོ་-ཆོ་ བྱང་རྩེ་(ཆད་-དེའི་ཆོ་'རྫོགས་པ་ཞེས་བྱ་སྟེ།' བྱང་རྩེ་ཆེན་) 4. ལྷ་པོ་-ཕྱོགས་  
ཐོག་(ཆད་-ཕྱོགས་'ལ་ཐོག་) 5. ལྷ་པོ་-ཕན་པའི་(ཆད་-ཕན་'གདགས་'པའི་) 6. ལྷ་པོ་-  
པའི་སེམས་(ཆད་-པའི་'ནམ་པས་'སེམས་) 7. ལྷ་པོ་-ལས་བསྐྱེད་(ཆད་-ལས་'སེམས་'བསྐྱེད་)

དེ་ལྟར་ཀུན་རྫོབ་པའི་<sup>1</sup>བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་བསྐྱེད་ནས་དོན་དམ་པའི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་བསྐྱེད་པའི་ཕྱིར་འབད་བར་བྱའོ། །དོན་དམ་པའི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་དེ་ནི་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པ་སྟོན་པ་མཐའ་དག་དང་བྲལ་བ། ཡིན་དུ་གསལ་བ། དོན་དམ་པའི་སྟོན་ལྷན། ཁྱི་མ་མེད་པ། མི་གཡོ་བ། རླུང་མེད་པའི་མར་མེད་ལྷན་ལྷན་མི་གཡོ་<sup>2</sup>བའོ། །དེ་འགྲུབ་<sup>3</sup>པ་ནི་དག་དུ་གྲས་པར་ལྷན་རིང་དུ་ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་གི་ནལ་འབྱོར་གོམས་པར་བྱས་པ་ལས་མཐོང་འགྱུར་དེ། འཕགས་པ་དགོངས་པ་ངེས་པར་འགྲུལ་པ་ལས་<sup>4</sup>ཇི་སྟངས་དུ།  
 “བྱམས་པ་གང་ཡང་ཉན་ཐོས་ནམས་ཀྱི་འཇམ། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ནམས་ཀྱི་འཇམ། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ནམས་ཀྱི་<sup>5</sup>དགོངས་པའི་ཆོས་འཇིག་རྟེན་པ་དང་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་གི་འབྲས་བྱ་ཡིན་པར་རིག་པར་བྱའོ།” །ཞེས་གསུངས་པ་ལྟ་བུའོ། དེ་གཉིས་ཀྱིས་དྲིང་ངེ་འཇིན་ཐམས་ཅད་བསྐྱེས་པའི་ཕྱིར་ནལ་འབྱོར་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་དུས་ཐམས་ཅད་དུ་ངེས་པར་ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་བཞེན་པར་བྱ་སྟེ། འཕགས་པ་དགོངས་པ་ངེས་པར་འགྲུལ་པ་དེ་ཉིད་ལས།<sup>7</sup> “བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱིས་ཇི་སྟངས་དུ་ངས་ཉན་ཐོས་ནམས་དང་། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ནམས་དང་། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ནམས་ཀྱི་<sup>8</sup>དྲིང་ངེ་འཇིན་ནམ་པ་དུ་མ་བསྟན་པ་གང་དག་ཡིན་པ་དེ་མཐའ་ཐམས་ཅད་ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་གིས་བསྐྱེས་པར་རིག་པར་བྱའོ།” །  
 ཞེས་གསུངས་པ་ལྟ་བུའོ།

1. ལྟ་བུ་—ཀྱི་ 2. ལྟ་བུ་—གཡོས་ 3. ལྟ་བུ་—གྲུབ་ 4. ལྟ་བུ་—ལྷན་(མདོ་ཙ་ ༣༤)

5. ལྟ་བུ་—ཀྱིས་ 6. ལྟ་བུ་—ཀྱི་ 7. ལྟ་བུ་—ལྷན་(མདོ་ཙ་ ༣༤) 8. ལྟ་བུ་—ཀྱི་





དཔའི་མེ་མོད་ཀྱི་ཚོས་ཀྱི་ནམ་གངས་འདི་མ་ཐོས། འཕགས་པའི་ཚོས་འདུལ་  
 བ་མ་ཐོས་པར་དྲིང་འཛིན་ཅམ་གྱིས་ཚོག་པར་འཛིན་པ་ནི་ང་གྱུལ་གྱི་དབང་...  
 གིས་མངོན་པའི་ང་གྱུལ་དུ་ལྷུང་ཞིང་། ཟླ་བ་དང་། གླ་བ་དང་། ཉ་བ་དང་།  
 འཆི་བ་དང་། ལྷ་ངན་དང་། སྒྲིལ་གསལ་འདོན་པ་དང་། སྒྲིལ་བསྐལ་བ་དང་།  
 ཡིད་མི་བདེ་བ་དང་། འཁྲུག་པ་ལས་ཡོངས་སུ་མི་གྲོལ། འགྲོ་བ་དུག་གི་<sup>2</sup>  
 འཁོར་བ་ལས་ཡོངས་སུ་མི་གྲོལ། སྒྲིལ་བསྐལ་གྱི་སྤང་བོ་ལས་ཀྱང་ཡོངས་སུ་  
 མི་གྲོལ་དེ། དེ་ལ་དགོངས་ནས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པས་འདི་སྐད་ཅམ། གཞན་  
 ལས་<sup>3</sup>ཆེས་སུ་མཐུན་པ་ཐོས་པ་ནི་གྲི་ཤི་ལས་གྲོལ་བར་འགྱུར་རོ། ཞེས་བཀའ་  
 བསྟུན་དེ།” ཞེས་གསུངས་སོ།

དེ་ལྟ་བུས་ན་རྒྱུ་བ་པ་མཐུན་དག་སྤངས་ནས་ཡོངས་སུ་དག་པའི་ཡེ་ཤེས་...  
 འགྱུར་བར་འདོད་པས་<sup>4</sup>ཞི་གནས་ལ་གནས་ཤིང་ཤེས་རབ་བསྐྱེད་པར་བྱའོ། །  
 དེ་སྐད་དུ། འཕགས་པ་དཀོན་མཆོག་བཅེགས་པ་ལས་<sup>5</sup>ཀྱང་བཀའ་སྟུལ་དེ།  
 རྒྱལ་ཁྲིམས་ལ་ནི་གནས་ནས་དྲིང་འཛིན་ཐོབ་ཐེ། །  
 དྲིང་འཛིན་ཐོབ་ནས་ཀྱང་ཤེས་རབ་སྐྱེད་པར་བྱེད། །  
 ཤེས་རབ་ཀྱིས་ནི་ཡེ་ཤེས་ནམ་པར་དག་པ་འཐོབ། །  
 ཡེ་ཤེས་ནམ་པར་དག་པས་རྒྱལ་ཁྲིམས་ཐུན་སྒྲིམ་ཚོགས། །

ཞེས་བཀའ་བསྟུན་དེ། འཕགས་པ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ལ་དད་པ་བསྐྱེད་པའི་མདོ་

1. ལྷ་མེ་—རྒྱལ་དབང (ཆད་—རྒྱལ་གྱི་དབང) 2. ལྷ་མེ་—དུག་དུ་

3. ལྷ་ལྷ་—གཞན་ལ (ཆད་—གཞན་ལས་) 4. ལྷ་མེ་—བ་

5. ལྷ་མེ་—བཀའ་(དཀོན་བཅེགས་—ཆ་ལོད་སྤང་གོས་ལས་ཐོབ་པའི་ལྷ་མེ་ ༡༩༩)



ལས་<sup>1</sup>ཀྱང་། “རིགས་ཀྱི་བྱ་ཤེས་རབ་ལ་ཉེ་བར་མི་གནས་ན་བྱང་ཆུབ་སེམས་  
དབང་<sup>2</sup>ནམས་ཀྱིས་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ལ་དད་པ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ལ་ཇི་ལྟར་ཡང་འབྱུང་  
བར་ང་མི་སྒྲུབ། །རིགས་ཀྱི་བྱ་ཤེས་བྱང་ཆུབ་ཀྱང་འདྲ་ལྟར་བྱང་ཆུབ་སེམས་  
དབང་ནམས་ཀྱི་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ལ་དད་པ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ལ་འབྱུང་བ་གང་ཅི་ཡང་  
ཆུང་།<sup>3</sup> དེ་ཐམས་ཅད་ནི་ནམ་པར་མ་གཤེད་ས་པའི་སེམས་ཀྱིས་<sup>4</sup>དོན་དང་ཆོས་  
ཡང་དག་པར་བསམས་པ་ལས་བྱུང་བར་རིག་པར་བྱའོ།” ཞེས་བཀའ་བསྩལ་དོ།

ཞི་གནས་དང་བྱལ་བའི་ལྷག་མཐོང་འབང་ཞིག་གིས་ནི་ནལ་འབྱོར་བའི་……  
སེམས་ལྷལ་ནམས་ལ་ནམ་པར་གཤེད་པར་འབྱུང་གི།<sup>6</sup> ཆུང་གི་ནང་ན་འདྲུག་  
བའི་མར་མེ་བཞིན་དུ་བརྟན་པར་མི་འབྱུང་ལོ། །དེ་བས་ན་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་རྣང་བ་  
ཤིན་དུ་གསལ་བར་མི་འབྱུང་ཟླ། དེ་ལྟར་བས་ན་གཉིས་ཀ་དང་འདྲ་བར་བརྟེན་  
བར་བྱའོ། །དེའི་ཕྱིར་འཕགས་པ་ཡོངས་སུ་བྱ་ངན་ལས་འདས་པ་ཆེན་པོ་འི་  
མདོ་ལས་<sup>8</sup>ཀྱང་། “ཉན་ཐོས་ནམས་ཀྱིས་ནི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་རིགས་མི་  
མཐོང་ཟླ། ཉིང་ངེ་འཛིན་གྱི་ཤས་ཆེ་བའི་ཕྱིར་དང་། ཤེས་རབ་ཆུང་བའི་ཕྱིར་  
ལོ། །བྱང་ཆུབ་སེམས་དབང་ནམས་ཀྱིས་ནི་མཐོང་མཐོང་གི་མི་གསལ་དོ། ཤེས་  
རབ་ཀྱི་ཤས་ཆེ་བའི་ཕྱིར་དང་། ཉིང་འཛིན་ཆུང་བའི་ཕྱིར་<sup>9</sup>ལོ། །དེ་བཞིན་  
གཤེགས་པས་ནི་ཐམས་ཅད་གཟིགས་དོ། ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་མཆོངས་  
པར་ལྷན་བའི་ཕྱིར་ལོ།” ཞེས་བཀའ་བསྩལ་དོ། ཞི་གནས་ཀྱི་སྟོབས་ཀྱིས་

1. ལྷེ་བཀའ་(མདོ་པ་ 27) 2. ལྷེ་པེ་—དབང་ཤི་ཐེག་པ་པ་ནམས་ཀྱི་ཐེག་པ་  
3. ལྷེ་པེ་—བྱང་ཆུབ་སེམས་ 4. ལྷེ་པེ་—ཀྱི་ 5. ལྷེ་པེ་—གཤེད་ས་ 6. ལྷེ་པེ་—གྱིས་  
7. ལྷེ་པེ་—གནས་ 8. ཆོས་ཞེས་ངེས་ཆེད་མ་བྱ་བ།  
9. ལྷེ་པེ་—ཕྱིར་དང་

ནི་མར་མེ་རྒྱུང་གིས་<sup>1</sup>མ་བསྐྱོད་པ་བཞིན་དུ་ནམ་པར་དོག་པའི་རྒྱུང་ནམས་ཀྱིས་<sup>2</sup>  
 སེམས་གཡོ་བར་མི་འགྱུར་རོ། །རྣལ་མཐོང་གིས་ནི་ལྟ་བུ་པར་པའི་བྱི་མ་མཐའ་  
 དག་སྤངས་པས་གཞན་དག་གིས་མི་སྤྱེད་ད། རྒྱ་བ་སྒྲོན་མེདི་མདོ་ལས་<sup>3</sup>ཇི་སྟེད་དུ།  
 ཞི་གནས་ལྟོབས་ཀྱིས་གཡོ་བ་མེད་པར་འགྱུར།

རྣལ་མཐོང་གིས་ནི་རེ་དང་འདྲ་བར་འགྱུར། །ཞེས་གསུངས་པ་  
 ལྟ་བུའོ། །དེ་ལྟ་བུས་ན་གཉིས་ཀ་ལ་ནལ་འབྱོར་དུ་བྱས་པར་གནས་སོ།

དེ་ལ་ཐོག་མར་རེ་ཞིག་ནལ་འབྱོར་བས་གང་གིས་བདེ་བར་སྤྱར་དུ་ཞི་.....  
 གནས་དང་རྣལ་མཐོང་འགྱུར་བར་འགྱུར་བ་ཞི་གནས་དང་རྣལ་མཐོང་གི་ཚོགས་  
 ལ་ཇི་བསྐྱེན་པར་བྱའོ། །དེ་ལ་ཞི་གནས་ཀྱི་ཚོགས་གང་ཞིན། མཐུན་པའི་ཡུལ་  
 ན་གནས་པ་དང་། འདོད་པ་རྒྱུང་བ་དང་། ཚོག་ཤེས་པ་དང་། བྱ་བ་མང་  
 བོ་ཡོངས་སུ་སྤངས་པ་དང་། ཚལ་བྲིམས་ནམ་པར་དག་པ་དང་། འདོད་པ་  
 ལ་སོགས་པའི་ནམ་པར་དོག་པ་ཡོངས་སུ་སྤངས་པའོ།

དེ་ལ་ཡོན་ཏན་ལྷ་དག་དང་ལྷན་པ་ནི་མཐུན་པའི་ཡུལ་ཡོན་པར་ཤེས་པར་  
 བྱ་ཏེ། གོས་དང་ཟས་ལ་སོགས་པ་ཚོགས་མེད་པར་རྟེན་པའི་ཕྱིར་རྟེན་སྤྲོ་བ་  
 དང་། རྩེ་བོ་མི་སྤྱན་པ་དང་དགྲ་ལ་སོགས་པ་མི་གནས་པའི་<sup>4</sup>ཕྱིར་གནས་བཟང་  
 པ་དང་། ནད་མེད་པའི་ས་ཡོན་པས་ས་བཟང་བ་དང་། སྒོགས་ཚལ་བྲིམས་  
 དང་ལྷན་པ་<sup>5</sup>ལྟ་བུ་མཚུངས་པ་ཡོན་པས་སྒོགས་བཟང་བ་དང་། རྟིན་མོ་སྤྱི་བོ་

1. ལྟ་བུ་གི་ 2. ལྟ་བུ་ཀྱི་ 3. ལྟ་བུ་པུའུ་(མདོ་དུ་ 20) རྒྱ་བ་སྒྲོན་མེདི་མདོ་དུ་དང་།

དྲིང་ངེ་འཛོན་གྱིས་བོ་དེ་མདོ་ཞེས་པ་མཚན་ལྟ་དུ་བཞུགས་པ་ལས་མདོ་ལྟ་དུ་བོ་ནི་མ་ཡིན་ནོ།

4. ལྟ་བུ་པའི་གནས་(ཆད་པའི་ཕྱིར་གནས་)

5. ལྟ་བུ་པ་མཚུངས་(ཆད་པ་ལྟ་བུ་པ་མཚུངས་)



མང་བོ་དག་གིས་མ་གང་བའི་ཕྱིར་དང་། མཚན་མོ་སྤྱི་ཆུང་བའི་ཕྱིར་ལེགས་  
 བར་ལྷན་པའོ། འདྲོད་པ་ཆུང་བ་གང་ཞེ་ན། ཆོས་གོས་ལ་སོགས་<sup>1</sup>པ་བཟང་  
 བོའས་མང་བོ་ལ་ལྷན་པར་ཆགས་པ་མེད་པའོ། །ཆོག་ཤེས་པ་གང་ཞེ་ན།  
 ཆོས་གོས་ལ་སོང་བ་ངན་ངོན་ཅམ་རྟེན་པས་དྲག་དུ་ཆོག་ཤེས་པ་གང་ཡིན་པའོ། །  
 བྱ་བ་མང་བོ་ཡོངས་སུ་སྤངས་པ་གང་ཞེ་ན། ཉོ་ཚང་ལ་སོགས་པ་ལས་ངན་  
 བ་ཡོངས་སུ་སྤང་བ་དང་། བྱིས་པ་དང་རབ་དུ་བྱུང་བ་གང་དག་ཏུ་ཅང་སྒྲིམ་  
 འདྲིན་བྱེད་པ་ཡོངས་སུ་སྤང་བ་དང་། སྒྲན་བྱེད་པ་སྐར་མ་ཅི་བ་ལ་སོགས་པ་  
 ཡོངས་སུ་སྤངས་པ་<sup>2</sup>གང་ཡིན་པའོ། །

ཚུལ་ཁྲིམས་ནམ་པར་དག་པ་གང་ཞེ་ན། སྒྲིམ་པ་གཉིས་ཀྱི་ལ་ཡང་རང་  
 བཞིན་དང་བཅས་པའི་ཁ་ན་མ་ཐོ་བ་དང་བཅས་པའི་བསྐྱེད་པའི་གཞི་མི་འདུལ་བ་  
 དང་། བག་མེད་པར་རལ་ན་ཡང་སྤྱིན་པ་སྤྱིན་<sup>3</sup>པར་འགྱུར་པས་ཆོས་བཞིན་དུ་བྱེད་  
 པ་དང་། ཉན་ཐོས་ཀྱི་སྒྲིམ་པ་ལ་ཕམ་པ་བཅོས་སུ་མི་རུང་བར་བསྐྱེད་པ་གང་  
 ཡིན་པ་དེ་ལ་ཡང་འགྱུར་པ་རང་ལྷན་པ་དང་། བྱིས་མི་བྱ་བའི་སེམས་དང་ལྷན་  
 པ་དང་། སེམས་གང་གིས་ལས་དེ་བྱས་པའི་སེམས་དེ་ལ་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་  
 སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཕྱིར་རམ། ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་གཤམས་  
 པའི་ཕྱིར་དེའི་ཚུལ་ཁྲིམས་ནམ་པར་དག་པ་ཁོ་ན་ཡིན་པར་བརྟེན་པར་བྱའོ། །  
 དེ་ནི་འཕགས་པ་མ་སྤྱེས་དགའི་འགྱུར་པ་བསལ་<sup>4</sup>པ་ལས་ཁོང་དུ་ཆུད་པར་རྟག་  
 པར་བྱའོ། །དེ་བས་ན་<sup>5</sup>དེ་འགྱུར་པ་མེད་པར་བྱས་ལ་སྒྲིམ་པ་ལ་མངོན་པར་  
 བརྟེན་པར་བྱའོ། །

1. ལྷ་པོ་-སོགས་བཟང་ 2. ལྷ་པོ་-བ་ཡིན་(ཆད་-བ་གང་ཡིན་) 3. ལྷ་པོ་-སྤྱིན་པས་  
 4. ལྷ་པོ་-གསལ་ 5. ལྷ་པོ་-ན་འགྱུར་

འདོད་པ་ནམས་ལ་ཡང་ཆོ་འདི་དང་ཆོ་ཕྱི་མ་ལ་ཉེས་དམིགས་ནམ་པ་མང་  
 བོར་འགྱུར་བར་ཡིད་ལ་བྱས་ལ་དེ་དག་ལ་ནམ་པར་རྟོག་པ་སྤང་བར་བྱའོ། །  
 ནམ་པ་གཅིག་དུ་ན་འཁོར་བ་<sup>1</sup>པའི་དངོས་པོ་སྤྲུག་པའམ་མི་སྤྲུག་པ་ཡང་ཅད་ཉེ།  
 དེ་<sup>2</sup>དག་ཐམས་ཅད་ནི་ནམ་པར་འཇིག་པའི་ཆོས་ཅན་མི་བརྟན་པ་ཉེ། གདོན་མི་  
 ཟ་བར་དེ་དག་ཐམས་ཅད་<sup>3</sup>དང་བདག་རིང་བོར་མི་ཐོགས་པར་འབྱུང་བར་གྱུར་ན།  
 བདག་དེ་ལ་ཅི་ཞིག་སྤྲུག་པར་ཆགས་པ་ལ་སོགས་པར་འགྱུར་སྤྲུག་དུ་བསྐྱེམས་་་  
 བས་ནམ་པར་རྟོག་པ་ཐམས་ཅད་སྤང་བར་བྱའོ། །

སྤྲུག་མཐོང་གི་ཆོགས་གང་<sup>4</sup>ཞེ་ན། སྤྲེས་བྱ་དམ་པ་ལ་བརྟན་པ་དང་།  
 མང་དུ་ཐོས་པ་ཡོངས་སུ་བཅའ་བ་དང་། ཅུལ་བཞིན་སེམས་བའོ། །དེ་ལ་  
 སྤྲེས་བྱ་དམ་པ་རྗེ་ལྟ་བུ་ལ་བརྟན་པར་བྱ་ཞེ་ན། གང་མང་དུ་ཐོས་པ་དང་།  
 ཆོག་གསལ་བ་དང་། སྤྲིང་རྗེ་དང་ལྟན་པ་དང་། སྤྲོ་བ་བཟོད་བའོ། །

དེ་ལ་མང་དུ་ཐོས་པ་ཡོངས་སུ་བཅའ་བ་གང་ཞེ་ན། གང་བཅོས་ལྟན་  
 འདས་ཀྱི་གསུང་རབ་ཡན་ལག་བཅུ་གཉིས་པོ་ངེས་པའི་དོན་དང་དྲང་བའི་དོན་ལ་  
 བྱས་པར་བྱས་གིང་གིན་དུ་ཉན་པ་ཉེ། འདི་ལྟར་འཕྲུ་བ་དགོངས་པ་ངེས་པར་  
 འབྱུང་བ་ལས།<sup>6</sup> “འཕགས་པའི་གདམས་འདོད་པ་བཞིན་དུ་ས་ཐོས་པ་ནི་སྤྲུག་  
 མཐོང་གི་གོགས་ཡོན་ནོ།” ཞེས་བཀའ་སྤྲུལ་དོ། དེ་ཉིད་ལས།<sup>7</sup> “སྤྲུག་མཐོང་  
 ནི་ཐོས་པ་དང་བསམས་པ་ལས་བྱུང་བའི་ལྟ་བ་ནམ་པར་དག་པའི་རྒྱ་ལས་བྱུང་བ་”

1. ལྟ་བ་—བའི་དངོས་ 2. ལྟ་བ་—དེ་ཐམས་ 3. ལྟ་བ་—ཅད་རིང་བོར་(ཆད་—ཅད་དང་བདག་  
 རིང་བོར་) 4. ལྟ་བ་—གང་ཞེ་ག 5. ལྟ་བ་—བྱ་བརྟན་ 6. ལྟ་བ་—བཀའ་(མདོ་ཙ་མ་)

7. ལྟ་བ་—བཀའ་(མདོ་ཙ་མ་)





གཞིན་པའི་བསམ་བ་ཅན་གྱིས་<sup>1</sup>སྤྱིང་ཇི་ཆེན་པོ་མངོན་དུ་བྱས་ལ། ཕྱོགས་བཅུ་  
ན་བཞུགས་པའི་སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཐམས་ཅད་ལ་ཡན་ལག་...  
ལུས་ཕྱག་བྱས་ནས། སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་སྐྱ་གཞུགས་རི་  
མོ་ལ་སོགས་པ་མདུན་དུ་བཞག་གས་གཞན་དུ་ཡང་བྱང་སྟེ། དེ་དག་ལ་ཅི་རྒྱས་  
ཀྱིས་མཆོད་པ་དང་བསྟོད་པ་བྱས་ལ་རང་གི་སྤྲིག་པ་བཤགས་ནས་འགྲོ་བ་མཐའ་  
དག་གི་བསོད་ནམས་ལ་ཇེས་སུ་ཡི་རང་བར་བྱས་ལ། ལྷན་གྱིན་དུ་འཇམ་པོ་<sup>2</sup>  
བདེ་བ་ལ་ཇི་བཅུན་ནས་པར་སྤང་མཛད་ཀྱི་སྦྱིལ་མོ་ཀྱང་ལྟ་བུའས། སྦྱིལ་མོ་ཀྱང་  
ཕྱེད་དུ་ཡང་བྱང་སྟེ། མིག་ཉ་ཅང་ཡང་མི་དགྲ། ཉ་ཅང་ཡང་མི་གཞུས་<sup>3</sup>པར་སྤྲི་  
ཅེ་མོར་གཏད་<sup>4</sup>ཅིང་། ལུས་ཉ་ཅང་ཡང་མི་སྦྱ།<sup>5</sup> ཉ་ཅང་ཡང་མི་དགྲེ་བར་  
བྱང་བོར་བསྤངས་ལ་བྲན་བ་ནང་དུ་བཞག་སྟེ་འདུག་པར་བྱའོ། །དེ་ནས་སྤྲག་པ་  
མཉམ་པར་བཞག་<sup>6</sup>ལ་མགོ་མི་མཐོ་མི་དཔའ་ཞིང་ཕྱོགས་གཅིག་དུ་མ་ཡོ་བར་...  
བཞག་སྟེ། ལྷ་ནས་ལྟེ་བའི་བར་བྱང་བོར་བཞག་གོ། །སོ་དང་མཆུ་ཡང་ཐ་མལ་  
པར་བཞག་གོ། །ཁྱེ་ཡང་ཡ་<sup>7</sup>སོ་འི་དུང་དུ་གཞན་<sup>8</sup>པོ། །དབྱགས་ཕྱི་ནང་དུ་  
རྒྱ་བ་ཡང་སྒྲ་ཅན་དང་། རྒྱམས་<sup>9</sup>པ་ཅན་དང་། དབྱགས་གོད་པ་ཅན་དུ་མི་  
བདང་གི། །ཅི་ནས་ཀྱང་མི་ཚོར་བར་དལ་<sup>10</sup>བྱ་དལ་བྱས་ལུན་གྱིས་གྲུབ་པའི་ཆུལ་  
གྱིས་དབྱགས་ནང་དུ་རྒྱབ་པ་དང་ཕྱིར་འབྱུང་བ་དེ་ལྟར་བྱའོ། །

དེ་ལ་ཐོག་མར་རེ་ཞིག་ཞི་གནས་བསྐྱབ་པར་བྱ་སྟེ། ཕྱི་རོལ་གྱི་ཡུལ་ལ་  
ནས་པར་གཡོང་བ་ཞི་ནས་ནང་དུ་དམིགས་པ་ལ་རྒྱུན་དུ་རང་གི་ངང་གིས་འཇུག་...

1. ལྷ་པོ་གྱི་ 2. ལྷ་པོ་བ་ 3. ལྷ་པོ་ཟམ་ 4. ལྷ་པོ་བཅུན་ 5. ལྷ་པོ་དགྲ་

6. ལྷ་པོ་གཞག་ 7. ལྷ་པོ་ལས་ 8. ལྷ་པོ་གཞག་ 9. ལྷ་པོ་

10. ལྷ་པོ་བར་དལ་བྱས་ལུན་



ལ་དགའ་བ་དང་ཤིན་ཏུ་སྤངས་པ་དང་ལྷན་པའི་སེམས་ཉིད་ལ་གནས་པ་ནི་ནི་.....  
གནས་ཞེས་བྱའོ། །ཞི་གནས་དེ་ཉིད་ལ་དམིགས་པའི་ཆོ་དེ་ཁོ་ན་ལ་ནམ་པར་  
དབྱེད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་ལྷག་མཐོང་ཡིན་དེ། འཕགས་པ་དགོན་མཆོག་སྤྱིན་  
ལས་<sup>1</sup>ཇི་སྐད་དུ། “ཞི་གནས་ནི་སེམས་ཅེ་གཅིག་པ་ཉིད་དོ། །ལྷག་མཐོང་ནི་  
ཡང་དག་པར་སོ་སོར་རྟོག་བའོ།” །ཞེས་གསུངས་པ་ལྟ་བུ་འོ། །

འཕགས་པ་དགོངས་པ་ངེས་པར་འགྲེལ་བ་ལས་<sup>2</sup>ཀྱང་། “བཅོམ་ལྷན་  
འདས་ཇི་ལྟར་ཞི་གནས་ཡོངས་སུ་ཆོལ་བར་བགྱིད་པ་དང་། ལྷག་མཐོང་ལ་  
མཁས་པ་ལགས། བཀའ་སྤྱུལ་བ། དུམས་པ་ངས་ཆོས་གདགས་པ་  
ནམ་པར་གཞག་པ་འདི་ལྟ་སྟེ། མདོ་འི་སྟེ་དང་། དབྱངས་ཀྱིས་བསྟན་པའི་  
སྟེ་དང་། ལུང་དུ་བསྟན་པའི་སྟེ་དང་།<sup>3</sup> ཆོགས་སུ་བཅད་པའི་སྟེ་དང་།  
ཆེད་དུ་བཟོད་པའི་སྟེ་དང་། སྤྱང་གཞིའི་སྟེ་དང་། རྟོགས་<sup>4</sup>པ་བཟོད་པའི་སྟེ་  
དང་། དེ་ལྟ་བུ་བྱུང་བའི་སྟེ་དང་། སྤྱེས་པ་རབས་ཀྱི་སྟེ་དང་། ཤིན་ཏུ་  
གྱས་པའི་སྟེ་དང་། མད་དུ་བྱུང་བའི་<sup>5</sup>ཆོས་ཀྱི་སྟེ་དང་། གདན་ལ་པལ་བར་  
བསྟན་པའི་སྟེ་གང་དག་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབའ་ནམས་ལ་བཤད་པ་དེ་དག་བྱང་ཆུབ་  
སེམས་དབས་ལེགས་པར་ཐོས། ལེགས་པར་གཞུང་། ཁ་རྟོན་བྱང་བར་བྱས།  
ཡིད་ཀྱིས་ལེགས་པར་བརྟགས། མཐོང་བས་ཤིན་ཏུ་རྟོགས་པར་བྱས་ནས་དེ་  
གཅིག་ལྷ་དབེན་པར་འདུག་སྟེ་<sup>6</sup>ནང་དུ་ཡང་དག་བཞག་ནས་ཇི་ལྟར་ལེགས་པར་  
བསམས་པའི་ཆོས་དེ་དག་ཉིད་ཡིད་ལ་བྱེད་ཅིང་སེམས་གང་གིས་ཡིད་ལ་བྱེད་.....

- 
1. ལྷ་-བཀའ་(མདོ་ལྟ་2) 2. ལྷ་-བཀའ་(མདོ་ལྟ་26) 3. ལྷ་མེ-སྟེ་དང་། ཆེད་  
(ཆེད་-སྟེ་དང་། ཆོགས་ཀྱི་བཅད་པའི་སྟེ་དང་། ཆེད་དུ་) 4. ལྷ་མེ-རྟོག་  
5. ལྷ་མེ-བའི་སྟེ་(ཆེད་-བྱུང་བ་པའི་ཆོས་ཀྱི་སྟེ་) 6. ལྷ་མེ-དེ་

བའི་སེམས་<sup>1</sup>དེ་ནང་དུ་རྒྱན་ཆགས་སུ་ཡིད་ལ་བྱེད་བས་ཡིད་ལ་བྱེད་དོ། །<sup>2</sup>དེ་  
 ལྟར་ཞུགས་ཤིང་དེ་ལ་ལན་མང་དུ་གནས་བ་དེ་ལ་ལུས་<sup>3</sup>ཤིན་དུ་སྤངས་བ་<sup>4</sup>དང་།  
 སེམས་ཤིན་དུ་སྤངས་བ་འབྱུང་བ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་ཞི་གནས་ཞེས་བྱ་སྟེ། དེ་  
 ལྟར་ན་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབའ་ཞི་གནས་ཡོངས་སུ་ཚོལ་བར་བྱེད་པ་ཡིན་ནོ། །  
 དེས་<sup>5</sup>ལུས་ཤིན་དུ་སྤངས་བ་དང་། སེམས་<sup>6</sup>ཤིན་དུ་སྤངས་བ་དེ་ཐོབ་ནས་དེ་  
 ཉིད་ལ་གནས་དེ། སེམས་ཀྱི་<sup>7</sup>རྣམ་པར་གཡེང་བ་སྤངས་ནས་ཇི་ལྟར་བསམས་<sup>8</sup>  
 བའི་ཚོས་དེ་དག་ཉིད་ནང་དུ་དྲིང་ངེ་འཛིན་གྱི་སྟོང་ཡུལ་གཞུགས་བརྟན་དུ་སོ་  
 སོར་རྟོག་བ་བྱེད།<sup>9</sup> མོས་བར་བྱེད་དོ། །དེ་ལྟར་དྲིང་ངེ་འཛིན་གྱི་སྟོང་ཡུལ་  
 གཞུགས་<sup>10</sup>བརྟན་དེ་དག་ལ་ཤེས་བྱའི་ངོན་དེ་རྣམ་པར་འབྱེད་བ་དང་། རབ་དུ་  
 རྣམ་པར་འབྱེད་བ་དང་། ཡོངས་སུ་རྟོག་བ་དང་། ཡོངས་སུ་དབྱེད་བ་དང་།  
 བཟོད་བ་དང་། འདོད་བ་དང་། བྱེ་བྲག་འབྱེད་བ་དང་། ལྟ་བ་དང་།  
 རྟོག་<sup>11</sup>པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་རྣམ་མཐོང་ཞེས་བྱ་སྟེ། དེ་ལྟར་ན་བྱང་ཆུབ་སེམས་  
 དབའ་<sup>12</sup>ལྟག་མཐོང་ལ་མཁས་པ་ཡིན་ནོ། །ཞེས་གསུངས་སོ། །  
 དེ་ལ་རྣལ་འབྱོར་བ་ཞི་གནས་མངོན་པར་བསྐྱབ་<sup>13</sup>པར་འདོད་པས་ཐོག་  
 མར་<sup>14</sup>ཇེ་ཞིག་མདོ་འི་སྡེ་དང་། དབྱངས་ཀྱིས་བརྟན་པའི་སྡེ་ལ་སོང་<sup>15</sup>པ་གསུང་  
 རབ་མཐའ་དག་ནི་དེ་བཞིན་ཉིད་ལ་གཞིལ་བ། དེ་བཞིན་ཉིད་ལ་བབ་བ། དེ་

1. ལྟ་བུ་—སེམས་ནང་ 2. ལྟ་བུ་—ལུས་ནི་ 3. ལྟ་བུ་—འབྱུང་(ཆད་—བ་དང་སེམས་ཤིན་དུ་  
 སྤངས་བ་འབྱུང་) 4. ལྟ་བུ་—ད་ 5. ལྟ་བུ་—སེམས་ཡོངས་སུ་སྤངས་  
 6. ལྟ་བུ་—སེམས་ཀྱིས་ 7. ལྟ་བུ་—བསམ་ 8. ལྟ་བུ་—བྱེད་དོ། 9. ལྟ་བུ་—གཞུགས་དེ་  
 (ཆད་—གཞུགས་བརྟན་དེ་) 10. ལྟ་བུ་—རྟོགས་ 11. ལྟ་བུ་—དབའི་  
 12. ལྟ་བུ་—སྐྱབ་ 13. ལྟ་བུ་—མ་ 14. ལྟ་བུ་—སོགས་གསུང་རབ་



བཞིན་ཉིད་ལ་འབབ་<sup>1</sup>པའོ་ཞེས་ཐམས་ཅད་བསྐྱེད་དེ་ལ་སེམས་ཉི་བར་བཞག་...  
 བར་བྱའོ། །ནམ་བུ་གཅིག་དུ་ན་ནམ་བུ་ཆེ་ཅམ་གྱིས་ཆོས་ཐམས་ཅད་བསྐྱེད་  
 བར་བྱུང་<sup>2</sup>པ་ཐུང་པོ་ལ་སོགས་པ་དེ་ལ་སེམས་ཉི་བར་བཞག་བར་བྱའོ། །ནམ་  
 བུ་གཅིག་དུ་ན་ཆེ་ལྟར་མཐོང་བ་དང་། ཆེ་ལྟར་ཐོས་པའི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་སྐྱེ་  
 གཞུགས་ལ་སེམས་བཞག་བར་བྱ་སྟེ། འཕགས་པ་དྲིང་འཛིན་གྱི་གྲུལ་པོ་  
 ལས་<sup>3</sup>ཆེ་སྐད་དུ།

གསེར་གྱི་ཁ་དོག་ལྟ་བུརི་སྐྱེ་ལས་ཀྱིས།<sup>4</sup>

འཛིག་དེན་མགོན་པོ་ཀུན་དུ་མཛོས་པ་སྟེ།

དམིགས་པ་དེ་ལ་གང་གིས་<sup>5</sup>སེམས་འཇུག་པ།

བྱང་ཆུབ་སེམས་དབང་དེ་མཉམ་བཞག་ཅེས་བྱ། ཞེས་གསུངས་

པ་ལྟ་བུའོ།

དེ་ལྟར་གང་ལ་འདོད་པའི་དམིགས་པ་དེ་ལ་སེམས་བཞག་ནས་ད་ཉིད་ལ་  
 ཕྱིར་ཞིང་རྒྱན་<sup>6</sup>དུ་སེམས་བཞག་བར་བྱའོ། །དེ་ལ་ཉི་བར་བཞག་ནས་སེམས་  
 ལ་འདི་ལྟར་དབྱད་<sup>7</sup>པར་བྱ་སྟེ། ཅི་དམིགས་པ་ལེགས་པར་འཛིན་དམ།<sup>8</sup> འོན་  
 དེ་བྱིང་ངམ། འོན་དེ་བྱི་རོལ་གྱི་ཡུལ་ལ་ནམ་བུ་འབྱར་བས་ནམ་བུ་གཡེངས་  
 སམ་སྐྱེས་དུ་བཏོག་པར་བྱའོ། །དེ་ལ་གཡ་དེ་སྐྱེགས་པ་དང་གཉིད་ཀྱིས་ནོན་  
 ནས་སེམས་བྱིང་ངམ། བྱིང་དུ་དྲོགས་པ་མཐོང་བ་དེའི་ཆོ། མཆོག་དུ་དགའ་  
 བའི་དངོས་པོ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་སྐྱེ་གཞུགས་ལ་སོང་བའོ། །སྤང་བའི་འདུ་ཤེས་

1. ལྟ་བུ་-བབ་ 2. ལྟ་བུ་-འབྱར་བ་ 2. ལྟ་བུ་གཉན་(མདོ་དུ་ ༡༩)

4. ལྟ་བུ་-ཀྱི་ 5. ལྟ་བུ་-གི་ 6. ལྟ་བུ་-རྒྱན་དུ་བཞག་(ཆད་-རྒྱན་དུ་'སེམས་'བཞག་)

7. ལྟ་བུ་-སྐྱེད་ 8. ལྟ་བུ་-ནམ་

ཡིད་ལ་བྱུང་། །དེ་ནས་བྱིང་བ་ཞི་བར་བྱས་ནས་ཅི་ནས་ཀྱང་དམིགས་པ་དེ་ཉིད་<sup>1</sup>  
ལ་སེམས་ཀྱིས་<sup>2</sup>དམིགས་པ་ཤིན་ཏུ་གསལ་བར་མཐོང་བར་གྱུར་པ་དེ་ལྟར་བྱུང་།

གང་གི་ཆོ་དམུས་ཡོང་ལྟ་བུར་མ། མི་སྒྲུབ་བར་ཞུགས་པ་ལྟ་བུར་མ། མིག་  
བཅུམས་པ་ལྟ་བུར་སེམས་ཀྱིས་དམིགས་པ་ཤིན་ཏུ་གསལ་བར་མི་མཐོང་བ་དེའི་  
ཆོ་བྱིང་བར་གྱུར་བར་རིག་པར་བྱུང་། །གང་གི་ཆོ་བྱིང་ལྟ་བུར་གྱི་གཞུགས་ལ་སོང་  
པ་ལ་དེ་དག་གི་ཡོན་ཏན་དོག་པས་རྒྱལ་<sup>3</sup>བའི་ཕྱིར་རམ། གཞན་ཡིད་ལ་བྱིང་  
པས་སམ། རྒྱུ་བྱིང་བའི་ཡུལ་ལ་འདོད་པས་སེམས་གོད་བའམ་གོད་ཏུ་<sup>4</sup>དྲོད་  
བར་མཐོང་བ་དེའི་ཆོ་འདུ་བྱིང་ཐམས་ཅད་མི་དོག་པ་དང་། རྒྱལ་བསྐྱེད་པ་ལ་  
སོགས་པ་ཡིད་འབྱུང་བར་འབྱུར་བའི་དངོས་པོ་ཡིད་ལ་བྱུང་། །དེ་ནས་ནས་  
བར་གཡང་བ་ཞི་བར་བྱས་ནས་<sup>5</sup>དྲན་པ་དང་ཤེས་བཞིན་གྱི་ཐག་པས་ཡིད་<sup>6</sup>ཀྱི་……  
སྒྲུང་བོ་ཆོ་དམིགས་བའི་སྒྲོང་བོ་དེ་ཉིད་ལ་གདགས་པར་བྱུང་། །གང་གི་ཆོ་  
བྱིང་བ་དང་གོད་པ་མེད་པར་གྱུར་<sup>7</sup>དེ། དམིགས་པ་དེ་ལ་<sup>8</sup>སེམས་ནལ་ཏུ་འཇུག་  
བར་མཐོང་བ་དེའི་ཆོ་ནི་ཆོ་ལ་བསྐྱོད་ལ་བཅང་སྒྲུབ་སྒྲུབ་ཀྱིང་། དེའི་ཆོ་<sup>9</sup>  
སྒྲིང་འདོད་ཀྱི་བར་ཏུ་འདུག་པར་བྱུང་། །དེ་ལྟར་ཞི་གནས་གོམས་པར་བྱས་པ་  
དེའི་ལྷན་<sup>10</sup>དང་སེམས་ཤིན་ཏུ་སྤངས་པར་གྱུར་པ་དང་། རི་ལྟར་འདོད་པ་  
བཞིན་ཏུ་དམིགས་པ་<sup>11</sup>ལ་སེམས་<sup>12</sup>དང་དབང་ཏུ་གྱུར་པ་དེའི་ཆོ་དེའི་ཞི་གནས་……  
གྲུབ་པ་ཡིན་པར་རིག་པར་བྱུང་། །

1. ལྟ་བུ་—ཉིད་མེས་པ་ 2. ལྟ་བུ་—ཀྱིས་ཤིན་ 3. ལྟ་བུ་—བཅུག་ 4. ལྟ་བུ་—ཏུ་འཇུག་དོད་  
5. ལྟ་བུ་—ནས་ནས་པ་དང་ཤེས་བཞིན་ 6. ལྟ་བུ་—ཡིད་ལ་སྒྲུང་ 7. ལྟ་བུ་—འབྱུར་  
8. ལྟ་བུ་—ལ་རྣལ་(ཆད་—དེ་ལ་སེམས་རྣལ་) 9. ལྟ་བུ་—ཆོ་ནས་སྒྲོང་ 10. ལྟ་བུ་—ལ་  
11. ལྟ་བུ་—པ་དོག་པ་ 12. ལྟ་བུ་—སེམས་དབང་



དེ་ཁོ་ན་ནི་ལྷ་ཡུལ་གྱི་ལྷ་། གང་དོན་དམ་པར་དངོས་པོ་བྲམས་ཅད་གང་  
ཟག་དང་ཆོས་ཀྱི་བདག་གཉིས་ཀྱིས་སྤོང་བ་ཉིད་དེ། དེ་ཡང་གཤམ་རབ་ཀྱི་ས་རྒྱ་  
དུ་སྤྱོན་པས་ཉིགས་པར་འགྱུར་གྱི། གཞན་གྱིས་ནི་མ་ཡིན་དེ། འཕགས་པ་  
དགོངས་པ་ངེས་པར་འགྲུལ་བ་ལས།<sup>9</sup> “བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱང་རྒྱལ་སེམས་  
དཔས་ཆོས་རྣམས་ཀྱི་ངོ་པོ་ཉིད་མ་མཆིས་པ་ཉིད་ས་རྒྱ་དུ་སྤྱོན་པ་གང་གིས་<sup>10</sup>”

9. ལྷ་-བཀའ་(མདོ་'ཅ' རྩ)      10. ལྷ་མ་-ག་

འཛིན་པ་ལགས། སྤྱན་རས་གཟིང་དབང་སྤྱག་གེས་རབ་ཀྱི་པ་རོལ་དུ་ཕྱིན་པས་  
འཛིན་དོ།” ཞེས་ཅི་སྒྲན་གསུངས་པ་ལྟ་བུའོ། །དེ་<sup>1</sup>ལྟ་བས་ན་ཞི་གནས་ལ་  
གནས་དེ་གེས་རབ་བསྐྱེས་པར་བྱའོ། །

དེ་ལ་ནལ་འབྱོར་པས་འདི་ལྟར་ནས་པར་དབྱད་པར་བྱ་སྟེ། གང་ཟག་  
ནི་སྤང་བོ་དང་ཁམས་དང་སྐྱེ་མཆེད་ལས་གྲུད་ན་མི་དམིགས་སོ། །གང་ཟག་ནི་  
སྤང་བོ་ལ་སོགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱང་མ་ཡིན་དེ། སྤང་བོ་ལ་སོགས་པ་དེ་དག་  
ནི་མི་དྲག་པ་དང་དུ་མའི་ངོ་བོ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་དང་། གང་ཟག་ནི་དྲག་པ་དང་།  
གཅིག་ཕྱུང་ང་བོ་ཡིན་པར་གཞན་དག་གིས་བདགས་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ཉིད་  
དམ་གཞན་དུ་བཞེད་དུ་མི་རུང་བའི་གང་ཟག་གི་དངོས་བོ་ཡོད་པར་མི་རུང་སྟེ།  
དངོས་བོ་ཡོད་པའི་ནས་པ་གཞན་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལྟ་བས་ན་འདི་ལྟ་སྟེ།  
འཛིག་རྟེན་གྱི་ང་དང་ངའི་ཞེས་བྱ་བ་འདི་ནི་འབྱུང་པ་ཁོ་ནའོ་ཞེས་དབྱད་པར་བྱའོ།

ཆོས་<sup>2</sup>ལ་བདག་མེད་པ་ཡང་འདི་ལྟར་བསྐྱེས་པར་བྱ་སྟེ། ཆོས་ཞེས་བྱ་  
བ་ནི་མདོར་བསྟུན་སྤང་ངོ་ལྟ་དང་། སྐྱེ་མཆེད་བཅུག་ཉིས་དང་། ཁམས་བཙོ་  
བབྱད་དོ། །དེ་ལ་སྤང་བོ་དང་། སྐྱེ་མཆེད་དང་། ཁམས་<sup>3</sup>གཞུགས་ཅན་  
གང་དག་ཡིན་པ་དེ་དག་ནི་དོན་དམ་པར་ན་སེམས་ཀྱི་ནམ་པ་ལས་གྲུད་ན་མེད་དེ།  
དེ་དག་རྒྱལ་སྤྱོད་རབ་དུ་བཞིག་ལ་རྒྱལ་སྤྱོད་རབ་ནམས་ཀྱང་ཆ་ཤས་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་……  
སོ་སོར་བདགས་<sup>4</sup>ན་ངོ་བོ་ཉིད་ངོས་པར་གཞུང་<sup>5</sup>དུ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལྟ་  
བས་ན་ཐོག་མ་མེད་པའི་དུས་ནས་གཞུགས་ལ་སོགས་པ་<sup>6</sup>ཡང་དག་པ་མ་ཡིན་……

1. ལྟ་བུ་—དེ་བས་ 2. ལྟ་བུ་—ཆོས་བདག་ 3. ལྟ་བུ་—ཁམས་དང་གཞུགས་

4. ལྟ་བུ་—རྟེན་ 5. ལྟ་བུ་—བཟུང་ 6. ལྟ་བུ་—བ་ན་



པ་ལ་མངོན་པར་ཞེན་པའི་དབང་གིས་སྤེལ་ན་དཔེགས་པའི་གཞུགས་ལ་སོང་།  
 བ་སྤང་བ་བཞིན་དུ་བྱིས་པ་ནམས་ལ་སེམས་ཉིད་གཞུགས་ལ་སོགས་པ་ཕྱི་རེལ་།  
 དུ་ཆད་པ་བཞིན་དུ་སྤང་གི། དོན་དམ་པར་ན་འདྲི་ལ་གཞུགས་ལ་སོགས་པ་ནི་  
 སེམས་ཀྱི་ནམ་པ་ལས་གུད་ན་མེད་དོ་ཞེས་དབྱེད་པར་བྱའོ། །དེ་འདྲི་སྤྱུང་དུ་  
 ཁམས་གསུམ་པོ་<sup>1</sup>འདྲི་ནི་སེམས་ཙམ་མོ་སྤྱུང་དུ་སེམས་ཤིང་། དེས་<sup>2</sup>དེ་ལྟར་  
 ཆོས་བདགས་པ་མཐའ་དག་ནི་སེམས་ཁོ་ན་ཡིན་པར་དོགས་ནས་<sup>3</sup>དེ་ལ་སོ་སོར་  
 བདགས་ན་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་ལ་སོ་སོར་བདགས་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་།  
 སེམས་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་ལ་སོ་སོར་དོག་གོ། །དེ་འདྲི་ལྟར་དབྱེད་དོ། །

དོན་དམ་པར་ན་སེམས་ཀྱང་བདེན་པར་མི་བྱང་སྟེ། གང་གི་ཆོ་བརྒྱན་<sup>4</sup>  
 བའི་ངོ་བོ་ཉིད་གཞུགས་ལ་སོགས་པའི་ནམ་པ་འཛིན་པའི་སེམས་ཉིད་སྤྱོད་ཆོགས་  
 ཀྱི་<sup>5</sup>ནམ་པར་སྤང་བ་དེའི་ཆོ་དེ་བདེན་པ་ཉིད་དུ་ག་ལ་འབྱུང་། ཇི་ལྟར་གཞུགས་  
 ལ་སོགས་པ་བརྒྱན་པ་དེ་བཞིན་དུ་སེམས་ཀྱང་དེ་ལས་གུད་ན་མེད་པས་བརྒྱན་པ་  
 ཉིད་དོ། །ཇི་ལྟར་གཞུགས་ལ་སོགས་པ་སྤྱོད་ཆོགས་ཀྱི་ནམ་པ་ཡིན་པས་གཅིག་  
 དང་དུ་མའི་ངོ་བོ་ཉིད་མ་ཡིན་པ་དེ་བཞིན་དུ་སེམས་ཀྱང་དེ་ལས་གུད་ན་མེད་པའི་  
 ཕྱིར་གཅིག་དང་དུ་མའི་ངོ་བོ་ཉིད་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལྟར་བས་ན་སེམས་ནི་སྤྱོད་མ་ལ་  
 སོགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ལྟ་བུ་ཁོ་ནའོ། །

སེམས་ཇི་ལྟར་བ་<sup>6</sup>དེ་བཞིན་དུ་ཆོས་ཐམས་ཅད་<sup>7</sup>ཀྱང་སྤྱོད་པ་ལ་སོགས་པའི་ངོ་  
 བོ་ཉིད་ལྟ་བུ་ཁོ་ནའོ་ཞེས་དབྱེད་དོ། །དེས་དེ་ལྟར་གཤམ་རབ་ཀྱིས་<sup>8</sup>སེམས་

1. ལྟ་ལྟ་གཞུགས་པ་ 2. ལྟ་པེ་-དེ་དེ་ 3. ལྟ་པེ་-ན་ 4. ལྟ་པེ་-རྒྱན་ 5. ལྟ་པེ་-ཀྱིས་  
 6. ལྟ་པེ་-བ་བཞིན་ 7. ལྟ་པེ་-ཅད་སྤྱོད་(ཆད་-ཅད་ཀྱང་སྤྱོད་) 8. ལྟ་པེ་-ཀྱི

གྲིང་བོ་<sup>1</sup>ཉིད་ལ་སོ་སོར་བརྟགས་ན་དོན་དམ་བར་སེམས་ནི་ནང་དུ་ཡང་མི་དམིགས།  
 ཕྱི་རོལ་དུ་<sup>2</sup>ཡང་མི་དམིགས། གཉིས་ཀྱི་མེད་བར་ཡང་མི་དམིགས། འདས་  
 བའི་སེམས་ཀྱང་མི་དམིགས། མ་འོངས་བ་ཡང་མི་དམིགས། ད་ལྟར་བྱུང་བ་  
 ཡང་མི་དམིགས་སོ། །སེམས་སྐྱེ་བའི་ཚེ་<sup>3</sup>གང་ནས་ཀྱང་མི་འོང་། འགག་  
 བའི་ཚེ་<sup>4</sup>གང་དུ་ཡང་མི་འགྲོ་ཞེ། སེམས་ནི་གཟུང་<sup>5</sup>དུ་མེད་པ། བསྟན་དུ་  
 མེད་པ། གཟུགས་ཅན་མ་ཡིན་པ་འོ། །བསྟན་དུ་མེད་ཅིང་གཟུང་དུ་མེད་ལ་  
 གཟུགས་ཅན་མ་ཡིན་པ་གང་ཡིན་པ་དེའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཅི་འདྲ་ཞེ་ན། འཕགས་  
 བ་དཀོན་མཆོག་བརྟུགས་པ་ལས་<sup>6</sup>མེ་སྐྱོད་གསུངས་པ་ལྟ་བུ་ཞེ། “འོད་སྤངས་  
 སེམས་ནི་ཡོངས་སུ་བཅའ་ན་མི་རྟོག་དོ། །གང་མ་<sup>7</sup>རྟོག་པ་དེ་མི་དམིགས་སོ། །  
 གང་མི་དམིགས་པ་དེ་འདས་བ་ཡང་མ་ཡིན། མ་འོངས་བ་ཡང་མ་ཡིན། ད་  
 ལྟར་བྱུང་བ་ཡང་མ་ཡིན་ནོ།” ཞེས་བྱ་ཆེར་འབྱུང་ངོ་། དེས་<sup>8</sup>དེ་ལྟར་བཏེ་  
 ན་སེམས་ཀྱི་དང་པོ་ཡང་དག་བར་ཇེས་སུ་མི་མཐོང་། བ་མ་ཡང་དག་བར་ཇེས་  
 སུ་མི་མཐོང་། བར་མ་ཡང་དག་བར་ཇེས་སུ་མི་མཐོང་ངོ་།

ཇི་ལྟར་སེམས་ལ་མཐའ་དང་དབྱས་མེད་པ་དེ་བཞིན་དུ་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱང་  
 མཐའ་དང་དབྱས་མེད་བར་ཁོང་དུ་རྒྱད་དོ། །དེས་དེ་ལྟར་<sup>9</sup>སེམས་མཐའ་དང་  
 དབྱས་མེད་བར་ཁོང་དུ་རྒྱད་ནས་སེམས་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་གང་ཡང་མི་དམིགས་སོ། །  
 སེམས་གང་གི་ཡོངས་སུ་རྟོག་པ་དེ་ཡང་སྤོང་བར་རྟོགས་སོ། །དེ་རྟོགས་པས་  
 སེམས་ཀྱི་ནས་བར་བསྐྱབས་<sup>10</sup>བའི་ངོ་བོ་ཉིད་གཟུགས་ལ་སོགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་

1. ལྟ་བུ་—དུ་ 2. ལྟ་བུ་—ཆོ་ཁང་ 3. ལྟ་བུ་—ཆོ་ཁང་ 4. ལྟ་བུ་—བཟུང་

5. ལྟ་བུ་—བཟུང་(དཀོན་པ་རྟུགས་ཆེ་ ༡༢༠) 6. ལྟ་བུ་—མི་ 7. ལྟ་བུ་—དེ་

8. ལྟ་བུ་—ལྟར་མཐའ་ 9. ལྟ་བུ་—བསྐྱབས་



ཀྱང་ཡང་དག་པར་རྒྱུ་མི་མཐོང་ངོ་། །དེས་དེ་ལྟར་གྲུ་རབ་ཀྱིས་འཛོམས་  
 བསམས་ཅད་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡང་དག་པར་རྒྱུ་མི་མཐོང་བས་གཞུགས་དྲག་གོ་  
 ཞེ་ལམ། མི་དྲག་གོ་ཞེ་ལམ། སྤྱོད་ངོ་ཞེ་ལམ། མི་སྤྱོད་ངོ་ཞེ་ལམ། ཟག་  
 པ་དང་བཅས་པའོ་ཞེ་ལམ། ཟག་པ་མེད་པའོ་ཞེ་ལམ། བྱུང་བའོ་ཞེ་ལམ།  
 མ་བྱུང་བའོ་ཞེ་ལམ། ཡོད་པའོ་ཞེ་ལམ། མེད་པའོ་ཞེས་ཉིད་པར་མི་བྱེད་  
 རོ།<sup>3</sup> །ཇི་ལྟར་གཞུགས་ལ་དྲག་པར་མི་བྱེད་པ་དེ་བཞིན་དུ་ཆོར་བ་དང་། འདུ་  
 ཤེས་དང་། འདུ་བྱེད་དང་། རྣམ་པར་ཤེས་པ་རྣམས་ལ་ཡང་དྲག་པར་མི་  
 བྱེད་རོ། །ཆོས་ཅན་མ་གྲུབ་ན་དེའི་<sup>4</sup>བྱེ་བྲག་རྣམས་ཀྱང་མི་འགྲུབ་པས་དེ་ལ་དྲག་  
 པར་ག་ལ་འགྱུར། དེས་དེ་ལྟར་གྲུ་རབ་ཀྱིས་རྣམ་པར་དབྱེད་དེ་<sup>5</sup>གང་གི་ཆོ་  
 རྣམ་འབྱུར་པས་དངོས་པོ་གང་གི་ངོ་བོ་ཉིད་དོན་དམ་པར་ངེས་པར་མི་འཇིན་པ་  
 དེའི་ཆོ་རྣམ་པར་མི་དྲག་པའི་དྲིང་ངོ་འཇིན་ལ་འཇུག་གོ། །ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་  
 ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་ཀྱང་དྲགས་སོ། །

གང་ཤེས་རབ་ཀྱིས་དངོས་པོ་འི་ངོ་བོ་ཉིད་སོ་སོར་བདགས་ནས་མི་  
 བསྐྱེམ་གྱི། ཡིད་ལ་བྱེད་པ་ཡོངས་སུ་སྤྱོད་པ་ཙམ་འབའ་ཞིག་སྒྲིམ་པར་བྱེད་  
 པ་དེའི་རྣམ་པར་དྲག་པ་རྣམ་ཡང་མི་ལྡོག་ཅིང་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དྲགས་  
 པར་ཡང་མི་འགྱུར་དེ། ཤེས་རབ་ཀྱི་སྤྱང་བ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །འདི་ལྟར་  
 ཡང་དག་པར་སོ་སོར་དྲག་པ་ཉིད་ལས་ཡང་དག་པ་ཇི་ལྟ་བུ་བཞིན་དུ་ཤེས་པའི་  
 མི་བྱུང་ན་གཙུག་ཤིང་གཙུགས་པའི་མི་བཞིན་དུ་དྲག་པའི་ཤིང་སྤྲེག་གོ། །ཞེས་

---

1. ལྟ་བུ་-ཀྱི་ 2. ལྟ་བུ་-ཞེ་ལམ་ 3. ལྟ་བུ་-དམ་ 4. ལྟ་བུ་-དེའི་ཕྱིར་  
 5. ལྟ་བུ་-དེ་དངོས་པོ་གང་གི་ཆོ་ 6. ལྟ་བུ་-དྲག་ 7. ལྟ་བུ་-བ་དྲག་(ཆད་-བ་ཉིད་དྲགས་)  
 8. ལྟ་བུ་-གཙུགས་

བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྩལ་15༥།

འཕགས་པ་དཀོན་མཆོག་སྤྱིན་ལས་2ཀྱང་བཀའ་སྩལ་དེ།3 “དེ་ལྟར་སྤྱིན་  
ལ་མཁས་པ་དེ་སྤྱོད་པ་བསམས་ཅན་དང་བྲལ་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར་སྤོང་བ་ཉིད་བསྒྲུབ་...  
པ་ལ་ནལ་འབྱོར་དུ་བྱེད་དོ། །དེ་སྤོང་བ་ཉིད་4ལ་བསྒྲུབ་པ་མང་བས་གནས་གང་  
དང་གང་དུ་སེམས་འཕྲོ་ཞིང་སེམས་མངོན་པར་དགའ་བའི་གནས་དེ་དང་དེ་དག་  
གི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡོངས་སུ་བཅའ་ན་སྤོང་བར་རྟོགས་སོ། །སེམས་གང་ཡིན་པ་  
དེ་ཡང་བརྟགས་ན་སྤོང་བར་རྟོགས་སོ། །སེམས་གང་གིས་5རྟོགས་པ་དེ་ཡང་  
ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱན་དུ་བཅའ་ན་སྤོང་བར་རྟོགས་དེ། དེ་དེ་ལྟར་རྟོགས་པས་མཚན་  
མ་མེད་བའི་ནལ་འབྱོར་ལ་འཇུག་གོ།” ཞེས་འབྱུང་ངོ་། །འདིས་6ནི་ཡོངས་  
སུ་རྟོག་7པ་སྤྱིན་8དུ་གཏོང་བ་ཉིད་མཚན་མ་མེད་པ་ཉིད་ལ་འཇུག་པར་བསྟན་དོ།9།  
ཡིད་ལ་བྱེད་པ་ཡོངས་སུ་སྤོང་བ་ཅུ་མ་དང་། ཤེས་རབ་ཀྱི་དངོས་བོ་འི་ངོ་བོ་  
ཉིད་མི་དབྱེད་10པར་11ནམ་པར་མི་རྟོག་པ་ཉིད་དུ་འཇུག་པ་མི་སྤྱིད་པར་ཤིན་དུ་...  
གསལ་བར་བསྟན་པ་ཡིན་ནོ། །དེ་12ལྟར་དེ་ཤེས་རབ་ཀྱིས་གཞུགས་ལ་སོགས་  
བའི་དངོས་བོ་འི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡང་དག་པ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་བརྟགས་ནས་བསམ་...  
གཏན་བྱེད་གྱི། གཞུགས་ལ་སོགས་པ་ལ་གནས་ནས་བསམ་གཏན་མི་བྱེད་ཅིང་།  
འཇིག་རྟེན་འདི་དང་13འཇིག་རྟེན་པ་རྣམས་ཀྱི་བར་ལ་གནས་ནས་བསམ་གཏན་མི་...  
བྱེད་དེ།14 གཞུགས་ལ་སོགས་པ་དེ་དག་མི་དམིགས་བའི་ཕྱིར་ངོ། །དེ་ལྟ་

1. ལྟ་བུ་—སྩལ་བ་ 2. ལྟ་—བཀའ་(མདོ་ལྟ་མཛུགས་) 3. ལྟ་ཅི་—5༥།

4. ལྟ་བུ་—ཉིད་བསྒྲུབ་པ་ 5. ལྟ་བུ་—གི་ 6. ལྟ་བུ་—འདི་ 7. ལྟ་བུ་—རྟོགས་

8. ལྟ་བུ་—མངོན་དུ་སྤོང་བ་ 9. ལྟ་བུ་—དེ་ 10. ལྟ་བུ་—སྤྱིད་ 11. ལྟ་བུ་—པར་མི་

(ཆད་—པར་ལྟ་མཛུགས་མི) 12. ལྟ་བུ་—དེ་དེ་ལྟར་ 13. ལྟ་བུ་—དང་པ་རྣམས་ 14 ལྟ་བུ་—དོ།



བས་ན་མི་གནས་པའི་བསམ་གཏན་པ་ཞེས་བྱའོ།

ཤེས་རབ་ཀྱིས་དངོས་པོ་མཐའ་དག་གི་ངོ་བོ་ཉིད་ལ་སོ་སོར་བདག་ས་ནས་གང་གི་ཕྱིར་མི་དམིགས་པར་བསམ་གཏན་བྱེད་པ་དེའི་ཕྱིར་ཤེས་རབ་མཚོག་གི་བསམ་གཏན་པ་ཞེས་བྱ་སྟེ། འཕགས་པ་ནམ་མཐའ་མཛོད་དང་། འཕགས་པ་གཙུག་ན་རིན་པོ་ཆེ་ལ་སོགས་པ་ལས་བསྟན་པ་བཞིན་ནོ།།

དེ་ལྟར་གང་ཟག་དང་ཆོས་ལ་བདག་མེད་པའི་<sup>1</sup>དེ་ཁོ་ན་ལ་ཞུགས་པ་དེ་ཡོངས་སུ་བདག་པར་བྱ་བ་<sup>2</sup>བཟླ་བར་བྱ་བ་གཞན་མེད་པས་དྲིག་པ་དང་བཟྱེད་པ་དང་བྱལ་བ། བཛོད་པ་མེད་པ་དང་གཅིག་དུ་གྱུར་པའི་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་རང་གི་ངང་གས་<sup>3</sup>འཇུག་པ་མངོན་པར་འདུ་བྱེད་པ་མེད་པས་<sup>4</sup>དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ལ་ཤིན་དུ་གསལ་བར་བསྐྱོམ་ཞིང་འདུག་པར་བྱའོ། དེར་གནས་ནས་སེམས་ཀྱི་གྲུན་ནས་བར་མི་གཡེང་བར་བྱའོ། །གང་གི་ཆོ་བར་སྐབས་སུ་འདོད་ཆགས་ལ་སོགས་པས་སེམས་ཕྱི་རོལ་དུ་ནམ་པར་གཡེང་བ་དེའི་ཆོ་ནམ་པར་གཡེངས་<sup>5</sup>བ་ཆོར་བར་བྱས་ལ་སྐར་དུ་མི་སྐྱབ་པ་བསྐྱོམ་པ་ལ་སོགས་པས་<sup>6</sup>ནམ་པར་གཡེང་བ་ཞི་བར་བྱས་ནས་སྐར་དུ་དེ་བཞིན་ཉིད་ལ་སེམས་ཕྱིར་ཞིང་འཇུག་པར་བྱའོ། །གང་གི་ཆོ་དེ་ལ་སེམས་མངོན་པར་མི་དགའ་བར་<sup>7</sup>མཐོང་བ་དེའི་ཆོ་དྲིང་འཛིན་གྱི་<sup>8</sup>ཡོན་དམ་མཐོང་བས་དེ་ལ་མངོན་པར་དགའ་བ་བསྐྱོམ་པར་བྱའོ། །ནམ་པར་གཡེང་བ་ལ་ཉེས་པར་<sup>9</sup>མཐོང་བས་ཀྱང་མི་དགའ་བ་རབ་དུ་ཞི་བར་བྱའོ། །ཇི་སྟེ་སྐྱགས་

1. ཕྱེ་ཆོ་—མེད་པ་དེ་ལྟར་ཁོ་ན་ 2. ཕྱ་པེ་—བ་གཞན་(ཆད་—བ་བཟླ་བར་བྱ་བ་གཞན་)

3. ཕྱ་པེ་—གི་ 4. ཕྱ་པེ་—བ་ 5. ཕྱ་ཐེ་—གཡེང་བ་ 6. ཕྱ་པེ་—བ་ 7. ཕྱ་པེ་—བ་

8. ཕྱ་པེ་—གྱེས་ 9. ཕྱ་པེ་—བ་

པ་དང་གཉིད་ཀྱིས་ནོན་<sup>1</sup> རྩེ་བ་མི་གསལ་བས་སེམས་བྱང་ངས་བྱང་དུ་དྲོགས་<sup>2</sup>  
 བར་མཐོང་བ་དེའི་ཆོ་གོང་ས་བཞིན་དུ་མཆོག་དུ་དགའ་བའི་དངོས་པོ་ཡིད་ལ་བྱེད་  
 བས་ཐུར་དུ་བྱིང་བ་ཞི་བར་བྱས་ལ། ཡང་དམིགས་བ་དེ་ཁོ་ན་དེ་ཉིད་ཤིན་དུ་  
 དམ་པོར་གཟུང་བར་བྱའོ། །ཇི་ལྟེ་གང་གི་ཆོ་སྒྲོན་བཟད་<sup>3</sup> པ་དང་། ཅེས་བ་  
 ཇིས་སུ་དྲན་བས་བར་སྐབས་སུ་སེམས་འཕྱར་བའམ་གོད་དུ་དྲོགས་བར་མཐོང་...  
 བ་དེའི་ཆོ་གོང་ས་བཞིན་དུ་མི་དྲག་པ་ལ་སོགས་པ་ཡིད་འཕྱར་བར་འཕྱར་བའི་...  
 དངོས་པོ་ཡིད་ལ་བྱས་<sup>4</sup> ལ་གཡེང་བ་ཞི་བར་བྱ་ཞིང་།<sup>5</sup> དེ་ནས་ཡང་དེ་ཁོ་ན་  
 ཉིད་ལ་སེམས་མངོན་བར་འདུ་བྱེད་པ་མེད་བར་འཇུག་པར་འབད་བར་བྱའོ།

ཇི་ལྟེ་གང་གི་ཆོ་བྱིང་བ་དང་གོད་པ་དང་བྲལ་བར་གྱུར་ནས་མཉམ་བར་ལྷུང་  
 ཉི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ལ་སེམས་རང་གི་ངང་གིས་འཇུག་པར་འཕྱར་བ་དེའི་ཆོ་རྩལ་བ་...  
 སྒྲོད་དེ་བདང་སྒྲོམས་སུ་བྱའོ། །གལ་དེ་སེམས་མཉམ་བར་ལྷགས་པ་ལ་བརྩལ་<sup>6</sup>  
 བ་བྱས་ན་དེའི་ཆོ་སེམས་ནས་བར་གཡེང་བར་འཕྱར་རོ། །གལ་དེ་སེམས་བྱིང་  
 བར་གྱུར་བ་ལ་བརྩལ་<sup>7</sup> བར་ས་བྱས་ན་<sup>8</sup> དེའི་ཆོ་ཤིན་དུ་བྱིང་བས་ལྷག་མཐོང་...  
 མེད་དེ། སེམས་རྒྱས་ཡོང་བཞིན་དུ་འཕྱར་རོ། །དེ་ལྟ་བུས་ན་སེམས་བྱིང་  
 བར་གྱུར་ན་བརྩལ་<sup>9</sup> བར་བྱའོ། །མཉམ་བར་གྱུར་ན་བརྩལ་<sup>10</sup> བར་མི་བྱའ། །  
 གང་གི་ཆོ་ལྷག་མཐོང་བསྒྲོམས་པས་ཤེས་རབ་ཤིན་དུ་ཤས་ཆེ་བར་གྱུར་བ་དེའི་...

- 
1. ལྷ་པེ་—གཤོན་ 2. ལྷ་པེ་—དྲོགས་པ་དེའི་(ཆད་—དྲོགས་‘བར་མཐོང་བ་’དེའི་)  
 3. ལྷ་པེ་—བགོད་ 4. ལྷ་པེ་—ཐུག་པ་ལ་ 5. ལྷ་པེ་—ཞིང་དེ་ཁོ་(ཆད་—ཞིང་། ‘དེ་ནས་ཡང་’  
 དེ་ཁོ་ན་) 6. ལྷ་པེ་—བཙལ་ 7. ལྷ་པེ་—བཙལ་  
 8. ལྷ་པེ་—ནས་དེའི་ཤིན་(ཆད་—དེའི་‘ཆོ་ཤིན་དུ་’) 9. ལྷ་པེ་—བཙལ་ 10. ལྷ་པེ་—བཙལ་



ཆོ་ཞི་གནས་ཆུང་བས་མར་མེ་རྒྱུང་ལ་བཞག་པ་<sup>1</sup>བཞིན་དུ་སེམས་གཡོ་བར་.....  
འགྱུར་དེ། དེའི་ཕྱིར་དེ་ཁོ་ན་གིན་དུ་གསལ་བར་མཐོང་བར་མི་འགྱུར་དེ། དེ་  
བས་ན་དེའི་ཆོ་ཞི་གནས་བསྐྱོམ་བར་བྱའོ། །ཞི་གནས་<sup>2</sup>ཀྱི་ཤས་ཆེ་བར་གྱུར་  
ན་ཡང་ཤེས་རབ་བསྐྱོམ་བར་བྱའོ། །

གང་གི་ཆོ་གཉིས་ཀ་མཉམ་<sup>3</sup>དུ་འཇུག་པའི་ཆོ་ལུས་དང་སེམས་ལ་གནོད་  
བར་མ་གྱུར་གྱི་བར་དུ་མངོན་བར་འདུ་བྱེད་པ་མེད་བར་གནས་པར་བྱའོ། །  
ལུས་ལ་སོགས་པ་<sup>4</sup>ལ་གནོད་བར་གྱུར་ན་དེའི་བར་སྐབས་སུ་འཇིག་རྟེན་མཐའ་...  
དག་རྒྱུ་མ་དང་། སྒྲིག་རྒྱུ་དང་། མི་ལམ་དང་། རྩ་རྒྱུ་དང་། མིག་ཡོར་<sup>5</sup>  
ལྟ་བུར་ལྟ་ཞིང་འདི་སྒྲིམ་དུ་བསམ་བར་བྱ་སྟེ། སེམས་ཅན་འདི་དག་གི་ཆོས་  
ཟབ་མོ་འདི་ལྟ་བུ་ཁོང་དུ་མ་ཆུད་བས་འཁོར་བ་ན་ཀུན་དུ་རྟོན་ཚོངས་བར་འགྱུར་  
གྱིས།<sup>6</sup> བདག་གིས་ཅི་ནས་ཀྱང་དེ་དག་ཆོས་ཉིད་ཀྱི་ཁོང་དུ་ཆུད་བར་འགྱུར་<sup>7</sup>  
བ་དེ་ལྟར་བྱའོ་སྒྲིམ་དུ་བསམ་ཞིང་། སྟིང་རྩེ་ཆེན་པོ་<sup>8</sup>དང་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་  
མངོན་དུ་བྱའོ། །དེ་ནས་ངལ་བསོ་ལ། ཡང་དེ་བཞིན་དུ་ཆོས་ཐམས་ཅད་རྣུང་  
བ་མེད་པའི་དྲིང་ངེ་འཇིན་ལ་འཇུག་པར་བྱའོ། །ཡང་སེམས་གིན་དུ་སྒྲོ་བར་གྱུར་  
ན་དེ་བཞིན་དུ་ངལ་བསོ་བར་བྱའོ། །འདི་ནི་ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་རྒྱུ་  
འབྲེལ་བར་<sup>9</sup>འཇུག་པའི་ལམ་སྟེ་ནམ་པར་དྲིག་པ་དང་བཅས་པ་དང་། ནམ་པར་  
མི་དྲིག་པའི་གཟུགས་བརྟན་ལ་དམིགས་པའོ། །

1. ལྟ་བུ་-བ་དེ་བཞིན་ 2. ལྟ་བུ་-གནས་ཤས་ 3. ལྟ་བུ་-མཉམ་པར་

4. ལྟ་བུ་-བ་གནོད་(ཆད་-སོགས་བ་ལ་གནོད་) 5. ལྟ་བུ་-གཡོར་ 6. ལྟ་བུ་-གྲོ་

7. ལྟ་བུ་-གྱུར་བ་ 8. ལྟ་བུ་-པོ་དེ་བྱང་ཆུབ་ 9. ལྟ་བུ་-བ་

དེ་ལྟར་ནལ་འབྱོར་བས་རིམ་པ་འདིས་<sup>1</sup>ཆུ་ཚོད་གཅིག་<sup>2</sup>གས།      མེལ་ཚོ་  
 ཐུན་ཕྱེད་དམ།      ཐུན་གཅིག་གས།      རི་མྱིད་འདྲོད་ཀྱི་བར་དུ་དེ་ཁོ་ན་བསྐྱོམ་  
 ཞིང་འདུག་པར་བྱའོ། །འདི་ནི་དོན་རབ་དུ་ནམ་པར་འབྱེད་<sup>3</sup>པའི་བསམ་གཏན་དེ།  
 འཕའ་པ་ལང་ཀར་གཤེད་པ་ལས་བསྐྱེད་དོ། །དེ་ནས་འདྲོད་ན་དྲིང་ངེ་འཛིན་ལས་  
 ལངས་ད་སྦྱིལ་མོ་ཀྱང་ས<sup>4</sup>བཞིག་པར་འདི་སྒྲིམ་དུ་ཚོས་འདི་དག་ཐམས་ཅད་དོན་  
 དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་ཡིན་དུ་ཟིན་ཀྱང་།      ཀྱན་རྫོབ་དུ་ནམ་པར་གནས་  
 པ་ཉིད་དོ། །དེ་ལྟར་ཡིན་ན་ལས་དང་འབྲས་བུ་འབྲེལ་བ་ལ་སོགས་པ་རི་ལྟར་  
 ནམ་པར་གནས་པར་འགྱུར།      བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱིས་ཀྱང་།<sup>5</sup>

དངོས་པོ་སྦྱ་བ་ཀྱན་རྫོབ་དུ། །

དམ་པའི་དོན་དུ་རང་<sup>6</sup>བཞིན་མེད།      །ཅེས་བཀའ་སྤྱུལ་དོ། །

སེམས་ཅན་གྱིས་པའི་སྒོ་ཅན་འདི་དག་ནི་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པའི་དངོས་པོ་  
 ནམས་ལ་ཡོད་པ་ལ་སོགས་པ་སྒོ་འདོགས་པས་སྒོ་ཕྱིན་ཅི་ཡོག་དུ་གྱུར་དེ།  
 ཡུན་རིང་བོར་འཁོར་བའི་འཁོར་ལོ་ན་ཡོངས་སུ་འཁྲུམས་པས་བདག་གས་ཅི་  
 ནས་ཀྱང་བསོད་ནམས་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཚོགས་སྒྲིམ་ན་མེད་པ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་  
 བར་བྱ་སྟེ།      དེ་ནས་ཐམས་ཅད་སཁྲེན་པའི་གོ་འཕང་ཐོབ་པར་བྱ་<sup>7</sup>ལ།      དེ་  
 དག་ཚོས་ཉིད་ཁོང་དུ་ཆུད་པར་བྱའོ་སྒྲིམ་<sup>8</sup>ཏུ་བསམས་ལ།      དེ་ནས་དལ་བྱས་  
 སྦྱིལ་མོ་ཀྱང་བཞིག་སྟེ་<sup>9</sup>ཕྱོགས་བཅུ་ན་བརྒྱགས་པའི་སངས་བྱུས་དང་བྱང་ཆུབ་

- 
1. ལྷ་པོ་—འདི་    2. ལྷ་པོ་—ཅེག་    3. ལྷ་པོ་—དབྱི་    4. ལྷ་པོ་—མོ་  
 5. ལྷ་པོ་—བཀའ་(མདོ་ཙམ་ལང་ཀར་གཤེགས་པ་ ༡༠༤)    6. ལྷ་པོ་—རང་ན་  
 7. ལྷ་པོ་—བྱས་པ་    8. ལྷ་པོ་—བྱས་པ་མེམས་    9. ལྷ་པོ་—དྲི་



སེམས་དཔའ་ཐམས་ཅད་ལ་ཕྱག་བྱས་ལ། དེ་དག་ལ་མཆོད་པ་དང་བཞུད་པ་  
བྱས་ནས། འཕགས་པ་བཟང་པོ་སྤྱོད་པ་ལ་སོགས་པའི་སྒྲིན་ལས་གྱུ་ཆེན་པོ་  
གདབ་བོ། །དེ་<sup>1</sup>ནས་སྤྱོད་པ་ཉིད་དང་སྤྱོད་ཆེ་ཆེན་པོའི་སྤྱོད་པོ་ཅན་སྤྱིན་པ་ལ་  
སོགས་<sup>2</sup>པ་བསོད་ནམས་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཆོགས་མཐའ་དག་བསྐྱབ་པ་ལ་མངོན་  
པར་བཅོན་པར་བྱའོ། །

དེ་ལྟར་གྱུར་ན་བསམ་གཏན་དེ་ནས་<sup>3</sup>པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་མཆོག་དང་ལྷན་པའི་  
སྤྱོད་པ་ཉིད་མངོན་པར་བསྐྱབས་པ་ཡིན་དེ། འཕགས་པ་གཙུག་ན་རིན་པོ་ཆེ་  
ལས་<sup>4</sup>ཆེ་སྐད་དུ། “དེ་བྱམས་པའི་ག་ཆ་བགོས་ཤིང་སྤྱོད་ཆེ་ཆེན་པོའི་གནས་ལ་  
གནས་ནས་ནམ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་མཆོག་དང་ལྷན་པའི་སྤྱོད་པ་ཉིད་མངོན་པར་……  
བསྐྱབ་<sup>5</sup>པའི་བསམ་གཏན་བྱེད་དོ། །དེ་ལ་ནམ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་མཆོག་དང་  
ལྷན་པའི་སྤྱོད་པ་ཉིད་གང་ཞེ་ན། གང་སྤྱིན་པ་དང་མ་བྲལ་བ། ཚུལ་ཁྲིམས་  
དང་མ་བྲལ་བ། བཟོད་པ་དང་མ་བྲལ་བ། བཅོན་འགྲུས་དང་མ་བྲལ་བ།  
བསམ་གཏན་དང་མ་བྲལ་བ། ཤེས་རབ་དང་མ་བྲལ་བ། ཐམས་དང་མ་བྲལ་  
བ།” ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གྱུ་ཆེར་བཀའ་རྩལ་བ་ལྟ་བུའོ། །བྱང་ཆུབ་  
སེམས་དཔའ་ནི་སེམས་ཅད་ཐམས་ཅད་ཡོངས་སུ་སྤྱིན་པར་བྱེད་པ་དང་།  
ཞིང་<sup>6</sup>དང་། ལུས་དང་། གཡོག་འཁོར་མང་པོ་ལ་སོགས་པ་སྤྱན་སྤྲུམ་  
ཆོགས་པར་གྱུར་པའི་ཐམས་སྤྱིན་པ་ལ་སོགས་པའི་དགོ་བ་ངེས་པར་བཞེན་པར་  
བྱ་དགོས་སོ། །

1. ལྟ་བུ་—དེ་ན་ 2. ལྟ་བུ་—སོགས་པ་བསོད་ 3. ལྟ་བུ་—ནམས་ཐམས་

4. ལྟ་བུ་—བཀའ་(དཀོན་པ་ཕྱིགས་‘ཆ’ 220) 5. ལྟ་བུ་—སྐྱབ་ 6. ལྟ་བུ་—ཞེ་དང་(ཆད་—ཞིང་དང་)

དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་སངས་རྒྱུས་<sup>1</sup>ནམས་ཀྱི་ཞིང་ལ་སོགས་པ་སྤྱན་སྲུང་ཆོགས་  
 པ་གང་བཀའ་སྤྱུལ་པ་དེ་གང་གི་འབྲས་བུ་ཡིན་པར་འགྲུབ། དེ་ལྟ་བུས་ན་ནམ་  
 པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་མཆོག་དང་ལྷན་པ་ཐམས་ཅད་མཆུན་པའི་ཡེ་ཤེས་དེ་ནི་སྤྱིན་པ་  
 ལ་སོགས་པ་ཐབས་ཀྱིས་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པར་འགྱུར་བས་བཅོམ་ལྷན་འདས་.....  
 ཀྱིས་ཐམས་ཅད་མཆུན་པའི་ཡེ་ཤེས་<sup>2</sup>དེ་ནི་ཐབས་ཀྱིས་མཐར་ཕྱིན་པ་ཡིན་ནོ། །  
 ཞེས་བཀའ་སྤྱུལ་དོ། །དེའི་ཕྱིར་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབང་སྤྱིན་པ་ལ་སོགས་པ་  
 ཐབས་ལ་ཡང་བསྟེན་པར་བྱའི། སྟོང་པ་ཉིད་འབང་ཞིག་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་  
 གླུ་དུ་འཕགས་པ་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཤིན་དུ་རྒྱས་པ་བསྐྱུས་པ་ལས་<sup>3</sup>ཀྱང་བཀའ་...  
 སྤྱུལ་དོ། “བྱམས་པ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབང་ནམས་ཀྱི་པ་རྩལ་དུ་ཕྱིན་པ་དུག་  
 ཡང་དག་པར་བསྐྱབས་<sup>4</sup>པ་འདི་ནི་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཕྱིར་ཡོན་ན། དེ་ལ་མི་  
 ལྷན་པོ་དེ་དག་འདི་གླུ་དུ། བྱང་ཆུབ་སེམས་དབང་ཤེས་རབ་ཀྱི་པ་རྩལ་<sup>5</sup>དུ་...  
 ཕྱིན་པ་ཁོན་ལ་བསྐྱབས་པར་བྱའི།<sup>6</sup> པ་རྩལ་དུ་ཕྱིན་པ་རྟག་མ་ནམས་<sup>7</sup>ཀྱིས་ཅི་  
 ཞིག་བྱ་<sup>8</sup>ཞེས་ཟེར་ཞིང་། དེ་དག་པ་རྩལ་དུ་ཕྱིན་པ་གཞན་དག་ལ་ཡང་སྤྱན་  
 འབྱིན་པར་སེམས་སོ། །མ་པས་པ་འདི་རི་རྣམས་དུ་སེམས། ཀྱ་<sup>9</sup>ཤི་ཀའི་རྒྱལ་  
 པོར་གྱུར་པ་གང་ཡིན་པ་དེས་<sup>10</sup>སྤྱག་རོན་གྱི་ཕྱིར་རང་གི་ཤ་ཁུ་ལ་ཕྱིན་པ་དེ་ཤེས་  
 རབ་འཆལ་བ་ཡིན་ནམ། བྱམས་པས་གསོལ་བ། བཅོམ་ལྷན་འདས་དེ་ནི་མ་  
 ལགས་སོ། །བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྤྱུལ་བ། བྱམས་པ་བྱང་ཆུབ་

1. ལྟ་བུ་—རྒྱས་ཀྱི་ 2. ལྟ་བུ་—ཤེས་ཀྱི་(ཆད་—ཤེས་དེ་ནི་ཐབས་ཀྱིས་)

3. མདོ་འདི་བཀའ་འགྱུར་དུ་མེད་ཆོད་རྒྱང་བས་དཔལ་པར་བྱའོ། 4. ལྟ་བུ་—བསྐྱབས་

5. ལྟ་བུ་—རྩལ་ཕྱིན་(ཆད་—རྩལ་དུ་ཕྱིན་) 6. ལྟ་བུ་—བྱའོ 7. ལྟ་བུ་—ནམས་ཅི་

8. ལྟ་བུ་—བྱ་བེད་ 9. ལྟ་བུ་—ཀ་ཤི་ 10. ལྟ་བུ་—དེ་



སེམས་དབའི་སྤྱད་པ་སྤྱོད་པ་ན་པ་རེའ་དུ་ཕྱིན་པ་དུག་དང་ལྷན་པའི་དགོ་བའི་ཅ་  
 བ་གང་དག་བསམས་པའི་དགོ་བའི་ཅ་བ་དེ་དག་གིས་གནོད་པར་གྱུར་དམ།  
 དུས་པས་གསོལ་བ། བཅོམ་ལྷན་འདས་དེ་ནི་མ་ལགས་སོ། བཅོམ་ལྷན་  
 འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྤྱུལ་བ། མ་པས་བ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཀྱང་བསྐྱེད་པ་དུག་ཅུང་སྤྱིན་  
 པའི་པ་རེའ་དུ་ཕྱིན་པ་ཡང་དག་པར་བསྐྱེད་པ། བསྐྱེད་པ་དུག་ཅུང་ཚུལ་ཁྲིམས་  
 ཀྱི་པ་རེའ་དུ་ཕྱིན་བ། བསྐྱེད་པ་དུག་ཅུང་བཅོད་པའི་པ་རེའ་དུ་ཕྱིན་བ།  
 བསྐྱེད་པ་དུག་ཅུང་བཅོན་འགྲུས་ཀྱི་པ་རེའ་དུ་ཕྱིན་བ། བསྐྱེད་པ་དུག་ཅུང་  
 བསམས་གདན་གྱི་པ་རེའ་དུ་ཕྱིན་བ། བསྐྱེད་པ་དུག་ཅུང་གིས་རབ་ཀྱི་པ་རེའ་  
 དུ་ཕྱིན་པ་ཡང་དག་པར་བསྐྱེད་པ་ན། དེའ་མི་ལྷན་པོ་དེ་དག་<sup>1</sup>འདི་སྤྱད་དུ་  
 ཚུལ་གཅིག་ཁོ་ནས་བྱང་ཆུབ་མེ། འདི་ལྟ་མེ། སྤྱོད་པ་ཉིད་ཀྱི་<sup>2</sup>ཚུལ་གྱིས་སོ་  
 ཞེས་ཟེར་དེ། དེ་དག་ནི་སྤྱོད་པ་ཡོངས་སུ་མ་དག་པར་འགྱུར་རོ།” ཞེས་  
 བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་འབྱུང་ངོ་།

ཐབས་དང་ཐལ་ན་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབའི་གིས་རབ་འབའ་ཞིག་གིས་ནི་  
 ཉན་ཐོས་<sup>3</sup>བཞིན་དུ་སངས་བྱུས་ཀྱི་མཛེད་པ་བྱེད་མི་རྒྱས་ཀྱི། ཐབས་ཀྱིས་<sup>4</sup>  
 བསྐྱེད་པ་ན་རྒྱས་པར་འགྱུར་དེ། འཕགས་པ་དཀོན་མཆོག་བཅུགས་པ་ལས་<sup>5</sup>  
 ཇི་སྤྱད་དུ། “འོད་སྤྱངས་འདི་ལྟ་མེ་དཔེར་ན་ལྷོན་པོས་ཟིན་པའི་གྲུལ་པོ་ནམས་  
 དགོས་པ་ཐམས་ཅད་བྱེད་པ་དེ་བཞིན་དུ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབའི་གིས་རབ་ཐབས་  
 མཁས་པས་<sup>6</sup>ཡོངས་སུ་ཟིན་པ་<sup>7</sup>དེ་ཡང་སངས་བྱུས་ཀྱི་མཛེད་པ་ཐམས་ཅད་བྱེད་

1. ལྟ་མེ-དག་ཅུག་ 2. ལྟ་མེ-ཀྱིས་ 3. ལྟ་མེ-ཐོས་ཀྱི་བཞིན་ 4. ལྟ་མེ-ཀྱི་  
 5. མེ-བཀའ་(དཀོན་བཅུགས་ཅེ་ ༡༢༩) 6. ལྟ་མེ-ཐམས་ཅད་ 7. ལྟ་མེ-པ་ཡང་

དོ།” ཞེས་གསུངས་པ་ལྟ་བུའོ། །བྱང་ཆུབ་སེམས་དབང་ནམས་ཀྱི་ལམ་གྱི་ལྟ་  
བ་ཡང་གཞན། ཟུ་ཕྱེགས་ཅན་དང་། 1 ཉན་ཐོས་ནམས་ཀྱི་ལམ་གྱི་ལྟ་བ་ཡང་  
གཞན་དེ། འདི་ལྟར་ཟུ་ཕྱེགས་ཅན་ནམས་ཀྱི་1ལམ་གྱི་ལྟ་བ་ནི་བདག་ལ་སོང་  
བར་2ཕྱིན་ཅི་ཡོག་དང་ལྷན་བའི་ཕྱིར་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐམས་ཅད་དྲུ་ཤེས་རབ་དང་...  
བྲལ་བའི་ལམ་ཡིན་དེ། དེ་བས་ན་དེ་དག་ཐར་པ་མི་ཐོབ་བོ།

ཉན་ཐོས་ནམས་ཀྱིས་ནི་སྒྲིང་ཇེ་ཆེན་པོ་དང་བྲལ་བས་ཐབས་དང་མི་ལྷན་པ་  
ཡིན་དེ། དེ་བས་ན་དེ་དག་གཅིག་དྲུ་ཟུ་ངན་ལས་འདས་པ་ལ་གཞོལ་བར་འགྱུར་  
རོ། །བྱང་ཆུབ་སེམས་དབང་ནམས་ཀྱི་ལམ་3ནི་ཤེས་རབ་དང་4ཐབས་དང་ལྷན་  
བར་འདོད་དེ། དེ་5བས་ན་དེ་དག་མི་གནས་བའི་ཟུ་ངན་ལས་འདས་པ་ལ་  
གཞོལ་བར་འགྱུར་རོ། །བྱང་ཆུབ་སེམས་དབང་ནམས་ཀྱི་ལམ་ནི་ཤེས་རབ་དང་  
ཐབས་དང་ལྷན་བར་འདོད་དེ། དེས་ན་མི་གནས་བའི་ཟུ་ངན་ལས་འདས་པ་ཐོབ་ཕྱེ།  
ཤེས་རབ་ཀྱི་སྟོབས་ཀྱིས་6ནི་འཁོར་བར་མི་ལྷུང་ལ། ཐབས་ཀྱི་སྟོབས་ཀྱིས་7ནི་  
ཟུ་ངན་ལས་འདས་བར་མི་ལྷུང་བའི་ཕྱིར་རོ།

དེ་བས་ན་འཕགས་པ་ག་ཡུ་མགོ་ནི་རི་ལས།8 “བྱང་ཆུབ་སེམས་དབང་  
ནམས་ཀྱི་ལམ་ནི་མདོར་བསྟུ་9ན་འདི་གཉིས་དེ། གཉིས་གང་ཞེ་ན། འདི་ལྟ་  
ཕྱེ། ཐབས་དང་ཤེས་རབ་བོ།” ཞེས་བཀའ་སྤྱུལ་དོ། །འཕགས་པ་དབལ་  
མཆོག་དང་བོ་ལས་10ཀྱང་། “ཤེས་རབ་ཀྱི་པ་རིལ་དུ་ཕྱིན་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ།

1. ལྟ་བུ་-ཀྱིས་ 2. ལྟ་བུ་-བ་ལ་ 3. ལྟ་བུ་-ལམ་ཤེས་(ཆད་-ལམ་དེ་ཤེས་)

4. ལྟ་བུ་-དང་ལྷན་(དབ་དང་-ཐམས་དང་ལྷན་) 5. ལྟ་བུ་-དེས་ན་མི་(ཆད་-དེས་ན་དེ་དག་མི་)

6. ལྟ་བུ་-ཀྱིས་འཁོར་ 7. ལྟ་བུ་-ཀྱིས་ཟུ་ 8. ཕྱེ་-བཀའ་(མདོ་ཙ་ 222)

9. ལྟ་བུ་-བསྟུ་ 10. ཆོས་ཞེས་ངེས་ཆེད་མ་བྱུང་བ།



ཐབས་ལ་མཁས་པ་ནི་པ་ཡིན་ནོ” ཞེས་བཀའ་སྤྱི་ལྟར་ འཕགས་པ་དྲི་  
མ་མེད་པར་པར་གྲགས་པས་བསྟན་པ་ལས་<sup>1</sup>ཀྱང་། “བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་  
ནམས་ཀྱི་འཛིང་བ་ནི་གང་། ཐར་པ་ནི་གང་ཞེ་ན། ཐབས་མེད་པར་སྤྱོད་པར་  
འགྲོ་བ་ཡོངས་སུ་འཛིན་པ་ནི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་འཛིང་བའོ། ཐབས་ཀྱིས་  
སྤྱོད་པའི་འགྲོ་བར་འགྲོ་བ་ནི་ཐར་པ་འོ་<sup>2</sup> ཤེས་རབ་མེད་པར་སྤྱོད་པར་འགྲོ་བ་  
ཡོངས་སུ་འཛིན་པ་ནི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་འཛིང་བའོ། ཤེས་རབ་ཀྱིས་སྤྱོད་  
པའི་འགྲོ་བར་འགྲོ་བ་ནི་ཐར་པ་འོ། ཐབས་ཀྱིས་མ་<sup>3</sup>ཟིན་པའི་ཤེས་རབ་ནི་  
འཛིང་བའོ། ཐབས་ཀྱིས་ཟིན་པའི་ཤེས་རབ་ནི་ཐར་པ་འོ། ཤེས་རབ་ཀྱིས་<sup>4</sup>མ་  
ཟིན་པའི་ཐབས་ནི་འཛིང་བའོ། ཤེས་རབ་ཀྱིས་ཟིན་པའི་ཐབས་ནི་ཐར་པ་འོ།” །  
ཞེས་གྲུ་ཆར་བཀའ་སྤྱི་ལྟར་ ཏོ། །

བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཤེས་རབ་ཙམ་བསྟན་ན་ནི་ཉན་ཐོས་ཀྱིས་འདོད་པའི་  
མྱ་ངན་ལས་འདས་པར་ལྷུང་བས་འཛིང་བ་བཞིན་དུ་འགྱུར་དེ། མི་གནས་པའི་  
མྱ་ངན་ལས་འདས་པས་གྲོལ་བར་མི་འགྱུར་རོ། དེ་ལྟ་བུས་ན་ཐབས་དང་བྲལ་  
པའི་ཤེས་རབ་ནི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ནམས་ཀྱི་འཛིང་བའོ། ཞེས་བྱའོ། །  
དེ་ལྟ་བུས་ན་ལྷགས་<sup>5</sup>པས་ཉན་པ་<sup>6</sup>ལ་མེ་བསྟན་པ་བཞིན་དུ་བྱང་ཆུབ་སེམས་……  
དཔའ་ཕྱིན་ཅི་ལོག་གི་ལྷགས་<sup>7</sup>པ་ཙམ་སྤང་བའི་ཕྱིར་ཐབས་དང་བཅས་པའི་ཤེས་  
རབ་ཀྱིས་<sup>8</sup>སྤོང་བ་ཉིད་བསྟན་པར་བྱའི། ཉན་ཐོས་བཞིན་དུ་མངོན་དུ་ནི་མི་བྱ་སྟེ།

1. ཐེ་—བཀའ་(མདོ་—མ་ 207) 2. ཐེ་ཐེ་—ཐར་པ་འོ། ཐབས་(ཆད་—ཐར་པ་འོ། ‘ཤེས་རབ་  
མེད་པར་སྤྱོད་པར་འགྲོ་བ་ཡོངས་སུ་འཛིན་པ་ནི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་འཛིང་བའོ། ཤེས་རབ་ཀྱིས་  
སྤྱོད་པའི་འགྲོ་བར་འགྲོ་བ་ནི་ཐར་པ་འོ།’ ཐབས་) 3. ཐེ་ཐེ་—མེ་ 4. ཐེ་ཐེ་—ཀྱི་  
5. ཐེ་ཐེ་—ལྷག་ 6. ཐེ་ཐེ་—མེ་ལ་བརྟེན་ 7. ཐེ་ཐེ་—ལྷག་ 8. ཐེ་ཐེ་—ཀྱི་

འཕགས་པ་ཆོས་བཅུ་བའི་མདོ་ལས་<sup>1</sup>ཇི་སྐད་དུ། “རིགས་ཀྱི་བྱ་འདི་ལྟ་སྟེ།  
 དཔེར་ན་མི་ལ་ལ་ཞིག་<sup>2</sup>མེ་ཡོངས་སུ་སྤྱོད་པར་གྱུར་དེ།<sup>3</sup> དེ་མེ་དེ་ལ་བཟྱི་ལྟར་  
 བྱེད། གླ་མར་བྱེད་ཀྱང་དེ་འདི་སྟེ་མ་དུ་བདག་གིས་མེ་དེ་ལ་བཟྱི་ལྟར་བྱས།  
 གླ་མར་བྱས། དེ་མེར་བྱས་ཀྱང་འདི་ལ་ལག་པ་གཉིས་ཀྱིས་ཡོངས་སུ་གཙང་  
 བར་བྱའོ་སྟེ་མ་དུ་<sup>4</sup>མི་སེམས་སོ། །དེ་ཅིའི་ཕྱིར་ཞེ་ན། གཞི་དེ་ལས་བདག་  
 ལ་ལུས་ཀྱི་སྤྲུལ་བསྐལ་བའོ། །སེམས་ཀྱི་ཡིད་མི་བདེ་བར་འགྱུར་དུ་འོང་སྟེ་མ་  
 བའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་བཞིན་དུ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔལ་ཡོང་བྱ་ངན་ལས་འདས་པའི་  
 བསམ་པ་ཅན་ཡང་ཡིན་ལ་བྱ་ངན་ལས་འདས་པ་མངོན་སུམ་དུ་ཡང་མི་བྱེད་དོ། །  
 དེ་ཅིའི་ཕྱིར་ཞེ་ན། གཞི་དེ་ལས་བདག་བྱང་ཆུབ་ལས་ཕྱིར་ཐོག་པར་འགྱུར་དུ་  
 འོང་སྟེ་མ་བའི་ཕྱིར་རོ།” །ཞེས་བཀའ་སྤྲུལ་པ་ལྟ་བུའོ། །

ཐུབ་པ་ཅམ་འབའ་ཞིག་བཟྱིན་ན་ཡང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔལ་མོ་སོ་འི་  
 སྤྲུལ་པའི་ས་ལས་མ་འདའ་བས་ཤིན་དུ་བཅིངས་པ་ཁོ་ནར་འགྱུར་རོ། །དེ་ལྟ་  
 བས་ན་ཤེས་རབ་དང་བཅས་པའི་ཐུབ་པ་བཟྱིན་པར་བྱ་སྟེ། འདི་ལྟར་སྤྲུལ་ས་  
 ཀྱིས་ཡོངས་སུ་ཟིན་པའི་དུག་བཞིན་དུ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔལ་ནམས་ཀྱི་ཉོན་མོངས་  
 པ་ཡང་ཤེས་རབ་ཀྱིས་ཡོངས་སུ་ཟིན་པའི་ཐུབ་པ་ཀྱིས་བསྐྱོམས་ན་བདུད་ཅིར་……  
 འགྱུར་ན། རང་བཞིན་<sup>7</sup>གྱིས་མངོན་པར་མཐ་བའི་འབྲས་བུ་ཅན་སྤྱིན་པ་ལ་སོད་  
 པ་གང་ཡིན་པ་ལྟ་སྟོས་ཀྱང་ཅི་དགོས་དེ། འཕགས་པ་དཀོན་མཆོག་བཅུགས་

1. ཐུ་-བཀའ་(དཀོན་བཅུགས་པ་ ༡༠༩) 2. ཐུ་མེ་-དག་ 3. ཐུ་ཅི་-དོ།

4. ཐུ་མེ་-དུ་སེམས་(ཆད་སྤྱོད་-ཐུ་མ་དུ་མེ་སེམས་སོ།) 5. ཐུ་མེ་-དཔའི་

6. ཐུ་མེ་-དཔའི་ 7. ཐུ་མེ་-བཞིན་མངོན་(ཆད་-བཞིན་གྱིས་མངོན་)



པ་ལས་<sup>1</sup>ཐོག་དང་། “འོད་སྤངས་འདི་ལྟ་ལྟོ། དཔེར་ན་སྤྲུག་ས་དང་སྤྲུག་གིས་  
ཡོངས་སུ་ཟིན་པའི་དྲུག་གིས་ནི་འཆི་བར་བྱེད་མི་ཉུས་སོ། །དེ་བཞིན་དུ་བྱང་  
ཆུབ་སེམས་དབང་ནམས་<sup>2</sup>ཀྱི་ཉན་མོངས་པ་ཤེས་རབ་ཀྱིས་ཡོངས་སུ་ཟིན་པས་……  
ཀྱང་ཡོག་པར་ལྷུང་བར་བྱེད་མི་ཉུས་སོ།” ཞེས་བཀའ་སྤྱི་ལ་<sup>3</sup>དོ། །

དེ་<sup>4</sup>ལྟ་བུས་ན་གང་གི་ཕྱིར་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབང་ཐབས་ཀྱི་ལྟོ་བས་ཀྱིས་……  
འཁོར་བ་མི་འདོར་བ་དེའི་ཕྱིར་བྱང་ཆུབ་སེམས་འདས་པར་མི་ལྷུང་ངོ་། །གང་གི་  
ཕྱིར་ཤེས་རབ་ཀྱི་ལྟོ་བས་ཀྱིས་དམིགས་པ་མཐའ་དག་སྤོང་བ་དེའི་ཕྱིར་འཁོར་……  
བར་མི་ལྷུང་ལྟོ། དེ་བས་ན་མི་གནས་པའི་བྱང་ཆུབ་སེམས་འདས་པ་སངས་བུས་  
ཉིད་འཐོབ་པོ། །དེ་བས་ན་འཕགས་པ་ནམ་མཁའ་མཛོད་ལས་<sup>4</sup>ཀྱང་། “དེ་  
ཤེས་རབ་ཀྱི་ཤེས་པས་ནི་ཉན་མོངས་པ་ཐམས་ཅད་ཡོངས་སུ་འདོར་སོ། ཐབས་  
ཀྱི་ཤེས་པས་ནི་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཡོངས་སུ་མི་གཏོང་ངོ་།” ཞེས་བཀའ་  
སྤྱི་ལ་<sup>5</sup>དོ། །འཕགས་པ་དགོངས་པ་ངེས་པར་འབྲེལ་བ་ལས་<sup>6</sup>ཀྱང་། “སེམས་  
ཅན་གྱི་དོན་ལ་ཤིན་དུ་མི་སྤྱོད་པ་དང་། འདྲ་བྱེད་མཛོད་པར་འདྲ་བ་ཐམས་  
ཅད་ལ་ཤིན་དུ་མི་སྤྱོད་པ་ནི་སྤྱོད་པ་ཡང་དག་པར་ཐོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་……  
དུ་ངས་<sup>6</sup>མ་བཟུན་དོ།” ཞེས་བཀའ་སྤྱི་ལ་<sup>7</sup>དོ། །དེ་<sup>7</sup>ལྟ་བུས་ན་སངས་བུས་  
ཉིད་ཐོབ་པར་འདོད་པས་ཤེས་རབ་དང་ཐབས་གཉིས་ཀྱི་བཞུན་པར་བྱའོ། །

དེ་ལ་འཛིག་དྲན་ལས་འདས་པའི་ཤེས་རབ་བསྐྱེད་པའི་གནས་སྐབས་སམ།

1. ལྟོ་—བཀའ་(དཀོན་བཞུགས་‘ཆ’ ༡༣༠)

2. ལྟོ་མེ་—ནམས་ཉན་ 3. ལྟོ་མེ་—དེ་བས་ 4. ལྟོ་—བཀའ་(མདོ་‘མ’ 213)

5. ལྟོ་—བཀའ་(མདོ་‘མ’ ༡༠) 6. ལྟོ་མེ་—ངས་བཟུན་(ཆད་ལྟོན་—ངས་‘མ’བཟུན་)

7. ལྟོ་མེ་—དེ་བས་

ཤིན་དུ་མཉམ་བར་བཞག་པའི་གནས་སྐབས་ན་སྤྱིན་པ་ལ་སོགས་པ་ཐབས་ལ་……  
 བཞེན་<sup>1</sup>པ་མི་འབྱུང་དུ་ཟེན་ཀྱང་། དེ་ལ་སྤྱོད་པ་དང་དེའི་རྗེས་ལས་བྱུང་བའི་ཤེས་  
 རབ་<sup>2</sup>གང་ཡང་བྱུང་བ་དེའི་ཚེ་ཐབས་ལ་བཞེན་<sup>3</sup>པ་འབྱུང་བ་<sup>4</sup>ཉིད་དེ། དེའི་  
 སྤྱིར་ཤེས་རབ་དང་ཐབས་གཉིས་ཅིག་ཅར་འཇུག་གོ། །གཞན་ཡང་བྱང་ཆུབ་  
 སེམས་དབའ་ནམས་ཀྱི་ཤེས་རབ་དང་ཐབས་རྒྱུད་དུ་འབྲེལ་བར་འཇུག་པའི་ལས་  
 ནི་འདི་ཡིན་དེ། སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་ལྟ་བུའི་སྤྱིང་རྗེ་ཆེན་པོས་ཡོངས་སུ་  
 ཟེན་པས་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་ལས་བཞེན་པ་དང་། ལངས་པའི་ཐབས་  
 ཀྱི་དུས་ན་ཡང་སྐྱུ་མ་མཁན་བཞིན་དུ་སྤྱིན་ཅི་མ་ལོག་པ་ཁོ་ནའི་སྤྱིན་པ་ལ་སོགས་  
 པ་ལ་བཞེན་<sup>5</sup>པ་སྟེ། འཕགས་པ་སྒྲོ་གྲོས་མི་ཟད་པས་བཞུན་པ་ལས་<sup>6</sup>རྗེ་སྒྲོད་དུ།  
 “དེ་ལ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབའི་ཐབས་ནི་གང་། ཤེས་རབ་མངོན་པར་སྐྱབ་པ་ནི་  
 གང་ཞེ་ན། གང་གི་སྤྱིར་མཉམ་བར་བཞག་པ་ན་སེམས་ཅན་<sup>7</sup>ལ་ལྟ་བུས་<sup>8</sup>ན་  
 སྤྱིང་རྗེ་ཆེན་པོའི་དམིགས་པ་ལ་སེམས་ཉེ་བར་འཇོག་པ་དེ་ནི་དེའི་ཐབས་སོ། །  
 གང་གི་སྤྱིར་ཞིབ་དང་རབ་དུ་ཞི་བར་སྒྲོམས་པར་འཇུག་པ་དེ་ནི་དེའི་ཤེས་……  
 རབ་པོ།” །ཞེས་བྱ་ཆེར་བཀའ་སྩལ་པ་ལྟ་བུའོ། །བདུན་བདུལ་བའི་ལུ་  
 ལས་<sup>9</sup>ཀྱང་བཀའ་སྩལ་དེ། “གཞན་ཡང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབའ་ནམས་ཀྱི་སྤྱོད་

- 
1. བྱེ་ཚོ་བཏེན་ 2. ལྟ་བུ་རབ་འབྱུང་ 3. བྱེ་ཚོ་བཏེན་ 4. ལྟ་བུ་བ་དེ་ཉིད་  
 5. བྱེ་ཚོ་བཏེན་ 6. བྱེ་བཀའ་(མདོ་མ་ ༡༡༣) 7. ལྟ་བུ་ཅན་ལྟ་(ཆད་སེམས་  
 ཅན་ལ་ལྟ་) 8. ལྟ་བུ་བས་སྤྱིང་(ཆད་བས་ན་སྤྱིང་)  
 9. བྱ་ཆེར་རྣམས་ལེན་ཉེར་གཏམས་པ་བདུན་བདུལ་བའི་ལུ་ལས་འདྲིན་འདྲི་མེས་པས་མདོ་  
 གཞན་དུ་མེད་དམ་དཔེར་བར་བྱའོ།



བ་ཡང་དག་སྤྱལ་ནི་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཤེས་པས་མངོན་པར་བརྟེན་པར་ཡང་<sup>1</sup>བྱེད་ལ།  
 ཐབས་ཀྱི་<sup>2</sup>ཤེས་པས་དག་བའི་ཆོས་ཐམས་ཅད་སྤྱད་པར་ཡང་སྦྱོར་བ་དང་།  
 ཤེས་རབ་ཀྱི་ཤེས་པས་བདག་མེད་བ་དང་། སེམས་ཅན་མེད་བ་དང་། སྒྲིག་  
 མེད་བ་དང་། གསོ་བ་མེད་བ་དང་། གང་ཟག་མེད་པར་ཡང་སྦྱོར་ལ།  
 ཐབས་ཀྱི་ཤེས་པས་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཡོངས་སུ་སྒྲིན་པར་བྱེད་བ་<sup>3</sup>ཡང་སྦྱོར་  
 བ་གང་ཡིན་པའོ།” །ཞེས་བྱ་ཆེར་འབྱུང་ངོ་། །འཕགས་པ་ཆོས་ཐམས་ཅད་  
 ཡང་དག་པར་བསྤྱད་པའི་མདོ་ལས་<sup>4</sup>ཀྱང་། །

དཔེར་ན་སྤྱུ་མའི་མཁན་པོ་ཞིག་།

སྤྱལ་བ་ཐར་པར་བྱ་བྱིར་བརྟེན། །

དེས་<sup>5</sup>ནི་སྤྱ་ནས་དེ་ཤེས་པས། །

སྤྱལ་བ་དེ་ལ་ཆགས་པ་མེད། །

སྤྱིད་གསུམ་སྤྱལ་བ་འདྲ་བར་ནི། །

རྒྱུགས་པའི་བྱང་ཆུབ་མཁས་པས་ཤེས། །

འགྲོ་བའི་ཆེད་དུ་གོ་བགོས་དེ། །

འགྲོ་བ་དེ་ལྟར་སྤར་<sup>6</sup>ནས་ཤེས། །ཞེས་འབྱུང་ངོ་། །

- 
1. བསྟན་འགྱུར་པོར་དཔེ་རྣམས་སུ་མངོན་པར་བརྟེན་པར་ཡང་མ་བྱེད་ལ་ཞེས་གསལ་ཡང་།  
 གཞུང་གི་སྤྱུ་མའི་བསྟན་དོན་ལ་བརྟགས་ན་དེ་ལས་བརྒྱུག་དེ་“མངོན་པར་ཡང་བྱེད་ལ”  
 ཞེས་དགོས་པར་ཐུང་ཞིང་། འདྲ་དག་གི་ཐད་ཀྱི་ཞིགས་སྤྱད་ཀྱི་དཔེ་མེད་ལ་མ་ཟད་ལྷན་  
 ཞེན་ལས་ཀྱི་མདོ་ཉིད་ཀྱང་ཆོས་ཞིབ་ངེས་ཆེད་མ་བྱུང་པས་དཔྱད་སྟེན་རྣམས་ཀྱིས་དཔྱད་པར་བྱའོ།  
 2. ལྷ་པོ་-ཀྱུས་ 3. ལྷ་པོ་-པར་ 4. ལྷ་-བཀའ་(མདོ་ཞེ་ ༤༩) 5. ལྷ་པོ་-དེ་ནི་  
 6. ལྷ་པོ་-སྤྱ་

བྱང་ཆུབ་སེམས་དབའ་ནམས་ཀྱི་ཤེས་རབ་དང་། ཐབས་ཀྱི་ཚལ་ཁོན་སྐྱབ་  
 བའི་དབང་དུ་མཛད་ནས། དེའི་སྒྲིབ་བ་འཁོར་བ་ན་གནས་བ་ཡང་ཡིན་པ་ལ།  
 བསམ་བ་ཕྱང་ལས་འདས་བ་ལ་གནས་བ་ཡང་ཡིན་ནོ། །ཞེས་བཀའ་སྤྱུལ་དོ། །

དེ་ལྟར་སྒྲིབ་བ་ཉིད་དང་སྒྲིབ་ཇི་ཆེན་པོ་འི་སྒྲིབ་པོ་ཅན་གྱི་ཉམས་བ་ཡང་དག་  
 བར་ཇོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་དུ་ཡོངས་སུ་བསྐྱེས་པའི་སྒྲིབ་བ་ལ་སོགས་པའི་ཐབས་  
 གོམས་པར་བྱས་ལ། རོན་དམ་པའི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་བསྐྱེད་<sup>1</sup>པའི་སྒྲིབ་སྒྲིབ་  
 ས་བཞིན་དུ་དྲག་པར་དུས་དུས་སུ་ཞི་གནས་དང་སྒྲིབ་མཐོང་གི་སྒྲིབ་བ་ལ་ཅི་ཉམས་  
 སུ་བསྐྱེས་པར་བྱ་སྟེ། འཕགས་བ་སྒྲིབ་ལུལ་ཡོངས་སུ་དག་པའི་མདོ་ལས།<sup>2</sup>  
 གནས་སྐབས་ཐམས་ཅད་དུ་སེམས་ཅན་གྱི་རོན་བྱེད་པའི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབའ་...  
 ནམས་ཀྱི་ཕན་ཡོན་ཇི་སྟེད་དུ་བསྟན་བ་དེ་བཞིན་དུ་ཉེ་བར་གནས་པའི་བྱན་པས་.....  
 དུས་ཐམས་ཅད་དུ་ཐབས་ལ་མཁས་པ་གོམས་པར་བྱའོ། །

དེ་ལྟར་སྒྲིབ་ཇི་དང་། ཐབས་དང་། བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་གོམས་པར་  
 བྱས་པ་དེ་<sup>3</sup>ཆོ་འདི་ལ་གདོན་མི་ཟ་བར་བྱུང་བར་དུ་འགྱུར་དོ། ། དེས་ན་སྒྲིབ་ལས་  
 ན་དྲག་དུ་སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབའ་མཐོང་བར་འགྱུར། སྒྲིབ་ལས་  
 བཟང་བོ་གཞན་དག་ཀྱང་སྒྲིབ་པར་འགྱུར། ལྟ་ནམས་ཀྱང་ཡི་རངས་ནས་སྒྲིབ་བ་  
 བྱེད་པར་འགྱུར། སྟེན་ཅིག་དེ་དེ་ལ་ཡང་བསོད་ནམས་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཆོགས་  
 གྱི་ཆེན་པོ་སོགས་པར་འགྱུར། ཉོན་མོངས་པའི་སྒྲིབ་བ་དང་། གནས་ངན་

1. ལྟ་བུ་—སྒྲིབ་བ་སྒྲིབ་སྒྲིབ་ 2. མདོ་དེ་དུང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབའི་ཕན་ཡོན་ཇི་སྟེད་བསྟན་བའི་ཚུལ་  
 ནམས་ལ་ཞུས་ཀྱིས་མཛད་པ་ལས་དངོས་སུ་བྱང་ཆུབ་སྒྲིབ་མཛད་པ་ནི་ཆེན་པོ་ལྟར་དོ། །

3. ལྟ་བུ་—སྒྲིབ་



ལེན་ཀྱང་བྱང་<sup>1</sup>པར་འགྱུར། ཏུས་ཐམས་ཅད་དུ་ཡང་བདེ་བ་དང་ཡིད་བདེ་བ་  
མང་བར་འགྱུར། སྤྱི་བོ་མང་བོ་ལ་སྤྱུག་པར་འགྱུར། ལུས་ལ་ཡང་ནད་ཀྱིས་  
མི་ཐེབས་པར་འགྱུར། སེམས་ལས་སྤྱི་བོ་ཉིད་ཀྱི་མཚོག་ཀྱང་ཐོབ་པར་  
འགྱུར་དེ། དེས་ན་མངོན་པར་ཤེས་པ་ལ་སོགས་པ་ཡོན་ཏན་ཁྱད་པར་ཅན་ཐོབ་བོ།

དེ་ནས་རྩུ་འཕྲུལ་གྱི་སྟོབས་ཀྱིས་<sup>2</sup>འཛིག་དྲིན་གྱི་ཁམས་མཐའ་ལས་པ་དག་  
དུ་སྤོང་ནས་སངས་རྒྱས་བཅོས་ལྷན་འདས་<sup>3</sup>ནམས་ལ་མཚོད་པ་བྱེད་དོ། ཁི་དག་  
ལ་ཚོས་ཀྱང་ཉན་དོ། འཛི་བའི་དུས་ཀྱི་ཚོན་ཡང་བཤེད་མི་ཟ་བར་སངས་རྒྱས་  
དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ནམས་མཐོང་བར་འགྱུར་དོ། ཁོ་རབས་གཞན་ན་  
ཡང་སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་དང་མི་འབྲལ་བའི་ཡུལ་དང་། ཁྱད་  
པར་དུ་འཕགས་པའི་ཁྱིམ་དུ་<sup>4</sup>ཡང་སྤྱི་བར་འགྱུར་དེ། དེས་ན་འབད་མི་དགོས་  
བར་བསོད་ནམས་དང་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཚོགས་ཡོངས་སྤྱི་ལོགས་པར་བྱེད་དོ། །  
ཡོངས་སྤྱོད་ཆེ་བ་དང་། གཡོག་འཁོར་མང་བར་འགྱུར་དོ། ཤེས་རབ་ནི་  
བས་སྤྱི་བོ་མང་བོ་ཡོངས་སྤྱི་སྤྱོད་པར་<sup>5</sup>ཡང་བྱེད་པར་འགྱུར་དོ། ཁོ་རབས་  
ཐམས་ཅད་དུ་ཆོ་རབས་དྲན་པར་འགྱུར་དེ། དེ་ལྟར་ཕན་ཡོན་ཚད་མེད་པ་མདོ་  
གཞན་དག་ལས་འབྱུང་<sup>6</sup>བཤོང་དུ་ཆུད་པར་བྱའོ། །

དེས་དེ་ལྟར་སྦྱིང་ཇི་དང་། ཐབས་དང་། བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་དྲག་དུ་  
གྱུས་པར་ཡུན་རིང་དུ་བསྐྱོམས་ན་རིམ་གྱིས་སེམས་ཀྱི་<sup>7</sup>རྒྱུད་ཤིན་དུ་ཡོངས་སྤྱི་  
དག་པའི་སྐད་ཅིག་འབྱུང་བས་ཡོངས་སྤྱི་སྤྱོད་པར་འགྱུར་བའི་སྤྱིར་གཙུབ་<sup>8</sup>ཤིང་།

1. ལྷ་མོ་-འཐུང་ 2. ལྷ་མོ་-ཀྱི་ 3. ལྷ་མོ་-འདས་ལ(ཆད་-འདས་'ནམས་'ལ་)

4. ལྷ་མོ་-དུ་སྤྱི་ 5. ལྷ་མོ་-པར་བྱེད་ 6. ལྷ་མོ་-བྱང་ 7. ལྷ་མོ་-སེམས་འདྲི་

8. ལྷ་མོ་-གཙུབས་

གཞུང་ས་པའི་མེ་བཞིན་དུ་ཡང་དག་པའི་དོན་ལ་བསྐྱོས་པ་རབ་ཀྱི་མཐར་ཕྱིན་པར་  
 གྱུར་ནས་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་ཡེ་ཤེས་རྟོག་པའི་དྲ་བ་མཐའ་དག་དང་...  
 བུལ་བ། ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་སྒྲིམ་པ་མེད་པ་ཤིན་དུ་གསལ་བར་རྟོགས་བ། རྩི་  
 མ་མེད་ཅིང་མི་གཡོ་ལ་མར་མེ་རླང་མེད་པར་བཞག་པ་བཞིན་དུ་མི་གཡོ་བ་ཆད་<sup>1</sup>  
 མར་གྱུར་བ། ཆོས་ཐམས་ཅད་བདག་མེད་པའི་<sup>2</sup>ངོ་བོ་དེ་ཁོ་ན་མངོན་དུ་བྱེད་  
 བ་མཐོང་བའི་ལས་གྲིས་<sup>3</sup>བརྩུས་པ་དོན་དམ་པའི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་ཀྱི་ངོ་བོ་...  
 ཉིད་འབྱུང་ངོ་། །དེ་བྱང་ནས་དངོས་བོ་འི་མཐའ་ལ་དམིགས་པ་ལ་ཞུགས་<sup>4</sup>པ་  
 ཡིན་དེ། དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་རིགས་སུ་སྒྲེས་པ་ཡིན། བྱང་ཆུབ་སེམས་  
 དཔའི་སྒྲིན་མེད་པ་ལ་ཞུགས་པ་ཡིན། འཇིག་རྟེན་གྱི་འགྲོ་བ་ཐམས་ཅད་ལས་  
 ལོག་པ་ཡིན། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ཆོས་ཉིད་དང་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་རྟོགས་<sup>5</sup>  
 བ་ལ་གནས་པ་ཡིན། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ས་དང་བོ་ཐོབ་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་  
 བན་ཡོན་དེ་རྒྱས་པར་ས་བཅུ་བ་ལ་སོགས་པ་ལས་ཁོང་དུ་རྒྱད་པར་བྱའོ། །  
 འདི་ནི་དེ་བཞིན་ཉིད་ལ་དམིགས་པའི་བསམ་གཏན་དེ། འཕགས་པ་ལང་ཀར་  
 གཤེགས་པ་ལས་བརྩན་དེ། འདི་ནི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ནམས་ཀྱི་སྒྲིམ་པ་  
 མེད་པ་ནམ་པར་མི་རྟོག་པ་ཉིད་ལ་འཇུག་པའོ། །

མོས་པས་སྒྲོད་པའི་ས་ལ་ནི་མོས་པའི་དབང་གིས་འཇུག་པར་ནམ་པར་...  
 བཞག་གི། ཁངོན་པར་འདུ་བྱེད་པས་ནི་ས་ཡིན་ནོ། །ཡེ་ཤེས་དེ་བྱང་བར་  
 གྱུར་ན་ནི་མངོན་དུ་ཞུགས་པ་ཡིན་དེ། དེ་ལྟར་ས་དང་བོར་ཞུགས་པ་དེ་<sup>6</sup>ཕྱིས་

1. ལྷ་མོ་-ཆད་མེད་པར་ 2. ལྷ་མོ་-བའི་དེ་ 3. ལྷ་མོ་-བྱེ་ 4. ལྷ་མོ་-འཇུག་པ་

5. ལྷ་མོ་-རྟོག་ 6. ལྷ་མོ་-དེས་



བསྐྱེས་པའི་ལམ་ལ་འཛིག་དྲན་ལས་འདས་པ་དང་། དེའི་རྗེས་ལ་ཐོབ་ངའི་ཡོ་  
ཤེས་གཉིས་ཀྱིས་ཤེས་རབ་དང་། ཐབས་བསྐྱེས་པ་ལས་རིམ་གྱིས་བསྐྱེས་པས་  
སྤང་བར་བྱ་བའི་སྒྲིབ་པ་བསགས་པ་སྤྲ་བ་བས་ཀྱང་ཆེས་སྤྲ་བ་བྱང་བའི་ཕྱིར་དང་།  
ཡོན་དྲན་ཁྱད་བར་ཅན་གོང་མ་གོང་མ་ཐོབ་<sup>1</sup>བའི་ཕྱིར་<sup>2</sup>ས་འོག་མ་ནམས་ཡོངས་  
སྤྱ་སྤྱོང་བས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་ཡོ་ཤེས་ཀྱི་བར་ལ་ཞུགས་ནས་ཐབས་ཅན་...  
མཁུན་པ་ཉིད་ཀྱི་བྱ་མཆོར་འཇུག་ཅིང་དགོས་པ་ཡོངས་སྤྱ་འགྲུབ་པའི་དམིགས་...  
པ་ཡང་འཐོབ་ཟླ། འདི་ལྟར་རིམ་པ་ཁོ་ནར་སེམས་ཀྱི་རྒྱུད་ཡོངས་སྤྱ་དག་པར་  
འཕགས་པ་ཡང་ཀར་གཤེགས་པ་ལས་ཀྱང་བཀའ་སྤྱུལ་དོ། །འཕམ་པ་དགོངས་  
པ་ངེས་པར་འགྲུལ་པ་ལས་<sup>3</sup>ཀྱང་། “རིམ་གྱིས་<sup>4</sup>ས་གོང་མ་གོང་མ་ནམས་སྤྱ་  
གསེར་ལྷ་བྱར་སེམས་ནམ་པར་སྤྱོང་ལ་སྤྲ་ན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་...  
བྱང་ཆུབ་ཀྱི་བར་དུ་མངོན་པར་རྫོགས་པར་འཛང་བུའོ།” ཞེས་གསུངས་སོ།

ཐབས་ཅན་མཁུན་པ་ཉིད་ཀྱི་བྱ་མཆོར་ཞུགས་པ་ན་ཡིད་བཞིན་གྱི་ནོར་བུ་ལྷ་  
བྱར་སེམས་ཅན་མཐའ་དག་ཉི་པར་འཛོ་བའི་ཡོན་དྲན་གྱི་སྤང་བོ་དང་ནི་ལྷན།  
སྤྲོན་གྱི་སྤྲོན་ལམ་གྱི་འབྲས་བྱ་ཡོད་པར་ནི་མཛོད། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་འི་རང་བཞིན་  
དུ་ནི་འགྲུར། ལྷན་གྱིས་གྲུབ་པའི་ཐབས་སྤྲ་ཆོགས་དག་དང་ལྷན། སྤྱུལ་པ་  
དབག་དུ་མེད་པ་དག་གིས་འགྲོ་བ་མ་ལུས་པའི་དོན་ནམ་པ་ཐབས་ཅན་ནི་མཛོད།  
ཡོན་དྲན་སྤྲན་སྤུམ་ཆོགས་པ་མ་ལུས་པ་<sup>5</sup>རབ་ཀྱི་མཐར་ཕྱིན་པར་ནི་གྲུར།<sup>6</sup> བག་

1. ལྷ་པོ་—ཐོ་བའི་(ཆད་—ཐོ་བ་པའི་ 2. ལྷ་པོ་—ཕྱར་གོང་མ་ 3. ལྷ་པོ་—བཀའ་(མདོ་ཙ་ 35)

4. ལྷ་པོ་—ཁྱེས་གོང་(ཆད་—ཁྱེས་པ་གོང་) 5. ལྷ་པོ་—བ་མཐར་(ཆད་—བ་རབ་ཀྱི་མཐར་)

6. ལྷ་པོ་—འགྲུར་

ཆགས་དང་བཅས་པའི་ཉེས་པའི་དྲི་མ་མཐའ་དག་བསལ་ནས། སེམས་ཅན་གྱི་  
ཁམས་<sup>1</sup> གྱི་མཐས་གདུགས་པར་བརྒྱགས་པ་ཡིན་པར་རྟོགས་པ་དང་ལྷན་པས་……  
སངས་རྒྱས་བཙུངས་ལྷན་འདས་ཡོན་ཏན་མཐའ་དག་གི་འབྱུང་གནས་ལ་དད་པ་……  
བསྐྱེད་ལ་ཡོན་ཏན་དེ་ཡོངས་སུ་བསྐྱབ་པའི་ཕྱིར་བདག་ཉིད་ཐམས་ཅད་གྱིས་འབད་  
པར་བྱའོ། །

དེ་བས་ན་བཙུངས་ལྷན་འདས་གྱིས་<sup>2</sup> འད་སྐད་དུ། “ཐམས་ཅད་མཐུན་  
པའི་ཡེ་ཤེས་དེ་ནི་སྤྱིང་ཇི་ཅི་ཅ་བ་ལས་བྱུང་བ་ཡིན། བྱུང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་ཀྱི་  
རྒྱ་ལས་བྱུང་བ་ཡིན། ཐམས་ཀྱིས་མཐར་ཕྱིན་པ་ཡིན་ནོ།” ཁྲིམ་བཀའ་  
སྤུལ་དོ། །

དམ་པ་སྤྲལ་རྟོག་ལ་སོགས་དྲི་མ་ཐག་བསྐྱངས་པ། །

ཡོན་ཏན་ནམས་གྱིས་མི་ངོམས་ཆུ་ཡི་མཚོ་འདྲ་དག།

ནམ་པར་སྤྱེ་ནས་ལེགས་པར་བཤད་ནམས་འཛིན་བྱེད་དེ། །

ངང་པ་རབ་དགའ་ཆུ་ལས་འོ་མ་ལེན་པ་བཞིན། །

དེ་ལྟ་བུས་ན་མཁས་ནམས་གྱིས། །

ཕྱོགས་ལྗང་དཀྱུགས་ཡིད་རིང་སྤྱོངས་ལ། །

བྱིས་པ་ལས་ཀྱང་ལེགས་བཤད་པ། །

ཐམས་ཅད་སྤང་བ་ཁོ་ནར་བྱ། །

1. ལྟ་བུ་—ཁམས་མཐའ་

2. ལྟ་བུ་—བཀའ་(ལྟུང་པ་ནམ་རྒྱང་མངོན་ཐུང་' ༡༢༣)



དེ་ལྟར་དབྱ་མའི་ལམ་བཤད་པས། །

བདག་གིས་བསོད་ནམས་གང་ཐོབ་པ། །

དེ་ཡིས་སྤྱོད་པོ་མ་ལུས་པ། །

དབྱ་མའི་ལམ་ནི་ཐོབ་པར་གོ། །

བསྒྲུབ་པའི་རིམ་པ་ལྷུ་ཅི་རྒྱུ་མཁུ་གྱི་ལས་བར་དུ་མཛད་པ་ཆོགས་སོ། །

གྲུ་གར་གྱི་མཁན་པོ་བླ་མ་དང་། ཡོ་ཙ་པ་བརྗེ་ཡེ་གིས་སྒྲུབ་ཅིང་།  
ལྷུ་དེ་གཏན་ལ་ཕབ་པའོ། །





༡༡། །གྲླ་གར་སྐད་དུ། །སྤྱུ་བཅུ་གྲམ། །བོད་སྐད་དུ། །བསྐྱོམ་<sup>1</sup>  
པའི་རིམ་པ། །འཇམ་དཔལ་གཞིན་ཉུང་གྲུང་པ་ལ་བྱུག་འཛལ་ལོ། །

ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་<sup>2</sup>མདོ་སྟེང་ཚུལ་ལ་བྱུགས་པ་ནམས་ཀྱི་ཕྱིར་བསྐྱོམ་<sup>3</sup>པའི་  
རིམ་པ་མདོར་བཟོད་པར་བྱའོ། །དེ་ལ་བཙུག་ལྷན་འདས་ཀྱིས་བྱང་ཆུབ་སེམས་  
དཔའ་ནིས་ཀྱི་དྲིང་ངེ་འཛིན་ཐ་དད་པ་ཚད་མེད་<sup>4</sup>པ་དཔག་དུ་མེད་པ་ལ་སོང་(<sup>5</sup>པའི་  
དབྱེ་བས་)བཟུན་དུ་ཟིན་ཀྱང་། ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་གཉིས་ཀྱིས་དྲིང་ངེ་འཛིན་  
ཐམས་ཅད་ལ་བྱུག་པས་ན་ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་རྒྱུད་དུ་འབྲེལ་བར་འཇུག་.....  
པའི་ལམ་དེ་ཉིད་བཟོད་པར་བྱའོ། །བཙུག་ལྷན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྤྱུལ་<sup>6</sup>པ།

སྤྱི་བ་པོ་<sup>7</sup>ཡི་ལྷག་མཐོང་དང་།

ཞི་གནས་གོམས་པར་བྱས་ན་ནི།

གནས་ངན་ལེན་གྱི་འཛིང་བ་དང་།

མཚན་མའི་མཛིང་བ་ནམ་གྲོལ་འགྱུར། །ཞེས་སོ། །དེ་  
ལྟ་བུས་ན་སྤྱི་བ་པོ་མཐའ་དག་སྤྱོད་པར་འདོད་པས་ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་.....  
བསྐྱོམ་<sup>9</sup>པར་བྱའོ། །ཞི་གནས་ཀྱི་སྤྱོད་པས་ཀྱིས་ནི་མར་སེ་རྒྱུང་མེད་པ་ན་གནས་པ་  
བཞིན་དུ་(<sup>10</sup>རང་གི་)དམིཌ་པ་ལས་སེམས་མི་གཡོ་བར་འགྱུར་རོ། །ལྷག་མཐོང་  
གིས་<sup>11</sup>ནི་སྤྱན་<sup>12</sup>པར་ཉི་མ་ཤར་བ་བཞིན་དུ་ཚོས་ཀྱི་དེ་ཁོ་ན་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་.....

1. ལྟ་བུ་-སྤྱོམ་ 2. ལྟ་ཙེ་-བོ་ 3. ལྟ་བུ་-སྤྱོམ་ 4. ལྟ་ཙེ་-མེད་དཔག་

5. ལྟ་དཔེར་-མཁའ་མེད་ཀྱི་སྤྱོད་པས་ 6. ལྟ་-བཀའ་(མདོ་ཙེ་དཔེར་ལྷན་འདས་ཀྱི་སྤྱུལ་) ༩)

7. ལྟ་ཙེ་-བོ་ལ་ 8. ལྟ་བུ་-བ་སྤྱོད་(ཆད་-སྤྱོད་པ་མཐའ་དག་སྤྱོད་)

9. ལྟ་དཔེར་-སྤོབ་ཀྱི་སྤྱོད་པས་ 10. ལྟ་དཔེར་-ཅུང་ལྷག་པ་ལ།

11. ལྟ་ཙེ་-གོས་སྤྱན་ 12. ལྟ་བུ་-བ་ཉི་(ཆད་-སྤྱན་པར་ཉི་མ་)

རབ་དུ་རྟོགས་པས་ཡང་དག་པའི་ཤེས་1རབ་ཀྱི་རྣམ་པ་འབྱུང་སྟེ། རྒྱུ་པ་  
མཐའ་དག་སྟོང་བར་འབྱུང་རྟེ།

དེ་ལྟ་བུས་ན་བཅོས་ལྷན་འདས་ཀྱིས་ནལ་འབྱུང་བ་ནམས་ཀྱི་དམིགས་པའི་  
དངོས་པོ་བཞི་བརྟན་དེ། རྣམ་པར་མི་རྟོག་པའི་གཞུགས་བརྟན་དང་། རྣམ་  
པར་རྟོག་པ་དང་བཅས་པའི་གཞུགས་བརྟན་དང་། དངོས་པོའི་མཐའ་དང་།  
དགོས་པ་ཡོངས་སུ་གྲུབ་པའོ། །དེ་ལ་ཞི་གནས་ཀྱིས་ནི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་  
གཞུགས་བརྟན་གང་ཡིན་པ་དང་། སངས་བྱུས་ཀྱི་གཞུགས་ལ་སོགས་པ་ལ་  
མོས་2ནས་དམིགས་པ་སྟེ། དེ་ནི་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པའི་གཞུགས་བརྟན་ཞེས་  
བྱའོ། །དེ་ལ་ཡང་དག་པའི་དོན་3ལ་རྣམ་པར་རྟོག་པ་མེད་པས་ན་དེ་རྣམ་པར་  
མི་རྟོག་པ་ཞེས་བྱའོ། །ཇི་ལྟར་ཐོབ་པ་དང་ཇི་ལྟར་4ཟླ་བའི་ཆོས་རྣམས་ཀྱི་  
གཞུགས་བརྟན་ལ་མོས་དེ་དམིགས་པས་ན་གཞུགས་བརྟན་ཞེས་བྱའོ། །ནལ་  
འབྱུང་པས་དེ་ཁོ་ནའི་དོན་རྟོག་པར་བྱ་བའི་སྤྱིར་གང་གི་ཆོ་ལྷག་མཐོང་གི་5གཞུང་  
བརྟན་དེ་ཉིད་ལ་དབྱེད་6པ་དེའི་ཆོ་ལྷག་མཐོང་གི་མཚན་ཉིད་དེ་ཁོ་ན་ལ་རྟོག་པའི་  
རྣམ་པར་7རྟོག་པ་དེ་ན་ཡོད་པས་ན་རྣམ་པར་རྟོག་པ་དང་བཅས་པའི་གཞུགས་པ་  
བརྟན་ཞེས་བྱའོ། །ནལ་འབྱུང་བ་གཞུགས་བརྟན་དེ་ཉིད་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་ལ་རྟོག་  
པས་ཆོས་ཐམས་ཅད་8ཀྱི་ངོ་བོ་9ཉིད་ཇི་ལྟ་བུ་བཞུགས་ཀྱི་ཁོང་དུ་ཆུང་དེ། བདག་

- 
1. ལྟ་དཔེར་—ཞུགས་པ་ཡི་ཤེས་ 2. ལྟ་བུ་—མོས་པས་ 3. ལྟ་དཔེར་—ལྟ་ལ་ཉན་པ་ 4. ཇི་ལྟར་—ལྟ་དཔེར་མེད་ 5. ལྟ་ཆོ་—གོས་  
6. ལྟ་བུ་—སྟོན་པའི་ཆོ་ 7. ལྟ་དཔེར་—འཁོར་ལོ་= རྣམ་པར་མི་རྟོག་པ་(ཞེས་གསལ་བ་མི་  
ལྟ་དཔེར་མེད་ནི་) 8. ལྟ་བུ་—ཅད་འོ་བོ་(ཆད་—ཐམས་ཅད་ཀྱི་འོ་བོ་) 9. ལྟ་བུ་—བོ་ཇི་



གི་བཞིན་<sup>1</sup>གྱི་<sup>2</sup>གཟུགས་<sup>3</sup>བརྟན་མེ་ཡོང་གི་ནང་དུ་བྱུང་བ་ལ་བཏགས་ན་བདག་.....  
 གི་བཞིན་ལ་མི་སྤྲུལ་བ་ལ་སོགས་པ་མངོན་པ་བཞིན་ནོ། །གང་གི་ཆོ་དངོས་  
 བོ་འི་མཐའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་དེ་བཞིན་ཉིད་རྟོགས་<sup>4</sup>པར་གྱུར་པ་དེའི་ཆོ་དངོས་བོ་འི་  
 མཐའ་ཁོང་དུ་རྒྱུད་པས་ན་ས་དང་བོ་ལ་དངོས་བོ་འི་མཐའ་ལ་དམིགས་པ་ཞེས་....  
 བཤོ། །དེས་ན་<sup>5</sup>སྤྲུལ་གྱི་བརྟན་<sup>6</sup>ཡེན་ཟ་བ་བཞིན་དུ་བསྐྱེམ་པའི་ལམ་གྱིས་<sup>7</sup>ས་  
 ལྟག་མ་ནམས་སུ་རིམ་གྱིས་གིན་དུ་རབ་དུ་ནམ་པར་དག་པའི་སྐད་ཅིག་བྱུང་བས་  
 གནས་གྱུར་ནས། གང་གི་ཆོ་སྤྲིབ་པ་མ་ལུས་པ་སྤངས་པའི་མཚན་ཉིད་དགོས་པ་  
 ཡོངས་སུ་རྟོགས་པར་གྱུར་པ་དེའི་ཆོ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་<sup>8</sup>ས་ལ་ཡེ་ཤེས་དེ་ཉིད་དགོས་  
 པ་ཡོངས་སུ་གྱུབ་པ་ལ་དམིགས་པ་ཞེས་བཤོ། །

དེ་ལྟ་བུ་འདྲིས་ཅི་བསྟན་པ་ཡིན་ཞེ་ན། ཞི་གནས་དང་ལྟག་མཐོང་གོམས་<sup>9</sup>  
 པར་བྱས་པས་དངོས་བོ་འི་<sup>10</sup>མཐའ་རྟོཾ་པར་འགྱུར་དེ། དེས་<sup>11</sup>སྤྲིབ་པ་མཐའ་<sup>12</sup>  
 དག་སྤོང་བའི་མཚན་ཉིད་དགོས་པ་ཡོངས་སུ་གྱུབ་པ་ཐོབ་བ། །དེ་ཉིད་སངས་  
 རྒྱས་ཉིད་ཡིན་དེ། དེ་བས་ན་སངས་རྒྱས་ཉིད་ཐོབ་པར་འདོད་པས་<sup>13</sup>ཞི་གནས་

1. ལྟ་མེ་—གཞན་ 2. ལྟ་མེ་—གྱིས་ 3. ལྟ་ཆོ་—གཟུགས་མེ་(ཆད་—གཟུགས་“བརྟན་”མེ་)
4. ལྟ་ཆོ་—རྟོག་ 5. ལྟ་མེ་—ནས་ 6. ལྟ་དཔེ་ལྟར་ན་“སྤྲུལ་གྱི་བརྟན་ཡེན་ཟ་བ་”ཞེས་བཞུད་  
 དགོས་ཆོད་དུ་སྤང་ཡང་། ལྟ་དགོས་དང་ཆོ་ན་དཔེར་མར་“སྤྲུལ་བརྟན་གྱིས་ཡེན་ཟ་བ་”ཞེས་བཞུད་  
 ལྟ་ཅན་དང་། ལྟ་པར་དང་མི་གང་དཔེར་མར་“སྤྲུལ་བརྟན་གྱི་ཡེན་ཟ་བ་”ཞེས་བཞུད་ལྟ་ཅན་དུ་  
 བཞུད་འདུག་པས། ལྟགས་བརྒྱ་འབྲིན་ཟེར་བའི་བཞུད་པ་འདྲ་མེན་རྒྱལ་རྒྱ་ཡོད་ན་ལས་དེ་མེན་གོ་  
 དགའ་ཞིང་མེ་བདེ་པས་གོང་གསལ་ལྟར་ཡིན་ལྟམ་མོ། 7. ལྟ་མེ་—གྱིས་སྤྲུལ་(ཆད་—གྱིས་“ས་སྤྲུལ་མ་”)
8. ལྟ་མེ་—གྱི་ཡེ་(ཆད་—གྱི་“ས་ལ་”ཡེ་ཤེས་) 9. “གོམས་པར་བྱས་པས་”-རྒྱ་དཔེར་མར་
10. ལྟ་དཔེར་—समस्तवस्तु = དངོས་བོ་མཐའ་དག་གི་ 11. ལྟ་མེ་—དེ་
12. “མཐའ་དག་”-རྒྱ་དཔེར་མེར་ 13. ལྟ་མེ་—པ་(ཆད་—པས་)

དང་ལྷག་མཐོང་ལ་བསྐྱོམ་<sup>1</sup>པར་བྱའོ། །གང་དེ་<sup>2</sup>གཉིས་ལ་སྤྱོད་པ་དེ་དག་  
 ཉི་དངོས་པོ་འི་མཐའ་ཡང་སྤྱོད་གས།<sup>3</sup> དགོས་པ་ཡོངས་སུ་གྲུབ་པར་ཡང་  
 མི་འགྱུར་རོ་ཞེས་བཤུན་པར་འགྱུར་རོ། །དེ་ལ་མདོར་ན་ཞི་གནས་ནི་སེམས་  
 ཅེ་གཅིག་པ་ཉིད་དོ། །ལྷག་མཐོང་ནི་ཡང་དག་པ་ལ་དོག་པའོ། །ཞེས་  
 བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱིས་འཕགས་པ་དཀོན་མཆོག་སྤྱི་ལ་སོགས་པ་འཇུག་གནས་  
 དང་ལྷག་མཐོང་གི་མཚན་ཉིད་བཀའ་སྤྱུལ་དོ། །དེ་ལ་ནལ་འབྱུར་པས་ཞི་གནས་  
 དང་ལྷག་མཐོང་གི་ཚོགས་ཚུལ་ཁྲིམས་ནམ་པར་དག་པ་ལ་<sup>4</sup>སོགས་པ་ལ་གནས་...  
 པ་དེས་སེམས་ཅན་(<sup>5</sup>ཐམས་ཅད་)ལ་སྤྱིར་རྗེ་ཆེན་པོ་བསྐྱེད་དེ། བྱང་ཆུབ་དུ་  
 སེམས་(<sup>6</sup>ལེགས་པར་)བསྐྱེད་ནས་ཐོས་པ་དང་བསམ་པ་དང་སྒྲོམ་པ་ལ་སྤྱར་.....  
 པར་བྱའོ།

དེ་ལ་ནལ་འབྱུར་པས་སྒྲོམ་པའི་དུས་ན་ཐོག་མར་བྱ་བ་ཅི་ཡོད་པ་ཐམས་  
 ཅད་ཡོངས་སུ་རྗེགས་པར་བྱས་ལ། བཤང་<sup>7</sup>གཅི་བྱས་ལ་སྤྱིར་རྗེ་ཆེན་པོ་མེད་པ་  
 ཡོད་དུ་འོང་བའི་ཕྱོགས་སུ་(<sup>8</sup>གནས་ནས།) བདག་གིས་<sup>9</sup>སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་  
 བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སྤྱིར་བོ་ལ་དགོད་པར་བྱའོ་སྤྱི་ལ་ཡོངས་སུ་བསམ་ཞིང་འགྲོ་བ་...  
 མཐའ་དག་གཤོན་པའི་བསམ་པ་ཅན་གྱི་སྤྱིར་རྗེ་ཆེན་པོ་མངོན་དུ་བྱས་ལ། ཕྱིར་  
 བཅུ་ན་བཞུགས་པའི་སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཐམས་ཅད་ལ་ཡན་...

- 
1. ལྷ་དཔེར་-ཐོབ་ཀྱི་ཡེ་= བསྐྱེད་པར་བྱའོ། 2. ལྷ་པོ་-དེ་ཉིད་ལ་ 3. ལྷ་པོ་-རྟོག་  
 4. ལྷ་པོ་-ལ་གནས་(ཆད་-ལ་སོགས་པ་ལ་གནས་) 5. ལྷ་དཔེར་-སྤྱོད་པ་དེ་དག་  
 ཐམས་ཅད་ལ་ 6. ལྷ་དཔེར་-སྤྱུལ་འདོན་= ལེགས་པར་བསྐྱེད་པ་ 7. ལྷ་པོ་-བཤང་གཅི་  
 8. ལྷ་དཔེར་-འདོན་འཇུག་= ཕྱོགས་ཀྱི་གནས་ནས་ 9. ལྷ་པོ་-གི་



ལག་ལྷན་ཕྱག་བྱས་ལ། སངས་བྱམ་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་སྐྱ་<sup>1</sup>གཞུགས་  
 རི་མོ་ལ་སོགས་པ་མདུན་དུ་བཞག་གས། གཞན་དུ་ཡང་ཅང་ལྟེ་དེ་དག་ལ་ཅི་ལྟས་  
 ཀྱིས་<sup>2</sup>མཆོད་པ་དང་བཟློད་པ་བྱས་ལ། རང་གི་སྒྲིག་པ་བཤགས་ནས། འགྲོ་  
 བ་མཐའ་དག་གི་བསོད་ནམས་<sup>3</sup>ལ་རྒྱུ་ཡི་རང་བ་<sup>4</sup>བྱས་ནས། ལྷན་གྱིན་དུ་  
 འཇམ་པ་བདེ་བ་ལ་རྒྱུ་བཅུན་ནམ་པར་སྤང་མཛད་གྱི་སྦྱིལ་མོ་ཀྱང་ལྟ་བུའམ་སྦྱིལ་མོ་  
 ཀྱང་ཕྱིད་དུ་ཡང་ཅང་སྟེ། མིག་ཏུ་ཅང་མི་དཔྱེ། ཏུ་ཅང་མི་འཇུགས་<sup>5</sup>པར་སྤྲི་རྩེ་མོར་  
 གཏད་<sup>6</sup>ཅིང་། ལུས་ཏུ་ཅང་ཡང་མི་སྐྱ་<sup>7</sup>ཏུ་ཅང་ཡང་མི་དཔྱེ་བར་བྱང་བོར་བསྤངས་  
 ལ་བྱན་པ་ནང་དུ་བཞག་སྟེ་འདུག་པར་བྱའོ། །དེ་ནས་སྤྲག་པ་མཉམ་པར་བཞག་  
 ལ་མགོ་མི་མཐོ་མི་དམའ་ཞིང་ཕྱོགས་གཅིག་དུ་མི་ཡོ་བར་བཞག་སྟེ།<sup>8</sup> ལྷ་  
 དང་ལྟེ་བ་བྱང་བོར་བཞག་གོ། །སོ་དང་མཆུ་ཡང་ཐ་མལ་པར་བཞག་གོ། །སྦྱི་  
 ཡང་ཡ་<sup>9</sup>སོ་འི་བྱང་དུ་བཞར་<sup>10</sup>འོ། །དབྱུགས་ཕྱི་ནང་དུ་རྒྱ་བ་ཡང་སྐྱ་ཅན་  
 དང་། རྩམ་པ་དང་། དབྱུགས་གོད་པ་ཅན་དུ་མི་བཏང་གོ། །ཅི་ནས་ཀྱང་  
 མི་ཚོར་བར་དལ་བུ་དལ་བུས་ལྷན་གྱིས་གྲུབ་པའི་ཚལ་གྱིས་དབྱུགས་ནང་དུ་རྩབ་  
 པ་དང་ཕྱིར་འབྱུང་བར་འགྱུར་བ་དེ་ལྟར་བྱའོ། །

དེ་ལ་ནལ་འབྱོར་པས་ཐོག་མར་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་སྐྱ་གཞུགས་ཇི་  
 ལྟར་མགོང་བ་དང་རི་ལྟར་ཐོས་པ་ལ་སེམས་<sup>11</sup>གཏད་དེ་བཞག་ནས་ཞི་གནས་སྐྱབ་  
 པར་བྱ་སྟེ། དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་སྐྱ་གཞུགས་དེ་ཡང་གསེར་བཙོ་མ་བཞིན་

- 
1. 'སྐྱ་གཞུགས་'-ཀྱ་དཔེར་མདུན་ 2. ལྷ་མོ་-ཀྱི་
  3. ལྷ་མོ་-ནམས་རྒྱུ་(ཆད་-ནམས་'ལ་རྒྱུ་) 4. ལྷ་མོ་-པར་ 5. ལྷ་མོ་-འཇུག་
  6. ལྷ་མོ་-བཟློད་ཅིང་ 7. ལྷ་མོ་-དགྱ་ 8. ཀྱ་དཔེར་-ཀི་ཐའི་=ཡང་ཅི།
  9. ལྷ་མོ་-ཡས་སོ་ཇི་ 10. ལྷ་མོ་-གཞག་གོ་ 11. ལྷ་མོ་-སེམས་བཞག་ནས་

ཏུ་སེར་ལ་མཚན་དང་དཔེ་བྱ་བ་མཐོང་བོས་བརྟན་པ་འཁོར་གྱི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ནང་  
 ན་བཞུགས་ཤིང་ཐབས་སྒྲ་ཚེགས་ཀྱིས་སེམས་ཅན་གྱི་དོན་མཛད་པ་རྟུན་ཏུ་ཡིད་ལ་  
 བྱེད་པས་དེའི་ཡོན་ཏན་ལ་འདོད་པ་བསྐྱེད་ཅིང་བྱིང་པ་དང་གོད་པ་<sup>1</sup>ཞི་བར་བྱས་ལ།  
 རི་སྤྱོད་ཏུ་དེ་མཐུན་ཏུ་བཞུགས་<sup>2</sup>པ་བཞིན་ཏུ་གསལ་བར་མཐོང་བར་གྱུར་པ་དེ་སྤྱོད་  
 ཏུ་བསམ་གཏན་བྱའོ། །དེ་ནས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་སྐྱེའི་གཞུགས་བརྟན་བྱོན་  
 པ་དང་བཞུད་པ་ལ་དོག་པས་ལྷག་མཐོང་བསྐྱོམ་བར་བྱའོ། །དེ་ནས་འདི་སྐྱེ་ཏུ་  
 བསམ་བར་བྱ་སྟེ། །རི་ལྷར་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་སྐྱེའི་གཞུགས་བརྟན་འདི་  
 གང་ནས་ཀྱང་མ་གཤེགས། གར་ཡང་མི་བཞུད། བཞུགས་བཞིན་ཏུ་ཡང་  
 རོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་སྟོང་ལ། བདག་དང་བདག་གི་དང་བྲལ་བ་དེ་བཞིན་ཏུ་ཆོས་  
 ཐམས་ཅད་ཀྱང་རོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་<sup>3</sup>སྟོང་ཞིང་འོང་བ་དང་འགོ་བ་དང་བྲལ་བ་གཞུང་...  
 བརྟན་ལྟ་བུ་སྟེ། ཡོད་པ་ལ་སོགས་པའི་རོ་བོ་དང་བྲལ་བའོ་ཞེས་དབྱེད་ནས་  
 རྣམ་པར་དོག་པ་མེད་ཅིང་བཟོད་པ་མེད་པ་ངང་<sup>4</sup>གཅིག་ཏུ་གྱུར་པའི་ཡིད་ཀྱིས་.....  
 དེ་ཁོ་ན་བསྐྱོམ་ཞིང་རི་སྤྱོད་འདོད་པར་འདུག་པར་བྱའོ། །དྲིང་ངེ་འཛིན་འདི་ནི་  
 ད་ལྟར་གྱི་སངས་རྒྱས་མངོན་སྲུང་ཏུ་བཞུགས་པ་ཞེས་བྱ་བའི་དྲིང་ངེ་འཛིན་ལས་...  
 བརྟན་ཏེ། དྲིང་ངེ་འཛིན་འདིའི་པན་ཡོན་ཞིབ་ཏུ་ནི་མདོ་སྡེ་དེ་ཉིད་ལས་རིགས་  
 བར་བྱའོ། །

རྣམ་པ་གཅིག་ཏུ་<sup>6</sup>ན་རྣམ་པ་རི་སྤྱོད་ཀྱིས་ཆོས་ཐམས་ཅད་བརྟུམ་པར་གྱུར་

1. ཏུ་དཔེར་—མྱེད་ལ་འཁོར་ = གོད་པ་སོགས་ 2. ཏུ་པེ་—བཞུགས་བཞིན་(ཆད་—

བཞུགས་པ་པ་བཞིན་) 3. ཏུ་པེ་—ཀྱི་ 4. ཏུ་པེ་—དང་གཅིག་

5. 'དྲིང་ངེ་འཛིན་—ཏུ་དཔེར་མེད་ 6. ཏུ་པེ་—ཏུ་རྣམ་པ་(ཆད་—ཏུ་ན་རྣམ་པ་)



པ་དེ་ལ་སྐྱེས་པ་བཞག་མེད་ཀྱིང་བ་དང་གོད་པ་ལ་སོད་པ་རབ་དུ་ཞི་བར་ཞི་གནས་  
 བསྐྱེད་པར་བྱའོ། །མདོར་ན་ཆོས་ཐམས་ཅད་ནི་གཞུགས་ཅན་དང་གཞུགས་ཅན་  
 མ་ཡིན་པའི་བྱེ་བྲག་གིས་བསྐྱེས་ཏེ། དེ་ལ་གཞུགས་ཅན་ནམས་ནི་གཞུགས་ཀྱི་  
 སྤང་བོར་འདུས་སོ། །ཆོར་བ་ལ་སོགས་པའི་སྤང་བོ་ནི་གཞུགས་ཅན་མ་ཡིན་  
 པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དོ། །འདི་ལ་བྱིས་པ་དག་ཡིད་པ་ལ་སོགས་པར་འཛིན་པ་ལ་  
 ཞེན་པའི་ཕྱིར་ཆོ་ཕྱིན་ཅི་ཡོག་དུ་གྱུར་ནས་འཁོར་བ་ན་ཡོངས་སུ་འཇུགས་ཏེ།  
 དེ་དག་གི་ཕྱིན་ཅི་ཡོག་བསལ་བའི་ཕྱིར་དེ་དག་ལ་སྤྱིང་ཆེ་ཆེན་བོ་མངོན་དུ་བྱས་ལ།  
 རྣལ་འབྱོར་པའི་ཞི་གནས་གྲུབ་ནས་དེ་ཁོ་ན་དོགས་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར། དེ་ནས་  
 ལྷག་མཐོང་བསྐྱེད་པར་བྱ་མེད། ཡང་དག་པར་སོ་སོར་དོག་པ་ནི་ལྷག་མཐོང་  
 ཞེས་བྱའོ། །ཡང་དག་པ་ནི་གང་ཟག་དང་། ཆོས་ལ་བདག་མེད་པའོ། །

དེ་ལ་གང་ཟག་ལ་བདག་མེད་པ་ནི་གང་སྤང་བོ་ནམས་བདག་པའི་བདག་  
 གི་མེད་པ་ཉིད་དོ། །ཆོས་ལ་བདག་མེད་པ་ནི་གང་དེ་དག་ལྷུ་མ་ལྷ་བྱ་ཉིད་དོ། །  
 དེ་ལ་ནམ་འབྱོར་བས་འདི་ལྟར་བདག་པར་བྱ་མེད། གང་ཟག་ནི་གཞུགས་ལ་  
 སོགས་པ་ལས་གྲུད་ན་མེད་དེ།<sup>1</sup> དེ་མི་རྣམས་པའི་ཕྱིར་དང་། གཞུགས་ལ་  
 སོགས་པ་ཉིད་ལ་ངའོ་སྐྱེས་པའི་ཤེས་པ་འབྱུང་བའི་ཕྱིར་རོ། །གང་ཟག་<sup>2</sup>ནི་  
 གཞུགས་ལ་སོགས་པའི་སྤང་བོ་འི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱང་མ་ཡིན་ཏེ། གཞུགས་ལ་  
 སོགས་པ་དེ་དག་མི་དོག་ལ་དུ་མའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་དང་། །གང་ཟག་

1. ལྷ་མེ་—ཏྲ་ 2. ལྷ་མེ་—སོགས་སྤང་(ཆོད་—སོགས་པའི་སྤང་བོ་) 3. ལྷ་མེ་—བདག་གི་(ཆོད་—  
 བདག་པའི་བདག་གི་མེད་) 4. ལྷ་མེ་—དག་ཉིད་ལྷུ་ 5. ལྷ་མེ་—དེ་ 6. ལྷ་མེ་—དེ་ནི་རྣམས་  
 (འདི་ནི་ཐུང་བྱེད་ལང་“རྣམས་པའི་ཕྱིར་རོ།” །ཞེས་འདྲ་བས་དགག་ཆོག་ཆད་པར་མངོན་གོ།)

7. ལྷ་མེ་—ཟག་དེ་ནི་





སེམས་ཅམ་ནམ་པར་གཞག་པ་ནི།

ལྷ་བ་ངན་པས་མི་རྟོགས་སོ། ། །ཞེས་འབྱུང་ངོ་། ། །དེ་  
 འདི་སྒྱུ་མ་དུ་སེམས་དེ། །སེམས་ཉིད་ཐོག་མ་མེད་པའི་དུས་ན་<sup>1</sup>གཞུགས་ལ་  
 སོགས་པ་ཡང་དག་པ་མ་ཡིན་པ་ལ་མངོན་པར་ཞེན་པའི་དངང་གས་<sup>2</sup>མི་ལ་མ་ན་  
 དམིགས་པའི་གཞུགས་ལ་སོགས་པ་སྒྲུང་བ་བཞིན་དུ་བྱིས་པ་ནམས་ལ་གཞུགས་...  
 ལ་སོགས་<sup>3</sup>པ་ཕྱི་རེལ་དུ་<sup>4</sup>ཆད་པ་བཞིན་དུ་སྒྲུང་སྟེ། །དེ་ལྷ་བས་ན་ཁམས་གསུམ་  
 བོ་ནི་སེམས་ཅམ་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ། ། །དེས་དེ་ལྷ་ར་ཆོས་སུ་གདགས་པ་མཐའ་དག་  
 ནི་སེམས་ཁོ་ན་ཡིན་པར་རྟོགས་ནས། །དེ་ལ་སོ་སོར་བདགས་ན་ཆོས་ཐམས་  
 ཅད་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་ལ་སོ་སོར་བདགས་པ་ཡིན་ནོ་སྒྱུ་མ་ནམ་སེམས་ཀྱི་ངོ་བོ་.....  
 ཉིད་ལ་སོ་སོར་རྟོག་གོ། །དེ་འདི་ལྷ་ར་དབྱེད་དོ་<sup>5</sup> །དོན་དམ་པར་ན་སེམས་  
 ཀྱང་སྒྱུ་མ་བཞིན་དུ་མ་སྟེས་པ་སྟེ། །གང་གི་ཆོ་རུན་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་གཞུགས་ལ་  
 སོགས་པའི་ནམ་པ་འཛིན་པར་སེམས་ཉིད་སྒྲུ་ཆོགས་ཀྱི་ནམ་པར་སྒྲུང་བ་དེའི་ཆོ་...  
 དེ་ལས་གུད་ན་མེད་པའི་ཕྱིར་དེ་ཉིད་ཀྱང་གཞུགས་ལ་སོགས་པ་བཞིན་དུ་(<sup>6</sup>བདེན་  
 པ་)ཉིད་དུ་ག་ལ་འགྱུར། །ཇི་ལྷ་ར་གཞུགས་ལ་སོགས་པ་སྒྲུ་ཆོགས་ཀྱི་ནམ་པ་  
 ཡིན་པས་གཅིག་དང་དུ་མའི་ངོ་བོ་ཉིད་མ་ཡིན་པ་དེ་བཞིན་དུ་སེམས་ཀྱང་དེ་.....  
 ལས་གུད་ན་མེད་པའི་ཕྱིར་གཅིག་དང་དུ་མའི་ངོ་བོ་ཉིད་མ་ཡིན་ནོ། །སེམས་  
 སྟེ་བའི་ཆོ་<sup>7</sup>གང་ནས་ཀྱང་མི་འོང། །འགག་པའི་ཆོ་<sup>8</sup>གང་དུ་ཡང་མི་འགྱོ་

1. ལྷ་བེ་-ནམ་ 2. ལྷ་བེ་-ག་ 3. ལྷ་བེ་-སོགས་སྟེ་(ཆད་-སོགས་པ་ཕྱི་)

4. ལྷ་-དུ་ 5. ལྷ་བེ་-དེ་ 6. བོ་དེ་དམེ་བཞི་ཀར་བདེ་བ་ཉིད་དུ་' ཞེས་

གསལ་ཡང་། ལྷ་དམེར་-མཁའ་པ་མེད་པའི་ཉིད་དུ་' ཞེས་གསལ་བ་འཕྱར་པར་སྒྲུང་ངོ་།

7. ལྷ་ཆོ་-ཆོ་ཡང་ 8. ལྷ་ཆོ་-ཆོ་ཡང་

མེ། རོན་དམ་པར་ན་བདག་དང་གཞན་དང་གཉིས་ཀྱི་ལས་སྤེལ་བར་མི་རིགས་སོ།  
 དེ་ལྟ་བུས་ན་སེམས་ཀྱང་སྒྱུ་མ་བཞིན་དེ།      སེམས་ཇི་ལྟ་བུ་དེ་བཞིན་དུ་ཆོས་  
 བཅས་ཀྱང་སྒྱུ་མ་ལྟ་བུ་མེ། རོན་དམ་པར་ན་མ་སྤྲོས་པའོ་སྒྱུ་མ་དུ་བདག་པར་བྱའོ།  
 ནྟེ་འབྱོར་བ་དེས་<sup>1</sup>སེམས་གང་གིས་<sup>2</sup>སོ་སོར་རྟོག་པ་ལ་བདག་པ་དེའི་  
 རོ་བོ་ཉིད་ཀྱང་མི་དམིགས་དེ།      དེ་ལྟར་ནྟེ་འབྱོར་བས་དམིགས་པ་གང་དང་  
 གང་ལ་སེམས་འབྲོ་བ་དེ་དང་དེ་དེའི་རོ་བོ་ཉིད་ལ་ཡོངས་སུ་བདག་པ་<sup>3</sup>ན་དེའི་<sup>4</sup>  
 རོ་བོ་ཉིད་ཀྱང་མི་དམིགས་དེ།      དེ་<sup>5</sup>གང་གི་ཆོ་<sup>6</sup>མི་དམིགས་པ་དེའི་ཆོ་དངོས་  
 བོ་ཐམས་ཅད་བདག་པ་ཤིང་ཆུ་ཤིང་གི་སྟོང་བོ་<sup>7</sup>བཞིན་དུ་སྤྱིང་བོ་མེད་པར་རྟོགས་  
 ནས་<sup>8</sup>དེ་ལས་<sup>9</sup>སེམས་རྒྱུག་པར་བྱེད་དོ།      །ད་ནས་ཡོད་པ་ལ་སོགས་པར་<sup>10</sup>ནྟེ་  
 བར་རྟོག་པ་མེད་པར་བྱུང་ནས་སྒྲོས་པ་ཐམས་ཅད་དང་བུལ་བ་མཚན་མ་མེད་པའི་  
 ནྟེ་འབྱོར་བོ་བོ།      །དེ་སྐད་འཕགས་པ་དཀོན་མཆོག་སྤྱིན་ལས་<sup>11</sup>ཀྱང་བཀའ་  
 ལྟེ་དེ། “དེ་ལྟར་སྤྱོད་ལ་མཁས་པ་དེས་སྒྲོས་པ་ཐམས་ཅད་དང་བུལ་བའི་ཕྱིར་  
 སྟོང་བ་ཉིད་བསྒྲོམ་པ་ལ་ནྟེ་འབྱོར་དུ་བྱེད་དོ།      །དེ་ལྟར་སྟོང་བ་ཉིད་བསྒྲོམ་པ་  
 མང་བས་གནས་གང་དང་གང་དུ་སེམས་འབྲོ་ཞིང་སེམས་མངོན་པར་དགའ་བའི་  
 གནས་དེ་དག་གི་རོ་བོ་ཉིད་ཡོངས་སུ་བཅའ་ན་སྟོང་བར་རྟོགས་སོ། །སེམས་<sup>12</sup>  
 གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་བདག་པ་ན་སྟོང་བར་རྟོགས་སོ། །སེམས་གང་གིས་རྟོག་པ་དེ་<sup>13</sup>

1. ལྟ་བུ་དེ་ 2. ལྟ་བུ་ལྟ་ 3. ལྟ་བུ་བདག་པ་

4. ‘དེའི་རོ་བོ་ཉིད་ཀྱང་མི་དམིགས་དེ་’ཞེས་པ་ཆུ་དཔེར་མེད་ 5. ལྟ་བུ་དེས་ 6. ལྟ་བུ་ཆོ་དམིགས་  
 (ཆད་ཆོ་མི་དམིགས་) 7. ལྟ་བུ་བོ་ 8. ལྟ་བུ་ན་ 9. ལྟ་བུ་ལ་ 10. ལྟ་བུ་ལ་  
 (ཆད་ལར་) 11. ལྟ་བུ་བཀའ་(མདོ་ལྟ་ཆེན་) 12. ‘སེམས་གང་ཡོན་པ་དེ་ཡང་བདག་པ་ན་  
 སྟོང་བར་རྟོགས་སོ། །ཞེས་པ་ཆུ་དཔེར་མེད་ལྟར་ཆད་པར་མངོན་དོ། 13. ལྟ་བུ་དེའི་



ཡང་ངོ་པོ་ཉིད་ཀྱི་ལུ་བཅའ་ན་ཕྱོད་པར་རྟོགས་དེ། དེ་དེ་ལྟར་རྟོགས་<sup>1</sup>པས་  
མཚན་མ་མེད་པའི་ནལ་འབྱུང་ལ་འཇུག་གོ” །ཞེས་འབྱུང་ངོ་། །འདི་ནི་  
འདི་སྐད་དུ་གང་ཉིད་པར་མི་རྟོག་པ་དེ་ནི་མཚན་མ་མེད་པ་ལ་འཇུག་པར་མི་འབྱུང་  
ཞེས་བསྟན་པ་ཡིན་ནོ། །

དེ་ལྟར་ཆོས་རྣམས་ཀྱི་ངོ་པོ་ཉིད་ལ་ཉིད་པར་རྟོག་<sup>2</sup>པ་ན་གང་གི་ཆོས་མི་དཔྱད་  
པ་དེའི་ཆོ་ཡོད་པར་མི་རྟོག་གོ། །མེད་པར་ཡང་མི་རྟོག་སྟེ་གང་མེད་པར་བརྟགས་  
པ་དེ་ཡང་དེའི་སྟོང་ལ་རྣམས་ཐམས་ཅད་དུ་མི་སྤང་བའི་ཕྱིར་རོ། །གལ་ཏེ་དངོས་པོ་  
ཞིག་མཐོང་བར་གྱུར་ན་ནི་དེའི་ཆོ་<sup>3</sup>དེ་འགགས་པའི་ཕྱིར་མེད་དོ་ཞེས་བརྟག་པར་  
བྱ་ན། །གང་གི་ཆོ་ནལ་འབྱུང་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་བརྟགས་ན་རྣམས་གསུམ་དུ་<sup>4</sup>  
ཡང་དངོས་པོ་མི་དཔྱད་པ་པའི་<sup>5</sup>ཆོ་གང་འགགས་པའི་ཕྱིར་མེད་ཅེས་རྣམས་……  
པར་བརྟག་པར་བྱ། །དངོས་པོ་དང་དངོས་པོ་མེད་པར་རྟོག་པ་གཉིས་ཀྱིས་<sup>6</sup>རྟོག་  
པ་ཐམས་ཅད་ལ་ཁུབ་པའི་ཕྱིར་དེའི་ཆོ་དེ་ལྟར་དེ་ལ་རྟོག་པ་གཞན་དག་ཀྱང་མི་……  
འབྱུང་སྟེ། །ཁུབ་པར་བྱེད་པ་<sup>7</sup>མེད་ན་ཁུབ་པར་བྱ་བ་ཡང་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །  
དེ་ལྟར་གྱུར་ན་སྟོས་པ་མེད་པ་རྣམས་པར་མི་རྟོག་པ་ཉིད་ལ་ཞུགས་པ་ཡིན་ནོ། །  
གཞུགས་ལ་སོགས་པ་ལ་ཡང་མི་གནས་པ་ཡིན་ནོ། །ཤེས་རབ་ཀྱིས་<sup>8</sup>དརྟགས་  
ན་དངོས་པོ་མཐའ་དག་གི་ངོ་པོ་ཉིད་མ་དཔྱད་པའི་ཕྱིར་ཤེས་རབ་མཚོག་གི་……  
བསམ་གཏན་<sup>9</sup>པ་ཡང་ཡིན་ནོ། །དེ་དེ་ལྟར་གང་ཟག་དང་ཆོས་ལ་བདག་མེད་

- 
1. ལྟ་དཔྱད་—ཕུགས་ཀྱི་ལྟ་པ་ 2. ལྟ་པ་—རྟོགས་
  3. ལྟ་པ་—ཆོ་འགག་ 4. ལྟ་པ་—དུ་དངོས་(ཆད་དུ་ཡང་དངོས་པོ་)
  5. ལྟ་པ་—དེའི་གང་(ཆད་དེའི་ཆོ་གང་) 6. ལྟ་པ་—ཀྱི་ 7. ལྟ་པ་—པ་ན་  
(ཆད་དེའི་པ་མེད་པ་ན་) 8. ལྟ་པ་—ཀྱི་ 9. ལྟ་པ་—གཏན་ལ་

པའི་དེ་ཁོ་ན་ལ་ཞུགས་པས་བལྟ་<sup>1</sup>བར་བྱ་བ་དང་། བརྟག་པར་བྱ་བ་གཞན་མེད་  
 པའི་ཕྱིར་དབྱེད་བ་མེད་ཅིང་བཞེད་<sup>2</sup>པ་མེད་པར་<sup>3</sup>ངང་གཅིག་དུ་གྱུར་པའི་ཡིད་.....  
 རང་གི་ངང་གིས་འཇུག་པས་མངོན་པར་འདུ་བྱེད་བ་མེད་པའི་ཕྱིར་ནྟལ་འབྱོར་.....  
 པས་དེ་ཁོ་ན་དེ་ཤིན་དུ་གསལ་བར་ངེས་པར་གཟུང་ཞིང་འདུག་པར་བྱའོ། །  
 དེར་<sup>4</sup>གནས་ཀྱང་སེམས་ཀྱི་རྒྱུད་ནས་པར་མི་<sup>5</sup>གཡེང་བར་བྱའོ། །

གང་གི་ཆོ་བར་སྐབས་སུ་སེམས་ཕྱི་རོལ་དུ་<sup>6</sup>ནམ་པར་གཡེངས་པར་.....  
 མཐོང་བ་དེའི་ཆོ་དེའི་ངོ་བོ་ཉིད་ལ་བརྟགས་ནས་ནམ་པར་གཡེངས་<sup>7</sup>བ་ཞི་ངར་.....  
 བྱས་ལ་ཡང་དེ་ཉིད་དུ་སེམས་བཞག་པར་བྱའོ། །གང་གི་ཆོ་དེ་ལ་སེམས་མངོན་  
 པར་མི་དགའ་བར་མཐོང་བ་དེའི་ཆོ་དོང་ངེ་འཛིན་གྱི་ཡོན་ཏན་མང་ངའི་ཕྱིར་དེ་.....  
 ལ་དགའ་བ་བསྐྱེས་པར་བྱའོ། །ནམ་པར་གཡེང་བ་ལ་ཉེས་པར་མཐོང་བའི་ཕྱིར་  
 མི་དགའ་བ་རབ་དུ་ཞི་བར་བྱའོ། །ཅི་ལྟ་སྒྲགས་པ་དང་གཉིད་ཀྱིས་ནོན་པས་  
 རྒྱ་བ་མི་<sup>8</sup>གསལ་བའི་ཕྱིར་སེམས་བྱིང་བའམ་བྱིང་དུ་དྲིགས་པར་གྱུར་བ་དེའི་ཆོ་  
 མཆོག་དུ་དགའ་བའི་དངོས་པོ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་གཟུགས་ལ་སོགས་བའམ། རྣང་  
 བའི་འདུ་ཤེས་ཡིད་ལ་བྱས་ནས་བྱིང་བ་ཞི་བར་བྱས་<sup>9</sup>ནས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཤིན་དུ་.....  
 བརྟན་<sup>10</sup>པར་གཟུང་བར་བྱའོ། །གང་གི་ཆོ་ནྟལ་འབྱོར་བ་དམུས་ཡོང་<sup>11</sup>དང་འདྲ་  
 བའམ། ལྷན་པར་ཞུགས་པའི་མི་དང་འདྲ་བའམ། མིག་བཙུམས་པ་དང་འདྲ་བ་དེ་

1. 'བལྟ་བར་བྱ་བ་དང་'-ཐུ་དཔེར་མེད་ 2. ཐུ་དཔེར་-निर्विकल्पकस्मृत = རྟོག་བ་མེད་པར་  
 རང་གཅིག་ 3. ལྟ་བེ་-བཞེད་པར་ངང་(ཆད་-བཞེད་པ་མེད་པར་'ངང་)

4. ལྟ་བེ་-དེ་ལྟར་ 5. ལྟ་བེ་-སོགས་ 6. ལྟ་བེ་-དུ་ 7. ལྟ་བེ་-གཡེང་

8. 'མེགསལ་'-ཐུ་དཔེར་མེད་ 9. ལྟ་བེ་-བྱས་པ་ 10. ལྟ་བེ་-བརྟན་ 11. ལྟ་བེ་-ཁོང་འདྲ་



ཁོ་ན་ཉིད་ཤིན་དུ་གསལ་བར་མི་འཇིན་པ་དེའི་ཆེ་(1)སེམས་)བྱིང་བ་དང་ལྷག་མཐོང་  
མེད་པར་རིག་པར་བྱའོ། །ཆེ་2ལྟེ་གང་གི་ཆེ་སྟོན་བྱིང་བའི་ཡུལ་ལ་འདོད་པས་  
བར་སྐབས་སུ་སེམས་ཤོད་པའམ། ཤོད་དུ་རྟོགས་པར་མཐོང་བ་དེའི་ཆེ་མི་དྲག་པ་  
ལ་སོགས་པས་སྒྲིབ་པའི་དངོས་པོ་ཡིད་ལ་བྱས་ལ་ཤོད་པ་ཞི་བར་བྱའོ། །དེ་ནས་  
ཡང་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ལ་སེམས་མངོན་པར་འདུ་བྱེད་པ་མེད་པར་འཇུག་པ་ལ་འབད་  
བར་བྱའོ། །གང་གི་ཆེ་ནས་བར་གཡང་བའི་མི་3ལྟ་བུའམ། སྒྲུབ་བཞིན་དུ་  
སེམས་མི་གནས་པར་བྱུང་བ་ན་ཤོད་4པ་དང་ཞི་གནས་མེད་པ་ཡིན་པར་རིག་པ་  
བར་བྱའོ། །ཆེ་ལྟེ་གང་གི་ཆེ་བྱིང་བ་དང་ཤོད་པ་ལས་དབེན་པའི་བྱིར་མཉམ་  
བར་བྱུགས་ཤིང་རང་གི་ངང་གིས་འཇུག་པས་དེ་6ཁོ་ན་7ཉིད་ལ་སེམས་ཤིན་དུ་  
གསལ་བར་བྱུང་བ་དེའི་ཆེ་ཚོལ་བ་སྒྲོད་པས་བདང་སྒྲོམས་སུ་བྱས་8ཏེ། དེའི་  
ཆེ་ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་ཟུང་དུ་འབྲེལ་བའི་ལམ་གྲུབ་པ་ཡིན་པར་རིག་པ་  
བྱའོ།

ཡང་9གང་གི་ཆེ་ལྷག་མཐོང་བསྐྱོམས་10པས་ཤེས་རབ་ཤིན་དུ་ཤིས་ཆེ་  
བར་བྱུང་བ་དེའི་ཆེ་ཞི་གནས་ཟུང་11པའ་ཕྱར་མར་མི་རྒྱུད་ལ་བཞག་པ་བཞིན་དུ་  
སེམས་གཡོ་བས་དེ་ཁོ་ན་ཤིན་དུ་གསལ་བར་མི་མཐོང་བར་འབྱུང་ཏེ། དཔེ་ཕྱར་

- 
1. ལྟ་དཔེར་ཡོད་ 2. ལྟ་མི་—ཅི་ལྟེ་ 3. ལྟ་མི་—མི་ 4. འདོད་ཤོད་པ་དང་ཞི་གནས་  
གཉིས་ཀ་མེད་པའི་དོན་མ་ཡིན་གྱི། རྣམ་གཡང་ས་ཀྱི་དབང་གིས་སེམས་ཤོད་པ་དེའི་ཆེ་ཞི་གནས་  
མེད་ཅེས་བའི་དོན་ནོ། །ཚུལ་འད་གོང་སྟོན་ལྷག་མཐོང་ལ་ཡང་སྒྲུབ་པར་བྱའོ།
  5. ལྟ་མི་—བར་ཅི་(ཆད་—བར་བྱའོ། ཅི་ལྟེ་) 6. ལྟ་མི་—དེ་ཉིད་(ཆད་—དེ་ཁོ་ན་ཉིད་)
  7. ལྟ་དཔེར་—ཐའི་བཅའ་ཐའལེ = དེ་ཁོ་ན་དེ་ཉིད་ལ་ 8. ལྟ་མི་—ལྟེ་ 9. ལྟ་མི་—དེ་ཡང་
  10. ལྟ་མི་—བསྐྱོམ་ 11. ལྟེ་ཆེ་—གཞི་གནས་མཚུངས་

དེའི་ཆོ་ཞི་གནས་བསྐྱེས་པར་བྱའོ། །ཞི་གནས་ཀྱི་ཤས་ཆེན་ཡང་གཉིད་ཀྱིས་ལོག་  
 བའི་མི་བཞིན་དུ་<sup>1</sup>དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཤིན་དུ་གསལ་བར་མཐོང་བར་མི་འགྱུར་དེ། དེ་  
 ལྟ་བུས་ན་དེའི་ཆོ་ཡང་<sup>2</sup>ཤེས་རབ་བསྐྱེས་པར་བྱའོ། །གང་གི་ཆོ་སྤངས་གཉིས་རྒྱུ་  
 ཏུ་འབྲེལ་དེ་མཉམ་དུ་བྱུགས་པ་བཞིན་དུ་གཉིས་ཀ་མཉམ་དུ་བྱུགས་པར་གྱུར་བ་  
 དེའི་ཆོ་རྒྱུ་ཏུ་ལྷན་དང་སེམས་ལ་གནོད་པར་མ་གྱུར་པ་དེ་སྤྲོད་དུ་མངོན་པར་  
 འདུ་བྱ་བ་མེད་པར་གནས་པར་བྱའོ། །

མདོར་ན་དྲིང་ངེ་འཛིན་ཐམས་ཅད་ལ་ཉིས་པ་དུག་ཡོད་དེ། ལེ་ལ་དང་།  
 དམིགས་པ་བཟེད་པ་དང་། སྤྱིང་བ་དང་། མྱོད་པ་དང་། མི་ཚོལ་བ་དང་།  
 ཚོལ་བའོ། དེ་དག་གི་གཉེན་པོར་སྤྱོད་བའི་འདུ་བྱེད་བཟུང་བསྐྱེས་པར་བྱ་སྟེ།  
 འདི་<sup>3</sup>ལྟ་སྟེ། དད་པ་དང་། འདུན་<sup>4</sup>པ་དང་། ཚོལ་བ་དང་། ཤིན་དུ་སྤྱངས་པ་  
 དང་། དྲན་པ་དང་། ཤེས་བཞིན་དང་། སེམས་པ་དང་། བདང་སྟོམས་སོ། །  
 དེ་ལ་དང་བོ་བཞི་ནི་ལེ་ལོ་འོ་གཉེན་པོ་སྟེ། འདི་ལྟར་དྲིང་ངེ་འཛིན་གྱི་ཡོན་ཏན་  
 རྣམས་ལ་མངོན་པར་ཡོད་ཆེས་བའི་མཚན་ཉིད་ཀྱིས་དད་པས་ནལ་འབྱོར་བ་<sup>5</sup>འདོད་  
 བ་སྟེ་བར་འགྱུར་རོ། །དེ་ནས་འདོད་པར་གྱུར་པས་བཙོན་འགྲུས་ཚུལ་མོ། །  
 དེ་ནས་བཙོན་འགྲུས་ལ་བདེན་པས་ལྷན་དང་སེམས་ལས་སྤངས་པ་ཉིད་དུ་བྱེད་དེ།  
 དེ་ནས་ལྷན་དང་སེམས་ཤིན་དུ་སྤྱངས་པས་ལེ་ལོ་སྟོག་<sup>6</sup>པར་འགྱུར་རོ། །དེ་  
 བས་<sup>7</sup>ན་དད་པ་ལ་སོགས་པས་ལེ་<sup>8</sup>ལོ་སྤྱོད་པར་འགྱུར་དེ། དེའི་སྤྲོད་དེ་དག་

1. ལྟ་བུ་-དུ་ཤིན་(ཆད་-དུ་'དེ་ཁོ་ན་'ཤིན་དུ་) 2. 'ཡང་'-ཀྱི་དཔེར་མེད་

3. 'འདི་ལྟ་སྟེ་'-ཀྱི་དཔེར་མེད། 4. ལྟ་བུ་-མཐུན་པ་ 5. ལྟ་བུ་-བ་

6. ལྟ་བུ་-སྟོག་ 7. ལྟ་བུ་-བས་དད་(ཆད་-བས་'ན་'དད་) 8. 'ལེ་ལོ་སྤྱོད་པར་འགྱུར་དེ་'

ཞེས་པ་ཀྱི་དཔེར་མེད་



བསྐྱེད་པར་བྱའོ། །དེ་ལ་ནི་དམིགས་པ་བརྒྱུད་པའི་གཉིན་པོ་འོ། །ཤེས་བཞིན་  
ནི་བྱང་བ་དང་ཚོད་བ་གཉིས་<sup>1</sup> གཉིན་པོ་སྟེ། དེས་དེ་གཉིས་རྟོགས་ནས་སྤྱོད་  
བའི་སྤྱིར་རོ། །བྱང་བ་དང་ཚོད་བ་<sup>2</sup>མ་ཞི་བའི་དུས་ན་མི་རྩལ་བ་ཉེས་པ་སྟེ།<sup>3</sup>  
དེའི་སྤྱིར་དེའི་གཉིན་པོར་སེམས་པ་བསྐྱེད་པར་བྱའོ། །གང་གི་ཆོ་བྱང་བ་དང་།  
ཚོད་པར་བ་དུ་ཞི་སྟེ་སེམས་ནས་དུ་འཇུག་པ་དེའི་ཆོ་རྩལ་བ་ཉེས་པ་སྟེ། དེའི་  
ཆོ་དེའི་གཉིན་པོར་བདང་སྟོམས་བསྐྱེད་པར་བྱའོ། །སེམས་མཉམ་པར་བྱགས་  
པའི་ཆོ་གཤམ་དེ་རྩལ་བ་བྱས་ན་དེའི་ཆོ་སེམས་ནས་བར་གཡང་བར་འགྱུར་རོ། །  
སེམས་བྱང་བར་གྱུར་པ་ལ་གཤམ་དེ་རྩལ་བ་མ་བྱས་ན་དེའི་ཆོ་རྟོག་ར་ཐོང་མེད་པའི་  
སྤྱིར་མི་ཡོང་བ་བཞིན་དུ་སེམས་བྱང་བར་འགྱུར་རོ། །དེ་ལྟ་བུས་ན་སེམས་བྱས་  
པ་བསལ་ཞིང་ཚོད་བ་ཞི་བར་བྱས་ལ་<sup>4</sup>མཉམ་པར་གྱུར་པས་བདང་སྟོམས་སྤྱོད་བྱའོ།

དེ་ནས་ནས་འབྱོར་བ་ཇི་སྟེན་དུ་རག་པ་དེ་སྟེན་དུ་མངོན་པར་འདུ་བྱེད་པ་  
མེད་པ་ཁོ་ནར་དེ་ཁོ་ན་བསྐྱེད་ཞིང་འདུག་པར་བྱའོ། །ལུས་<sup>5</sup>དང་སེམས་ལ་གཞིན་  
པར་གྱུར་ན་སྐབས་སྐབས་སྤྱི་འཇིག་རྟེན་མཐའ་དག་ལ་རྟུན་ལ་རྒྱུ་མ་དང་།  
མི་<sup>6</sup>ལམ་དང་། རྩ་རྒྱ་ལྟ་བུ་དང་། མིག་ཡོར་ལྟ་བུར་རྟོགས་པར་བྱའོ། དེ་  
སྟེན་དུ་ནམ་བར་མི་རྟོག་པར་འཇུག་པ་ལས་ཀྱང་བཀའ་སྤྱལ་<sup>7</sup>དེ། “འཇིག་རྟེན་  
ལས་འདས་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱིས་ཆོས་ཐམས་ཅད་ནམ་མཁའི་ར་གྱིལ་དང་འདྲ་བར་...

1. ལྟ་བུ་གཉིས་རྟོགས་(ཆད་གཉིས་ཀྱི་གཉིན་པོ་སྟེ། དེས་དེ་གཉིས་རྟོགས་)
2. ལྟ་བུ་བ་ཞི་(ཆད་སྟོན་ཚོད་བ་མ་ཞི་བའི་) 3. ལྟ་བུ་-དེ 4. ལྟ་བུ་-པར་ཐོབ་པེ།  
ཤུག་= ཞི་བར་བྱས་པ་ཡང་ 5. ལྟ་བུ་-ཀའ་ཡའི་= ལུས་ལ་སྟོགས་པ་
6. ‘མི་ལམ་དང་’-ལྟ་བུ་པེ་མེད་ 7. ལྟ་བུ་-བཀའ་(ཆད་-མཐོ་བ་) 3 ལྟ་བུ་འཇིན་པེ་མཐོ་མི་  
ཆོག་ལྟ་བུ་ནས་བཞོད་པ་ཞིག་གོ།

མཉམ་པར་མཐོང་ངོ། །དེ་རི་རིམ་ལ་ཐོབ་པ་ནི་སྐྱུ་མ་དང་། སྐྱུ་མ་གྱུ་དང་།  
 (1མེ་ལམ་དང་།) རྩ་ཆེ་བཞིན་དུ་མཐོང་ངོ། ། ཞེས་འབྱུང་ངོ། །དེ་ལྟར་འགྲོ་བ་  
 སྐྱུ་མ་ལྟ་བུར་རྟོགས་ནས་<sup>2</sup>སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་སྤྱིར་རྩེ་ཆེན་བོ་མངོན་དུ་བྱས་<sup>3</sup>  
 ལ་འདི་སྐྱུ་མ་དུ་བསམ་པར་བྱ་སྟེ། བྱིས་པའི་སྐོ་ཅན་དེ་དག་གིས་ཆོས་ཟབ་མོ་  
 འདི་ལྟ་བུར་རྟོགས་ནས་གཞོན་མ་ནས་ཞི་བའི་ཆོས་ནམས་ལ་ཡང་ཡོད་པ་ལ་.....  
 སོགས་པར་སྒྲོ་བདགས་དེ། ཕྱིན་ཅི་ཡོག་དུ་གྱུར་ནས་ལས་དང་རྩོན་མོངས་པ་  
 ནས་པ་སྒྲ་ཆོགས་བསྐྱེགས་<sup>4</sup>དེ། དེའི་ཕྱིར་འཁོར་བར་ཡོངས་སུ་འཇུགས་པས་  
 ན་བདག་གིས་ཅི་ནས་ཀྱང་། འདི་དག་ཆོས་ཟབ་མོ་འདི་ལྟ་བུར་ཁོང་དུ་ཆུད་པར་  
 བྱའོ་སྐྱུ་མ་དུ་བསམ་པར་བྱའོ། །དེ་ནས་ངལ་བསོས་<sup>5</sup>དེ། ཡང་དེ་བཞིན་དུ་  
 ཆོས་ཐམས་ཅད་མེས་པའི་དྲིང་ངེ་འཛིན་ལ་འཇུག་པར་བྱའོ། །ཡང་<sup>6</sup>སེམས་  
 རྩོ་བར་གྱུར་ན་ཡང་ངལ་བསོས་<sup>7</sup>དེ་དེ་བཞིན་དུ་འཇུག་པར་བྱའོ། །དེ་ལྟ་བུའི་  
 རམ་པ་འདྲིས་ཆུ་ཆོད་གཅིག་གས། མེལ་<sup>8</sup>ཆོ་བྱན་བྱེད་དམ། བྱན་གཅིག་གས་  
 རི་སྒྲིང་རྒྱས་པ་དེ་སྒྲིང་དུ་འདུག་པར་བྱའོ། །

དེ་ནས་དྲིང་ངེ་འཛིན་ལས་ཐུང་བར་འདོད་ན་སྐྱུ་ལ་མོ་གྱུང་མ་བཞིག་པར་.....  
 འདི་སྐྱུ་མ་དུ་བསམ་པར་བྱ་སྟེ། ཆོས་འདི་དག་ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པར་ན་མ་  
 སྐྱེས་པ་ཡིན་ཡང་སྐྱུ་མ་བཞིན་དུ་གྱུ་དང་རྩོན་སོ་སོར་ངས་པ་སྒྲ་ཆོགས་<sup>9</sup>སྐྱུ་འདུས་  
 པའི་དབང་གིས་མ་བདགས་ན་ཉམས་དགའ་བ་སྒྲ་ཆོགས་ཁོ་ན་དག་འབྱུང་སྟེ།

- 
1. རྩ་ཆེ་བཞིན་ 2. ལྟ་བུ་-ན་ 3. ལྟ་བུ་-བྱས་པ་ 4. ལྟ་བུ་-སོགས་  
 5. ལྟ་བུ་-བསོས་ 6. 'ཡང་'-རྩ་ཆེ་བཞིན་ 7. ལྟ་བུ་-ངལ་བསོ་  
 8. 'མེལ་ཆོ་བྱན་བྱེད་དམ'-རྩ་ཆེ་བཞིན་ 9. ལྟ་བུ་-ཆོགས་འདུས་



དེས་ན་ཆད་པར་ལྷ་བར་ཡང་མི་འགྱུར་ངོ། །སྐར་འཁོར་མཐར་ཡང་མི་འགྱུར་དེ།  
 འཁོར་ལྷ་མེས་རབ་ཀྱིས་ནམ་པར་དབྱེད་ན་མི་དམིགས་དེ། དེས་ན་དག་པོ་(པར་  
 ལྷ་བ་)ཉིད་དང་སྐྱོ་འདོགས་པའི་མཐར་ཡང་མི་འགྱུར་ངོ། །དེ་ལ་གང་དག་  
 མེས་རབ་ཀྱི་མིག་དང་བྲལ་བས་ཕྱིན་ཅི་ལོག་གི་སྐྱོ་ཅན་དུ་གྱུར་ཅིང་བདག་དུ་.....  
 མངོན་པར་ཞེན་ནས་ལས་ནས་བ་སྐྱོ་ཚོགས་པའི་དེ་དག་ནི་འཁོར་བ་ན་ཡོངས་  
 སྐྱ་འབྱས་མོ། གང་དག་འཁོར་བ་ལ་གཅིག་དུ་མི་ཕྱོགས་ཤིང་སྤྱིང་ཇི་ཆེན་པོ་  
 དང་བྲལ་བ་དང་། སེམས་ཅན་གྱི་དོན་དུ་སྤྱིན་པ་ལ་སོགས་པ་ལ་ལོ་དུ་ཕྱིན་  
 བ་རྒྱུས་པར་མི་བྱེད་ཀྱི། བདག་འདུལ་བ་འབའ་ཞིག་བྱེད་པའི་སེམས་ཅན་  
 དེ་དག་ནི་ཐབས་མེད་པའི་ཕྱིར་ཉན་ཏེ་ས་སམ་རང་སངས་བུས་ཀྱི་བྱང་ཆུབ་དུ་.....  
 ལྷུང་ངོ་། །

གང་དག་འགྲོ་བ་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་ཁོང་དུ་ཆད་ནས་ཀྱང་སྤྱིང་ཇི་ཆེན་  
 པོའི་སྤྱོད་པའི་ཀྱིས་འགྲོ་བ་མཐའ་དག་གཤོན་པར་དམ་བཅས་ནས། སྐྱུ་མ་མཁའ་  
 བཞིན་དུ་སྐྱོ་ཕྱིན་ཅི་ལོག་དུ་མ་གྱུར་བས་བསོད་ནམས་དང་ཡེ་མེས་ཀྱི་ཚོགས་གྱི་  
 ཆེན་པོ་ཡོངས་སྐྱ་སྐྱབ་པ་དེ་དག་ནི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་གོ་འཕང་བརྟེས་ནས་  
 འཁོར་བ་ན་འགྲོ་བ་མ་ལུས་པ་ལ་པན་པ་དང་བདེ་བའི་ནམ་པ་རྣམས་ཅད་ཡང་.....

- 
1. བོད་དཔེར་སྐྱོ་འདོགས་པའི་མཐར་ཞེས་གསལ་ཡང་། ལྷ་དཔེར་—ཨཔ་འའ་འའ་ལྷ་ལྷ་པའི་  
 མཐར་ཞེས་གསལ་བ་འབྱུང་བར་རྟུང་ལྷ། ལྷ་ལྷ་ལྷ་ལྷ་པ་ལ་བརྟེན་ནས་ལྷ་ཚོགས་ལྷ་རྟུང་པས་  
 ཆད་པར་ལྷ་བ་དང་། ལྷ་པའི་མཐར་མི་འགྱུར་བ་དང་། མེས་རབ་ཀྱིས་ནམ་པར་དབྱེད་ན་མི་  
 དམིགས་པས་རྟུག་པར་ལྷ་བ་དང་སྐྱོ་འདོགས་པའི་མཐར་མི་འགྱུར་ཞེས་པའི་དོན་དུ་རྟུང་ངོ་། །
  2. ལྷ་པོ་—རྟུང་པ་ཉིད་ 3. ལྷ་དཔེར་ཡོད་ 4. ལྷ་—ལྷ་ཚོགས་ 5. 'སེམས་ཅན་གྱི་དོན'—  
 ལྷ་དཔེར་མེད་ 6. 'འབའ་ཞིག'—ལྷ་དཔེར་མེད་ 7. 'ཀྱང'—ལྷ་དཔེར་མེད་

དག་པར་སྐྱབ་ཅིང་བཞུགས་སོ། །དེ་དག་ཀྱང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཚྭ་གས་<sup>1</sup>ཀྱི་སྒྲོབས་  
 ཀྱིས་ཉེན་མོངས་པ་མཐའ་<sup>2</sup>དག་སྤངས་པས་འཁོར་བར་ཡང་མི་རྒྱུང་ལ། སེམས་  
 ཅན་<sup>3</sup>ཐམས་ཅད་ལ་ལྟ་བུ་བསོད་ནམས་ཀྱི་ཚྭ་གས་ཀྱི་ཆེ་ཞིང་ཚད་མེད་པ་བསཏ་  
 བའི་དབང་གིས་ན་སྤྱང་ན་ལས་འདས་པར་ཡང་མི་རྒྱུང་ངོ་། །སེམས་ཅན་ཐམས་  
 ཅད་ཀྱི་ཉེ་བར་འཚོ་བར་ཡང་འགྱུར་རོ། །དེ་ལྟ་བུ་ན་སེམས་ཅན་མཐའ་དག་  
 ལ་ཕན་པ་དང་བདེ་བ་བསྐྱེད་པར་འདོད་པ་མི་གནས་པའི་སྤྱང་ན་ལས་འདས་པ་……  
 ཐོབ་པར་འདོད་པ་བདག་<sup>4</sup>གིས་<sup>5</sup>བསོད་ནམས་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཚྭ་གས་ཀྱི་ཆེན་པོ་  
 སྐྱབ་པ་ལ་དུས་<sup>6</sup>ཐམས་ཅད་དུ་མངོན་པར་བཅོན་པར་བྱའོ་<sup>7</sup>སྐྱམ་དུ་བསམ་སོ། །  
 དེ་སྐད་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་གསང་བའི་མདོ་ལས་<sup>8</sup>ཀྱང་བཀའ་སྤྱུལ་དེ། “ཡེ་  
 ཤེས་ཀྱི་ཚྭ་གས་ནི་ཉེན་མོངས་པ་མཐའ་དག་སྤང་བར་འགྱུར་<sup>9</sup>པ་ལགས་སོ། །  
 བསོད་ནམས་ཀྱི་ཚྭ་གས་ནི་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཉེ་བར་འཚོ་བར་འགྱུར་བ་……  
 ལགས་སོ། །བཅོམ་ལྷན་འདས་དེ་ལྟར་ལགས་པས་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབའ་  
 སེམས་དཔར་ཆེན་པོས་བསོད་ནམས་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཚྭ་ལ་བཅོན་པར་བཤུའོ།”  
 ཞེས་འབྱུང་ངོ་། །འཕགས་པ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་སྐྱེ་བ་འབྱུང་བའི་མདོ་  
 ལས་<sup>10</sup>ཀྱང་བཀའ་སྤྱུལ་དེ། “གང་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ནམས་འབྱུང་བ་དེ་ནི་

1. ‘ཚྭ་གས་ཀྱི་’-ཀྱི་དབེར་མེད་ 2. ‘མཐའ་དག་’-ཀྱི་དབེར་མེད་ 3. ལྟ་བུ་-ཅན་ལྟ་  
 (ཆད་-སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་’ལྟ་) 4. བོད་དབེར་-’འདོད་པ་དག་གིས་’ཞེས་གསལ་ཡང་།  
 ཀྱི་དབེར་-’ཤུལ་= བདག་གིས་’ཞེས་གསལ་བ་འབྱུང་བར་རྟུང་ངོ་། 5. ལྟ་བུ་-ག་(ཆད་-གིས་)  
 6. ‘དུས་ཐམས་ཅད་དུ་’-ཀྱི་དབེར་མེད་ 7. ལྟ་བུ་-ཐུག་། 8. ཚྭ་ཞེས་པའི་སྐད་ཀྱི་སྤྱུང་བ་  
 9. ལྟ་བུ་-འགྱུར་ལགས་ 10. ལྟ་བུ་-བཀའ་(ཐལ་ཆེན་གྱི་ ༥༠)མདོ་ཚྭ་འདི་དག་ཚྭ་ལྟ་བུ་  
 དེ་ལྱང་འདི་ནི་མངའ་བར་མངོན་གོ།



རྒྱ་གཅིག་ཏུ་<sup>1</sup>མ་ཡིན་ནོ། །དེ་ཅི་ལྟར་ཞེ་ན། གྲེ་རྒྱལ་བའི་སྤྲུལ་དེ་བཞིན་  
གཤེགས་པ་ནམས་ནི་ཡང་དག་པར་འགྱུར་བའི་རྒྱ་ཚད་མེད་པ་འབྱུང་བ་ལྟར་  
ཡང་དག་པར་འགྱུར་ཤི། བཅུ་གང་ཞེ་ན། འདི་ལྟ་ཤི། བསོད་ནམས་དང་  
ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཚོར་ཚད་མེད་པས་མི་ངོམས་པ་ཡང་དག་པར་འགྱུར་<sup>2</sup>བའི་རྒྱ་དང་།<sup>3</sup>  
ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་རྒྱས་པར་འབྲུང་ངོ་། །འཕགས་པ་དྲི་མ་མེད་པར་གྲུ་  
བས་བསྟན་པ་ལས་<sup>4</sup>ཀྱང་བཀའ་སྤྱུལ་དེ། “གྲེ་<sup>5</sup>གྲོགས་པོ་དག་དེ་བཞིན་གཤེད་  
བའི་སྤྱོད་པ་བསོད་ནམས་བརྒྱལ་ས་ངེས་པར་སྦྱེས་པའོ། དག་བའི་ཚོས་ཐམས་  
ཅད་ལས་<sup>6</sup>ངེས་པར་སྦྱེས་པའོ། །དག་བའི་ལས་ཚད་མེད་པ་ལས་ངེས་པར་  
སྦྱེས་<sup>7</sup>པོ།” ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་རྒྱ་ཆེར་འབྲུང་ངོ་། །

དེ་ལྟར་བྱས་ན་དལ་གྱིས་སྦྱིལ་མོ་ཀྱང་བཤིག་ཤི། བྲོགས་བཅུ་ན་བཞུར་  
བའི་སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཐམས་ཅད་ལ་བྱུག་བཅའ་ནས་དེ་……  
དག་ལ་མཆོད་པ་དང་བསྟོད་པ་བྱས་ལ། འཕགས་པ་བཟང་པོ་སྟོད་པ་ལ་སོགས་  
བའི་སྤྱོད་ལས་ཆེན་<sup>8</sup>པོ་གདབ་བོ། །དེ་ནས་སྟོང་པ་ཉིད་དང་སྟིང་རྩེའི་སྟིང་པོ་ཅན་  
སྤྱོད་མེད་པའི་བྱང་ཆུབ་དུ་ཡོངས་སུ་བསྡུས་པའི་སྤྱོད་པ་ལ་སོགས་པའི་བསོད་……  
ནམས་ཀྱི་ཚོགས་(<sup>9</sup>མཐའ་དག་)སྦྱུབ་པ་ལ་མངོན་པར་བརྟན་པར་བྱའོ། །

གང་ཞིག་སེམས་ཀྱི་ནམ་པར་དོག་པས་བསྐྱེད་པའི་དག་བ་དང་མི་དག་བའི་  
ལས་ཀྱི་དབང་གིས་སེམས་ཅན་ནམས་མཐོ་རིས་ལ་སོགས་པའི་(<sup>10</sup>ལས་ཀྱི་)འབྲས་

1. ལྟ་བུ་—གཅིག་ཏུ་ 2. ལྟ་བུ་—གྲུབ་པའི་ 3. ལྟ་བུ་—བཀའ་(མདོ་—མ་)༡༨༩

4. ‘གྲེ་གྲོགས་པོ་དག་’ཞེས་པ་རྒྱ་དཔེ་དང་མདོ་ངོ་མ་གཉིས་ཀྱང་མེད་པར་འདུག་པར་ཞུ་བ་ལྟར་།

5. ལྟ་བུ་—ཅད་ལ་(ཅད་—ཅད་ལས་) 6. ལྟ་བུ་—སྦྱེས་པའོ། 7. ‘ཆེན་པོ་’—རྒྱ་དཔེར་མེད་

8. ལྟ་བུ་དཔེར་མེད་ 9. ལྟ་བུ་དཔེར་མེད་

བྱ་མྱོང་ཞིང་འཁོར་བ་ན་འཁོར་རོ། །ཁང་དག་ཅི་ཡང་མི་སེམས་(1ཤིང་ལས་)  
 ཅི་ཡང་མི་བྱེད་པ་དེ་དག་ནི་འཁོར་བ་ལས་ཡོངས་སུ་ཐར་བར་འགྱུར་རོ། །དེ་  
 ལྟ་བུས་ན་ཅི་ཡང་མི་བསམ་མོ། །སྒྲིན་པ་ལ་སོགས་པ་དགེ་བ་སྤྱད་པར་ཡང་  
 མི་བྱའོ། །སྒྲིན་པ་ལ་སོགས་པ་སྤྱོད་པ་ནི་སྒྲིན་པོ་འི་དབང་དུ་མཛད་ནས་  
 བསྐྱེད་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ་སྐྱེས་དུ་སེམས་ཤིང་2དེ་3སྤྱད་ཀྱང་སྒྲིན་པ་དེས་ནི་ཐེག་པ་ཆེན་  
 བོ་མཐའ་དག་སྤངས་པ་ཡིན་ནོ། །ཐེག་པ་4ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཙ་བ་ནི་ཐེག་པ་ཆེན་  
 བོ་ཡིན་པས་དེ་སྤངས་ན་ཐེག་པ་ཐམས་ཅད་སྤངས་པར་འགྱུར་རོ། །འདི་ལྟར་  
 ཅི་ཡང་མི་བསམ་མོ་ཞེས་སྒྲིན་པ་ནི་ཡང་དག་པར་སོ་སོར་རྟོག་པའི་མཚན་ཉིད་.....  
 ཀྱི་ཤེས་རབ་སྤངས་པར་འགྱུར་རོ། །ཡང་དག་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཙ་བ་ནི་ཡང་  
 དག་པར་སོ་སོར་རྟོག་པ་ཡིན་པས་ན་5དེ་སྤངས་ན་ཙ་བ་བཅད་པའི་ཕྱིར་འཇིག་  
 རྟེན་ལས་འདས་པའི་ཤེས་རབ་(7ཀྱང་)སྤངས་པར་འགྱུར་རོ། །(8དེ་སྤངས་  
 པས་ནས་པ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ཉིད་སྤངས་པར་འགྱུར་རོ།) །སྒྲིན་པ་ལ་སོགས་  
 པ་དགེ་བ་(9ཡང་)སྤྱད་པར་10མི་བྱའོ་ཞེས་སྐྱེས་པས་ཀྱང་སྒྲིན་པ་ལ་སོགས་པ་...  
 ཐབས་ཤིན་དུ་རྩར་བྱིན་པར་སྤངས་པ་ཡིན་ནོ། །

མདོར་ན་འདི་ལྟ་སྟེ། ཐབས་དང་ཤེས་རབ་ནི་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་འོ། །དེ་

1. ལྟ་དཔེར་ཡོད་ 2. ལྟ་པེ་—ཞེང་ 3. 'དེ་སྤྱད་ཀྱང་སྒྲིན་པ་'—ལྟ་དཔེར་མེད་
4. ལྟ་ཙ་བ་—པ་ཆེན་པོ་ཐམས་ཅད་ 5. ལྟ་པེ་—ན་ཙ་(ཆད་—ན་'དེ་སྤངས་ན་'ཙ་)
6. 'ཙ་བ་བཅད་པའི་ཕྱིར་'—ལྟ་དཔེར་མེད་ 7. ལྟ་དཔེར་ཡོད་ 8. ལྟ་དཔེར་—

तत्प्रतिक्षेपात् सर्वाकारज्ञता प्रतिक्षिप्ता भवेत् = དེ་སྤངས་པས་ནས་པ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་  
 པ་ཉིད་སྤངས་པར་འགྱུར་རོ། 9. ལྟ་དཔེར་ཡོད་ 10. ལྟ་པེ་—པར་བྱའོ་(ཆད་སྒྲིན་—  
 བར་པེ་བྱའོ།)



སྒྲིབ་འཕགས་པ་གཡུ་མགོ་འི་རིམ་ལས་<sup>1</sup>ཀྱང་གསུངས་དེ། “བྱང་ཆུབ་སེམས་  
 དབའ་ནམས་ཀྱི་ལམ་ནི་མདོར་བསྟུན་གཉིས་དེ། གཉིས་གང་ཞེ་ན། འདི་ལྟ་སྟེ།  
 ཐབས་དང་། ཤེས་རབ་བོ།” ཞེས་ཤིང་། འཕགས་པ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་<sup>2</sup>  
 གསང་བ་ལས་<sup>3</sup>ཀྱང་བཀའ་སྟུང་དེ། “ཐབས་དང་ཤེས་རབ་འདི་གཉིས་ཀྱིས་  
 བྱང་ཆུབ་སེམས་དབའི་ལམ་<sup>4</sup>ཐམས་ཅད་བསྟུས་པར་འགྱུར་རོ།” ཞེས་འགྱུར་  
 སྟེ། དེའི་ཕྱིར་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་སྤྱོད་པ་ནི་ལས་ཀྱི་སྒྲིབ་པ་ཆེན་པོ་བྱས་པར་འགྱུར་  
 རོ། འདི་ལྟ་བུས་ན་ཐེག་<sup>5</sup>པ་ཆེན་པོ་སྤྱོད་པ། ཐོས་པ་ལྟུང་པ། བདག་གི་ལྟ་བ་<sup>6</sup>  
 མཆོག་དུ་འཛིན་པ། སྒྲེ་བོ་མཁས་པ་ལ་བསྟེན་བཀྱར་མ་བྱས་པ། དེ་བཞིན་  
 གཤེགས་པའི་གསུང་རབ་ཀྱི་ཆུལ་མ་རྟོགས་པ། བདག་སྤང་བར་བྱས་ནས་  
 གཞན་ཡང་སྤང་བར་བྱེད་པ་རིགས་པ་དང་ལྷང་དང་འགལ་བའི་དུག་གིས་བདབ་...  
 བའི་ཆོག་ནི་མཁས་པ་བདག་ལ་ལེགས་སུ་འདོད་པས་ཟས་དུག་ཅན་བཞིན་དུ་བྱང་  
 རིང་དུ་ཡོངས་སུ་སྤང་བར་བྱའོ། །

དེ་<sup>7</sup>ལྟར་དེས་ཡང་དག་པར་སོ་སོར་རྟོག་པ་སྤངས་ན་ཆོས་ཤིན་དུ་ནམ་...  
 བར་འབྱེད་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཡང་<sup>8</sup>དག་པ་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཡན་ལག་དམ་པ་ཁོ་ན་ཡང་...  
 སྤངས་པར་འགྱུར་རོ། ཡང་དག་པར་སོ་སོར་རྟོག་པ་མེད་པར་ནལ་འབྱེད་  
 པས་ཐབས་<sup>9</sup>གང་གིས་ཐོག་མ་མེད་པའི་དུས་<sup>10</sup>ནས་གཞུགས་ལ་སོགས་པའི་.....

1. རྟེན་བཀའ་(མདོ་-‘ཅ’ 222) 2. ལྟ་བུ་-བའི་མདོ་(ཆད་-བའི་‘གསང་བའི་’མདོ་)

3. ཆོས་ཞེས་ངོས་ནི་དམ་བྱང་པ། 4. ལྟ་དབུ་-ཤེས་པའི་ཡན་ལག་དམ་པ་ཁོ་ན་ཡང་...  
 ‘ཐེག་པ་ཆེན་པོ་’ ཞེས་པ་ནས་མཆོག་དུ་འཛིན་པ་ཞེས་པའི་པར་མ་སྤང་བས་ཆད་པར་དངོན་ནོ།

6. ལྟ་བུ་-བའི་ 7. ལྟ་བུ་-འདི་ 8. ‘ཡང་དག་པ་’-ལྟ་དབུ་མེད་

9. ‘ཐབས་’-ལྟ་དབུ་མེད་ 10. ལྟ་བུ་-དུས་གཞུགས་(ཆད་-དུས་‘ནས་’གཞུགས་)

དངོས་པོ་ལ་མངོན་པར་ཞེན་ཅིང་གོམས་པའི་སེམས་ནམ་པར་མི་རྟོག་པ་ཉིད་ལ་<sup>1</sup>  
 རྣམ་པར་<sup>2</sup>བཞག་པར་བྱ།<sup>3</sup> གཤམ་དེ་ཆོས་ཐམས་ཅད་ལ་བྲན་པ་མེད་པ་དང་།  
 ཡིད་ལ་བྱེད་པ་མེད་པས་འཇུག་གོ་ཞེ་ན། དེ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་དེ། ཡང་  
 དག་པར་སོ་སོར་རྟོག་པ་མེད་པར་ནི་ཉམས་སུ་བྱོང་བའི་ཆོས་ཐམས་ཅད་མི་བྲན་  
 པར་བྱ་བ་དང་། ཡིད་ལ་མི་བྱ་བར་བྱེད་མི་བྱས་སོ། །གཤམ་དེ་བདག་གིས་<sup>4</sup>  
 ཆོས་འདི་དག་བྲན་པར་མི་བྱའོ། །ཡིད་ལ་མི་བྱའོ་སྟེ་ལྷ་རྒྱུ་དེ་ལྷ་རྒྱུ་ཞིང་དེ་  
 དག་ལ་བྲན་པ་མེད་པ་དང་། ཡིད་ལ་བྱེད་པ་མེད་པ་བསྐྱེད་པ་ནི་དེའི་ཆོ་དེས་དེ་  
 དག་གིན་དུ་བྲན་པ་དང་། གིན་དུ་ཡིད་ལ་བྱས་པར་འགྱུར་རོ། །ཅི་ལྟར་བྲན་  
 པ་དང་། ཡིད་ལ་བྱེད་པ་མེད་པ་ཅམ་ལ་བྲན་པ་མེད་པ་དང་། ཡིད་ལ་བྱེད་  
 པ་མེད་པ་སྐད་དུ་བྱ་ན། དེའི་ཆོ་དེ་གཉིས་རྣམ་པ་གང་གིས་མེད་པར་འགྱུར་བ་  
 དེ་ཉིད་དབྱེད་དགོས་དེ། མེད་པ་ནི་རྒྱུར་<sup>5</sup>བྱང་བར་<sup>6</sup>ཡང་མི་འགྱུར་དེ། གང་  
 གིས་<sup>7</sup>མཚན་<sup>8</sup>མ་མེད་པ་དང་། ཡིད་ལ་བྱེད་པ་མེད་པ་ལས་<sup>9</sup>རྣམ་པར་མི་རྟོག་  
 པ་ཉིད་དུ་འགྱུར། དེ་ཅམ་གྱི་ཕྱིར་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པར་འགྱུར་དུ་ཟིན་ན་ནི་  
 བརྒྱལ་<sup>10</sup>བ་ཡང་བྲན་པ་དང་། ཡིད་ལ་བྱེད་པ་མེད་པས་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པ་  
 ཉིད་དུ་འཇུག་པར་འགྱུར་རོ། །ཡང་དག་པར་སོ་སོར་རྟོག་པ་མེད་པར་རྣམ་  
 པ་གཞན་གྱིས་<sup>11</sup>བྲན་པ་མེད་ཅིང་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་མེད་པར་<sup>12</sup>བྱེད་པའི་ཐབས་གཞན་

1. ལྷ་མོ་—ལ་བཞག་ 2. ལྷ་དཔེར་—ཐའི་མེད་? = འཇུག་པ་བྱ་ 3. ལྷ་མོ་—ཐའོ། (འདིར་ཐའོ་  
 ཞེས་པ་མ་དག་པར་མངོན་དུ། ལྷ་དཔེར་དང་གཞན་དོན་གང་ལ་བཞག་པ་ཀྱང་དྲ་ཆོག་ལས་མ་འདས་སོ།)  
 4. ལྷ་མོ་—ག་ 5. ལྷ་མོ་—ལྷ་བྱང་(ཆད་—ལྷ་བྱང་) 6. ལྷ་མོ་—བ་ 7. ལྷ་མོ་—ག་  
 8. ལྷ་དཔེར་—མཚན་མ་...ཞེས་པ་ནས་ཉིད་དུ་འགྱུར་ཞེས་པའི་པར་མ་ཚང་ 9. ལྷ་མོ་—ལ་  
 10. ལྷ་མོ་—ལྷ་ 11. ལྷ་མོ་—ལྷ་ 12. ལྷ་མོ་—བ་



མེད་དོ།

དེ་ལྟར་བཤད་པ་དང་། ཡིད་ལ་བྱེད་པ་མེད་པར་གྱུར་དུ་ཟིན་ཀྱང་ཡང་  
 དག་པར་སོ་སོར་དྲོག་པ་མེད་ན་ཆོས་རྣམས་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ལ་འཇུག་<sup>2</sup>  
 པར་ཇི་ལྟར་འགྱུར། ཆོས་རྣམས་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་སྤྱོད་པར་གནས་པ་ཁོ་ན་ཡིན་  
 དུ་ཟིན་ཀྱང་སོ་སོར་དྲོག་པ་<sup>3</sup>དེ་མེད་ན་དེ་དག་<sup>4</sup>གི་སྤྱོད་པ་ཉིད་དྲོགས་པར་སི་  
 འགྱུར་རོ། སྤྱོད་པ་ཉིད་དྲོགས་པ་མེད་པས་ནི་སྤྱི་བ་པ་སྤྱོད་པར་སི་འགྱུར་རོ། །  
 དེ་ལྟར་གྱུར་དུ་ཟིན་ན་ཐམས་ཅད་<sup>5</sup>ཀྱང་དུས་ཐམས་ཅད་དུ་རང་ཐར་བར་འགྱུར་རོ།  
 ཡང་ན་ལ་འབྱོར་པ་དེ་གཤམ་དེ་ཆོས་ཐམས་ཅད་ལ་དེ་ལྟར་བ་<sup>7</sup>ཉམས་པ་འཇུག་། མྱོངས་  
 པས་དེ་ལྟར་བཤད་པ་དང་། ཡིད་ལ་བྱེད་པ་སི་འཇུག་ན་ནི་དེའི་ཆོ་འདོད་དུ་སྤྱོད་པ་ཡིན་  
 པས་དེ་ན་ལ་འབྱོར་པར་<sup>8</sup>ཇི་ལྟར་འགྱུར། ཡང་དག་པར་སོ་སོར་དྲོག་པ་མེད་  
 པར་དེ་ལ་དེ་ལྟར་བཤད་པ་དང་། ཡིད་ལ་བྱེད་པ་མེད་པ་གོམས་པར་བྱས་པས་  
 སྤྱོད་པ་ཉིད་གོམས་པར་བྱས་པ་ཡིན་ནོ། །དེའི་ཕྱིར་ཡང་དག་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་  
 སྤྱོད་པ་ཀྱང་རིང་དུ་བསྐྱེད་པར་འགྱུར་རོ། །ཅི་སྟེ་དེ་དེ་ལྟར་བཤད་པ་ཡང་མ་  
 ཡིན། སྤྱོད་པ་ཡང་མ་ཡིན་ན་ནི་དེའི་ཆོ་འདོད་དག་པར་སོ་སོར་དྲོག་པ་མེད་པར་  
 ཇི་ལྟར་དེ་ལྟར་བཤད་པ་དང་། ཡིད་ལ་བྱེད་པ་མེད་པར་བྱེད་ཀྱས་པར་འགྱུར།  
 དེ་ལྟར་བཤད་པ་དང་། ཡིད་ལ་བྱེད་པ་མེད་པ་མཐོང་དུ་ཡང་སི་མཐོང་ངོ་ཞེས་བྱས་པ་རྒྱུ་ཡིན་།  
 དེ་ལྟར་བཤད་པ་དང་། ཡིད་ལ་བྱེད་པ་མེད་པ་གོམས་པར་བྱས་ན་<sup>9</sup>ཇི་ལྟར་སྤྱོད་

1. ལྷ་མོ་—བྱེད་པར་(ཆད་—བྱེད་པ་མེད་པར་འགྱུར་)
2. ལྷ་མོ་མེད་—ཆམ་མཁེ་ལྷ་མོ་མེད་པར་འགྱུར་
3. ལྷ་མོ་—མ་མེད་
4. ལྷ་མོ་—དག་པར་སྤྱོད་པར་འགྱུར་
5. ལྷ་མོ་—ཅད་དུས་
6. ལྷ་མོ་—ཅད་དུས་
7. ལྷ་མོ་—དེ་ལྟར་བཤད་པར་འགྱུར་(ཆད་—དེ་ལྟར་བཤད་པར་འགྱུར་)
8. ལྷ་མོ་—ཐམས་
9. ལྷ་མོ་—ནས་

གྱི་གནས་ཆེས་སྲ་བ་ལ་སོགས་པ་དང་། སངས་བྱེ་གྱི་ཆོས་<sup>1</sup>ལ་སོགས་  
 བར་འགྱུར་དེ། འགལ་བའི་ཕྱིར་བྱོ་བ་དང་འགལ་བ་དྲང་བ་བཞུན་པའི་ཆོ་བྱོ་  
 བ་རེག་པའི་ཆོར་བ་མི་འབྱུང་བ་བཞིན་ནོ།

ཡང་ན་ལ་འབྱོར་བ་དྲིང་ངེ་འཛིན་ལ་སྒྲོམས་པར་བྱུགས་པ་ལ་གལ་དེ་ཡིད་  
 གྱི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཡོད་ན་དེའི་ཆོ་དཔེ་གདོན་མི་<sup>2</sup>ཟ་བར་ཅི་ཞིག་ལ་དམིགས་པ་.....  
 དགོས་དེ། སོ་སོ་འི་སྒྲུབ་པ་རྣམས་ཀྱི་ཤེས་པ་ནི་སྒྲུབ་དུ་དམིགས་པ་མེད་པར་  
 མི་འགྱུར་རོ། ཅི་སྟེ་མེད་ན་ནི་དེའི་ཆོ་ཁྱར་ཆོས་རྣམས་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་  
 ཉོགས་པར་འགྱུར། གཉེན་བོ་གང་གིས་ནི་ཉོན་མོངས་(2པའི་སྒྲིབ་)པ་སྤྱོད་པར་  
 འགྱུར། བསམ་གཏན་བཞི་པ་མ་ཐོབ་པའི་སོ་སོ་འི་<sup>3</sup>སྒྲུབ་པའི་སེམས་ནི་འགོག་  
 བར་འགྱུར་མི་སྤྱོད་དོ། །ད་ལྟ་བས་ན་དཔེ་བའི་ཆོས་ལ་<sup>4</sup>དཔེ་བ་མེད་པ་དང་།  
 ཡིད་ལ་བྱེད་པ་མེད་པ་<sup>5</sup>འབྱུང་བ་དེ་ཡང་ཡང་དག་པར་སོ་སོར་ཉོག་པ་སྤྱོད་དུ་  
 འགྲོ་བ་ཡིན་པར་བརྟ་<sup>6</sup>བར་བྱ་སྟེ། གང་གི་ཕྱིར་ཡང་དག་པར་སོ་སོར་ཉོག་  
 པ་ཉིད་ཀྱིས་དཔེ་བ་མེད་པ་དང་། ཡིད་ལ་བྱེད་པ་མེད་པར་བྱེད་ཀྱས་ཀྱི་གཞན་  
 དུ་མ་ཡིན་དེ། འདི་ལྟར་ན་ལ་འབྱོར་བ་གང་གི་ཆོ་ཡང་དག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་  
 བདགས་ན་དོན་དཔེ་བར་ན་དུས་གསུམ་དུ་ཆོས་སྒྲིམ་པ་གང་ཡང་<sup>7</sup>མ་མཐོང་བ་དེའི་  
 ཆོ་ཁྱར་ན་དཔེ་བ་དང་། ཡིད་ལ་བྱེད་པར་བྱ། དོན་དཔེ་བར་<sup>8</sup>ན་དུས་<sup>9</sup>  
 གསུམ་མེད་པའི་ཕྱིར་བྱེད་པ་མེད་པ་<sup>10</sup>གང་ཡིན་པ་དེ་ཆོ་ཁྱར་དཔེ་བར་བྱ། ཡིད་

1. གྱི་དཔེར་—ཐུང་མཐོང་པོ་ཡི་ཡོ = སངས་བྱེ་གྱི་ཆོས་གསལ་བ་ 2. གྱི་དཔེར་ཡོད་

3. ལྟ་བུ་—སོ་འི་སེམས་(ཆད་—སོ་འི་སྒྲུབ་པའི་སེམས་) 4. ལྟ་བུ་—ལས་ 5. ལྟ་བུ་—ལས་

6. ལྟ་བུ་—ལྟ་ 7. ལྟ་བུ་—ཡངས་ 8. ལྟ་བུ་—པར་དུས་ 9. ལྟ་བུ་—དུས་སྟེ་(ཆད་—དུས་

གསུམ་) 10. ལྟ་བུ་—པ་དེ་(ཆད་—པ་གང་ཡོན་པ་དེ་)





གལ་དེ་ཆོས་ལ་བདག་མེད་སོ་སོར་དོག།

སོ་སོར་དེ་བདག་ས་གལ་དེ་བསྐྱོམ་བ་ནི།

དེ་ཉིད་ཐུང་ན་འདས་ཐོབ་འབྲས་བུའི་རྒྱ།

རྒྱ་གཞན་གང་ཡིན་དེས་<sup>1</sup>ནི་ཞི་མི་འབྱུང་། ཞེས་འབྱུང་ངོ་།

མདོ་ཀུན་ལས་བདུས་བ་ལས་<sup>2</sup>ཀྱང་འབྱུང་སྟེ། “བདག་ལྷག་མཐོང་གི་སྒྲིབ་བ་ལ་  
ཞུགས་བར་གནས་ཀྱང་གཞན་<sup>3</sup>དག་ལྷག་མཐོང་གི་སྒྲིབ་བ་ལ་<sup>4</sup>མི་འཇུག་ན་བདུན་  
ཀྱི་ལས་སོ།” ཞེས་འབྱུང་ངོ་།

ལྷག་མཐོང་<sup>5</sup>ནི་ཡང་དག་བར་སོ་སོར་དོག་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡིན་བར་འཕྲ་  
བ་དཀོན་མཆོག་སྒྲིན་དང་། དགོངས་བ་ངས་བར་འབྲེལ་བ་(<sup>6</sup>སོགས་)ལས་  
ཀྱང་བཀའ་<sup>7</sup>སྒྱུ་ལ་དོ། འཕགས་བ་དཀོན་མཆོག་སྒྲིན་ལས་<sup>8</sup>ཀྱང་བཀའ་སྒྱུ་ལ་བ།  
“ལྷག་མཐོང་གིས་<sup>9</sup>བདག་ས་ནས་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་བར་དོགས་བ་ནི་མཚན་མ་མེད་  
བ་ལ་འཇུག་པའོ།” ཞེས་འབྱུང་ངོ་། འཕགས་བ་ལང་ཀར་གཤེགས་བ་ལས་<sup>10</sup>  
ཀྱང་། “སྒྲོ་གྲོས་ཆེན་བོ་གང་གི་སྒྲིབ་སྒྲོས་བདག་ས་ན་རང་དང་སྒྲིའི་མཚན་<sup>11</sup>  
ཉིད་(<sup>12</sup>ཀྱི་དངོས་བོ་ནམས་)མི་དོགས་དེ། དེས་ན་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་  
མེད་བ་ཞེས་བུའོ།” ཞེས་བཀའ་སྒྱུ་ལ་དོ། གལ་དེ་ཡང་དག་བར་སོ་སོར་

1. ལྷ་མེ་—དེ་ནི་ 2. ལྷ་—བུམ་(དབུ་མ་ཀུ་༡༩༩) ཐུང་འཛིན་འདོད་དེ་རྒྱུ་མེད་འཕགས་

བ་འཇུག་དཔལ་རྣམ་པར་འབྲེལ་བའི་མདོ་ཆོག་གོ།—ལྷ་—བཀའ་(མདོ་ཀུ་༢༡༢)

3. ལྷ་མེ་—གཞན་ལྷག་ 4. ལྷ་མེ་—ལ་འཇུག་(ཆད་སྒྲིན་—སྒྲིབ་བ་ལ་མེ་འཇུག་ན་)

5. ལྷ་མེ་—མཐོང་གི་ 6. ལྷ་མེར་ཡོད་ 7. ‘བཀའ་སྒྱུ་ལ་དོ’—ལྷ་མེར་མེད་

8. ཆོས་ཞེས་ངས་རྟོག་མ་བུང་བ། 9. ལྷ་མེ་—གི་ 10. ལྷ་—བཀའ་(མདོ་ཀུ་༡༠༡)

11. ལྷ་མེ་—མཚན་མེ (ཆད་—མཚན་ཉིད་མེ) 12. ལྷ་མེར་ཡོད་



དྲིལ་བ་ལ་མི་བྱ་ན། དེ་ལྟར་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་མདོ་སྡེ་དེ་དང་དེ་དག་ལས་<sup>1</sup>  
 ཡང་དག་པར་སོ་སོར་དྲིལ་བ་ནས་བ་དུ་མ་བཀའ་སྡུལ་བ་དེ་དང་ཡང་འགལ་.....  
 བར་འགྱུར་རོ། །དེ་ལྟར་བས་ན་བདག་ནི་ཤེས་རབ་རྒྱུད་ཅུ་། བརྩོན་འགྲུས་  
 རྒྱུད་ཅུ་ཟླ། མང་དུ་བོས་བ་ཡོངས་སུ་ཚོལ་མི་ཉུས་སོ། །ཞེས་དེ་སྐད་བྱ་བའི་  
 རིགས་ཀྱི། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་<sup>2</sup>མང་དུ་བོས་བ་བསྐྱུགས་བའི་ཕྱིར་དུས་  
 ཐམས་ཅད་དུ་ཡང་<sup>3</sup>དེ་སྤང་བར་ནི་མི་རིགས་སོ། །

ཚངས་བས་ཞུས་བ་ལས་<sup>4</sup>ཀྱང་བཀའ་སྡུལ་དེ། “གང་དག་བསམ་གྱིས་མི་བྱུབ་  
 བའི་ཚོས་ནམས་ལ་སེམས་<sup>5</sup>བར་ཞུང་བ་དེ་དག་ནི་ཚུལ་བཞིན་མ་ཡིན་པའོ།” ཞེས་  
 འབྱུང་ངོ་། །དེ་ལ་གང་དག་དོན་དམ་བར་མ་སྦྱིས་བའི་ཚོས་ནིས་ལ་སྦྱེ་བར་ཡོངས་  
 སུ་བདགས་དེ། ཉན་བོས་ལ་སོགས་བ་བཞིན་དུ་དེ་<sup>6</sup>དག་ལ་མི་དྲིལ་བ་དང་སྦྱུག་  
 བསྐྱུལ་གྱི་ཚུལ་དུ་སེམས་བར་བྱེད་བ་དེ་དག་ནི་སྦྱོ་འདོད་པ་དང་སྦྱར་བ་འདེབས་  
 བའི་མཐའ་དེ་དག་<sup>7</sup>ལ་སེམས་བ་འཇུག་པས་ཚུལ་བཞིན་མ་ཡིན་པར་འགྱུར་དེ།  
 དེ་དག་གི་བའི་ཕྱིར་དེ་སྐད་བཀའ་སྡུལ་གྱི། ཡང་དག་པར་སོ་སོར་དྲིལ་བ་དེ་  
 དག་གི་བར་ནི་མ་ཡིན་དེ། དེ་ནི་མདོ་སྡེ་ཀྱན་ལས་ཀྱང་བཀའ་སྡུལ་བའི་ཕྱིར་རོ།  
 དེ་སྐད་ཚངས་བས་ཞུས་བ་དེ་ཉིད་ལས་<sup>8</sup>ཀྱང་བཀའ་སྡུལ་དེ། “བྱུང་རྒྱུ་སེམས་

1. ལྟེ་ཙོ་ལ་ 2. ལྟེ་མེ་ཀྱི་ 3. ལྟེ་མེ་འཇང་སྤང་(ཆད་འཇང་དེ་སྤང་)

4. ལྟེ་བཀའ་(མདོ་པ་ 32) མདོ་ལྟེ་ཚངས་བ་བྱུང་བར་སེམས་ཀྱིས་ཞུས་བ་ལ་བྱའོ།

5. ཚོག་ལྟེ་དེ་སྐད་དོན་ལྟེ་དཔེར་མེད་པ་ནི་ཆད་པར་སྤང་ཟེ། ལྟེ་མ་རིམ་པོད་དཔེར་སེམས་བཀྱུགས་་  
 ཞེས་དང་། མདོ་ཉིད་དུ་སེམས་བར་བཀྱུགས་བ་ཞེས་གསལ་བས་སོ། དེ་གཉིས་ལས་བྱེ་མ་ཆེས་  
 ལམས་པར་སྤང་ཟེ། རྒྱུད་དོན་ལྟེ་ལྟེ་བའི་ཚོ་ན་ལྟེ་སེམས་བ་འཇུག་པས་ཞེས་གསལ་བའི་བྱེད་རོ།

6. དེ་དག་ཀྱི་དཔེར་མེད་ 7. ལྟེ་མེ་དག་སེམས་(ཆད་དག་ལ་སེམས་)

8. ལྟེ་བཀའ་(མདོ་པ་ 30)





གསུངས་སོ། །ཡང་དེ་ཉིད་ལས།<sup>1</sup> “ཚུལ་བཞིན་དུ་ཆོས་ལ་སོ་སོར་རྟོག་པ་  
དེ་དག་ནི་ཁྱོ་གྲོས་དང་ལྡན་པ་ཡིན་ནོ།” །ཞེས་གསུངས་སོ། །ཡང་དེ་ཉིད་  
ལས།<sup>2</sup> “དེ་དག་<sup>3</sup>ན་ཆོས་རྣམས་ལ་སྦྱོར་དང་སྦྱིག་གྱུ་ཇི་ལྟ་བུ་བཞིན་དུ་རབ་  
དུ་རྣམ་པར་འབྱེད་དོ།” །ཞེས་གསུངས་སོ། །

དེ་ལྟར་གང་དང་གང་དུ་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པ་ལ་སོགས་པའི་ཆོག་<sup>4</sup>ཐོས་  
ན་དེ་དང་དེར་ཐོས་པ་དང་བསམ་པ་ཅམ་ཁོ་ནས་ད་ཁོ་ན་རྟོགས་པར་གང་དག་.....  
སེམས་པ་དེ་དག་གི་མངོན་པའི་ང་གྱལ་དགག་པའི་ཕྱིར་ཆོས་རྣམས་སོ་སོར་ང་  
གིས་རིག་པར་བྱ་བ་ཉིད་དུ་བཟུན་པར་བྱེད་དོ། །ཚུལ་བཞིན་མ་ཡིན་པའི་སེམས་  
པ་ཡང་དགག་པར་བྱེད་པར་ཁོང་དུ་ཆུད་པར་བྱའི། །ཡང་དག་པར་སོ་སོར་  
རྟོག་པ་དེ་དགག་པར་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལྟར་མ་ཡིན་ན་རིགས་པ་དང་ལྷང་གིན་  
དུ་མང་བོ་དང་འགལ་བར་འགྱུར་རེ་ཞེས་སྒྲུར་བཤད་པ་བཞིན་ནོ། །ཡང་ཐོས་  
པ་དང་བསམ་པ་ལས་བྱུང་བའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་<sup>6</sup>རྟོགས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཉིད་.....  
བསྐྱེད་པ་ལས་བྱུང་བའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་བསྐྱེད་པར་བྱའི། །གཞན་དུ་<sup>7</sup>མ་ཡིན་དེ།  
དྲ་དཀྱིས་<sup>8</sup>ས་བཟུན་ནས་རྒྱག་པ་བཞིན་ནོ། །དེ་ལྟར་བས་ན་ཡང་དག་པར་སོ་སོར་  
བདག་པར་བྱའོ། །དེ་རྣམ་པར་རྟོག་པའི་ངོ་བོ་<sup>9</sup>ཉིད་ཡིན་དུ་ཟིན་ཀྱང་ཚུལ་བཞིན་  
དུ་ཡིད་ལ་བྱེད་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་དེ་ལས་རྣམ་<sup>10</sup>པར་མི་རྟོག་པའི་ཡེ་  
ཤེས་འབྱུང་བར་འགྱུར་བས་ན་ཡེ་ཤེས་དེ་འདྲོད་པས་དེ་ལ་བརྟེན་<sup>11</sup>པར་བྱའོ། །

- 
1. ལྟེ་-བཀའ་(མདོ་བ་༥༢) 2. ཆོས་ཞེས་པའི་སྟེན་མ་བྱུང་བ། 3. ལྟ་མེ་-དག་གི་  
4. ལྟ་དཔེར་-པཎ་ཐུ་ཡེ་ལྟེ་= སྦྱོས་པ་ཐོས་ན་ 5. ལྟ་མེ་-བ་དགག་(ཆད་-བ་ཡང་དགག་)  
6. ལྟ་མེ་-ཀྱི་ 7. ལྟ་མེ་-དུ་ན་ 8. ལྟེ་ཙ་-དཀྱིས་ཀྱི་ས་ 9. ལྟ་མེ་-བོ་ཡིན་  
10. ལྟ་དཔེར་-ལྟེ་འཁོར་འཁོར་ལྟེ་= ཡང་དག་པར་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པའི་ 11. ལྟ་མེ་-བཟུན་

ནམ་པར་མི་དྲག་པའི་ཡང་དག་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་མེ་<sup>1</sup>བྱང་ན་ཤིང་གཉིས་བྱུང་པ་...  
 ལས་མེ་བྱང་བས་ཤིང་དེ་གཉིས་བསྐྱེད་པ་བཞིན་དུ་དེ་ཡང་སྤྱིས་དེ་ཉིད་<sup>2</sup>ཀྱིས་...  
 བསྐྱེད་<sup>3</sup>པར་འགྱུར་རོ། །ཞེས་འཕགས་པ་དཀོན་མཆོག་བརྟེན་པ་ལས་<sup>4</sup>  
 བཀའ་སྤྱུལ་དྲ། །

ཡང་དག་པ་ལ་སོགས་པའི་ལས་ཅི་ཡང་མི་བྱའོ་ཞེས་ཟེར་བ་དེ་ནི་དེ་སྐད་སྤྱི་  
 བས་ལས་ཟད་ནས་གྲོལ་བར་འགྱུར་རོ། །ཞེས་སྤྱི་བྱེད་པས་ཅན་ཀྱན་དུ་འཛོཾ་བའི་  
 སྤྱི་བ་ཁས་སྤངས་<sup>7</sup>པར་<sup>8</sup>འགྱུར་རོ། །བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱི་གསུང་རབ་ལ་ཉིན་  
 མོངས་པ་ཟད་ནས་གྲོལ་བར་འགྱུར་<sup>9</sup>གྱི། ལས་ཟད་ནས་གྲོལ་བར་འགྱུར་བ་  
 མེད་དོ། །ཐོག་མ་མེད་པ་ནས་བསགས་པའི་ལས་ཟད་པར་བྱ་<sup>10</sup>མི་ལུས་དེ། དེ་  
 ནི་མཐའ་ལས་པའི་སྤྱིར་རོ། །ངན་སོང་ལ་སོགས་པ་ཡང་དེའི་འབྲས་བུ་ལ་སྤྱོད་  
 པའི་ཆོ་ལས་གཞན་དག་ཀྱང་འབྱུང་སྟེ། ཉོན་མོངས་པ་མེད་པར་<sup>11</sup>མ་གྱུར་<sup>12</sup>དེ་  
 གྱུར་གནས་ན་ལས་དགག་པར་མི་ལུས་པའི་སྤྱིར་མར་མེ་<sup>13</sup>མ་འགགས་ན་<sup>14</sup>དེའི་

- ལྷ་མི་—མ་ 2. བོད་བའི་དཔར་མ་རྣམས་སྤྱི་དེ་གཉིས་ཀྱིས་ཞེས་གསལ་ཡང་། ལྷ་དཔེར་—  
 “पञ्चात् तेनैव = ལྷ་མི་དེ་ཉིད་ཀྱིས་” ཞེས་གསལ་བ་ཤིན་དུ་འཐད་པར་སྤྱད་པས་དེ་ལྷ་དཔེར་  
 ཐུག་སོ། ། 3. ལྷ་མི་—སྤྱི་ག་ 4. ལྷ་མི་—ལས་ཀྱང་ 5. ‘སྤྱི་བྱེད་པས་’—ལྷ་དཔེར་མེད་  
 6. བོད་དཔེ་རྣམས་སྤྱི་གཉིས་དུ་ཆོས་པ་ཞེས་གསལ་ཡང་། ལྷ་དཔེར་‘आजीवक = ཀྱན་དུ་འཛོཾ་བ་’  
 ཞེས་བ་འཐད་པར་སྤྱད་ངོ་། ། 7. ལྷ་མི་—སྤྱི་ག་ 8. ལྷ་མི་—པར་ 9. ལྷ་མི་—འགྱུར་བ་  
 མེད་དོ། (ཆད་སྤྱོད་—ཉོན་མོངས་ཟད་ནས་གྲོལ་བར་འགྱུར་ “གྲོ་ ལས་ཟད་ནས་གྲོལ་བར་འགྱུར་  
 བ་” མེད་དོ།) — གཞུང་ཆོག་ཆད་སྤྱོད་འདྲ་པས་ན་གཞུང་དེན་ལག་པའི་དོན་ཅན་དུ་སྤྱོད་པར་  
 བྱེད་པས་ཉིན་ཆབ་ཤིན་དུ་ཆེད་དོ། 10. ལྷ་མི་—ཐ་པར་ 11. ལྷ་མི་—པར་གྱུར་(ཆད་སྤྱོད་—མེད་  
 པར་མ་གྱུར་དེ།) 12. ལྷ་མི་—འགྱུར་ 13. ལྷ་མི་—མེ་འགག་(ཆད་སྤྱོད་—མར་མེ་མ་’  
 འགག་ན་) 14. ལྷ་མི་—ནས་



འོད་མི་འགག་<sup>1</sup>པ་བཞིན་ནོ། །ལྷག་མཐོང་ལ་སྐྱར་བ་འདེབས་པ་དེའི་ཉན་མོངས་  
 བ་ཟད་བར་འགྱུར་མི་སྤྱོད་དོ་ཞེས་སྒྲུབ་བཤད་པ་ཡིན་<sup>2</sup>ནོ། །ཅི་ལྟེ་ཉན་མོངས་པ་  
 ཟད་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ལྷག་མཐོང་ལ་བདེན་<sup>3</sup>པར་བྱའོ་སྒྲུབ་དུ་སེམས་ན་<sup>4</sup>ནི་དེའི་...  
 ཚེ་ཉན་མོངས་པ་ཟད་བ་ཉིད་ཀྱིས་གྲོལ་བར་འགྱུབ་སྟེ། ལས་ཟད་བར་བྱ་བའི་ཚོགས་<sup>5</sup>  
 དོན་མེད་བར་འགྱུར་རོ། །མི་དགེ་བའི་ལས་མི་བྱའོ་ཞེས་ཟེར་བ་དེ་ནི་རིགས་ན།  
 དགེ་བ་ཅི་ལྟེ་དགག་གཤམ་དེ་འཁོར་བར་བྱེད་པས་དགག་པ་སྐྱད་དུ་བྱས་ན་  
 ཡང་དེ་ནི་མི་རྒྱུད་སྟེ། བདག་ལ་སོགས་པར་ཕྱིན་ཅི་ཡོག་གི་ཀྱན་ནས་བསྐྱུང་<sup>7</sup>  
 བའི་དགེ་<sup>8</sup>བའི་<sup>9</sup>ལས་<sup>10</sup>གང་ཡིན་པ་དེ་ཉིད་འཁོར་བར་བྱེད་པ་ཡིན་གྱི། བྱང་ཆུབ་  
 སེམས་དབའ་ནིས་ཀྱི་ལས་སྤྱོད་ཇི་ཆེན་པོས་ཀྱན་ནས་བསྐྱུང་<sup>11</sup>པ་སྐྱེ་ན་མེད་པ་ཡང་  
 དག་པར་རྒྱུགས་པའི་བྱང་ཆུབ་དུ་ཡོངས་སུ་བསྐྱེས་པ་ཡང་འཁོར་བར་བྱེད་པ་མ་  
 ཡིན་ནོ། །དེ་སྐྱོད་<sup>12</sup>དུ་འགགས་པ་ས་བཅུ་པ་ལས་<sup>13</sup>ཀྱང་བཀའ་སྤྱུལ་དེ། དགེ་  
 བ་བཅུའི་ལས་ཀྱི་ལས་དེ་དག་ཉིད་བསྐྱོང་<sup>14</sup>པ་ལ་སོང་པ་ཡོངས་སུ་སྐྱུང་<sup>15</sup>པ་བྱས་...  
 བའི་བྱེ་བྲག་གིས་ནི་ཉན་ཐོས་དང་། རང་སངས་རྒྱས་དང་། བྱང་ཆུབ་སེམས་  
 དབའ་དང་། སངས་རྒྱས་ཉིད་སྐྱུབ་པར་བྱེད་དོ། །ཞེས་འབྱུང་ངོ་། །འཕའ་

- 
1. ལྷག་པ་—དགག་
  2. ལྷག་པ་—བཞིན་ནོ།
  3. ལྷག་པ་—བཤད་
  4. ལྷག་པ་—ན་དེའི་
  5. བོད་དཔེ་རྒྱུ་མཐོག་གི་དོན་མེད་པ་ཞེས་གསལ་ཡང་། ལྷག་པའི་ཡུལ་གྱི་མཐོག་དོན་མེད་པ་ཞེས་གསལ་བ་འཕྱད་པར་སྐྱུང་ངོ་།
  6. ལྷག་པའི་—ལྷག་པའི་ཡུལ་གྱི་མཐོག་དོན་མེད་པ་ཞེས་གསལ་བ་འཕྱད་པར་སྐྱུང་ངོ་།
  7. ལྷག་པ་—སྐྱུང་
  8. ལྷག་པའི་—མཐོག་གི་ཡུལ་གྱི་མཐོག་དོན་མེད་པ་ཞེས་གསལ་བ་འཕྱད་པར་སྐྱུང་ངོ་།
  9. ལྷག་པ་—དགེ་བ་དེ་(ཆད་—དགེ་བའི་ལས་གང་ཡིན་པ་དེ་ཉིད་)
  10. 'ལས'—ལྷག་པའི་ཡུལ་གྱི་མཐོག་དོན་མེད་པ་ཞེས་གསལ་བ་འཕྱད་པར་སྐྱུང་ངོ་།
  11. ལྷག་པ་—སྐྱུང་
  12. ལྷག་པའི་—སྐྱུང་ལྷག་པའི་ཡུལ་གྱི་མཐོག་དོན་མེད་པ་ཞེས་གསལ་བ་འཕྱད་པར་སྐྱུང་ངོ་།
  13. ལྷག་པ་—བཀའ་
  14. ལྷག་པའི་—སྐྱུང་
  15. ལྷག་པའི་—ཆེད་ཀྱི་ཡུལ་གྱི་མཐོག་དོན་མེད་པ་ཞེས་གསལ་བ་འཕྱད་པར་སྐྱུང་ངོ་།

པ་དགོན་མཆོག་བརྟེན་པ་ལས་1ཀྱང་། “ཅུ་ཁྱུང་ཆེན་པོ་ཐམས་ཅད་གྱི་མཚན་  
 ཆེན་པོར་བྱུགས་པའི་ཅུ་ཁྱུང་པོ་བཞིན་དུ་བྱང་ཅུ་མཐས་དཔའ་ནམས་སྒོ་སྒྲ་……  
 ཚོར་ནས་དགོ་(2བའི་ཅ་བ)བསགས་པ་ཡང་(3ཐམས་ཅད་མཆོག་པ་ཉིད་དུ་ཡོངས་  
 སུ་བསྐྱོས་པ་)ཐམས་ཅད་མཆོག་པ་ཉིད་དུ་རོ་གཅིག་པ་ཉིད་དུ་འགྱུར་རོ” །ཞེས་  
 བསྐྱུངས་སོ། །

མངས་ཀྱིས་དང་བྱང་ཅུ་མཐས་དཔའ་ནམས་ཀྱི་གཞུགས་ཀྱི་སྐུ་དང་། ཞིང་  
 ཡོངས་སུ་དག་པ་དང་། འོད་དང་། འཁོར་དང་། ཡོངས་སྤྱོད་ཆེན་པོ་ལ་  
 སོགས་པ་ཕུན་སུམ་ཆོགས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་སྤྱིན་པ་ལ་སོགས་པ་བསོད་ནམས་  
 ཀྱི་ཆོགས་ཀྱི་འབྲས་བུ་ཉིད་ཡིན་པར་མདོ་སྡེ་4དང་དེ་དག་དུ་བཅོམ་ལྷན་འདས་……  
 ཀྱིས་བཀའ་སྤྱུལ་པ་དེ་དང་ཡང་འགལ་བར་འགྱུར་རོ།5 །དགོ་བ་སྤྱོད་པ་བཀའ་  
 བས་ནི་སོ་སོར་ཐར་པའི་སྤྱོད་པ་ལ་སོགས་པ་ཡང་བཀའ་བར་གྱུར་དེ། དའི་  
 ཕྱིར་དའི་མགོ་བོ་དང་ཁ་སྐྱུ་བྱེགས་པ་དང་ཆོས་གོས་རྩར་སྤྱིག་བཅང་6པ་ལ་སོར་  
 པ་ཡང་དོན་མེད་པར་འགྱུར་རོ། །དགོ་བའི་ལས་མངོན་པར་འདུ་བྱ་བ་ལ་མི་  
 ཕྱོགས་པར་གྱུར་ན་འཁོར་བ་ལ་མི་ཕྱོགས་པ་དང་། མཐས་ཅན་གྱི་དོན་7བྱ་བ་  
 ལ་མི་ཕྱོགས་པ་ཀུན་དུ་བཞེན་པར་འགྱུར་དེ། དའི་ཕྱིར་དའི་བྱང་ཅུ་བྱང་གྱུང་  
 བསྐྱུངས་8པར་འགྱུར་རོ། །འཕགས་པ་དགོངས་པ་ངེས་9པར་འབྲེལ་བ་ལས་10  
 ཀྱང་བཀའ་སྤྱུལ་དེ། “སེམས་ཅན་གྱི་དོན་བྱ་བ་ལ་ཤིན་དུ་མི་ཕྱོགས་པ་དང་།

1. ལྟེ་—བཀའ་(དགོན་བརྟེན་པ་ཆ་' 726)
2. ཅུ་དཔེར་ཡོད་
3. ཅུ་དཔེར་དང་མདོ་ངོ་མ་  
གཉིས་ཀར་ཡོད།
4. ལྟེ་མི་—སྤྱོད་(ཆད་—མདོ་སྡེ་“དེ་དང་)
5. ལྟེ་མི་—རོ་སྤྱོད་  
(ཆད་—འགྱུར་རོ། །དགོ་བ་“སྤྱོད་པ་)
6. ལྟེ་མི་—བཅད་
7. ལྟེ་མི་—དོན་ལ་(ཆད་—  
དོན་“བྱ་བ་”ལ་)
8. ལྟེ་མི་—སྤྱོད་པར་
9. ལྟེ་མི་—དེས་
10. ལྟེ་—བཀའ་(མདོ་“ཅ་’ 76)





སོར་རྟོག་ལ། འདུས་བྱས་ཀྱི་དགེ་བས་ཀྱང་ཡོངས་སུ་སྒྲོ་བ་ནི་བདུད་ཀྱི་ལས་སོ། །  
 བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ལས་ཡང་རབ་དུ་ཤེས་ལ་པ་རེ་ལ་དུ་སྤྱོན་པའི་ལས་ཡང་ཡོངས་སུ་སྒྲོ་  
 ཚོལ་བ་ནི་བདུད་ཀྱི་ལས་སོ།” ཞེས་བཟུན་ད། ཡང་དེ་ཉིད་ལས།<sup>1</sup> “སྤྱོན་  
 པ་ལ་སེམས་མངོན་པར་ཞེན་པ་ནས་ཤེས་རབ་ཀྱི་བར་ལ་སེམས་མངོན་པར་ཞེན་  
 པ་ནི་བདུད་ཀྱི་ལས་སོ།” ཞེས་བཤད་པ་དེ་ལ་སྤྱོན་པ་ལ་སོགས་པ་བཟུན་པ་  
 དགག་པ་ནི་མ་ཡིན་<sup>2</sup>གྱི། ངར་འཛིན་པ་དང་། ང་ཡིར་འཛིན་པ་ལ་སེམས་  
 མངོན་པར་ཞེན་པ། གཟུང་བ་དང་འཛིན་པ་ལ་སེམས་མངོན་པར་ཞེན་པ། དམིཌ་  
 པ་ཅན་ཀྱི་སྤྱོན་པ་ལ་སོགས་པ་<sup>3</sup>སྤྱོན་ཅི་ཡོག་དུ་མངོན་པར་ཞེན་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་  
 དགག་པ་སྟེ། སྤྱོན་ཅི་ཡོག་དུ་མངོན་པར་ཞེན་པས་ཀྱན་ནས་བསྐྱང་<sup>4</sup>པའི་སྤྱོན་པ་  
 ལ་སོགས་པ་ཡོངས་སུ་དག་པར་སྤྱད་དེ་བདུད་ཀྱི་ལས་སོ་ཞེས་བཤད་དོ། །  
 དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་བསམ་གཏན་ཡང་བཟུན་པར་བྱ་བ་མ་ཡིན་པར་འགྱུར་རོ། །  
 དེ་ལྟར་གྱུར་ན་ཐར་བར་ཡང་ཇི་ལྟར་འགྱུར། དེའི་སྤྱིར་ན་དམིགས་པ་ཅན་སྟེ་<sup>5</sup>  
 ཚོགས་སུ་འདུ་ཤེས་པས་སྤྱོན་པ་བྱིན་<sup>6</sup>པ་ལ་སོགས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་ཡོངས་  
 སུ་དག་པ་མ་ཡིན་པར་བཟུན་པའི་སྤྱིར་འཕགས་པ་ནས་མཁའ་མཛོད་ལས་<sup>7</sup>ཀྱང་།  
 “སེམས་ཅན་<sup>8</sup>སྤྱོན་<sup>9</sup>ཅི་ཡོག་གི་ལས་སྟེ་ཚོགས་ལ་སོགས་པའི་འདུ་ཤེས་ཅན་གྱི་

- 
1. ལྟེ་—བཟུན་(དཔྱུ་མ་ཀེ་ ༡༩༩) :—གོང་གསལ་མདོ་དེ་ཉིད་—202 2. ལྟེ་མེ་—ཡན་རྟེ་  
 3. ལྟེ་མེ་—པ་ལ་ 4. ལྟེ་མེ་—སྐྱང་ 5. ལྟེ་དཔེར་—सत्त्वनाना = སེམས་ཅན་ལྟེ་ཚོགས་  
 6. ‘བྱིན་པ་’—ལྟེ་དཔེར་མེད་ 7. ལྟེ་—ཤལ་(མདོ་པ་ 200) 8. ལྟེ་མེ་—སེམས་ཅན་ལྟེ་  
 ཚོགས་ལ་སོགས་པའི་འདུ་ཤེས་ལ་སྤྱོན་པ་ལྟེ་དཔེར་མེད་མཐུན་ཆབ་ཆེ་ཡང་། མདོ་ངོ་མ་དང་  
 སྐོམ་རིམ་ལྟེ་དཔེར་མེད་ལྟེ་དག་སྐར་མ་གཟུམ་པར་ཆོན་མེ་མཐུན་པས་དཔྱད་པར་བྱའོ། །  
 9. ‘སྤྱོན་ཅི་ཡོག་གི་ལས་’—ལྟེ་དཔེར་མེད་



སྤྱི་ལོ་ལ་སོགས་པ་ནི་བདུན་གྱི་ལས་སོ།” །ཞེས་བཤད་པོ། །ཐུང་<sup>1</sup>པོ་གསུམ་  
 བའི་ཡོངས་སུ་བསྐྱོད་པ་ལས་<sup>2</sup>ཀྱང་བཀའ་སྤྱི་ལ་ །“གང་བདག་གིས་སྤྱི་ལ་  
 དང་། རྒྱལ་ཁྲིམས་དང་། བཟོད་པ་དང་། བཙོན་འགྲུས་དང་། བསམ་  
 བཅུན་དང་། ཤེས་རབ་མཉམ་པ་ཉིད་དུ་མ་འཛུལ་ནས་དཔྱད་གསུངས་པར་ལྟུང་བས་  
 སྤྱི་ལ་བཙུལ་<sup>3</sup>པ་དང་། རྒྱལ་ཁྲིམས་མཆོག་དུ་འཛིན་པས་རྒྱལ་ཁྲིམས་སྤྱང་  
 བ་དང་། བདག་དང་གཞན་དུ་འདྲ་ཤེས་པས་བཟོད་པ་བསྐྱེད་པ་ལ་སོགས་  
 བ་གང་ལགས་པ་དེ་དག་ཐམས་ཅད་སོ་སོར་བཤགས་པར་བཤྲོའོ།” །ཞེས་  
 འགྲུང་བ་གང་ཡིན་པ་དེ་ལ་ཡང་དཔྱད་གསུངས་པ་ཅན་སྤྱི་ལ་སྤྱི་ལ་སྤྱི་ལ་<sup>4</sup>ཕྱིན་  
 ཅི་ཡོག་དུ་མངོན་པར་ཞེན་པས་ཀྱན་ནས་བསྐྱེད་པའི་ཕྱིར་སྤྱི་ལ་ལ་སོགས་པ་……  
 ཡོངས་སུ་དག་པ་མ་ཡིན་པ་ཅམ་གྱི་ཕྱིར་<sup>5</sup>བཤད་གྱི། དུས་ཐམས་ཅད་དུ་སྤྱི་ལ་  
 ལ་སོགས་པ་ལ་བསྐྱེད་པ་དགག་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་དཔྱད་གསུངས་<sup>6</sup>པ་  
 ཅན་ཕྱིན་<sup>7</sup>ཅི་ཡོག་དུ་གྱུར་པ་འབའ་ཞིག་གི་མ་ཡིན་ན་སྤྱི་ལ་ལ་སོགས་པ་ཐམས་  
 ཅད་བྱེ་བྲག་མེད་པར་དགག་པར་འགྱུར་པོ། །ཚངས་པས་ཉུས་པ་ལས་<sup>8</sup>ཀྱང་།<sup>9</sup>  
 “སྤྱོད་པ་ཇི་སྟེན་པ་དེ་དག་ཐམས་ཅད་ནི་ཡོངས་སུ་དོག་པའོ། །ཡོངས་སུ་མི་  
 དོག་པ་ནི་བྱང་ཆུབ་བོ།” །ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་  
 ལ་ཡང་སྤྱི་ལ་ལ་སོགས་པར་<sup>10</sup>ནམ་པར་དོག་པའི་སྐབས་ཡིན་པས་དེ་ནི་ཡོངས་སུ་

1. ལྟ་དཔེར་—‘ཕུལ་ཆ་མཁུ་ཤེས་པ་ལུ་ལུ་ = དགེ་བའི་བྱང་པོ་ཡོངས་སུ་བསྐྱོད་པ་ལས་’ །ཞེས་གསུངས་  
 བས་པོར་དཔེ་དང་ཁྱད་ཅེནོ། 2. ལྟ་—བཀའ་(མདོ་ལ་ ༥2) 3. ལྟ་པོ་—སྤྱི་ལ་  
 4. ལྟ་པོ་—མ་ལ་ 5. ལྟ་པོ་—སྤྱི་ལ་བཤགས་ཀྱིས་ 6. ལྟ་དཔེར་—འཕུལ་ཆ་ལུ་ལུ་ལུ་ =  
 དཔྱད་གསུངས་པ་ལ་སོགས་པར་ལྟུང་བ་ 7. ‘སྤྱི་ལ་ཅི་ཡོག་’—ལྟ་དཔེར་མེད་ 8. ལྟ་པོ་—ལས། ལྟ་དོ་  
 9. ལྟ་པོ་—བཀའ་(མདོ་ལ་ ཚངས་པ་ཁྱད་པར་ཞེས་ཀྱིས་ཉུས་པ་—r2) 10. ལྟ་པོ་—ལས་

དོག་པ་ཉིད་དུ་བཤད་གྱི།<sup>1</sup> མཚན་ས་མེད་པར་གནས་ཤིང་མངོན་པར་འདུ་བྱ་  
 པ་མེད་པར་འཇུག་པ་ལ་གནས་པའི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ནི་ལྟར་བརྟན་པ་ཡིན་  
 དེ། གཞན་དུ་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་དེ་ཙམ་དུ་བརྟན་དེ། སྦྱོན་པ་ལ་སོགས་པ་<sup>2</sup>  
 ཐམས་ཅད་ལ་དོན་དམ་པར་ན་མ་སྦྱིས་པར་ཡོངས་སུ་བརྟན་གྱི། སྦྱོད་པར་<sup>3</sup>མི་  
 བྱ་བ་ནི་བཀའ་ས་སྦྱལ་དོ།

དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་མར་མེ་མཛད་གྱི་སྤྲ་ཡོགས་སུ་<sup>4</sup>མངས་བྱས་གང་དག་ལ་...  
 བཅོམ་ལྷན་འདས་གྱིས་བསྟེན་<sup>5</sup>བཀུར་མཛད་པ་དེ་དག་གི་མཚན་བཅོམ་འདས་...  
 ལྷན་འདས་གྱིས་བསྐྱེད་པར་ཡང་<sup>6</sup>བཞེད་པར་མི་སྦྱོད་པ་དེ་དག་གིས་ཀྱང་བཅོམ་...  
 ལྷན་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་གནས་སྐབས་ན་བཞུགས་པའི་སྦྱོད་པ་ཅིའི་སྤྱར་དགག་  
 པ་ས་མཛད། མར་མེ་མཛད་གྱིས་ཀྱང་དེའི་ཆོ་བཅོམ་ལྷན་འདས་གྱི་<sup>7</sup>སྦྱོད་པ་  
 དགག་པར་<sup>8</sup>མ་མཛད་པ་ཁོ་ན་སྟེ། གང་གི་ཆོས་བརྟན་པ་ལ་གནས་ཤིང་ཞི་  
 བ་མཚན་ས་མེད་པ་ལ་གནས་པ་དེ་གཟིགས་ནས་དེའི་ཆོ་བཅོམ་ལྷན་འདས་ལྟར་...  
 བརྟན་གྱི། དེ་ན་དེའི་སྦྱོད་པ་བཀའ་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །ས་བརྟན་པ་ལ་བྱང་  
 ཆུབ་སེམས་དཔའ་ནམས་གྱི་མཚན་ས་མེད་པར་གནས་པ་མཚོག་དེ་ནི་དེ་དག་<sup>9</sup>དེ་  
 ཉིད་དུ་ཡོངས་སུ་བྱ་ངན་ལས་འདས་པར་འགྱུར་དུ་འོང་ངོ་། །ཞེས་ས་བཅུ་<sup>10</sup>པ་  
 ལས་སངས་བྱས་ནམས་གྱིས་དགག་པ་མཛད་དོ། །གལ་དེ་ནས་པ་ཐམས་ཅད་དུ་  
 སྦྱོད་པ་དེ་མི་བྱ་བར་གྱུར་ན་ནི་སྤྱར་བཞེད་པ་ཐམས་ཅད་དང་ཡང་འགལ་བར་...  
 འགྱུར་ངོ།

1. ལྟ་བུ་གྱིས་ 2. ལྟ་བུ་ལས་ 3. ལྟ་བུ་པ་ 4. ལྟ་བུ་ན་ 5. ལྟ་བུ་ལྟེན་  
 6. ལྟ་བུ་ཡང་མི་(ཆད་ཡང་བཞེད་པར་མི་སྦྱོད་) 7. ལྟ་བུ་གྱིས་ 8. ལྟ་བུ་པར་མཛད་  
 (ཆད་ལྟེན་པར་མ་མཛད་པ་) 9. ལྟ་བུ་དག་ཉིད་ 10. ལྟ་བུ་ས་བཅུ་ལས་



ཡང་ཚངས་བས་ཀྱིས་བ་དེ་ཉིད་ལས་<sup>1</sup>གསུངས་པ། “སྤྱིན་བ་ཡང་སྤྱིན་ལ་  
 དེའི་ནས་བར་སྤྱིན་བ་<sup>2</sup>ལ་ཡང་མི་རེ་ལ། རྒྱལ་ཁྲིམས་ཀྱང་བསྐྱུང་བ་དེ་ཡང་སྤྱོ་  
 འདྲགས་བས་མ་ཡིན།” ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་འབྱུང་ངོ་། །ཚངས་བ་བྱང་  
 རྒྱལ་སེམས་དབང་ཚོས་བཞེད་པ་ལྟར་ན་བ་ནམས་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཚོས་ནམས་ལས་...  
 ཕྱིར་མི་ཐོག་བ་ཡིན་ནོ། །བཞི་པོ་དེ་དག་གང་ཞེ་ན། འཁོར་བ་དབག་དུ་  
 མེད་བ་ཡོངས་སུ་འཛིན་བ་དང་། སངས་རྒྱས་དབག་དུ་མེད་བ་ལ་རིམ་འབྲུ་  
 དང་མཚན་བ་དབག་དུ་མེད་བ་བྱེད་པ། ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་འབྱུང་བ་ཐམས་  
 ཅད་དང་འགལ་ཡོ། །དབང་བོ་རྒྱལ་བོ་ཁོ་ནས་སྤྱོད་པར་<sup>3</sup>བྱའི། །དབང་བོ་  
 རྟོན་བོས་མི་བྱའོ་ཞེས་བཞེད་པར་མི་བྱང་སྟེ། འདི་ལྟར་ས་དང་བོ་ནས་བརྒྱང་  
 སྟེ་ས་བཅུ་པའི་བར་ལ་གནས་པའི་བྱང་རྒྱལ་སེམས་དབང་ནམས་ཀྱི་སྤྱིན་བ་ལ་...  
 སོགས་པའི་སྤྱོད་བ་ནམས་འབྱུང་ཞིང་རྟོག་མ་ནམས་ཀྱང་ཀྱན་དུ་མི་སྤྱོད་བ་ནི་མ་...  
 ཡིན་ནོ། །ཞེས་གསུང་པའི་ཕྱིར་ངོ་། །སར་རྒྱལ་བ་ནམས་དབང་བོ་རྒྱལ་བོ་  
 ཞེས་བྱ་བར་ཡང་མི་བྱང་སྟེ། འཕགས་བ་ཉེ་བར་འཁོར་གྱིས་ཀྱིས་བ་ལས་<sup>4</sup>  
 ཀྱང་། “མི་སྤྱོད་པའི་ཚོས་ལ་བཞེད་བ་ལ་གནས་བ་ཉིད་ཀྱིས་གཏོང་བ་དང་།  
 གཏོང་བ་ཆེན་པོ་དང་། རབ་དུ་གཏོང་བ་དག་བྱའོ།” ཞེས་བཀའ་སྤྱུལ་ཏེ།<sup>5</sup>  
 མདོ་ཀྱན་ལས་བདུས་བ་ལས་<sup>6</sup>ཀྱང་། “ཕ་རོལ་དུ་བྱིན་བ་དུག་ལ་སོགས་པ་  
 སྤྱུབ་བ་དང་ལྟན་པའི་བྱང་རྒྱལ་སེམས་དབང་ནམས་ནི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་རྒྱ་

- 
1. ཕྱི་བཀའ་(མདོ་—བ་ཚངས་བ་ཁྱེད་པར་སེམས་ཀྱིས་ཀྱིས་བ། 2. ཕྱ་མེ་—བ་དེ་ལ་  
 3. ཕྱ་མེ་—བ་བྱའི་ 4. ཚོས་ཞེས་ངེས་ཆེད་མ་བྱུང་བ། 5. ཕྱ་མེ་—དྲ་  
 6. ཚོས་ཞེས་ངེས་ཆེད་མ་བྱུང་བ།

འབྲུལ་གྱིས་<sup>1</sup>འགྲོ་བ་ཡིན་ནོ།” ཞེས་བསྒྲགས་སྟེ། དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་  
 རྩ་འབྲུལ་གྱིས་<sup>2</sup>འགྲོ་བ་ལས་མགྲོགས་པ་ནི་གཞན་མེད་དོ། །པ་རྩལ་དུ་བྱིན་པ་  
 དུག་དང་། ས་བཅུ་མ་གཏོགས་པར་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ནམས་ཀྱི་<sup>3</sup>ཤིན་དུ་  
 ཟུར་བར་འཇུག་པའི་ལས་གཞན་ནི་མེད་དོ། ཞེས་སེམས་ཀྱི་རྒྱུད་<sup>4</sup>གསེར་དག་  
 པ་བཞིན་དུ་རིམ་གྱིས་འདག་པར་འགྱུར་རོ། ཞེས་མདོ་སྡེ་ལས་ཀྱང་བཀའ་  
 སྤྱུལ་དོ། །འཕགས་<sup>5</sup>པ་ལང་ཀར་གཤེགས་པ་དང་། ས་བཅུ་པ་ལ་སོགས་  
 པ་ལས་ཀྱང་། བྱང་<sup>6</sup>ཆུབ་སེམས་དཔའ་གང་གི་ཆེ་དེ་བཞིན་ཉིད་ལ་གནས་པར་  
 གྱུར་བ་དེའི་ཆེ་ས་དང་བོར་ཆུད་པ་ཡིན་དོ། དེ་ནས་རིམ་གྱིས་ས་གོང་མ་ནམས་  
 ཡོངས་སུ་སྦྱངས་ནས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་ས་ལ་འཇུག་གོ། ཞེས་<sup>7</sup>བཀའ་  
 སྤྱུལ་<sup>8</sup>པ་སྟེ། དེའི་བྱིར་ས་དང་པ་རྩལ་དུ་བྱིན་པ་ལས་<sup>9</sup>མ་གཏོགས་པར་སངས་  
 གྱུས་ཉིད་ཀྱི་<sup>10</sup>གྲོང་ཁྱིམ་དུ་ཅིག་ཅར་<sup>11</sup>འཇུག་པའི་སྒོ་གཞན་ནི་མེད་དོ། བཅོམ་  
 རྒྱན་འདས་ཀྱིས་ཀྱང་མདོ་སྡེ་ལ་སོགས་པ་གང་<sup>12</sup>ལས་ཀྱང་བཀའ་ས་སྤྱུལ་དོ། །

གཤེད་བསམ་གཏན་ཉིད་དུ་པ་རྩལ་དུ་བྱིན་པ་དུག་འདུས་བས་ན་དེ་བཞིན་  
 བས་པ་རྩལ་དུ་བྱིན་པ་ཐམས་ཅད་བཞེན་པར་འགྱུར་དོ། དེའི་བྱིར་བྱིན་པ་ལ་སོང་  
 པ་<sup>13</sup>པ་<sup>14</sup>རྩལ་དུ་བྱིན་པ་གཞན་སོ་སོར་བཞེན་མི་དགོས་པ་སྐད་དུ་བྱ་ན་ཡང་།

1. ལྟ་བུ་—གྲོ་ 2. ལྟ་བུ་—གྲོ་ 3. ལྟ་བུ་—གྲོ་ 4. ལྟ་བུ་—གྲོ་དུ་འདུག་(ཆད་—  
 ལྟ་བུ་གསེར་དག་པ་) 5. ལྟ་བུ་མེད་—མདོ་མཚན་དེ་གཉིས་མེད། 6. བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་  
 ཞེས་སོགས་མདོ་འི་དོན་ཐོབ་ཞུ་འདུངས་མཛད་པ་ལས། མདོ་ཆོག་དངོས་ཀྱི་ལྟ་བུ་འདྲིན་མཛད་  
 བ་ན་མེན་པར་སྤང་ངོ་། 7. ‘ཞེས་བཀའ་སྤྱུལ་པ་སྟེ’—ལྟ་བུ་མེད་མེད། 8. ལྟ་བུ་—སྤྱུལ་སྟེ་  
 9. ལྟ་བུ་—པ་ 10. ལྟ་བུ་—གྲོ་ 11. ‘ཅིག་ཅར’—ལྟ་བུ་མེད་མེད། 12. ལྟ་བུ་—གང་ནས་  
 13. ལྟ་བུ་—པ་གཞན་ 14. ‘པ་རྩལ་དུ་བྱིན་པ་གཞན་’—ལྟ་བུ་མེད་མེད་



དེ་མི་ཅུང་ཕྱི་དེ་ཕྱི་རྒྱུ་དུ་ཟླ་ན་སངས་ཀྱིས་ལ་བ་ལང་གི་ཕྱི་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་  
 བྱས་པའི་ནང་དུ་ཡང་པ་རྩོལ་དུ་ཕྱིན་པ་དུག་འདུས་པས་ན་དཀྱིལ་འཁོར་འབའ་  
 ཞིག་བྱའི། བསམ་གཏན་ལ་སོགས་པ་མི་བྱ་བར་འགྱུར་རོ། །ཉན་ཐོས་  
 འགོག་པའི་སྒྲིམས་པར་འཇུག་པ་ལ་སྒྲིམས་པར་ཞུགས་པ་ལ་ཡང་མཚན་མ་ལ་  
 སོགས་པ་ཀུན་དུ་མི་འབྱུང་བའི་ཕྱིར་དེ་ཕྱིར་པ་རྩོལ་དུ་ཕྱིན་པ་དུག་ཡོངས་སུ་  
 རྫོགས་པར་འགྱུར་དེ། །དེའི་ཕྱིར་ཉན་ཐོས་ནམས་དང་། བྱང་ཆུབ་སེམས་  
 དབའ་ནམས་བྱེ་བྲག་མེད་པར་བསྟན་པར་འགྱུར་རོ། །བྱང་ཆུབ་སེམས་དབའ་  
 ནམས་གནས་སྐབས་ཐམས་ཅད་དུ་པ་རྩོལ་དུ་ཕྱིན་པ་དུག་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པར་བྱ་  
 བར་བསྟན་པའི་ཕྱིར་བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱིས་པ་རྩོལ་དུ་ཕྱིན་པ་རེ་རེར་ཡང་པ་  
 རྩོལ་དུ་ཕྱིན་པ་ཐམས་ཅད་འདུས་པར་བཀའ་སྤྱུལ་གྱི། །པ་རྩོལ་དུ་ཕྱིན་པ་གཅིག་  
 ཁོ་ན་ཞིག་བསྟེན་པར་ནི་མ་གསུངས་སོ། །དེ་སྐད་འཕགས་པ་ཆོས་ཐམས་ཅད་  
 ཤིན་དུ་གྲུས་པ་ལས་<sup>1</sup>ཀྱང་བཀའ་སྤྱུལ་དེ། “བྱམས་པ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབའ་  
 ནམས་ཀྱི་<sup>2</sup>པ་རྩོལ་དུ་ཕྱིན་པ་དུག་ཡང་དག་པར་བསྐྱབས་<sup>3</sup>པ་འདི་ནི་རྫོགས་པའི་  
 བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཕྱིར་ཡིན་ན། དེ་ལ་ཡང་མི་ལྷན་པོ་དག་འདི་སྐད་དུ་བྱང་ཆུབ་སེམས་  
 དབས་ཤེས་རབ་ཀྱི་པ་རྩོལ་དུ་ཕྱིན་པ་ཁོ་ན་ལ་བསྐྱབ་པར་བྱའི། པ་རྩོལ་དུ་ཕྱིན་  
 པ་ལྷག་མ་ནམས་ཀྱིས་ཅི་ཞིག་བྱ་ཞེས་ཟེར་ཞིང་། དེ་དག་པ་རྩོལ་དུ་ཕྱིན་པ་  
 གཞན་<sup>4</sup>དག་ལ་སྤྱན་འབྱེན་པར་སེམས་སོ། །མ་པམ་པ་འདི་རི་རྩུམ་དུ་སེམས།  
 ཀླ་ཤིའི་བྱུང་བོར་གྱུར་པ་གང་ཡིན་པ་དེས་སྤྱག་རོན་གྱི་ཕྱིར་རང་གི་ཤ་ཁྲ་ལ་བྱིན་

1. མདོ་འདི་དགའ་འགྱུར་ནང་མེད་ཆོད་ལྷང་པས་དཔྱད་དགོས་སོ། 2. ལྷ་མོ་—ཀྱིས་  
 3. ལྷ་མོ་—བསྐྱབ་ 4. ལྷ་མོ་—གཞན་ལ་

པ་དེ་ཤེས་རབ་འཆལ་བ་ཡིན་ནམ། བྱམས་བས་གསོལ་པ། བཅོམ་ལྷན་  
 འདས་དེ་ནི་མ་ལགས་སོ། །བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྩལ་པ། བྱམས་  
 པ་ང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་སྤྱད་པ་སྤྱོད་པ་ན་པ་རོལ་དུ་ཕྱིན་པ་དུག་དང་ལྷན་བའི་  
 དགོ་བའི་ཅ་བ་གང་དག་བསགས་པའི་དགོ་བའི་ཅ་བ་དེ་དག་གིས་གཞོད་པར་.....  
 བྱར་དམ། བྱམས་བས་གསོལ་པ། བཅོམ་ལྷན་འདས་དེ་ནི་མ་ལགས་སོ། །  
 བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྩལ་པ། མ་ལམ་པ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཀྱང་བསྐལ་བ་དུག་  
 ཅུར་སྤྱོད་པའི་པ་རོལ་དུ་ཕྱིན་པ་ཡང་དག་པར་བསྐྱབས། དེ་བཞིན་དུ་བསྐལ་བ་  
 དུག་ཅུར་ཤེས་རབ་ཀྱི་པ་རོལ་དུ་ཕྱིན་པའི་བར་དུ་ཡང་དག་པར་བསྐྱབས་ན། དེ་  
 ལ་མི་སྤྱོད་པོ་དག་འདི་སྤྱོད་ཅེས་ཆུལ་གཅིག་ཁོ་ནས་བྱང་ཆུབ་སྤེ། འདི་ལྟ་སྤེ།  
 སྤྱོད་པ་ཉིད་ཀྱི་ཆུལ་གྱིས་སོ་ཞེས་ཟེར་དེ། དེ་དག་ནི་སྤྱོད་པ་ཡོངས་སུ་མ་དག་  
 བར་འགྱུར་རོ།” ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་འབྱུང་ངོ་། སྤྱོད་པ་ཉིད་འབའ་  
 ཞིག་བསྟེན་ན་ཉན་ཐོས་བཞིན་དུ་བྱ་ངན་ལས་འདས་པའི་མཐར་ལྷུང་བར་འགྱུར་རོ།  
 དེའི་སྤྱིར་ན་ཐབས་དང་བཅས་པའི་ཤེས་རབ་བསྟེན་པར་བྱའོ།

དེ་ལྟ་བུས་ན་སློབ་དཔོན་ཁྱེད་ཀྱི་ཞལ་ལྷན་ཀྱི་མདོ་ཀྱན་ལས་བདུས་པ་  
 ལས་<sup>1</sup>བཤད་པ། “ཐབས་མཁས་པ་དང་བྲལ་བའི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཆོས་  
 ཟབ་སོ་ཉིད་ལ་མངོན་པར་བཅོན་པར་མི་བྱའོ།” ཞེས་འབྱུང་ངོ་། །འདིར་  
 ཡང་འཕམ་པ་དྲི་མ་མེད་<sup>2</sup>པར་གྲགས་པས་བསྟན་པ་ལ་སོགས་<sup>3</sup>པ་ཁྱེད་སྤྱོད་པ་  
 ཅིང་བཤད་ཀྱི་<sup>4</sup> དེ་ཡང་སློབ་དཔོན་ཁྱེད་ཀྱི་ཞལ་ལྷན་ཀྱི་བཀའ་ནི་མ་ཡིན་ནོ།

1. སྤེ་—བཙན་(དབྱ་མ་—‘ཀེ’ ༢༠༦) 2. ལྟ་བུ་—མེད་གྲགས་(ཆད་—མེད་‘པར’གྲགས་)

3. ལྟ་བུ་—སོགས་ཁྱེད་ 4. ལྟ་བུ་—ཀྱིས་



རིགས་པ་དང་ལྷན་དུ་<sup>1</sup>ལྷན་པ་(2འོ་ནས།)      བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱི་གསུང་རབ་  
བཏང་ལ།    མཁས་པ་དྲེག་པ་དང་ལྷན་པས་འགྲོ་བ་སྤྱན་པོ་གཞན་གྱི་<sup>3</sup>ཆོག་བརྒྱུང་  
བ་མི་<sup>4</sup>རིགས་སོ།    །འཕགས་པ་གཙུག་<sup>5</sup>ན་རིན་པོ་ཆེ་ལས་ཀྱང་།    “སྤྱན་པ་ལ་  
སོགས་པ་དག་བ་མཐའ་དག་དང་ལྷན་པས་ནམ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་མཆོག་དང་ལྷན་  
བའི་སྟོང་བ་ཉིད་ལ་བསྐྱེལ་བར་བྱའོ།”    །ཞེས་གསུངས་དེ།    སྟོང་བ་ཉིད་འབའ་  
ཞིག་ནི་མ་ཡིན་ནོ།    །འཕགས་པ་དཀོན་མཆོག་བརྟེན་པ་ལས་<sup>6</sup>ཀྱང་བཀའ་  
སྤྱལ་དེ།    “འོད་སྤྱངས་འདི་ལྟ་སྟེ་དཔེར་ན།    སྤྱོན་པོས་ཟིན་བའི་བྱལ་པོ་ནམས་  
དགོས་པ་ཐམས་ཅད་བྱེད་པ་དེ་བཞིན་དུ་བྱང་རྒྱུ་སེམས་དབའི་ཤེས་རབ་ཐབས་  
མཁས་པས་<sup>7</sup>ཟིན་པ་ཡང་སངས་རྒྱུས་ཀྱི་མཛད་པ་ཐམས་ཅད་བྱེད་དོ།”    །ཞེས་  
འབྱུང་ངོ།

དེ་བས་ན་སྟོང་བ་ཉིད་འབའ་ཞིག་བསྟེན་ན་<sup>8</sup>ཕྱང་ན་ལས་འདས་པ་ལ་འཇུག་  
བར་འགྱུར་དུ་འོང་ངོ་ཞེས་བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱིས་<sup>9</sup>འཕགས་པ་དེ་བཞིན་གཤེད་  
བའི་གསང་བའི་མདོ་ལས་<sup>10</sup>    “གཅིག་དུ་སེམས་དམིགས་པ་མེད་པར་མེ་བྱའི།  
ཐབས་ལ་མཁས་པ་ལ་ཡང་བརྟེན་པར་བྱའོ།”    །ཞེས་གསུངས་<sup>11</sup>སོ།    །དེ་

- 
1. ལྷ་མི་-ལྷན་དུ་བལྟན་པ་    2. ལྷ་དཔེར་ཡོད་    3. ལྷ་མི་-ལྱུག་    4. ལྷ་དཔེར་-མཛུ་ལྷ་  
ཡུག་ཀྱང་= བརྒྱུང་རིགས་སོ།    ཞེས་གསུངས་པས་དགག་ཆོག་ཆད་པར་སྤྱང་ངོ།    5. ལྷ་དཔེར་-  
‘आर्यरत्नकुटे’= འཕགས་པ་དཀོན་མཆོག་བརྟེན་པ་ལས་ཞེས་གསུངས་ཞིང་།    ལྷན་འདྲེན་གྱི་ཆོག་  
ནམས་ཀྱང་གོང་སྟོན་མདོ་དེར་མེ་བཞིན་མ་རྟོག་པས།    དཀོན་བརྟེན་གྱི་མདོ་གཞན་དུ་མེད་དམ་  
དཔྱད་པར་ཐུག་།    6. ལྷ་མི་-བཀའ་(དཀོན་བརྟེན་གས་ཆ་ 72a)    7. ལྷ་མི་-ཐམས་ཅད་  
(ཆད་-ཐམས་ཅད་མ་ཡང་)    8. ལྷ་མི་-ནས་    9. ལྷ་མི་-ཀྱི་    10. ཆོས་ཞེས་ངེས་རྟོག་  
མ་བྱུང་བ།    11. ལྷ་མི་-གསུངས་དེ།

བཟུན་པའི་ཕྱིར། “རིགས་ཀྱི་བྱ་འདི་ལྟ་སྟེ་དཔེར་ན་མེ་<sup>1</sup>ནི་རྒྱ་ལས་འབར་དེ།  
 རྒྱ་མེད་ན་ནི་བར་འགྱུར་རོ།<sup>2</sup> །དེ་བཞིན་དུ་དམིགས་པ་<sup>3</sup>ལ་སེམས་འབར་གྱི།  
 དམིགས་པ་མེད་ན་སེམས་<sup>4</sup>ནི་བར་འགྱུར་རོ། །དེ་ལ་ཐབས་ལ་མཁས་པའི་  
 བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔལ་ཤེས་རབ་ཀྱི་པ་རོལ་དུ་ཕྱིན་པ་ཡོངས་སུ་དག་པས་དམིག་  
 པ་ཉི་བར་ནི་བར་ཡང་ཤེས་ལ་དག་པའི་ཅ་བ་ལ་དམིགས་པ་ཡང་ནི་བར་མི་བྱེད།  
 ཉན་མོངས་པ་ལ་དམིགས་པ་ཡང་འབྱུང་<sup>5</sup>པར་མི་བྱེད་ལ། པ་རོལ་དུ་ཕྱིན་  
 པའི་དམིགས་པ་ལ་ཡང་འཛོལ་བར་བྱེད། ལྟོང་བ་ཉིད་དུ་དམིགས་པ་ལ་<sup>6</sup>  
 ཡང་སོ་སོར་དྲིག་ལ་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་སྤྱིང་རྒྱུ་ཆེན་པོས་དམིགས་པ་ཡང་  
 བཟུང་<sup>7</sup>། །རིགས་ཀྱི་བྱ་དེ་ལྟར་ན་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔལ་ཐབས་ལ་མཁས་པ་  
 ཤེས་རབ་ཀྱི་པ་རོལ་དུ་ཕྱིན་པ་དག་པས་དམིགས་པ་ལ་དབང་<sup>8</sup>ཐོབ་པོ།” །ཞེས་  
 རྒྱ་ཆེར་གསུངས་ནས། ཡང་བཀའ་སྤྱུལ་<sup>9</sup>པ། “དེ་ལྟར་ན་བྱང་ཆུབ་སེམས་  
 དཔའི་དམིགས་པ་གང་ཅི་ཡང་བྱང་<sup>10</sup>། དེ་ཐམས་ཅད་ནི་ཐམས་ཅད་མཁུན་པའི་  
 ཡེ་ཤེས་མངན་པར་བསྐྱབ་པའི་ཕྱིར་མི་གནས་པ་མེད་དོ། །བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔལ་  
 གང་དམིགས་པ་ཐམས་ཅད་བྱང་ཆུབ་དུ་ཡོངས་སུ་བསྡུས་པ་དེ་ནི་བྱང་ཆུབ་སེམས་  
 དཔའི་ཐབས་ལ་མཁས་པ་སྟེ། ཆོས་ཐམས་ཅད་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་རྒྱུ་སྤྱོད་པར་  
 མཐོང་ངོ། །རིགས་ཀྱི་བྱ་འདི་ལྟ་སྟེ། “དཔེར་<sup>11</sup>ན་སྤྱོད་གསུམ་གྱི་སྤྱོད་ཆེན་

1. ལྟ་སྟེ་—མ་ 2. ལྟ་སྟེ་—དེ། 3. ལྟ་སྟེ་—ལ་སོགས་པ་ལ་ 4. ‘སེམས་’—རྒྱ་དཔེར་མེད་  
 5. ལྟ་དཔེར་—འོ་ལྟ་པ་པུ་འཇུག་པར་མེད་ཀྱི་དེ་ 6. ལྟ་སྟེ་—ལ་སོགས་པ་  
 7. ལྟ་སྟེ་—ལྟ་དོ། 8. ལྟ་སྟེ་—དབང་པོ་ 9. ཆོས་ཞེས་ངོས་ཆེན་མ་བྱུང་པ།  
 10. ལྟ་སྟེ་—བྱང་རྒྱུ་ཐམས་ 11. བཟུང་ཆོག་འདི་ལྟ་སྟེ་རྒྱ་དཔེར་དག་གི་ཆོག་གསུམ་ཡོད་  
 བྱང་། བོད་དཔེ་ལྟར་གསུམ་ལས་མེད་པའི་མངན་ནོ།



པོ་འི་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་ན་<sup>1</sup>གང་སེམས་ཅན་ནམས་ཀྱི་ཡོངས་སྟོན་དུ་མི་འགྱུར་  
 བ་དེ་མེད་དོ། །རིགས་ཀྱི་བྱ་དེ་བཞིན་དུ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཐབས་ལ་མཁས་  
 བ་ཡང་དམིགས་བ་གང་ཅི་ཡང་རུང་། བྱང་ཆུབ་ལ་ཕན་འདོགས་བར་གྱུར་  
 བ་ས་ཡིན་པར་མཐོང་བ་མེད་དོ། །ཞེས་བྱ་ཆེར་འབྱུང་ངོ་། །དེ་བཞིན་དུ་མདོ་  
 སྡེ་མཐའ་ཡས་བ་ལས་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ནམས་ཀྱི་ཐབས་དང་ཤེས་རབ་གྱི་  
 རྒྱལ་སྐྱབ་བ་བསྟན་དོ། །དེ་ལ་བདག་ཉིད་སྤྱོད་བ་ལ་སོགས་བ་བསོད་ནམས་ཀྱི་  
 རྩོམས་ལ་བཙུན་འགྱུས་ཅོམ་མི་རྒྱས་སུ་ཟིན་ཀྱང་། གཞན་དག་ལ་དེ་སྐད་དུ་  
 བསྟན་བ་ནི་མི་རིགས་སོ། །དེ་ལྟར་བྱས་ན་བདག་དང་གཞན་ལ་འབྲུ་བ་བྱས་  
 བར་འགྱུར་ངོ། །

དེ་ལྟར་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཅི་ནས་ཀྱང་ཡང་དག་པར་སོ་སོར་བདག་  
 བར་བྱ་ཞིང་སྤྱོད་བ་ལ་སོགས་བ་བསོད་ནམས་ཀྱི་རྩོམས་མཐའ་དག་བསྐྱབ་པར་  
 བྱ།<sup>2</sup> ཞེས་རིགས་བ་དང་ལུང་གིས་བསྟན་བ་ཡིན་ནོ། །དེའི་ཕྱིར་དོག་བ་དང་ལྷན་  
 བས་<sup>3</sup>ཐོས་བ་ཉུང་བ་མངོན་པའི་ང་གྱལ་ཅན་ནམས་ཀྱི་རྩོམ་དུག་བཞིན་དུ་སྤངས་ལ།  
 སྟོབ་དཔོན་ཁྱུ་སྐྱབ་ལ་སོགས་བ་སྐྱེ་བོ་མཁས་པའི་རྩོམ་བདུད་ཅིའི་རྩེས་སུ་འཇུག་  
 བས་སེམས་ཅན་མཐའ་དག་ལ་སྤྱིང་རྩེ་ཆེན་པོ་བསྐྱེད་ནས་<sup>4</sup> སྐྱེ་མ་མཁན་བཞིན་  
 དུ་ཕྱིན་ཅི་ཡོག་དུ་མ་གྱུར་བས་ཁྱ་ན་མེད་བ་ཡང་དག་པར་རྩོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་དུ་  
 ཡོངས་སུ་བསྟེན་པའི་སྤྱོད་བ་ལ་སོགས་པའི་དག་བའི་སྟོན་བ་མཐའ་དག་དང་།

1. ལྟ་བུ་—ན་སེམས་ 2. ལྟ་བུ་—ཐུགས་ 3. ལྟ་བུ་—པར་ 4. ལྟ་བུ་—ན་

འགྲོ་བ་མ་ལུས་བ་གདོན་བ་ལ་མངོན་བར་བཅོན་བར་བྱ་ཏེ། རི་རྒྱུད་དུ་འཕགས་  
བ་ཆོས་ཡང་དག་བར་སྤྱད་བ་ལས།

དཔེར་ན་རྩ་མའི་མཁན་པོ་ཞིག །

སྤྱལ་བ་ཐར་བར་བྱ་བྱིར་བཅོན།

དེས་ནི་སྤར་ནས་དེ་ཤེས་བས།

སྤྱལ་བ་དེ་ལ་ཆགས་བ་མེད།

སྤྱིད་གསུམ་སྤྱལ་བ་འདྲ་བར་ནི།

རྒྱལ་པོ་བའི་བྱང་ཆུབ་མཁས་བས་ཤེས།

འགྲོ་བའི་ཆེད་དུ་གོ་བགོས་དེ།

འགྲོ་བ་དེ་ལྟར་སྤར་ནས་ཤེས། །ཞེས་འབྱུང་བ་ལྟ་བུའོ།

དེ་ལྟར་ཐབས་དང་ཤེས་རབ་<sup>2</sup>ལ་དག་དུ་གྲུས་བར་བྱ་ཏེ། གོམས་བར་  
བྱས་བ་དེའི་སེམས་<sup>3</sup>ཀྱི་རྒྱུད་རིམ་གྱིས་ཡོངས་སུ་སྒྲིན་བ་ན་གོང་ནས་གོང་དུ་ཤིན་  
དུ་ནམ་བར་དག་བའི་རྒྱུད་ཅིག་འབྱུང་བས་ཡང་དག་བའི་དོན་ལ་བསྐྱོམ་བ་<sup>4</sup>རབ་  
ཀྱི་མཐར་ཐུན་བར་<sup>5</sup>གྱུར་ན་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་བའི་ཡེ་ཤེས་རྟོག་བའི་དྲ་བ་  
མཐའ་དག་དང་བྲལ་བ། ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཤིན་དུ་གསལ་བར་<sup>6</sup>རྟོགས་བ། དྲི་  
མ་མེད་ཅིང་མི་གཡོ་བ་རྒྱང་མེད་བའི་མར་མེ་དང་འདྲ་བ་འབྱུང་ཏེ། དེའི་ཆོ་  
དངོས་པོ་འི་མཐའ་ལ་དམིགས་བ་ཐོབ་བར་འགྱུར་རོ། ས་དང་བོ་ཡང་ཐོབ་བ་ཡིན་

1. ཐུ་—བཀའ་(མདོ་ཞ' ༤༩) 2. ཐུ་ཐེ་—རབ་དྲག་(ཆད་—ཤེས་རབ་ལ་'དྲག་)

3. 'ཞེས་ཀྱི་'—རྒྱུད་ཐེར་མེད་ 4. ཐུ་ཐེ་—བ་ཤེས་རབ་ 5. ཐུ་ཐེ་—མར་མེ་གྱུར་

ཅིས་བ་མ་དག་བར་མངོན་ནོ། 6. ཐུ་ཐེ་—བ་



ནོ། །མཐོང་བའི་ལམ་ལ་ཡང་ཞུགས་པ་ཡིན་ནོ། །དེ་དེ་གོང་མའི་ས་ནམས་  
 ཡོངས་སུ་སྤྱངས་ནས་རིམ་གྱིས་གསེར་བཞིན་དུ་སྒྲིབ་པ་བསགས་པ་མ་ལུས་པ་<sup>1</sup>  
 མེད་པར་འགྱུར་ལ། ཆགས་པ་མེད་པ་དང་། ཐོགས་པ་མེད་པའི་ཡེ་ཤེས་  
 ཐོབ་ནས་ཡོན་ཏན་མ་ལུས་པའི་གཞི་སངས་རྒྱས་ཀྱིས་ཐོབ་པར་འགྱུར་དེ། དགོས་  
 པ་ཡོངས་སུ་གྲུབ་པ་ལ་དམིགས་པ་ཡང་ཐོབ་པ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལྟ་བུས་ན་སངས་  
 རྒྱས་ཐོབ་པར་འདོད་པས་<sup>2</sup>དབྱ་མའི་ལམ་ལ་མངོན་པར་བརྩོན་པར་བྱའོ།

དེ་<sup>3</sup>ལྟར་དབྱ་མའི་ལམ་བཤད་པས། །

བདག་གིས་<sup>4</sup>བསོད་ནམས་གང་ཐོབ་པ། །

དེ་ཡིས་སྦྱོ་བོ་མ་ལུས་པ། །

དབྱ་མའི་ལམ་ནི་ཐོབ་པར་ཤོག།

དམ་པ་ཐུག་དོགས་ལ་སོགས་དྲི་མ་ཐག་<sup>5</sup>བསྐྱངས་པ། །

ཡོན་ཏན་ནམས་ཀྱིས་མི་ངོམས་ཆུ་ཡི་མཚོ་འདྲ་དག།

ནམ་པར་ཕྱེ་ནས་ལེགས་པར་བཤད་ནམས་འཛིན་བྱེད་དེ། །

ངང་པ་རབ་དགའ་ཆུ་ལས་འོ་མ་ལེན་པ་བཞིན། །

དེ་ལྟ་བུས་ན་མཁས་ནམས་ཀྱིས། །

ཕྱོགས་ལྗང་<sup>6</sup>དཀྱུགས་ཡིད་རིང་སྤོངས་ལ། །

1. ལྟ་བུ་-པ་ 2. ལྟ་བུ་-འདོད་པ་ (ཆད་-འདོད་'པས་')

3. ལྟ་བུ་ལྟར་ན་-དེ་ལྟར་དཀྱུགས་པའི་ལམ་བཤད་པས། །ཞེས་གསལ་གོ།

4. ལྟ་བུ་-གོ་ 5. ལྟ་བུ་-མཐུན་སྤྱངས་ 6. ལྟ་བུ་-ཕྱོགས་སྤྱང་

བྱིས་བ་ལས་ཀྱང་ལེགས་བཤད་པ། །

ཐམས་ཅད་སྒྲུང་བ་ཁོ་ནར་བྱ། །

བསྒྲོམ་<sup>1</sup>པའི་རིམ་བ་སྒྲོབ་དཔོན་ལྷུ་ཅུ་ཀམ་ལ་གྱི་ལས་ཐ་མར་མཛད་པ་ཚོགས་སོ། །

བྱ་གར་གྱི་མཁན་པོ་བརྗེ་ལྷ་དང་། ལྷ་ཆེན་གྱི་ལོ་ཅུ་བ་བརྗེ་ཡེ་ཤེས་སྡེ་ལ་

སོགས་བས་བསྐྱར་ཅིང་ལྷས་དེ་གཏན་ལ་ཡབ་པའོ། །

### 1. ཐ་བེ་-སྒྲོམ་

ཙོ་ཆོས་ནམས་གང་དག་རྒྱ་ལས་བྱང་བ་དང་། །

དེ་ཡི་རྒྱ་དང་དེ་འགོག་གང་ཡིན་བའང་། །

དེ་བཞིན་གཤེགས་བ་ཉིད་ཀྱིས་བཀའ་སྡུལ་དེ། །

དེ་སྐད་གསུངས་པའི་ཚལ་ཅན་དག་སྤོང་ཆེ། །

(ཐེ་-བཀའ་:— ༡༥ལ་བ་'ཀ' ༩༩)

སཐམས་ཅད་ལོ།



आचार्यकमलशीलप्रणीतः

**भावनाक्रमः**

( संस्कृतपाठः )

विष्णुसहस्रनाम

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

श्रीगणेशाय नमः



आचार्यकमलशीलप्रणीतो

## भावनाक्रमः प्रथमः

—: ❀ :—

[ 'महायानसूत्राणां य आदिकर्मिकस्य चर्यानियमः ।

तमधिकृत्य संक्षेपाद् भावनाक्रमस्त्वभिधीयते ॥

अचिरेण सर्वज्ञतां प्राप्तुकामैः संक्षेपतः करुणा, बोधिचित्तम्, प्रतिपत्तिश्चेति त्रिषु स्थानेषु प्रयतितव्यम् ।

बुद्धत्वस्य अशेषधर्महेतुमूलं करुणैवेति ज्ञात्वा साऽऽदावेव 5 भावयितव्या । यथोक्तम् आर्यधर्मसंगीतिसूत्रे<sup>१</sup>—“अथ खल्ववलोकितेश्वरो बोधिसत्त्वो महासत्त्वो भगवन्तमेतदवोचत्—न भगवन् बोधिसत्त्वेन अतिबहुषु धर्मेषु शिक्षितव्यम् । एको धर्मो भगवन् बोधिसत्त्वेन स्वाराधितः सुप्रतिविद्धः कर्तव्यः । तस्य सर्वबुद्धधर्माः करतलगता भवन्ति । कतम एकधर्मः ? यदुत महाकरुणा । महाकरुणया भगवन् बोधिसत्त्वानां 15 सर्वबुद्धधर्माः करतलगता भवन्ति । तद्यथा भगवन् येन राजश्चक्रवर्तिनश्चक्ररत्नं गच्छति तेन सर्वो बलकायो गच्छति, एवमेव भगवन् येन बोधिसत्त्वस्य महाकरुणा गच्छति, तेन सर्वे बुद्धधर्मा गच्छन्ति । तद्यथा भगवन् जीवितेन्द्रिये सति अन्येषामिन्द्रियाणां प्रवृत्तिर्भवति, एवमेव भगवन् महाकरुणायां सत्यामन्येषां बोधिसत्त्वानां ] धर्माणां 20 प्रवृत्तिर्भवति ।” इति ।

आर्याक्षयमतिनिर्देशे<sup>३</sup> चोक्तम्—“पुनरपरम्, भदन्त शारद्वतीपुत्र, बोधिसत्त्वानां महाकरुणाप्यक्षया । तत् कस्य हेतोः ? पूर्वज्जन्मत्वात् ।

१. 'महायानसूत्राणां य इत्यतः' 'सत्यामन्येषां बोधिसत्त्वानां' पर्यन्तं मूलसंस्कृतेऽनुपलब्धम् । २. देगे-का० ( सूत्र-‘श’ ८४ ) । ३. देगे-का० ( सूत्र-‘म’-१३२ ) ।

तद्यथापि नाम, भदन्त शारद्वतीपुत्र, आश्वासाः [ प्रश्वासाः ]<sup>१</sup> पुरुषस्य जीवितेन्द्रियस्य पूर्वज्ञमाः, एवमेव महायान-सम्भार<sup>२</sup>-समुदागमाय बोधिसत्त्वस्य महाकरुणा पूर्वज्ञमा<sup>३</sup> इति विस्तरः । आर्यंगयाशीषे<sup>४</sup> चोक्तम्—“किमारम्भा, मञ्जुश्रीः, बोधिसत्त्वानां चर्या, किमधिष्ठाना च ?  
5 मञ्जुश्रीराह — महाकरुणारम्भा, देवपुत्र, बोधिसत्त्वानां चर्या सत्त्वा-धिष्ठाना ।” इति विस्तरः ।

तथा हि तया<sup>५</sup> प्रेर्यमाणा बोधिसत्त्वाः स्वात्मनिरपेक्षा एकान्तेन परोपकारार्थतया अतिदुष्करदीर्घकालिकेऽपि सम्भारोपार्जनपरिश्रमे प्रवर्तन्ते । तथा चोक्तम् आर्यश्रद्धाबलाधाने<sup>६</sup>—“तत्र [ महा ]<sup>७</sup> करुणयापि  
10 सर्वसत्त्वपरिपाचनार्थं न तत् किञ्चित्<sup>८</sup> सुखोपाधानं यन्न परित्यजति ।” इति । अतोऽतिदुष्करे प्रवर्तमानो नचिरेणैव सम्भारान् परिपूर्वावश्यमेव सर्वज्ञपदम् अधिगच्छति । ततो बुद्धधर्माणां करुणैव मूलम् । महाकरुणा-परिग्रहादेव बुद्धा भगवन्तोऽधिगम्य सर्वज्ञपदम्<sup>९</sup> अशेषस्य जगतोऽर्थं विकुर्वाणास्तिष्ठन्त इति निर्वाणाप्रतिष्ठाने सैव भगवतां महाकरुणा  
15 हेतुः ।

सा च दुःखितसत्त्वालम्बनमनस्कारबहुलीकारतो वृद्धिम्<sup>१०</sup> ( उप-याति )<sup>११</sup> । सर्वे च ते सत्त्वास्त्रिधातुकावचरास्त्रिविधदुःखतया यथायोगम् अत्यन्त<sup>१२</sup> दुःखिता एवेति सर्वेष्वेव सत्त्वेषु भावनीयम् । तथा च ये तावन्नारकास्ते विविधचिरन्तनदीर्घकालिकदाहादिदुःख [ नदीषु ]<sup>१३</sup>  
20 निमग्ना एव भगवता वर्णिताः । तथा प्रेता अपि<sup>१४</sup> दुःसहतीव्रक्षुत्तृपादिदुःख-

१. भो० पा०—[ प्रश्वासाः ] । २. सम्भार—भो० न । ३. देगे—का० ( सूत्र—‘व’ २८६ ) । ४. भो० पा०—महाकरुणाप्रेर्यमाणा । ५. देगे—का० ( सूत्र—‘छ’ १५ ) । ६. भो० पा०—[ महाकरुणयापि ] । ७. भोट-पाठानुसारम् उद्धारः ‘न किञ्चिद् दुःखिजन्म यत् न परिगृह्णाति’ । ८. भो० पा०—सर्वज्ञज्ञान । ९. वृद्धिम्—भो० न । १०. दूची-पाठे प्राप्त ‘उपेत्य’ स्थाने ‘उपयाति’ इति पाठः समीचीनतरः । ११. अत्यन्त—भो० न । १२. भो० पा०—[ दुःखनदीषु ] । १३. भो० पा०—अपि प्रायः ।



[अग्नि]<sup>१</sup> पीडाभिसंशोषितमूर्तयस्तीव्रदुःखम् अनुभवन्ति । येन वर्षशतेना-  
प्यशुचि खेटपिण्डनं<sup>२</sup> च भोक्तुं न लभन्त इत्यादि<sup>३</sup> वर्णितं भगवता । तिर्य-  
ञ्चोऽपि परस्पर [ भक्षण ]<sup>४</sup> क्रोधवर्धाहिसादिभिरनेकविधं दुःखमनुभवन्तो  
दृश्यन्त एव । तथा हि केचिन्नासिकाभेदनताडनबन्धनादिभिरैतन्त्रीकृत-  
शरीराः<sup>५</sup> परितः परिपीड्यमानाः कथमप्यनिच्छन्तोऽपि अतिदुर्वहगुरु- 5  
भारोद्धहनपरिखिन्नवपुषः<sup>६</sup> परिक्लाम्यन्ति, तथारण्येऽपि निवसन्तोऽनपराधाः  
केचित् क्वचित् [ अर्थ ]<sup>७</sup> तोऽन्वप्य हन्यन्ते । नित्यं च भयविह्वलमानसस्त-  
तस्ततः पलायमानास्तिष्ठन्तोत्यपरिमितम् एषां दुःखं<sup>८</sup> दृश्यत एव । तथा  
मानुष्येऽपि नारकं दुःखं दृश्यत एव । अत्र ये चौरादयोऽङ्गच्छेदशूलार्पणोद्-  
बन्धनादिभिः कार्यन्त एव तेषां नारकमेव दुःखम् । ये च दारिद्र्याद्युप- 10  
हतास्तेषां प्रेतानामिव तत्क्षुत्तर्षादिभिर्दुःखम् । ये च भृत्यादयः परायत्ती-  
कृतात्मभावाः, ये च बलिभिराक्रम्य पीडयन्ते तेषां तिरश्चामिव  
ताडनावरोधनादि दुःखम् । तथा पर्येष्टिकृतम् अन्योऽन्यद्रोहोपघातादि<sup>९</sup> कृतं  
प्रियविप्रयोगाप्रियसंयोगकृतं<sup>१०</sup> चाप्रमेयमेषां दुःखम् । ये क्वचिद् ईश्वराः  
सुखिता इव लप्यन्ते<sup>११</sup> तेऽपि विपर्यवसानसम्पदो विविधकुदृष्टिगहननिमग्ना 15  
नारकादिदुःखानुभवहेतुविविध<sup>१२</sup> क्लेशकर्माण्युपचिन्वन्तः प्रपातस्थास्तरव<sup>१३</sup>  
इव दुःखहेतौ [ अपि ]<sup>१४</sup> वर्तमानाः परमार्थतो दुःखिता एव ।

देवा अपि ये तावत् कामावचरास्तेऽपि तीव्रकामाग्निसन्दीप्त-  
मानसा आक्षिप्तचित्ता इवास्वच्छचेतसः क्षणमपि समाधानं चेतसां न  
लभन्ते । तेषां प्रशमसुखधनदरिद्राणां कीदृशं नाम तत् सुखम् ? 20  
नित्यच्यवनपतनादिभयशोकोपहताः कथं सुखिता नाम ? ये च रूपारूपाव-

१. भो० पा०—[ दुःखानि ] । २. भो० पा०—पिण्डमात्रम् । ३. भो० पा०—इति ।  
४. भो० पा०—[ परस्परभक्षण ] । ५. भो० पा०—आत्मातन्त्री । ६. शरीराः—भो० न ।  
७. वपुषः—भो० न । ८. सं० पठोऽस्पष्टः । ९. भो० पा०—दुःखानुभवो । १०. उपघात-  
भो० न । ११. भो० पा०—संयोगादि । १२. भो० पा०—दृश्यन्ते । १३. विविध—भो० न ।  
१४. तरव—भो० न । १५. भो० पा०—[ हेतो अपि ] ।



चरास्तेऽपि यदि नाम कियत्कालं दुःखदुःखतां व्यतीतास्तथाप्यत्यन्तं कामावचराणाम् अनुशयानाम् अप्रहाणात् तेषां पुनरपि नारकादि-  
विनिपातसम्भवाद् विपरिणामदुःखम् अस्त्येव । सर्वे नाम देवमनुष्याः  
क्लेशकर्मादिपारतन्व्यात् ते संस्कारदुःखतया दुःखिता एव ।

- 5 तदेवं सकलमेव जगद् दुःखाग्निज्वालोवलीढम् इत्यवेत्य यथा  
मम दुःखमप्रियं तथान्येषामप्रियमिति<sup>१</sup> चिन्तयता सर्वेष्वेव सत्त्वेषु कृपा  
भावनीया । प्रथमं तावद् मित्रपक्षेषु पूर्वोक्ता विविधदुःखानुभवेष्वनुपश्यता  
भावनीया ।

- ततः सत्त्वसमतया<sup>२</sup> विशेषमपश्यताऽनादिमति च संसारे न  
10 कश्चित् सत्त्वो यो न मे शतशो बन्धुरभूदिति परिचिन्तयता व्यस्तेषु  
भावनीया । यदा मित्रपक्षेष्विव व्यस्तेषु [ अपि ]<sup>३</sup> तुल्या करुणा प्रवृत्ता  
भवति, तदा शत्रुपक्षेऽपि तथैव सत्त्वसमतादिमनसिकारेण भावनीया ।  
यदा च शत्रुपक्षेऽपि मित्रपक्षवत् समप्रवृत्ता भवति, तदा क्रमशो  
दशसु दिक्षु सर्वसत्त्वेषु [ अपि ]<sup>४</sup> भावयेत् । यदा च दुःखितबाल-  
15 प्रियेष्विव दुःखोद्धरणेच्छाकारा स्वरसवाहिनी सर्वसत्त्वेषु समप्रवृत्ता कृपा  
भवति, तदा सा निष्पन्ना भवति महाकरुणाव्यपदेशं च लभते । यथा  
अक्षयमतिसूत्रे च वर्णितम् । अयं च कृपाभावनाक्रमो भगवताऽभिधर्म-  
सूत्रादौ वर्णितः ।

- तस्यैवं कृपाभ्यासबलात् सकलसत्त्वाभ्युद्धरणप्रतिज्ञयानुत्तरसम्यक्-  
20 सम्बोधिप्रार्थनाकारम् अयत्नत एव बोधिचित्तमुत्पद्यते । यथोक्तम् आर्यदश-  
धर्मसूत्रे<sup>५</sup>—“सत्त्वान् अत्राणान् अशरणान् अद्वीपान् दृष्ट्वा करुणायै चित्तमु-  
पस्थाप्य<sup>६</sup> यावदनुत्तरायां सम्यक्सम्बोधौ चित्तमुत्पादयति” इति । यदि  
नाम<sup>७</sup> परसमादापनादिनापि बोधिसत्त्वस्य महासत्त्वस्य<sup>८</sup> बोधिचित्तमुत्पद्यते,

१. ज्वाला-भो० न । २. अप्रियम्-भो० न । ३. भो० पा०-चित्तसमतया । ४. भो०  
पा०-[ व्यस्तेषु अपि ] । ५. भो० पा०-[ सर्वसत्त्वेषु अपि ] । ६. भो० पा०-सर्वथा दुःख ।  
७. देगे-का० ( रत्नकूट-‘ख’ १६८ ) । ८. करुणायै चित्तमुपस्थाप्य-भो० न । ९. यदि  
नाम-भो० न । १०. महासत्त्वस्य-भो० न ।



तथापि कृपावेगतो यत् स्वयमेव बोधिसत्त्वस्य बोधिचित्तमुत्पद्यते तद् भगवता आर्यतथागतज्ञानमुद्रासमाधौ विशिष्टतरत्वेन वर्णितम् ।

तदेतद् बोधिचित्तं प्रतिपत्तिविकलमपि संसारे महाफलं भगवता वर्णितम् । तथा चोक्तं मैत्रेयविमोक्षे—“तद् यथापि नाम, कुलपुत्र, भिन्नमपि वज्ररत्नं सर्वम् अतिविशिष्टं सुवर्णालङ्कारमभिभवति, 5 वज्ररत्ननाम च न विजहाति, सर्वदारिद्र्यं च विनिवर्तयति । एवमेव, कुलपुत्र, प्रतिपत्तिभिन्नमपि सर्वज्ञताचित्तोत्पादवज्ररत्नं सर्वश्रावक-प्रत्येकबुद्धगुणसुवर्णालङ्कारम् अभिभवति । बोधिचित्तनाम न विजहाति, संसारदारिद्र्यं च विनिवर्तयति” इति ।

योऽपि पारमितासु सर्वेण<sup>३</sup> सर्वं सर्वथा शिक्षितुम् असमर्थः, 10 तेनापि बोधिचित्तम् उत्पादनीयमेव, उपायपरिग्रहेण महाफलत्वात् । यथा चोक्तम् आर्यराजाववादकसूत्रे—“यस्मात् त्वं महाराज, बहुकृत्यो बहुकरणीयः, असहः सर्वेण सर्वं सर्वथा” दानपारमितायां शिक्षितुम्, यावत् प्रज्ञापारमितायां शिक्षितुम् । तस्मात्तर्हि त्वं<sup>६</sup> महाराज एवमेव सम्बोधौ छन्दं श्रद्धां प्रार्थनां प्रणिधिं च, गच्छन्नपि तिष्ठन्नपि निषण्णोऽपि शया- 15 नोऽपि जाग्रदपि भुञ्जानोऽपि पिबन्नपि, सततसमितम् अनुस्मर, मनसि-कुरु भावय । सर्वबुद्धबोधिसत्त्वार्थं<sup>४</sup> श्रावकप्रत्येकबुद्धपृथग्जनानाम् आत्मनश्च अतीतानागतप्रत्युत्पन्नानि कुशलमूलानि पिण्डयित्वा, अनुमोदस्व अग्रया अनुमोदनया । अनुमोद्य च सर्वबुद्धबोधिसत्त्वप्रत्येकबुद्धार्थं<sup>५</sup> श्रावकाणां पूजाकर्माणि निर्यातय । निर्यात्य च सर्वसत्त्वसाधारणानि कुरु । ततः 20 सर्वसत्त्वानां यावत् सर्वज्ञताप्रतिलम्भाय सर्वबुद्धधर्मपरिपूरणाय दिने

१. देगे-का० ( अवतंसक-‘ड’ ३२३ ) सं०-गण्डव्यूहसूत्रमध्ये दरभङ्गसंस्करणे पृ० ४०५ । २. गुण भो० न । ३. सर्वेण-भो० न । ४. एतन्नामका बहवः सूत्रग्रन्थाः काग्युर-संग्रहे विद्यन्ते, यथा २१४, २१५, २२१ क्रमाङ्कितस्त्रयो ग्रन्थाः, किन्तु तत्र उद्धरणमिदं न प्राप्तम् । ५. भो० पा०-सर्वथा सर्वदा । ६. त्वं-भो० न । ७. आर्य-भो० न । ८. आर्य-भो० न ।

त्रैकाल्यम् अनुत्तरायां सम्यक्संबोधौ परिणामय । एवं खलु त्वं महाराज,  
प्रतिपन्नः सन् राज्यं च कारयिष्यसि, राज्यकृत्यानि च न हापयिष्यसि,  
[ बोधिसम्भारांश्च परिपूरयिष्यसि ]<sup>१</sup> । इत्यादि<sup>२</sup>कमुक्त्वाह—“अथ खलु  
पुनस्त्वं महाराज, सम्यक्संबोधिचित्तकुशलमूलविपाकेन अनेककृत्यो देवेषु  
5 उपपन्नोऽभूः । अनेककृत्यो मनुष्येषु उपपन्नोऽभूः । सर्वासु च देवमनुष्यो-  
पपत्तिषु आधिपत्यं कारयिष्यसि” । इति विस्तरः ।

यत् पुनः प्रतिपत्तिसारं बोधिचित्तं तद् अतितरां विपुलं फलम्  
इति सिद्धम् । अत एव आर्यवीरदत्तपरिपृच्छायाम्<sup>३</sup> उक्तम्—

बोधिचित्ताद् वै यत् पुण्यं तच्च रूपि भवेद् यदि ।

10 आकाशधातुं सम्पूर्य भूयश्चोत्तरितं भवेत् ॥

गङ्गाबालुकसंख्यानि बुद्धक्षेत्राणि यो नरः ।

दद्याद् रत्नप्रपूर्णानि लोकनाथेभ्य एव हि ॥

यश्चैकः प्राञ्जलिर्भूत्वा चित्तं बोधाय नामति ।

इयं विशिष्यते पूजा यस्या अन्तो न विद्यते ॥ इति ।

15 यथा आर्यगण्डव्यूहे<sup>४</sup> वर्णितम्—“बोधिचित्तं कुलपुत्र ! बीजभूतं सर्वबुद्ध-  
धर्माणाम्” इति विस्तरः । तच्च बोधिचित्तं द्विविधं प्रणिधिचित्तं  
प्रस्थानचित्तं च । आर्यगण्डव्यूहे<sup>५</sup> वर्णितम्, तथा—“दुर्लभास्ते, कुलपुत्र,  
सत्त्वाः सत्त्वलोके येऽनुत्तरायां सम्यक्संबोधौ प्रणिदधति इति । ततोऽपि  
दुर्लभतमास्ते सत्त्वा येऽनुत्तरां सम्यक्संबोधिम् अभिसम्प्रस्थिताः”  
20 इति । सकलजगतो हिताय बुद्धो भवेयमिति प्रथमतः प्रार्थनाकारा चेतना

१. भो० पा०—[ बोधिसंभारांश्च परिपूरयिष्यसि ] । २. भो० पा०—इत्यादि विस्तरेण ।

३. देगे-का० ( रत्नकूट-‘च’ २०२ ) । ४. गङ्गाबालुक.....इत्यादि श्लोकद्वयं भोटपाठे न  
विद्यते । ५. देगे-का० ( अवतंसक-‘ड’ ३०६ ) सं०-गण्डव्यूहः पृ० १६६ दरभङ्गा ।

६. देगे-का० ( अवतंसक-‘ड’ ३०८ ) सं०-गण्डव्यूहः पृ० ३६५ दरभङ्गा ।



तत्प्रणिधिचित्तम् । यतः प्रभृति संवरग्रहणे वर्तमानाः सम्भारेषु दृश्यन्ते<sup>१</sup> तत्प्रस्थानचित्तम् ।

संवरश्च विज्ञातप्रतिबलसंवरस्थितात् कल्याणमित्रात्<sup>२</sup> परतो ग्राह्यः । असति प्रतिरूपे ग्राहके<sup>३</sup> बुद्धबोधिसत्त्वान् आमुखीकृत्य यथा<sup>४</sup> मञ्जुश्रियाऽम्बरराजभूतेन बोधिचित्तमुत्पादितं तथोत्पादनोयः । 5

एवमुत्पादितबोधिचित्तो बोधिसत्त्वः स्वयमेव दानादि ददाति<sup>५</sup> प्रतिपत्तौ प्रयोक्ष्यते, न हि स्वयमदान्तः परान् दमयतीति मत्वा । न चापि विना प्रतिपत्त्या बोधिरवाप्यते । यथोक्तम् आर्यंगयाशीर्षे<sup>६</sup>—  
“प्रतिपत्तिसाराणां बोधिसत्त्वानां बोधिर्नाप्रतिपत्तिसाराणाम्” इति ।  
आर्यसमाधिराजे<sup>७</sup> चोक्तम्—“तस्मात् प्रतिपत्तिसारो भविष्यामि इत्येवं 10  
त्वया कुमार, शिक्षितव्यम् । तत् कस्य हेतोः ? प्रतिपत्तिसारस्य हि, कुमार, न दुर्लभा भवत्यनुत्तरा सम्यक्सम्बोधिः” इति ।

सा च प्रतिपत्तिर्बोधिसत्त्वस्य पारमिताऽप्रमाणसङ्ग्रहवस्त्वादिभेदेन अक्षयमतिरत्नमेघादिसूत्रेषु विस्तरेण वर्णिता । तथा लौकिकशिल्पादि-  
स्थानेष्वपि यावद् बोधिसत्त्वेन शिक्षितव्यम् । किं पुनर्लोकोत्तरेषु 15  
ध्यानादिषु । अन्यथा कथं सर्वाकारं सत्त्वार्थं कुर्युः । सा चेयं संक्षेपेण बोधिसत्त्वस्य प्रज्ञोपायरूपा प्रतिपत्तिर्न प्रज्ञामात्रं नोपायमात्रम् । यथा आर्यविमलकीर्तिनिर्देशे<sup>८</sup>—“प्रज्ञारहित उपाय उपायरहिता च प्रज्ञा बोधिसत्त्वानां बन्धनम्” इत्युक्तम् । उपायसहिता प्रज्ञा प्रज्ञासहित उपायो मोक्षत्वेन वर्णितः । आर्यंगयाशीर्षे<sup>९</sup> चोक्तम्—“द्वाविमौ बोधिसत्त्वानां 20  
संक्षिप्तौ मार्गौ । द्वाभ्यां मार्गाभ्यां समन्वागता बोधिसत्त्वा महासत्त्वाः<sup>१०</sup>

१. भो० पा०—प्रविशन्ति । २. कल्याणमित्रात्—भो० न । ३. ग्राहके—भो० न ।  
४. भो० पा०—आर्यमञ्जुश्रिया । ५. ददाति—भो० न । ६. देगे—का० ( सूत्र—‘व’ २६१ ) ।  
७. देगे—का० ( सूत्र—‘द’ २८ ) सं०—१० परि० पृ० १४ दरभङ्गा । ८. देगे—का० ( सूत्र—  
‘म’ २०१ ) सं०—४ परि० पृ० ११६ ति० संस्थानम् । ९. देगे—का० ( सूत्र—‘व’ २८८ ) ।  
१०. महासत्त्वाः—भो० न ।

क्षिप्रमनुत्तरां सम्यक्सम्बोधिम् अभिसम्भोत्स्यन्ते । कतमौ द्वौ, उपायश्च प्रज्ञा च ।” इति ।

तत्र प्रज्ञापारमितां त्यक्त्वा दानादिपारमितासङ्ग्रहवस्त्वादिकं सर्वमेव क्षेत्रपरिशुद्धिमहाभोग[ बहु ] परिवारसम्पत्सत्त्वपरिपाकनिर्माणा-  
 5 दिकसकलाभ्युदयधर्मसङ्ग्राहकं कुशलम् उपाय उच्यते । प्रज्ञा तु तस्यैव चोपायस्याविपरीतस्वभावपरिच्छेदहेतुः । तथा हि सम्यगुपायं विविच्याऽविपर्यस्तो यथावत् स्वपरार्थानुष्ठानाद् विषमिव मन्त्रपरिगृहीतं भुञ्जानो न संक्लिश्यते । तथा चोक्तमत्रैव सूत्रे—“उपायः सङ्ग्रहज्ञानम् प्रज्ञा परिच्छेदज्ञानम् ।” इति । आर्यश्रद्धाबलाधाने<sup>१</sup> चोक्तम्—“उपाय-  
 10 कौशलं कतमम् ? यत् सङ्ग्रहः सर्वधर्माणाम् । प्रज्ञा कतमा ? यत् सर्वधर्माणाम् असम्भेदेन कौशलम्” इति । एतौ प्रज्ञोपायौ द्वावपि सर्वकालमेव सेवनीयौ भूमिप्रविष्टैरपि न तु प्रज्ञामात्रं नोपायमात्रम् । यतः सर्वास्वेव दशसु भूमिषु बोधिसत्त्वस्य पारमितासमुदाचारः पठितो दशभूमिकादौ “न<sup>२</sup> च परिशेषासु न समुदाचरति” इति  
 15 वचनात् ।

अष्टम्यां च भूमौ बोधिसत्त्वस्य शान्तविहारिणो बुद्धैर्व्युत्थानं<sup>३</sup> तद् विरुध्येत । तच्च ततस्तत्र पाठाद् अवगन्तव्यम् । [ तथा चोक्तं तत्रैव सूत्रे ] “तस्य खलु भो जिनपुत्र, बोधिसत्त्वस्य एवमिमामचलां बोधि-  
 20 सत्त्वभूमिमतनुगतस्य पूर्वप्रणिधानबलाधानस्थितस्य बुद्धा भगवन्तस्तस्मिन् धर्ममुखस्रोतसि तथागतज्ञानोपसंहारं कुर्वन्ति । एवं चैनं ब्रुवन्ति—साधु

१. भो० पा० —[बहुपरिवार] । २. देगे-का० ( सूत्र-‘च’ २८६ ) । ३. देगे-का० ( सूत्र-‘छ’ २८ ) । ४. कतमम्-भो० न । ५. नोपायमात्रम्-भो० न । ६. देगे-का० ( अवतंसक-‘ख’ ३१-परि० पृ० १८२ ) । ७. भो० पा०—भगवद्भिर्बुद्धैर्व्युत्थानम् । ८. अत्र ‘दशभूमिसूत्रतो यदवगन्तुं निर्देशः, तत्प्रतिपादकानि सूत्रवाक्यानि ‘तस्य खलु भो जिनपुत्र’ इत्यादीनि अत्रोद्धृतानि । ९. देगे-का० ( अवतंसक-‘ख’ ३१ परि० पृ० १८२ ) सं०—दशभूमि-पृ० ४३ वरभङ्गा ।



साधु कुलपुत्र । एषा परमार्थक्षान्तिर्बुद्धधर्मानुगमाय । अपि तु खलु पुनः  
 कुलपुत्र,<sup>१</sup> या अस्माकं दशबलचतुर्विंशारद्यबुद्धधर्मसमृद्धिः, सा तव  
 नास्ति । तस्या बुद्धधर्मसमृद्धेः पर्येषणाय अभियोगं<sup>२</sup> कुरु, वीर्यमारभस्व ।  
 एतदेव क्षान्तिमुखं मोन्मोक्षीः । अपि तु खलु पुनः कुलपुत्र, किं चापि त्वयैवं  
 शान्तविमोक्षविहारोऽनुप्राप्तः, इमान् पुनरशान्तानप्रशान्तान् बालपृथग्जनान् 5  
 नानाक्लेशसमुदाचार<sup>३</sup>प्राप्तान् विविधवितर्कोपहतमानसान् समन्वाहर,  
 अपेक्षस्व । अपि तु खलु पुनः कुलपुत्र, पूर्वप्रणिधानमनुस्मर सत्त्वार्थसंप्रापणं  
 ज्ञानमुखाचिन्त्यतां च । अपि तु खलु पुनः कुलपुत्र, एषा सर्वधर्माणां  
 धर्मता । उत्पादाद्वा तथागतानामनुत्पादाद्वा स्थितैवैषा धर्मता<sup>४</sup> धर्मधातु-  
 स्थितिः यदिदं सर्वधर्मशून्यता सर्वधर्मानुपलब्धिः । नैतया तथागता एव 10  
 केवलं प्रभाव्यन्ते, सर्वश्रावकप्रत्येकबुद्धा अपि ह्येतामविकल्पधर्मतामनु-  
 प्राप्नुवन्ति ।

अपि तु खलु पुनः कुलपुत्र, प्रेक्षस्व तावत् त्वमस्माकं कायाप्रमाणतां  
 च ज्ञानाप्रमाणतां च बुद्धक्षेत्राप्रमाणतां च ज्ञानाभिनिर्हारप्रमाणतां च  
 प्रभामण्डलाप्रमाणतां च स्वराङ्गविशुद्ध्यप्रमाणतां च । तथैव त्वमप्य- 15  
 भिनिर्हारमुत्पादय । अपि तु खलु पुनः कुलपुत्र, एकस्त्वेष आलोको योज्यं  
 सर्वधर्मानिर्विकल्पालोकः । ईदृशास्तु कुलपुत्र, धर्मालोकास्तथागतानाम-  
 पर्यन्तगता अपर्यन्तकृता अपर्यन्तबद्धाः, येषां संख्या नास्ति, गणना, प्रमाण-  
 मुपनिषदौपम्यं नास्ति, तेषामधिगमाय अभिनिर्हारमुत्पादय । अपि तु खलु  
 पुनः कुलपुत्र, प्रेक्षस्व तावद् दशसु दिक्षु अप्रमाणक्षेत्रतां च अप्रमाण- 20  
 सत्त्वतां च अप्रमाणधर्मविभक्तितां च । तत्सर्वमनुगणय । यथावत्तया  
 अभिनिर्हारमुत्पादय । “इति हि भो जिनपुत्र, ते बुद्धा भगवन्त

१. कुलपुत्र-भो० न । २. अभियोगं-भो० न । ३. समुदाचार-भो० न ।  
 ४. धर्मता-भो० न । ५. यथावत्तया अभिनिर्हारमुत्पादय-भो० न । ६. ‘इति हि भो  
 जिनपुत्र ..... इत्यतः ..... निष्पादयति ।’ पर्यन्तोऽंशः मूलसंस्कृतानुवादभूतेषु काग्युर-  
 संस्करणेषु यः पाठः, भावनाक्रमोद्धतः भोटांशः त्रिन्योऽपि भिन्नः ।



एवं भूम्यनुगतस्य बोधिसत्त्वस्य एवं प्रमुखान्यप्रमेयाण्यसंख्येयानि ज्ञानाभि-  
निर्हारमुखान्युपसंहरन्ति, यैर्ज्ञानाभिनिर्हारमुखैर्बोधिसत्त्वोऽप्रमाणज्ञान-  
विभक्तितोऽभिनिर्हारकर्माभिनिष्पादयति ।' आरोचयामि ते भो  
जिनपुत्र, प्रतिवेदयामि । ते चेद् बुद्धा भगवन्तस्तं बोधिसत्त्वमेवं सर्वज्ञज्ञाना-  
5 भिनिर्हारमुखेषु नावतारयेयुस्तदेवास्य परिनिर्वाणं भवेत्सर्वसत्त्वकार्यप्रति-  
प्रसन्नविधश्च ।" इति विस्तरः ।

यच्च आर्यविमलकीर्तिनिर्देशे गयाशीर्षे चोक्तं तदपि पूर्वोक्तं विरुध्यते,  
एवं सामान्येनैव तत्राभिधानात् । यत् सर्वधर्मसङ्ग्रहवैपुल्ये चोक्तं तदपि  
विरुध्यते एव । तत्रोक्तम्—“सूक्ष्मं हि मञ्जुश्रीः, सद्धर्मप्रतिक्षेपकर्मा-  
10 वरणम् । यो हि कश्चिन्मञ्जुश्रीः, तथागतभाषिते धर्म एकस्मिन्  
शोभनसंज्ञाम् उत्पादयति । एकस्मिन्नशोभनसंज्ञाम् उत्पादयति । स  
सद्धर्मं प्रतिक्षिपति । तेन सद्धर्मं प्रतिक्षिपता तथागतोऽभ्याख्यातो भवति”  
इति विस्तरम् उक्त्वा आह—“योऽयं मैत्रेय, षट्पारमितासमुदागमो  
बोधिसत्त्वानां बोधाय तं ते मोहपुरुषा एवं वक्ष्यन्ति । प्रज्ञापारमितायामेव  
15 बोधिसत्त्वेन शिक्षितव्यम्, किं शेषाभिः पारमिताभिरिति । तेऽन्यामुपाय-  
पारमितां दूषयितव्यां मन्यन्ते । तत् किं मन्यसे, अजित ! दुष्प्रज्ञः स  
काशिराजोऽभूद् येन कपोतार्थं श्येनाय स्वमांसानि दत्तानि ? मैत्रेय आह,  
नो हीदम्, भगवन् । भगवानाह—यानि मया मैत्रेय, बोधिसत्त्वचर्या चरता  
षट्पारमितासंयुक्तानि कुशलमूलान्युपचितानि । अपकृतं नु तैः कुशलमूलैः ?  
20 मैत्रेय आह—नो हीदं भगवन् । भगवान् आह, त्वं तावद् अजित,  
दानपारमितायां षष्टि कल्पान् समुदागतः । यावत् प्रज्ञापारमितायां  
षष्टि कल्पान् समुदागतः, तत् ते मोहपुरुषा एवं वक्ष्यन्ति—एकनयेनैव

१. भो० पा०—मार्गाभिनिर्हार । २. अयंसूत्रभोट-काग्युरसंस्करणेषु न प्राप्यतेऽमीषु  
दिवसेषु । ३. अन्याम्—भो० न । ४. भो० पा०—अहं काशिराजोऽभूम् । ५. भगवन्—  
भो० न ।



बोधिर्यदुत शून्यतानयेन” इति विस्तरः । वैरोचनाभिसम्बोधौ चोक्तम्-  
“तदेतत् सर्वज्ञज्ञानं करुणामूलं बोधिचित्तहेतुकम् उपायपर्यवसानम्”  
इति । तस्मादुभयं सर्वकालमेव बोधिसत्त्वेन सेवनीयम् ।

एवं हि भगवताम् अप्रतिष्ठितनिर्वाणं सिध्यति । तथा हि दानादे-  
रुपायस्य रूपकायक्षेत्रपरिवारादिमहाभोगताफलसम्पत्परिग्रहाद् भगवतां 5  
न निर्वाणेष्ववस्थानम् । प्रज्ञया च<sup>२</sup> सकलविपर्यासप्रहाणाद् न  
संसारेऽवस्थानं विपर्यासमूलत्वात् संसारस्य । अन्या<sup>३</sup> च प्रज्ञोपायस्वरूपया  
प्रतिपदा समारोपापवादान्तविवर्जनेन मध्यमा प्रतिपद् उद्भाविता ।  
प्रज्ञया समारोपान्तस्य वर्जनाद् उपायेनापवादान्तस्य वर्जनात् । अत एव  
आर्यधर्मसङ्गीतावुक्तम्<sup>४</sup> - “लक्षणानुव्यञ्जनरूपकायपरिनिष्पादनाभिरतश्च 10  
भवति, न धर्मकायाभिसमयमात्राभिरतः” इति । पुनरुक्तम्-“प्रज्ञोपाय-  
जनितस्तथागतानां परप्रत्ययतः संभवोऽनुगन्तव्यः” इति<sup>५</sup> ।

यत् पुनरुक्तम्<sup>६</sup> - “कोलोपमं धर्मपर्यायम् आजानद्भिर्धर्मा एव  
प्रहातव्याः, प्राग्<sup>७</sup> एवाधर्माः” इति । तद् विपरीताभिनिवेशप्रहाणतः  
प्रहातव्या इत्यभिप्रायादुक्तम्, न तु प्रयोजनसम्पादनार्थमपि नाश्रय- 15  
णीयम् । तथा चोक्तम्-“धर्मः प्रग्रहीतव्यो नोद्ग्रहीतव्यः” इति ।  
नोन्मार्गेण प्रग्रहीतव्य इत्यर्थः । यच्चापि क्वचिद् दानादि सांसारिक-  
फलत्वेन वर्णितं तत् प्रज्ञारहितानां दानादीनां पूर्वम् उक्तं तावन्मात्रकुशल-  
मूलसन्तुष्टांश्चाधिकृत्योत्तर<sup>८</sup> कुशलमूले प्रोत्साहनार्थम् । अन्यथा [आर्य-]  
विमलकीर्तिनिर्देशः<sup>९</sup> [ आदि पूर्वोक्तः ]<sup>१०</sup> सर्व एव विरुध्यते । तस्मात्तु 20  
द्वावपि प्रज्ञोपायौ सेवनीयाविति स्थितम् ।

१. देगे-का० (तन्त्र-‘थ’ ११३) उद्धरणमिदं भोटपाठानुसारम् द्र० ‘संभवोऽनुगन्तव्यः’  
इत्याद्यनन्तरम् । २. च-भो० न । ३. अन्या-भो० न । ४. देगे-का० (सूत्र-‘श’ १८) । ५.  
भोटपाठे एतदुद्धरणानन्तरं पूर्वोक्तं वैरोचनाभिसम्बोधिरुद्धरणं लिखितम् । ६. यत् पुनरुक्तम्-  
भो० न । ७. प्राग्-भो० न । ८. भो० पा० उत्तरोत्तरम् । ९. भो० पा० [आर्यविमल] ।  
१०. दूची पाठे-विमलकीर्त्यादिनिर्देशः । ११. भो० पा० [आदिपूर्वोक्तः] ।

तत्र प्रज्ञापरिगृहीता दानादयः पारमिताव्यपदेशं लभन्ते  
नान्यथेति । अतो दानादिपरिशुद्धये समाधानम् आस्थाय प्रज्ञोपादानार्थं  
यत्नं कुर्वीत ।

तत्र प्रथमं तावत् श्रुतमयी प्रज्ञोत्पादनीया । तथा हि तावद्  
5 आगमार्थम् अवधारयति । ततश्चिन्तामय्या प्रज्ञयानीतनेयार्थं  
निर्वेधयति । ततस्तया निश्चित्य भूतमर्थं भावयेन्नाभूतम् । अन्यथा हि  
विपरीतस्यापि भावनाद् विचिकित्सायाश्चाव्यपगमात् सम्यग्ज्ञानोदयो  
न स्यात् । ततश्च व्यर्थेव भावना स्यात् । यथा तीर्थिकानाम् ।<sup>१</sup> उक्तं च  
भगवता समाधिराजे<sup>२</sup>—

10 नैरात्म्यधर्मान् यदि प्रत्यवेक्षते  
तान् प्रत्यवेक्ष्य यदि भावयेत ।  
स हेतुर्निर्वाणफलस्य प्राप्तये  
यो अन्यहेतुर्न स भोति शान्तये ॥ इति ।

तस्माच्चिन्तामय्या प्रज्ञया युक्त्यागमाभ्यां प्रत्यवेक्ष्य भूतमेव वस्तुस्वरूपं  
15 भावनीयम् । वस्तूनां स्वरूपं च परमार्थतोऽनुत्पाद एवागमतो युक्तितश्च  
निश्चितम् ।

तत्रागमतो यथोक्तम् आर्यधर्मसङ्गीतौ<sup>३</sup> - “अनुत्पादः सत्यमसत्यम्<sup>४</sup>  
अन्ये धर्माः” इति । एतच्च परमार्थानुकूलत्वाद् अनुत्पादः सत्यमित्यु-  
क्तम् । परमार्थतस्तु नोत्पादो नाप्यनुत्पादः, तस्य सर्वव्यवहारातीतत्वात् ।  
20 पुनश्चात्रैव<sup>५</sup> चोक्तम्—“उत्पादनरोधाभिनिविष्टः कुलपुत्र, लोकसन्निवेशः,

१. भो० पा०—तीर्थिकानां भावना । २. देगे-का० ( सूत्र-‘द’ २७ ) सं०-६ परि०,  
पृ० ४६ दरभङ्गा । ३. देगे-का० ( सूत्र-‘श’ ६ ) । ४. भो० पा०—उत्पादादयोऽन्ये ।  
५. देगे-का० ( सूत्र-‘श’ ४३ ) ।



तस्मात् तथागतो महाकारुणिको लोकस्योत्त्रासपदपरिहारार्थं व्यवहार-  
वशाद् उक्तवान्, उत्पद्यते निरुध्यते चेति न चात्र कस्यचिद्  
धर्मस्योत्पादः” इति । आर्यबुद्धसङ्गीतौ<sup>१</sup> चोक्तम्—“कतमा योनिशः पृच्छा,  
कतमा योनिः ? आह अनुत्पादो योनिः, तस्य पृच्छा योनिशः पृच्छा” ।  
पुनरत्रैवोक्तम्<sup>२</sup>—“चकारमुखाः<sup>३</sup> सर्वधर्माश्च्युत्युत्पत्तिविगताः । अभावमुखाः<sup>४</sup>  
सर्वधर्माः, स्वभावशून्यताम् उपादाय” इति । आर्यसत्यद्वयविभागे<sup>५</sup>  
चानुत्पादसमतया सर्वधर्माणां समता भवति । प्रज्ञापारमितायां चोक्तम्<sup>६</sup>—  
“रूपं सुभूते, रूपस्वभावेन शून्यम्, यावद् विज्ञानं विज्ञानस्वभावेन  
शून्यमिति स्वलक्षणशून्यताम् उपादाय” इति । हस्तिकक्षये<sup>७</sup> चोक्तम्—

न कश्चित्लभ्यते भावो यस्योत्पादस्य संभवः ।

10

असंभवेषु धर्मेषु बालः सम्भवमिच्छति ॥ इति ।

पितापुत्रसमागमे<sup>८</sup> चोक्तम्—“सर्व एते धर्माः सर्वे समास्त्रैकाल्य-  
समतया । अतीतेऽध्वनि सर्वधर्माः स्वभावरहिता यावत् प्रत्युत्पन्नेऽध्वनि”  
इति । एवं तावद् आगततः प्रत्यवेक्षणीयम् । युक्त्या हि स्थिरीकृतस्या-  
गमार्थस्यान्यैरपोहितुम् अशक्यत्वात् । अतो युक्त्यापि<sup>९</sup> प्रत्यवेक्षणीयम् । 15

तत्र संक्षेपतो युक्तिरुच्यते । उत्पादो भावानामहेतुको वा स्यात्  
सहेतुको वा । न तावद् अहेतुकः कादाचित्कत्वदर्शनात् । कारणानपेक्षा  
हि विशेषाभावाद् उत्पादकालवत् सदा सर्वत्रैव च भावाः किं न भवेयुः ।  
अभावकालाद् अविशेषाद् वा उत्पादकालेऽपि नैव भवेयुः । एवं तावन्न  
निर्हेतुको युक्तः । नापि सहेतुकः । तथा हि यस्तावदीश्वरादिस्तीर्थिकै-  
नित्यो हेतुः कल्पितस्ततो भावा न जायन्ते क्रमेणोत्पाददर्शनात् । न 20

१. देगे-का० ( सूत्र-‘ज’ २२२ ) । २. देगे-का० ( सूत्र-‘ज’ २०२ ) । ३. सं०  
दुष्ठी-पाठे ‘अकारमुखाः’ । ४. भो० पा०-स्वभावमुखाः सर्वधर्माः । ५. देगे-का० ( सूत्र-‘म’  
२४६ ) । ६. प्रज्ञापारमितायां चोक्तम् ..... ? । ७. देगे-का० ( सूत्र-‘छ.’ १०५ ) ।  
८. देगे-का० ( रत्नकूट-‘ड’ १६२ ) । ९. युक्त्यापि-भो० न ।

त्वविकलकारणस्य [ फलस्य ]<sup>१</sup> क्रमेणोत्पादो युक्तो निरपेक्षत्वात् ।  
 नापीश्वरादेः स्वयं समर्थस्य परापेक्षा । नित्यत्वेन परैरनुपकार्यत्वात् ।  
 अनुपकारिणि चापेक्षाऽयोगात् । अत एवेश्वरादीनां सर्वसामर्थ्यशून्यत्वाद्  
 वन्ध्यापुत्रादिवद् निःस्वभावत्वमेव । अर्थक्रियासमर्थत्वाद् वस्तुनः । तेषां  
 5 क्वचिदपि कार्ये न क्रमेण सामर्थ्यं यथा विचारितम् । नापि योगपद्येन,  
 तथा हि सर्वकार्यं सकृद् उत्पाद्योत्तरकालेऽपि यद्युत्पत्तिसमर्थ एवासौ तदा  
 पुनरपि समर्थस्वभावानुवृत्तौ पूर्ववत् कार्योत्पत्तिप्रसङ्गः । अननुवृत्तौ वा  
 पूर्वस्वभावपरित्यागाद् अनित्यत्वप्रसङ्गः ।

तस्मान्न नित्यं नाम किञ्चिद् वस्तु विद्यते । अत एवोक्तं  
 10 भगवता<sup>२</sup>—“असत्समारोपः पुनर्महामते ! आकाशनिरोधनिर्वाण [आदि]<sup>३</sup>  
 अकृतकभावाभिनिवेशसमारोपः” इति । तस्मान्न नित्याद् एषामुत्पादो  
 युक्तः । नाप्यनित्यात्तत्रातीतानागतयोरवस्तुत्वान्न तावत्ततो जन्म युक्तम्  
 अहेतुकत्वप्रसङ्गात् । नापि वर्तमानात्, समानासमानकालयोस्तत उत्पादा-  
 योगात् । तथा हि न तावत् समानकालं कारणं स्वभाववत् कार्यस्यापि  
 15 तत्समानकालभावितया निष्पन्नत्वात् । नापि भिन्नकालम्, कालान्तर-  
 व्यवधानेनोत्पादेऽतीतादेरेवोत्पत्तिप्रसङ्गात् । अव्यवधानेनाप्युत्पादे  
 सर्वात्मना यद्यव्यवधानं तदैकस्मिन्नेव क्षणे सर्वक्षणानाम् अनुप्रवेशात्  
 कल्पस्य क्षणमात्रताप्रसङ्गः । यथा परमाणोः सर्वात्मना संयोगे  
 पिण्डस्याणुमात्रताप्रसङ्गः । अर्थकदेशेन<sup>४</sup>, तदा क्षणस्य सावयवत्वप्रसङ्गः ।  
 20 स्वतोऽपि नोत्पद्यन्ते, निर्हेतुकपक्षेणैवास्य पक्षस्य सङ्गृहीतत्वात्  
 स्वात्मनि च कारित्रविरोधात् । नाप्युभयतः उभयपक्षभाविदोषद्वय-  
 [ सङ्ग्रह<sup>५</sup> ] प्रसङ्गात् ।

१. भो० पा०—[ विकलकारणस्य फलस्य ] । २. देगे-का० ( सूत्र-‘च’ ८३ ) सं०-  
 लङ्कावतार-२ परि० पृ० ३१ दरभंगा । ३. भो० पा०—[ निर्वाणादि ] । ४. भो० पा०—  
 देशस्पृष्ट । ५. भो० पा०—[ संग्रहप्रसङ्गात् ] ।



तस्मात् परमार्थतोऽनुत्पन्ना एवामी भावाः । संवृत्या तूत्पादस्य विद्यमानत्वान्नागमादिविरोधः । तथा चोक्तं भगवता<sup>१</sup>—

भावा विद्यन्ति संवृत्या परमार्थे न भावकाः ।

निःस्वभावेषु या भ्रान्तिस्तत्सत्यं संवृतिर्भवेत् ॥ इति ।

इयं च युक्तिर्भगवतोऽभिप्रेता शालिस्तम्बादौ । स्वतः परत उभाभ्याम्<sup>५</sup> अहेतोश्च जन्मनिषेधात् ।

अथवा एवं युक्त्या विचारयेत् । द्विविधा भावा रूपिणोऽरूपिणश्च । तत्रापि तावद् रूपिणो घटादयस्तेऽणुशो विभिन्नरूपत्वाद् नैकस्वभावाः । अणूनां पूर्वापरस्थितानां पूर्वादिदिग्भागत्वेन विभिद्यमानानाम् असिद्धावप्यणुसंचयात्मकत्वे नानेकस्वभावो युक्तः, न चैकानेक- 10 स्वभावव्यतिरेकेणापरः कश्चिद् भावस्वभावोऽस्तीति निःस्वभावा एवामी परमार्थतः स्वप्नाद्युपलब्धरूपादिवद् रूपिणो भावाः । एतच्च भगवतैव चोक्तम् आर्यलङ्कावतारे<sup>२</sup>—“गोविषाणं पुनर्महामते, अणुशोऽपि विभिद्यमानं नावतिष्ठते । पुनरप्यणवोऽपि भिद्यमाना अणुत्वलक्षणेन नावतिष्ठन्ते” इति । 15

ये चारूपिणस्तेऽपि तथैव विचार्यमाणा निःस्वभावा एव । तथाहि, बाह्यस्य नीलादेरर्थस्याभावात् सामर्थ्यत एव विज्ञानादयोऽरूपिणः स्कन्धा नीलादिरूपेण प्रतिभासन्त<sup>४</sup> इत्यभ्युपेयम् । उक्तं च भगवता<sup>३</sup>—

“बहिर्धा नास्ति वैरूपं स्वचित्तं दृश्यते बहिः ।” इति ।

ततश्च नीलादिचित्राकारनिर्भासतया ग्राह्यग्राहकाकारनिर्भासतया नैक- 20

१. देगे-का० (सूत्र-‘च’ १७४) सं०-लङ्कावतार-॥१०॥४२६॥ पृ० १३५ दरभङ्गा ।  
दूचीपाठे— भावा जायन्ते संवृत्या परमार्थेऽस्वभावकाः ।

निःस्वभावेषु भावेषु भ्रान्तिः सा संवृतिर्मता ॥

२. देगे० का० (सूत्र-‘च’ ७६) सं०-२ परि०, पृ० २४ दरभङ्गा । ३. पुनः-भो० न ।

४. प्रतिभासन्त-भो० न । ५. देगे-का० (सूत्र-‘च’ १७६) सं०-लङ्कावतार ॥१०॥४८६॥ पृ० १३६, दरभङ्गा ।

स्वभावा अमी युक्ताः । न चैकस्यानेकरूपता युक्तिमती, एकानेक-  
विरोधात् । एकस्य कस्यचित् स्वभावस्यासिद्धावनेकरूपताऽप्ययुक्तिमती,  
एकसमूहरूपत्वाद् अनेकस्य ।

अथवा तत्रालीका एवामी रूपादय आकाराः प्रतिभासन्त  
5 इत्यभ्युपगम्यते, तदा विज्ञानम् अप्यलीकं प्राप्नोति । विज्ञानस्य  
तत्स्वरूपाव्यतिरेकात् । न हि स्वयं प्रकाशमानरूपताव्यतिरेकेणान्यद्  
विज्ञानस्य रूपमस्ति । स्वयं च न निर्भासन्ते रूपादयः । तेषां च  
विज्ञानस्वरूपापन्नानाम् अलीकत्वे सर्वमेव विज्ञानम् अलीकम् अभ्युपेतं  
स्यात् । तस्माद्<sup>१</sup> “मायोपमं च विज्ञानम्” इत्युक्तं भगवता ।

10 तस्माद् एकानेकस्वभावशून्यत्वेन परमार्थतोऽलीका एवामी सर्वभावा  
इति निश्चितमेतत् । अयं चार्थ उक्तो भगवता लङ्कावतारे<sup>२</sup>—

यथैव दर्पणे रूपम् एकत्वान्यत्ववर्जितम् ।

दृश्यते न च तत्रास्ति तथा भावेषु भावता ॥ इति ।

एकत्वान्यत्ववर्जितम्<sup>३</sup> इति, एकत्वान्यत्वरहितम् इत्यर्थः । पुनश्चोक्तम्<sup>४</sup>—

15 बुद्ध्या विविच्यमानानां स्वभावो नावधार्यते ।

अतो निरभिलाप्यास्ते निःस्वभावाश्च दर्शिताः ॥ इति ।

तदेवं चिन्तामय्या प्रज्ञया निश्चित्य भूतमर्थं तस्य प्रत्यक्षोकरणाय  
भावनामयीं प्रज्ञाम् उत्पादयेत् । “बहुश्रुतादिमात्रकेण नार्थः प्रत्यक्षो भवतीति  
निवेदितम् आर्यरत्नमेघादिषु । अनुभवश्च प्रतिपत्तृणाम्, न चापि स्फुटतर-

20 ज्ञानालोकोदयम् अन्तरेण सम्यगावरणतमोऽपहोयते । भावनाबहुलीकार-

१. तस्माद्-भो० न । २. देगे-का० ( सूत्र-‘च’ १८४ ) सं०-॥ १०।७०.६॥ पृ०  
११४ दरभङ्गा । ३. एकत्वान्यत्ववर्जितम् इति-भो० न । ४. देगे-का० ( सूत्र-‘च’ १६४ )  
सं०-लङ्कावतार ॥२१।७३॥ पृ० ४८, दरभङ्गा । ५. बहु-भो० न ।



तश्चाभूतेऽप्यर्थे स्फुटतरज्ञानम् उत्पद्यते । यथा अशुभादि<sup>१</sup>पृथ्वीकृत्स्नादि-  
समापन्नानां [ ज्ञानोद्भवत्वे ]<sup>२</sup> किम्पुनर्भूते । तथा च भावनायाः  
परिस्फुटज्ञानफलत्वेन साफल्यमुक्तम् आर्यसमाधिराजे<sup>३</sup>—

आरोचयामि प्रतिवेदयामि वो  
यथा यथा बहु च वितर्कयेन्नरः ।

5

तथा तथा भवति तन्निमित्तचित्त-  
स्तेहि वितर्केहि तन्निश्चितेहि ॥ इति विस्तरः<sup>४</sup> ।

तस्मात् तत्त्वं साक्षात्कर्तुंकामो<sup>५</sup> भावनायां प्रवर्तते ।

तत्र प्रथमतः तावद् योगिना शमथो निष्पादनीयश्चित्तस्थिरी-  
करणाय । सलिलवच्चञ्चलत्वाच्चित्तस्य, न शमथमाधारमन्तेरण 10  
स्थितिरस्ति । न चासमाहितेन चेतसा यथाभूतं शक्यते ज्ञातुम् । उक्तं हि  
भगवता<sup>६</sup>—“समाहितचित्तो<sup>७</sup> यथाभूतं प्रजानाति” इति । शमथो  
लाभादिकामनानिरपेक्षस्य सम्यक्प्रवृत्तौ<sup>८</sup> स्थिरस्य दुःखाद्यधिवासनशीलस्या-  
रब्धवीर्यस्य शीघ्रतरं सम्पद्यते । अत एव आर्यसंघिनिर्मोचनादौ दानादय  
उत्तरोत्तरत्वेन वर्णिताः ।

15

तदेवं शीलादिशमथसम्भारेषु स्थितो मनोज्ञुकूलदेशे सर्वबुद्ध-  
बोधिसत्त्वेषु प्रणामादिकं कृत्वा पापदेशनां पुण्यानुमोदनां विधाय  
सकलजगदभ्युद्धरणाशयो महाकरुणाम् एवाभिमुखीकृत्य कायम् ऋजुं  
प्रणिधाय सुखासनोपविष्टः पर्यङ्कमाभुज्य समाधिमभिनिष्पादयेत् ।

तत्र प्रथमं तावद् यद् वस्तु विचारयितव्यं यावता प्रकारेण 20  
सङ्क्षेपतः सकलवस्तुसङ्ग्रहो भवति तत्र चित्तं बध्नीयात् । सङ्क्षेप्तं

१. अशुभादि-भो० न । २. भो० पा०—[ज्ञानोद्भवत्वे] । ३. देगे-का० (सूत्र-‘द’ १३)  
सं०—॥४॥१६॥ पृ० २१, दरभङ्गा । ४. भो० पा०—इत्यादि । ५. कामो-भो० न । ६. देगे-  
का० (आर्यधर्मसङ्गीतिसूत्र-‘श’ ५२) । ७. चित्तो-भो० न । ८. भो० पा०—शीलसम्यक्स्थित ।

पुनर्वस्तु रूप्यरूपिभेदेन द्विधा भवति । एतच्चादिकर्मिकस्य विक्षेपदोष-  
परिहारार्थं संक्षिप्तं तावद् युक्तम् आलम्बयितुम् । यदा तु जितमनस्कारो  
भवति तदा स्कन्धधात्वादिभेदेन विशोध्य<sup>१</sup> विस्तरशोऽप्यालम्बत  
एव । तथा सन्धिनिर्मोचनादौ योगिनाम् अष्टादशप्रकारशून्यतालम्बनादि-  
5 भेदेन नाना<sup>२</sup>प्रकारम् आलम्बनम् उक्तम् ।

अत्रैव भगवता सत्त्वानुग्रहाद् रूप्यरूप्यादिभेदेन संक्षेपमध्य-  
विस्तारैः वस्तुभेदोऽभिधर्मादौ निर्दिष्टः । तच्च वस्तु अध्या<sup>३</sup>रोपाप-  
वादपरिहाराय स्कन्धधात्वादिसङ्ग्रहतो गणयेत् । ततो निश्चित्य सर्वं  
वस्तुसङ्ग्रहं तत्रैव पुनश्चित्तं प्रबन्धेन प्रेरयेत् ।

10 यदा त्वन्तरा रागादिना चित्तं बहिर्विक्षिपेत् तदावगम्य विक्षेपताम्  
अशुभादिभावनया विक्षेपम् उपशाम्य पुनस्तत्रैवोपर्युपरि चित्तं प्रेरयेत् ।  
अशुभादिभावनाक्रमस्तु ग्रन्थविस्तर<sup>४</sup>भयान्न लिखितः । यदा तु चित्तं<sup>५</sup>  
तत्रानभिरतं पश्येत्, तदा समाधेर्गुणदर्शनतोऽभिरतिं तत्र भावयेत् ।  
विक्षेपदोषदर्शनाद् अरतिं प्रशमयेत् । अथ यदा स्त्यानमिद्धाभिभवाद्  
15 आलम्बनग्रहणाप्रकटतयालीनं चित्तं भवति तदा लोकसंज्ञाभावनया  
प्रामोद्यवस्तुबुद्धादिगुणमनसिकारात् [वा<sup>६</sup>] लयम् उपशाम्य पुनस्तदेवालम्बनं  
वृद्धतरं गृह्णीयात् ।

अथ यदा पूर्वहसितरमिताद्यनुस्मरतोऽन्तरा चित्तम् उद्धतं पश्येत्,  
तदाऽनित्यतादिसंवेग<sup>७</sup>मनसिकाराद् औद्धत्यं प्रशमयेत् । ततः पुनस्तत्रैवा-  
20 लम्बने चित्तस्यानभिसंस्कारवाहितायां यत्नं कुर्वीत । अथ यदा  
लयौद्धत्याभ्यां विविक्ततया समप्रवृत्तं स्वरसवाहचित्तं पश्येत् तदाभोग-

१. विशोध्य-भो० न । २. नाना-भो० न । ३. अध्या-भो० न । ४. भो० पा०-  
अक्षरबाहुल्य । ५. चित्तं-भो० न । ६. भो० पा०-[मनसिकारात् वा लयं] । ७. भो०  
पा०-संवेगवस्तु ।



शिथिलीकरणाद् उपेक्षते । यदा तु समप्रवृत्ते सत्याभोगः क्रियते, तदा चित्तं विक्षिपेत् ।

यदा तु तत्रालम्बनेऽनभिसंस्कारवाहि यावदिच्छं चित्तं प्रवृत्तं भवति, तदा शमथो निष्पन्नो वेदितव्यः । एतच्च सर्वशमथानां सामान्य-  
लक्षणम्, चित्तैकाग्रतामात्रस्वभावत्वात् शमथस्य । आलम्बनं तु 5  
तस्यानियतमेव । अयं च शमथमार्गो भगवता<sup>१</sup> आर्यप्रज्ञापारमितादौ<sup>२</sup>  
निर्दिष्टः । यद् आह—“तत्र चित्तं स्थापयति, संस्थापयति, अवस्था-  
पयति, उपस्थापयति, दमयति, शमयति, व्युपशमयति, एकोतीकरोति,  
समादधाति” इति नवपदैः ।

तत्र स्थापयति, आलम्बनेन बध्नाति । संस्थापयति, तत्रैवालम्बने 10  
प्रबन्धेन प्रवर्तयति । अवस्थापयति, विक्षेपम् अवगम्य तं परिहरति ।  
उपस्थापयति, विक्षेपं परिहृत्य उपर्युपरि पुनस्तत्रैवालम्बने स्थापयति ।  
दमयति, रतिमुत्पादयति । शमयति, अरतिं व्युपशमयति विक्षेपदोष-  
दर्शनात् । व्युपशमयति, स्त्यानमिद्धादीन् व्युत्थितान् व्युपशमयति ।  
एकोतीकरोति, आलम्बने<sup>३</sup>ऽनभिसंस्कारवाहितायां यत्नं करोति । 15  
समादधाति, समप्राप्तं चित्तम् उपेक्षते समन्वाहरतीत्यर्थः । एष चैषां  
पदानाम् अर्थः पूर्वाचार्यैः मैत्रेयेण च व्याख्यातः ।

संक्षेपेण सर्वस्यैव समाधेः षड् दोषा भवन्ति । कौसीद्यम् आलम्बन-  
संप्रमोषः, लयौद्धत्यम्, अनाभोगः, आभोगतेति । तेषां प्रतिपक्षेणाद्यौ  
प्रहाणसंस्कारा भावनीयाः । तद् यथा—श्रद्धा, छन्दः, व्यायामः, प्रश्रब्धिः, 20  
स्मृतिः, सम्प्रजन्यम्, चेतना, उपेक्षा चेति । तत्राद्याश्चत्वारः कौसीद्यस्य  
प्रतिपक्षाः । तथाहि—समाधेर्गुणेष्वभिसम्प्रत्ययलक्षणया श्रद्धया तत्र योगिनोऽ-  
भिलाष उत्पद्यते । ततोऽभिलाषाद् वीर्यमारभेत । तद्वीर्यबलेन कायचित्त-

कर्मण्यताम् आसादयति । ततः प्रश्नबद्धकायचेतसः कौसीद्यम् आवर्तते ।  
 अतः श्रद्धादयः कौसीद्यप्रहाणाय भावनीयाः । स्मृतिरालम्बनसम्प्रमोषस्य  
 प्रतिपक्षः । सम्प्रजन्यं लयौद्धत्ययोः प्रतिपक्षः । तेन लयौद्धत्ययोः सम्यगुप-  
 लक्षणात् । लयौद्धत्याप्रशमनकाले त्वनाभोगदोषः तत्प्रतिपक्षेण च चेतना  
 5 भावनीया । लयौद्धत्यप्रशमे सति यदा चित्तं प्रशमवाहि तदाऽऽभोगदोषः,  
 तत्प्रतिपक्षस्तदानीमुपेक्षा भावनीया ।

एभिरष्टाभिः प्रहाणसंस्कारैः समन्वागतः समाधिः परमकर्मण्यो  
 भवति । ऋद्ध्यादीन् गुणान् निष्पादयति । अत एवोक्तं सूत्रे<sup>१</sup>—“[ अष्ट ]<sup>२</sup>  
 प्रहाण [ संस्कार ]<sup>३</sup> समन्वागतः ऋद्धिपादं भावयति” इति । एषा च  
 10 चित्तैकाग्रता उत्तरोत्तरकर्मण्यतासम्प्रयोगाद् आलम्बनादिगुणविशेष-  
 योगाच्च ध्यानारूपिसमापत्तिः विमोक्षादिव्यपदेशं लभते ।

तथा हि यदोपेक्षावेदनासम्प्रयुक्ता सवितर्कसविचारा सा भवति,  
 तदाऽनागम्या उच्यते [ प्रथमध्यानप्रयोगचित्तत्वात् ]<sup>४</sup> । यदा च  
 कामतृष्णया [ पापधर्मैश्च ]<sup>५</sup> विविक्ता भवति [ वितर्कविचार ]<sup>६</sup>  
 15 प्रीतिसुखाध्यात्मसम्प्रसादैः<sup>७</sup> सम्प्रयुक्ता भवति, तदा प्रथमं ध्यानम्  
 उच्यते । अत एव प्रथमध्यानं वितर्कमात्ररहितं ध्यानान्तरमुच्यते । यदा  
 वितर्कविचाररहिता प्रथमध्यानभूमितृष्णया विविक्ता च भवति ।  
 प्रीतिसुखाध्यात्मसम्प्रसादैः सम्प्रयुक्ता भवति, तदा द्वितीयं ध्यानमुच्यते ।  
 यदा तु द्वितीयध्यानभूमितृष्णया विविक्ता भवति, सुखोपेक्षास्मृतिसम्प्रजन्य-  
 20 सम्प्रयुक्ता भवति, तदा तृतीयं ध्यानम् उच्यते । यदा तृतीयध्यानभूमि-  
 तृष्णया विविक्ता भवति । अदुःखासुखा उपेक्षास्मृत्यभिसम्प्रयुक्ता  
 भवति, तदा चतुर्थं ध्यानमुच्यते । एवम् अरूप्यसमापत्तिविमोक्षाभिभवायत-  
 नादिष्वालम्बनाकारादिभेदेन योज्यम् ।

१. उक्तं सूत्रे.....? । २. भो० पा०—[ अष्ट प्रहाण ] । ३. भो० पा०—  
 [ संस्कारसमन्वागतः ] । ४. भो० पा०—[ प्रथमध्यानप्रयोगचित्तत्वात् ] । ५. भो० पा०—  
 [ पापधर्मैश्च ] । ६. भो० पा०—[ वितर्कविचार ] । ७. अध्यात्मसम्प्रसादः—भो० न ।



तदेवमालम्बने चित्तं स्थिरीकृत्य प्रज्ञया विवेचयेत् । यतो ज्ञानालो-  
कोत्पादात् सम्मोहबीजस्यात्यन्तप्रहाणं भवति । अन्यथा हि तीर्थिकानामिव  
समाधिमात्रेण क्लेशप्रहाणं न स्यात् । यथोक्तं सूत्रे<sup>१</sup>—

किञ्चापि भावयेत् समाधिमेतं  
न चो विभावेय्य<sup>३</sup> सा आत्मसंज्ञाम् । 5  
पुनः प्रकुप्यति किलेशु तस्य  
यथोद्वेगस्येह समाधिभावना ॥ इति ।

तत्रायम् आर्यलङ्कावतारे<sup>४</sup> संक्षेपात् प्रज्ञाभावनाक्रमो निर्दिष्टः—

चित्तमात्रं समारुह्य बाह्यमर्थं न कल्पयेत् ।  
तथतालम्बने स्थित्वा चित्तमात्रमतिक्रमेत् ॥ 10  
चित्तमात्रमतिक्रम्य निराभासमतिक्रमेत् ।  
निराभासस्थितो योगी महायानं स पश्यति ॥  
अनाभोगगतिः शान्ता प्रणिधानैर्विशोधिता ।  
ज्ञानं निरात्मकं श्रेष्ठं निराभासे न पश्यति ॥ इति ।

तत्रायमर्थः—प्रथमं योगी ये रूपिणो धर्मा बाह्यार्थतया परैः परिकल्पि- 15  
तास्तेषु तावद् विचारयेत् । किमेते विज्ञानाद् अन्ये, आहोस्विद्  
विज्ञानमेवैतत् तथा प्रतिभासते, यथा स्वप्नावस्थायामिति<sup>५</sup> । तत्र  
विज्ञानाद् बहिः परमाणुशो विचारयेत् । परमाणूंश्च भागशः प्रत्यवेक्ष-  
माणो योगी तान् अर्थान् समनुपश्यति । तस्यासमनुपश्यत एवं भवति  
चित्तमात्रमेवैतत् सर्वं न पुनर्बाह्योऽर्थो विपद्यते । तदेवम्— 20

१. देगे-का० ( सूत्र-‘द’ २७ ) सं०-समाधिराजसूत्र-॥६॥३६॥ पृ० ४६ दरभङ्गा ।  
२. दूचीपाठे-न वापि भावयेत् सा आत्मसंज्ञा । ३. विभावेय्य-वि+भावेय्य = नाशोऽभावो  
वा । ४. देगे-का ( सूत्रे-‘व’ १६८ ) सं०-॥१०॥२४६-८॥, पृ० १२४ दरभङ्गा । ५. भो०  
पा०-स्वप्नावस्थायामिति विचारयेत् ।

“चित्तमात्रं समारुह्य बाह्यमर्थं न कल्पयेत् ।”

रूपिधर्मविकल्पास्त्यजेद् इत्यर्थः ।

- तेषाम् उपलब्धिलक्षणप्राप्तानां विचारयेद् अनुपलब्धेः । एवं रूपिणो धर्मान् विभाव्यारूपिणो विभावयेत् । तत्र यच्चित्तमात्रं तदप्यसति  
5 ग्राह्ये ग्राहको न युक्तो ग्राहकस्य ग्राह्यापेक्षत्वाद् । ततश्चित्तं ग्राह्यग्राहक-  
विविक्तम् अद्वयमेव चित्तमिति<sup>१</sup> विचारयेद् अद्वयलक्षणे—

“तथतालम्बने स्थित्वा तदपि चित्तमात्रम् अतिक्रमेत् ।”

ग्राहकमाकारमतिक्रमेत् । द्वयनिराभास एव<sup>२</sup> अद्वयज्ञाने तिष्ठेदित्यर्थः ।

- एवं चित्तमात्रमतिक्रम्य तदपि<sup>३</sup> द्वयनिराभासं<sup>४</sup> यज्ज्ञानं तदति-  
10 क्रमेत् । स्वतः परतो भावानां जन्मानुपपत्तेः ग्राह्यग्राहकयोश्चालीकत्वे  
तदव्यतिरेकात् तस्यापि सत्यत्वमयुक्तमिति विचारयेत् । तत्राप्यद्वयज्ञाने  
वस्तुत्वाभिनिवेशं त्यजेत्, अद्वयज्ञाननिराभास एव ज्ञाने तिष्ठेदित्यर्थः ।  
एवं सति सर्वधर्मनिःस्वभावताप्रतिपत्तौ स्थितो भवति । तत्र स्थितस्य  
परमतत्त्वप्रवेशात् निर्विकल्पसमाधिप्रवेशः ।

- 15 तथा चाद्वयज्ञाननिराभासे ज्ञाने यदा स्थितो योगी तदा  
परमतत्त्वे<sup>५</sup> स्थितत्वात्, महायानं स पश्यति । एतदेव तत् महायानम्  
उच्यते यत् परमतत्त्वदर्शनम् । एतदेव तत् परमतत्त्वदर्शनं यत् सर्वधर्मान्  
प्रज्ञाचक्षुषा निरूपयतः सम्यग्ज्ञानावलोके सत्यदर्शनम् ।<sup>६</sup> तथा चोक्तं  
सूत्रे०—“कतमं परमार्थदर्शनम् ? सर्वधर्माणाम् अदर्शनम् ।” इति ।

- 20 अत्रेदृशमेवाददर्शनमभिप्रेतं न तु निमीलिताक्षजात्यन्धानामिव  
प्रत्ययवैकल्याद् अमनसिकारतो वा यददर्शनम् ।

१. चित्तमिति—भो० न । २. एव—भो० न । ३. तदपि—भो० न । ४. भो० पा०—  
निराभासं ज्ञानम् अतिक्रमेत् । ५. भो० पा०—दर्शनं मार्गं । ६. भो० पा०—किञ्चिद्  
अदर्शनम् । ७. देगे—का० ( सूत्र—‘ब’ ब्रह्मविशेषचिन्तिपरिपृच्छा पृ० ६१ ) ।



ततो भावाभिनिवेशादिविपर्ययासदासनाया अप्रहीणत्वाद्  
असंज्ञिसमापत्त्यादिव्युत्थितस्येव पुनरपि भावाभिनिवेशमूलस्य रागादि-  
क्लेशगणस्योत्पत्तेरमुक्त एव योगी भवेत् । भावाभिनिवेशमूलो रागादिः  
आर्यसत्यद्वयनिर्देशादौ<sup>१</sup> वर्णितः । यत्पुनरुक्तम् अविकल्पप्रवेशधारण्यम्<sup>२</sup>-  
“अमनसिकारतो रूपादिनिमित्तं वर्जयति” इति । तत्रापि प्रज्ञया निरूपयतो<sup>५</sup>  
योऽनुपलम्भः स तत्रामनसिकारोऽभिप्रेतो न मनसिकाराभावमात्रम् । न  
ह्यसंज्ञिसमापत्त्यादिरिव अनादिकालिको रूपाद्यभिनिवेशो मनसिकार-  
परिवर्जनमात्रात् प्रहीयते ।

संशयाप्रहाणे तु न पूर्वोपलब्धेषु च रूपादिष्वभिनिवेशमनसिकार-  
परिवर्जनं शक्यं कर्तुम् अग्न्यपरिवर्जने दाहापरिवर्जनवत् । तथामी<sup>१०</sup>  
रूपादिमिथ्याविकल्पाः कण्टकादिवदुत्कील्य न हस्तेन चेतसोऽपनेतव्याः ।  
किं तर्हि<sup>३</sup> संशयबीजापगमात् । तच्च संशयबीजं योगिनः समाध्यालोके  
सति प्रज्ञाचक्षुषा निरूपयतस्तेषां रूपादीनां पूर्वोपलब्धानाम् उपलब्धिलक्षण-  
प्राप्तानाम् अनुपलम्भाद्, रज्जोः सर्पज्ञानवद् अपगच्छति नान्यथा । तथा<sup>४</sup>  
संशयबीजापगमाद् रूपादिनिमित्तमनसिकारः शक्यते वर्जयितुं नान्यथा ।<sup>१५</sup>  
अन्यथा ह्यसति समाध्यालोके प्रज्ञाचक्षुषाप्यनवलोके यथा अन्धकूपावस्थित-  
पुरुषस्यावचरकगतघाटादिष्विव योगिनो रूपादिष्वस्तित्वसंशयो नैव  
निवर्तेत । तदनिवृत्त्या चा<sup>५</sup>प्रहीणतिमिरदोषस्येव योऽयुक्तोऽलीक<sup>६</sup>रूपा-  
द्यभिनिवेशः प्रवर्तेत न केनापि निवर्त्येत ।

तस्मात् समाधिहस्तेन मनः सन्धाय सूक्ष्मतरप्रज्ञाशस्त्रेण तत्र<sup>२०</sup>  
चेतसि रूपादिमिथ्याविकल्पबीजम्<sup>७</sup> उद्धरेत् । एवम् सत्युत्खातमूला इव

१. आदौ-भो० न । २. देगे-का० ( सूत्र-‘प’ २ ) । ३. किं तर्हि-भो० न । ४. भो०  
पा०-तदा । ५. भो० पा०-चक्षुरप्रहीणतिमिर । ६. अलीक-भो० न । ७. भो०  
पा०-बीजरोग ।

तरवो भूर्मेर्निर्मूलतया मिथ्याविकल्पाः पुनश्चेतसि न विरोहन्ति । अत एवावरणप्रहाणाय शमयविषयनायुगनद्ववाही मार्गो भगवता निर्दिष्टः, तयोः अविकल्पसम्यग्ज्ञाने हेतुत्वात् । तथा चोक्तम्—

शीलं प्रतिष्ठाय समाधिलाभाः  
5 समाधिलाभाच्च हि प्रज्ञाभावना ।  
प्रज्ञया ज्ञानं भवति विशुद्धं  
विशुद्धज्ञानस्य हि शीलसम्पत् ॥ इति ।

तथा हि यदा शमयेनालम्बने चित्तं स्थिरीकृतं भवति तदा प्रज्ञया विचारयतः सम्यग्ज्ञानालोक उत्पद्यते, तदान्धकारमिवालोके  
10 प्रकाशयति आवरणम् अपहोयते । अत एवानयोश्चक्षुरालोकयोरिव सम्यग्ज्ञानोत्पादं प्रत्यन्योऽन्यानुगुण्येनावस्थितत्वान्नालोकान्धकारवत् परस्परविरोधः । न हि समाधिरन्धकारस्वभावः । किं तर्हि चित्तैकाग्रता-लक्षणः । स च समाहितो यथाभूतं प्रजानातीति वचनादेकान्तेन प्रज्ञानुकूल एव भवति, न तु विरुद्धस्तस्मात् स्यात् समाहितस्य प्रज्ञया  
15 निरूपयतः सर्वधर्माणामनुपलम्भः । स एव परमोऽनुपलम्भः । सा च तादृशी योगिनामवस्थानलक्षणा गतिरनाभोगा, ततः परं दृष्टव्यस्या-भावात् । शान्तेति भावाभावादविकल्पलक्षणस्य प्रपञ्चस्योपशमात् ।

तथा हि यदा प्रज्ञया निरूपयन् न किञ्चिद् भावस्वभावम् उपलभते योगी, तदाऽस्य नैव भावविकल्पो भवति । अभावविकल्पोऽपि तस्य  
20 नास्त्येव । यदि भावः कदाचिद् दृष्टो भवति, एवं सति तन्निषेधेना-भावविकल्पः प्रवर्तते । यदा तु कालत्रयेऽपि भावो योगिना प्रज्ञाचक्षुषा निरूपयता नोपलब्धः, तदा कथं तस्य प्रतिषेधेनाभावविकल्पं कुर्वीत । एवमन्येऽपि विकल्पास्तदा तस्य न समुत्पद्यन्त एव भावाभावविकल्पाभ्यां



सर्वविकल्पस्य व्याप्तत्वात् । व्यापकाभावे च व्याप्यस्यासम्भवात् । अयमसौ परमनिर्विकल्पो योगः । तत्र स्थितस्य योगिनः सर्वविकल्पानाम् अस्तंगमात् सम्यक् क्लेशावरणं ज्ञेयावरणं च प्रहीयते । तथा हि क्लेशावरणस्यानुत्पन्नानिरुद्धभावेषु भावादिविपर्यासो मूलं कारणम् आर्यसत्यद्वयनिर्देशादौ वर्णितं भगवता ।

5

अनेन च योगाभ्यासेन सर्वभावादिविकल्पानां प्रहाणात् सकल<sup>१</sup>-भावादिविपर्यासस्याविद्यास्वभावस्य क्लेशावरणमूलस्य प्रहाणम् । ततो मूलोच्छेदात् क्लेशावरणं<sup>२</sup> सम्यक् प्रहीयते । तथा चोक्तं सत्यद्वयनिर्देशे<sup>३</sup>—  
“कथं मञ्जुश्रीः, क्लेशा विनयं गच्छन्ति, कथं क्लेशाः परिज्ञाता भवन्ति ? मञ्जुश्रीराह—परमार्थतोऽत्यन्ताजातानुत्पन्नाभावेषु सर्वधर्मेषु 10 संवृत्यासद्विपर्यासः । तस्माद् असद्विपर्यासात् सङ्कल्पविकल्पः । तस्मात् संकल्पविकल्पाद् अयोनिशो मनसिकारः । तस्माद् अयोनिशो मनसिकाराद् आत्मसमारोपः । तस्माद् आत्मसमारोपाद् दृष्टिपर्युत्थानम् । तस्माद् दृष्टिपर्युत्थानात् क्लेशाः प्रवर्तन्ते । यः पुनः देवपुत्र ! परमार्थतोऽत्यन्ताजातानुत्पन्नाभावान् सर्वधर्मान् 15 प्रजानाति, स परमार्थतोऽविपर्यस्तः । यश्च परमार्थतोऽविपर्यस्तः सोऽविकल्पः । यश्चाविकल्पः स योनिशः प्रयुक्तः । यश्च योनिशः प्रयुक्तः तस्यात्मसमारोपो न भवति । यस्यात्मसमारोपो न भवति तस्य दृष्टिपर्युत्थानं न भवति । यावत् परमार्थतो निर्वाणदृष्टिसर्वं<sup>४</sup> दृष्टिपर्युत्थानम् अपि न भवति । तस्यैवम् अनुत्पादविहारिणः क्लेशा अत्यन्तं विनीता 20 द्रष्टव्याः । अयम् उच्यते क्लेशविनयः । यदा, देवपुत्र ! क्लेशान् निराभासेन ज्ञानेन परमार्थतोऽत्यन्तशून्यान् अत्यन्ताभावान् अत्यन्त-निर्निमित्तात्<sup>५</sup> प्रजानाति, तदा देवपुत्र ! क्लेशाः परिज्ञाता भवन्ति । तत्र

१. सकल-भो० न । २. भो० पा०-क्लेशावरणमूल । ३. देगे-का० (सूत्र-‘म’ २१३) ।

४. सर्व-भो० न । ५. ठून्नी-पा०-अत्यन्तानित्यान् ।

यथापि नाम, देवपुत्र ! य आशीविषस्य गोत्रं प्रजानाति । स तस्याशी-  
विषस्य विषं शमयति । एवमेव देवपुत्र ! य. क्लेशानां गोत्रं प्रजानाति  
तस्य क्लेशाः प्रशाम्यन्ति । देवपुत्र आह—कतमन् मञ्जुश्रीः ! क्लेशानां  
गोत्रम् । आह<sup>१</sup>—यावद् एषा परमार्थतोऽत्यन्ताजातानुत्पन्नाभावेऽपि सर्वधर्मेषु  
5 कल्पना इदं क्लेशानां गोत्रम्” इति विस्तरः ।

भावादिविपर्यासेन च सकलविपर्यासस्य व्याप्तत्वात् । तत्प्रहाणे  
सकलविपर्यासप्रहाणाद् ज्ञेयावरणम् अप्यनेन सम्यक् प्रहीयते, विपर्यास-  
लक्षणत्वाद् आवरणस्य । ज्ञेयावरणे च प्रहीणे प्रतिबन्धाभावाद्  
रविकिरणवद् अपगतमेघाद्यावरणे<sup>२</sup> नभसि सर्वत्राव्याहतो योगि<sup>३</sup> प्रत्यक्षो  
10 ज्ञानालोकः प्रवर्तते । तथा हि वस्तुस्वभावप्रकाशरूपं विज्ञानम् । तच्च  
संनिहितम् अपि वस्तु प्रतिबन्धसद्भावान्न प्रकाशयति । प्रतिबन्धाभावे  
तु सति, अचिन्त्यशक्तिविशेषलाभात् किमिति सकलम् एव वस्तु यथावद्  
न प्रकाशयेत् । अतः संवृतिपरमार्थरूपेण सकलस्य वस्तुनो यथावत्  
परिज्ञानात् सर्वज्ञत्वम् अवाप्यते । अतोऽयम् एवावरणप्रहाणो सर्वज्ञत्वाधि-  
15 गमे च परमो मार्गः ।

यस्तु श्रावकादीनां मार्गस्तेन<sup>४</sup> विपर्यासाप्रहाणान् न सम्यग्  
आवरणद्वयं प्रहीयते । तथा चोक्तम् आर्यलङ्कावतारे<sup>५</sup>—“अन्ये तु कारणा-  
धीनान् सर्वधर्मान् दृष्ट्वाऽनिर्वाणेषु<sup>६</sup> निर्वाणम् इति बुद्धयो भवन्ति ।  
धर्मनैरात्म्यादर्शनाद् नास्ति महामते ! मोक्ष एषाम् । महामते,  
20 श्रावकयानिकाभिसमयगोत्रस्यानिर्याणे निर्याणबुद्धिः । अत्र महामते,

१. भो० पा०—आह—देवपुत्र ! । २. भो० पा०—मेघरहिते नभसि । ३. योगि—भो० न ।

४. भो० पा०—सर्वविपर्यासि । ५. देवे० का० ( सूत्र—‘च’ ८० ) सं०—२ परि०, पृ० २७,  
दरभंगा । ६. दृष्ट्वा—भो० न ( मूलसूत्रे—‘अन्ये पुनर्महामते कारणाधीनान् सर्वधर्मान्  
दृष्ट्वा निर्वाणगतिबुद्धयो भवन्ति । पृ० २७ ) ।



कुदृष्टिव्यावर्तनां<sup>१</sup> योगः करणीयः” इति । अत एव चान्येन मार्गेण मोक्षाभावाद् एकम् एव यानम् उक्तं भगवता ।

केवलम् [ बालेन बालस्य ]<sup>२</sup> अवतारणाभिसन्धिना श्रावकादिमार्गो देशितः । तथा हि स्कन्ध<sup>३</sup>मात्रमेवैतत्, न त्वात्मास्तीति<sup>४</sup> भावयन् श्रावकः पुद्गलनैरात्म्यम् अवतरति, विज्ञप्तिमात्रं त्रैधातुकमिति भावयन् विज्ञान- 5 वादिबाह्यार्थनैरात्म्यमवतरति । अनेन त्वस्याद्वयज्ञानस्य नैरात्म्यप्रवेशात् परमतत्त्वप्रविष्टो भवति । न तु विज्ञप्तिमात्रताप्रवेश एव तत्त्वप्रवेशः । यथोक्तं प्राक् । उक्तं च आर्यलोकोत्तरपरिवर्ते<sup>५</sup> “पुनरपरं भो जिनपुत्र ! चित्तमात्रं त्रैधातुकम् अवतरति, तच्च चित्तम् अनन्तमध्यतयाऽवतरति” इति । अन्तयोरुत्पादभङ्गलक्षणयोः स्थितिलक्षणस्य च मध्यस्याभावाद् 10 अनन्तमध्यचित्तम् । तस्माद्<sup>६</sup> अद्वयज्ञानप्रवेश एव तत्त्वप्रवेशः ।

सा चेयं योगिनाम् अवस्था<sup>७</sup> कुतो विशोधिता ? इत्याह—

“प्रणिधानैर्विशोधिता” इति । महाकरुणया यत् सर्वसत्त्वार्थकरणाय बोधिसत्त्वेन प्रणिहितम्, ततः प्रणिधानबलाद् उत्तरोत्तरदानादिकुशलाभ्या- सात् सा तथा विशुद्धा जाता, येन सर्वधर्मनिःस्वभावताज्ञानेऽपि सकलसत्त्वा- 15 पेक्षा न व्यावर्तते यावत् संसार एव अननुलिप्ताः संसारदोषैरवतिष्ठन्त इति । कथं पुनरनाभोगा शान्तेत्यत्र कारणमाह—

ज्ञानं निरात्मकं श्रेष्ठं निराभासेन पश्यति । इति ।

यस्माद् यद् अद्वयलक्षणं ज्ञानम् अद्वयवादिनां<sup>८</sup> श्रेष्ठं परमार्थेनाभिमतं तदपि निरात्मकं निःस्वभावम् अद्वयनिराभासेन ज्ञानेन पश्यति योगी । 20 अतोऽपरस्य द्रष्टव्यस्याभावाद् अनाभोगा, सर्वविकल्पाभावात्<sup>९</sup> शान्तेति ।

१. भो० पा०—[ बालेन बालस्य ] । २. भो० पा०—स्कन्धादिधर्ममात्रा । ३. भो० पा०—नैरात्म्यभावना । ४. देगे—का० ( अवतंसक—‘ग’ ४४ परि० पृ० १७८ ) । ५. दूची० पा०—तस्मान्न । ६. भो० पा०—सा अवस्था । ७. भो० पा०—अभ्यन्तरज्ञेयवादिनां । ८. भो० पा०—सर्वविभिन्नविकल्पाभवात् ।

अत्रेदानीं कोऽसौ योगी विद्यते, यः पश्यतीति चेत् ? न परमार्थतः कश्चिद् आत्मादिः स्वतन्त्रोऽस्ति, योगी नापि कश्चित् पश्यति । किन्तु संवृत्या यथा रूपादिविषयाकारज्ञानोत्पादमात्रेण विज्ञानमेव लोके तथा तथा व्यवह्रियते देवदत्तो यज्ञदत्तं ज्ञानेन पश्यतीति न तु कश्चिद् आत्मा-  
 5 दिरस्ति । तथाऽत्रापि ज्ञानमेवाद्वयज्ञाननिराभासम्<sup>१</sup> उत्पद्यमानं तथा व्यपदिश्यते निराभासेन ज्ञानेन पश्यतीति । न हि सर्वधर्माणां परमार्थतो निःस्वभावत्वेऽपि संवृत्या योगिज्ञानम् अन्यद् वा पृथग्ज्ञानं नेष्टम् । तथा चोक्तम् आर्यसत्यद्वयनिर्देशे<sup>२</sup>—“परमार्थतोऽत्यन्ताभावश्च संवृत्या च मार्गं भावयति” इति ।

10 अन्यथा श्रावकप्रत्येकबुद्धबोधिसत्त्व [ बुद्ध ]<sup>३</sup> पृथग्जनादिव्यवस्था कथं भवेत्, किन्तु यस्य संवृत्याऽपि कारणं नास्ति स संवृत्याऽपि नोत्पद्यते । यथा शशविषाणादि । यस्य तु [ कारणं ]<sup>४</sup> विद्यते स परमार्थतोऽली-  
 कोऽपि समुत्पद्यत एव । यथा—मायाप्रतिबिम्ब [ प्रतिध्वनि ]<sup>५</sup> आदि । न च मायादेः संवृत्या प्रतीत्यसमुत्पादे परमार्थतो वस्तुत्वप्रसङ्गः, तस्य  
 15 विचाराक्षमत्वात् । अतः सर्वमेव मायोपमं जगत् । तत्र यथा क्लेशकर्म-  
 मायावशात् सत्त्वानां जन्ममाया प्रवर्तते, तथा योगिनामपि पुण्यज्ञान-  
 सम्भारमायावशाद् योगिज्ञानमाया प्रवर्तते एव । तथा चोक्तम् आर्यप्रज्ञापारमितायाम्—<sup>६</sup>“कश्चित् श्रावकनिर्मितः, कश्चित् प्रत्येक-  
 बुद्धनिर्मितः, कश्चिद् बोधिसत्त्वनिर्मितः, कश्चित् तथागतनिर्मितः, कश्चित्  
 20 क्लेशनिर्मितः कश्चित् कर्मनिर्मितः । अनेन सुभूते, पर्यायेण सर्व-  
 धर्मा निर्मितोत्पन्नाः” इति । अयं तु विशेषो योगिनां पृथग्जनेभ्यः, ते हि मायाकारवत् तां मायां यथावत् परिज्ञानात् सत्यतो नाभिनिविशन्ते,

१. भो० पा०—निराभासं ज्ञानं । २. देगे० का० (सूत्र—‘म’ २५) । ३. भो० पा०—  
 [ बोधिसत्त्व बुद्ध ] । ४. भो० पा०—[ तु कारणं ] । ५. भो० पा०—[ प्रतिबिम्ब प्रतिध्वनि ] ।  
 ६. देगे—का० ..... ? । ७. भो० पा०—सुभूते, सर्वधर्मा निर्मिताः कश्चित् ।



तेन ते योगिन उच्यन्ते । ये तां बालपृथग्जनवत्<sup>१</sup> कौतूहलं सत्यत्वेना-  
भिनिविष्टास्ते विपरीताभिनिवेशाद् बाला उच्यन्ते इति सर्वमविरुद्धम् ।  
तथा चोक्तम् आर्यधर्मसङ्गीतौ<sup>२</sup>—

मायाकारो यथा कश्चिन्निर्मित-मोक्षमुद्यतः ।

न चास्य निर्मिते सङ्गो ज्ञातपूर्वो यतोऽस्य सः ॥

5

त्रिभवं निर्मितप्रख्यं ज्ञात्वा सम्बोधिपारगः ।

संनह्यते जगद्धेतोर्जातिपूर्वं जगत् तथा ॥ इति ।

एवमनेन क्रमेण तत्त्वं भावयेत् ।

तत्र च लयौद्धत्यादीन् व्युत्थितान् पूर्ववत् प्रशमयेत् । यदा तु  
सर्वधर्मनिःस्वभावतालम्बने च लयौद्धत्यादिरहितम् अनभिसंस्कारेण प्रवृत्तं 10  
ज्ञानं भवति, तदा शमथविषयनायुगनद्धवाही मार्गो निष्पन्नो भवति ।  
तथा यावत् शक्नोति तावद् अधिमुक्तिबलेन अधिमुक्तिचर्याभूमौ स्थितो  
भावयेत् ।

ततो यथेच्छं पर्यङ्कमाभुज्य व्युत्थाय पुनरेवं चिन्तयेत् । यदि  
नामामी धर्माः परमार्थत एव निःस्वभावा अप्येते संवृत्या स्थिता एव । 15  
तथा चोक्तम् आर्यरत्नमेघे<sup>३</sup>—“कथं बोधिसत्त्वो नैरात्म्यकुशलो भवति ?  
इह कुलपुत्र, बोधिसत्त्वः सम्यक्प्रज्ञया रूपं प्रत्येवक्षते, वेदनां संज्ञां  
संस्कारान् विज्ञानं प्रत्येवक्षते । स रूपं प्रत्येवक्षमाणो रूपस्योत्पादं नोपलभते,  
विरोधं नोपलभते, समुदयं नोपलभते । एवं वेदनायाः संज्ञायाः संस्का-  
राणां विज्ञानस्योत्पादं नोपलभते, निरोधं नोपलभते, समुदयं नोपलभते” । 20  
अयं च परमार्थतोऽनुत्पादविहारिण्याः प्रज्ञाया न पुनर्व्यावहारिकेण  
स्वभावेन” इति विस्तरः । एते च बालबुद्धय एव निःस्वभावेषु भावेषु<sup>४</sup>

१. भो० पा०—बालदर्शकवत् । २. देगे—का० ( सूत्र-‘श’ ४३ ) । ३. देगे—का०  
( सूत्र-‘वा’ २५ ) । ४. ‘निरोधं नोपलभते समुदयं नोपलभते’—भो० न । ५. भावेषु—भो० न ।

विपरीताभिनिवेशात् संसारे परिभ्रमन्तो विविधानि दुःखानि प्रत्यनु-  
भवन्ति । महाकरुणाम् एव<sup>१</sup> आमुखीकृत्य एवमनुविचिन्तयेत्—तथाऽहं  
करिष्यामि यथा सर्वज्ञत्वं प्राप्य एतेषां धर्मतामवबोधयेयमिति ।

ततः सर्वबुद्धबोधिसत्त्वेभ्यः पूजास्तोत्रोपहारं कृत्वा आर्यभद्रचर्या-  
5 प्रणिधानमभिनिर्हरेत् । ततः शून्यताकरुणागर्भं एव सकलदानादिपुण्य-  
ज्ञानसम्भारोपाजने प्रवर्तते । तथा चोक्तम् आर्यधर्मसंगीतौ<sup>२</sup>—“यथाभूतदर्शिनो  
बोधिसत्त्वस्य सत्त्वेषु महाकरुणा प्रवर्तते । एवं चास्य भवति—इदं मया  
समाधिमुखं सर्वधर्मयथाभूतदर्शं च सर्वसत्त्वानां निष्पादयितव्यम् । स तया  
महाकरुणया संचोद्यमानोऽधिशीलम् अधिचित्तम् अधिप्रज्ञं च शिक्षात्रयं<sup>३</sup>  
10 परिपूर्णानुत्तरं सम्यक्सम्बोधिम् अभिसम्बुध्यते” इति ।

अयमेव प्रज्ञोपाययुगनद्धवाही बोधिसत्त्वानां मार्गो यत् परमार्थ-  
दर्शनेऽपि संवृतिं नोच्छेदयन्ति । संवृतिं चानुच्छेदयन्तो महाकरुणा-  
पूर्वङ्गमाविपर्यस्ता एव सत्त्वार्थक्रियासु प्रवर्तन्ते<sup>४</sup> । उक्तम् आर्यरत्नमेघे<sup>५</sup>—  
“कथं बोधिसत्त्वो महायानकुशलो भवति । इह बोधिसत्त्वः सर्वासु  
15 शिक्षासु शिक्षते, शिक्षामार्गं च नोपलभते । यच्च शिक्षते तदपि  
नोपलभते । यश्च शिक्षयते तमपि नोपलभते । न च तद्धेतुकं तन्निदानं  
तत्प्रत्ययम् उच्छेददृष्टौ पतति” इति । आर्यधर्मसंगीतौ<sup>६</sup> चोक्तम्—  
“कतमा बोधिसत्त्वानां प्रतिपत्तिः ? यत् किञ्चिद् बोधिसत्त्वानां कायकर्म,  
यत् किञ्चिद् वाक्कर्म, यत् किञ्चिन् मनःकर्म, तत् सर्वसत्त्वापेक्षकं  
20 प्रवर्तते, महाकरुणापूर्वङ्गमत्वात् । महाकरुणाधिपत्यं सर्वसत्त्वाहित-  
सुखाध्याशयसमुत्थितम्” इति । अयमेवं हिताशयः संज्ञीभवति । सा

१. एव-भो० न । २. देगे-का० ( सूत्र-‘श’ १२ ) । ३. शिक्षात्रयं-भो० न ।

४. ठूची पाठे—“तत्र यदि नामलोत्तर प्रज्ञा.....इत्यतः.....मार्गोऽनुपलब्धः”  
पर्यन्तमत्रैव पठितम् । ५. देगे-का० ( सूत्र-‘वा’ २७ ) । ६. देगे-का० ( सूत्र-‘श’ ७४ ) ।

७. भो० पा०-भगवन् ! कतमा ।



मया प्रतिपत्तिः प्रतिपत्तव्या सर्वसत्त्वानां हितावहा सुखावहा ।  
 तस्य स्कन्धेषु मायावत् प्रत्यवेक्षणा प्रतिपत्तिर्न च स्कन्धपरित्यागं  
 स्पृहयतीति । धातुष्वाशीविषवत् प्रत्यवेक्षणा प्रतिपत्तिर्न च धातुपरित्यागं  
 स्पृहयतीति । आयतनेषु शून्यग्रामवत् प्रत्यवेक्षणा प्रतिपत्तिर्न चायतनपरित्यागं  
 स्पृहयतीति । रूपस्य फेनपिण्डवत् प्रत्यवेक्षणा प्रतिपत्तिर्न च तथागतरूपकाय- 5  
 विठपनां जहाति । वेदनाया बुद्बुदवत् प्रत्यवेक्षणा प्रतिपत्तिर्न च तथागत-  
 ध्यानसमाधिसमापत्तिसुखनिष्पादनप्रयोगं नारभते । संज्ञायां मरीचिवत्  
 प्रत्यवेक्षणा प्रतिपत्तिर्न च तथागतज्ञाननिष्पादनं अप्रतिपत्तिः । संस्काराणां  
 कदलीवत् प्रत्यवेक्षणा प्रतिपत्तिर्न च बुद्धधर्मसंस्काराणाम् अप्रतिपत्तिः ।  
 विज्ञानस्य मायावत् प्रत्यवेक्षणा प्रतिपत्तिर्न च ज्ञानपूर्वङ्गमकायवाङ्- 10  
 मनस्कर्मनिष्पादना प्रतिपत्तिः” इति विस्तरः । एवम् अपर्यन्तेषु सूत्रान्तेषु  
 प्रज्ञोपायरूपा प्रतिपत्तिरनुगन्तव्या ।

तत्र<sup>२</sup> यदि नाम लोकोत्तरप्रज्ञावस्थायाम् उपायसेवना न सम्भवति,  
 उपायसेवनाकाले तु बोधिसत्त्वस्य मायाकारवद् अविपर्यस्तत्वात् लोकोत्तर-  
 ज्ञानात् प्रयोगपृष्ठभावनी यथावद् वस्तुपरमार्थतत्त्वाभिनिवेशनी प्रज्ञा 15  
 सम्भवत्येवेति, भवत्येव प्रज्ञोपाययुगनद्धवाही मार्गः । आर्याक्षयमति-  
 निर्देशे च ध्यानाक्षयतया प्रज्ञोपाययुगनद्धवाही मार्गोऽनुगन्तव्यः । एवमनेन  
 क्रमेण बोधिसत्त्वस्य प्रज्ञाम् उपायं च सततं सत्कृत्य दीर्घकालाभ्यासेन  
 भावयतो द्वादशावस्थाविशेषा भवन्ति । ता एवावस्था उत्तरोत्तरगुण-  
 प्रतिष्ठार्थेन भूमयो व्यवस्थाप्यन्ते । अधिमुक्तिचर्याभूमेर्यावद् बुद्धभूमिरिति । 20

तत्र यावत् पुद्गलधर्मनैरात्म्यत्वं न साक्षात्करोति, केवलं दृढतराधि-  
 मुक्तिः । मारादिभिरप्यभेद्यो यदाधिमुक्तिबलेन<sup>३</sup> तत्त्वं भावयति, तदा

१. दूची० पा०—संज्ञायाम् अप्रतिपत्तिः । २. तत्र यदि नाम लोकोत्तर..... इत्यतः  
 .....मार्गोऽनुगन्तव्यः इत्यन्तं दूचीपाठे किञ्चित्पूर्वमेव पठितम् (द्र०-पृ०-१६४, टि०-४) ।  
 ३. भो० पा०—बलेनेव भावयति ।

दृढाधिमुक्तितोऽधिमुक्तिचर्याभूमिव्यवस्थाप्यते । अस्यामपि<sup>१</sup> भूमौ वर्तमानो बोधिसत्त्वः पृथग्जनोऽपि सर्वबालविपत्तिसमतिक्रान्तोऽसंख्येयसमाधिधारणी-विमोक्षाभिज्ञादिगुणान्वित आर्यरत्नमेघे पठ्यते ।

अस्या एव च मृदुमध्याधिमात्राधिमात्रतरावस्थाचतुष्टयेन चत्वारि  
 5 निर्वेधभागीयानि व्यवस्थाप्यन्ते । तथा हि यदा [ बाह्यार्थं विभावयता ]<sup>२</sup>  
 ईषत्स्पष्टो ज्ञानालोको भवति तदा उष्मगतनामकं निर्वेधभागीयं भवति ।  
 स चात्र महायान आलोकलब्धसमाधिरुच्यते । यदा तु स एव ज्ञानलोको  
 मध्यमस्पष्टो भवति, तदा मूर्धनामकनिर्वेधभागीयं भवति, वृद्धालोकश्च  
 समाधिरुच्यते । यदा तु स्पष्टतरो बाह्यार्थानाभासज्ञानालोको जायते,  
 10 तदा विजृम्भमात्रावस्थानात् क्षान्तिनामकं निर्वेधभागीयं भवति ।  
 एकदेशप्रविष्टश्च समाधिरुच्यते । ग्राह्याकारानुपलम्भप्रवेशात् । यदा तु  
 ग्राह्यग्राहकाकार<sup>३</sup>रहितम् अद्वयं ज्ञानं<sup>४</sup> विभावयेत् तदाऽग्रधर्माख्यं निर्वेध-  
 भागीयं भवति । आनन्तर्यश्च स समाधिरुच्यते, तदनन्तरमेव  
 तत्त्वप्रवेशात् । अत्र तावद् अधिमुक्तिचर्याभूमिः ।

15 इतरास्तु भूमयः संक्षेपत एकादशाङ्गपरिपूरिता व्यवस्थाप्यन्ते ।  
 तत्र प्रथमा भूमिः प्रथमं पुद्गलधर्मनैरात्म्यतत्त्वाधिगमाङ्गपरिपूरिता  
 व्यवस्थाप्यते । तथा हि यदाऽग्रधर्मानन्तरं प्रथमतः लोकोत्तरं  
 सर्वप्रपञ्चरहितं सर्वधर्मनिःस्वभावतासाक्षात्कारि स्फुटतरं ज्ञानम्  
 उत्पद्यते, तदा बोधिसत्त्वः सम्यक्त्वन्ययाभाव<sup>५</sup>क्रान्तितो दर्शनमार्गोत्पादात्  
 20 प्रथमां भूमिं प्रविष्टो भवति । अत एवास्यां भूमौ प्रथमतोऽधिगत-  
 तत्त्वाधिगमाद् बोधिसत्त्वः प्रमुदितो<sup>६</sup> भवति । तत एषा भूमिः प्रमुदि-  
 तेत्युच्यते । अत्र च द्वादशोत्तरं दर्शनहेयं क्लेशशतं प्रहीयते ।

१. भो० पा०—अस्यां भूमौ । २. हूची० पा०— सर्वधर्मनैरात्म्यं भावयता । ३. भो०  
 पा०—ग्रहणाकार । ४. भो० पा०—ज्ञानमपि । ५. हूविपाठे—न्यामाव । ६. भो० पा०—प्रमुदिता  
 भूमिर्भवति ।



शेषास्तु भूमयो भावनामार्गस्वभावाः । तासु भावनाहेयास्त्रैधातुकाः षोडश क्लेशाः प्रहीयन्ते । अस्यां च भूमौ बोधिसत्त्वस्य धर्मधातुसमुदागमता-प्रबोधात् स्वार्थ इव परार्थे प्रवर्तनाद् दानपारमिताऽतिरिक्ततरा भवति । स च बोधिसत्त्वः समधिगततत्त्वोऽपि<sup>१</sup> वा यावन्न शक्नोति सूक्ष्मापत्तिस्खलितेषु सम्प्रजन्यविहारी भवितुं तावत् प्रथमा भूमिः । यदा तु शक्नोति, 5 तदास्याङ्गस्य परिपूरितो द्वितीया भूमिव्यवस्थाप्यते । अत एवास्यां भूमौ सूक्ष्मापत्तिस्खलितसमुदाचारात् शीलपारमिताऽतिरिक्ततरा भवति । सर्वदौर्लभ्यमलापगमाद् इयं भूमिर्विमलेत्युच्यते ।

स सूक्ष्मापत्तिस्खलितेषु सम्प्रजन्यविहारी भवति । यावन्न शक्नोति सकललौकिकं समाधिं समापत्तुं यथाश्रुतं चार्थम् आधत्तुं तावद् द्वितीयैव 10 भूमिः । यदा शक्नोति, तदा तस्याङ्गस्य परिपूरितस्तृतीया भूमिव्यवस्थाप्यते । अस्यां च भूमौ बोधिसत्त्वस्य श्रुतधारण्या सर्वलौकिक-समाध्याभिनिर्हारार्थं सर्वदुःखसहनात्, क्षान्तिपारमिताऽतिरिक्ततरा भवति । तेषां समाधीनां लाभाद् इयं भूमिरप्रमाणं लोकोत्तरं ज्ञानावभासं करोतीति प्रभाकरीत्युच्यते । 15

स प्रतिलब्धलौकिकसकलसमाधिरपि यावन्न शक्नोति यथाप्रतिलब्धैर्बोधिपक्षधर्मैर्बहुलं विहर्तुं सर्वसमापत्तीनां<sup>२</sup> च चित्तम् उपेक्षितुं तावत् तृतीया भूमिः । यदा तु शक्नोति तदा तस्याङ्गस्य परिपूरितश्चतुर्थी भूमिव्यवस्थाप्यते । अस्यां भूमौ बोधिसत्त्वस्याभीक्षणं काय<sup>३</sup>वाङ्मनोजल्पसमतिक्रमणाय बोधिपक्षधर्मैर्विहरणात्, वीर्यपारमिताऽतिरिक्ततरा 20 भवति । इयं च सकलक्लेशेन्धनदाहसमर्थस्य बोधिपक्षधर्माचिष उद्गतत्वाद् अचिष्मतीत्युच्यते ।

सोऽभीक्षणं बोधिपक्षधर्मविहारी भवति । यावन्न शक्नोति सत्यानि भावयन् संसारानभिमुखं निर्वाणाभिमुखं च चेतो व्यावर्तयितुम् उपाय-

१. भो० पा०-अधिगततत्त्वोऽपि । २. भो० पा०-धर्मसमापत्ति । ३. काय-भो० न ।



संगृहीतान् बोधिपक्षान् धर्मान्<sup>१</sup> भावयितुम्, तावच्चतुर्थी भूमिः । यदा तु शक्नोति तदाऽस्याङ्गस्य परिपूरितः पञ्चमी भूमिर्व्यवस्थाप्यते । अत एवास्याम् इयम् उपायसंगृहीता बोधिपक्षभावना [ परिपूरितेन]<sup>२</sup> सुष्ठु दुःखेन जीयते अभ्यस्यता इति सुदुर्जयेत्युच्यते ।

- 5 अस्यां चार्य<sup>३</sup>सत्याकारभावनाबहुलीकाराद् ध्यानपारमिता अतिरिक्ततरा भवति । उपायसंगृहीतबोधिपक्षबहुलविहारो च भवति । यावद् न शक्नोति संसारप्रवृत्तिप्रत्यवेक्षणान् निर्वित्सहया चित्तसन्तत्याऽनिमित्तविहारं समापत्तुं तावत् पञ्चमी भूमिः । यदा शक्नोति तदाऽस्याङ्गस्य परिपूरितः षष्ठी भूमिर्व्यवस्थाप्यते । अस्यां च बोधिसत्त्वस्य प्रतीत्य-
- 10 समुत्पादभावनाविहारात् प्रज्ञापारमिताऽतिरिक्ततरा भवति । अत एव प्रज्ञापारमिताया अतिरिक्ततरत्वात् सर्वबुद्धधर्मेषु अभिमुखो<sup>४</sup>ऽस्यां भूमौ वर्तत इति कृत्वा अभिमुखीत्युच्यते ।

- सोऽनिमित्तविहारलाभी भवति । यावन्न शक्नोति निश्छिद्रम् अनिमित्तविहारं समापत्तुम्, तावत् षष्ठी भूमिः । यदा शक्नोति तदाऽस्याङ्गस्य परिपूरितः सप्तमी भूमिर्व्यवस्थाप्यते । अस्यामपि भूमौ बोधिसत्त्वः सर्वनिमित्तं निर्निमित्तेन प्रतिविध्यति निमित्तकृतव्यवहारं च न विरोधयति । अतोऽस्याम् उपायपारमिताऽतिरिक्ततरा भवति । इयं च भूमिरनाभोगमार्गोपश्लेषात् सुष्ठु दूरङ्गमाद् दूरङ्गमा ।
- 15

- स निश्छिद्रानिमित्तविहारी भवति । यावन्न शक्नोत्यनाभोगवाहिनम् अनिमित्तविहारं समापत्तुं तावत् सप्तमी भूमिः । यदा शक्नोति तदाऽस्याङ्गस्य परिपूरितोऽष्टमी भूमिर्व्यवस्थाप्यते । अस्यां च भूमौ अनाभोगेन कुशलपक्षयोगात् प्रणिधानपारमिताऽतिरिक्ततरा भवति । अनिमित्ताभोगाप्रकम्प्यत्वाद् इयम् अचलेत्युच्यते ।
- 20

१. धर्मान्-भो० न । २. भो० पा०-[ परिपूरितेन ] । ३. आर्य-भो० न ।

४. अभिमुखो-भो० न ।



सोऽनाभोगानिमित्तविहारी च भवति । यावन्न शक्नोति पर्याय-  
निरुक्त्यादिप्रभेदैः सर्वाकारसर्वधर्मदेशनायां वशीभवितुं तावद् अष्टमी  
भूमिः । यदा शक्नोति तदाऽस्याङ्गस्य परिपूरितो नवमी भूमिव्य-  
वस्थाप्यते । अस्यां च भूमौ बोधिसत्त्वस्य प्रतिसंविद्-विशेषलाभात्  
प्रज्ञाबलविशेषयोगाद् बलपारमिताऽतिरिक्ततरा भवति । सर्वाकारधर्म- 5  
देशनाकौशलतोऽनवद्यमतिविशेषलाभात् साधुमती भूमिरुच्यते ।

अस्यां च प्रतिसंविच्चतुष्टयलाभी भवति । यावन्न शक्नोति बुद्धक्षेत्र-  
पर्षन्निर्माणादि दर्शयितुं परिपूर्णधर्मसम्भोगं सत्त्वपरिपाकं च कर्तुम्, तावद्  
नवमी भूमिः । यदा तु शक्नोति तदाऽस्याङ्गस्य परिपूरितो दशमी  
भूमिव्यवस्थाप्यते । अस्यां च निर्माणादिना सत्त्वपरिपाचनाय 10  
ज्ञानविशेषयोगाद् बोधिसत्त्वस्य ज्ञानपारमिताऽतिरिक्ततरा भवति । इयं  
च धर्मदेशनामेधैः अनन्तेषु लोकधातुषु धर्मप्रवर्षणाद् धर्ममेधेत्युच्यते ।  
अपरैरपि स्कन्धपरिशुद्ध्यादिव्यवस्थापनैः भूमीनां व्यवस्थापनमस्ति,  
ग्रन्थविस्तरभयान्<sup>१</sup> न लिखितम् ।

स प्रतिलब्ध-निर्माणादिवशितोऽपि यावन् न शक्नोति सर्वस्मिन् ज्ञेये 15  
सर्वाकारम् असक्तम् । अप्रतिहतं ज्ञानम् उत्पादयितुं तावद् दशमी भूमिः ।  
यदा शक्नोति तदाऽस्याङ्गस्य परिपूरितो बुद्धभूमिव्यवस्थाप्यते । एतच्च  
भूमिव्यवस्थापनम् आर्यसंधिनिर्मोचने निर्दिष्टम् । अस्याश्च बुद्धभूमेः  
सर्वाकारसकलसंपत्प्रकर्षपर्यन्तगमनान्नापरम् उत्कृष्टं स्थानान्तरमस्ति  
[ तस्मात् ततः परं नास्ति भूमिव्यवस्था ]<sup>३</sup> इति । 20

अस्याश्च बुद्धभूमेर्गुणपक्षप्रभेदो बुद्धैरपि न शक्यते सर्वाकारं वक्तुम् ।  
तस्या अप्रमेयत्वात्, कथं पुनः अस्मत्सदृशैः । यथोक्तम् आर्यगण्डव्यूह<sup>४</sup>—

१. सर्व-भो० न । २. भो० पा०-अक्षरबाहुल्य । ३. भो० पो०-[ तस्मात् ततः परं  
नास्ति भूमिव्यवस्था इति ] । ४. देगे-का० ( अवतंसक-‘ग’ २६६ ) सं०-॥१॥१७ ॥  
पृ० २१, वरभङ्गा ।

गुणैकदेश-पर्यन्तं नाधिगच्छेत् स्वयंभुवः ।  
निरीक्ष्यमाणो<sup>१</sup> बुद्धोऽपि बुद्धधर्मा ह्यचिन्तियाः ॥ इति ।

एतावत्तु संक्षेपेण वक्तुं शक्यते । [ <sup>२</sup>स्वपरार्थसम्पत्तिप्रकर्षपर्यन्तगतः,  
अशेषदोषापगमनिष्ठां प्राप्य भगवान् बुद्धो धर्मकाये स्थित्वा सम्भोग-  
5 निर्माणकायाभ्याम् अनाभोगरूपेण अशेषजगदर्थं कुर्वन् यावत् संसारं  
विहरति ।

तस्मात् प्रेक्षावद्भिः सर्वगुणाकरेषु भगवत्सु श्रद्धा उत्पादनीया,  
तद्गुणपरिसाधनार्थं सर्वप्रकारेण प्रयतितव्यम् । त्रिकायादिविभागस्तु  
ग्रन्थविस्तरभयान्न लिख्यते ।

10 नयस्यानुसारेण सूत्रस्य चाथ  
सदुक्त्याऽस्य मार्गस्य जिनपुत्रकाणाम् ।  
मयानल्पपुण्यं यदाप्तं च तेन  
परामेतु बुद्धिं जगन्मन्दमाशु ॥

भूपतिश्रीदेवराजवचनेन ] कमलशीलेन भावनाक्रमस्य अयं संक्षेपः कृतः ।

भावनाक्रमः प्रथमः समाप्तः ।

१. दूची पाठे-निरीक्ष्यमाणोऽपि ।  
वचनेन' अंशः संस्कृतेऽनुपलब्धः ।

२. 'स्वपरार्थसम्पत्ति' इत्यतः श्रीदेवराज-



## भावनाक्रमो द्वितीयः

नमो मञ्जुश्रिये कुमारभूताय ।

महायानसूत्रनयानुप्रविश्यमानानां भावनाक्रमः संक्षेपतः कथ्यते ।  
इह अतिशीघ्रं सर्वज्ञताप्राप्तुकामेन प्रेक्षावता तत्प्रापक-हेतु-प्रत्ययेभ्योऽ-  
भियोगः करणीयः ।

इत्थमियं सर्वज्ञता तु हेतुं विना भवितुं न युज्यते, सर्वस्यापि सर्वदा 5  
सर्वज्ञताभावप्रसङ्गत्वात् । निरपेक्षभावे तु कुत्रापि प्रतिघो न स्याद्, यतो हि  
सर्वेऽपि सर्वज्ञा एव न भवन्ति । किं तर्हि कस्यचित् कदाचित् किञ्चिन्मात्रं-  
भूतत्वात् सर्वं हि वस्तु हेतुसापेक्षमेव । सर्वज्ञताऽपि कुत्रचित् कदाचित्  
किञ्चित् संभाव्यते । सर्वस्मिन्नपि काले नास्ति, सर्वस्मिन् स्थाने नास्ति,  
सर्वमपि नास्ति, तस्मात् सा तु नियतमेव हेतुप्रत्ययसापेक्षा । तद्धेतुप्रत्य- 10  
येष्वपि अभ्रान्ता अविकलाश्च सेवितव्याः । भ्रान्तहेत्वनुष्ठाने तु अतिदीर्घ-  
कालेनापि न इष्टफल-प्राप्तिः । यथा-शृङ्गात् पयोदोहवत् । सकलहेतुसेवनं  
विनाऽपि न फलोत्पादः । बीजादिषु कस्यचिदपि अभावे अङ्कुरादिफला-  
नुत्पादात् । तस्मात् तत्फलकामेनाभ्रान्तसकलं हेतुप्रत्ययं सेवनीयम् ।

के हेतुप्रत्ययाः सर्वज्ञताफलस्य इति ? उच्यते, मादृशो जात्यन्धसदृश- 15  
स्तान् दर्शयितुं न शक्नोति, तथापि भगवतैवाभिसंबुद्धय विनेयजनेभ्यो यथोक्तं  
तथैव मया भगवद्वचनेनैव कथ्यते । भगवांस्तान् अवोचत्<sup>१</sup>—“गुह्याधिपते !  
तत् सर्वज्ञज्ञानं करुणामूलं बोधिचित्तहेतुकम् उपायपर्यवसानम्” इति । तस्मात्  
सर्वज्ञतामधिगन्तुकामैः करुणा-बोधिचित्तोपायेषु एतेषु त्रिषु शिक्षितव्यम् ।

करुणया प्रेर्यमाणा बोधिसत्त्वाः सर्वसत्त्वाभ्युद्धारणर्थम् अवश्यं 20  
प्रतिज्ञास्यन्ति । अतः स्वात्मदृष्टिं निराकृत्य अतिदुष्कराविच्छिन्न-

दीर्घकाल-साधितपुण्यज्ञानसम्भारेषु आदरेण प्रवृत्तिः । तत्र प्रविश्य परिपूर्णं पुण्यज्ञानसम्भारम् अवश्यं साधयति । सम्भारपरिनिष्पत्तौ सर्वज्ञता करतलगतवद् भविष्यति । तर्हि सर्वज्ञतामूलं तु करुणाया एव भूतत्वात् सा तु प्रथमतरेव भावनीया । आर्यधर्मसंगीतिसूत्रे<sup>१</sup>—“न भगवन् बोधिसत्त्वेन  
5 अतिबहुषु धर्मेषु शिक्षितव्यम् । एको धर्मो भगवन् बोधिसत्त्वेन स्वाराधितः सुप्रतिविद्धः कर्तव्यः । तस्य सर्वबुद्धधर्माः करतलगता भवन्ति । कतम एकधर्मः ? यदुत महाकरुणा ।” इति ।

महाकरुणापरिगृहीतत्वाद् भगवन्तो बुद्धाः सकलस्वार्थसम्पत्ति-  
लाभेऽपि सत्त्वधातुपर्यवसानपर्यन्तं तिष्ठन्ति । श्रावकवद् अतिशान्तेऽपि  
10 निर्वाणनगरे न प्रविशन्ति । सत्त्वान् अवलोक्य तच्छान्तनिर्वाणनगरं प्रज्वलदयोगृहवद् दूरं त्यक्तत्वाद् भगवताम् अप्रतिष्ठितनिर्वाणहेतुस्तु सा महाकरुणा एव ।

अत्र स करुणाभावनाक्रमः प्रथमप्रवेशादारभ्य अभिधातव्यः ।  
संप्रति उपेक्षाभावनया सर्वसत्त्वेषु अनुरागं द्वेषं च निरस्य समचित्तता  
15 प्रथमं निष्पादयितव्या ।

सर्वे सत्त्वाः सुखं कामयन्ते, दुःखं तु न कामयन्ते । अनादिमति च संसारे न कश्चित् सत्त्वो यो नाभूत् शतशो मे बन्धुरिति परिचिन्तय-  
तश्चात्र को विशेषः स्यात् ? तर्हि कस्मिंश्चिद् अनुरागः कस्मिंश्चिच्च द्वेषो  
भवेत्, तस्मान् मया सर्वेषु सत्त्वेषु चित्तसमतैव कार्या इति । एवं  
20 मनसिकारेण मध्यस्थपक्षत आरभ्य मित्रे शत्रौ च चित्तसमतामेव भावयेत् । ततः सर्वसत्त्वेषु चित्तसमतां साधयित्वा मैत्रीं भावयेत् । मैत्रीजलेन चित्त-  
संतानं सिंचयित्वा विद्यमानसुवर्णभूमिवत् कृत्वा करुणाबीजवपने सुखेन  
अतिसुविस्तारो भविष्यति । ततश्चित्तसंतानं मैत्र्या वासयित्वा करुणां  
भावयेत् ।

१. देगे-का० ( सूत्र-‘श’ ८४ ) । २. द्रष्टव्यः—शिक्षासमुच्चयः, पृ० १११ दरभङ्गा ।



सा च करुणा सर्वपीडितसत्त्वदुःखावगमेच्छाकाराऽस्ति । लोकत्रयस्य सर्वसत्त्वानां त्रिविधदुःखतया यथायोगम् अत्यन्तदुःखितत्वात् तदर्थं सर्वसत्त्वेषु सा भावनीया । <sup>१</sup>तथा च ये तावन्नारकास्ते विविधचिरन्तनदीर्घकालिक-  
दाहादि-दुःखेषु निमग्ना एव भावतो वर्णिताः । तथा प्रेता अपि प्रायो दुःसहतीव्र-  
क्षुत्तृषदुःखान्गभिसंशोषितमूर्तयो बहुदुःखमनुभवन्ति इति वर्णिताः । तिर्यञ्चोऽपि 5  
परस्परभक्षणक्रोधवर्धाहंसादिभिर्नेकविधं दुःखमनुभवन्तो दृश्यन्ते एव । मनुष्या अपि  
कामपर्वेषणाकार्पण्याद् अन्योऽन्यद्रोहोपघातकृतं प्रियविप्रयोगाप्रियसंयोगं  
दारिद्र्याद्युत्पन्नम् अप्रमेयं दुःखमनुभवन्तो दृश्यन्ते ।

ये रागादिनाना-संकलेशपर्यवेष्टितचित्ताः, ये च विविधकुदृष्टिगहन-  
निमग्नास्ते सर्वेऽपि दुःखहेतुत्वात् प्रपातस्था इव अतिदुःखिता एव । देवा 10  
अपि सर्वविपरिणामदुःखदुःखिता एव । <sup>२</sup>देवा अपि ये कामावचरास्तेऽपि नित्य-  
च्यवनपतनादिभयशोकोपहताः कथं सुखिता नाम ? संस्कारदुःखं तु कर्मक्लेशलक्षणं  
हेतुपरतन्त्रस्वभावं प्रतिक्षणभङ्गुरस्वभावलक्षणं च सकलजगति व्याप्तम् ।  
<sup>३</sup>तस्मात् सकलमेव जगद् दुःखाग्निज्वालान्तरप्रविष्टम् अवेत्य यथा मम दुःखम्  
अप्रियम् अन्येषामपि तादृशम् इति चिन्तयता । अहो बत ! दुःखिता ममैते प्रिय- 15  
सत्त्वास्तु कथं तद्दुःखमुक्ताः स्युरिति स्वात्मदुःखवत् कृत्वा तन्निवारणे-  
च्छाकारया करुणया समाध्यवस्थायां सर्वचर्यासु वापि सर्वदा सर्वसत्त्वान्  
भावयेत् । प्रथमं तावद् मित्रपक्षेषु अनुभूतपूर्वोक्तविविधदुःखेषु अनुपश्यता  
भावनीया ।

ततः सत्त्वसमतयाविशेषमपश्यता 'सर्वे सत्त्वास्तु मे बन्धुभूता एव' 20  
इति परिचिन्तयता मध्यमपक्षेषु भावनीया । <sup>४</sup>यदा तत्र मित्रपक्षेष्विव सा करुणा  
तुल्या प्रवृत्ता भवति तदा दशसु दिक्षु सर्वसत्त्वेषु भावयेत् । यदा दुःखितप्रिय-  
शिशोः मातृवत् स्वात्मनोऽतिप्रियं दुःखत उद्धरणेच्छाकारा स्वरसबाहिनीं सर्व-  
सत्त्वेषु समप्रवृत्ता कृपा भवति तदा सा निष्पन्ना भवति, महाकरुणाव्यपदेशं च लभते ।

प्रथमं तावद् मित्रपक्षे कृता मैत्रीभावना सुखसंयोगेच्छाकारा भवति, क्रमशः व्यस्तेषु शत्रुषु चापि भावनीया । तथाऽभ्यस्ता च सा करुणा क्रमशः सकलसत्त्वाभ्युद्धरणेच्छां स्वरसेन एव उत्पादयति ।

अतो मूलकरुणां भावयित्वा बोधिचित्तं भावयेत् । तद् बोधिचित्तं  
5 तु द्विविधम्-संवृतं परमार्थं च । तत्र संवृतं तु करुणया सकलसत्त्वाभ्युद्धरणं प्रतिज्ञाय 'जगद्धिताय बुद्धो भवेयम्' इति, अनुत्तरसम्यक्सम्बोधीच्छाकारः प्रथमश्चित्तोत्पादः । तथापि शीलपरिवर्तप्रदर्शित-विधिवद् बोधिसत्त्वः संवरस्थितान्यविद्वत्सु चित्तमुत्पादयेत् ।

तथा संवृतबोधिचित्तमुत्पाद्य परमार्थबोधिचित्तोत्पादार्थं प्रयति-  
10 तव्यम् । तच्च परमार्थगोचरम्, विमलम्, अचलम्, निर्वातप्रदीपप्रवाह-  
वन्निष्कम्पम् । तत्सिद्धिस्तु सततं सत्कृत्य दीर्घकालं शमथविपश्यनायोग-  
भावनाकरणाद् भविष्यति । आर्यसंधिनिर्मोचने<sup>१</sup> यथा "मैत्रेय !  
श्रावकाणां बोधिसत्त्वानां तथागतानां वा येऽपि सर्वेऽपि लौकिकलोकोत्तर-  
कुशलधर्माः शमथविपश्यनाफला वेदितव्या इति ।" तद्द्वयोः सर्वसमाधि-  
15 संगृहीतत्वात् सर्वयोगिभिः सदा अवश्यं शमथविपश्यने सेवनीये । तत्रैव  
आर्यसंधिनिर्मोचने<sup>२</sup> भगवता उक्तम्, तद्यथा—"मया श्रावकाणां बोधि-  
सत्त्वानां तथागतानां विविधसमाधयो दर्शिताः, ते सर्वे शमथविपश्यना-  
संगृहीता वेदितव्याः" इति ।

केवलं शमथमात्रभावनया न योगिनाम् आवरणप्रहाणम्, क्लेश-  
20 विक्रान्तिमात्रमेव तावत् । प्रज्ञालोकाभावेऽनुशयहान्यसंभवाद् अनुशय-  
संहारो न भविष्यति । तस्मात् तत्रैव आर्यसंधिनिर्मोचने<sup>३</sup> उक्तम्  
"ध्यानेन हि क्लेशानां विक्रान्तिः । प्रज्ञया तु अनुशयं संप्रतिहन्ति इति" ।

१. देगे-का० ( सूत्र-'ब' ३४ ) । २. देगे-का० ( सूत्र-'ब' ३४ ) । ३. देगे-का०  
( सूत्र-'ब' ४३ ) ।



आर्यसमाधिराजसूत्रे<sup>१</sup>ऽपि—

किं चापि भावेद्य समाधिलोके  
न चो विभावेद्य स आत्मसंज्ञाम् ।  
पुनः प्रकुप्यन्ति किलेशु तस्य  
यथोद्वेकस्येह समाधिभावना ॥

5

नैरात्म्यधर्मान् यदि प्रत्यवेक्षते  
तान् प्रत्यवेक्ष्य यदि भावयेत् ।  
स हेतु निर्वाणफलस्य प्राप्तये  
यो अन्यहेतुर्न स भोति शान्तये ॥ इति उक्तम् ।

बोधिसत्त्वपिटके<sup>२</sup>ऽपि—“ये बोधिसत्त्वपिटकस्य एतद्धर्मपर्यायाश्रवणे, 10  
आर्यविनयधर्मश्रवणं च विना समाधिमात्रेण संतोषग्रहणे तु अहंकारवशाद्  
अभिमाने पतिताः जन्मजरारोगमरणशोकपरिदेवनादुःखदौर्मनस्यकोपा-  
परिमुक्ताः । षड्गतिसंसारपरिमुक्ताः दुःखस्कन्धतोऽपि अपरिमुक्ताः ।  
तान् संधाय तथागतेन एवम् उक्तम्—परस्माद् अनुकूलश्रोता तु जरामरण-  
मुक्तो भविष्यति” इति ।

15

तस्मात् सकलावरणं विहाय परिशुद्धज्ञानोद्भवकामेन शमथे स्थित्वा  
प्रज्ञा भावनीया । एवम् आर्यरत्नकूटे<sup>३</sup>ऽपि भाषितम्—

\*शोलं प्रतिष्ठाय समाधिलाभः  
समाधिलाभाच्च हि प्रज्ञाभावना ।

प्रज्ञाया ज्ञानं भवति विशुद्धं  
विशुद्धज्ञानस्य हि शोलसम्पत् ॥ इति ।

20

आर्यमहायानश्रद्धाभावनासूत्रे<sup>४</sup>ऽपि उक्तम्—“कुलपुत्र ! प्रज्ञायाम् अनु-  
पस्थितौ बोधिसत्त्वानां महायानश्रद्धा महायाने कथमपि उत्पत्स्यते  
( इति ) अहं न वक्ष्यामि । कुलपुत्र ! अनेन पर्यायेणापि एवं बोधि-

१. देगे का० ( सूत्र-‘द’ २७ ) सं०-८ परि० पृ० ४६ दरभंगा । २. देगे का०.....?  
३. देगे-का० ( रत्नकूट-‘छ’ १४६ ) । ४. ब्र०-प्र० भा० क्र० । ५. देगे-का० ( सूत्र-‘व’ २१ ) ।

सत्त्वानां या काचिद् महायानश्रद्धा महायाने उत्पत्स्यते सा सर्वा तु अविक्षिप्तचित्तेन धर्मार्थसंचिन्तनात् समुत्पन्ना वेदितव्या ।”

- शमथं विना विपश्यनामात्रेण योगिचित्तं विषयेषु विक्षिप्यते, वायुमध्य-स्थितप्रदीपवच्च स्थिरं न भवति । अतो ज्ञानालोकोऽतिस्फुटो न भवति ।
- 5 तस्माद् उभयं समं सेवितव्यम् । अतः आर्यमहापरिनिर्वाणसूत्रे<sup>१</sup>ऽपि उक्तम्—  
 “श्रावकैस्तु तथागतगोत्रं न दृश्यते । समाधेरधिकत्वात् प्रज्ञायाश्च अल्पत्वात् । बोधिसत्त्वास्तु पश्यन्ति, किन्तु अस्फुटम्, प्रज्ञातिरेकात् समाधेश्चाल्पत्वात् । तथागतस्तु सर्वम् अवलोकयति शमथविपश्यनासमानयुक्तत्वाद्” इति । शमथबलेन च वायुना अक्षोभ्यप्रदीपवद् विकल्पवायुभिरिचितं न कम्पते ।
- 10 विपश्यनया तु सकलकुट्टिमलप्रहाणत्वाद् अन्यैरभेद्या । चन्द्रप्रदीप-सूत्रे<sup>२</sup> यथा—

अकम्पियः शमथबलेन भोति शैलोपमो भोति विपश्यनाय ।

इत्युक्तम् । अतः उभयेन योगकरणं स्थितम् ।

- तत्र आदौ संप्रति तेन योगिना सुखं शीघ्रं च शमथ-विपश्यना-
- 15 सिद्धये शमथविपश्यनासम्भारः सेवनीयः । तत्र शमथसंभारः कतमः ? अनुकूलदेशवासः, अल्पेच्छता, सन्तुष्टिः, क्रियाबाहुल्यपरिहारः, शील-विशुद्धिः, इच्छादिविकल्पपरित्यागश्च ।

- तत्र पञ्चगुणयुक्तो हि देशोऽनुकूलो ज्ञातव्यः । वस्त्रभोजनादेः अकृच्छ्रेण प्राप्तित्वात् सुलब्धः, दुर्जनशत्र्वाद्यनवस्थितत्वात् सुस्थानम्, नीरोग-
- 20 भूमित्वात् सुभूमिः, मित्रशीलवत्समदृष्टित्वात् सन्मित्रम्, दिवा बहु-जनापूरितत्वाद् रात्रौ अल्पशब्दत्वाच्च सुयुक्तम् । अल्पेच्छता कतमा ? चीबरादेरौत्कृष्टतमस्य आधिक्यस्य वा अनध्यवसानम् । सन्तुष्टिः कतमा ?

१. देगे-का०.....? २. देगे-का० ( सूत्र-‘द’ २० ) सं०-समाधिराजसूत्र-७ परि० पृ० ३६ वरभंगा ।



अवरमात्रचीवरादिलाभेन यः सदा सन्तोषः । क्रियाबाहुल्यपरिहारः कतमः ?  
 क्रयविक्रयादिदुष्कर्मपरिहारः, गृहस्थ-प्रव्रजितान्यतमातिसंस्तुतिपरिहारः,  
 ओषधिनिर्माणनक्षत्रगणनादिपरिहारश्च ।

शीलविशुद्धिः कतमा ? संवरद्वयेऽपि प्रकृति-प्रतिक्षेपसावद्यशिक्षा-  
 पदाभङ्गता, प्रमादभङ्गेऽपि शीघ्रातिशीघ्रं पश्चात्तापेन यथाधर्माचरणम् । 5  
 श्रावकसंवरे पाराजिकप्रतिविधानेऽयोग्यं कथनं यदस्ति तस्मिन्नपि  
 पश्चात्तापः, पश्चाच्च अकरण-मनसिकारः । यच्चित्तेन यत्कर्म कृतम्,  
 तच्चित्ते निःस्वभावताप्रतिसंख्यानाद् सर्वधर्मनिःस्वभावताभावनत्वात्  
 तच्छीलविशुद्धिरेव वक्तव्या । तत्तु आर्याजातशत्रुकौकृत्यविनोदनाद्  
 अवबोद्धव्यम् । तस्मात् कौकृत्याभावं कृत्वा भावनायाम् अभियोगः कर्तव्यः । 10

कामेष्वपि इह जन्मान्तरे च भाविनो विविधदोषान् मनसिकृत्य तेषु  
 विकल्पः परिहर्त्तव्यः । एतावता संसारभावः प्रियोऽप्रियो वापि तत्सर्वं  
 तु विनाशधर्मि अस्थिरं च । निश्चयेन तत्सर्वस्मिन् मयि च अचिरं वियोगे  
 भाव्ये सति मम तस्मिन् कथम् अध्यवसितादिर्भवेद् इति भावनया  
 सर्वे विकल्पाः परिहर्त्तव्याः । 15

विपश्यना-सम्भारः कतमः ? सत्पुरुषाश्रयः, बहुश्रुतपर्येषणा, योनिशो-  
 मनसिकारश्च । तत्र कीदृशं सत्पुरुषम् आश्रयेद् इति चेत्—यो बहुश्रुतः  
 प्रसन्नवाक्, कारुणिको निर्वित्सहश्च । तत्र बहुश्रुतपर्येष्टिः कतमा ?  
 यत् सादरं भगवद्द्वादशाङ्गधर्मप्रवचननेयार्थनीतार्थातिश्रवणम् । इत्थम्  
 आर्यसंधिनिर्मोचने—“यथेच्छम् आर्याख्यानाश्रवणं हि विपश्यनाविघ्नः” 20  
 इति उक्तम् । तत्रैव<sup>२</sup> “विपश्यना च श्रवणमननाभ्यामुत्पन्नविशुद्धदृष्टिहेतो-  
 र्त्पद्यते ।” इत्युक्तम् । आर्यनारायणपरिपूच्छायाम्<sup>३</sup> अपि—“श्रुतिमति प्रज्ञा  
 प्रादुर्भवति । प्रज्ञावतः क्लेशाः प्रशाम्यन्ति ।” इत्युक्तम् ।

१. देगे-का० ( सूत्र-‘च’ ३५ ) । २. देगे-का० ( सूत्र-‘च’ ३४ ) । ३. देगे-का०  
 ( सूत्र-‘न’ ६२ ) इव सूत्रं ‘आर्यसर्वपुण्यसमुच्चयसमाधिसूत्र’ तोऽभिन्नम् ।



योनिशोमनसिकारः कतमः ? यस्य नीतार्थसूत्रनेयार्थसूत्रादि-  
सुनिर्णयस्तादृशे बोधिसत्त्वे निःशङ्के सति भावनायाम् ऐकान्तिकनिश्चयो  
भविष्यति । अन्यथा संशयान्दोलितयानस्थितस्तु शृङ्गाटकमध्यगत-  
मनुष्यवत् कुत्रापि ऐकान्तिकनिश्चयो न भविष्यति ।

- 5 योगिना तु सदा मत्स्यमांसादि परिहृत्य अप्रतिकूलं भोजनं नियत-  
मात्रकं भोक्तव्यम् । तथा तेन सञ्चितसकलशमथविपश्यनासम्भारेण  
बोधिसत्त्वेन भावनायां प्रवेष्टव्यम् ।

- तत्र प्रथमं तावद् योगी भावनाकाले सर्वम् इतिकरणीयं परिसमाप्य कृतमूत्र-  
पुरीषः कण्टकस्वरादिरहिते मनोज्ञकूले प्रदेशे स्थित्वा मया सर्वसत्त्वा बोधिमण्डे  
10 निष्पादयितव्या इति विनिश्चयन्, सकलजगदभ्युद्धरणाशयो महाकरुणाम् आमुखीकृत्य,  
दशदिगवस्थितान् सर्वबुद्धबोधिसत्त्वान् पञ्चाङ्गेन प्रणिपत्याग्रतो बुद्धबोधिसत्त्वान्  
पटादौ स्थापयित्वा अन्यत्र वा यथावत् तेभ्यश्च यथारुचि पूजास्तवनं कृत्वा स्वपापं  
प्रदेश्य, सकलस्य जगतः पुण्यम् अनुमोद्य, मृदुतरमुखीसने वैरोचनभट्टारकबद्धपर्यङ्केन  
अर्घ्यपर्यङ्केन वा निष्पाद्य नात्युन्मीलिते नातिनिमीलिते नासिकाग्रविन्यस्ते चक्षुषी  
15 कृत्वा, नातिनम्रं नातिस्तब्धम् ऋजुकायं प्रणिधायान्तर्मुखावर्जितस्मृतिरूपविशेषम् । ततः  
स्कन्धौ समौ स्थापयेत् । शिरो नोन्नतं नावनतम् एक-पादवै निश्चलं स्थापयितव्यम् । किं  
तर्हि नाभिप्रगुणा नासिका स्थापयितव्या । दन्तोष्ठं मृदु स्थापनीयम् । जिह्वा चोपरि  
दन्तमूले स्थापनीया । आश्वासप्रश्वासास्तु न सशब्दा नापि स्थूला नापि त्वरिताः  
करणीयाः । किं त्वसंलक्ष्यमाणा मन्दं मन्दमनाभोगेन यथा प्रविशेयुर्निगच्छेयुर्वा  
20 तथा करणीयम् ।

- तत्र प्रथमं तावत् शमथो निष्पादयितव्यः, बाह्यविषयविक्षेपशान्तेः  
आन्तरालम्बने सततं स्वरसवाहि प्रीतिप्रसन्नविविचित्तो एव स्थितिस्तु  
शमथ इति उच्यते । तस्यैव शमथस्यालम्बनकाले यस्तत्त्व-विचारः सा  
विपश्यना । आर्यरत्नमेघे<sup>१</sup> यथा—“शमथश्चित्तैकाग्रता । विपश्यना भूतप्रत्यवे-  
25 क्षेति” उक्तम् ।

१. द्र०-तृ० भा० क्र० ।

२. देगे-का० ( सूत्र-‘वा’ ६२ ) ।

३. द्र०-तृ०



आर्यसंधिनिर्मोचनेऽपि<sup>१</sup>—“भगवन् कथं शमथपरिगवेषणं विपश्यना-  
 कौशलं चास्ति ? उच्यते । मैत्रेय ! मया धर्मोपचारो व्यवस्थापितः ।  
 तद्यथा—ये सूत्रगेयव्याकरण-गाथा-उदान-निदान-अवदान-इतिवृत्तक-जातक-  
 वैपुल्य-अद्भुतधर्म-उपदेश-वर्गाः बोधिसत्त्वेभ्य आख्यातास्ते बोधिसत्त्वैः  
 संश्रुत्य संधार्य, पाठमभ्यस्य, मनसा सम्परीक्ष्य, दृष्ट्या सुप्रतिविद्धच स 5  
 एकाकी विविक्तस्थः, अन्तः प्रतिसंलीनः, यथासुचिन्तितान् तानेव धर्मान्  
 मनसिकृत्य, येन चित्तेन मनसिकारस्तच्चित्ताभ्यन्तरं सततं मनसिकारेण  
 मनसिकारः । तथा प्रविश्य तत्र बहुशः स्थितः तस्यां कायप्रस्रब्धिचित्त-  
 प्रस्रब्धिसम्भवश्च योऽस्ति स तु शमथ इति । तर्हि बोधिसत्त्वः शमथ-  
 परिगवेषणं करोति । तेन कायप्रस्रब्धिः, चित्तप्रस्रब्धिश्च । ते प्राप्य 10  
 तत्रैव स्थितः, चित्तविक्षेपं विहाय यथा चिन्तितधर्मः तेषामेव अभ्यन्तरे  
 समाधिगोचरप्रतिबिम्बं प्रत्यवेक्षते, अधिमुच्यते, तादृक् समाधिगोचर-  
 प्रतिबिम्बम्, तज्ज्ञेयार्थे विविच्यते प्रविब्रेचनं परिकल्पनं पर्यवेक्षणं  
 क्षान्तिः, कामो विशिष्टविभागो दर्शनम्, अधिगमश्च योऽस्ति, सा तु  
 विपश्यना इति, तथा च बोधिसत्त्वविपश्यना कौशलम् इत्युक्तम् ।” 15

तत्र शमथाभिनिर्हारकामो योगी प्रथमं तावत् सूत्रगेयादिसकल-  
 प्रवचनं तु तथतापरायणम्, तथताप्राग्भारम्, तथताप्रवणम् इति सर्वं संग्राह्य  
 तत्र चित्तम् उपस्थापयेत् । एतावता कियदाकारेण सर्वधर्मसंग्रहभूते  
 स्कन्धादौ तत्र चित्तम् उपस्थापयेत् । एतावता यथादृष्ट-यथाश्रुतबुद्ध-  
 प्रतिमायां चित्तं स्थापितव्यम् । आर्यसमाधिराजे<sup>२</sup> यथा— 20

सुवर्णवर्णेन

समुच्छ्रयेण

समन्तप्रासादिकु लोकनाथः ।

यस्यात्र आलम्बनि चित्तु वर्तते

समाहितः सोच्यति बोधिसत्त्व ॥ इति उक्तम् ।

१. देगे-का० ( सूत्र 'च' २६ । २. देगे-का० ( सूत्र-'द' १३ ) सं०-॥ ४११३ ॥

तथा यत्र इच्छालम्बनं तस्मिन् चित्तं स्थापयित्वा तत्रैव उपर्युपरि सततं चित्तं स्थापयेत् । तत्र उपस्थाप्य चित्तम् ईदृशमेवं परीक्षेत । 'किम् आलम्बनं सुगृह्णाति, लीयते वा अथवा बाह्यविषयव्यसेकाद् विक्षिप्यते' इति परीक्षितव्यम् । तत्र यदि स्त्यानमिद्धाभिभवाद् चित्तं लीनं वा लयाभिशङ्का 5 दर्शने तत्काले प्रमोद्य वस्तुनि बुद्धप्रतिमादौ वा अलोकसंज्ञामनसिकारः कर्तव्यः । अथ लयम् उपशाम्य यथापि तत्रैव आलम्बने चित्तालम्बनम् अतिस्फुट-दर्शनं भवति तथा करणीयम् ।

यदा तु जात्यन्धवद् अन्धकारप्रविष्टपुरुषवद् वा विनिमोलिताक्षवद् वा चित्तम् आलम्बनं अतिस्फुटतरं न पश्यति तदा लीनं वेदितव्यम् । यदा बाह्यरूपादौ तेषां 10 गुणकल्पनया धावनेन, अन्यमनसिकारेण वा पूर्वानुभूतविषयेच्छया चित्तौद्धत्यं वा औद्धत्यशङ्कादर्शनं वा तदा सर्वे संस्कारा अनित्या दुःखादि-मनोसंवेगवस्तु मनसि कर्तव्यम् । ततः विक्षेपशान्तिं कृत्वा स्मृतिसम्प्रजन्य-रज्जुना मनोनागः तदालम्बनस्तम्भे एव बन्धितव्यः । यदा लयौद्धत्ये न भवतः तदालम्बने चित्तप्रशमवहितां पश्येत्, तदा आभोगशिथिलीकरणाद् उपेक्षया 15 तत्काले यावदिच्छं तिष्ठेत् । इत्थं भावितशमथस्य तच्छरीरस्य चित्तस्य च प्रश्रब्धिर्भविष्यति । यथेच्छालम्बने चित्तं स्ववशे भविष्यति । तदा शमथो निष्पन्नो वेदितव्यः ।

ततः शमथं निष्पाद्य विषयानां भावयेत् । ईदृशं च मन्तव्यम् भगवतः सर्ववचनं तु सुभाषितम्, साक्षात् परम्परया वा तत्त्वप्रत्यक्षव्यञ्जनं तत्त्व- 20 परायणमेव च । तत्त्वज्ञाने आलोकोद्भवात् तमोनिरासवत् सर्वदृष्टिजाल-वियोगो भविष्यति । शमथमात्रेण ज्ञानशुद्धिर्न भविष्यति, आवरण-तमो-निरासश्चापि न भविष्यति । प्रज्ञया च तत्त्वसम्यग्भावनायां ज्ञानविशुद्धिर्भ-विष्यति । प्रज्ञया एव तत्त्वमवगम्यते प्रज्ञयैव आवरणं सम्यक् प्रहीयते ।



तस्मान्मया शमथे स्थित्वा प्रज्ञया तत्त्वं पर्येषितव्यम् । शमथमात्रेण संतोषो न करणीय इति विचारणीयम् ।

कीदृशं च तत्त्वम् इति चेत् ? यत् परमार्थतः सर्ववस्तुपुद्गल-  
धर्मस्मिताशून्यम्, तत्प्रज्ञापारमितया अधिगम्यते न चान्यथा । आर्यसंधि-  
निर्मोचने<sup>१</sup> यथोक्तम् “भगवन् ! कया पारमितया बोधिसत्त्वः धर्मनिःस्व- 5  
भावतां गृह्णीयात् ? अवलोकितेश्वर ! प्रज्ञापारमितया गृह्यते ।” इति ।  
तस्मात् शमथे स्थित्वा प्रज्ञां भावयेत् ।

तत्रैवं योगी विचारयेत्, ‘पुद्गलः न स्कन्धात्वायतनव्यतिरिक्त  
उपलभ्यते । न चापि पुद्गलः स्कन्धादिस्वभावः । ते स्कन्धादयस्तु  
अनित्याः, अनेकस्वभावत्वात्<sup>२</sup> पुद्गलस्य च नित्यैकरूपेण परैरूपकल्पितत्वात् । 10  
नापि तत्त्वान्यत्वाभ्याम् अनभिलाप्यपुद्गलस्य वस्तुत्वं युक्तम् । वस्तुसतः प्रकारान्तरा-  
भावात् । तस्मात् तद्यथा भ्रम एव अयं लोकस्य यदुताहं ममेति विचारितव्यम् ।

धर्मनैरात्म्यमपि एवं भावनीयम् । धर्म इति संक्षेपतः पञ्चस्कन्धो  
द्वादशायतनम्, अष्टादशधातवश्च । तत्र ये च स्कन्धायतनधातुरूपिणः, न ते  
परमार्थतः चित्ताकारव्यतिरिक्ताः । तत्परमाणुशो विभागे परमाणवोऽपि 15  
भागशः स्वभावताप्रत्यवेक्षमाणाः स्वभावनिश्चयग्रहणाभावात् ।  
<sup>३</sup>तस्माद् अनादिकालिकवितथरूपाद्यभिनिवेशवशात् स्वप्नोपलभ्यमानरूपादिप्रति-  
भासवद् बालानां चित्तमेव बहिः विच्छिन्नमिव रूपादिप्रतिभासं ख्याति ।  
परमार्थतस्तत्र रूपादिस्तु न चित्ताकारव्यतिरिक्त इति विचारयेत् । तद्  
एवं त्रैधातुकमिदं तु चित्तमात्रमिति चिन्तयेत् ।<sup>४</sup>स एवं चित्तमेव सकलधर्मप्रज्ञप्तिं 20  
निश्चित्य तत्र प्रत्यवेक्ष्य च सर्वधर्माणां स्वभावः प्रत्यवेक्षितो भवतीति चित्तस्वभावमपि  
प्रत्यवेक्षते । स एवं विचारयति ।

चित्तमपि परमार्थः सत्यं भवितुम् न युज्यते । यदा हि अलीकस्वभावरूपाद्याक-  
रोपग्रहणे चित्तमेव चित्राकारं प्रतिभासते, तदा सत्यत्वं कुत्र भवेत् । यथा रूपादि

१. देगे-का० ( सूत्र-‘च’ ४७ ) । २. द्र०-तृ० भा० क्र० । ३. द्र०-तृ० भा० क्र० ।  
४. द्र०-तृ० भा० क्र० ।

अलीकं तथा चित्तमपि तदव्यतिरिक्तत्वाद् अलीकमेव । यथा चित्राकारतया रूपादयो नैकानेकस्वभावाः तथा चित्तमपि तदव्यतिरेकेण नैकानेकस्वभावम् । तस्मात् मायादिस्वभावोपममेव चित्तम् ।

- यथा चित्तमेवं सर्वधर्मा अपि मायास्वभावसदृशा एव इति  
 5 विचारयेत् । तेन तथा प्रज्ञया चित्तस्वभावे प्रत्यवेक्षमाणे परमार्थतः चित्तम् अभ्यन्तरेऽपि नोपलभते, बाह्येऽपि नोपलभते, अनुभयोऽपि नोपलभते, अतोतचित्तमपि नोपलभते, अनागतमपि नोपलभते, प्रत्युत्पन्नमपि नोपलभते । नापि चित्तमुत्पाद्यमानं कुतोऽप्यागच्छति, नापि निरुध्यमानं क्वचिदपि गच्छति । चित्तं तु अग्राह्यम् अनिर्देश्यम्, अरूपम् च ।  
 10 अनिर्देश्यम् अग्राह्यम् अरूपम् च यदस्ति तस्य स्वभावः कीदृशः ? तथा आर्यरत्नकूटे<sup>२</sup> यथोक्तम्—“काश्यप ! चित्तं तु परिगवेष्यमाणं न लभ्यते । यन्न लब्धं तन्न आलम्ब्यते यच्च नालम्ब्यते तन्नातीतम्, नानागतम्, न च प्रत्युत्पन्नम् ।” इति विस्तरः । तद् एवं परीक्ष्यमाणे चित्तस्य आदिं न समनुपश्यति, अन्तं न समनुपश्यति मध्यं न समनुपश्यति ।  
 15 यथा च चित्तम् अनन्तमध्यं तथा सर्वधर्मानपि अनन्तमध्यम् अवगच्छेत् । तेन तदेवं चित्तम् अनन्तमध्यम् अवगम्य किमपि चित्तस्वभावं नोपलभते । यदपि चित्तं परीक्ष्यते तदपि शून्यं प्रतिविध्यति । तत्प्रति-विध्यमाने चित्तविठपनास्वभावं रूपादिस्वभावमपि न समनुपश्यति । तेन तथा प्रज्ञया सर्वधर्मस्वभावस्य असमनुदर्शनत्वाद् रूपं नित्यम् अनित्यं  
 20 वा, शून्यम् अशून्यं वा, सास्त्रवम् अनास्त्रवं वा, उत्पन्नम् अनुत्पन्नं वा, भावोऽभावो वेति न विकल्पयति । यथा रूपं न विकल्पयति तथा वेदना-संज्ञासंस्कारविज्ञानेष्वपि न विकल्पयति । असिद्धे धर्मिणि तस्य विशेषणा-नामपि असिद्धत्वात्, तत्र कथं विकल्पयेत् । तद् एवं प्रज्ञया परीक्ष्यमाणो



यदा योगिना कस्यचिद् वस्तुनः स्वभावपरमार्थनिश्चयो न गृह्यते, तदा निर्विकल्पसमाधौ प्रविशति । सर्वधर्मनिःस्वभावता अपि अवगम्यते ।

यः प्रज्ञया वस्तुस्वभावं प्रत्यवेक्ष्य न भावयन्, मनसिकारपरिहार-  
मात्रं भावयति, तस्य विकल्पः कदापि न निवर्तते, न च निःस्वभावताव-  
बोधोऽपि भविष्यति, प्रज्ञालोकाभावात् । एवं सम्यक्प्रत्यवेक्षणात् सम्यग्- 5  
यथावज्ज्ञानाग्निभावेऽरणिमन्थनाग्निवत् कल्पनावृक्षो दह्यते इति भगवता  
उक्तम् ।

तथा उक्तम् आर्यरत्नमेघे<sup>१</sup>—“स एवम् अपक्षालकुशलः सर्वप्रपञ्चविगमाय  
शून्यताभावनाय योगमापद्यते । स शून्यताभावनबहुलो येषु येषु स्थानेषु चित्तं  
प्रसरति, चित्तमभिरमते, तानि तानि स्थानानि स्वभावतः परिगवेषमाणः शून्यं प्रति- 10  
विध्यति । यत् चित्तं तदपि परीक्षमाणः शून्यं प्रतिविध्यति, येनापि चित्तेन परीक्षते तद्  
अपि स्वभावतः शून्यं परिगवेष्यमाणं प्रतिविध्यति । स एवम् उपपरीक्षमाणो निर्निमित्त-  
तायां योगमापद्यते ।” इति भवति । अनेन तु पर्यवेक्षणपूर्वगामितायाः  
निर्निमित्तताप्रवेशं दर्शयति । मनसिकारपरिहारमात्रम्, प्रज्ञया वस्तुस्वभावतां  
च अविचार्य, अविकल्पताप्रवेशम् असंभाव्य, अतिस्फुटतरं दर्शयति । तथा 15  
तया प्रज्ञया रूपादिवस्तुस्वभावं सम्यग् यथावत् परीक्ष्य ध्यायति, रूपादौ  
स्थित्वा ध्यानं न करोति । इहलोकपरलोकयोर्मध्ये स्थित्वा ध्यानं न  
करोति, तद्रूपाद्यनुपलम्भात् । तस्माद् अप्रतिष्ठितध्यान इति  
उच्यते ।

प्रज्ञया स्कलवस्तुस्वभावतां प्रतिवीक्ष्य यस्माद् अनुपलम्भं ध्यायति<sup>२</sup>- 20  
तस्मात् प्रज्ञोत्तरध्यायी इति उच्यते । आर्यगगनगङ्गा-आर्यरत्नचूडादिषु  
यथा निर्दिष्टम् ।

<sup>३</sup>स एवं पुद्गलधर्मनैरात्म्यमयं तत्त्वमवतीर्णः, अपरस्य परीक्षणीयस्य दर्शनीयस्य  
च अभावाद् उपरतम्, वितर्क-विचार-अनभिलाषैकरसेन मनसा स्वरसवाहिना अनभि-

१. देगे-का० ( सूत्र-‘वा’ ६२ ) । २. द्र०-तृ० भा० क्र० । ३. द्र०-तृ० भा० क्र० ।



- संस्कारतस्तत्त्वमेव स्फुटतरं भावयन् तिष्ठेत् । तत्र च स्थितश्चित्तसंतानं न विक्षिपेत् । यदान्तरा रागादीनां चित्तं बहिर्धा विक्षेपेत् तदा विक्षेपं विदित्वा शीघ्रम् अशुभभावनादिविक्षेपम् उपशम्य शीघ्रं तथतायां चित्तम् उपर्युपरि प्रवेशयेत् । यदा तु तत्रानभिरतं चित्तं पश्येत्, तदा समाधेर्गुणदर्शनाद् अभिरतिं तत्र भावयेत् ।
- 5 विक्षेपे च दोषदर्शनाद् अरतिं प्रशमयेत् । अथ स्त्यानमिद्धाभिभवाद् यदा अस्फुट-प्रचारतया लीनं चित्तं पश्येत्, लयाभिः शङ्कितं वा तदा पूर्ववत् प्रमोद्यवस्तु मनसि-कारेण शीघ्रं लयमुपशमयेत् । पुनः तद् एव तत्त्वमालम्बनम् अतिदृढतरं गृह्णीयात् । यदि तदा पूर्वहसितरमितान्यनुस्मृत्य चित्तमन्तरा समुद्रुतं पश्येद् औद्धत्याभि-शङ्कितं वा तदा अनित्यतादिसंवेगवस्तुमनसिकाराद् विक्षेपं शमयेत् । ततः पुनस्तत्रैव
- 10 तत्त्वे चित्तानभिसंस्कारबाहितायां यत्नं कुर्वीत ।

- अथ यदा लयोद्धत्याभ्यां विविक्ततया समप्रवृत्तं स्वरसवाहिस्फुटतरं तत्रैव तत्त्वे चित्तं उत्पादयते, तदा भोगशितिलीकरणाद् उपेक्षणीयम् । यदि समप्रवृत्ते चित्ते सति आभोगः क्रियते, तदा चित्तं विक्षेप्यते । लीनेऽपि चित्ते सति, यद्याभोगो न क्रियते, तदा अतिलीनत्वाद् विपश्यनारहितं, चित्तं च जात्यन्धवद् भविष्यति ।
- 15 तस्माच्चित्ते लीने सति भोगं कुर्वीत । समप्रवृत्ते सति भोगं न कुर्वीत । यदा च विपश्यनां भावयेत् प्रज्ञातिरिक्ततरा भवेत्, तदा शमथस्याल्पत्वात् प्रवात-स्थित-प्रदोषवत् प्रचलत्वाच्चित्तस्य न स्फुटतरं तत्त्वदर्शनं भवेत् । अतस्तदा शमथो भावयितव्यः । शमथस्याभ्याधिक्येऽपि प्रज्ञा भावयितव्या ।

- यदा उभयं समप्रवृत्तं तदा अनभिसंस्कारेणैव तावत् स्थातव्यं यावत्
- 20 कायचित्तपोडा न भवेत् । सत्यां कायादिपोडायां तदन्तरा सकलमेव लोकं मायामरीचि-स्वप्नजलचन्द्रोपमप्रतिभासवद् दृष्ट्वा ईदृशं चिन्तनीयम् । अमी सत्त्वास्तु एवं-विधधर्मगाम्भीर्यानवबोधतया संसारे संक्लिष्टाः । ततोऽहं करिष्यामि तांस्तां धर्मताम् अवबोधयेयुः, तथा करिष्यामि' इति चिन्तयन् महाकरुणां बोधिचित्ताभिमुखीं कुर्वीत । ततो विश्रम्य पुनरपि तथैव सर्वधर्मनिराभासं समाधिभवतरेत् । चित्तेऽति-
- 25 खेदे सति, तथैव विश्रमेत् । अयं तु शमथविपश्यनायुगनद्धप्रवृत्तिमार्गः सविकल्पनिर्विकल्पप्रतिबिम्बम् आलम्बते ।

३ एवं योगी अनेन क्रमेण घटिकाम् अर्धप्रहरम् एकप्रहरं वा यावत्कालेच्छा-पर्यन्तं तत्त्वं भावयन् तिष्ठेत् । इदं त्वर्थप्रविचयध्यानम् आर्यालङ्कावतारे



निर्दिष्टम् । तत इच्छया समाधेरुत्थातुं पर्यङ्कम् अभित्वैवम् अनुविचिन्तयेत्, अमी धर्माः सर्वे परमार्थतः निःस्वभावाः सन्तोऽपि संवृतौ व्यवस्थिता एव । तथा-  
ऽसति कर्मफलसम्बन्धादयः कथं व्यवस्थिताः स्युः ? भगवता चोक्तम्<sup>१</sup>—

“भावा विद्यन्ति संवृत्या परमार्थे न भावकाः ।” इत्युक्तम् ।

अमी बालबुद्धयो निःस्वभाववस्तुषु भावादिसमारोपेण विपर्यस्त- 5  
बुद्धयो भवन्ति । चिरकालं संसारचक्रे परिभ्रमन्ति, ततोऽहं करिष्यामि  
अनुत्तरपुण्यज्ञानसम्भारं परिपूर्णं, ततः सर्वज्ञपदं प्राप्य तान् धर्मताम्  
अवबोधयेयम् । एवं विचिन्तयेत् । <sup>२</sup>अथ शनैः पर्यङ्कं भित्त्वा दशदिग्व्यवस्थितान्  
सर्वबुद्धबोधिसत्त्वान् प्रणिपत्य तेभ्यश्च पूजास्तोत्रोपहारं कृत्वायं भद्रचर्यादिमहा-  
प्रणिधानं प्रणिदधौ । ततः शून्यताकरुणागर्भसकलदानादिपुण्यसंभारोपाज्जे- 10  
भियोगः करणीयः ।

तथा च सति तद्ध्यानसर्वाकारवरोपेतशून्यताभिनिर्हारः स्यात् ।  
आर्यरत्नचूडे<sup>३</sup> यथोक्तम्—“स मैत्रीवर्मसंनद्धो महाकरुणास्थाने स्थित्वा  
सर्वाकारवरोपेतशून्यताभिनिर्हारध्यानं करोति । तत्र सर्वाकारवरोपेत-  
शून्यता कतमा ? या दानानपगति-शीलानपगति-क्षान्त्यनपगति-वीर्यान्- 15  
पगति-ध्यानानपगति-प्रज्ञानापगति-उपायानपगतीत्यादिविस्तरोक्तिरिति ।”  
बोधिसत्त्वस्तु सर्वसत्त्वपरिपाकं कुर्वीत । क्षेत्रकायबहुपरिवारादिसंपत्ति-  
प्रादुर्भावोपायदानादिकुशलं चावश्यं सेवेत ।

असति च तथा बुद्धानाम् क्षेत्रादिसंपत्तियोक्ता सा कस्य फलं स्यात् ।  
तस्मात् सर्वाकारवरोपेतं तत्सर्वज्ञज्ञानं तु दानाद्युपायेन परिपूर्णमाणत्वाद् 20  
भगवान् तत् सर्वज्ञज्ञानम् उपायेन पर्यन्तगतम् इत्यवोचत् । तस्माद् बोधि-  
सत्त्वेन दानाद्युपायोऽपि सेवितव्यो न तु शून्यता एव । आर्यसर्वधर्मवैपुल्ये<sup>४</sup>

१. देगे-का० (सूत्र-‘च’ १७४) सं०-लङ्कावतारसूत्र ॥ १०।४२६ ॥, पृ० १३५  
वरभङ्गा । २. द्र०-तु० भा० क्र० । ३. देगे-का० (रत्नकूट-‘छ’ २२०) । ४. देगे-  
का०.....? ।



- “योऽयं मैत्रेय ! षट्पारमितासमुदागमो बोधिसत्त्वानां सम्बोधाय तं ते मोहपुरुषा एवं वक्ष्यन्ति, प्रज्ञापारमितायाम् एवं बोधिसत्त्वेन शिक्षितव्यम्, किं शेषाभिः पारमिताभिरिति उच्यन्ते । तेऽन्याः पारमिता दूषयितव्या मंस्यन्ते । तत् किं मन्यसे अजित ! दुःप्रज्ञः स काशिराजोऽभूद् येन कपोतार्थेन श्येनाय स्वमांसानि दत्तानि ? मैत्रेय आह, नो हीदं भगवन् । भगवान् आह-यानि मया मैत्रेय ! बोधिसत्त्वचर्या चरता षट्पारमिता-प्रतिसंयुक्तानि कुशलमूलान्युपचितानि, अपकृतं नु तैः कुशलमूलैः ? मैत्रेय आह नो हीदं भगवन् । भगवान् आह-त्वं तावद् अजित ! षष्टिकल्पान् दानपारमितायां समुदागतः, षष्टिकल्पान् शीलपारमितायां षष्टिकल्पान् क्षान्तिपारमितायां षष्टिकल्पान् बोधपारमितायां षष्टिकल्पान् ध्यानपारमितायां षष्टिकल्पान् प्रज्ञापारमितायां समुदागतः । तत् ते मोहपुरुषा एवं वक्ष्यन्ति । एकनयेनैव बोधियंदुत शून्यतानयेनेति ते चर्यापरिशुद्धा भवन्तोत्यादि ।”

- उपायरहिते सति बोधिसत्त्वः प्रज्ञया एव तु श्रावकवत् बुद्धकार्याणि कर्तुं न शक्नोति । उपायसनाथश्च समर्थो भवति । आर्यरत्नकूटे <sup>३</sup>यथोक्तम्-“तद्यथा काश्यप ! अमात्यसंगृहीता राजानः सर्वकार्याणि कुर्वन्ति, एवमेव उपायकौशल्यसंगृहीता बोधिसत्त्वस्य प्रज्ञा सर्वबुद्धकार्याणि करोति ।” इति । बोधिसत्त्वानां मार्गदृष्टेरप्यन्या तीर्थिकानां श्रावकाणां च मार्गदृष्टिरप्यन्या । एवं तीर्थिकमार्गदृष्टिस्तु आत्मादौ विपर्यासयुक्तत्वात् सर्वेण सर्वः प्रज्ञारहितो मार्गः । तस्मात् ते मुक्तिं न प्राप्नुवन्ति ।

- श्रावकाणां तु महाकरुणारहितत्वाद् उपायायुक्तता । तस्मात् ते एकान्तनिर्वाणपरायणाः भवन्ति । बोधिसत्त्वमार्गस्तु प्रज्ञोपाययुक्तो मन्यते । तस्मात् ते अप्रतिष्ठितनिर्वाणपरायणा भवन्ति । बोधिसत्त्वानां मार्गस्तु प्रज्ञोपाययुक्तो मन्यते । तस्मात् ते अप्रतिष्ठितनिर्वाणं प्राप्नुवन्ति । प्रज्ञाबलेन तु संसारे न पतति, उपायबलेन च निर्वाणे न पतति ।

- तस्माद् आर्यगयाशीर्षे-“द्वाविमौ बोधिसत्त्वानां संक्षिप्तौ मार्गौ । कतमौ द्वौ-यदुत प्रज्ञा चोपायश्च ।” इत्याख्यातम् । आर्यश्रीपरमाद्येऽपि <sup>१</sup> उक्तम्—

१. द्र०-तृ० भा० क्र० । २. देगे-का० ( रत्नकूट 'छ' १२६ ) । ३. द्र०-तृ० भा० क्र० । ४. देगे-का० ( सूत्र-'च' २८८ ) । ५. द्र०-तृ० भा० क्र० । ६. देगे० का०.....?



“प्रज्ञापारमिता तु ‘माता’ अस्ति, उपायकौशल्यं च ‘पिता’ अस्ति ।”  
 आर्यविमलकीर्तिनिर्देशसूत्रेऽपि<sup>१</sup>—“बोधिसत्त्वानां किं बन्धनम् ? का च मुक्तिः ?  
 अनुपायेन भवगतिपरिग्रहो हि बोधिसत्त्वस्य बन्धनम् । उपायेन भवगति-  
 गमनं मुक्तिः । प्रज्ञारहितभावगतिपरिग्रहो बोधिसत्त्वस्य बन्धनम् । प्रज्ञया  
 भवगतिगमनं तु मुक्तिः । उपायेन अपरिगृहीता प्रज्ञा हि बन्धनम् । 5  
 उपायेन परिगृहीता प्रज्ञा मुक्तिः । प्रज्ञयापरिगृहीतोपायो बन्धनम् ।  
 प्रज्ञया गृहीतोपायः मुक्तिः इति” विस्तरेण उक्तम् ।

बोधिसत्त्वस्य प्रज्ञामात्रसेवनं तु श्रावकेष्टनिर्वाणपतितत्वाद् बन्धनवद्  
 भविष्यति । अप्रतिष्ठितनिर्वाणेन मुक्तिर्न भविष्यति । तस्मादुपायरहिता  
 प्रज्ञा तु बोधिसत्त्वानां बन्धनमित्युच्यते । तस्माद् वायुपीडितेन अग्निसेवन- 10  
 वद् बोधिसत्त्वेन विपर्यासवायुमात्रप्रहाणत्वात् सोपायप्रज्ञया शून्यता  
 सेवितव्या, न तु श्रावकवत् साक्षात्करणीया । यथा आर्यदशधर्मसूत्रे<sup>२</sup>  
 चोक्तम्—“कुलपुत्र ! तद्यथा यथा कश्चिन्मनुष्यः अग्निपरिचर्यां करोति,  
 स तदग्निस्तकारं करोति, गुरुं करोति, किन्तु सोऽयमिति मया सोऽग्निः  
 सत्कृत्य, गुरुकृत्य मानितश्च इति कृतेऽपि एष द्वाभ्यां हस्ताभ्यां 15  
 परिगृहीतव्य इति न चिन्तयति । तत् कस्मादिति चेत् तन्निधाने मयि  
 कायिकदुःखं चित्तदौर्मनस्यं वा सम्भाव्यते इति चिन्तनात् । तथैव च  
 बोधिसत्त्वेऽपि निर्वाणाशयोऽप्यस्ति, निर्वाण-प्रत्यक्षं न करोति । तत् कस्य  
 हेतोरिति चेत् ? तन्निधानाद् अहं बोधिं निवर्तयम् इति चिन्तनाद्” इति ।

केवलम् उपायमात्रसेवनेऽपि बोधिसत्त्वः पृथग्जनभूमेरनुत्तीर्णत्वाद् 20  
 अत्यवबद्ध एव भविष्यति । तस्मात् प्रज्ञासहितमुपायं सेवेत । एवं मन्त्र-  
 परिगृहीतविषयवद् बोधिसत्त्वक्लेशेऽपि प्रज्ञापरिग्रहबलेन भाविते सति  
 अमृतिकता । पुनः स्वभावेन अभ्युदयफलं दानादि यदस्ति तत्र किमुत



वक्तव्यम् । आर्यरत्नकूटे<sup>१</sup> चोक्तं यथा—“<sup>२</sup>तद्यथाऽपि नाम काश्यप ! मन्त्रौषधपरि-  
गृहीतं विषं न विनिपातयति एवमेव बोधिसत्त्वानाम् क्लेशः प्रज्ञापरिगृहीतत्वाद् अपि  
न शक्नोति विनिपातयितुम् इति ।”

तस्माद् येन कारणेन बोधिसत्त्व उपायबलेन संसारमनुत्सृजति  
5 तस्माद् निर्वाणे न पतति । यस्मात् प्रज्ञाबलेन सकलालम्बनं प्रहीयते  
तस्मात् संसारे न पतति, तस्माद् अप्रतिष्ठितनिर्वाणबुद्धत्वं प्राप्यते । तस्माद्  
आर्यगगनगङ्गेऽपि<sup>३</sup> उक्तम्—“तत्प्रज्ञानेन हि सर्वक्लेशाः परिवर्ज्यन्ते ।  
उपायज्ञानेन हि सर्वसत्त्वा न परित्यज्यन्ते ।” इति । आर्यसंधि-  
निर्मोचनेऽपि<sup>४</sup>—“एकान्तसत्त्वार्थाविमुखस्य एकान्तसंस्काराभिसंस्कारविमुखस्य  
10 नानुत्तरा सम्यक्संबोधिरुक्ता मयेति ।” तस्माद् बुद्धत्वप्राप्तुकामेन प्रज्ञोपायौ उभौ  
सेवितव्यौ ।

तत्र लोकोत्तरप्रज्ञाभावनावसरे, अतिसमाहितावसरे वा दानाद्यु-  
पायसेवनासम्भावनायामपि तत्र प्रयोगतत्पृष्ठलब्धप्रज्ञयोः योऽपि भवति,  
तदा उपायसेवनं भवत्येव । तस्मात् प्रज्ञोपायौ युगपत् प्रवर्तते । पुनरपरं  
15 बोधिसत्त्वानाम् अयं हि प्रज्ञोपाययुगनद्धवाही मार्गः सर्वसत्त्वावलोकितमहा-  
करुणया परिगृहीतत्वात् लोकोत्तरमार्गः सेव्यते, उत्थानोपायकालेऽपि  
मायाकारवद् अविपर्यस्तमेव दानादि सेव्यते । आर्याक्षयमतिनिर्देशेऽपि<sup>५</sup>  
यथोक्तम्—“तत्र को हि बोधिसत्त्वोपायः ? कश्च प्रज्ञाभिनिर्हार इति ?  
यतः समाधाने सत्त्वावलोकितमहाकरुणावलम्बने चित्तोपस्थापना स एव  
20 उपायः । यतः शान्तिप्रशान्तिसमापत्तिः सा तु तत्प्रज्ञा” इति विस्तरः ।  
मारदमनपरिच्छेदेऽपि<sup>६</sup> उक्तम्—“पुनरपरं बोधिसत्त्वानां समुत्कर्षिक-  
प्रयोगस्तु प्रज्ञाज्ञानेन अभियोगं करोति । उपायज्ञानेन सर्वकुशलधर्मसंग्रहो

१. देगे-का० ( रत्नकूट-‘छ’ १३० ) । २. द्र० ‘काश्यपपरिवर्ते’ भोटप्रकाशे-पृ०  
१८३ तमे । ३. देगे-का० ( सूत्र-‘प’ २१३ ) । ४. देगे-का० ( सूत्र-‘च’ १६ ) । ५. द्र०-तु०  
भा० क्र० । ६. देगे-का० ( सूत्र-‘म’ ११२ ) । ७. देगे-का० “” ?



ऽपि प्रयुज्यते । प्रज्ञाज्ञानेन नैरात्म्य-असत्त्व-अजीव-अपोष-अपुद्गलेषु च प्रयुज्यते । उपायज्ञानेन यः सर्वसत्त्वपरिपाकोऽपि प्रयोज्यः" इति विस्तरः । आर्यधर्मसंगीतिसूत्रे<sup>१</sup>ऽपि—

मायाकारो यथा कश्चिन्निर्मितं मोक्षमुद्यतः ।

न चास्य निर्मिते सङ्गो ज्ञातपूर्वो यतोऽस्य सः ॥

5

त्रिभवं निर्मितप्रख्यं ज्ञात्वा सम्बोधिपारगः ।

संनह्यते जगद्धेतोर्ज्ञातपूर्वं जगत् तथा ॥ इति ।

बोधिसत्त्वानाम् प्रज्ञोपायविधिरेव साध्यमधिकृत्य तत्प्रयोगसंसारे स्थितोऽपि अस्ति, आशयनिर्वाणे स्थितोऽपि स्याद् इत्युक्तम् ।

तादृश्यां शून्यतामहाकरुणागर्भानुत्तरसम्यक्संबुद्धौ परिणतदाना-  
द्युपायभावनां कृत्वा, परमार्थबोधिचित्तोत्पादार्थं पूर्ववत् नित्यं काले  
काले शमथविषयनाप्रयोगो यथाशक्ति भावनीयः । आर्यगोचरपरि-  
शुद्धिसूत्रे<sup>३</sup>—सर्वावस्थासु सत्त्वार्थकारिबोधिसत्त्वानामनुशंसा यथा  
निर्दिष्टा तथा संनिहितस्मृत्या सर्वदा उपायकौशलं भावितव्यम् ।

10

तादृक्करुणोपायबोधिचित्तभावकः स इह जन्मनि अवश्यं विशिष्टो  
भवति । तस्मात् स्वप्ने नित्यं बुद्धबोधिसत्त्वदर्शनं भविष्यति । सुस्वप्ना-  
न्तराप्यपि दृश्यन्ते । देवा अपि अनुमोदनाद् रक्षां करिष्यन्ति ।  
प्रतिक्षणमपि विपुलपुण्यज्ञानसम्भारसंचयो भविष्यति । क्लेशावरण-  
दौष्टुल्यमपि क्षीणं भविष्यति । सर्वदैव सुखसौमनस्यमधिकं भविष्यति ।  
बहुजनप्रियो भविष्यति । शरीरेऽपि रोगग्रस्तो न भविष्यति । परमचित्त-  
कर्मण्यतापि प्राप्ता भविष्यति । तस्माद् अभिज्ञतादिविशिष्टगुणप्राप्तिः ।

15

20

१. देगे-का० ( सूत्र-श' ४३ ) । २. द्र०-प्र०, तु० भा० क्र० । ३. अत्र सूत्रस्य  
शब्दा न उदघृताः ।

अथ ऋद्धिबलेन अनन्तलोकधातून् गत्वा भगवतो बुद्धान् पूजयति ।  
 तेभ्यः धर्मोऽपि श्रूयते । मरणसमयेऽपि अवश्यमेव बुद्धबोधिसत्त्वदर्शनं  
 भविष्यति । जन्मान्तरेऽपि बुद्धबोधिसत्त्वानपगतदेशविशिष्टगृहे चापि जन्म  
 भविष्यति । तस्माद् अनायासपुण्यज्ञानसम्भारः परिपूरयिष्यते । महाभोगो  
 5 बहुपरिवारश्च भविष्यति । तीक्ष्णप्रज्ञया बहुजनपरिपाकमपि करिष्यन्ति ।  
 सर्वजातिषु जातिस्मरणं भविष्यति । तादृशी अपरिमितानुशंसा सूत्रान्त-  
 रेषु संभूता अवगन्तव्या ।

तेन तादृक्कण्ठोपायबोधिचित्तानि च नित्यम् आदरेण चिरं-  
 भवितानि क्रमशः चित्तसंताने अतिपरिशुद्धक्षणोत्पादेन परिपाकभूतत्वाद्  
 10 अरणिमन्थनाग्निवत् सम्यगर्थभावनाप्रकर्षपर्यन्तं गमनं भूत्वा लोकोत्तरज्ञान-  
 सकलविकल्पजालापगमनं निष्प्रपञ्चधर्मधातुप्रस्फुटावगतिः, निर्मलनिश्चल-  
 निर्वातस्थितप्रदीपवत् निश्चलप्रमाणभूतः, सर्वधर्मनैरात्म्यस्वभावः  
 तत्त्वसाक्षात्कारी, दर्शनमार्गसंगृहीतः परमार्थबोधिचित्तस्वभाव उत्पद्यते ।  
 तदुत्पादाद् वस्तुपर्यन्ततालम्बने प्रविष्टः । तथागतगोत्रे उत्पद्यते, बोधि-  
 15 सत्त्वानपक्षालप्रवृत्तिः, लोकसर्वगतिनिवृत्तिः, बोधिसत्त्वधर्मताधर्मधात्वव-  
 बोधस्थितिः, प्राप्तबोधिसत्त्वप्रथमभूमिः इत्यनुशंसा तद्विस्तरः दशभूम्या-  
 दिषु अवगन्तव्यः । इदं तथतालम्बनध्यानम् आर्यलङ्कावतारे निर्दिष्टम् ।  
 इदं तु बोधिसत्त्वानाम् निष्प्रपञ्चनिर्विकल्पतायामेव प्रविशति ।

अधिमुक्तिभूमौ तु अधिमुक्तिवशात् प्रवृत्तिव्यवस्थापिता न तु  
 20 अभिसंस्कारेण । तज्ज्ञानप्रादुर्भावे तु साक्षात् प्रवेशः । तथा प्रथमभूमिप्रवेशः  
 तदनन्तरं भावनामार्गे लोकोत्तरेण तत्पृष्ठलब्धज्ञानेन द्वाभ्यां च प्रज्ञोपाय-  
 भावनाक्रमेण भावनाप्रहेयसंचितावरणस्य सूक्ष्मसूक्ष्मतरव्यवदानाद्  
 उत्तरोत्तरविशिष्टगुणप्राप्तये अधोभूमिपरिशोधनेन तथागतज्ञानपर्यन्तं  
 प्रविश्य, सर्वज्ञतासागरम् अवतीर्य, कार्यपरिनिष्पत्त्यालम्बनमपि प्राप्नोति ।  
 25 एवं क्रमेण एव चित्तसंतानपरिशुद्धिः आर्यलङ्कावतारेऽपि उक्ता । आर्य-



संधिनिर्मोचनेऽपि<sup>१</sup> यथोक्तम्—“क्रमेणोत्तरोत्तरभूमिषु सुवर्णवत् चित्तं व्यव-  
दाय, अनुत्तरसम्यक्संबोधिपर्यन्तम् अभिसंबुध्यति” इति ।

सर्वज्ञतासागरप्रवेशे सति चिन्तामणिवत् सकलसत्त्वोपजीविगुण-  
स्कन्धयुक्तः, पूर्वप्रणिधानफलसत्कृतः, महाकरुणास्वभावभूतः, अनाभोग-  
नानोपाययुक्तः, अपरिमितनिर्माणैरशेषजगत्सर्वार्थाकरः कृतः । अशेष- 5  
गुणसम्पत्तिप्रकर्षपर्यन्तभूतः, सवासनादोषं सकलमलं निराकृत्य, सत्त्व-  
धात्वन्तपर्यन्तविहारी, इति प्रेक्षावान् भगवति बुद्धे सकलगुणाकरे  
श्रद्धाम् उत्पाद्य तद्गुणपरिनिष्पत्त्यर्थं स्वयं सर्वान् प्रयत्नान् कुर्यात् । तस्माद्  
भगवता<sup>२</sup> एवमुक्तम्—“तदेतत् सर्वज्ञज्ञानं करुणामूलं बोधिचित्तहेतुकम् उपाय-  
पर्यवसानम्” इति । 10

दूरीकृतेर्ष्यादिमला हि सन्तो गुणैरतृप्ताः सलिलैरिवाब्धिः ।  
विवेच्य गृह्णन्ति सुभाषितानि हंसाः पयो यत्पयांसि प्रहृष्टाः ॥

पक्षपाताकुलं तस्माद् दूरीकृतं मनो बुधैः ।  
सर्वमेद ग्रहीतव्यं बालादपि सुभाषितम् ॥  
प्रकाश्य यत् प्रापि मया शुभम् असमपद्धितम् । 15  
पुण्यमस्तु जनस्तेन प्राप्तो मध्यमपद्धितम् ॥

आचार्यकमलशीलेन मध्ये निबद्धो भावनाक्रमः समाप्तः ।

भारतीयोपाध्यायेन प्रज्ञावर्मणा महालोकचक्षुषा वन्द्यज्ञानसेनेन  
चानूद्य सुनिर्णीतः ।

भावनाक्रमः द्वितीयः समाप्तः ।



१. देगे-का० (सूत्र-‘व’ ३६) । २. देगे-का० (तन्त्र-‘थ’ वैरोचनाभिसम्बोधि-  
१२३) । ३. द्र०-प्र० भा० क्र० । ४. द्र०-तृ० भा० क्र० ।

and the same day the same day the same day

and the same day the same day the same day  
and the same day the same day the same day  
and the same day the same day the same day  
and the same day the same day the same day  
and the same day the same day the same day  
and the same day the same day the same day  
and the same day the same day the same day  
and the same day the same day the same day

and the same day the same day the same day

and the same day the same day the same day  
and the same day the same day the same day  
and the same day the same day the same day  
and the same day the same day the same day

and the same day the same day the same day

and the same day the same day the same day

and the same day the same day the same day

and the same day the same day the same day

and the same day the same day the same day  
and the same day the same day the same day



## भानवाक्रमस्तृतीयः

—: ❁ :—

महायानसूत्रान्तनयप्रवृत्तानां संक्षेपतो भावनाक्रमः कथ्यते । तत्र यद्यपि बोधिसत्त्वानामपरिमितोऽप्रमाणादिभेदेन<sup>१</sup> भगवता समाधिरूप-दिष्टः, तथापि शमथविपश्यनाभ्यां सर्वे समाधयो व्याप्ता इति । स एव शमथविपश्यनायुगनद्धवाही मार्गस्तावत् कथ्यते । उक्तं च भगवता<sup>२</sup>—

निमित्तबन्धनाज् जन्तुरथो दोष्टुलबन्धनात् ।

5

विपश्यनां भावयित्वा शमथं च विमुच्यते ॥ इति ।

तस्मात् सकलावरण-प्रहाणार्थिना शमथविपश्यने सेवनीये<sup>३</sup> । शमथबलेन स्वा<sup>४</sup>लम्बने चित्तम् अप्रकम्प्यं भवति निवातस्थितप्रदीपवत् । विपश्यनया यथावद् धर्मतत्त्वावगमात् सम्यग्ज्ञाना<sup>५</sup>लोकः समुत्पद्यते, ततः सकलम् आवरणं प्रहीयते, अन्धकारवद् आलोकोदयात् ।

10

अत एव भगवता चत्वार्यालम्बनवस्तूनि योगिनां निर्दिष्टानि । निर्विकल्पप्रतिबिम्बकम्, सविकल्पप्रतिबिम्बकम्, वस्तुपर्यन्तता, कार्य-परिनिष्पत्तिश्च । तत्र शमथेन यत् सर्वधर्मप्रतिबिम्बकं बुद्धादिरूपं चाधि-मुच्यालम्ब्यते तेन निर्विकल्पप्रतिबिम्बकम् उच्यते । तत्र भूतार्थनिरूपणा-विकल्पाभावान् निर्विकल्पकम् उच्यते । यथाश्रुतोद्गृहीतानाञ्च धर्माणां 15 प्रतिबिम्बकम् अधिमुच्यालम्ब्यत इति कृत्वा प्रतिबिम्बकम् उच्यते । तद् एव प्रतिबिम्बकं यदा विपश्यनया विचारयति योगी तत्त्वाधिगमार्थं तदा सविकल्पप्रतिबिम्बकम् उच्यते, तत्त्वनिरूपणविकल्पस्य<sup>६</sup> विपश्यना-लक्षणस्य तत्र समुद्भवात् । तस्यैव च प्रतिबिम्बस्य स्वभावं निरूपयन्

१. आविभेदेन-भो० न । २. देगे-का० (संघिनिर्माचनसूत्र-‘च’ ३) । ३. भो० पा०-भावयेत् । ४. रव० भो० न । ५. भो० पा०-प्रज्ञा । ६. दूची-पा०-अविकल्पाय ।

योगी दर्पणान्तर्गतस्वमुख-प्रतिबिम्बप्रत्यवेक्षणेन स्वमुखगतवैरूप्याणां विनिश्चयवत्, सर्वधर्माणां यथावत् स्वभावावगमात् । यदा वस्तु पर्यन्ततालक्षणां तथतां प्रतिविध्यति, तदा वस्तुपर्यन्ततावगमात् प्रथमायां भूमौ वस्तुपर्यन्ततालम्बनम् उच्यते । ततो भावनामार्गेण परिशिष्टासु  
 5 भूमिष्वोषधिरसायनोपयोगाद् इव क्रमेण विशुद्धतरतमक्षणोदयाद् आश्रय-परावृत्तौ सत्याम्, आवरण-प्रहाणलक्षण-कार्यपरिसमाप्तिर्यदा भवति तदा बुद्धभूमौ तद् एव ज्ञानं कार्यपरिनिष्पत्त्यालम्बनम् उच्यते ।

तद् एवम् अनेन किं दर्शितं भवति ? शमथविपश्यनाभ्यां समस्त<sup>१</sup>-वस्तुपर्यन्तताधिगमो भवति । तेन चावरणप्रहाणलक्षणा कार्यपरिनिष्पत्ति-  
 10 रवाप्यते । तद् एव च बुद्धत्वम् । अतो बुद्धत्वाधिगमार्थिना शमथविपश्यने सेवनीये । यस्तु ते न सेवते तस्य नैव वस्तुपर्यन्तताधिगमो नापि कार्यपरि-निष्पत्तिरिति । तत्र शमथश्चित्ताग्रता । विपश्यना भूतप्रत्यवेक्षेति संक्षेपाद् आर्यरत्नमेघादौ भगवता शमथविपश्यनयोर्लक्षणम् उक्तम् । तत्र योगिना शीलविशुद्ध्यादौ शमथविपश्यनासंभारे स्थितेन सर्व<sup>२</sup>सत्त्वेषु  
 15 महाकरुणाम् उत्पाद्य, समुत्पादित-बोधिचित्तेन श्रुतचिन्ताभावनायां प्रयोक्तव्यम् ।

तत्र प्रथमं तावद् योगी भावना-काले<sup>३</sup> सर्वम् इतिकरणीयं परिसमाप्य कृतमूत्रपुरीषः कण्टक-स्वरादिरहिते मनोऽनुकूले प्रदेशे स्थित्वा<sup>४</sup> मया सर्वसत्त्वा बोधिमण्डे निष्पादयितव्या इति विनिश्चयन्, सकलजगदभ्युद्धर-  
 20 णाशयो महाकरुणाम् आमुखीकृत्य, दशदिगवस्थितान् सर्वबुद्धबोधिसत्त्वान् पञ्चाङ्गेन प्रणिपत्याग्रतो बुद्धबोधिसत्त्वान् पीठादौ स्थापयित्वा अन्यत्र वा यथावत् तेभ्यश्च यथारुचि पूजास्तवनं कृत्वा स्वपापं प्रदेश्य, सकलस्य जगतः पुण्यम् अनुमोद्य, मृदुतरमुखासने वैरोचनभट्टारकबद्धपर्यङ्केण

१. समस्त-भो० न । २. सर्व-भो० न । ३. दुर्ची-पा०-बलेन । ४. स्थित्वा-भो० न ।



अर्धपर्यङ्गेण वा निषद्य नात्युन्मीलिते नातिनिमीलिते नासिकाग्रविन्यस्ते  
चक्षुषी कृत्वा, नातिनम्रं नातिस्तब्धम् ऋजुकायं प्रणिधायान्तर्मुखावर्जित-  
स्मृतिरुपविशेत् । ततः स्कन्धौ समौ स्थापयेत् । शिरो नोन्नतं नावनतम्  
एकपाश्वे निश्चलं स्थापयितव्यम् । किं तर्हि<sup>१</sup> नाभिप्रगुणा नासिका  
स्थापयितव्या । दन्तोष्ठं मृदु स्थापनीयम् । जिह्वा चोपरि दन्तमूले 5  
स्थापनीया । आश्वासप्रश्वासास्तु न सशब्दा नापि स्थूला नापि त्वरिताः  
करणीयाः । किं त्वसंलक्ष्यमाणा मन्दं मन्दमनाभोगेन यथा प्रविशेयु-  
निर्गच्छेयुर्वा तथा करणीयम् ।

तत्र प्रथमं तावद् योगी यथादृष्टश्रुते तथागतविग्रहे चित्तं स्थापयि-  
त्वा शमथं निष्पादयेत् । तञ्च तथागतविग्रहम् उत्तप्तकनकावदातं 10  
लक्षणानुव्यञ्जनालंकृतं पर्षन्मण्डलमध्यगतं नानाविधैरुपायैः सत्त्वाथं  
कुर्वन्तं प्राबन्धिकेन मनसिकारेण तद्गुणाभिलाषं समुपादाय लयौद्धत्यादीन्<sup>२</sup>  
व्युपशमय्य तावद् ध्यायेद् यावत् स्फुटतरं पुरोऽवस्थितमिव तं पश्येत् ।  
ततः तस्य तथागतविग्रहप्रतिबिम्बकस्यागतिगतिं निरूपयतो विपश्यनां  
भावयति<sup>३</sup> । ततश्चैवंविधं विचिन्तयेत् । यथेदं तथागतविग्रहप्रतिबिम्बकं 15  
न कुतश्चिद् आगतं नापि क्वचिद् गमिष्यति तिष्ठदपि स्वभावशून्यम्  
आत्मात्मीयरहितं तथा एव सर्वधर्माः स्वभावशून्या आगतिगतिरहिताः  
प्रतिबिम्बोपमाः, भावादिरूपरहिता इति विचार्योपरतविचारेण निर्जल्पैक-  
रसे मनसा तत्त्वं भावयन् यावदिच्छं तिष्ठेत् । अयं च समाधिः  
प्रत्युत्पन्नबुद्धसंमुखावस्थितसमाधिर्निर्दिष्टः । अस्य चानुशंसा<sup>४</sup> विस्तर- 20  
तस्तत्रैव सूत्रे बोधयितव्या ।

एतावता प्रकारेण सर्वधर्मसंग्रहो भवति, तत्र चित्तम् उप-  
निबध्य लयौद्धत्यादिप्रशमेन शमथं निष्पादयेत् । रूप्यरूपिभेदेन च

१. किं तर्हि-भो० न । २. आदीन्-भो० न । ३. दूची-पा०-भवेत् । ४. भो०  
पा०-समाधेरनुशंसा ।

संक्षेपात् सर्वधर्मसंग्रहः । तत्र रूपस्कन्धसंगृहीता रूपिणः । वेदनादिस्कन्ध-  
स्वभावा अरूपिणः । तत्र बाला भावादिग्रहाभिनिवेशाद् विपर्यस्तधियः  
संसारे परिभ्रमन्ति । तेषां विपर्यासापनयनाय, तेषु च महाकरुणाम्  
आमुखीकृत्य, निष्पन्नशमथो योगी तत्त्वाधिगमाय ततो विपश्यनां  
5 भावयेत् । भूतप्रत्यवेक्षणा च विपश्यनोच्यते । भूतं पुनः पुद्गल-  
धर्मनैरात्म्यम् ।

तत्र पुद्गलनैरात्म्यं या स्कन्धानामात्मात्मीयरहितता । धर्मनैरात्म्यं  
या तेषामेव मायोपमता । तत्रैवं योगी निरूपयेत् । न तावद् रूपादि-  
व्यतिरिक्तः पुद्गलोऽस्ति । तस्या प्रतिभासनात् । रूपादिष्वेवाहमिति  
10 प्रत्ययोत्पत्तिश्च । न चापि रूपादिस्कन्धस्वभावः पुद्गलः । तेषां रूपादीनाम-  
नित्यानेकस्वभावत्वात् । पुद्गलस्य च नित्यैकरूपेण परैरूपकल्पितत्वात् ।  
नापि तत्त्वान्यत्वाभ्याम् अनभिलाप्यपुद्गलस्य वस्तुत्वं युक्तम् । वस्तुसतः  
प्रकारान्तराभावात् । तस्माद् अलीकविभ्रम एवायं लोकस्य यदुताहं  
ममेति निश्चयं प्रतिपन्नस्य । ततो रूपिणोऽपि धर्मान् धर्मनैरात्म्याधिगमाय  
15 विचारयेत्—किम् एते चित्तव्यतिरेकेण परमार्थसन्तः स्थिताः आहो-  
स्विच्चित्तमेव रूपादिनिर्भासं स्वप्नावस्थायां प्रतिभासवत् प्रतिभासत<sup>३</sup>  
इति । स तान् परमाणुशो निरूपयन्, परमाणूँश्च भागशः प्रत्यवेक्षमाणो  
नोपलभते । तथा चानुपलभमानस्तेषु अस्तिनास्तित्वाविकल्पान्  
निवर्तयति ।

20 चित्तमात्रञ्च त्रैधातुकम् अवतरति नान्यथा । अथ चोक्तं लङ्कावतारे<sup>४</sup>—

अणुशो विभजति द्रव्यं न चैव रूपं विकल्पयेत् ।

चित्तमात्रव्यवस्थानं कुदृष्ट्या न प्रसीदति ॥ इति ।

१. दूवी-पा०—तस्य प्रतिभासनात् ।

२. भो० पा०—तस्मात् तद्यथा ।

३. प्रतिभासत-भो० न । ४. देगे-का० ( सूत्र 'च' १७५ ) सं० ॥१०॥४३६॥ पृ० १३६,  
दरभंगा ।



तस्यैवं भवति चित्तमेवानादिकालिकवितथरूपाद्यभिनिवेशवशात् स्वप्नोपलभ्यमानरूपादिप्रतिभासवद् बालानां बहिः विच्छिन्नमिव रूपादिप्रतिभासं ख्याति । तस्माच्चित्तमात्रमेव त्रैधातुकम् । स एवं चित्तमेव सकलधर्मप्रज्ञप्तिं निश्चित्य तत्र प्रत्यवेक्ष्य च सर्वधर्माणां स्वभावः प्रत्यवेक्षितो भवतीति चित्तस्वभावमपि प्रत्यवेक्षते । स एवं विचारयति, 5 चित्तमपि परमार्थतो मायावद् अनुत्पन्नम् । यदा हि अलीकस्वभावरूपाद्या-कारोपग्रहेण चित्तमेव चित्राकारं प्रतिभासते, तदाऽस्यापि रूपादिवत् तदव्यतिरेकात् सत्यत्वं<sup>१</sup> कुत्र भवेत् ? यथा चित्राकारतया रूपादयो नैकानेक-स्वभावास्तथा चित्तमपि तदव्यतिरेकेण नैकानेकस्वभावम् । नापि चित्त-मुत्पाद्यमानं कुतश्चिद् आगच्छति । नापि निरुध्ययानं क्वचिद् गच्छति । 10 नापि स्वपरोभयतः परमार्थेनास्योत्पादो युक्तः । तस्मान् मायोपममेव चित्तम् । यथा चित्तमेवं सर्वधर्मा मायावत् परमार्थतोऽनुत्पन्नाः ।

येनापि चित्तेन प्रत्यवेक्षते योगी तस्यापि स्वभावं परीक्षमाणो नोप-लभते । तद् एवं यत्र यत्रालम्बने योगिनश्चित्तं प्रसरेत् तस्य तस्य स्वभावं परीक्षमाणो [ तत् स्वभावमपि नोपलभते ]<sup>२</sup>ऽसौ यदा नोपलभते तदा 15 सर्वमेव वस्तु विचार्य कदलीस्कन्धवद् असारमवगम्य, ततश्चित्तं विवर्त-यति । ततो भावादिविकल्पोपरतौ सर्वप्रपञ्चविगतम् आनिमित्तं योगं प्रतिलभते । तथा चोक्तम् आर्यरत्नमेघे<sup>३</sup>—“स एवम् अपक्षालकुशलः सर्व-प्रपञ्चविगमाय शून्यताभावनाया योगमापद्यते । स शून्यताभावनाबहुलो येषु येषु स्थानेषु चित्तं प्रसरति चित्तमभिरमते तानि तानि स्थानानि 20 स्वभावतः परिगवेषमाणः शून्यं प्रतिविध्यति [ यत् चित्तं तदपि परीक्ष-माणं शून्यं प्रतिविध्यति ]<sup>४</sup> येनापि चित्तेन परीक्षते तद् अपि स्वभावतः

१. भो० पा०—सुखमेव । २. भो० पा०—[ तत् स्वभावमपि नोपलभते ] । ३. देगे-का० (सूत्र—‘वा’ ६२) । ४. भो० पा०—[ यत् चित्तं तदपि परीक्षमाणः शून्यं प्रतिविध्यति ] ।

परिगवेष्ट्यमाणं शून्यं प्रतिविध्यति । स एवम् उपपरीक्षमाणो निर्निमित्ततायां योगमापद्यते ।" तद् एव अनेनैवं दर्शितं भवति । यस्तु नोपपरीक्षते तस्य नास्ति निर्निमित्ततायां प्रवेश इति ।

- स एवं धर्माणां स्वभावमुपपरीक्षमाणो यदा नोपलभते, तदास्तीति  
 5 न विकल्पयति नास्तीति न विकल्पयति । योऽसौ नास्तीति कल्प्यते तस्य बुद्धौ सर्वदैवाप्रतिभासनात् । यदि हि भावः कदाचिद् दृष्टो भवेत्, तदा तस्य प्रतिषेधान् नास्तीति कल्पयेत् । यदा कालत्रयेऽपि योगिना प्रज्ञया निरूपयता भावो नोपलब्धः तदा कस्य प्रतिषेधान् नास्तीति कल्पयेत् ।  
 10 एवमन्ये विकल्पास्तस्य तदानीं न सन्ति एव, भावाभावविकल्पाभ्यां सर्वस्य विकल्पस्य व्याप्तत्वात् । एवं व्यापकाभावाद् व्याप्यस्याप्यभावः । एवं सति निष्प्रपञ्चनिर्विकल्पतामवतीर्णो भवति, रूपादिषु चानिश्चितो भवति । प्रज्ञया च निरूपयतः सकलवस्तुस्वभावानुपलम्भात् प्रज्ञोत्तरध्यायी भवति ।  
 स एवं पुद्गलधर्मनैरात्म्यमयं तत्त्वमवतीर्णः, अपरस्य<sup>१</sup> परीक्षणीयस्य चाभावाद्, उपरतविचारेण निर्विकल्पैकरसेन<sup>२</sup> मनसा स्वरसवाहिना,  
 15 अनभिसंस्कारतः तद् एव तत्त्वं स्फुटतरम् अवधारयन् योगी तिष्ठेत् । तत्र च स्थितश्चित्तबन्धं न विक्षिपेत् ।

- यदान्तरा चित्तं बहिर्धा विक्षिप्तं पश्येत् तदा तत्स्वभावप्रत्यवेक्षणेन विक्षेपं प्रशमय्य, पुनस्तत्रैव चित्तमुपर्युपरि प्रेरयेत् । यदा तु तत्रानभिरतं चित्तं पश्येत्, तदा समाधेर्गुणदर्शनाद् अभिरतिं तत्र भावयेत् । विक्षेपे च  
 20 दोषदर्शनाद् अरतिं प्रशमयेत् । अथ स्त्यानमिद्धाभिभवाद् यदा<sup>३</sup> प्रचारतया लीनं चित्तं पश्येत्, लयाभिशिङ्कितं वा तदा प्रमोद्यवस्तु बुद्धरूपादिकमालोकसंज्ञां वा मनसिकृत्य लयमुपशमयेत्, ततस्तद् एव तत्त्वं दृढतरं

१. भो० पा०-द्वष्टव्यपरीक्षणीयस्य । २. भो० पा०-अनभिलार्पकरसेन । ३. भो० पा०-अस्पष्टप्रचारतया ।



गृहीयात् । यदा तु जात्यन्धवद् अन्धकारप्रविष्टपुरुषवद् विनिमीलिताक्षवत् स्फुटतरं तत्त्वं नावधारयेद् योगी, तदा तस्य लीनं चित्तं<sup>१</sup> वेदितव्यं विपश्यनारहितं च । अथ यथा पूर्वानुभूतविषयस्पृहया चित्तमन्तरा समुद्धतं पश्येद् औद्धत्याभिशङ्कितं वा, तदानित्यतादि संवेगवस्तुमनसिकाराद् औद्धत्यं शमयेत् । ततः पुनः तत्रैव तत्त्वे चित्तानभिसंस्कारवाहितायां यत्नं<sup>२</sup> कुर्वीत । यदा च विक्षिप्तपुरुषवद् वानरवद् वाऽनवस्थितवृत्ति चित्तं भवेत्, तद् औद्धत्यं बोद्धव्यं शमथरहितं च । अथ यदा लयौद्धत्याभ्यां विविक्ततया समप्रवृत्तं स्वरसवाहि स्फुटतरं तत्रैव<sup>३</sup> तत्त्वे चित्तम् उत्पाद्यते तदाभोग-शिथिलीकरणाद् उपेक्षणीयम् । तदा च शमथविपश्यनायुगनद्ववाही मार्गो निष्पन्नो वेदितव्यः ।

10

यदा च विपश्यना भावयेत् प्रज्ञातिरिक्ततरा भावयेत्, तदा शम-थस्याल्पत्वात् प्रवातस्थितप्रदीपवत् प्रचलत्वाच्चित्तस्य न स्फुटतरं तत्त्वदर्शनं भवेत् । अतस्तदा शमथो भावयितव्यः । शमथस्याभ्याधिक्ये मिद्धावष्टब्धपुरुषस्येव स्फुटतरं तत्त्वदर्शनं न स्यात् । तस्मात् तदा प्रज्ञा<sup>३</sup> भावयितव्या । यदा समप्रवृत्ते द्वे अपि भवतो युगनद्ववाहिवलीवर्द्वयवत्<sup>४</sup> तदानभिसंस्कारेणैव तावत् स्थातव्यं यावत् कायचित्तपीडा न भवेत् ।

15

संक्षेपतः सर्वस्यैव समाधेः षड् दोषा भवन्ति । कौसीद्यम्, आलम्बनसंप्रमोषः, लयः, औद्धत्यम्, अनाभोगः, आभोगश्चेति । एषां प्रतिपक्षेणाष्टौ प्रहाणसंस्कारा भावनीयाः । श्रद्धा<sup>५</sup>, छन्दः, व्यायामः, प्रसन्नबन्धः, स्मृतिः, संप्रजन्यम्, चेतना, उपेक्षा चेति । तत्राद्याश्चत्वारः<sup>६</sup> कौसीद्यप्रतिपक्षाः । तथाहि—समाधिगुणेष्वभिसंप्रत्ययलक्षणया श्रद्धया योगिनोऽभिलाषः समुत्पद्यते । ततोऽभिलाषवान् वीर्यमारभते । ततो वीर्या-रम्भणात् कायचित्तयोः कर्मण्यतां भावयति । ततः प्रसन्नबन्धकायचेतसः

20

१. चित्तं—भो० न । २. तत्रैव—भो० न । ३. भो० पा०—पुनः प्रज्ञा ।  
४. भो० पा०—तद्यथा श्रद्धा ।



कौसीद्यं व्यावर्तते । ततः [ श्रद्धादयः कौसीद्यप्रहाणाय भवन्ति ]<sup>१</sup> तदर्थं ते भावनीयाः । स्मृतिरालम्बन-संप्रमोषस्य प्रतिपक्षः । संप्रजन्यं लयौ-  
द्धत्ययोः प्रतिपक्षः । तयोस्तेन समुपेक्ष्य परिवर्जनात् । लयौद्धत्याप्रशमन-  
काले<sup>२</sup> तु अनाभोगदोषः ततस्तत्प्रतिपक्षेण चेतना भावनीया । लयौद्धत्य-  
५ प्रशमे सति, यदा प्रशमवाहि चित्तं भवेत्, तदाभोगदोषः । तस्य प्रति-  
पक्षस्तदानीम् उपेक्षा भावनीया । यदि समप्रवृत्ते चित्ते आभोगः क्रियते,  
तदा चित्तं विक्षिप्यते । लीनेऽपि चित्ते सति यद्याभोगो न क्रियते, तदा  
विपश्यनारहितत्वाद् अन्धपुरुषवच्चित्तं लीनं स्यात् । तस्मात् लीनचित्तं  
निगृह्णीयाद्, उद्धृतं प्रशमयेत्, पुनः<sup>३</sup> समप्राप्तम् उपेक्षेत ।

- 10 ततो यावदिच्छं योगी तावद् अनभिसंस्कारेणैव तत्त्वं भावयंस्तिष्ठेत् ।  
सत्यां तु काया<sup>४</sup>दिपीडायां पुनः पुनरन्तरा सकलमेव लोकं व्यवलोक्य  
मायाजल<sup>५</sup> चन्द्रोपमप्रतिभासं [वत्]<sup>६</sup> अवतरेत् । तथा चोक्तम् अविकल्प-  
प्रवेशे<sup>७</sup>-लोकोत्तरेण ज्ञानेनाकाशसमतलान् सर्वधर्मान्पश्यति । पृष्ठलब्धेन  
पुनर्मयामरोचिस्वप्नो<sup>८</sup>दकचन्द्रोपमान् पश्यतीति । तद् एवं मायोपमं जगद्  
15 अवगम्य, सत्त्वेषु महाकरुणाम् आमुखीकृत्यैवम् अनुविचिन्तयेत् । एवंविधं  
धर्मगाम्भीर्यम् अनवगच्छन्तोऽमी बालबुद्धय आदिशान्तेष्वेव धर्मेषु  
भावादिसमारोपविपर्यस्ता विविधकर्मक्लेशान् उपचिन्वन्ति । ततः संसारे  
परिभ्रमन्ति, ततोऽहं करिष्यामि यथैतान् एवंविधं धर्मागाम्भीर्यम् अवबोध-  
येयम् इति, ततो विश्रम्य पुनरपि तथैव सर्वधर्मनिराभासं समाधिमवतरेत् ।  
20 चित्तखेदे सति, तथैव विश्रम्य पुनरवतरेत् । एवम् अनेन क्रमेण घटिकाम्  
[ अर्धप्रहरम् ]<sup>९</sup> एकप्रहरं वा यावन्तं कालं शक्नोति तावन्तं  
कालं तिष्ठेत् ।

१. दूची-पा०-श्रद्धादयः प्रभवन्तीति । २. दूची-पा०-प्रशमनकाले । ३. पुनः-  
भो० न । ४. भो० पा०-कायचित्तिपीडा । ५. भो० पा०-मायास्वप्ने । ६. भो० पा०-  
[ प्रतिभासंवत् ] । ७. देगे-का० ( सूत्र-‘प’ ३ ) । ८. स्वप्न-भो० न । ९. भो० पा०-  
[ अर्धप्रहरम् ] ।



तत इच्छया समाधेः उत्थातुं पर्यङ्कम् अभित्वैवम् अनुविचिन्तयेत् । यदि नामामी धर्माः सर्व एव परमार्थतोऽनुत्पन्नास्तथापि मायावत् प्रति-  
नियतविविधहेतुप्रत्ययसामग्रीवशेन विचित्रा एवाविचाररमणीयाः प्रवर्तन्ते,  
तेन नोच्छेददृष्टिप्रसङ्गः । नाप्यपवादान्तस्य<sup>१</sup>, यतश्च प्रज्ञया विचार्यमाणा  
नोपलभ्यन्ते, तेन न शाश्वतदृष्टि<sup>२</sup>प्रसङ्गो नापि समारोपान्तस्य । तत्र ये 5  
प्रज्ञाचक्षुर्विकलतया विपर्यस्तमतय आत्माभिनिविष्टा विविधानि कर्माणि  
कुर्वन्ति ते संसारे परिभ्रमन्ति । ये पुनरेकान्तेन संसारविमुखा  
महाकारुण्यविकलतया च न [ सत्त्वा<sup>३</sup> ]<sup>३</sup> दानादिपारमिताः परिपूरयन्ति  
आत्मानं दमयन्ति<sup>४</sup> ते सत्त्वा उपायविकलतया श्रावकप्रत्येकबुद्धबोधौ  
पतन्ति । 10

ये तु अस्वभावं जगद् अवगम्य<sup>५</sup> महाकारुण्यबलेन सकलजगदभ्यु-  
द्धरणकृतनिश्चया मायाकारवद् अविपर्यस्तधियो विपुलपुण्यज्ञानसंभारं  
समुपायन्ति ते तथागतं पदं प्राप्यासंसारमशेषस्य जगतः सर्वाकारं हित-  
सुखानि संपादयन्तः तिष्ठन्ति । ते च ज्ञान [सम्भार]<sup>६</sup> बलेन [समस्त]<sup>७</sup>  
क्लेशप्रहाणान् न संसारे पतन्ति सर्वसत्त्वापेक्षया च समुपार्जितविपुला- 15  
प्रमेयपुण्यसंभारवशेन न निर्वाणे पतन्ति, सर्वसत्त्वोपजीव्याश्च भवन्ति ।  
तस्मान् मया<sup>८</sup> सकलसत्त्वहितसुखाधानार्थिनाऽप्रतिष्ठितनिर्वाणम् अधिगन्तु-  
कामेन विपुलपुण्यज्ञान-संभारोपार्जनेऽभियोगः [सदा]<sup>९</sup> करणीयः । तथा  
चोक्तम् आर्यतथागतगुह्यसूत्रे<sup>१०</sup>—“ज्ञानसम्भारः सर्वक्लेशप्रहाणाय संवर्तते ।  
पुण्यसम्भारः सर्वसत्त्वोपजीवितायै संवर्तते । तस्मात् तर्हि भगवन् बोधि- 20  
सत्त्वेन महासत्त्वेन पुण्यसम्भारे ज्ञानसंभारे च सर्वदा<sup>११</sup>ऽभियोगः करणीयः”  
इति । आर्यतथागतोत्पत्तिसंभवसूत्रे<sup>१२</sup> चोक्तम्—“स खलु पुनरेष तथागतानां

१. भो० पा०—समारोपान्त । २. दृष्टि—भो० न । ३. भो० पा०—[ सत्त्वार्थ ] ।  
४. भो० पा०—दमयन्त्येव । ५. भो० पा०—अवगम्यापि । ६. भो० पा०—[ ज्ञानसम्भार ] ।  
७. भो० पा०—[ समस्तक्लेश ] । ८. मया—भो० न । ९. भो० पा०—[ सदा करणीयः ] ।  
१०. देगे—का० .....? ११. सर्वदा—भो० न । १२. देगे—का० ( अवतंसक—‘ग’ द० ) ।



संभवो नैकेन कारणेन भवति । तत् कस्य हेतोः ? समुदागतैस्तावद् भो  
जिनपुत्राप्रमेयशतसहस्रदशकारणैस्तथागताः समुदागच्छन्ति । कतमैर्दश-  
भिर्यदुताप्रमेयपुण्यज्ञानसम्भारातृप्तिसमुदागमकारणेनेति" विस्तरः । आर्य-  
विमलकीर्तिनिर्देशे चोक्तम्—“शतपुण्यनिर्जाताः सर्वकुशलधर्मनिर्जाता  
5 अप्रमाणकुशलमूलकर्मनिर्जाताः कायास्तथागतस्येति" विस्तरः ।

तद् एवं कृत्वा शनैः पर्यङ्कं भित्त्वा दशदिग्व्यवस्थितान् सर्वबुद्ध-  
बोधिसत्त्वान् प्रणिपत्य तेभ्यश्च पूजास्तोत्रोपहारं कृत्वार्यभद्रचर्यादि  
प्रणिधानं प्रणिदधीत । ततः शून्यताकरुणागर्भानुत्तरसंबोधिपरिणामित-  
सकल<sup>१</sup>दानादिपुण्यसंभारोपार्जनाभियुक्तो भवेत् ।

- 10 यस्तु मन्यते, चित्तविकल्पसमुत्थापितशुभाशुभकर्मवशेन सत्त्वाः  
स्वर्गादिकर्म<sup>२</sup>फलमनुभवन्तः संसारे संसरन्ति । ये पुनर्न किञ्चिच्चिन्तयन्ति  
नापि किञ्चित् कर्म<sup>३</sup>कुर्वन्ति ते परिमुच्यन्ते संसारात् । तस्मान्न किञ्चि-  
च्चिन्तयितव्यम् । नापि दानादिकुशलचर्या कर्तव्या । केवलं मूर्खजन-  
मधिकृत्य दानादिकुशलचर्या निर्दिष्टेति । तेन सकलमहायानं प्रतिक्षिप्तं  
15 भवेत् । महायानमूलत्वाच्च सर्वयानानां तत्प्रतिक्षेपेण सर्वम् एव यानं  
प्रतिक्षिप्तं स्यात् । तथा हि 'न किञ्चिच्चिन्तयितव्यमिति' ब्रुवता  
भूतप्रत्यवेक्षालक्षणा प्रज्ञा प्रतिक्षिप्ता भवेत् । भूतप्रत्यवेक्षा-मूलत्वात् सम्यग्-  
ज्ञानस्य तत्प्रतिक्षेपा<sup>४</sup>ल्लोकोत्तरापि प्रज्ञा<sup>५</sup> प्रतिक्षिप्ता भवेत् । तत्प्रतिक्षेपात्  
सर्वाकारज्ञता प्रतिक्षिप्ता भवेत् । नापि<sup>६</sup> दानादिचर्या कर्तव्येति वदता  
20 चोपायो दानादिः स्फुटतरमेव प्रतिक्षिप्तः ।

एतावद् एव च संक्षिप्तं महायानं यदुत प्रज्ञोपायश्च । यथोक्तम्  
आर्यगयाशीर्षे<sup>७</sup>—“द्वाविमौ बोधिसत्त्वानां संक्षिप्तौ मार्गौ । कतमौ द्वौ ? यदुत

१. देहे-का० ( सूत्र-‘म’ १८३ ) । २. भो० पा०-हे मित्राणि शतपुण्य.... । ३. भो०  
पा०-महाप्रणिधानं । ४. सकल-भो० न । ५. कर्म-भो० न । ६. कर्म-भो० न । ७. भो०  
पा०-तत्प्रतिक्षेपात् मूलच्छेदत्वात् । ८. भो० पा०-प्रज्ञापि । ९. तत्प्रतिक्षेपात्.....भवेत्-भो०  
न । १०. नापि-भो० न । ११. देहे-का० ( सूत्र-‘च’ २८८ ) ।



प्रज्ञा चोपायश्च ।” आर्यतथागतगुह्यसूत्रे<sup>१</sup> चोक्तम्—“इमौ च प्रज्ञोपायौ बोधिसत्त्वानां सर्वपारमितासंग्रहाय संवर्तेते” इति । ततश्च महायानं प्रतिक्षिपता महत् कर्माविरणं कृतं स्यात् । तस्माद् [ महायानं प्रतिक्षिपतः, अल्पश्रुतस्य, आत्मदृष्टि परामृशतः, ]<sup>२</sup> अस्यानुपासितविद्वज्जनस्यानवधारित-तथागत-प्रवचननीतेः स्वयं विनष्टस्य परान् अपि नाशयतो युक्त्यागम-  
दूषितत्वात्, विषसंसृष्टवचनं सविषभोजनमिव आत्मकामेन धीमता दूरत  
एव परिहर्तव्यम् ।

तथा ह्यनेन भूतप्रत्यवेक्षां प्रतिक्षिपता धर्मप्रविचयाख्यं प्रधानम् एव बोध्यङ्गं<sup>३</sup> प्रतिक्षिप्तं स्यात् । विना च भूतप्रत्यवेक्षया योगिनः कथम्<sup>४</sup> अनादिकालाभ्यस्तरूपादिभावाभिनिवेशस्य चित्तं निर्विकल्पतां प्रविशेत्<sup>५</sup> ?  
सर्वधर्मेष्वस्मृत्यमनसिकारेण प्रविशतीति चेत्, तद् अयुक्तम् । न हि विना भूतप्रत्यवेक्षयानुभूयमानेष्वपि सर्वधर्मेष्वस्मृतिरमनसिकारो वा शक्यते कर्तुम् । यदि च नामामी धर्मा मयाऽस्मर्तव्या नापि मनसिकर्तव्या इत्येवं भावयन्नस्मृतिमनसिकारौ तेषु भावयेत् तदा सुतराम् एव तेन ते स्मृता मनसिकृताश्च स्युः । अथ स्मृतिमनसिकाराभावमात्रम् अस्मृत्यमनसिकारा-  
वभिप्रेतौ, तदा तयोरभावः केन प्रकारेण भवतीति एतद् एव विचार्यते ।  
न चाभावः कारणं युक्तम्, येन ततो [निर्निमित्तामनसिकारात्]<sup>६</sup> निर्विकल्पता भवेत् । [तन्मात्रतोऽविकल्पतायां]<sup>७</sup> संमूर्च्छितस्यापि स्मृतिमनसिकाराभावान् निर्विकल्पताप्रवेशप्रसङ्गः । न च भूतप्रत्यवेक्षां विनाऽन्य उपायोऽस्ति येन प्रकारेणास्मृत्यमनसिकारौ कुर्यात् ।

सत्यपि चास्मृत्यमनसिकारसम्भवे, विना भूतप्रत्यवेक्षया निःस्वभावता धर्माणां कथम् अवगता<sup>८</sup> भवेत् ? न हि स्वभावत एव धर्माः

१ देगे-का०.....? । २. भो० पा०-[ महायानं....परामृशतः ] । ३. भो० पा०-सम्यग्बोध्यङ्गं । ४. भो० पा०-केन उपायेन । ५. भो० पा०-व्यवस्थाप्यते । ६. भो० पा०-[ निर्निमित्तामनसिकारात् ] । ७. भो० पा०-[ तन्मात्रतोऽविकल्पतायां ] । ८. भो० पा०-कथं प्रविशेत् ?



शून्याः स्थिता इत्येवं विना तत्प्रत्यवेक्षया तच्छून्यताप्रतिवेधो भवेत् ।  
नापि विना शून्यताप्रतिवेधेन आवरणप्रहाणं संभवति सर्वत्र सर्वेषां  
मुक्तिप्रसङ्गात् ।

किं च तस्य योगिनो यदि सर्वधर्मेषु मुषितस्मृतितया मूढतया वा  
5 स्मृतिमनसिकारौ न प्रवर्तते, तदाऽत्यन्तमूढः कथम् असौ योगी भवेत् ।  
विना च भूतप्रत्यवेक्षया तत्रास्मृतिम् अमनसिकारं चाभ्यस्यता मोह एवाभ्य-  
स्तो भवेत् । तत एव सम्यग्ज्ञानालोको दूरीकृतः स्यात् । अथासौ न  
मुषितस्मृतिर्नापि मूढः, तदा कथं तत्रास्मरणम् अमनसिकारं कर्तुं शक्नुयाद्  
विना भूतप्रत्यवेक्षया । न हि स्मरन्नेव न स्मरति, पश्यन् एव न पश्य-  
10 तोति युक्तम् अभिधातुम् । अस्मृत्यमनसिकाराभ्यासाच्च कथं पूर्वनिवासा-  
नुस्मृत्यादि-बुद्धधर्मोदयो भवेत्, विरोधात् । न ह्युष्णविरुद्धं शीतम् आसेव-  
मानस्य उष्णस्पर्शसंवेदनं भवेत् ।

किं च समाधिसमापन्नस्य योगिनो यदि मनोविज्ञानम् अस्ति, तदा-  
ऽवश्यं तेन किञ्चिद् आलम्बयितव्यम् । न हि पृथग्जनानां सहसा निराल-  
15 म्बनं ज्ञानं भवेत् । अथ नास्ति, तदा कथं निःस्वभावता धर्माणामवगता  
भवेत् ? केन च प्रतिपक्षेण क्लेशावरणं प्रहीयते ? न च चतुर्थध्याना-  
लाभिनः पृथग्जनस्य चित्तनिरोधः संभवति । तस्मात् सद्धर्मे यावत्स्मृत्य-  
मनसिकारौ पठितौ तौ भूतप्रत्यवेक्षापूर्वकौ द्रष्टव्यौ । अस्माद् भूतप्रत्य-  
वेक्षयाऽस्मृतिर्मनसिकारश्च शक्यते कर्तुम्, नान्यथा । तथा हि यदा  
20 निरूपयन् सम्यक्प्रज्ञया योगी कालत्रये परमार्थतः समुत्पन्नं न कञ्चिद्  
धर्मं पश्यति, तदा तत्र कथं स्मृतिमनसिकारौ कुर्यात् । यो हि कालत्रये-  
ऽप्यसत्त्वान् नानुभूतः परमार्थतः स कथं स्मर्येत, मनसि वा क्रियेत ।  
ततोऽसौ सर्वप्रपञ्चोपशमं निर्विकल्पं ज्ञानं प्रविष्टो भवेत् । तत्प्रवेशाच्च  
शून्यतां प्रतिविध्यति तत्प्रतिवेधाच्च प्रहीणसकलकुदृष्टिजालो भवति ।



उपाययुक्तः प्रज्ञासेवनतश्च सम्यक् संवृतिपरमार्थसत्यकुशलो भवति ।  
अतोऽनावरणज्ञानलाभात् सर्वान् एव बुद्धधर्मान् अधिगच्छति । तस्मान्न  
विना भूतप्रत्यवेक्षया सम्यग्ज्ञानोदयो नापि क्लेशावरणप्रहाणम् । तथा  
चोक्तं मञ्जुश्रीविक्रवितसूत्रे<sup>१</sup>—“कथं दारिके बोधिसत्त्वो विजितसंग्रामो  
भवति ? आह, यो मञ्जुश्रीः विचाय<sup>२</sup> विचाय सर्वधर्मान् नोपलभते” 5  
इति । तस्माद् विस्फारितज्ञानचक्षुः प्रज्ञाशस्त्रेण क्लेशारीन् निर्जित्य,  
निर्भयो विहरन् योगी, न तु कातरपुरुष इव विनिमीलिताक्षः ।  
आर्यसमाधिराजेऽप्युक्तम्<sup>३</sup>—

नैरात्म्यधर्मान् यदि प्रत्यवेक्षते  
तान् प्रत्यवेक्ष्य यदि भावयेत् । 10  
स हेतु निर्वाणफलस्य प्राप्तये  
योऽन्यहेतुर्न स भोति शान्तये ॥ इति ।

सूत्रसमुच्चये चोक्तम्—“आत्मना विपश्यनायोगम् अनुयुक्तो विहरति परांश्च  
विपश्यनायां नाभियोजयतीति मारकमेति ।” विपश्यना च भूतप्रत्यवेक्षा-  
स्वभावा आर्यरत्नमेघ-सन्धिनिर्मोचनादौ, आर्यरत्नमेघे च<sup>४</sup>—“विपश्यनां 5  
निरूपयतो निःस्वभावताप्रतिवेधाद् अनिमित्तप्रवेश उक्तः ।” आर्यलङ्का-  
वतारे<sup>५</sup> चोक्तम्—“यस्मात्, महामते, बुद्ध्या विचार्यमाणानां स्वसामान्यलक्षणं  
भावानां<sup>६</sup> नावधार्यते । तेनोच्यन्ते निःस्वभावाः सर्वधर्माः” इति । तत्र तत्र  
सूत्रे या भगवता नानाप्रकारा प्रत्यवेक्षा निर्दिष्टा सा विरुध्यते, यदि  
भूतप्रत्यवेक्षा न कर्तव्या । तस्माद् एवं युक्तं वक्तुं वयम् अल्पप्रज्ञा अल्प- 20  
वीर्याश्च न शक्नुमो बाहुश्रुत्यं पर्येषितुमिति । न हि तत्प्रतिक्षेपो युक्तो भगवता

१. देगे-का० ( सूत्र-‘ख’ २३१ ) । २. भो० पा०-मञ्जुश्रीः, विचाय सर्वधर्म..... ।  
३. देगे-का० ( सूत्र-‘द’ २७ ) सं०-६ परि० पृ० ४६, दरभङ्गा । ४. देगे-तेन०  
( मध्यमक-‘कि’ १६४ ) । ५. देगे-का० सूत्र.....? । ६. देगे-का० ( सूत्र-‘च’ १०१ )  
सं०-२ परि० पृ० ४१ दरभङ्गा । ७. भावनां-भो० न ।

- बहुधा बाहुश्रुत्यस्य वर्णितत्वात् । तत् पुनर्ब्रह्मपरिपृच्छायाम् उक्तम्<sup>१</sup>—“ये त्वचिन्त्येषु धर्मेषु [चिन्तन]<sup>२</sup> विप्रयुक्ताः तेषाम् अयोनिश इति । तत्रापि ये परमार्थतोऽनुत्पन्नानां धर्माणाम् उत्पादं परिकल्प्यानित्य-  
 दुःखादिरूपेण श्रावकादिवचिन्तां प्रकुर्वन्ति, तेषां समारोपापवादान्तेन  
 5 चिन्तां प्रवर्तयताम् अयोनिशः तद् भवतीति तत्प्रतिषेधाय यद् उक्तं न भूतप्रत्यवेक्षायाः स प्रतिषेधः तस्याः सर्वसूत्रेष्वनुज्ञानात् । तथा च तत्रैव ब्रह्मपरिपृच्छायाम्<sup>३</sup> उक्तम्—“चित्तशूरो<sup>४</sup> बोधिसत्त्व<sup>५</sup> आह—यश्चित्तेन सर्वधर्माश्चिन्तयति तत्र चाक्षतोऽनुपहतः स तेनोच्यते बोधिसत्त्वः” इति । तत्रैवोक्तम्<sup>६</sup>—“कथं वीर्यवन्तो भवन्ति, यदा सर्वज्ञताचित्तं विचीयमाना  
 10 नोपलभन्ते” इति । पुनः तत्रैवोक्तम्<sup>७</sup>—“मतिमन्तश्च ते भविष्यन्ति योनिशो धर्मान् प्रत्यवेक्षणतयेति” । पुनः तत्रैवोक्तम्<sup>८</sup>—“प्रविचिन्वन्ति ते धर्मान् यथा मायामरीचिकेति” ।

- तद् एवं यत्र यत्राचिन्त्यादिप्रपञ्चः<sup>९</sup> श्रूयते, तत्र तत्र श्रुतचिन्ता-  
 मात्रेणैव तत्त्वाधिगमं ये मन्यन्ते, तेषाम् अभिमानप्रतिषेधेन प्रत्यात्मवेद-  
 15 नीयत्वं धर्माणां प्रतिपादयते । अयोनिशश्च चित्तप्रतिषेधः क्रियत इति बोद्धव्यम्, न भूतप्रत्यवेक्षायाः प्रतिषेधः । अन्यथा बहुतरं युक्त्यागमविरुद्धं स्यात् । यथोक्तं प्राक् । किञ्च यद् एव श्रुतचिन्तामय्या प्रज्ञया विदितं तद् एव भावनामय्या प्रज्ञया भावनीयं नान्यत् । संदिष्ट-धावनभूम्यश्व-  
 धावनवत् । तस्मात् भूतप्रत्यवेक्षा कर्तव्या । यदि नामासौ विकल्पस्वभावा  
 20 तथापि योनिशो मनसिकारस्वभावत्वात्, ततो भूत<sup>१०</sup> निर्विकल्पज्ञानोदय इति कृत्वा तज्ज्ञानार्थिना सा सेवनीया । निर्विकल्पे च भूतज्ञानाग्नौ

१. देगे-का० (सूत्र-‘ब’ ३२) । २. भो० पा०—[ धर्मेषु चिन्तन ] । ३. देगे-का० (सूत्र-‘ब’ ६७) । ४. चित्तशूरो-भो० न । ५. भो० पा०—बोधिसत्त्वान् । ६. देगे-का० सूत्र-.....? । ७. देगे-का० (सूत्र-‘ब’ ४२) । ८. देगे-का० सूत्र-.....? । ९. भो० पा०—शब्दः श्रूयते । १०. भूत-भो० न ।



समुत्पन्ने सति, काष्ठद्वयनिषर्षसंजातवह्निना तत्काष्ठद्वयदाहवत् सापि पश्चात् तेनैव<sup>१</sup> दह्यत एवेत्युक्तम् आर्यरत्नकूटे ।

यच्चाप्युच्यते—न किञ्चित् कुशलादिकर्म कर्तव्यम् इति । तत्रैवैवं वदता कर्मक्षयान् मुक्तिरित्याजीवक<sup>२</sup>वादाभ्युपगमो भवेत् । न हि भगवत्प्रवचने कर्मक्षयान् मुक्तिरिष्यते । किं तर्हि, क्लेशक्षयात् । अनादिकालोपचितस्य 5 हि कर्मणो न शक्यते क्षयः कर्तुं तस्यानन्तत्वात् । अपायादिषु च तत्फलं भुञ्जानस्यापरस्यापि कर्मणः प्रसूतेः, क्लेशेषु चाविकलेषु तत्करणतया स्थितेषु कर्मणो निरोद्धुम् अशक्यत्वात् । प्रदीपानिरोधे तत्प्रभाया अनिरोधवत् । न चापि तस्य विपश्यनापवादिनः क्लेशक्षयः संभवतीत्युक्तं प्राक् । अथ क्लेशक्षयार्थं विपश्यना सेवनीयेति मन्यते, तदा क्लेशक्षयाद् एव मुक्तिः 10 सिध्यतीति कर्मक्षये तर्हि व्यर्थः श्रमः<sup>३</sup> । अकुशलकर्म न कर्तव्यम् इति युक्तमेतत्, कुशलं तु किमिति प्रतिषिध्यते । संसारावाहकत्वात् प्रतिषिध्यत इति चेत्, तद् अयुक्तम् । यद् एव 'आत्मादिविपर्याससमुत्थापितम् "कुशलं" तद् एव संसारावाहकं भवति । न तु बोधिसत्त्वानां महाकरुणासमुत्थापितम् अनुत्तरसंबोधिपरिणामितमपि । तथा आर्यदशभूमके<sup>४</sup> एत एव 15 दशकुशलकर्मपथाः परिणामनादिपरिशुद्धि<sup>५</sup>विशेषेण श्रावकप्रत्येकबुद्ध-बोधिसत्त्वबुद्धत्ववाहका भवन्तीति निर्दिष्टम् । आर्यरत्नकूटे<sup>६</sup> च, सर्वमहानदीनां महासमुद्रे प्रविष्टानां पयः स्कन्धवद् बोधिसत्त्वानां नाना-मुखोपचितं कुशलमूलं<sup>७</sup> सर्वज्ञतापरिणामितं<sup>८</sup> सर्वज्ञतैकरसं भवति इति वर्णितम् ।

20

१. भो० पा०—ताभ्यां दह्यते । २. भो० पा०—अजीवकर्तव्यिक । ३. भो० पा०—व्यर्थः शब्दः । ४. दूची-पा०—बाह्यात्म । ५. दूची-पा०—अकुशलं । ६. भो० पा०—कुशलकर्म । ७. देगे-का० ( अवतंसक—'ख' १८६ ) । ८. दूची-पा०—परिकर्म । ९. देगे-का० ( रत्नकूट—'ख' १२६ ) । १०. मूलं—भो० न । ११. सर्वज्ञतापरिणामितं—भो० न ।

- या च बुद्धबोधिसत्त्वानां रूपकायक्षेत्रपरिशुद्धिः प्रभापरिवारमहा-  
भोगतादिसंपत्तिः दानादिपुण्यसम्भारफलसत्त्वेन तत्र तत्र सूत्रे वर्णिता भग-  
वता सापि विरुध्यते । कुशलचर्याप्रतिषेधे च प्रातिमोक्षसंवरादिरपि प्रतिक्रिष्टः  
स्यात् । ततो व्यर्थमेव तस्य शिरोमु<sup>१</sup>ण्डितकाषायधारणादि प्रसज्येत ।
- 5 कुशलकर्माभिसंस्कारवैमुख्ये च सति संसारवैमुख्यं सत्त्वार्थक्रियावैमुख्यं च  
सेवितं भवेत् । ततो बोधिः तस्य दूरे भवेत् । उक्तं ह्यायंसंधिनिर्मोचने<sup>२</sup>—  
“एकान्तसत्त्वार्थविमुखस्य एकान्तसंस्कारा<sup>३</sup>भिसंस्कारविमुखस्य नानुत्तरा  
सम्यक्संबोधिरुक्ता मयेति ।” आर्योपालपरिपृच्छादौ<sup>४</sup> च—“संसारे वैमुख्यं  
बोधिसत्त्वानां परदौःशील्यमिति वर्णितम् । संसारपरिग्रहः तु परमं  
10 शीलम् ।” उक्तम् आर्यविमलकीर्तिनिर्देशे<sup>५</sup> च—“उपायाद् भवति संसारगमनं  
बोधिसत्त्वानां मोक्षः । उपायरहिता च प्रज्ञा बन्धः, प्रज्ञारहितश्चोपायो  
बन्धः । प्रज्ञासहित उपायो मोक्षः, उपायसहिता प्रज्ञा मोक्षः” इति  
वर्णितम् । आर्यगगनगञ्जे<sup>६</sup> उक्तम्—“संसारपरिखेदो बोधिसत्त्वानां मारकर्म  
इति ।” सूत्रसमुच्चये<sup>७</sup> च—“असंस्कृतं च प्रत्यवेक्षते संस्कृतैश्च कुशलैः  
15 परिखिद्यत इति मारकर्म इति । बोधिमार्गं प्रजानाति पारमितामार्गं च  
न पर्येषत इति मारकर्म इति ।” यत् पुनः तत्रैवोक्तम्—“दानचित्ताभिनिवेशाद्  
यावत् प्रज्ञाचित्ताभिनिवेशां मारकर्म इति तत्र न दानादीनां सेवाप्रतिषेधः  
किं त्वहंकारममकारचित्ताभिनिविष्टस्य ग्राह्यग्राहकचित्ताभिनिविष्टस्य  
चौपलम्भिकस्य यो विपरीताभिनिवेशो दानादौ तस्य प्रतिषेधः । विपरीता-  
20 भिनिवेशसमुत्थापिता हि दानादयोऽपरिशुद्धा भवन्तीति कृत्वा मारकर्मैत्यु-  
क्तम् । अन्यथा ध्यानम् अपि न सेवनीयं स्यात् । तथा च कथं मुक्तिः  
भवेत् ?

१. दूची-पा०-शिरस्तुण्डित । २. देगे-का० ( सूत्र-‘च’ १६ ) । ३. दूची-  
पा०-संसार । ४. देगे-का०.....? ५. देगे-का० ( सूत्र-‘म’-२०१ ) । ६. देगे-का०  
( सूत्र-‘प’ २७७ ) । ७. देगे-तेन० ( मध्यमक-‘कि’ १६४ ) । ८. देगे-तेन० ( मध्यमक-  
‘कि’ १६३ ) ।



अत एवोपलम्भिकस्य सत्त्व<sup>१</sup>नानात्वसंज्ञया यद्<sup>२</sup> दानादि तद् अपरिशुद्धम् इति प्रतिपादनाय आर्यगगनगञ्जेऽपि<sup>३</sup>—“सत्त्वनानात्व [ विपरीतकर्म ]<sup>४</sup> संज्ञिनो दानादि मारकर्मैत्युक्तम्” । यच्चापि [त्रि]<sup>५</sup> स्कन्धपरिणामनायाम्<sup>६</sup> उक्तम्—“सर्वम् एव दान-शील-क्षान्ति-वीर्य-ध्यान-प्रज्ञासमताम् अजानतोपलम्भयति, तेन पर्येष्टितदानेन परामृष्टशीलेन शीलं 5 रक्षितम् । आत्मपरसंज्ञिना क्षान्तिर्भावितेत्यादि तत् प्रतिदेशयामीति ।” तत्राप्योपलम्भिकस्य नानात्वसंज्ञिनो विपरीताभिनिवेशसमुत्थापिता दानादयोऽपि शुद्धा भवन्तीति एतावन्मात्रं प्रतिपादितम् । न तु सर्वथा दानादीनां सेवनप्रतिषेधः<sup>७</sup> । अन्यथा सर्वस्यैव दानादेरविशेषेण प्रतिदेशना कृता स्यात्<sup>८</sup>, नोपलम्भविपर्यासपतितस्यैव । यच्चापि ब्रह्मपरिपृच्छायाम्<sup>९</sup> 10 उक्तम्—“यावती चर्या सर्वा परिकल्प्या । निष्परिकल्प्या च बोधिरित्यादि ।” तत्राप्युत्पादादिविकल्पचर्यायाः प्रकृतत्वात् तस्याः परिकल्पत्वमुक्तम् । अनिमित्तविहारे चानभिसंस्कारवाहिनः स्थितस्य बोधिसत्त्वस्य व्याकरणं भवति, नान्यस्येत्येतावन्मात्रं प्रतिपादितम् । सर्वेषां च दानादीनां परमार्थतोऽनुत्पन्नत्वं च परिदीपितम्, न तु चर्या न 15 कर्तव्येत्यभिहितम् ।

अन्यथा हि दीपङ्कुरावदाने ये बुद्धा भगवता पर्युपासिता येषां तु कल्पमपि भगवता भाषमाणेन न शक्यं नामपरिकीर्तनं कथं तेषां भगवता बोधिसत्त्वावस्थायां चर्याप्रतिषेधो न कृतः । दीपङ्कुरेणापि तदानीं भगवतश्चर्याप्रतिषेधो न कृत एव । किं तु यदा शान्तानिमित्तविहारेऽष्टम्यां 20 भूमौ स्थितोऽसौ दृष्टस्तदासौ व्याकृतो भगवता, तत्र तस्य चर्या

१. सत्त्व-भो० न । २. भो० पा०-दानं वदाति । ३. देगे-का० ( सूत्र-‘प’ २७७ ) । ४. भो० पा०-[ विपरीतकर्म ] । ५. दूची-पा०-पुण्यस्कन्ध । ६. देगे-का० ( सूत्र-‘प’ ७२ ) । ७. दूची-पा०-अप्रतिषेधः । ८. दूची-पा०-नानुपलम्भादिपतित । ९. देगे-का० ( सूत्र-‘ब’ ५८ ) ।

अप्रतिषिद्धा । सा चानिमित्तविहारपरमता बोधिसत्त्वानाम् अष्टम्यां भूमौ दशभूमिकैर्बुद्धैः प्रतिषिद्धा 'मा भूद् एतद् एव तेषां परिनिर्वाणम्' इति कृत्वा यदि तु सर्वथा चर्या न कर्तव्या भवेत् पूर्वोक्तं सर्वं विरुध्येत ।

- यच्च तत्रैव ब्रह्मपरिपृच्छायाम्<sup>१</sup> उक्तम्—“दानं च ददाति तच्चा-  
 5 विपाकाभिकाङ्क्षी, शीलं च रक्षति तच्चासमारोपितः” इत्यादि । चतुर्भिः ब्रह्म ! धर्मेः समन्वागता बोधिसत्त्वा अवैवर्तिका भवन्ति बुद्धधर्मेषु । कतमै-  
 श्वर्तुभिः अपरिमितसंसारपरिग्रहेण अपरिमितबुद्धोपस्थानपूजयेत्यादि सर्वं विरुध्येत । नापि मृद्विन्द्रियेणैव चर्चा कर्तव्या न तु तीक्ष्णेन्द्रियेणेति युक्तं वक्तुम् । यतः प्रथमां भूमिमुपादाय यावद्दशमीभूमिप्रतिष्ठितानां बोधि-  
 10 सत्त्वानां दानादिचर्या उत्पद्यते, न च परिशिष्टासु न समुदाचरतीति वचनात् । नहि भूमिप्रविष्टा अपि मृद्विन्द्रियायुक्ताः । आर्योपालिपरि-  
 पृच्छायाम्<sup>२</sup>—“अनुत्पत्तिकधर्मक्षान्तिप्रतिष्ठितेनैव त्यागमहात्यागाति-  
 त्यागाः कर्तव्याः” इति वर्णितम् । सूत्रसमुच्चये<sup>३</sup> च—“षट्पारमितादि-  
 प्रतिपत्तिमान् बोधिसत्त्वस्तथागतद्विगतिकः” इति वर्णितम् । न च तथा-  
 15 गतिद्विगतेरन्या शोघतरा गतिरस्ति । नापि षट्पारमितादशभूमिव्य-  
 तिरेकेणान्यो बोधिसत्त्वानां मार्गोऽस्ति यः शोघतरवाही स्यात् । क्रमेणैव च चित्तसंततेः कनकशुद्धिवत् शुद्धिर्भवतीति सूत्रे वर्णितम् [ आर्यलङ्कावतार-  
 दशभूमिकादौ चोक्तं ]<sup>४</sup>—तथतायां यदा स्थितो बोधिसत्त्वो भवति, तदा प्रथमायां भूमौ प्रविष्टो भवति । ततः क्रमेणैव पूर्वभूमौः परिशोध्य  
 20 तथागतभूमिं प्रविशतीति । अतो नास्ति भूमिपारमिताव्यतिरेकेण [ युगपत् ]<sup>५</sup> बुद्धत्वपुरप्रवेशे अन्यन्मुखं नापि भगवता क्वचित् सूत्रादौ देशितम् ।

१. देगे-का० (सूत्र-‘व’ ८६) । २. देगे-का० “.....” ? । ३. देगे-तेन० ( मध्यमक-  
 कि..... ? ) । ४. भो० पा०—[ आर्यलङ्कावतार-दशभूमिकादौ चोक्तं ] । ५. भो०  
 पा०—[ युगपत् ] ।



ध्यान एव षट्पारमितान्तर्गमात् तत्सेवनाद् एव सर्वपारमिताः  
 सेविता भवन्त्यतो न दानादयः [ अन्यपारमिताः ]<sup>१</sup> पृथक् सेवितव्या  
 इति चेत् तद् अयुक्तम् । एवं हि बुद्धे गोमयमण्डलेऽपि षट्पारमितान्त-  
 र्गमान् मण्डलकम् एव कर्तव्यं स्यान्न ध्यानादयः । श्रावकस्यापि  
 निरोधसमाधिसमापन्नस्य निमित्ताद्<sup>२</sup> एव असमुदाचारात् तदा षट्पार- 5  
 मितापरिपूरिप्रसङ्गः । ततश्च न श्रावकेभ्यो बोधिसत्त्वानां भेदः प्रतिपादितो  
 भवेत् । सर्वावस्थायाम् एव तु बोधिसत्त्वेन षट्पारमिताः परिपूरयितव्या  
 इति संदर्शनार्थं एकैकपारमितान्तर्भावः सर्वपारमितानां भगवता  
 सन्दर्शितः । न पुनरेकैव पारमिता सेवनीयेति । तथा चोक्तं सर्वधर्म-  
 वैपुल्ये<sup>३</sup>—“योऽप्ययं मैत्रेय ! षट्पारमितासमुदागमो बोधिसत्त्वानां संबोधाय 10  
 तं ते मोहपुरुषा एवं वक्ष्यन्ति, प्रज्ञापारमितायाम् एवं बोधिसत्त्वेन  
 शिक्षितव्यम्, किं शेषाभिः पारमिताभिरिति । तेऽन्याः पारमिता दूष-  
 यितव्या मंस्यन्ते । तत् किं मन्यसे, अजित ! दुष्प्रज्ञः स काशिराजोऽभूत्, येन  
 कपोतार्थेन श्येनाय स्वमांसानि दत्तानि ? मैत्रेय आह—नो हीदं भगवन् !  
 भगवान् आह—यानि मया मैत्रेय ! बोधिसत्त्वचर्यां चरता षट्पारमिता- 15  
 प्रतिसंयुक्तानि कुशलमूलान्युपचितानि । अपकृतं नु तैः कुशलमूलैः ? मैत्रेय  
 आह, नो हीदं भगवन्, भगवान् आह—त्वं तावद् अजित ! षष्टिकल्पान्  
 दानपारमितायां समुदागतः । एवं यावत् षष्टिकल्पान् प्रज्ञापारमितायां  
 समुदागतः । तत् ते मोहपुरुषा एवं वक्ष्यन्ति । एकनयेनैव बोधिर्यदुत  
 शून्यतानयेनेति ते चर्यापरिशुद्धा भवन्ति” इत्यादि । केवलं शून्यताम् एव 20  
 सेवमानाः श्रावकवन्निर्वाणे पतन्ति । अतः उपायसहिता प्रज्ञा  
 सेवनीया ।

अत एवाचार्यनागार्जुनपादैः सूत्रसमुच्चये<sup>४</sup>ऽभिहितम्—“न चोपाय-  
 कौशलरहितेन बोधिसत्त्वेन गम्भीरधर्मतायामभियोक्तव्यम्” इति । अत्र

१. [ अन्य-पारमिता ] । २. दूचो-पा०-अनिमित्ताद् । ३. देगे-का० ..... ?  
 ४. देगे-तेन० (मध्यमक-कि० २०७) ।



- आर्यविमलकीर्तिनिर्देशादिज्ञापकस्तरूपन्यस्तः, न चाचार्यनागार्जुनपादौयं वचनम् । युक्त्यागमोपेतं त्यक्त्वा<sup>१</sup> भगवद्वचनं च परित्यज्य अन्यस्य मूर्खजनस्य वचनं प्रेक्षावता ग्रहीतुम् अयुक्तम्<sup>२</sup> । आर्यरत्नकूटे<sup>३</sup> च—“सकल-दानादिकुशलोपेततया सर्वाकारवरोपेतशून्यता सेवनीयेत्युक्तं न तु केवला ।”
- 5 आर्यरत्नकूटे<sup>४</sup> चोक्तम्—तद्यथा काश्यपामात्यसंगृहीता राजानः सर्वकार्याणि कुर्वन्ति एवम् एव उपायकौशल्यसंगृहीता बोधिसत्त्वस्य प्रज्ञा सर्वबुद्ध-कार्याणि करोति ।

- अत एव केवलां शून्यतां सेवमानस्य मा भून्निर्वाणप्रवेश इति । भगवता आर्यतथागतगुह्यसूत्रे<sup>५</sup> चोक्तम्—“नैकान्तनिरालम्बनं चित्तमात्र-  
10 सेवनं कर्तव्यम् अपि तु उपायकौशल्यम् अपि सेवनीयम् इति प्रदर्शनार्थम् उक्तम्—तद्यथापि नाम, कुलपुत्र ! अग्निरुपादानाज् ज्वलति । अनुपादानः शाम्यति । एवम् एवारम्बणतश्चित्तं ज्वलति, अनारम्बणं<sup>६</sup> शाम्यति । तत्रोपायकुशलो बोधिसत्त्वः प्रज्ञापारमितापरिशुद्धारम्बणोपशमम् अपि जानाति । कुशलमूलारम्बणं च न शाम्यति । क्लेशारम्बणं च नोत्था-  
15 पयति<sup>७</sup> । पारमितारम्बणं चोत्थापयति । शून्यतारम्बणं च प्रत्यवेक्षते सर्वसत्त्वमहाकरुणारम्बणं च प्रेक्षते इति हि कुलपुत्र ! उपायकुशलः प्रज्ञापारमितापरिशुद्धो बोधिसत्त्वोऽनारम्बणे वशितां प्रतिलभते” इति विस्तरम् उक्त्वा पुनश्च वदत्येवं हि—“नास्ति तत् किञ्चिद् आरम्बणं बोधि-सत्त्वस्य यत् सर्वज्ञज्ञानाभिनिर्हराय न संतिष्ठते । यस्य बोधिसत्त्वस्य  
20 सर्वारम्बणानि बोधिपरिणामितानि, अयं बोधिसत्त्व उपायकुशलः सर्व-धर्मान् बोध्यनुगतान् पश्यति । तद्यथापि नाम कुलपुत्र, नास्ति तत् त्रिसाहस्रमहासाहस्रे लोकधातौ यत् सत्त्वानाम् उपभोगाय न स्यात् ।

१. त्यक्त्वा—भो० न । २. दुर्ची—पा०—युक्तम् । ३. भो० पा०—आर्यरत्नकूटे (देगे-का० रत्नकूट—‘छ’.....?) । ४. देगे—का० ( रत्नकूट—‘छ’ १२६ ) । ५. देगे—का०.....? ६. भो० पा०—चित्तं शाम्यति । ७. भो० पा० नोत्पद्यते । ८. दुर्ची—पा०—यत् न सत्त्वानाम् ।



एवम् एव, कुलपुत्र नास्ति तत् किञ्चिद् आरम्बणं यद् उपायकुशलो बोधिसत्त्वो बोधाय चोपकारीभूतं न पश्यति" इति विस्तरः । एवम् अनन्त-सूत्रान्तेषु बोधिसत्त्वानां प्रज्ञोपायप्रतिपत्तिर्निर्दिष्टा । तत्र यदि नाम स्वयं न शक्यते दानादिपुण्यसंभारवीर्यम् आरब्धुं तथापि अन्येषाम् एवम् उपदेशो दातुं न युक्तश्चेति स्वपरद्रोहः कृतः स्यात् ।

5

तद् एवं युक्त्यागमाभ्यां प्रतिपादितं यथा बोधिसत्त्वेनावश्यं भूतप्रत्य-वेक्षा कर्तव्या सकलदानादिपुण्यसम्भारश्चोपार्जयितव्यः । ततः प्रेक्षावताल्प-श्रुतानाम् आभिमानिकानां वचनं विषम् इवावधूयार्यनागार्जुनादिविद्वज्जन-वचनामृतानुगतेन सकलसत्त्वेषु महाकरुणाम् उपजनय्य मायाकारवद् अविपर्यस्तेनानुत्तरसंबोधिपरिणामितसकलदानादिकुशलचर्यायाम् अशेषजग-  
दुद्धरणे चाभियुक्तेन भवितव्यम् । यथोक्तम् आर्यधर्मसंगीतौ<sup>१</sup> —

मायाकारो यथा कश्चिन् निर्मितं मोक्तुमुद्यतः ।

न चास्य निर्मिते सङ्गो ज्ञातपूर्वो यतोऽस्य सः ॥

त्रिभवं निर्मितप्रख्यं ज्ञात्वा संबोधिपारगः ।

सन्नह्यन्ति जगद्धेतोः ज्ञातपूर्वं जगे तथा ॥ इति तस्यैवं 15

प्रज्ञाम् उपायं च सततं सत्कृत्याभ्यस्यतः क्रमेण [चित्तं]<sup>२</sup> संततिपरिपाकाद् उत्तरोत्तरविशुद्धतरतमक्षणोदयाद् भूतार्थभावनाप्रकर्षपर्यन्तगमेन सकल-कल्पनाजालरहितं स्फुटतरं धर्मधात्वधिगमं विमलं निश्चलनिवातदीप-वल्लोकोत्तरज्ञानम् उत्पद्यते । तदा च वस्तुपर्यन्ततालम्बनं प्रतिलब्धं भवति । दर्शनमार्गं च प्रविष्टो भवति । प्रथमा च भूमिः प्राप्ता भवति ।  
ततस्तदुत्तरा भूमीः परिशोधयन् क्रमेण कनकवद् अशेषावरणापगमे सति असक्तम् अप्रतिहतं ज्ञानं प्रतिलभ्य बुद्धभूमिम् अशेषगुणाधारां प्राप्तो भवति । कार्यपरिनिष्पत्तिं चालम्बनं प्रतिलभते । तस्माद् बुद्धत्वाधिगमार्थिना मध्यमपद्धतौ तावद् अभियोगः करणीय इति ।

20

१. देगे० का० ( सू० 'श' ४३ ) । २. भो० पा०—[ क्रमेण चित्तं ] ।

प्रकाश्य यत् प्रापि मया शुभम् 'असमपद्धितम्'<sup>२</sup> ।

पुण्यमस्तु जनस्तेन प्राप्तो मध्यमपद्धितम्<sup>३</sup> ॥

दूरीकृतेर्ष्यादिमला हि सन्तो गुणैरतृप्ताः सलिलैरिवाब्धिः ।

विवेच्य गृह्णन्ति सुभाषितानि हंसाः पयो यत्पयसि प्रहृष्टाः ॥

5

पक्षपाताकुलं तस्माद् दूरीकृतं मनो बुधैः ।

सर्वमेव ग्रहीतव्यं बालादर्पि सुभाषितम् ॥

आचार्यकमलशीलेन अन्ते निबद्धो भावनाक्रमः समाप्तः ।

तृतीयः भावनाक्रमः समाप्तः ।

१. भो० पा०—मध्यमकपद ।

२. अत्र 'असमपद्धितम्' इत्यपि पाठो भवितुमर्हति ।

३. अत्र 'मध्यमपद्धितम्' इत्यपि पाठो भवितुमर्हति ।

ये धर्मा हेतुप्रभवा हेतुं तेषां तथागतो ह्यवदत् ।

तेषां च यो निरोध एवादी महाश्रमणः ॥

भवतु सर्वमङ्गलम्



आचार्यकमलशीलप्रणीतः

**भावनाक्रमः**

( हिन्दीपाठ )





## प्रथम भावनाक्रम

मञ्जुश्री कुमारभूत को नमस्कार ।

महायान सूत्रों में आदिकर्मिक के जो चर्या-नियम हैं, उनके आधार पर संक्षेप में भावनाओं का क्रम कहूँगा ।

सर्वज्ञता को शीघ्र ही प्राप्त करने की इच्छा वालों को संक्षेप में कुरुणा, बोधित्त तथा प्रतिपत्ति इन तीन स्थानों पर प्रयत्न करना चाहिए ।

बुद्ध के अशेष धर्महेतुओं का मूल कुरुणा ही है, ऐसा जान कर उसी की भावना सर्वप्रथम करनी चाहिये । जैसा कि **आर्यधर्मसंगीति** में कहा गया है—“तब भगवान् बुद्ध से बोधिसत्त्वमहासत्त्व-आर्यावलोकितेश्वर ने यह कहा—भगवन् ! बोधिसत्त्वों को अनेक धर्मों की शिक्षा नहीं लेनी चाहिये । भगवन् ! बोधिसत्त्व के द्वारा एक धर्म को आधार बनाकर अवबोध करने पर सभी बुद्धधर्म उसके करतल पर विद्यमान हो जाते हैं । वह एक धर्म क्या है ? वह है—महाकुरुणा । भगवन् ! महाकुरुणा से ही सभी बुद्धधर्म बोधिसत्त्वों के करतल पर स्थित हो जाते हैं । भगवन् ! जैसे चक्रवर्ती राजा का चक्ररत्न जहाँ होता है, वहाँ सारा बलकाय ( सेनासमूह ) विद्यमान होता है । भगवन् ! उसी प्रकार बोधिसत्त्व की महाकुरुणा जहाँ विद्यमान होती है, वहाँ सभी बुद्धधर्म विद्यमान हो जाते हैं । भगवन् ! यथा जीवितेन्द्रिय (प्राण) के रहने पर अन्य इन्द्रियों की प्रवृत्ति होती है । भगवन् ! उसी प्रकार महाकुरुणा विद्यमान हो तो बोधिसत्त्वों के अन्यधर्मों का भी प्रादुर्भाव होता है ।”

**आर्याक्षयमतिनिर्देश** में भी विस्तार से कहा गया है—“पुनश्च भदन्त शारद्वतीपुत्र ! बोधिसत्त्वों की महाकुरुणा भी अक्षय है । वह किस कारण से है ? पूर्वगामी होने से है । भदन्त शारद्वतीपुत्र ! और भी, जैसे श्वास लेना और छोड़ना मनुष्य को जीवितेन्द्रिय का पूर्वगामी होता है, उसी प्रकार बोधिसत्त्व की महाकुरुणा भी महायान के सम्भार की सिद्धि के लिये पूर्वगामी होती है ।” इत्यादि । **आर्यगयाशीर्ष** में भी विस्तार से कहा गया है—“मञ्जुश्री ! बोधिसत्त्वों की चर्या का आरम्भ क्या है ? अधिष्ठान क्या है ? मञ्जुश्री ने कहा—देवपुत्र ! बोधिसत्त्वों की चर्या का आरम्भ तो महाकुरुणा है । अधिष्ठान सत्त्व है ।” इत्यादि ।



इसी प्रकार महाकरुणा से प्रेरित बोधिसत्त्व अपनी अपेक्षा न करके पूर्णतः (स्वात्म निरपेक्ष) परोपकारार्थी होते हैं। इसलिए वे अत्यन्त कठिन तथा दीर्घकाल तक चलने वाले सम्भार के संचय के परिश्रम में प्रवृत्त होते हैं। जैसा कि **आर्यभद्राबलाधान** में कहा गया है—“वहाँ महाकरुणा के द्वारा भी सभी सत्त्वों के परिपाक के लिये ऐसा दुःखी-जन्म कुछ भी नहीं, जिस को नहीं ग्रहण करता, और ऐसा कुछ भी सुख नहीं है, जिसे वह छोड़ नहीं देता।” इस प्रकार अतिदुष्कर में प्रवृत्त होकर शीघ्र ही सम्भारों को परिपूर्ण करके निश्चय ही सर्वज्ञपद प्राप्त करता है। अतः सभी बुद्धधर्मों की मूल महाकरुणा ही है। महाकरुणा के परिग्रह से ही भगवान् बुद्ध सर्वज्ञ पद प्राप्त करके समस्त जगत् के लिये कार्य करते रहते हैं। इस प्रकार निर्वाण में प्रतिष्ठित न होने में भगवान् की महाकरुणा हेतु है।

वह भी दुःखी सत्त्वों के विषय में बहुत अधिक सोचने के कारण उत्पन्न होती है। ‘वे सभी सत्त्व, तीनों लोकों में विचरण करने वालों को त्रिविध दुःखों से यथा-योग अत्यंत दुःखी हैं ही’ इस प्रकार से सभी सत्त्वों पर भावना करनी चाहिये। भगवान् ने कहा है कि जो नारक सत्त्व हैं वे तो अविच्छिन्न रूप से दीर्घकाल तक ताप आदि विभिन्न दुःखों में डूबे हुये रहते हैं, इसी प्रकार प्रेत भी कठिन और तीव्र भूख, प्यास आदि दुःखाग्नि के कष्ट से सूखे शरीर वाले होकर घोर दुःख का अनुभव करते हैं। अतः सौ वर्षों में भी अपवित्र, खेटपिंड (खखार) मात्र भी खाने को नहीं पाते हैं, इत्यादि भगवान् ने कहा है। तिर्यक् भी परस्पर खाने, क्रोध करने, मारने, पीड़ा देने आदि के कारण अनेक प्रकार के दुःखों का अनुभव करते हुए दिखाई ही देते हैं। जैसे कि—कोई नाक छेदने, मारने और बाँधने आदि के द्वारा परतन्त्र शरीर वाले होते हैं और सब के द्वारा पीड़ित किये जाते हैं। वे चाहने पर भी किसी प्रकार कष्टदायक भारी बोझ का वहन करने से थके शरीर वाले एवं पीड़ित होते रहते हैं। उसी प्रकार वन में भी निवास करने वाले कुछ निर्दोष कहीं विशेषरूप से खोज कर मारे जाते हैं। हमेशा परस्पर भय से व्याकुल मन वाले जहाँ-तहाँ अनेक बार भागते रहते हैं। इस प्रकार अपार दुःख दिखलायी देते हैं। उसी प्रकार मनुष्यों में भी नारक दुःख आदि विद्यमान ही हैं, क्योंकि यहाँ जो चोर आदि को अंगों के काटने, शूलों पर चढ़ाने, बाँधकर ऊपर लटकाने आदि के क्लेश हैं, वे तो नारक-दुःख ही हैं। जो लोग दरिद्रता आदि से पीड़ित हैं, उनको प्रेतों के समान भूख, प्यास आदि का दुःख है। जो दास आदि दूसरे के अधीन शरीर वाले हैं, और जो लोग बलवानों के द्वारा दबा कर पीड़ित किये जाते हैं, उनको पशुओं के समान मारने-बाँधने आदि के दुःख हैं। इस प्रकार यात्रा से होने वाले, परस्पर-द्रोह और ताड़न आदि से, प्रिय के वियोग तथा,



अप्रिय के संयोग से होने वाले इनके दुःख अप्रमेय हैं। जो सम्पन्न लोग सुखी जैसे कहे जाते हैं, उनकी भी संपत्ति को अन्त में नष्ट होना है। वे अनेक कुदृष्टियों के गर्त में डूबे हुये हैं। वे नारकीय आदि दुःखों के अनुभव के हेतु-स्वरूप अनेक प्रकार के क्लेश तथा कर्मों का अर्जन होने से प्रपात-स्थित पेटों की भाँति दुःख के हेतुओं में रहते हुये वास्तव में वे दुःखी ही हैं।

देवता भी जो जब तक कामधातु में विचरण करने वाले हैं, वे भी उग्र काम की अग्नि से सन्तापित मन वाले, पागल की भाँति मलिन चित्त वाले होते हैं और एक क्षण भी समाहितमन नहीं हो पाते हैं। उस प्रशान्ति सुखरूपी धन से दरिद्र लोगों को वह सुख भला कैसे होगा? हमेशा च्युति, पतन आदि के भय और शोक से अभिभूत हुए वे कैसे सुखी होंगे और जो लोकरूप तथा अरूप (धातु) में विचरण करते हैं, वे भी यदि कुछ काल के लिए दुःख-दुखता से मुक्त हैं; तो भी उनको कामावचरों के अनुशयों का अतिप्रहाण नहीं होने से पुनः उनका नारक आदि सत्त्वों में सम्भव होने से विपरिणाम का दुःख है ही ये देव तथा मनुष्य (जो हैं) सभी कर्म-क्लेश आदि के पराधीन होने के कारण वे 'संस्कारदुःख' से दुःखित हैं ही।

इसी प्रकार समस्त जगत् दुःखाग्नि की ज्वालमाला से ग्रस्त है, ऐसा देखकर जैसे मुझे दुःख प्रिय नहीं है, उसी प्रकार अन्यो को भी प्रिय नहीं है, ऐसा सोचते हुए समस्त प्राणियों पर कृपा की भावना करनी चाहिए। सर्वप्रथम तो मित्रपक्षों में पूर्व उक्त अनेक प्रकार के दुःखों के अनुभवों को देखकर भावना करनी चाहिए।

तब चित्त-समता से अन्तर न देखकर अनादि संसार में कोई भी सत्त्व ऐसा नहीं है, जो सौ बार मेरा बन्धु न हुआ हो, ऐसा सोचकर साधारण जनों पर भावना करें। जब मित्रपक्ष के समान साधारण जनों पर भी समान करुणा प्रवृत्त होती है, तब शत्रु-पक्ष में भी उसी प्रकार चित्त-समता आदि का विचार करके भावना करनी चाहिए। जब मित्रपक्ष के समान शत्रुपक्ष में भी समान रूप से प्रवृत्त हो, तब क्रमशः दशों दिशाओं में समस्त सत्त्वों में भी भावना करनी चाहिए। जब समस्त सत्त्वों में भी सर्वथा दुःख दूर करने की इच्छात्मक करुणा अनायास प्रवृत्त होती है, जैसे अपने दुःखी प्रिय पुत्र के ऊपर होती है, तब वह निष्पन्न होती है, और 'महाकरुणा' का नाम प्राप्त करती है। जैसे आर्याक्षयमतिनिर्देश सूत्र में वर्णन किया गया है। करुणा की भावना का यह क्रम भगवान् बुद्ध ने अभिधर्म-सूत्र आदि में कहा है।

इस प्रकार की करुणा-भावना के बल से सभी प्राणियों के उद्धार की प्रतिज्ञा की जाय तो अनुत्तरसम्यक्सम्बोधि में प्रार्थना स्वरूप बोधिचित्त अनायास ही उत्पन्न हो



जाता है। जैसा कि आर्यदशधर्म सूत्र में कहा गया है—“सत्त्वों को अरक्षित, अशरण तथा निराश्रय देखकर करुणा में चित्त लगाकर अनुत्तरसम्यक्सम्बोधि में चित्त को उत्पन्न करना चाहिए”। यद्यपि दूसरे के द्वारा सम्यग् ग्रहण करने से भी बोधिसत्त्व को बोधिचित्त उत्पन्न होता है, फिर भी महाकरुणा के वेग से बोधिसत्त्व में जो स्वयं बोधिचित्त उत्पन्न करता है, ( वह ) उसकी अपेक्षा अधिक विशिष्ट है, ऐसा भगवान् ने आर्यतथागतज्ञानमुद्रासमाधि में कहा है।

भगवान् ने कहा है कि—यह बोधिचित्त प्रतिपत्ति के बिना भी संसार में महाफल (से युक्त) होता है। जैसा कि मंत्रेयविबोक्ष में कहा गया है—“कुलपुत्र ! जैसे दूटा हुआ भी वज्ररत्न सभी अत्यन्त विशिष्ट सुवर्ण के अलङ्कारों को अभिभूत कर देता है, और वज्ररत्न का नाम भी नहीं छोड़ता, तथा समस्त दरिद्रता को हटा देता है, कुलपुत्र ! उसी प्रकार सर्वज्ञता ( प्राप्ति के लिए ) चित्तोत्पादरूपी वज्ररत्न प्रतिपत्ति से अयुक्त भी सभी श्रावक तथा प्रत्येकबुद्ध के गुणरूपी सुवर्ण-अलङ्कारों को अभिभूत करता है, और वह बोधिचित्त का नाम भी नहीं छोड़ता है तथा संसार की दरिद्रता का भी निवारण करता है।”

जो पारमिताओं में पूर्णतः सब कुछ शिक्षित नहीं हो सकता, उस को भी बोधिचित्त उत्पन्न करना ही है, क्योंकि उपाय-परिग्रह से महाफल होता है। जैसा कि आर्यराजाववाक सूत्र में—“हे महाराज ! आप तो बहुकृत्य तथा बहुकरणीय हैं, अतः सबके द्वारा सबका सर्वथा दानपारमिता की शिक्षा से लेकर प्रज्ञापारमिता-पर्यन्त शिक्षित नहीं कर सकते हो, इसलिये महाराज तुम इस प्रकार सम्बोधि में इच्छा, श्रद्धा, प्रार्थना तथा प्रणिधि को चलते, रुकते, बैठते, सोते, जागते, खाते तथा पीते हुये भी हमेशा निरन्तर अनुस्मरण करो, मनस्कार करो, भावना करो। सभी बुद्ध, बोधिसत्त्व, आर्यश्रावक, प्रत्येकबुद्ध, पृथग्जन तथा अपने अतीत, भावी और वर्तमान के सभी कुशलमूलों का संग्रह करके अनुमोदन करो। उत्तम अनुमोदन से अनुमोदित करके फिर से भी बुद्ध, बोधिसत्त्व, प्रत्येकबुद्ध, आर्यश्रावकों को पूजन के कार्य में समर्पित करो और समर्पण करके भी समस्त सत्त्वों के लिये समान करो। उसके बाद सभी सत्त्वों के सर्वज्ञता तक की प्राप्ति के लिए तथा समस्त बुद्धधर्मों को परिपूर्ण कराने के लिए प्रतिदिन तीनों कालों में ( किये गये कुशलों ) को अनुत्तरसम्यक्सम्बोधि में परिणत करो। हे महाराज ! इस प्रकार प्रतिपन्न होकर स्वराज्य करोगे। राजकाज भी नहीं छूटेगा, बोधिसम्भार भी परिपूर्ण होगा।” इत्यादि कहकर इसके बाद फिर से—“हे महाराज ! आप सम्यक्संबोधिचित्त के कुशलमूल के विपाक से अनेक बार देव बने,



अनेक बार मनुष्य बने और सभी देव तथा मनुष्य जन्मों में अधिपति रहोगे।”  
इत्यादि विस्तृत रूप से कहा गया है।

और जो प्रतिपत्तिसार बोधिचित्त है, वह तो अति विपुल फल है, ऐसा सिद्ध होता है। जैसा कि आर्यबोध्यदत्तपरिपृच्छा में कहा गया है—

“बोधिचित्त से ( प्राप्ति ) जो पुण्य है, यदि रूपवान् हो तो, समग्र आकाश-धातु को भरकर उससे भी अधिक हो जायेगा। गंगा में जितनी बालू की संख्या है, ( उतनी संख्या में ) बुद्ध क्षेत्रों को रत्नों से भरकर जिस व्यक्ति के द्वारा लोकनाथ को, समर्पित करने की अपेक्षा, यदि कोई (व्यक्ति) अञ्जलि बाँधकर बोधि, के लिये चित्त को नमन करता है, वही पूजा अधिक विशिष्ट होगी, जिस का अन्त नहीं होगा।”

आर्यगण्डव्यूह में भी—“कुलपुत्र ! बोधिचित्त सभी बुद्धधर्मों का बीज है।” इत्यादि विस्तार से वर्णन किया गया है।

वह बोधिचित्त दो प्रकार का है—प्रणिधिचित्त तथा प्रस्थानचित्त। जैसा कि आर्यगण्डव्यूहसूत्र में कहा गया है—“हे कुलपुत्र ! वे सत्त्व दुष्प्राप्य हैं जो सत्त्व जगत् में अनुत्तरसम्यक्सम्बोधि में प्रणिधि करते हैं। उनसे भी अधिक दुष्प्राप्य तो वे सत्त्व हैं, जो अनुत्तरसम्यक्सम्बोधि में सम्यक् प्रस्थान किये हों।” ‘सारे जगत् के हित के लिये बुद्ध हो जाऊँ’ सर्वप्रथम ऐसी प्रार्थना के रूपवाली ( जो ) चेतना है वह ‘प्रणिधिचित्त’ है। जब से संवर ग्रहण करके सम्भारों में प्रवेश करता है तो वह ‘प्रस्थानचित्त’ है।

संवर तो अन्य प्रतिबल विद्वान् तथा संवर में स्थित कल्याण-मित्रों के पास से लेना चाहिये। अनुकूल ग्राहक के नहीं होने पर बुद्ध और बोधिसत्त्वों को अभिमुख करके जैसे आर्यमञ्जुश्री ने ‘अम्बरराज’ होकर बोधिचित्त का उत्पाद किया था, उसी प्रकार ( बोधिचित्त का ) उत्पाद करना चाहिए।

इस प्रकार बोधिचित्त को उत्पन्न करनेवाले बोधिसत्त्व स्वयं को विनीत किये बिना दूसरों को विनीत नहीं कर सकते, यह जानकर स्वयं को दान देने आदि प्रतिपत्ति में प्रयुक्त होते हैं। प्रतिपत्ति के बिना बोधि प्राप्ति नहीं होती है। जैसा कि—आर्यगयाशीर्ष में कहा गया है—“प्रतिपत्तिसार वाले बोधिसत्त्वों को बोधि होती है, न कि विप्रतिपत्तिसार वालों को”। आर्यसमाधिराज में भी कहा है—“इसीलिए मैं



प्रतिपत्तिसार होऊँगा, ऐसा कुमार आप को अध्ययन करना चाहिये। यह किस कारण से ? कुमार ! प्रतिपत्तिसार वाले को अनुत्तरसम्यक्सम्बोधि दुष्प्राप्य नहीं होती है।”

वह बोधिसत्त्व की प्रतिपत्ति भी पारमिता, अप्रमाण तथा संग्रहवस्तु आदि के भेद (अंश) के रूप में **आर्याभयमति**, **रत्नमेघ** आदि सूत्रों में विस्तार से कही गयी है। उसी प्रकार बोधिसत्त्वों को लौकिक शिल्प आदि स्थानों तक में भी शिक्षा लेनी है, तो अलौकिक ध्यान आदि के विषय में कहना ही क्या। अन्यथा कैसे सत्त्वों के सभी अर्थाकारों को करेंगे ? संक्षेप में बोधिसत्त्व की यह प्रज्ञा तथा उपाय रूपवाली प्रतिपत्ति न तो उपाय-मात्र है, और न तो प्रज्ञा-मात्र ही है। जैसा कि **आर्यविमल-कीर्तिनिर्देश** में कहा है—“प्रज्ञा से रहित उपाय तथा उपाय से रहित प्रज्ञा बोधिसत्त्वों का बन्धन है।” उपाय के सहित प्रज्ञा तथा प्रज्ञा के सहित उपाय मोक्ष रूप में वर्णित है। **आर्यगयाशीर्ष** में भी कहा गया है—“संक्षेप में बोधिसत्त्वों के ये दो मार्ग हैं। दो मार्गों से युक्त बोधिसत्त्व-महासत्त्व तो शीघ्र ही अनुत्तरसम्यक्सम्बोधि में अभिसंबुद्ध हो जायेंगे। वे दा क्या हैं ? वे हैं उपाय तथा प्रज्ञा।”

वहाँ प्रज्ञापारमिता को छोड़कर दान आदि पारमिता तथा संग्रहवस्तु आदि और क्षेत्रपरिशुद्धि, महाभोग, बहुपरिवार, सम्पत्ति, सत्त्वपरिपाक, निर्माण आदि अभ्युदय धर्म के संग्राहक सभी कुशलों को उपाय कहा जाता है। प्रज्ञा तो उस उपाय के अविपरीत स्वभाव को परिच्छिन्न करने का हेतु है। उससे सम्यग् उपाय का विवेक-परिच्छेद करके अविपर्यस्त यथावत् रूप से तथा स्वपर अर्थों की सिद्धि करने से मन्त्रों से परिगृहीत विष की भाँति संक्लेश की प्राप्ति नहीं होती है। जैसा कि उसी सूत्र में कहा गया है—“उपाय तो संग्रह का ज्ञान है। प्रज्ञा है परिच्छेद का ज्ञान।” जैसा कि **आर्यश्रद्धाबलाधान** में भी कहा गया है—“उपाय कौशल क्या है ? जो सभी धर्मों कर संग्रह है। प्रज्ञा क्या है ? जो सभी धर्मों के अमिश्रण की कुशलता है।” प्रज्ञा औ उपाय इन दोनों का सेवन भूमि में प्रवेश कर चुके बोधिसत्त्वों को भी हमेशा करना चाहिए, न कि केवल प्रज्ञा तथा केवल उपाय का ही। क्योंकि—बोधिसत्त्व की दश भूमियों में भी सभी पारमिताओं का समुदाचार कहा गया है। **दशभूमिसूत्र** आदि में भी ऐसे वचन हैं कि “परिशेषों में असमुदाचार नहीं है।”

आठवीं भूमि में शान्त भाव से विहार करने वाले बोधिसत्त्वों का भगवान् बुद्ध द्वारा व्युत्थान कराने से विरोध होगा। जैसा कि उसी में कहा गया है—“हे जिनपुत्र ! बोधिसत्त्व के इस प्रकार अचला नाम की बोधिसत्त्व भूमि में स्थित और पूर्व प्रणिधान के बलाधान में तथा धर्ममुखस्रोत में स्थित हो जाने पर भगवान् बुद्ध उसके तथा गतज्ञान का उपसंहार करते हैं। और उससे ऐसा कहते हैं—कुलपुत्र ! बहुत अच्छा, बहुत



अच्छा । यह परमार्थ क्षान्ति सभी बुद्ध-धर्मों का अनुगम करने के लिये है । फिर भी कुलपुत्र ! जो हमारी दशबल, चारवैशारद्य आदि बुद्ध धर्म की सम्पत्ति है, वह तुमको नहीं । उस बुद्धधर्म की समृद्धि खोजने के लिए लग जाओ, प्रयत्न आरम्भ करो, इस क्षान्तिरूपी द्वार को मत छोड़ो । और फिर भी कुलपुत्र ! तुमने यह जो शान्ति-विमोक्ष में विहार प्राप्त किया है, फिर भी इन अशान्त, अप्रशान्त विभिन्न क्लेशों के समुदाचार करने वाले विविध वितर्कों से अवरुद्ध चित्त वाले, अज्ञानी (बाल) पृथग्जनों को सोंचो, अपनाओ । फिर कहा—कुलपुत्र ! पूर्व प्रणिधान को याद करो और सत्त्वों को अर्थ प्राप्त कराने तथा ज्ञानमुख की अचिन्त्यता को भी । पुनः कुलपुत्र ! यह तो सभी धर्मों की धर्मता है । तथागतों की उत्पत्ति होने अथवा उत्पत्ति न होने से यह धर्मता और धर्मधातु की स्थिति तो स्थित ही है । जैसे कि सर्वधर्मशून्यता तथा सर्वधर्मों की अनुपलब्धि है । इससे केवल तथागत ही प्रभावित नहीं होते, श्रावक तथा प्रत्येकबुद्ध सभी इस अविकल्प-धर्मता को प्राप्त करते हैं ।

पुनः कुलपुत्र ! हमारे शरीर की अप्रमाणता, ज्ञान की अप्रमाणता, बुद्धक्षेत्र की अप्रमाणता, ज्ञान के अभिनिर्हार की अप्रमाणता, प्रभामण्डल की अप्रमाणता तथा स्वराङ्गविशुद्धि की अप्रमाणता को देखो । तुम भी उसी प्रकार का अभिनिर्हार उत्पन्न करो । और भी कुलपुत्र ! यह तो एक ही प्रकाश है जो कि सभी धर्मों का निर्विकल्प आलोक है । कुलपुत्र ! तथागतों के इस प्रकार के धर्मालोक तो पर्यन्तगामी होंगे, अपर्यन्तकृत तथा अपर्यन्त सम्बद्ध हो जायेंगे, जिनकी संख्या, गणना, प्रमाण, उपमा तथा तुलना भी नहीं है । उनको जानने के लिए अभिनिर्हार उत्पन्न करो । कुलपुत्र ! दशों दिशाओं की अप्रमाणक्षेत्रता को, अप्रमाण सत्त्वता को तथा अप्रमाण धर्म विभक्तता को देखो । उन सब की गणना करो, तथावत् अभिनिर्हार उत्पन्न करो । हे जिनपुत्र ! इस प्रकार की भूमि को प्राप्त बोधिसत्त्व को वे भगवान् बुद्ध इस प्रकार प्रमुख, अप्रमेय, असंख्य ज्ञान के अभिनिर्हार के द्वारों का उपसंहार करते हैं, जिन ज्ञान के अभिनिर्हार-द्वारों से बोधिसत्त्व अप्रमाण ज्ञान की विभक्ति से अभिनिर्हार कर्म का निष्पादन करते हैं । हे जिनपुत्र ! तुमको अधिमुक्ति प्राप्त करनी है, तुमको अवबोध करना है । यदि वे भगवान् बुद्ध द्वारा उन बोधिसत्त्वों को इस प्रकार सर्वज्ञज्ञान अभिनिर्हार के द्वारों पर प्रविष्ट न कराया जाय तो उसका वहीं परिनिर्वाण हो जायेगा और सभी सत्त्वों के कार्य भी विच्छिन्न हो जायेंगे ।” ऐसा विस्तार से कहा गया है । आर्यविमलकीर्तिनिर्देश तथा गयाशीर्ष में जो कहा गया है, वह इससे विरुद्ध ही हो जायेगा, क्योंकि वहाँ सामान्य रूप से ही कहा गया है ।

आर्यसर्वधर्मसंग्रहवैपुल्य में जो कहा है उसका भी विरोध ही हो जायेगा । उस विषय में कहा गया है—“हे मञ्जुश्री ! सद्धर्म के प्रतिक्षेप-कर्म का आवरण सूक्ष्म



है। मञ्जुश्री ! जो कोई तथागत के द्वारा कहे गये किसी धर्म में अच्छी संज्ञा उत्पन्न करता है, और किसी में अशोभन संज्ञा उत्पन्न करता है, वह सद्धर्म पर प्रतिक्षेप करता है। उस धर्मप्रतिक्षेप करनेवाले से तथागत पर आक्षेप हो जाता है।” ऐसा विस्तार से कहने के बाद फिर बोले—“हे मैत्रेय जो इन बोधिसत्त्वों की संबोधि के लिये षट्पारमिता का समुदागम ( सम्यक्सिद्धि ) करता है, उसको वे अज्ञानी पुरुष इस प्रकार कहेंगे कि—बोधिसत्त्व को प्रज्ञापारमिता में ही शिक्षित करना चाहिए, शेष पारमिताओं से क्या ? वे दूसरी उपायपारमिता को दूषित मानते हैं। अजित ! ( आप ) इसको क्या समझ रहे हैं ? क्या वह काशिराज दुर्बुद्धि था ? जिसने कबूतर के लिए अपना मांस बाज को दे दिया। मैत्रेय ने कहा, भगवान् ! यह नहीं है। भगवान् ने कहा—मैत्रेय ! बोधिसत्त्वचर्या का आचरण करते समय मैंने जिन षट्पारमिताओं से युक्त कुशलमूलों का अर्जन किया, क्या उन कुशलमूलों ने हानि पहुँचायी ? मैत्रेय ने कहा, भगवान् ! यह तो नहीं। भगवान् ने कहा हे अजित ! आप तो साठ कल्पों तक दानपारमिता का सम्यक् अनुष्ठान करते रहे। साठ कल्पों तक शीलपारमिता तथा साठ कल्पों तक प्रज्ञापारमिता का अनुष्ठान करते रहे। उस पर अज्ञानी पुरुष इस प्रकार कहेंगे कि एक ही नय से बोधि हो सकती है, जैसे कि शून्यतानय से ही।” ऐसा विस्तार रूप से कहा गया है। **वैरोचनाभिसम्बोधि** में भी कहा गया है—“यह सर्वज्ञ का ज्ञान तो करुणा की जड़ वाला, बोधिचित्त के हेतु से युक्त तथा उपाय-पर्यवसान वाला है।” इस-लिए दोनों का सर्वदा ही बोधिसत्त्वों को सेवन करना चाहिये।

इस प्रकार तथागत का अप्रतिष्ठित निर्वाण भी सिद्ध होता है। जैसे कि दान आदि उपाय के द्वारा रूपकाय, क्षेत्र, परिवार आदि महाभोग की फल सम्पत्ति का परिग्रहण करने से भगवान् के परिनिर्वाण में भी स्थिति नहीं होगी, प्रज्ञा के द्वारा सभी विपर्यासों का सम्यक् प्रहाण हो जाने से संसार में नहीं रहेगा, क्योंकि संसार का मूल तो विपर्यास है। इस प्रज्ञा तथा उपाय के स्वरूप वाले प्रतिपत्ति से समारोप तथा अपवाद के अन्तों का परिहार करके मध्यम-मार्ग का उद्भव होता है क्योंकि प्रज्ञा से समारोप अन्त का वर्जन होता है और उपाय से अपवाद अन्त का प्रहाण। इसलिए **आर्यधर्मसंगीति** में कहा गया है—“सुलक्षण तथा अनुव्यञ्जन रूपकाय के परिनिष्पादन में अभिमत होते हैं न कि धर्मकाय के अभिसमय मात्र में अभिरत।” पुनः कहा—प्रज्ञा तथा उपाय से उत्पादित तथागतों की सम्भावना अन्य प्रत्ययों पर अपेक्षित जाननी चाहिए।

फिर कहा—“धर्म को जहाज की भाँति जानने वालों के द्वारा धर्मों ही का प्रहाण करना चाहिए, अधर्म का तो और पहले ही।” यह तो विपरीत में अभिनिवेश



का प्रहाण कराने के अभिप्राय से 'प्रहाण करना चाहिए' ऐसा कहा गया न कि प्रयोजन सिद्ध करने के लिए भी आश्रय नहीं लेना चाहिये। फिर जैसा कहा गया है कि धर्म का परिग्रहण करना चाहिये पर उद्ग्रहण नहीं करना चाहिये। इसका अर्थ यह है कि—विपरीत मार्ग से ग्रहण नहीं करना चाहिए। और जो कहीं पर दान आदि संसार का फल कहा गया है, वह तो प्रज्ञा से रहित दान आदि के पूर्ववर्णित उतने ही कुशल-मूल से संतुष्ट होने वालों के विषय में श्रेष्ठ कुशलमूलों पर प्रोत्साहित करने के लिए है। यदि ऐसा नहीं होता तो **आर्यविमलकीर्तिनिर्देश** आदि पूर्वोक्त सब विरुद्ध ही हो जायेगा। इसलिए यह सिद्ध हुआ कि—प्रज्ञा तथा उपाय दोनों का ही सेवन करना चाहिये।

वहाँ प्रज्ञा से परिगृहीत दान आदि 'पारमिता' का नाम प्राप्त करते हैं, अन्यथा नहीं। अतः दान आदि की परिशुद्धि के लिए समाधि में स्थित होकर प्रज्ञा उत्पन्न करने के लिए यत्न करना चाहिये।

अब वहाँ पहले श्रुतमयी प्रज्ञा उत्पन्न करनी चाहिए। तब उससे आगम के अर्थ का अवधारण होता है, उसके बाद चिन्तामयी प्रज्ञा के द्वारा नीतार्थ तथा नेयार्थों का भेदन करते हैं। तब उससे निश्चय करके भूत अर्थ की ही भावना करनी चाहिये, न कि अभूत अर्थ की। अन्यथा विपरीत की भावना और विचिकित्सा का भी निवारण न होने से सम्यक् ज्ञान का उदय नहीं होगा। इसलिए भावना व्यर्थ हो जायेगी, जैसे कि तीर्थिकों की भावना। जैसा कि भगवान् ने **समाधिराज** में भी कहा है—

“यदि धर्मों में नैरात्म्य का प्रत्यवेक्षण हो, और उसका प्रत्यवेक्षण करके यदि भावना करे तो वही फल ( रूपी ) निर्वाण की प्राप्ति का हेतु है। जो अन्य हेतु हैं, वे तो शान्ति के लिए नहीं होते।”

इसलिए चिन्तामयी प्रज्ञा के द्वारा युक्ति तथा आगम से परोक्षण करके सम्यक् ( तत्त्व या ) वास्तविक स्वरूप की भावना करनी चाहिये। वस्तुओं का स्वरूप परमार्थतः अनुत्पाद ही है, यह युक्ति तथा आगम से निश्चित किया गया है। उसमें आगम से जैसा कि **आर्यधर्मसङ्गीति** में कहा गया है—“अनुत्पाद ही सत्य है, उत्पाद आदि अन्य धर्म तो असत्य हैं।” यह भी परमार्थ के अनुकूल होने से अनुत्पाद सत्य है, ऐसा कहा गया है। परमार्थतः न उत्पाद है और न अनुत्पाद, क्योंकि वह सभी व्यवहारों से परे है। फिर उसीमें कहा गया है—“कुलपुत्र ! लोक की स्थिति उत्पाद तथा निरोध के अभिनिवेश पर है। इसलिए महाकरुणावान् तथागत ने जगत् के भय-स्थानों का निवारण करने के लिए व्यवहारवश कहा था कि 'उत्पाद होता है, निरोध



होता है', न कि ( परमार्थतः ) इसमें किसी भी धर्म का उत्पाद होता है।" आर्यबुद्ध-सङ्गीति में भी कहा गया है—“योनिशः पृच्छा क्या है ? योनि क्या है ? कहा गया कि अनुत्पाद योनि है, उसकी पृच्छा योनिशःपृच्छा है। फिर उसमें कहा—“सभी धर्म चकारमुख हैं, क्योंकि नाश तथा उत्पाद से रहित है। ( और ) सभी धर्म अभाव-मुख हैं, क्योंकि स्वभावता से शून्य हैं। आर्यसत्यद्वयविभाग में भी—“अनुत्पाद समता होने से सभी धर्मों की समता है”, ऐसा कहा गया है। प्रज्ञापारमिता में भी कहा गया है—“हे सुभूति ! रूप तो रूपस्वभाव से शून्य है, विज्ञानपर्यन्त विज्ञान के स्वभाव से शून्य है, क्योंकि स्वलक्षण-शून्यता के आधार पर है।

हस्तिकक्षय में भी कहा गया है—

“जिसका उत्पाद सम्भव हो, ऐसी कोई भी वस्तु प्राप्त नहीं है। असम्भव वस्तुओं में अज्ञानी लोग सम्भव की इच्छा करते हैं।”

पितापुत्रसमागम में भी कहा गया है—“ये सभी धर्म त्रिकाल में समता से ही समान हैं। अतीत काल में भी सभी धर्म स्वभावोपरहित थे, वर्तमान काल पर्यन्त स्वभाव से रहित हैं ” इस प्रकार आगम से परीक्षण करना चाहिये।

युक्ति के द्वारा स्थिर किये गये आगम के अर्थों को अन्यो के द्वारा अन्यथा कर सकना सम्भव नहीं है। इसलिए युक्ति से भी परीक्षण करना चाहिये। अब संक्षेप में युक्ति कही जा रही है। वस्तुओं की उत्पत्ति विना हेतु के होगी अथवा हेतु से ? कभी-कभी ही दिखाई पड़ने से विना हेतु के उत्पाद नहीं होगा। यदि कारण की अपेक्षा न होगी तो अन्तर नहीं हो सकेगा, इसलिए उत्पाद-काल की भाँति सदा और सर्वत्र वस्तुएँ क्यों न होने लगेंगी ? अभाव काल से भी अन्तर न होने के कारण उत्पत्ति के समय में भी नहीं होंगी, तो इस प्रकार हेतु के विना (उत्पाद) उचित नहीं है। सहेतु से भी ( उत्पाद नहीं है ), क्योंकि जैसा तीर्थिकों ने ईश्वर आदि नित्य-हेतु कल्पित किया है, उससे भी वस्तु उत्पन्न नहीं हो सकती, क्योंकि उत्पाद क्रमशः दिखाई देते हैं। अवि-कल हेतुओं के फल का क्रमशः उत्पन्न होना उचित नहीं है, क्योंकि वह निरपेक्ष है। स्वयं समर्थ ईश्वर आदि को अन्य की अपेक्षा नहीं होती, क्योंकि नित्य होने के कारण अन्यो के उपकार की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। अनुपकारी में अपेक्षा का योग नहीं होता। इसीलिए ईश्वर आदि की सर्वसामर्थ्यो से शून्य होने के कारण बन्ध्यापुत्र आदि की भाँति निःस्वभावता ही है। वस्तु अर्थक्रियासमर्थ होने के कारण वह ( निरापेक्षतः ) किसी भी कार्य को क्रमशः उत्पन्न करने में समर्थ नहीं है, जैसा कि पहले विचार किया गया है। युगपद् भी (उत्पाद) नहीं होगा, क्योंकि इस प्रकार सभी कार्यों को युगपद् उत्पन्न करके, बाद में भी यदि वह वैसा ही उत्पाद कर सके, तब फिर से भी समर्थस्वभाव की अनुवृत्ति



होने से पहले जैसी कार्य की उत्पत्ति की सम्भावना होने लगेगी। अनुवृत्ति न होने पर पूर्वस्वभाव का परित्याग कर देने से अनित्यता की सम्भावना होने लगेगी।

इसलिए नित्य नाम की कोई भी वस्तु नहीं है। इसीलिए भगवान् ने कहा था कि “हे महामते ! आकाश, निरोध, निर्वाण आदि अकृत वस्तुओं पर अभिनिवेश करके समारोप होता है, वही असत् का समारोप है।” इस प्रकार इनका नित्य से उत्पाद युक्त नहीं है। अनित्य से भी नहीं है, क्योंकि इनमें भूत और भविष्य के अवस्तु होने से उससे उत्पाद अयुक्त है, क्योंकि बिना हेतु के उत्पाद की सम्भावना होने लगेगी। समान तथा असमान काल में उससे उत्पाद न होने से वर्तमान से भी उत्पाद नहीं होगा। इस प्रकार उत्पादकों का काल समान से नहीं होता है, क्योंकि हेतु के स्वभाव की भाँति कार्य की भी तत्समानकालता निष्पन्न होने लगेगी। भिन्न काल से भी उत्पत्ति नहीं होती, क्योंकि यदि कालान्तर के व्यवधान से उत्पाद होने लगेगा तो अतीत आदि से उत्पत्ति होने लगेगी। अव्यवधान से भी उत्पाद मानने पर पूरी तरह यदि व्यवधान हो तो एक ही क्षण में सभी क्षणों का अनुप्रवेश होगा, अतः कल्प के भी क्षणमात्र में हो जाने का प्रसङ्ग होगा। यथा परमाणुओं का सभी ओर संयोग होने पर तो पिण्ड के भी अणु मात्र होने का प्रसङ्ग आ जायेगा। यदि एक अंश से संयोग हो तो क्षण के सावयव हो जाने की सम्भावना होगी। स्वतः भी उत्पन्न नहीं होते, क्योंकि निहेतुक पक्ष में ही इस पक्ष का संग्रह हो जायेगा और स्वयं अपने में ही कर्ता का विरोध होगा। दोनों से भी ( उत्पाद सम्भव ) नहीं, क्योंकि दोनों पक्षों में होने वाले दोषों की सम्भावना होने लगेगी।

इसलिए ये सभी भाव परमार्थतः अनुत्पन्न ही हैं। संवृत्ति में उत्पाद के विद्यमान होने से आगम आदि का विरोध नहीं होगा, जैसा कि भगवान् ने भी कहा है—

“वस्तुओं की उत्पत्ति संवृत्ति से है। परमार्थतः वे निःस्वभाव हैं। निःस्वभाव पर होने वाली जो भ्रान्ति है, वही सम्यक् संवृत्ति मानी गयी है।”  
यही युक्ति भगवान् को अभीष्ट है, क्योंकि शालिस्तम्ब आदि सूत्रों में स्वतः, परतः, उभयतः और बिना हेतु के उत्पाद का निषेध किया गया है।

अथवा इस प्रकार युक्ति से परीक्षण करना चाहिये। भाव दो प्रकार के हैं—रूपी तथा अरूपी। इनमें जो घड़ा आदि रूपी हैं, वे तो अणुशः विभिन्न रूप वाले होने के कारण एक स्वभाव के नहीं हैं। आगे-पीछे अवस्थित अणु पूर्व आदि दिग्भेदों से पृथक् किये जाने पर सिद्ध नहीं होते हैं। अणुओं के संचयात्मक होने के कारण अनेक-स्वभाव भी ठीक नहीं हैं। और न तो एक तथा अनेक स्वभाव के अतिरिक्त वस्तु का कोई अन्य स्वभाव है। अतः ये रूपवान् भाव तो स्वप्न आदि में उपलब्ध रूप



आदि की भाँति परमार्थतः निःस्वभाव ही हैं। यह तो भगवान् ने आर्यलङ्कावतार में कहा भी है—“और फिर महामते ! गाय की सींग भी अणुओं में विभक्त करने पर नहीं रह सकती है। अणु भी विभक्त करने पर अणुओं के लक्षण से युक्त नहीं रह पायेंगे।”

और जो अरूपी हैं, वे भी उसी प्रकार परीक्षण करने पर निःस्वभाव ही हैं। ऐसा मानना चाहिये कि जैसे बाहर के नील आदि अर्थ, न होने के बल से विज्ञान आदि अरूपी स्कन्ध ही नील आदि के रूप में अवभासित होते हैं। भगवान् ने भी कहा है कि—

“बाह्य रूप नहीं हैं। अपना चित्त ही बाहर दिखाई देता है।” इसलिए नील आदि विभिन्न आकारों में दिखाई देने के कारण तथा ग्राह्य-ग्राहक के आकारों में दिखाई देने से इनका एक स्वभाव होना ठीक नहीं है, क्योंकि एक और अनेक में विरोध होने से एक का अनेक के स्वभाव का होना ही अनुचित है। किसी एक का स्वभाव असिद्ध होने पर अनेकरूपता भी उचित नहीं है, क्योंकि अनेक तो एक का समूह ही है।

यदि ये झूठे ही रूप आदि के आकार प्रतीत होते हैं, ऐसा मानते हैं तो विज्ञान भी असत्य हो जायेगा, क्योंकि विज्ञान भी उसके स्वरूप से भिन्न नहीं होगा। स्वयं प्रकाशमान स्वरूप के अतिरिक्त विज्ञान का कोई अन्य रूप नहीं है। रूप आदि अपने आप ही आभासित होते हैं, तो ज्ञान के स्वरूप को प्राप्त वे भी मिथ्या हो जायेंगे। अतः सारे ही विज्ञान को मिथ्या मानना होगा। इसीलिए ‘विज्ञान तो माया की भाँति है,’ ऐसा भगवान् ने कहा है। इसलिए एक तथा अनेक स्वभाव से, शून्य होने के कारण ये सभी वस्तुयें परमार्थतः सत्य नहीं हैं, ऐसा निश्चित है। यही अर्थ भगवान् ने आर्यलङ्कावतार में कहा है—

“जैसा दर्पण में रूप एकत्व तथा अन्यत्व से विवर्जित है, और दिखाई तो देता है, किन्तु वहाँ होता नहीं, वैसी ही वस्तुओं की स्थिति है”

‘एकत्वान्यत्ववर्जितम्’ इसका अर्थ है—एकत्व तथा अन्यत्व से रहित। फिर कहा गया है—

“बुद्धि के द्वारा विवेचित के स्वभाव का ग्रहण नहीं हो पाता है। इस लिए वे निरभिलाष तथा निःस्वभाव भी प्रदर्शित किये गये हैं।”



इस प्रकार चिन्तामयी प्रज्ञा के द्वारा भूतार्थ का परीक्षण करके उस का प्रत्यक्ष करने के लिए भावना-मयी प्रज्ञा को उत्पन्न करना चाहिए। बहुश्रुत आदि मात्र होने से अर्थ प्रत्यक्ष नहीं हो सकता है, ऐसा आर्यरत्नमेघ आदि में कहा गया है। प्रतिपत्ति करने वालों को ही अनुभव होता है। अतिस्पष्ट ज्ञान-आलोक के उदय के बिना सम्यक् (अर्थ) पर ढका हुआ तम (अन्धकार) का आवरण दूर नहीं होता। अनेक बार भावना करने पर अभूत-अर्थ में भी अतिस्फुट ज्ञान उत्पन्न होता है। जैसे कि अशुभ तथा पृथ्वीकृत्स्न आदि की समापत्ति करने वालों को ज्ञान होता तो फिर भूतार्थ के लिये कहना ही क्या ? इस प्रकार की गयी भावना का फल परिस्फुटज्ञान है, इसलिये सफलता है ऐसा भगवान् ने समाधिराज में कहा है—

“आप लोगों को अवबोधित करता हूँ प्रतिवेदन करता हूँ कि जैसे-जैसे मनुष्य अनेक बार परीक्षण करेगा वैसे-वैसे उस पर स्थित उन विकल्पों से चित्त आश्रित होता जायेगा।”

ऐसा विस्तार से कहा गया है। इसलिए तत्त्व को साक्षात्कार करने का इच्छुक भावना में प्रवृत्त होता है।

इसमें प्रथम ही योगी को चित्त स्थित करने के लिए शमथ सिद्ध करना चाहिए। चित्त की जल के समान चञ्चल होने से शमथ के आधार के बिना स्थिति नहीं है। असमाहित-चित्त से यथाभूत जानना सम्भव नहीं है। भगवान् ने कहा है कि—“समाहित चित्त के द्वारा यथाभूत को जानता है।” वह शमथ-लाभ आदि कामनाओं में निरपेक्ष सम्यक् प्रवृत्ति में स्थित, दुःखादि अधिवासना के स्वभाव वाले, वीर्य प्रारम्भ किये हुये (व्यक्ति) को शीघ्रता से सिद्ध होता है। इसलिए आर्यसंधिनिर्माचन आदि में भी दान आदि उत्तरोत्तर के कारण के रूप में कहे गये हैं।

इस प्रकार शील आदि शमथ-सम्भारों में स्थित रहकर मन के अनुकूल स्थान में सभी बुद्धों तथा बोधिसत्त्वों को प्रणाम आदि करके, पाप की देशना तथा पुण्य का अनुमोदन करके, सकल जगत् के उद्धार के आशय वाला महाकृपा को अभिमुख करके, शरीर सीधा करके, सुखासन पर बैठकर, पर्यङ्कबांधकर समाधि को अभिनिष्पन्न करे।

वहाँ पहले संक्षेप में जिस वस्तु का जितने प्रकार से विचार करना चाहिए, जो सभी वस्तुओं का संग्रह हो जाता है, उस पर चित्त प्रतिष्ठित करना चाहिए। संक्षिप्त



वस्तु रूपी तथा अरूपी भेद से दो प्रकार की है। आदिकर्मिक के विक्षेप दोष को दूर करने के लिए फिलहाल संक्षिप्त का आलम्बन करना उचित है। जब मनस्कार पर विजय प्राप्त कर लेता है, तब स्कन्ध, धातु आदि भेदों से संशोधन करके विस्तार का भी आलम्बन होता ही है। जैसा कि आर्यसन्धिनिर्माचन आदि में कहा गया है कि—योगियों का अठारह प्रकार की शून्यता के आलम्बन आदि के भेद से अनेक प्रकार का आलम्बन है।

यहीं पर भगवान् ने सत्त्वों के उपकारहेतु रूपी, अरूपी आदि के भेद से संक्षेप मध्य तथा विस्तार के द्वारा वस्तुओं का भेद अभिधर्म आदि में कहा है। और उस वस्तु को अध्यारोप तथा अपवाद का परिहार करने के लिए स्कन्ध, धातु आदि के संग्रह के रूप में गिनना चाहिये। तब सर्ववस्तुओं के संग्रह का निश्चय करके उसी पर चित्त को पुनः पुनः प्रवृत्त करना चाहिये।

जब बीच में राग आदि से चित्त बाहर की ओर विक्षिप्त हो जाये, तब विक्षेप को जानकर अशुभ आदि की भावना से विक्षेप को शान्त करके पुनः उसी पर बारंबार चित्त को प्रवृत्त करना चाहिये। अशुभ आदि की भावना के क्रम यहाँ विस्तार के भय से नहीं लिखे गये हैं। जब चित्त को वहाँ अनभिरत देखे, समाधि के गुणों को देखने से उस पर अभिरति की भावना करे, विक्षेप के दोषों के दिखलाई पड़ने से अरति को शान्त करना चाहिए। फिर जब स्त्यान तथा मिद्ध से अभिभूत होने के कारण आलम्बन ग्रहण के अस्पष्ट होने से चित्त लीन हो, तब अलोक संज्ञा की भावना के द्वारा अथवा परममुदित वस्तु बुद्ध, आदि के गुणों का मनस्कार के द्वारा लय का उपशमन करके उसी आलम्बन को और भी दृढता के साथ ग्रहण करे।

जब पूर्व काल के हँसने, रमण आदि के स्मरण से बीच-बीच में चित्त में औद्धत्य दिखलाई पड़े, तब अनित्यता आदि संवेगों पर मनस्सिकार से औद्धत्य को प्रशान्त करना चाहिये। फिर उसी आलम्बन पर चित्त की अभिसंस्कार के बिना प्रवृत्ति कराने में प्रयत्न करना चाहिये। जब लय और औद्धत्य दोनों से रहित होने के कारण चित्त समप्रवृत्त तथा स्वरसवाही दिखलाई पड़े, तब आभोग को शिथिल करके उपेक्षा करनी चाहिये। जब समप्रवृत्ति होने पर यत्न किया जाता है, तब चित्त विक्षेप में पड़ जाता है।

जब उसी आलम्बन में अनभिसंस्कार में चित्त जबतक इच्छानुसार प्रवृत्त हो जाता है, तब ऐसा जानना चाहिए कि 'शमथ' निष्पन्न हो गया है। शमथ का स्वभाव तो चित्त की एकाग्रतामात्र है, यही सभी शमथों का सामान्य-लक्षण है। इसका



आलम्बन तो अनिश्चित ही है। इस मार्ग को प्रज्ञापारमिता आदि में भी भगवान् ने कहा है—जैसा कि “वहाँ चित्त स्थापित करता है, संस्थापित करता है, अवस्थापित करता है, उपस्थापित करता है, दमन करता है, शान्त करता है, व्युपशान्त करता है, एकाग्र करता है, समाहित करता है,” इन नव पदों से कहा गया है।

वहाँ ‘स्थापयति’ का तात्पर्य है चित्त को आलम्बन से बाँधना, ‘संस्थापयति’ का तात्पर्य है उसी आलम्बन पर प्रबन्ध के साथ प्रवृत्त करना। ‘अवस्थापयति’ का तात्पर्य है विक्षेप को जान कर परिहार करता है। ‘उपस्थापयति’ का तात्पर्य है विक्षेप-प्रहाण करते हुये आगे आगे पुनः उसी आलम्बन पर स्थापित करता है। ‘दमयति’ का तात्पर्य है रति को उत्पन्न करता है। ‘शमयति’ का तात्पर्य है विक्षेप के दोषों को देखकर अरति का प्रशमन करता है। ‘व्युपशमयति’ का तात्पर्य है स्त्यान-मिद्ध आदि उभरे हुये को प्रशान्त करता है। ‘एकोतीकरोति’ का तात्पर्य आलम्बन में अभिसंस्कार के बिना प्रवृत्ति कराने में यत्न करता है। ‘समादधाति’ का तात्पर्य है चित्त-समता हो जाने पर उपेक्षा करता है। अर्थात् समन्वाहरण करता है, ये इन पदों के अर्थ हैं, जिनको आर्यमैत्रेय तथा पूर्ववर्ती आचार्यों ने किया है।

संक्षेपतः सभी समाधियों के छः दोष होते हैं कौसीद्य, आलम्बन-संप्रमोष, लय, औद्धत्य, अनाभोग तथा आभोग। इनके प्रतिपक्ष में आठ प्रहाण-संस्कारों की भावना करनी चाहिये। वे हैं—श्रद्धा, छन्द, व्यायाम, प्रश्रब्धि, स्मृति, सम्प्रजन्य, चेतना तथा उपेक्षा। इनमें से प्रथम चार कौसीद्य के प्रतिपक्ष हैं। इस प्रकार समाधि के गुणों में अभिसम्प्रत्यय-लक्षणयुक्त श्रद्धा के कारण वहाँ योगी की अभिलाषा उत्पन्न होती है। तत्पश्चात् अभिलाषा से (योगी) वीर्य आरम्भ करते हैं, उस वीर्य के बल से काय तथा चित्त की कर्मण्यता प्राप्त करते हैं। उससे काय तथा चित्त की प्रश्रब्धि से कौसीद्य की निवृत्ति होती है। इसलिए श्रद्धा आदि की भावना कौसीद्य के प्रहाण-हेतु करनी चाहिये। स्मृति तो आलम्बन-सम्प्रमोष का प्रतिपक्ष है। सम्प्रजन्य लय तथा औद्धत्य का प्रतिपक्ष है, क्योंकि इससे लय तथा औद्धत्य का सम्यग् रूप से बोध होता है। लय और औद्धत्य का प्रशमन न होने के समय अनाभोग दोष होता है। इसके प्रतिपक्ष के रूप में चेतना की भावना करनी चाहिए। लय तथा औद्धत्य का प्रशमन होने पर जब चित्त प्रशमवाही होता है, तब आभोग दोष होता है। उसके प्रतिपक्ष में उस समय उपेक्षा की भावना करनी चाहिए।

इन आठ प्रहाण-संस्कारों से युक्त समाधि परमकर्मण्य होता है। उससे ऋद्धि आदि गुणों को सिद्ध करता है। इसीसे सूत्रों में कहा गया है कि “आठ प्रहाण संस्कारों से युक्त ऋद्धिपद की भावना करें।” वह चित्त की एकाग्रता उत्तरोत्तर



कर्मण्यता के सम्प्रयोग से और आलम्बन आदि गुणों का विशेषयोग होने से ध्यान, अरूपि-समापत्ति और विमोक्ष आदि के नाम को प्राप्त करती है।

इस प्रकार जब उपेक्षा वेदना से युक्त होती है, और वह सवितर्क तथा सविचार होती है, तब अनागम्य कहलाती है, क्योंकि प्रथम ध्यान का प्रयोग चित्त है। जब काम-तृष्णा तथा पाप-धर्मों से विविक्त हो जाता है, वितर्क, विचार, प्रीति, सुख और अध्यात्म-सम्प्रसाद से युक्त हो जाता है, तब 'प्रथम-ध्यान' कहा जाता है। इससे प्रथम ध्यान वितर्क मात्र से रहित होता है, और 'ध्यानान्तर' कहलाता है। जब वितर्क तथा विचार से रहित और प्रथम ध्यान भूमि की तृष्णा से विविक्त होता है, प्रीति, सुख, अध्यात्म-सम्प्रसाद से युक्त होता है, तब द्वितीय ध्यान कहा जाता है। जब द्वितीय ध्यान भूमि की तृष्णा से विविक्त होता है, सुख, उपेक्षा, स्मृति तथा सम्प्रजन्य से सम्प्रयुक्त होता है, तब तृतीय ध्यान कहा जाता है। जब तृतीय ध्यान भूमि की तृष्णा से विविक्त होता है, अदुःख, असुख, उपेक्षा तथा स्मृति से सम्प्रयुक्त होता है, तब चतुर्थ ध्यान कहा जाता है। इस प्रकार अरूपि-समापत्ति, विमोक्ष, अभिभवायतन आदि से भी आलम्बन तथा आकार आदि के भेदों से जोड़ना चाहिये।

इस प्रकार आलम्बन पर चित्त स्थिर करके प्रज्ञा से विवेचन करना चाहिये, जिससे ज्ञानालोक उत्पन्न होने से सम्मोह के बीज का अत्यन्त प्रहाण होगा, अन्यथा तीर्थिकों की भाँति समाधि मात्र के द्वारा क्लेश प्रहाण नहीं होगा। जैसा कि सूत्र (समाधिराज) में कहा गया है—

“इस समाधि की भावना भले ही की जाये, उससे आत्मसंज्ञा का विनाश नहीं होता, उससे पुनः क्लेश प्रकुपित होंगे, जैसे कि उद्रेक की समाधि-भावना।”

इस विषय में आर्यबुद्धकावतार में संक्षेप में प्रज्ञा की भावना का क्रम कहा गया है—

“चित्तमात्र पर आरुढ़ हो करके, बाह्य अर्थ की कल्पना न करे। तथता के आलम्बन पर स्थिर रहकर, चित्त-मात्र का भी अतिक्रमण करे। चित्तमात्र का अतिक्रमण करके निराभास का अतिक्रमण करे। निराभास में स्थित जो योगी होगा, उसे महायान दिखेगा। अनाभोग की गति शान्त होती है (और वह) प्रणिधानों से विशोधित होती है। श्रेष्ठ नैरात्म्य-ज्ञान को निराभास के द्वारा देखता है।”



इसका यह अर्थ है कि—प्रथम योगी, जो रूपी धर्म बाह्य-अर्थ के रूप में दूसरों के द्वारा परिकल्पित किये गये हैं, उनका विचार करे कि क्या ये विज्ञान से अलग हैं अथवा ये विज्ञान ही हैं, जो उसी प्रकार दिखलायी देता है? जैसे कि स्वप्न की अवस्था में। वहाँ विज्ञान से बाहर परमाणुशः विचार करे और परमाणुओं का भी भागों में परीक्षण करने पर योगी उन अर्थों को नहीं देखेगा। उसे उनके दिखाई नहीं पड़ने से ऐसा प्रतीत होने लगता है कि यह सब तो चित्तमात्र है, बाह्य-अर्थ तो है ही नहीं। उसे ऐसा कहा गया है—“चित्तमात्र पर आरुढ़ होकर बाह्यार्थ की कल्पना न करे।” रूपी धर्म के विकल्पो का प्रहाण करना चाहिए—यह इसका अर्थ है।

उन उपलब्धि लक्षण वाले ( भावों ) का परीक्षण करने पर उनकी अनुपलब्धि हो जाती है। इस प्रकार रूपी धर्मों का विवेचन करके अरूपी का विवेचन करना चाहिये। जो चित्तमात्र रहता है, वह भी ग्राह्य के न होने से ग्राहक संगत नहीं होता, क्योंकि ग्राहक को ग्राह्य की अपेक्षा होती है। इसलिए चित्त ग्राह्य तथा ग्राहक से विविक्त, अद्वय ही है ऐसा विचार करना चाहिये। अद्वय लक्षण है—

“तथता के आलम्बन पर स्थित रहकर (उस) चित्तमात्र का भी अतिक्रमण करना चाहिये।”

ग्राहक आकार का अतिक्रमण करना चाहिए। द्वय का निराभास ही अद्वय ज्ञान पर स्थित होना चाहिए, इसका यह अभिप्राय है।

इस प्रकार चित्तमात्र का भी अतिक्रमण करके, जो द्वय-निराभास ज्ञान है उसका भी अतिक्रमण करे, क्योंकि स्वतः तथा परतः भावों की उत्पत्ति युक्त नहीं है और ग्राह्य तथा ग्राहक मिथ्या ही हैं। उससे भी वे अव्यतिरेक होने से उसका भी सत्यत्व उचित नहीं है, ऐसा विचार करे। वहाँ अद्वय-ज्ञान में भी वस्तुता का अभिनिवेश त्याग देना चाहिये। अद्वय-ज्ञान के निराभास ज्ञान में ही रहना चाहिए, इसका यह अभिप्राय है। ऐसा होने पर वह सभी धर्मों की निःस्वभावता की प्रतिपत्ति में स्थित हो जाता है। उसमें स्थित होने वाले का परमतत्त्व में प्रवेश होने से निर्विकल्प समाधि में प्रवेश हो जाता है।

जब योगी अद्वय-ज्ञान के निराभास-ज्ञान में स्थित हो जाता है, तब परमतत्त्व में स्थित हो जाने से वह महायान को देखता है। जो परमतत्त्व का दर्शन है वही महायान कहलाता है। यही वह परमतत्त्व है, जो सभी धर्मों को प्रज्ञाचक्षु के द्वारा परीक्षण करने वाले को सम्यग् ज्ञान के प्रकाश का उदय होने पर सत्य का दर्शन है। जैसा कि सूत्र में भी



कहा गया है कि—“परमार्थ-दर्शन क्या है ? सभी धर्मों का दर्शन न होना ।” यहाँ इसी तरह का अदर्शन अभीष्ट है न कि आँखों को बन्द किये हुये और जन्म से अन्धों की भाँति प्रत्यय की अपूर्णता अथवा मनसिकार न होने से जो अदर्शन है ।

इसलिये भावों के अभिनिवेश आदि की विपरीतता की वासना का प्रहाण न होने से असंज्ञि-समापत्ति आदि से उठे हुए (व्यक्ति) की तरह योगी अमुक्त ही होगा, क्योंकि भाव आदि में अभिनिवेश के मूलभूत राग आदि क्लेश-समूह पुनः उत्पन्न होते हैं । “राग आदि की जड़ भावों का अभिनिवेश है” ऐसा आर्यसत्यद्वयनिर्देश आदि में भी कहा गया है । अविकल्पप्रवेशधारणी में जो कहा गया है कि—“अमनसिकार से रूप आदि निमित्तों का प्रहाण करता है ।” वहाँ भी प्रज्ञा के द्वारा परीक्षण करने पर जो अनुपलब्धि होती है, वही अमनसिकार का अभिप्राय है, न कि मनसिकार का अभाव मात्र । क्योंकि असंज्ञिसमापत्ति आदि की भाँति अनादि काल से रूप आदि में अभिनिवेश वाले मनसिकार का परित्याग मात्र करने से प्रहाण होता नहीं ।

संशय का प्रहाण न करे तो पूर्वोपलब्ध रूप आदि में अभिनिवेश से मनसिकार का परिवर्जन करना सम्भव नहीं । जैसे कि अग्नि का परिवर्जन न करे तो दाह का परिवर्जन नहीं होता है । इस प्रकार इन रूपादि मिथ्या विकल्पों को कण्टक आदि की भाँति चित्त से अपने हाथों के द्वारा निकाला नहीं जा सकता । फिर कैसे ? संशय के बीजों को हटाने से । वहीं संशय के बीज को योगी को समाधि का आलोक होने पर प्रज्ञा की आँखों से परीक्षण करके, पूर्वतः उपलब्ध तथा उपलब्धिलक्षण प्राप्त रूपादि की अनुपलब्धि होने से रज्जु में सर्प के ज्ञान की भाँति दूर किया जा सकता है, अन्यथा नहीं । उसी प्रकार संशय का बीज दूर होने से रूप आदि निमित्तों के मनसिकार का त्याग किया जा सकता है, अन्यथा नहीं । ऐसा न हो तो समाधि का आलोकन होने से प्रज्ञा की चक्षु से भी न दिखाई पड़ने पर अन्धकूप में स्थित मनुष्य को घर के अन्दर पड़े हुए घट आदि में संशय होता है, उसी प्रकार योगी को भी रूपादि के अस्तित्व का संशय निवृत्त नहीं होता है । उसके निवृत्त न होने से आँखों का तिमिर दोष दूर न कर पाये हुये की भाँति जो अनुचित मिथ्या रूप आदि का अभिनिवेश प्रवृत्त होता रहेगा, और वह किसी के भी द्वारा दूर नहीं किया जा सकेगा ।

इसलिए समाधि के हाथ से मन को पकड़कर अतिसूक्ष्म प्रज्ञारूपी शस्त्र के द्वारा उस चित्त में विद्यमान रूप आदि के प्रति होने वाले मिथ्या-विकल्प के बीजरूपी रोग का निराकरण करना चाहिये । इस प्रकार जड़ से उखाड़े गये वृक्ष भूमि पर नहीं जमते, उसी प्रकार निर्मूल होने से (पुनः) मिथ्या-विकल्प चित्त में उत्पन्न नहीं



होंगे। अतः एव आवरण प्रहाण करने के लिए शमथ तथा विपश्यना (दोनों का) युगनद्ध-वाही मार्ग भगवान् ने निर्दिष्ट किया है, क्योंकि—“वे दोनों अविकल्प-सम्यग्-ज्ञान के हेतु हैं।”

जैसा कि (सूत्र में) कहा गया है—

“शील में स्थित होकर समाधि प्राप्त होती है, समाधि प्राप्त होने पर ही प्रज्ञा की भावना होती है। प्रज्ञा से विशुद्ध ज्ञान होता है और विशुद्ध ज्ञान वाले को शील-सम्पत्ति होती है।”

इस प्रकार जब शमथ के द्वारा आलम्बन में चित्त स्थिर कर दिया जाता है, तब प्रज्ञा के द्वारा विचार करने पर सम्यग्ज्ञान का प्रकाश उत्पन्न होता है। तब आलोक के प्रकाशित होने पर अन्धकार के निरास की भाँति आवरण दूर हो जाता है। अतः ये दोनों आँख तथा प्रकाश की भाँति सम्यग्ज्ञान को उत्पन्न करने में परस्पर अनुकूल स्थित होते हैं। आलोक तथा अन्धकार की भाँति एक का दूसरे से विरोध नहीं है। समाधि अन्धकार के स्वभाव का नहीं है। तब क्या है? चित्त की एकाग्रता के लक्षण वाला है। ‘वह समाहित होकर वास्तविकता को जानता है।’ इस वचन के कारण वह प्रज्ञा से पूर्णतः अनुकूल ही हो जाता है, न कि विरोधी। इसलिए समाहित की प्रज्ञा से परीक्षण करने पर सभी धर्मों की उपलब्धि नहीं होगी, वही परम अनुपलम्भ है। योगियों के उस तरह के अवस्थान के लक्षण तो अनाभोग है, क्योंकि उसके परे अन्य द्रष्टव्य नहीं रह जाता है। ‘शान्त’ तो भाव, अभाव आदि विकल्प के लक्षण वाले सारे प्रपञ्चों का उपशम है।

इस प्रकार जब योगी को प्रज्ञा से परीक्षण करने पर वस्तु का स्वभाव कुछ भी उपलब्ध नहीं होता है, तब उसको भाव-विकल्प नहीं ही होता है, अभाव का विकल्प भी उसमें नहीं ही है। यदि कभी कुछ भाव दिखाई पड़ता भी है, तो ऐसा होने पर उस निषेध से अभाव का विकल्प प्रवृत्त होता है। जब योगी को प्रज्ञाचक्षु के द्वारा परीक्षण करने पर तीनों कालों में भी भाव उपलब्ध नहीं होता, तब प्रतिषेध के द्वारा अभाव पर विकल्प कैसे करे? इस प्रकार अन्य विकल्प भी उस समय उसको नहीं उत्पन्न होते, क्योंकि भाव और अभाव दोनों विकल्पों के द्वारा सभी विकल्प व्याप्त हैं, क्योंकि व्यापक के बिना व्याप्य भी नहीं हो सकता है। इस प्रकार यह तो परम निर्विकल्प योग है। उसमें स्थित योगी के सभी विकल्पों का अस्त हो जाने से क्लेशावरण तथा ज्ञेयावरण सम्यग्रूप से प्रहीण हो जाते हैं। जैसे कि क्लेशावरण के अनुत्पन्न



तथा अनिरुद्ध वस्तुओं पर भाव आदि का विपर्यास मूल कारण है, ऐसा आर्यसत्यद्वय-निर्देश आदि में भगवान् ने कहा है।

इस योगाभ्यास के द्वारा भाव आदि सभी विकल्पों का प्रहाण करने से समस्त भाव आदि विपर्यासों, अविद्यास्वभाव वाले क्लेशावरण के मूलों का प्रहाण हो जाता है, इसलिए मूल का उच्छेद होने से क्लेशावरण का मूल सम्यग् रूप से प्रहीण हो जाता है। जैसा कि आर्यसत्यद्वयनिर्देश में कहा गया है—“मञ्जुश्री ! क्लेशों को कैसे दबाया जा सकता है ? क्लेशों का परिज्ञान कैसे होता है ? मञ्जुश्री ने कहा - परमार्थतः अत्यन्त अजात, अनुत्पन्न तथा अभाव वाले सभी धर्मों पर संवृत्ति से असद्विपर्यास होता है। उस असद्विपर्यास से संकल्प तथा विकल्प होते हैं। उस संकल्प तथा विकल्प से अयोनिशोमनसिकार होता है। उस अयोनिशोमनसिकार से आत्मसमारोप होता है, उस आत्मसमारोप से दृष्टिपर्युत्थान तथा उस दृष्टिपर्युत्थान से क्लेशों का प्रादुर्भाव होता है। देवपुत्र ! परमार्थतः सभी धर्मों को जिसने अत्यन्त अजात, अनुत्पन्न तथा अभाव रूप में ज्ञान होता है, वह परमार्थतः अविपर्यस्त है, जो परमार्थतः अविपर्यस्त है, वह अविकल्प है। जो अविकल्प है, वह योनिशः प्रयुक्त है। जो योनिशः प्रयुक्त है उसको आत्मसमारोप नहीं होता है। जिसको आत्मसमारोप नहीं होता है, उसको दृष्टिपर्युत्थान नहीं होता है। परमार्थतः निर्वाण-दृष्टि-पर्यन्त सारे दृष्टिपर्युत्थान भी नहीं होते हैं। इस प्रकार अनुपाद में स्थित उसके क्लेशों को अत्यन्त विनीत देखना चाहिए। वह तो ‘क्लेश-विनय’ कहा जाता है, और जब हे देवपुत्र ! क्लेशों को निराभास ज्ञान के द्वारा परमार्थतः अत्यन्त-शून्य, अत्यन्ताभाव और अत्यन्त निर्निमित्त अच्छी तरह से जान लेता है, तब हे देवपुत्र ! क्लेशों का परिज्ञान हो जाता है। हे देवपुत्र ! और जैसे जो दुष्ट साँप की जाति जानता है, वह उस दुष्ट साँप के विष को शान्त करेगा। हे देवपुत्र ! उसी प्रकार जो क्लेशों के गोत्र को अच्छी तरह से जानता है उसके क्लेश शान्त हो जाते हैं। देवपुत्र ने कहा—हे मञ्जुश्री ! क्लेशों का गोत्र क्या है ? मञ्जुश्री ने कहा—हे देवपुत्र ! परमार्थतः अत्यन्त अजात, अनुद्भूत और अभाव वाले सभी धर्मों पर जो परिकल्पनाएँ हैं, वे ही क्लेशों के गोत्र हैं।” ऐसा विस्तार से कहा गया है।

भाव आदि के विपर्यास से सभी विपर्यासों के व्यास होने से उसके प्रहाण पर सभी विपर्यासों का प्रहाण हो जाता है। अतः ज्ञेयावरण का भी इससे सम्यग्रूप से प्रहाण हो सकेगा, क्योंकि—आवरण तो विपर्यास के लक्षण वाले हैं। ज्ञेयावरण का प्रहाण करने पर प्रतिबन्ध न होने से सूर्यकिरण ( जिस प्रकार ) बादल आदि से रहित आकाश में सर्व निर्बाध फैलती है, उसी प्रकार योगी के प्रत्यक्ष में ज्ञान का प्रकाश फैलता है।



इस प्रकार विज्ञान तो वस्तु-स्वभाव के प्रकाशस्वरूप है, और वह वस्तु उपस्थित होने पर भी प्रतिबन्ध होने से प्रकाशित नहीं होती। प्रतिबन्ध न होने पर तो अचिन्त्य विशेष शक्ति प्राप्त होने से क्यों सभी वस्तुओं को यथावत् प्रकाशित नहीं करेगा ? अतः संवृति तथा परमार्थ के रूप से सभी वस्तुओं का यथावत् परिज्ञान होने से सर्वज्ञता प्राप्त होती है। इसलिए यही आवरण के प्रहाण तथा सर्वज्ञता प्राप्ति का परम मार्ग है।

श्रावक आदि का जो मार्ग है, उससे सभी विपर्यासों का प्रहाण न हो पाने से दोनों आवरणों का सम्यक् प्रहाण नहीं हो पायेगा। जैसा कि आर्यलङ्कावतार में कहा गया है—“अन्य लोगों को तो सभी धर्मों को कारण के अधीन देखकर अनिर्वाण में भी निर्वाण की बुद्धि हो जाती है, क्योंकि हे महामते ! धर्मनैरात्म्य न देखने से इनको मोक्ष नहीं होता है। हे महामति ! श्रावकयान के अभिसमय के गोत्र वाले को तो अनिर्याण होने पर भी निर्याण की बुद्धि हो जाती है। हे महामते ! यहाँ कुदृष्टि से व्यावर्तन करने के लिये प्रयास करना चाहिए।” इसीलिये अन्य मार्ग के द्वारा मोक्ष न होने से ‘एक ही यान है,’ ऐसा भगवान् ने कहा है।

केवल बालों के द्वारा बाल-अवतारणा की अभिसन्धि से श्रावक आदि के मार्ग का उपदेश किया गया। जैसे कि—यह तो स्कन्ध आदि धर्म मात्र है, न कि आत्मा, इस प्रकार भावना करते हुये श्रावक पुद्गलनैरात्म्य में प्रवेश करता है। त्रैधातुक विज्ञप्ति मात्र है, इस प्रकार भावना करते हुये विज्ञान-वादियों के बाह्यार्थ नैरात्म्य में प्रवेश करता है। इस रीति से इस अद्वय ज्ञान का भी नैरात्म्य में प्रवेश करने के कारण परम तत्त्व (नैरात्म्य) में प्रविष्ट होता है, न कि विज्ञप्तिमात्रता में प्रवेश ही तत्त्व में प्रवेश है। जैसा पहले कहा गया है। आर्यलोकोत्तरपरिवर्तन में भी कहा गया है कि—“और भी हे जिनपुत्र ! त्रैधातुक तो चित्तमात्र में अवतरित होता है, और वह चित्त भी अनन्त तथा अमध्य के रूप में अवतरित होता है।” उत्पाद और भङ्ग इन लक्षणों वाले दोनों अन्तों तथा स्थिति लक्षण वाले मध्य के न होने से चित्त अनन्त तथा अमध्य है। इसलिए अद्वय-ज्ञान में प्रवेश ही तत्त्व में प्रवेश है।

योगियों की वह अवस्था किससे विशुद्ध होगी ऐसा कहें तो (उत्तर) कहा है कि—“प्रणिधानों के द्वारा विशोधित होगी।” महाकरुणा के द्वारा जो समस्त सत्त्वों का अर्थ करने के लिए बोधिसत्त्वों ने प्रणिधान किया उस प्रणिधान के बल से उत्तरोत्तर दान आदि कुशलों का अभ्यास करने से वह उस प्रकार से परिशुद्ध हो जायेगी। उससे सभी धर्मों की निःस्वभावता का ज्ञान होने पर भी सभी सत्त्वों पर आश्रितता जब तक निवृत्त नहीं हो जाती, संसार के दोषों से लिप्त न होते हुये, अन्त तक संसार में ही रहते हैं।



कैसे अनाभोग और शान्त हैं ? इसका कारण कहते हैं—

“श्रेष्ठज्ञान नैरात्म्य को निराभास के द्वारा देखते हैं।” इसलिए अद्वयवादियों को अद्वयलक्षण वाला जो श्रेष्ठज्ञान परमार्थतः अभिमत है, वह भी नैरात्म्य है। निःस्वभाव को योगी अद्वय-निराभास ज्ञान से देखता है। इसके बाद दूसरे द्रष्टव्य के न होने से वह अनाभोग है, और सभी विकल्पों के न होने से शान्त है।

यहाँ यदि जब इस प्रकार का योगी कौन है, जो देखता है, ऐसा कहें तो, ( उत्तर है कि ) परमार्थतः आत्मा आदि स्वतन्त्र रूप से कोई योगी नहीं है, और न कोई देखता ही है। किन्तु संवृत्ति में जैसे रूपादि विषयों के आकार के ज्ञान के उत्पन्न मात्र होने से विज्ञान ही लोक में उन उन रूपों में प्रयुक्त होता है। जैसे देवदत्त या यज्ञदत्त को ज्ञान से देखता है। आत्मादि तो कुछ भी नहीं है। उसी प्रकार यहाँ भी अद्वयज्ञान-निराभास ज्ञान ही उत्पन्न होता हुआ, निराभास-ज्ञान के द्वारा देखता है, ऐसा कहा जाता है। सभी धर्मों की परमार्थतः निःस्वभावता होने पर भी संवृत्ति में चाहे योगियों का ज्ञान हो, अथवा पृथग्जन का ज्ञान हो दोनों भी अनभीष्ट नहीं हैं। जैसा कि **आर्यसत्यद्वयनिर्देश** में विस्तार से कहा गया है कि—“वह परमार्थतः अत्यन्त अभाव है, फिर भी संवृत्ति में मार्ग-भावना करता है।”

अन्यथा श्रावक, प्रत्येकबुद्ध, बोधिसत्त्व, बुद्ध, पृथग्जन आदि की व्यवस्था कैसे होगी ? लेकिन जिसका संवृत्ति में भी कारण नहीं है, वह तो संवृत्ति में भी उत्पन्न नहीं होता, जैसे खरगोश का सींग आदि। जिसका कारण है, वह तो परमार्थतः झूठा होने पर भी उत्पन्न होता ही है, जैसे कि माया, प्रतिबिम्ब और प्रतिध्वनि आदि। माया आदि का संवृत्ति में प्रतीत्यसमुत्पाद होने पर भी वे परीक्षण के अयोग्य होने से परमार्थरूप से उनके वस्तुत्व होने का अवसर नहीं होगा। इसलिए सारा जगत् माया की भाँति कहा गया है। वहाँ जिस प्रकार क्लेश तथा कर्म की माया के कारण सत्त्वों की जन्मरूपी माया उत्पन्न होती है, उसी प्रकार योगियों को भी पुण्य तथा ज्ञान की सम्भार-रूपी माया के कारण योगियों के ज्ञानरूपी माया प्रवृत्त होती ही है। जैसा कि **आर्यप्रज्ञापारमिता** में कहा गया है—“सुभूते ! इस प्रकार सभी धर्म निर्माण हैं,— कोई श्रावक का निर्माण है, कोई प्रत्येकबुद्ध का निर्माण है, कोई बोधिसत्त्व का निर्माण है, कोई तथागत का निर्माण है, कोई क्लेश का निर्माण है, कोई कर्म का निर्माण है। हे सुभूते ! इस पर्याय से सभी धर्मों का निर्माणोत्पाद होता है।”

योगियों का पृथग्जन से यही अन्तर है कि वे तो मायाकार की भाँति माया को यथावत् जानने के कारण सत्य के रूप में अभिनिविष्ट नहीं होते, इसीलिए वे ‘योगी’



कहे जाते हैं। जो लोग अज्ञानी पृथग्जन के समान उस खेल को सत्य के रूप में ही अभिनिवेश करते हैं, वे लोग विपरीत में अभिनिवेश करने से 'अज्ञानी' कहे जाते हैं, इस प्रकार वे सब अविरुद्ध हैं। जैसा कि आर्यधर्मसङ्गीति में कहा गया है—

“जैसे कोई मायाकार निर्माण मुक्ति को पाने के लिए प्रयास करता है, उसको पहले से वह ज्ञात होने से उस निर्माण पर आसक्ति नहीं होती। तीनों भव निर्माण की भाँति हैं, संबोधि में पारंगत ऐसा समझते हैं (और) वह जगत् के लिए कवच पहनता है, उसी प्रकार पहले से ज्ञात जगत् होता है।”

इस प्रकार के क्रम से तत्त्व की भावना करनी चाहिए।

उसमें लय, औद्धत्य आदि के उत्पन्न होने पर पूर्व की भाँति प्रशमन करना चाहिए। जब सभी धर्मों का निःस्वभावता के रूप में आलम्बन होने से लय, औद्धत्य आदि से रहित होकर ज्ञान अनभिसंस्कार से प्रवृत्त होता है, तब शमथ तथा विपश्यना का युगनद्धवाही मार्ग निष्पन्न होता है। उस समय जब तक समर्थ हो सके तब तक अधिमुक्ति के बल से अधिमुक्तिचर्या की भूमि पर स्थित होकर भावना करनी चाहिए।

उसके बाद इच्छानुसार पर्यङ्क को खोले विना (समाधि से) व्युत्थान करके पुनः इस प्रकार सोचना चाहिए कि यदि ये सभी धर्म परमार्थतः ही निःस्वभाव हों तो क्या संवृति में विद्यमान ही हैं? जैसा कि—आर्यरत्नमेघ में कहा गया—“बोधिसत्त्व नैरात्म्य में कुशल कैसे होता है? कुलपुत्र! इसमें बोधिसत्त्व सम्यक् प्रज्ञा से रूप का प्रत्यवेक्षण करता है, वेदना, संज्ञा, संस्कार और विज्ञानों का प्रत्यवेक्षण करता है, वह रूप का प्रत्यवेक्षण करता हुआ रूप के उत्पाद को नहीं पाता है, निरोध को नहीं पाता है, समुदय को नहीं पाता है। इस प्रकार वेदना, संज्ञा, संस्कार तथा विज्ञानों के उत्पाद को नहीं पाता है, निरोध को नहीं पाता है, समुदय को नहीं पाता है। यह भी परमार्थतः अनुत्पाद में स्थित रहने वाली प्रज्ञा के द्वारा है, न कि व्यावहारिक स्वभाव से।” ऐसा विस्तार से कहा गया है। ये बाल बुद्धि वाले इस प्रकार निःस्वभाव वस्तुओं में विपरीत अभिनिवेश के कारण संसार में परिभ्रमण करते हुए विविध दुःखों का अनुभव करते हैं, ऐसा समझकर महाकरुणा को अभिमुख करके इस प्रकार सोचना चाहिए कि—मैं वैसा ही करूँगा जिससे सर्वज्ञता प्राप्त करके इनको धर्मता का ज्ञान करा सकूँ।



उसके बाद सभी बुद्धों तथा बोधिसत्त्वों की पूजा, स्तुति तथा उपसंहार प्रदान करके आर्यभद्रचर्या आदि का महाप्रणिधान करना चाहिए। उसके बाद शून्यता तथा करुणा-गर्भ वाले दान आदि समस्त पुण्य और ज्ञान के सम्भार के अर्जन में प्रवृत्त होना चाहिए। जैसा कि आर्यधर्मसङ्गीति में कहा गया है—“यथाभूत देखने वाले बोधिसत्त्व की सत्त्वों में महाकरुणा प्रवृत्त होती है, और उसे इस प्रकार का (मन) होता है कि मुझे सभी धर्मों का यथाभूत दर्शन कराने वाली समाधि के सुख को सभी सत्त्वों में निष्पन्न कराना है। वह उस महाकरुणा के द्वारा प्रेरित होकर अधिशील, अधिचित्त तथा अधिप्रज्ञा (इन) त्रिशिक्षाओं को परिपूर्ण करके अनुत्तरसम्यक्सम्बोधि से अभिसम्बुद्ध होता है।”

यही उपाय तथा प्रज्ञा से युगनद्ध प्रवृत्त होने वाला बोधिसत्त्वों का मार्ग है, जो परमार्थ को देखने पर भी संवृति का उच्छेद नहीं करता है। संवृति का उच्छेद न करने वाले की महाकरुणा पूर्वगामिनी होकर विपर्यास के बिना सत्त्व के लिए क्रिया आदि में प्रवृत्त हो जाती है। आर्यरत्नमेघ में कहा गया है कि—“बोधिसत्त्व महायान में कैसे कुशल होता है? यहाँ बोधिसत्त्व सभी शिक्षाओं में शिक्षित होता है, किन्तु वह शिक्षा को भी नहीं प्राप्त करता है, और शिक्षा-मार्ग को भी नहीं प्राप्त करता है, और जिसे सिखाता है उसे भी उपलब्ध नहीं होता और जो सिखाया जाता है उसे भी उपलब्ध नहीं होता है। इस हेतु, प्रत्यय तथा निदान से वे उच्छेद दृष्टि में नहीं पड़ते।” आर्यधर्मसङ्गीति में भी कहा गया है कि—“बोधिसत्त्वों की प्रतिपत्ति क्या है? बोधिसत्त्वों के जो कुछ काय-कर्म हैं, जो कुछ वाक्-कर्म हैं, तथा जो कुछ चित्त-कर्म हैं, वे सभी सत्त्वों की अपेक्षा से प्रवृत्त होते हैं, क्योंकि—महाकरुणा पूर्वङ्गम होती है, और वे महाकरुणा के वशीभूत हैं। वे सभी सत्त्वों के हित तथा सुख करने के अध्याशय से उत्पन्न होते हैं, ऐसे हिताशय वाला इस प्रकार का संजी होता है, कि सभी सत्त्वों की हितकारी तथा सुख साधने वाली जो प्रतिपत्ति है, वही मुझको सिद्ध करनी है। उसमें स्कन्धों में माया की भाँति प्रत्यवेक्षण की भी प्रतिपत्ति होती है, न कि स्कन्ध के परित्याग की इच्छा करता है। धातुओं में आशीविष की भाँति प्रत्यवेक्षण की प्रतिपत्ति होती है, न कि धातु के परित्याग की इच्छा करता है। आयतनों में शून्यग्राम की भाँति प्रत्यवेक्षण की प्रतिपत्ति होती है, आयतन के परित्याग की इच्छा नहीं होती। रूप में फेनपिण्ड की भाँति प्रत्यवेक्षण की प्रतिपत्ति होती है, तथागत के रूपकाय की विठपना (सिद्धि) को न छोड़े। वेदना में बुलबुले की भाँति प्रत्यवेक्षण की प्रतिपत्ति करता है, न कि तथागत के ध्यान तथा समाधि की समापत्ति से होने वाले सुख की निष्पत्ति के प्रयोग का अनारम्भ। संज्ञा में मरीचि की भाँति प्रत्यवेक्षण की प्रतिपत्ति होती है,



न कि तथागत-ज्ञान के निष्पादन की अप्रतिपत्ति। संस्कारों में केले की भाँति प्रत्यवेक्षणा की प्रतिपत्ति होती है, न कि बुद्ध-धर्म के अभिसंस्कारों की अप्रतिपत्ति। विज्ञान में माया के समान प्रत्यवेक्षणा की सिद्धि होती है, न कि ज्ञान के पूर्वगामी काय, वाक् तथा चित्त से कर्म-निष्पत्ति की अप्रतिपत्ति।” इत्यादि विस्तार से कहा गया है। इस प्रकार इन विस्तृत सूत्रों से उपाय तथा प्रज्ञा के रूप वाली प्रतिपत्ति को जानना चाहिए।

वहाँ यदि लोकोत्तर-प्रज्ञा की अवस्था में उपाय का सेवन होना सम्भव नहीं है, अपितु उपाय के सेवनकाल में बोधिसत्त्व मायाकार की भाँति अविपर्यस्त होने के कारण लोकोत्तर ज्ञान में प्रयोग करता है, और ज्ञान में प्रयोग के बाद होने वाली यथाभूत वस्तु की परमार्थतत्त्व के अनभितिवेश रूप से अवबोध कराने वाली प्रज्ञा सम्भव होती है। प्रज्ञा तथा उपाय का युगनद्धवाही मार्ग यही है। **आर्याक्षयमतिनिर्देश** में भी कहा गया है कि ध्यान की अक्षय अवस्था में उपाय तथा प्रज्ञा के युगनद्धवाही मार्ग का अवबोध होना चाहिए। इस प्रकार इसी क्रम से बोधिसत्त्व उपाय तथा प्रज्ञा का सदा सत्कारपूर्वक दीर्घकाल तक अभ्यास से भावना करेगा तो बारह अवस्था-विशेष होंगे। वही अवस्थाएँ उत्तरोत्तर गुण-प्रतिष्ठा के लिये होने से भूमि के रूप में व्यवस्थापित होती हैं, जो अधिमुक्तिचर्या भूमि से लेकर बुद्ध-भूमि पर्यन्त हैं।

जब तक पुद्गल तथा धर्मों के नैरात्म्य-तत्त्व का साक्षात्कार नहीं होता है, तब तक केवल दृढतर अधिमुक्ति होती है। मार आदि से अभेद्य होकर जब अधिमुक्ति बल से तत्त्व की भावना की जाती है, तब दृढ अधिमुक्ति के माध्यम से अधिमुक्तिचर्या की भूमि व्यवस्थापित होती है। इस भूमि में स्थित बोधिसत्त्व पृथग्जन होने पर भी उसका वालों की सभी विपत्तियों से समतिक्रान्त होकर समाधि, धारणी, विमोक्ष, अभिज्ञा आदि असंख्य गुणों से युक्त होना **आर्यारत्नमेघ** में कहा गया है।

यहीं मृदु, मध्य, अधिमात्र तथा अधिमात्रता की चार अवस्थाओं से चार निर्वेधभागीय व्यवस्थापित किये गये हैं। इस प्रकार जब बाह्यार्थों का विनाश होकर किञ्चित् ज्ञानालोक स्पष्ट हो जाये तब ऊष्मागत निर्वेधभागीय होता है। वह यहाँ महायान में आलोकलब्ध-समाधि कहा जाता है। जब वही ज्ञानालोक मध्यमात्र स्पष्ट हो तब मूर्धन् नामक निर्वेधभागीय कहा जाता है, और वृद्धालोक-समाधि भी कहा जाता है। जब वही अधिक स्पष्ट होकर बाह्यार्थ में आभासित न होने वाला ज्ञानालोक हों जाए, तब विज्ञान-मात्र के स्थित रहने के कारण क्षान्ति नामक निर्वेधभागीय होत है और एकदेश-प्रविष्ट-समाधि भी कहा जाता है, क्योंकि वह ग्राह्य के आकार के



अनुपलम्भ में प्रविष्ट हुआ रहता है। जब ग्राह्य तथा ग्राहक के आकार से रहित अद्वय-ज्ञान का विनाश करेगा तब अग्रधर्म नामक निर्वेधभागीय होता है, और वही आनन्तर्य-समाधि भी कहा जाता है, क्योंकि उसके अनन्तर ही तत्त्व में प्रवेश होता है। यहाँ तक तो अधिमुक्तिचर्याभूमि है।

अन्य भूमियाँ तो संक्षेप में एकादश अङ्गों से परिपूर्ण होने के कारण व्यवस्थापित की जाती हैं। वहाँ पर सर्वप्रथम प्रथम भूमि तो पुद्गल तथा धर्मों के नैरात्म्य तत्त्व-अधिगम के अङ्ग-परिपूर्ण हो जाने से व्यवस्थापित की जाती है। इस प्रकार जब अग्रधर्म के अनन्तर ही सभी धर्मों की निःस्वभावता का साक्षात् करने वाला, लोकोत्तर, सभी प्रपञ्चों से रहित, अतिस्फुट ज्ञान पहले ही उत्पन्न होता है, तब बोधिसत्त्व का सम्यक्त्व, निर्दोष में प्रवेश करने से दर्शनमार्ग उत्पन्न होने के कारण प्रथम भूमि में प्रविष्ट होता है। इसलिए इस भूमि में सर्वप्रथम बोधिसत्त्व अज्ञात तत्त्व का अवबोध होने के कारण प्रमुदित होता है, इसी से इस भूमि को 'प्रमुदिता' कहा जाता है। उस भूमि में एक सौ बारह दर्शन हेतु क्लेशों का प्रहाण किया जाता है।

शेष भूमियाँ तो भावना-मार्ग के स्वभाववाली हैं। उनमें भावना-हेतु त्रेधातुक सोलह क्लेशों का प्रहाण होता है। इस भूमि पर बोधिसत्त्व को धर्मधातु-समुदागमता का अवबोध होने से स्वार्थ की भाँति परार्थ में प्रवृत्ति होने के कारण दान-पारमिता अतिरिक्ततर होती है। वह बोधिसत्त्व-तत्त्व का अवबोध होने पर भी जब तक सूक्ष्मापत्ति-स्खलन में सम्प्रजन्य-विहारी बनने में असमर्थ रहता है, तब तक प्रथम भूमि होती है। जब वह समर्थ हो जाता है, तब इसके अङ्गों की परिपूर्ति हो जाने से द्वितीय भूमि व्यवस्थापित होती है। इसलिए इस भूमि में सूक्ष्मापत्ति-स्खलन से असमुदाचार के कारण शीलपारमिता अतिरिक्ततर होती है। सभी दुःशीलता के मलों से रहित होने के कारण वह भूमि 'विमला' कही जाती है।

वह सूक्ष्मापत्ति-स्खलन के सम्प्रजन्य में विहार करने वाला भी होता है। जब तक सभी लौकिक समाधियों को सम्प्रवृत्त करने तथा जैसा सुना गया है उस प्रकार के अर्थ को 'सर्वथा धारण करने में समर्थ नहीं हो जाता तब तक द्वितीया भूमि ही होती है। जब समर्थ हो जाता है, तब अङ्गों की परिपूर्णता हो जाने से तृतीया भूमि व्यवस्थापित होती है। उस भूमि में बोधिसत्त्व को श्रुतधारण करने और सभी लौकिक समाधियों के अभिनिर्हार के लिये सभी दुःखों को सहन करने के कारण क्षान्तिपारमिता अतिरिक्ततर होती है। इन समाधियों के लाभ से यह भूमि अपरिमित-लोकोत्तर ज्ञान का अवभास कराती है, अतः 'प्रभाकरी' कही जाती है।



वह सभी लौकिक समाधियों को प्राप्त करने पर भी जब तक यथाप्राप्त बोधिपक्ष वाले धर्मों के साथ अनेक बार विहार करने में और सभी धर्मों तथा समापत्तियों के चित्त को उपेक्षा करने में असमर्थ होता है, तब तक तृतीया भूमि होती है। जब समर्थ हो जाता है, तब उसके अङ्गों की परिपूर्णता हो जाने से चतुर्थी भूमि व्यवस्थापित होती है। इस भूमि में बोधिसत्त्व के निरन्तर काय, वाक् तथा चित्त के जल्प से सम्यग् रूप से अतिक्रमण करने के लिये बोधिपक्ष धर्मों के द्वारा विहार करने के कारण वीर्यपारमिता और अतिरिक्ततर हो जाती है। वह भूमि सभी क्लेशरूपी इन्धनों को जलाने में सक्षम बोधिपक्षधर्मरूपी प्रकाश उत्पन्न ने करके कारण 'अर्चिष्मती' कही जाती है।

वह बोधिपक्षधर्म में निरन्तर विहार करता है। जब तक सत्त्यों की भावना करता हुआ संसार के अनभिमुख तथा निर्वाण के अभिमुख चित्त को व्यावर्तन करके उपाय से संगृहीत बोधिपक्षधर्मों की भावना करने में असमर्थ हो, तब तक चतुर्थी भूमि होती है। जब समर्थ हो जाता है, तब अङ्गों की परिपूर्णता हो जाने के कारण पंचमी भूमि व्यवस्थापित की जाती है। इसी से इस भूमि में उपाय से संगृहीत बोधिपक्ष की भावना-परिपूर्णता बड़ी कठिनाई से जीती जाती है, अतः 'सुदुर्जया' कही जाती है।

इस भूमि में चार आर्यसत्त्यों के आकार की भावना अनेक बार करने से ध्यान-पारमिता अतिरिक्ततर हो जाती है और वह उपाय से संगृहीत बोधिपक्ष में अनेक बार विहार करने वाला भी हो जाता है। जब तक संसार में प्रवेश करने में प्रत्यवेक्षण द्वारा निर्वृत्तसह चित्त की संतति से अनिमित्त विहार की समापत्ति में असमर्थ होता है, तब तक षष्ठमी भूमि होती है। जब समर्थ होता है, तब इस अङ्ग की परिपूर्णता होने के कारण षष्ठी भूमि व्यवस्थापित होती है। इस भूमि में बोधिसत्त्व के प्रतीत्यसमुत्पाद की भावना में विहार करने के कारण प्रज्ञापारमिता की अतिरिक्तता होती है। इस लिए प्रज्ञापारमिता की अतिरिक्तता के कारण उस भूमि में सभी बुद्धधर्मों में अभिमुख होता है, इसी से यह 'अभिमुखी' कही जाती है।

वह अनिमित्त विहार का प्राप्तकर्ता भी होता है। जब तक निश्छिद्रा अनिमित्त विहार की समापत्ति में समर्थ नहीं होता है, तब तक षष्ठी भूमि होती है। जब समर्थ हो जाता है, तब उस अङ्ग की परिपूर्णता होने के कारण सप्तमी भूमि व्यवस्थापित होती है। उस भूमि पर बोधिसत्त्व सभी निमित्तों को अनिमित्त से प्रतिविद्ध करता है, और निमित्तकृत व्यवहार का निषेध नहीं करता है। इसलिए इस भूमि में उपाय-पारमिता की अतिरिक्तता होती है। यह भूमि अनाभोग-मार्ग से सम्बद्ध होने के कारण अतिदूरङ्गम होने से 'दूरङ्गमा' कही जाती है।



वह निश्छिद्र-निर्निमित्त में विहार भी करता है। वह जब तक अनाभोगवाही-निर्निमित्त स्थिति की समाप्ति करने में समर्थ नहीं होता, तब तक सप्तमी भूमि होती है। जब समर्थ हो जाता है, तब इस अङ्ग की परिपूर्णता के कारण अष्टमी भूमि व्यवस्थापित की जाती है। इस भूमि में अनाभोग से कुशलपक्ष का योग होने के कारण प्रणिधान-पारमिता की अतिरिक्तता होती है। अनिमित्त भोग के द्वारा चलायमान न होने से यह 'अचला' कही जाती है।

वह अनाभोग-अनिमित्तविहारी भी हो जाता है। जब तक पर्याय, निरुक्ति आदि प्रभेदों से सभी प्रकार की सारी धर्मदेशना करने के वशीभूत होने में असमर्थ रहता है, तब तक अष्टमी भूमि होती है। जब समर्थ हो जाता है तब उस अङ्ग की परिपूर्णता होने के कारण नवमी भूमि व्यवस्थापित होती है। उस भूमि में बोधिसत्त्व के विशिष्ट प्रतिसंविद् की प्राप्ति होने से प्रज्ञा के विशिष्ट बल से युक्त हो जाने के कारण बलपारमिता की अतिरिक्तता हो जाती है। सभी आकार की धर्मदेशना में कुशल होने के कारण अनवद्य-मति-विशेष का लाभ होने से 'साधुमती' भूमि कही जाती है।

इसमें वह चार प्रतिसंविदों को प्राप्त भी करता है। जब तक बुद्ध-क्षेत्र, परिवार, निर्माण आदि को दिखाने में तथा परिपूर्ण-धर्मसम्भोग और सत्त्वपरिपाक करने में समर्थ नहीं होता है, तब तक नवमी भूमि होती है। जब समर्थ हो जाता है, तब इस अङ्ग की परिपूर्णता होने के कारण दशमी भूमि व्यवस्थापित की जाती है। यहाँ निर्माण आदि से सत्त्वपरिपाक करने के लिए ज्ञानविशेष से युक्त होने के कारण बोधिसत्त्व की ज्ञान-पारमिता अतिरिक्ततर होती है। यह तो धर्मदेशनारूपी मेघों से अनन्त लोक-धातुओं में धर्म की विशेष वर्षा होने के कारण 'धर्ममेघ' कही जाती है। स्कन्ध-परिशुद्धि आदि दूसरी भी व्यवस्थाओं के द्वारा भूमियों की व्यवस्था होती है। इसे ग्रन्थ-विस्तार के भय से नहीं लिखा गया।

वह निर्माण आदि की वसिता-प्राप्ति होने पर भी जब तक समस्त ज्ञेयों पर सभी आकार के असक्त तथा अप्रतिहत ज्ञान को उत्पन्न करने में समर्थ नहीं होता, तब तक दशमी भूमि होती है। जब समर्थ हो जाता है, तब इस अङ्ग के परिपूर्ण होने के कारण बुद्धभूमि की व्यवस्था की गयी है। यह भूमियों की व्यवस्था तो आर्यसंघि-निर्माण में निर्दिष्ट की गयी है। इस बुद्ध-भूमि में सभी आकारों की सभी सम्पत्तियों का प्रकर्षपर्यन्तगमन होने से इससे श्रेष्ठ कोई और स्थान नहीं है और इसके बाद भूमि की व्यवस्था नहीं होती है।



इस बुद्धभूमि के गुणों के पक्षों का अप्रमेय-प्रभेद होने से पूर्णतः बुद्धों के द्वारा भी वे नहीं कहे जा सकते हैं, फिर मुझ जैसे के द्वारा कैसे ? जैसे कि आर्यगण्डव्यूह में कहा गया है कि—

“अचिन्त्य बुद्ध तथा धर्मों का निरीक्षण करने पर भी गुणों के एक अंग के अन्त का भी अवबोध नहीं होगा ।”

संक्षेप में इतना ही कहा जा सकता है कि स्व तथा पर के लिये संपत्तियों के प्रकर्षपर्यन्त में होकर अशेष दोषों के निवारण में निष्ठा को प्राप्त करके भगवान् बुद्ध धर्मकाय में स्थित होकर सम्भोग तथा निर्माण कार्यों के द्वारा अशेष जगत् का हित अनाभोग रूप से करते हुये संसार के अन्त तक रहेंगे ।

इसलिए प्रेक्षावानों के द्वारा सभी गुणों के आकर भगवानों में श्रद्धा उत्पन्न करनी चाहिए और उनके गुणों की पूर्णतः सिद्धि के लिए सभी तरह प्रयास करना चाहिए । त्रिकाय आदि के प्रभेद अक्षरों के आधिक्य के भय से नहीं लिखे जा रहे हैं ।

सूत्रों के नयों के अनुकूल जिन-पुत्रों के इस मार्ग का संभाषण करने से मैंने जो अनल्प पुण्य प्राप्त किया है, उससे अल्पज्ञानवाले जगत् को शीघ्र ही परमबुद्धि प्राप्त हो ।

भूपति श्रीदिव्यराज के आदेश से भदन्त कमलशील के द्वारा भावनाक्रम का यह संक्षेप किया गया ।

॥ प्रथम भावना-क्रम का हिन्ही अनुवाद समाप्त हुआ ॥







## भावनाक्रम द्वितीय

मञ्जुश्री कुमारभूत को नमस्कार ।

महायान-सूत्रनय में अनुप्रविष्ट हो रहे लोगों के लिए भावनाक्रम संक्षेपमें कहा जा रहा है । यहाँ सर्वज्ञता की प्राप्ति अतिशीघ्र ही करने के इच्छुक प्रेक्षावानों को उसे प्राप्त कराने वाले हेतुओं तथा प्रत्ययों में प्रयत्नशील होना चाहिये ।

इस प्रकार इस सर्वज्ञता का तो हेतु के बिना होना अनुचित है, क्योंकि सभी को सदा सर्वज्ञता हो जाने का प्रसङ्ग होगा । निरपेक्षता होने पर तो वह कहीं भी प्रतिहत नहीं होगी, क्योंकि सभी सर्वदा सर्वज्ञ ही नहीं होते हैं । इसलिए किसी को कभी कुछ ही होने से सभी वस्तुएँ हेतु पर आश्रित ही हैं । सर्वज्ञता भी किसी को कभी कुछ ही सम्भव है, सभी कालों में नहीं होती, सभी स्थानों में नहीं होती, सभी को भी नहीं होती, इसलिए उसका तो हेतुओं तथा प्रत्ययों पर आश्रित होना ही निश्चित है । उन हेतुओं तथा प्रत्ययों में से भी अभ्रान्त तथा अविकल का सेवन करना चाहिए । भ्रान्त हेतुओं के अनुष्ठान से अतिदीर्घकाल में भी इष्टफल की प्राप्ति नहीं हो पाती, जैसे सींग से दूध दुहना । समस्त हेतुओं के उपयोग किये बिना भी फल की उत्पत्ति नहीं हो पाती है, क्योंकि बीजादि में किसी के भी न होने पर अंकुर आदि फल नहीं उत्पन्न होते हैं । इसलिए उस फल का इच्छुक समस्त अभ्रान्त हेतु तथा प्रत्ययों का सेवन करे ।

फलरूपी सर्वज्ञता के हेतु तथा प्रत्यय क्या है ? कहा जाता है कि यद्यपि जात्यन्ध के समान मुझ जैसे के द्वारा वे सब नहीं कहे जा सकते हैं तथापि स्वयं भगवान् ने ही अभिसंबुद्ध होकर विनेय जनों के लिये जैसा कहा था, उसी प्रकार मैं भी भगवान् के वचनों से ही कहूँगा । भगवान् ने उससे कहा था — “गुह्याधिपते ! वह सर्वज्ञ का ज्ञान तो करुणा के मूल से उत्पन्न हुआ है बोधिचित्त के हेतु से उद्भूत है, उपाय-निष्ठागत वाला है ।” इसलिए सर्वज्ञता की प्राप्ति के इच्छुकों को करुणा, बोधिचित्त तथा उपाय इन तीनों की शिक्षा लेनी चाहिए ।

करुणा से प्रेरित बोधिसत्त्व सभी सत्त्वों के उद्धार के लिये अवश्य प्रतिज्ञा करेंगे । इसके बाद स्वात्म-दृष्टि छोड़कर अतिदुष्कर, अविच्छिन्न रूप से दीर्घकाल में सिद्ध किये गये पुण्य तथा ज्ञानसम्भारों में आदर से प्रवृत्ति करते हैं । वहाँ प्रवेश



करके अवश्य ही पुण्य तथा ज्ञानसम्भारों को परिपूर्णतः सिद्ध करेंगे। सम्भारों के परिपूर्ण हो जाने पर सर्वज्ञता हस्तगत की भाँति होगी। अतः सर्वज्ञता का मूल कर्णा ही होने से उसकी तो आदि में ही भावना करनी चाहिए। जैसा कि आर्य-धर्मसंगीति में भी कहा गया है—“हे भगवन् ! बोधिसत्त्वों को अनेक धर्मों की शिक्षा नहीं लेनी चाहिए। भगवन् ! बोधिसत्त्व को एक ही धर्म का ग्रहण कर अबोध करने पर सभी बुद्ध-धर्म उसके करतल पर विद्यमान हो जाते हैं। वह एक धर्म क्या है ? वह है महाकर्णा ।”

महाकर्णा से परिगृहीत होने से भगवान् बुद्धों ने समस्त स्वार्थ सम्पत्ति की प्राप्ति हो जाने पर भी सत्त्वधातु के अन्त तक रहते हैं। श्रावक की भाँति अतिशान्त निर्वाणरूपी नगर में भी प्रवेश नहीं करते हैं। सत्त्वों को देखकर उस शान्त निर्वाण-नगर को प्रज्वलित अयोगृह के समान दूर छोड़ देने से भगवानों के अप्रतिष्ठित निर्वाण का हेतु तो वह महाकर्णा ही है।

यहाँ उस कर्णा की भावना का क्रम प्रथम-प्रवृत्ति से आरम्भ करके कहा जाना चाहिए। सम्प्रति आदि में उपेक्षा की भावना से सभी सत्त्वों के प्रति अनुराग तथा द्वेष को दूर करके समचित्तता ही सिद्ध करनी चाहिए।

सभी सत्त्व सुख चाहते हैं, दुःख नहीं चाहते। अनादिकालिक संसार में जो सत्त्व सौ बार मेरा बन्धु न बना हो ऐसा कोई भी नहीं है, ऐसा सोचने पर इन में क्या अन्तर होगा ? (अतः) किसी से अनुराग, किसी से द्वेष हो जाने के कारण मैं सभी सत्त्वों में चित्तसमता ही करूँगा, ऐसा मनसिकार करके मध्यस्थ भाव से आरम्भ करके मित्र तथा शत्रु में भी चित्तसमता की ही भावना करनी चाहिए। इसके बाद सभी सत्त्वों पर चित्तसमता सिद्ध करके मैत्री की भावना करनी चाहिए। मैत्री के जल से चित्तसन्तान को सींच करके उसे सुवर्णयुक्त भूमि की भाँति करके कर्णा का बीज बोया जाये तो सरलता से अतिविकास होगा। उसके बाद चित्त-सन्तान को मैत्री से वासित करके कर्णा की भावना करनी चाहिए।

वह कर्णा सभी दुःखित सत्त्वों के उन दुःखों को दूर कराने वाली इच्छा के आकार की है। त्रिधातु के सभी सत्त्व त्रिविध दुःखों से यथायोग अतिदुःखित ही हैं, इसलिए सभी सत्त्वों पर उसकी भावना करनी चाहिए। सम्प्रति इस प्रकार जो नारक सत्त्व हैं, वे तो अविचिछिन्नरूप से दीर्घकाल तक ताप आदि विभिन्न दुःखरूपी



नदी में डूबे हुये ही हैं, ऐसा भगवान के द्वारा कहा गया है। इसी प्रकार प्रायः प्रेत भी असह्य और तीव्र, भूख, प्यास आदि दुःखों की अग्नि से सूखे शरीर वाले होकर घोर दुःख का अनुभव करते हैं। पशु भी परस्पर भक्षण, क्रोध, वध, हिंसा आदि अनेक प्रकार के दुःखों का अनुभव करते हुए ही दिखाई देते हैं। मनुष्य भी भोगों की खोज से कृपण होकर परस्पर द्रोह और उपघात, प्रिय के वियोग और अप्रिय के संयोग, दरिद्रता आदि से होने वाले अप्रमेय दुःखों का अनुभव करते हुए दिखाई देते ही हैं।

जो लोग रागदि अनेक क्लेश वाली आसक्ति के द्वारा बँधे चित्त वाले हैं, और जो लोग विविध कुदृष्टियों में गहन रूप से डूबे हुये हैं, वे सभी दुःख के हेतु होने से प्रपात पर बैठे हुए ( व्यक्ति ) की भाँति बहुत दुःखी ही हैं। देवता भी सभी विपरिणामों के दुःखों से दुःखी ही हैं। जो देव काम ( धातु ) में विचरण करने वाले हैं, वे भी तो सदा च्युति, पतन आदि भय के शोक से उपहत-चित्त होने के कारण कैसे सुखी होंगे ? संस्कारदुःख ही कर्म क्लेश-लक्षण-हेतुक, परतन्त्र स्वभाव वाले और प्रतिक्षण में भङ्गस्वभाव लक्षण वाले हैं, जो सारे संसार में व्याप्त हैं। इसलिए समस्त जगत् को दुःखाग्नि की ज्वाला के भीतर में प्रविष्ट हुआ देखकर जैसे मुझे दुःख प्रिय नहीं है उसी प्रकार अन्यो को भी ( नहीं ) है, ऐसा सोचते हुए हाय ये दुःखी मेरे प्रिय उन दुःखों से कैसे मुक्त हो सकेंगे, इस प्रकार उसे अपने दुःखों के समान ( जान ) करके उनका निवारण करने की इच्छा के रूपवाली कृणा से चाहे समाधि में स्थित हों, अथवा सारी चर्या में ही हों सदा सभी सत्त्वों की भावना करनी चाहिए।

सबसे पहले मित्र-पक्ष पर पूर्वोक्त विभिन्न दुःखों के अनुभवों को देखकर उस कृणा की भावना करनी चाहिए। तब सत्त्वों में समता के कारण अन्तर न देखते हुये 'सभी सत्त्व मेरे बन्धुभूत ही हैं' ऐसा सोचकर मध्य पक्षों पर भावना करनी चाहिए। जब वहाँ मध्यपक्ष की भाँति कृणा समानरूप से प्रवृत्त होने लगे तब दश दिशाओं में सभी सत्त्वों पर भावना करनी चाहिए। जब दुःखित प्रिय शिशु की माता की भाँति स्वयं ही अतिप्रिय का दुःख से उद्धार करने की इच्छा के आकार की अनायास रूप से प्रवाहित हो पड़ने वाली कृणा सभी सत्त्वों पर समानरूप से प्रवृत्त हो जाती है, तब निष्पन्न मानी जाती है। ( और ) महाकृणा का नाम भी प्राप्त होता है।

मैत्री की भावना पहले मित्रपक्ष के और सुखसंयोग की इच्छा के आकार वाली होती है। क्रम से साधारण तथा शत्रु पर भी भावना करनी चाहिए। इस प्रकार उस कृणा का अभ्यास करने से क्रमशः समस्त सत्त्वों के अभ्युद्धरण करने की इच्छा अनायास ही उत्पन्न हो जायेगी।



अतः मूल-कृष्णा की भावना करके बोधिचित्त की भावना करनी चाहिए। यह बोधिचित्त दो प्रकार का है—संवृत तथा परमार्थ। इनमें संवृत तो कृष्णा के द्वारा 'समस्त सत्त्वों के अभ्युद्धार की प्रतिज्ञा करके जगत्-हित के लिए बुद्ध हो जाऊँ, ऐसे अनन्तरसम्यक्सम्बोधि की इच्छा के आकार वाला प्रथम चित्तोत्पाद होगा। वह भी शीलपरिवर्त में प्रदर्शित विधि के अनुसार बोधिसत्त्व संवर में स्थित अन्य विद्वान् से चित्तोत्पाद करे।

उस प्रकार संवृत बोधिचित्त उत्पन्न करके परमार्थ-बोधिचित्त के उत्पाद के लिए प्रयत्न करना चाहिए। वह परमार्थ बोधिचित्त तो लोकोत्तर, समस्त प्रपञ्चों से रहित, अतिस्फुट, परमार्थगोचर विमल, निश्चल, निर्वायु प्रदीपप्रवाह की भाँति निश्चल है। उसकी सिद्धि तो निरन्तर आदरपूर्वक दीर्घकाल तक शमथ तथा विपश्यना के योग की भावना से होगी। जैसा कि **आर्यसन्धिनिर्माचन** में कहा गया है—“मैत्रेय ! श्रावकों, बोधिसत्त्वों अथवा तथागतों के जो भी सारे लौकिक तथा लोकोत्तर कुशल धर्म हैं, उनको शमथ तथा विपश्यना के फलवाला जानना चाहिये।” उन्हीं दिनों में सभी समाधियों का संग्रह हो जाने से सभी योगियों को सदा अवश्य ही शमथ तथा विपश्यना का सेवन करना चाहिए। जैसा कि वही **आर्यसन्धिनिर्माचन** में भगवान् ने कहा था कि—“मैंने श्रावकों, बोधिसत्त्वों तथा तथागतों की जिन विविध समाधियों का निर्देश किया है, वे सभी शमथ तथा विपश्यना के द्वारा संगृहीत समझी जानी चाहिए।”

केवल शमथ मात्र की भावना से तो योगियों के आवरणों का प्रहाण नहीं होगा। कुछ समय के लिए क्लेशों पर विक्रान्ति (दबाव) मात्र होगी। प्रज्ञा का आलोक हुये बिना अनुश्या का समुचित रूप से नाश सम्भव न होने से अनुश्या का संहार नहीं होगा। इसलिए वही **आर्यसन्धिनिर्माचन** में कहा गया है कि—“ध्यान से तो क्लेशों की विक्रान्ति होती है। प्रज्ञा से अनुशय का समुचित रूप से प्रहाण करते हैं।” **आर्यसमाधिराज सूत्र** में भी कहा गया है—

“इस समाधि की भावना भले ही की जाये, उससे आत्मसंज्ञा विनाश नहीं होती। उससे पुनः क्लेश प्रकुपित होंगे, जैसे कि उद्वक की समाधिभावना। यदि धर्म पर नैरात्म्य का प्रत्यवेक्षण हो और उसका प्रत्यवेक्षण करके यदि भावना करे तो वही निर्वाणरूपी फल की प्राप्ति का हेतु है। अन्य जो हेतु है, उससे शान्ति नहीं होती है।”



बोधिसत्त्वपिटक में भी कहा गया है—“जिन्होंने बोधिसत्त्वपिटक के इस धर्म-पर्याय का श्रवण नहीं किया, आर्यविनय के धर्मों का श्रवण नहीं होने से समाधि-मात्र से सन्तुष्ट रहना तो अहंकारवशात् अभिमान में पतित होते हैं और जन्म, जरा, रोग, मरण, शोक, परिदेवना, दुःख, दौर्मनस्य, तथा कोप से परिमुक्त नहीं होंगे। षड्गति संसार से परिमुक्त न होंगे, दुःखस्कन्ध से भी परिमुक्त नहीं होंगे। उसको ध्यान में रखकर तथागत ने इस प्रकार कहा था कि—“अन्य से अनुकूल श्रवण करने वाला जरामरण से मुक्त हो जायेगा” ऐसा कहा गया है।

इसलिए समस्त आवरणों का प्रहाण करके परिशुद्ध ज्ञान के उत्पाद की इच्छा वाले को शमथ में स्थित होकर प्रज्ञा की भावना करनी चाहिए। इस प्रकार आर्यरत्नकूट में भी कहा गया है कि—

“शील में स्थित होने से समाधि प्राप्त होती है, समाधिलाभ होने से भी प्रज्ञा की भावना होगी। प्रज्ञा से विशुद्ध ज्ञान होता है। ( और ) विशुद्ध ज्ञान हो जाने से शील-सम्पत्ति होती है।”

आर्यमहायान-श्रद्धा-भावना सूत्र में भी कहा गया है—“कुलपुत्र ! प्रज्ञा के अनुपस्थित होने पर बोधिसत्त्वों की महायान में श्रद्धा महायान में जिस प्रकार उत्पन्न होगी, मैं नहीं कहूंगा। कुलपुत्र ! पर्याय से भी इस प्रकार बोधिसत्त्वों की जो कोई भी महायान में श्रद्धा, महायान में उद्भूत होगी, वे सब तो अविक्षिप्तचित्त के द्वारा अर्थ तथा धर्म के सम्यक् चिन्तन से उत्पन्न जानना चाहिए।”

शमथ के बिना केवल विषयना से योगी का चित्त विषयों पर विक्षिप्त हो जायेगा, वायुमध्यस्थित प्रदीप की भाँति स्थिर नहीं होगा। इसलिए ज्ञान का आलोक अतिस्फुट नहीं होगा, इसलिए दोनों का समानरूप से सेवन करना चाहिए। अतः आर्यमहापरिनिर्वाणसूत्र में भी कहा गया है—“श्रावकों के द्वारा तथागत का गोत्र नहीं देखा जाता है, क्योंकि समाधि अधिक तथा प्रज्ञा अल्प होती है। बोधिसत्त्वों को दीखता है, लेकिन अस्पष्ट है, क्योंकि प्रज्ञा का अतिरेक तथा समाधि की अल्पता होती है। तथागत तो सब देखते हैं, क्योंकि शमथ तथा विषयना दोनों से समानरूप से युक्त है।” शमथ के बल से वायु से अक्षोभित प्रदीप की भाँति विकल्प-वायु से चित्त चञ्चल नहीं होता है। विषयना के द्वारा समस्त कुदृष्टि के मल का प्रहाण हो जाने से अन्य के द्वारा विभक्त नहीं हो सकती है। जैसा कि चन्द्रप्रदीपसूत्र में कहा गया है कि—“शमथ के बल से अकम्प्य होता है, और विषयना के बल से पर्वत की भाँति हो जाता है।”



इसलिए दोनों से योग करना निर्णीत है।

इसमें पहले उस योगी को सरलता (तथा) शीघ्रता से शमथ तथा विषयना की सिद्धि के लिए शमथ तथा विषयना के सम्भार का सेवन करना चाहिए। इसमें शमथ-सम्भार क्या है? अनुकूलदेश में रहना, अल्प इच्छा, सन्तोष, बहुत सी क्रियाओं का परित्याग, शीलविशुद्धि तथा इच्छा आदि विकल्पों का परित्याग है।

इनमें पञ्चगुणों से युक्त (देश) को अनुकूल-देश जानना चाहिए। वस्त्र, भोजन आदि के बिना कठिनाई से प्राप्त होने से सुलब्ध, दुर्जन, शत्रु आदि के न रहने से सुस्थान, नीरोग भूमि होने से सुभूमि, मित्र शील से युक्त समदृष्टि होने से सुमित्रता तथा दिन में बहुत से लोगों से नहीं भरा हुआ और रात में अल्प शब्द होने से सुयुक्त कहा जाता है।

अल्प इच्छता क्या है? चीवर आदि की उत्कृष्टता या अधिकता में राग का न होना। सन्तुष्टि क्या है? केवल साधारण चीवर आदि की प्राप्ति से सदा संतोष का होना। बहुकार्यपरिहार क्या है? जो क्रय-विक्रय आदि दुष्कर्मों का परिहार, गृहस्थ तथा प्रव्रजित का (एक दूसरे से) अधिक वार्तालाप तथा प्रशंसा का परित्याग और ओषधि-निर्माण तथा नक्षत्रगणनादि का परित्याग करना है।

शीलविशुद्धि क्या है? दोनों संवरों में भी प्रकृति तथा प्रतिक्षेप से अवद्य शिक्षा के आधार की अभङ्गता और प्रमाद से भङ्ग होने पर भी शीघ्र से शीघ्र पश्चात्ताप के द्वारा धर्म का अनुसरण करना, श्रावक-संवर में पाराजिक के प्रतिविधान में अनुचित कथन है, उस पर भी पश्चात्ताप से युक्त होना तथा वाद में नहीं करने का मन बनाना, तथा जिस चित्त से वह कर्म किया है, उस चित्त में निःस्वभावता का प्रत्यवेक्षण या सभी धर्मों में निःस्वभावता की भावना करने से उसकी शील-विशुद्धि ही कहनी चाहिए। उसे तो **आर्याजातशत्रुकौकृत्य** से जानना चाहिए। अतः उस कौकृत्य का अभाव करके भावना में प्रयत्न करना चाहिये।

कामों में भी यहाँ तथा परलोक में होने वाले दोषों का मनसिकार करके इनमें विकल्पों का प्रहाण करना चाहिए। जो भी संसार के भाव प्रिय या अप्रिय हों वे सब तो विनाशधर्मी, (तथा) अस्थिर हैं। निःसन्देह उन सबमें और मुझमें शीघ्र ही वियोग संभव होने से मैं इस पर क्यों अधिक आसक्ति आदि करूँ, ऐसी भावना से सभी विकल्पों का प्रहाण करना चाहिए।



विषयना का सम्भार क्या है ? सत्पुरुषों का आश्रय, बहुश्रुतों का अन्वेषण तथा योनिशोमनस्कार हैं। वहाँ किस प्रकार के सत्पुरुष का आश्रय लेना चाहिये, ? ऐसा कहे तो जो बहुश्रुत, स्पष्टभाषी, करुणा से युक्त तथा दुःखसहिष्णु हो।

इसमें बहुश्रुतपर्येषणा क्या है ? जो भगवान् के द्वादशाङ्ग धर्मप्रवचन के नेयार्थ तथा नीतार्थ का आदरपूर्वक खूब श्रवण करना है। इस प्रकार आर्यसंधिनिर्माण में कहा गया है—“इच्छाभर आर्य-कथा को न सुनना विषयना का विधन है।” उसी में कहा गया है कि—“विषयना तो श्रवण तथा मनन से उत्पन्न विशुद्ध दृष्टि के कारण उत्पन्न होती है।” आर्यनारायणपरिपृच्छा में भी कहा गया है—“श्रवण से युक्त में प्रज्ञा का प्रादुर्भाव होता है। प्रज्ञावान् तो शान्त-क्लेश वाला होता है।”

योनिशोमनसिकार क्या है ? जिसे नीतार्थ सूत्र तथा नेयार्थ सूत्र आदि सुनिर्णीत करना है। इस प्रकार बोधिसत्त्व को शंका न होने पर भावना में ऐकान्तिक निश्चय होता है। अन्यथा संशय से डिगाये जा रहे यान में स्थित रहने पर तो चतुष्पथ के बीच पड़े हुये मनुष्य की भांति कहीं पर भी निश्चय नहीं कर सकेगा।

योगी को सदा मत्स्य, मांस आदि को छोड़कर, अप्रतिकूल तथा सीमित मात्रा में भोजन करना चाहिए। इस प्रकार जिस बोधिसत्त्व ने शमथ विषयना के समस्त सम्भारों को सञ्चित किया है, उसे भावना में प्रवेश करना चाहिये।

वहाँ सर्वप्रथम योगी भावना करते समय सभी आवश्यक कार्य समाप्त करके, मल-मूत्र करके, चुभने वाली आवाज आदि से रहित, मन के अनुकूल स्थान में स्थित होकर मुझे सभी सत्त्वों को बोधिमण्ड में स्थापित करना है, ऐसा सोचते हुये समस्त जगत् के उद्धार के आशय से युक्त महाकरुणा को सामने करके दसों दिशाओं में स्थित सभी बुद्धों तथा बोधिसत्त्वों को पाँचों अंगों से प्रणाम करके बुद्ध तथा बोधिसत्त्वों की मूर्ति-चित्रआदि सामने अथवा अन्य (वस्तु) पर स्थापित करके उनकी विधिवत् यथारुचि पूजा तथा स्तुति करके, अपने पापों का प्रायश्चित्त करके समस्त जगत् के पुण्यों का अनुमोदन करके, अतिमृदु सुखासन पर भट्टारकवैरोचन की पर्यङ्क भांति या अर्धपर्यङ्क करके, आँखों को न तो अधिक खोलकर और न अधिक बन्द करके, नासिका के अग्रभाग पर (दोनों नेत्रों) को टिका कर, शरीर को न अधिक झुकाकर न अधिक तानकर, सीधे प्रणिधान करके स्मृति को भीतर की ओर मोड़ करके बैठना चाहिए। इसके बाद दोनों कंधों को बराबर स्थापित करे। सिर को न ऊँचा और



न नीचा रखकर एक ओर निश्चल रखना चाहिए। नाक से नाभि तक सिधार्ई में रखना चाहिये। दांत और ओष्ठों को कोमलता के साथ रखना चाहिए, और जीभ को ऊपरी दांतों की जड़ में लगाना चाहिए। आश्वास तथा प्रश्वास भी न शब्दसहित, न स्थूल और न तेज हो करना चाहिए। अपितु विना जाने धीरे-धीरे अनाभोग से जैसे भीतर आये और बाहर निकले वैसा करना चाहिए।

वहाँ सर्वप्रथम शमथ सिद्ध करना चाहिए। बाह्य विषयों पर होने वाले चित्त-विक्षेप को शान्त करके अभ्यन्तर में आलम्बन पर निरन्तर अनायास प्रवृत्त करके प्रीति तथा प्रश्रब्धि का चित्त में स्थित होना 'शमथ' कहा जाता है। उसी शमथ का आलम्बन करते समय जो तत्त्व-विचार है, वहीं 'विपश्यना' है। जैसा कि आर्यारत्नमेघ में कहा गया है—“शमथ तो चित्त की एकाग्रता है और विपश्यना भूतप्रत्यवेक्षण है।”

आर्यसंघिनिर्माचन में भी कहा गया है—“भगवन् ! शमथ की परिगवेषणा तथा विपश्यना में कुशलता कैसे हो ? कहते हैं, मैत्रेय ! मेरे द्वारा धर्मोपचार व्यवस्थापित है। वह इस प्रकार है जो सूत्र, गेयं, व्याकरण, गाथा, उदान, निदान, अवदान, इतिवृत्तक, जातक, दैपुल्य, अद्भूतधर्म तथा उपदेशवर्ग बोधिसत्त्वों को बतलाये गये हैं, वे सब बोधिसत्त्वों को उन्हें अच्छी तरह से सुनकर, सम्यग् रूप से धारण करके, पाठ का अभ्यास करके, मन से सम्यक् परीक्षण करके, दृष्टि से प्रतिवेध करके, अकेले एकान्त स्थान में बैठकर, अभ्यन्तर में प्रतिसंलीन होकर जिस प्रकार समुचित रूप से विचारित हैं उन्हीं धर्मों का मनसिकार करके, जिस चित्त के द्वारा मनसिकार होता है उसी चित्त के अभ्यन्तर में सदा चिन्तन के द्वारा मनसिकार होता है। इस प्रकार प्रवेश करके उसमें अनेक बार स्थित होकर, उसमें जो काय तथा प्रश्रब्धि चित्त-प्रश्रब्धि होती है; उसी को शमथ कहा जाता है। इसलिए बोधिसत्त्व शमथ की परिगवेषणा करता है। इससे काय प्रश्रब्धि तथा चित्त-प्रश्रब्धि होती है। उनको प्राप्त करके उसी में स्थित होता है, और चित्त विक्षेप का प्रहाण करके यथावत् चिन्तन किये गये उन्हीं धर्मों का भीतर में समाधि-गोचर, प्रतिबिम्ब के रूप में प्रत्यवेक्षण करता है और अधिमुक्त करता है। उस प्रकार की समाधि का गोचर उन प्रतिबिम्बों पर उस ज्ञेयार्थ का विवेचन, प्रविवेचना, परिकल्पना पर्यवेक्षणा, क्षान्ति, इच्छा, विशिष्टविभाग, दर्शन तथा अधिगम करते हैं, उसीको विपश्यना कहा जाता है, और उस प्रकार से बोधिसत्त्व की विपश्यना में कुशलता होती है।”

वहाँ शमथ का अभिनिर्हार करने के इच्छुक योगी को आदि (प्रारम्भ) में तो सूत्र वर्ग, गेय आदि का समस्त प्रवचन तथतापरायणता, तथता में उतरना, तथता



की और आजाना, इस प्रकार के सभी संग्रह करके उन पर चित्त को उपस्थापित करना चाहिए। अथवा वहाँ कितने आकारों में सभी धर्मों के संग्रहभूत स्कन्ध आदि में चित्त को उपस्थापित करना चाहिए, या जैसी देखी और जैसी सुनी गयी थी (उसी) बुद्ध की प्रतिमा पर चित्त स्थापित करना चाहिए। जैसा कि आर्यसमाधिराज में कहा गया है—

“सुवर्ण वर्ण के समान शरीर से, लोकनाथ समन्ततः सुशोभित हैं। इस आलम्बन पर जिसका मन स्थिर होता है, वह बोधिसत्त्व उस पर समाहित कहा जाता है।”

इस प्रकार जिस पर इच्छा हो, उस आलम्बन पर चित्त स्थापित करके उसी पर उत्तरोत्तर सदा चित्त को स्थापित करना चाहिए। उस पर उपस्थापित करके इस प्रकार से चित्त का परीक्षण करना है कि क्या आलम्बन सम्यग् रूप से ग्रहण करता है अथवा लीन हो जाता है, या बाह्य विषय पर व्यासेक होने से विक्षिप्त हो जाता है, ऐसी परीक्षा करनी चाहिए। इसमें यदि स्त्यान तथा मिद्ध से अभिभूत होकर चित्त लीन होने अथवा लीन होने की शङ्का दिखायी पड़े, उसी समय परम आनन्द देने वाली वस्तु बुद्ध की प्रतिमा आदि या आलोक संज्ञा वाला मनसिकार करना चाहिये। इसके बाद लय को शान्त करके जैसे भी उसी आलम्बन पर चित्त का आलम्बन-अतिस्फुट दिखायी पड़े उसी प्रकार करना चाहिए।

जब जात्यन्ध की भाँति या अन्धकार में प्रविष्ट मनुष्य की भाँति, अथवा आँखे बन्द किये हुये (व्यक्ति) की भाँति चित्त आलम्बन को अतिस्फुट नहीं देख पाता है, तब उसको लीन हुआ समझना चाहिए। जब बाह्य रूपादि में इन्हीं के गुण की विकल्पना से दौड़ने से या अन्य मनसिकार से, या पूर्व अनुभव में आये विषय की इच्छा से चित्त में औद्धत्य हो या औद्धत्य होने की शंका दिखाई पड़े तब सभी संस्कार अनित्य, दुःख आदि मनःसंवेग की वस्तुओं का मनसिकार करना चाहिए। उसके बाद विक्षेप को शान्त करके स्मृति तथा संप्रजन्य की रज्जु से मनरूपी हाथी को उसी आलम्बन-वृक्ष से बद्ध करना चाहिए। जब लय तथा औद्धत्य का अभाव होकर उस आलम्बन पर चित्त की प्रशमवाहिता दिखाई दे तब आभोग को शिथिल करके उपेक्षा करें। उसी समय जबतक इच्छा हो तबतक बैठे रहें। इस प्रकार शमथ का अभ्यास करने वाले उस (साधक) को जब शरीर तथा चित्त की प्रश्रब्धि प्राप्त हो जाय और इच्छा के अनुसार आलम्बन पर चित्त अपने वश में हो जाये, तब समझना चाहिए कि शमथ निष्पन्न हो गया है।



इसके बाद शमथ सिद्ध करके विपश्यना की भावना करनी चाहिए, और इस प्रकार सोचना चाहिए कि भगवान् बुद्ध के सभी वचन सुभाषित हैं, क्योंकि इनका उद्देश्य साक्षात् या परमपरा से तत्त्व को प्रत्यक्ष रूप में प्रकाशित करना और तत्त्व पर परायण होना ही है। तत्त्व का ज्ञान होने पर सर्वदृष्टिजालों से मुक्ति हो जायेगी। जिस प्रकार आलोक के उदय होने से अन्धकार का निरास हो जाता है। शमथ मात्र से न ज्ञान की विशुद्धि होगी और न आवरण के अन्धकार का निरास होगा। प्रज्ञा के द्वारा तत्त्व की सम्यग् रूप से भावना करने पर ज्ञान की विशुद्धि होती है। प्रज्ञा से ही तत्त्व का अवगमन होता है। प्रज्ञा से ही आवरण का सम्यग् रूप से प्रहाण किया जाता है। इसलिए ऐसा सोचना चाहिए—मुझे शमथ में स्थित होकर प्रज्ञा के द्वारा तत्त्व की परिगवेषणा करना चाहिए; शमथ मात्र से संतोष नहीं करना चाहिए।

तत्त्व किस प्रकार का है? जो परमार्थतः सभी वस्तु पुद्गल तथा धर्म की दो आत्माओं से शून्य है। वह भी प्रज्ञापारमिता के द्वारा जाना जाता है, अन्यथा नहीं जैसा कि आर्यसंघिनिर्माचन में कहा गया है कि—“भगवन्! बोधिसत्त्वों के द्वारा धर्मों की निःस्वभावता किस पारमिता के द्वारा ग्रहण की जा सकेगी? अवलोकितेश्वर! प्रज्ञापारमिता के द्वारा ग्रहण की जासकेगी।” इसलिए शमथ में स्थित होकर प्रज्ञा की भावना करें।

वहाँ योगी को इस प्रकार परीक्षण करना चाहिए कि पुद्गल स्कन्ध, धातु और आयतन से अलग नहीं दिखलाई पड़ता है। पुद्गल तो स्कन्ध आदि के स्वभाव का भी नहीं है, क्योंकि वे स्कन्ध आदि अनित्य तथा अनेक स्वभाव के हैं जबकि, अन्यो के द्वारा परिकल्पित किया गया है कि पुद्गल नित्य तथा एकरूप है। तत्त्वतः या अन्यतः में अनिर्वचनीय पुद्गल का वस्तु होना अयुक्त है, क्योंकि वस्तु सत्ता का कोई अन्य प्रकार नहीं होती है। अतः इस प्रकार लोक का ‘मैं’ और ‘मेरा’ ऐसा कहना तो भ्रम ही है, ऐसा विचार करना चाहिए।

धर्मनैरास्त्य की भी इसी प्रकार भावना करनी चाहिए। धर्म संक्षेप में पञ्च स्कन्ध, बारह आयतन तथा अठारह धातुयें हैं। इनमें जो रूपी (रूप वाला) स्कन्ध, आयतन तथा धातु है वे तो परमार्थतः चित्त के आकार से भिन्न नहीं हैं, क्योंकि उन सब का परमाणुओं में विभाग करने पर परमाणु के भी अंश की स्वभावता का प्रत्यवेक्षण करने पर ‘स्वभाव’ के निश्चय ग्रहण का अभाव है। इसलिए अनादिकाल से मिथ्या रूपादि के अभिनिवेश के कारण स्वप्न में दिखाई पड़ने वाले रूपादि के



प्रतिभास की भाँति, अज्ञानियों को ( अपना ) चित्त ही बाहर विच्छिन्न रूप आदि की भाँति प्रतिभासित होता है। परमार्थतः यह रूपादि चित्त के आकार से भिन्न नहीं है, ऐसा विचार करना चाहिए। वह इस प्रकार सोचते हैं—त्रैधातुक चित्तमात्र है। वह इस प्रकार चित्त के स्वभाव का प्रत्यवेक्षण तथा विचार करता है कि—समस्त धर्म-प्रज्ञप्ति चित्त में ही बोध करके उस पर प्रत्यवेक्षण करने पर सभी धर्मों के स्वभाव का प्रत्यवेक्षण हो जाता है।

परमार्थतः चित्त का भी सत्य होना युक्त नहीं है। जब मिथ्या स्वभाववाले रूपादि का आकार ग्रहण करने वाला चित्त ही अनेक आकारों में प्रतिभासित होता है, तब उसकी सत्यता कहाँ होगी? जैसे रूपादि मिथ्या है, उसी प्रकार चित्त भी इससे भिन्न न होने से मिथ्या ही है। जैसे रूप आदि अनेक आकार वाले होने से एक तथा अनेक स्वभाव के नहीं हैं, उसी प्रकार चित्त भी उससे भिन्न न होने के कारण एक तथा अनेक स्वभाव का नहीं है। इसीलिए चित्त तो माया आदि के स्वभाव के समान ही है।

यथावत् चित्त की तरह समस्त धर्म भी माया आदि के स्वभाव के समान ही हैं, ऐसा विचार करना चाहिए। उसके द्वारा ( साधक के द्वारा ) इस प्रकार प्रज्ञा से चित्त के स्वभाव का प्रत्यवेक्षण किये जाने पर परमार्थतः चित्त भीतर में भी उपलब्ध नहीं होता, बाहर में भी उपलब्ध नहीं होता। दोनों न होने पर भी उपलब्ध नहीं होता। अतीत चित्त भी उपलब्ध नहीं होता, भविष्य का भी उपलब्ध नहीं होता है और प्रत्युत्पन्न में भी उपलब्ध नहीं होता है। न तो चित्त उत्पन्न होते समय कहीं से आता है और न तो निरुद्ध होते समय भी कहीं जाता है, क्योंकि चित्त तो अग्राह्य, अनिर्दर्शन ( तथा ) अरूप है। जो अनिर्दर्शन-अग्राह्य और अरूपी है, उसका स्वभाव किस प्रकार का है? ऐसा कहें तो जैसा आर्यारत्नकूट में कहा गया है, वह उस प्रकार का है—“काश्यप ! चित्त परिगवेषणा करने पर उपलब्ध नहीं होगा। जो अनुपलब्ध है, वह आलम्बित नहीं होगा, जो अवलम्बित नहीं होता है वह अतीत भी नहीं, अनागत भी नहीं, प्रत्युत्पन्न भी नहीं है।” ऐसा विस्तार से कहा गया है। इस प्रकार परीक्षण करने पर चित्त का आदि सम्यग् रूप से दिखलाई नहीं पड़ेगा, अन्त भी सम्यग् रूप से दिखलाई नहीं पड़ेगा, मध्य भी सम्यग् रूप से दिखलाई नहीं पड़ेगा।

जिस प्रकार चित्त में अन्त तथा मध्य नहीं होता है, उसी प्रकार सभी धर्मों को भी अन्तरहित तथा मध्यरहित जानना चाहिए। इस से इस प्रकार चित्त को



अन्त तथा मध्य से रहित जानने से चित्त की स्वभावता कुछ भी दिखलाई नहीं पड़ेगी। जिससे चित्त को परिज्ञान होता है, उसका भी शून्य के रूप में बोध होता है। उसका बोध होने से चित्त के आकार में सिद्ध हुआ स्वभाव रूप आदि का स्वभाव भी सम्यग् रूप से दिखलाई नहीं पड़ेगा। वह इस प्रकार प्रज्ञा के द्वारा सभी धर्मों का स्वभाव सम्यग् रूप से दिखलाई न पड़ने से रूप नित्य है या अनित्य है, शून्य है या अशून्य, सास्त्रव है या अनास्त्रव है, उत्पन्न है या अनुपन्न है, सत् है या असत् है, ऐसा विकल्प नहीं करता है? जिस प्रकार रूप में विकल्प नहीं करता है, उसी प्रकार वेदना, संज्ञा, संस्कार तथा विज्ञानों पर भी विकल्प नहीं करता है। धर्मों के असिद्ध होने के कारण उसके विशेषणों की भी सिद्धि नहीं होगी। अतः उनमें विकल्प कैसे होगा? इस प्रकार उसकी प्रज्ञा के द्वारा परीक्षा करने पर जब योगी को किसी वस्तु के स्वभाव की परमार्थता का निश्चय अवधारण नहीं होता, तब निर्विकल्प समाधि में प्रविष्ट होता है। और सभी धर्मों की निःस्वभावता का भी अवबोध होता है।

जो प्रज्ञा के द्वारा वस्तुओं के स्वभाव का प्रत्यवेक्षण करके भावना नहीं करता, केवल मनसिकार-परिहार मात्र की भावना करता है, उसके विकल्प कभी भी निवृत्त नहीं होते हैं, और निःस्वभाव बोध भी नहीं होगा, क्योंकि प्रज्ञा के आलोक का अभाव होता है। इस प्रकार सम्यक् प्रत्यवेक्षण से सम्यक् यथावत् ज्ञान की अग्नि होने पर अरणिमन्थन के अग्नि की भाँति कल्पनारूपी वृक्ष को जला डालेगा, ऐसा भगवान् ने कहा है।

आर्यारत्नमेघ में कहा गया है—“इस प्रकार दोषों को ( दूर करने में ) निपुण ( विशेषज्ञ ) वह (व्यक्ति) सभी प्रपञ्चों को दूर करने के लिए शून्यता की भावना का योग करेगा। इस प्रकार शून्यता की भावना अधिक करने से वह जिस-जिस स्थान में चित्त फैलता है, चित्त अभिरत होता है, उन-उन स्थानों की स्वभावता का अन्वेषण करने पर शून्य का अवबोध होता है। जो चित्त है, वह भी परीक्षण करने पर शून्य का बोध होता है। जिस चित्त से वह परीक्षण करता है, वह भी परीक्षण करने पर स्वभावतः शून्य ही ज्ञात होता है। वह इस प्रकार से परीक्षण करते हुये अनिमित्त योग में प्रवृत्त होता है।” इससे पर्यवेक्षण पूर्णगामिता का निर्निमित्तता में प्रवेश दिखलाया गया है। मनसिकार के परित्याग मात्र से प्रज्ञा के द्वारा वस्तु के स्वभाव पर विचार किये बिना निर्विकल्पता में प्रवेश का असंभव होना अतिस्पष्ट रूप से निर्दिष्ट किया गया है। इस प्रकार वह प्रज्ञा के द्वारा रूप आदि वस्तु के स्वभाव का



सम्यक् यथावत् परीक्षण करके ध्यान करता है, न कि रूप आदि में स्थित होकर। इस लोक तथा परलोक के बीच में रहकर ध्यान नहीं करता है, क्योंकि वे रूप आदि उपलब्ध नहीं होते हैं, इसलिए ( उसे ) 'अप्रतिष्ठितध्यान' कहा जाता है।

प्रज्ञा से समस्त वस्तुओं की स्वभावता का प्रत्यवेक्षण करके, जिस कारण से अनुपलम्भ ध्यान करता है, इसे 'प्रज्ञोत्तरध्यान' कहा जाता है, जैसा कि आर्यगगन-गञ्ज तथा रत्नचूड आदि में निर्दिष्ट है।

इस प्रकार वह पुद्गल तथा धर्मनैरात्म्य के तत्त्व में प्रविष्ट होता है और वह अन्य परीक्षणोप और दर्शनीय न होने से वितर्क तथा विचार से रहित, अनभिलाष्य के एक स्वरूप वाला, मनसिकार में अनायास रूप से प्रविष्ट, अनभिसंस्कार के कारण तत्त्व की अतिस्फुट रूप से भावना करते हुए बैठा रहे। वहाँ रहकर चित्त के संतान को विक्षिप्त नहीं करना चाहिए। जब बीच में राग आदि से चित्त बाहर विक्षिप्त हो, तब विक्षेप जानकर शीघ्रता से अशुभ की भावना आदि से विक्षेप को शान्त करके शीघ्र ही तथ्यता में पुनः चित्त को प्रविष्ट करना चाहिए। जब वहाँ चित्त को अनभिरत देखे तब समाधि के गुणों को देखने से वहाँ अभिरतिकी भावना करनी चाहिए। विक्षेप में दोष दीखने से भी अनभिरतिको शान्त करना चाहिए। यदि स्त्यान तथा मिद्ध से अभिभूत होकर अस्पष्ट प्रचार के कारण चित्त के लय की या लीन होने की शङ्का दिखलाई पड़े, तब पूर्व के समान परममुदित वस्तु के मनसिकार से शीघ्र लय को शान्त करके पुनः उसी तत्त्व के आलम्बन का अतिदृढता से ग्रहण करना चाहिए। यदि जब पहले के हँसने तथा खेलने का अनुस्मरण होकर बीच में चित्त के समुद्धत होने पर या औद्धत्य का संदेह दिखाई पड़े, तब पूर्ववत् अनित्यत्व आदि संवेग की वस्तुओं का मनसिकार करके विक्षेप की शान्ति करें। उसके बाद फिर से उसी तत्त्व में चित्त की अनभिसंस्कारवाहिता में प्रयत्न करना चाहिए।

यदि जब लय तथा औद्धत्य से विविक्त होकर समानरूप से चित्त उसी तत्त्व पर स्वरसवाही होता है, तब भोग को शिथिल करके उपेक्षा करे। यदि चित्त के संप्रवृत्त होने पर आभोग किया जाये, तब चित्त विक्षिप्त हो जायेगा। यदि चित्त के लीन हो जाने पर अनाभोग हो, तब अतिलीनता के कारण विपश्यना नहीं होगी, क्योंकि चित्त जात्यन्ध की भाँति हो जायेगा। इसलिए चित्तलीन हो जाने पर यत्न करे। समता होने पर यत्न नहीं करना चाहिये।



जब विषयना की भावना करने से प्रज्ञा अतिरिक्ततर हो जाती है, तब शमथ की अल्पता के कारण प्रवात में रखे हुए प्रदीप की तरह चित्त के चञ्चल होने से तत्त्व अतिस्फुट नहीं दिखलाई पड़ेगा। इसलिए उस समय शमथ की भावना करनी चाहिये। शमथ के अतिरिक्ततर हो जाने पर भी प्रज्ञा की भावना करनी चाहिये।

जब दोनों ही समान रूप से प्रवृत्त हो जायें, तब (जबतक) काय तथा चित्त में पीडा न होने लगे, तब तक अनभिसंस्कार के साथ स्थित करना चाहिये। काय आदि में पीडा होने पर इसके बीच में, समस्त लोक को माया, मरोचि, स्वप्न, उदकचन्द्र तथा प्रतिभास की भाँति देखकर यह सोचना चाहिये कि ये सत्त्व तो इस प्रकार के गम्भीर धर्म का अवबोध न होने के कारण संसार में संक्लिष्ट हो गये हैं, अतः मैं अवश्य वैसा ही करूँगा कि इनको उस धर्मता का अवबोध करा सकूँ, ऐसा सोचकर महाकरुणा तथा बोधिचित्त को अभिमुख करना चाहिये। इसके बाद विश्राम करके फिर उसी प्रकार सर्वधर्मनिराभास समाधि में प्रवृत्त हो जाये। फिर चित्त में बहुत खेद होने पर उसी प्रकार विश्राम करना चाहिये। यह शमथ एवं विषयना का युगनद्धवाही मार्ग है, जो सविकल्प तथा निर्विकल्प प्रतिबिम्ब पर आलम्बित है।

इस प्रकार योगी इस क्रम से एक घण्टा या आधा प्रहर या एक याम जितना भी रहना चाहे, उतने समय तक तत्त्व की भावना करते हुए बैठा रहे। यह 'अर्थप्रविचयध्यान' आर्यलङ्कागतार में निर्दिष्ट है। इसके बाद चाहे तो समाधि से उठकर पर्यङ्क को बिना खोले ( उसको ) इस प्रकार सोचना चाहिये कि ये सभी धर्म परमार्थतः निःस्वभाव होने पर भी संवृति में व्यवस्थित ही हैं। अन्यथा कर्म तथा फल का सम्बन्ध किस प्रकार व्यवस्थित हो सकेगा ? भगवान् ने भी कहा था—  
“वस्तुओं की उत्पत्ति संवृति में है। परमार्थ में निःस्वभाव है।”

ये बालबुद्धि वाले सत्त्व निःस्वभाव-वस्तुओं में सत्ता आदि का समारोप करने से विपरीतबुद्धि होकर दीर्घकाल तक भवचक्र में परिभ्रमण करते हैं। अतः मैं अवश्य अनुत्तर पुण्य तथा ज्ञानसम्भारों को परिपूर्ण करके, इसके बाद सर्वज्ञ पद प्राप्त करके उन लोगों को धर्मता का अवबोध कराऊँगा, ऐसा सोचे। इसके बाद धीरे से पर्यङ्क को खोलकर दश दिशाओं में स्थित सभी बुद्धों तथा बोधिसत्त्वों को प्रणाम करके, उनकी पूजा तथा स्तुति प्रदान करके 'आर्यभद्रचर्या' आदि महाप्रणिधान करना चाहिये। इसके बाद शून्यता तथा महाकरुणा से गर्भित दानादि समस्त पुण्य तथा ज्ञानसम्भारों का अर्जन करने के लिए प्रयत्न करना चाहिये।



ऐसा होने पर वह ध्यान सर्वाकारवरोपेतशून्यता निष्पन्न होता है। जैसा कि **आर्यरत्नकूट** में कहा गया है—“वह मैत्री का कवच पहनकर महाकरुणा के स्थान पर बैठकर सर्वाकारवरोपेतशून्यता के अभिनिर्हार वाला ध्यान करता है। वह सर्वाकारवरोपेतशून्यता क्या है? जो दान से अनपगति, शील से अनपगति, क्षान्ति से अनपगति, वीर्य से अनपगति, ध्यान से अनपगति, प्रज्ञा से अनपगति तथा उपाय से अनपगति” इत्यादि विस्तार से कही गयी है। बोधिसत्त्व को तो सभी सत्त्वों का परिपाक करना चाहिये और क्षेत्र, काय, बहु-परिवार आदि सम्पत्ति उपाय वाले दानादि कुशलों का अवश्य सेवन करना चाहिये।

अन्यथा बुद्धों के क्षेत्र आदि की जो सम्पत्ति कही गयी है, वह किसका फल होगी? इसलिए सर्वाकारवरोपेत वह सर्वज्ञताज्ञान तो दान आदि उपायों से परिपूर्ण होने के कारण भगवान् ने ‘वह सर्वज्ञज्ञान तो उपाय से पारङ्गत है’, ऐसा कहा है। अतः बोधिसत्त्व को दान आदि उपायों का भी सेवन करना चाहिये, न कि केवल शून्यता का। इस प्रकार **आर्यसर्बधर्मवैपुल्य** में कहा गया है—“हे मैत्रेय! यह तो बोधिसत्त्वों की सम्बोधि के लिए षट्पारमिता का समुदागम करता है, उसको जो अज्ञानी पुरुष इस प्रकार कहेंगे कि—बोधिसत्त्व को प्रज्ञापारमिता में ही शिक्षित करना चाहिये, शेष पारमिताओं से क्या? वे लोग अन्य पारमिताओं को भी दूषित करने की बात सोचते हैं। हे अजित! इसको क्या समझ रहे हैं? क्या काशीराज दुर्बुद्धि था? जिसने कबूतर के लिए अपना मांस श्येन को दे दिया। मैत्रेय ने कहा—भगवन्! यह नहीं है। भगवान् ने कहा—मैत्रेय! बोधिसत्त्व-चर्या का आचरण करते समय मैंने जो षट्पारमिताओं से युक्त जिन कुशलमूलों का अर्जन किया, क्या उन कुशलमूलों ने हानि पहुँचायी? मैत्रेय ने कहा—भगवन्! यह तो नहीं। भगवान् ने कहा—हे अजित! आपने भी साठ कल्पों तक दानपारमिता का सम्यक् अनुष्ठान किया है, साठ कल्पों तक शीलपारमिता, साठ कल्पों तक क्षान्तिपारमिता, साठ कल्पों तक वीर्यपारमिता, साठ कल्पों तक ध्यानपारमिता और साठ कल्पों तक प्रज्ञापारमिता का भी अनुष्ठान किया है। उस पर अज्ञानी पुरुष इस प्रकार कहेंगे कि—एक ही नय से बोधि हो सकती है, जैसे कि शून्यता नय से ही। वे लोग तो चर्या-अपरिशुद्ध हो जायेंगे।” इत्यादि।

उपाय से रहित होने पर बोधिसत्त्व केवल प्रज्ञा से ही श्रावक की भाँति बुद्ध के कार्य नहीं कर सकेगा। उपाय की सहायता से समर्थ होगा। जैसा कि **आर्यरत्नकूट** में कहा गया है—“काश्यप! जिस प्रकार मन्त्रीसहित राजा सभी कार्य करते हैं, उसी प्रकार उपाय-कौशल से युक्त बोधिसत्त्वों की प्रज्ञा सभी बुद्धकार्य करती है।”



बोधिसत्त्वों के मार्ग की दृष्टि भी अन्य है, तैर्थिक तथा श्रावकों की मार्ग-दृष्टि भी अलग है। इस प्रकार तीर्थिकों की मार्ग-दृष्टि तो आत्मा आदि की विपरीतता से युक्त होने के कारण पूरी की पूरी प्रज्ञा से रहित मार्ग है। इसलिए उन लोगों को मोक्ष की प्राप्ति नहीं होगी।

श्रावकों की भूमि तो महाकरुणा से रहित होने से उपाय से युक्त नहीं है, अतः वे लोग एकान्त निर्वाण में लग जायेंगे। बोधिसत्त्वों के मार्ग को प्रज्ञा तथा उपाय से युक्त मानते हैं, इसलिए वे लोग अप्रतिष्ठित निर्वाण में परायण होने लगेंगे। बोधिसत्त्वों के मार्ग को प्रज्ञा तथा उपाय से युक्त मानते हैं, इस कारण ( वे ) अप्रतिष्ठित निर्वाण को प्राप्त करते हैं, क्योंकि प्रज्ञा के बल से संसार में नहीं गिरता है, ( और ) उपाय के बल से (श्रावक) के निर्वाण में भी नहीं गिरता है।

अतः आर्यगयाशीर्ष में कहा गया है—“बोधिसत्त्वों के मार्ग संक्षेप में दो हैं, कौन से दो? उपाय तथा प्रज्ञा।” आर्यश्रोपरमाद्य में भी कहा गया है—“प्रज्ञापारमिता माता है और उपाय-कौशल है पिता।” आर्यविमलकीर्तिनिर्देश में भी कहा गया कि—“बोधिसत्त्वों के बन्धन क्या हैं? मोक्ष क्या है? बिना उपाय से संसार की गति का परिग्रह करना बोधिसत्त्वों का बन्धन है। उपाय से संसार की गति का परिग्रहण करना बोधिसत्त्वों का बन्धन है। उपाय से संसार की गति में चलना मुक्ति है। प्रज्ञा के बिना भवगति का परिग्रहण करना बोधिसत्त्व का बन्धन है। प्रज्ञा के द्वारा भवगति में जाना मुक्ति है। उपाय से अपरिगृहीत प्रज्ञा बन्धन है। उपाय से परिगृहीत प्रज्ञा मुक्ति है।” इत्यादि विस्तार से कहा गया है।

बोधिसत्त्व प्रज्ञा-मात्र का सेवन करने पर श्रावकों के इष्ट निर्वाण में गिर जायेंगे, जितके कारण ( वह निर्वाण ) बन्धन की भाँति हो जायेगा। अप्रतिष्ठित निर्वाण से मुक्ति नहीं होगी। इसलिये उपाय से रहित प्रज्ञा बोधिसत्त्वों का बन्धन है, ऐसा कहा जाता है। अतः वायु से पीड़ित लोगों के अग्नि-सेवन की भाँति बोधिसत्त्व विपर्यास रूपी वायु-मात्र का प्रहाण करने के लिए उपायसहित प्रज्ञा के द्वारा शून्यता का सेवन करे न कि श्रावक की भाँति साक्षात्कार करे। जैसा कि आर्यदश-धर्मसूत्र में कहा गया है—“कुलपुत्र! जैसे कोई मनुष्य अग्नि की परिचर्या करता है, वह उस अग्नि का सत्कार करता है। गुरुकार करने पर भी वह इस प्रकार सोचता है, मैं उस अग्नि का सत्कार करता हूँ, गुरुकार करता हूँ। बहुमान करने पर भी इसको दोनों हाथों से परिग्रहण करूँगा, ऐसा नहीं सोचता। वह कैसे? इस आश्रय से मुझे शारीरिक दुःख या मन में दौर्मनस्य उत्पन्न होगा ऐसा



सोचेगा। उसी प्रकार बोधिसत्त्व भी निर्वाण का आशय वाला होने पर भी निर्वाण का प्रत्यक्ष नहीं करता है। वह किस कारण से है, ऐसा कहे तो इसके आश्रय से मैं बोधि से निवृत्त हो जाऊँगा, ऐसा सोचता है।”

केवल उपायमात्र का सेवन करने पर भी बोधिसत्त्व पृथग्जन की भूमि से अतीत न होने से खूब बँधा ही रहेगा। अतः प्रज्ञासहित उपाय का सेवन करना चाहिए। इस प्रकार मन्त्र से परिगृहीत विष को भाँति बोधिसत्त्वों के क्लेश भी यदि प्रज्ञा का परिग्रह होने के बल से भावना करने पर अमृत हो जाते हैं तो स्वभाव से अभ्युदय-फलवाले दान आदि का कहना ही क्या। **आर्यरत्नकूट** में भी कहा गया है—“जैसे कि काश्यप ! जैसे मन्त्र तथा औषधि से परिगृहीत विष घातक नहीं हो सकता है, उसी प्रकार प्रज्ञा से परिगृहीत बोधिसत्त्वों का क्लेश से भी विनिपात नहीं होता है।”

अतः जिस कारण से बोधिसत्त्व उपाय के बल से संसार का परित्याग नहीं करता, उसी के कारण (श्रावक) के निर्वाण में भी पतित नहीं होता है। जिस कारण से प्रज्ञा के बल से समस्त आलम्बनों का प्रहाण करता है, उसी के कारण संसार में नहीं गिरता है। अतः अप्रतिष्ठित निर्वाण-बुद्धत्व की प्राप्ति होती है। इसलिए **आर्यगगन-गञ्ज** में भी कहा गया है—“उस प्रज्ञा के ज्ञान से सभी क्लेशों का परिवर्जन कर दिया जाता है (और) उपायज्ञान से सभी सत्त्वों का परित्याग नहीं होता है।” **आर्यसन्धि-निर्माचन** में भी कहा गया है—“पूरी तरह से सत्त्वार्थ से विमुक्त होने वाले, और पूरी तरह से संस्कार के अभिसंस्कार से विमुक्त होने वाले के लिए मैंने अनुत्तर सम्यक्सम्बोधि को नहीं कहा है।” इसलिए बुद्धत्व प्राप्त करने के इच्छुक को उपाय तथा प्रज्ञा दोनों का सेवन करना चाहिए।

वहाँ लोकोत्तर प्रज्ञा की भावना करते समय या अत्यन्त समाहित होने के समय दान आदि उपायों का सेवन सम्भव न होने पर भी, वहाँ प्रयोग तथा पृष्ठलब्ध में होने वाली जो भी प्रज्ञा होती है, उस समय उपाय का सेवन होता ही है। इसलिए प्रज्ञा तथा उपाय दोनों युगनद्ध प्रवृत्त होते हैं। और फिर बोधिसत्त्वों का प्रज्ञा तथा उपाय से युगनद्धवाही मार्ग यही है। सभी सत्त्वों को देखने वाली महाकरुणा से परिगृहीत होने के कारण लोकोत्तर मार्ग का सेवन तथा उत्थान-उपाय के काल में भी मायाकार की भाँति केवल अविपर्यस्त दान आदि का सेवन करते हैं। जैसा कि **आर्याक्षयमतिनिर्देश** में—“वहाँ बोधिसत्त्व का उपाय क्या है ? प्रज्ञा अभिनिर्हार क्या है ? जिसके कारण समाहित होकर सत्त्वों को देखने से महाकरुणा के आलम्बन



पर चित्त की उपस्थापना हो, वही उसका उपाय है। जिससे शान्ति तथा प्रशान्ति की समापत्ति होती है, वही उसकी प्रज्ञा है।” इत्यादि विस्तृत रूप से कहा गया है। **मारदमनपरिच्छेद** में भी “और भी बोधिसत्त्वों का समुत्कर्षिक प्रयोग तो प्रज्ञा के ज्ञान से अभियोग भी करता है, उपायज्ञान से सभी कुशल धर्मों के संग्रह में भी योग करता है। प्रज्ञा के ज्ञान से नैरात्म्य, असत्त्व, अजीव, अपोष तथा अपुद्गल में भी योग करता है। उपाय के ज्ञान से सभी सत्त्वों का जो परिपाक करने में प्रयोग है,” इत्यादि विस्तार से कहा गया है। **आर्यधर्मसंगीतिसूत्र** में भी कहा गया है—

“जैसे कोई मायाकार निर्माण को मुक्त करने के लिए प्रयास करता है, उसको पहले से वह ज्ञात होता है, अतः उस निर्माण पर आसक्त नहीं होता। तीनों भवों को निर्माण की भाँति समझकर सम्बोधि में पारंगत वह जगत् के लिए कवच पहनता है, क्योंकि उसे जगत् पहले से ज्ञात होता है।”

बोधिसत्त्वों की प्रज्ञा तथा उपाय की विधि ही साध्य को लक्ष्य करके उसका प्रयोग संसार में स्थित भी है, और आशय निर्वाण में स्थित भी है। ऐसा कहा गया है।

इस प्रकार शून्यता तथा महाकरुणा के हृदय वाले अनुसर-सम्यक्सम्बुद्ध में परिणत दान आदि उपायों पर अभ्यास करके परमार्थ-बोधिचित्त-उत्पाद करने के लिए पहले जैसी सदा समय-समय पर शमथ तथा विपश्यना के प्रयोग पर यथाशक्ति भावना करनी चाहिये। **आर्यगोचरपरिशुद्धिसूत्र** में कहा गया है—सभी अवस्थाओं में सत्त्वों के अर्थों को करने वाले बोधिसत्त्वों की अनुशंसा का जैसा निर्देश किया गया है, उसी प्रकार उपस्थित स्मृति के द्वारा सर्वदा उपाय-कौशल की भावना करनी चाहिये।

इस प्रकार करुणा, उपाय तथा बोधिचित्त की भावना करने वाला वह इस जन्म में अवश्य विशिष्ट होता है। अतः स्वप्न में सदा बुद्ध तथा बोधिसत्त्व का दर्शन होगा, अन्य सुस्वप्न भी दिखाई पड़ेंगे। देव भी अनुमोदन से रक्षा करेंगे। प्रतिक्षण में भी विपुल पुण्य तथा ज्ञानसम्भारों का संचय हो सकेगा। क्लेश आवरण तथा दौष्टुल्य का भी क्षय हो जायेगा। सर्वदा ही सुख तथा सौमनस्य अधिक हो जायेंगे। बहुत लोगों का प्रिय हो जायेगा। शरीर भी रोगग्रस्त नहीं होगा। चित्त की परम अकर्मण्यता भी प्राप्त हो सकेगी। अतः अभिज्ञता आदि विशिष्ट गुणों की प्राप्ति हो जायेगी।

इसके बाद (साधक) ऋद्धि के बल से अनन्त लोकधातुओं में जाकर भगवान् बुद्धों की पूजा करता है। इनसे धर्म का भी श्रवण करता है। मृत्यु के समय में भी



अवश्य ही बुद्ध तथा बोधिसत्त्वों का दर्शन हो सकेगा। अन्य जन्मों में भी बुद्ध तथा बोधिसत्त्वों से अनपगत क्षेत्रों तथा विशेष गृहों में भी उत्पाद होगा। इसलिए अनायास पुण्य तथा ज्ञानसम्भारों को परिपूर्ण करेगा। महाभोग तथा बहुपरिवार वाला हो जायेगा। तीक्ष्ण प्रज्ञा के द्वारा बहुजन का परिपाक भी करेगा। सभी जन्मों में जाति-स्मरण हो सकेगा। अन्य सूत्रों में भी होने वाली इस प्रकार की अपरिमित अनुशंसा का अवबोध करना चाहिये।

इसके द्वारा इस प्रकार से करुणा, उपाय तथा बोधिचित्त की सदा आदरपूर्वक दीर्घकाल तक भावना करने से क्रमशः चित्त-सन्तान में अति परिशुद्ध क्षण के उत्पन्न होने से परिपाक हो जाने के कारण अरणि-मन्थन की अग्नि की भाँति सम्यग् अर्थ की भावना का प्रकर्षपर्यन्त गमन होकर लोकोत्तर ज्ञान विकल्पजालों की अपगति, निष्प्रपञ्च-धर्मधातु का अतिस्फुट अवगमन, निर्मल, निश्चल, निर्वायु में रखे गये प्रदीप की भाँति निश्चल प्रमाणभूत, सभी धर्मनैरात्म-स्वभाव वाले तत्त्व का साक्षात्कार, दर्शन मार्ग से संगृहीत, परमार्थ-बोधिचित्त का स्वभाव उत्पन्न होता है। उसके उत्पन्न होने से वस्तु-अन्त आलम्बन में प्रवृत्ति होती है। तथागत के गोत्र में उत्पन्न होता है। बोधिसत्त्व की निर्दोषता में प्रवृत्ति होती है, जगत् की सभी गतियों से निवृत्ति होती है, बोधिसत्त्व की धर्मता तथा धर्मधातु की अवगति में स्थिति होती है। बोधिसत्त्वों की प्रथम भूमि की प्राप्ति होती है। इस प्रकार की अनुशंसा को विस्तार से दशभूमि आदि से जानना चाहिये। यह तथता में आलम्बन कराने वाला ध्यान आर्यलङ्कावतार में निर्दिष्ट है। यह तो बोधिसत्त्वों की निष्प्रपञ्च निर्विकल्पता में ही प्रविष्ट होता है।

अधिमुक्ति भूमि में तो अधिमुक्तिवशात् प्रवृत्ति होना व्यवस्थापित है, न कि अभिसंस्कार से। उस ज्ञान का प्रादुर्भाव होने पर साक्षात् प्रवेश होता है। इस प्रकार प्रथम भूमि में प्रविष्ट होकर, वह बाद में भावनामार्ग में लोकोत्तर तथा इसके पृष्ठलब्ध ज्ञान दोनों के द्वारा प्रज्ञा तथा उपाय की भावना से क्रमशः भावना-प्रहेय संचित आवरण का सूक्ष्म से भी अतिसूक्ष्म का व्यवदान होने से और उत्तरोत्तर विशिष्ट गुणों को प्राप्त करने के लिए अधोभूमियों का परिशोधन करने से तथागत के ज्ञान-पर्यन्त में प्रवेश करके सर्वज्ञता के सागर में प्रविष्ट हो कार्य-परिनिष्पत्ति का आलम्बन भी प्राप्त करता है। इस तरह से क्रम से ही चित्त-सन्तान की परिशुद्धि का होना आर्यलङ्कावतार में भी कहा गया है। आर्यसन्धिनिर्माचन में भी कहा गया है—  
“क्रम से उत्तरोत्तर भूमियों में सुवर्ण की भाँति चित्त को विशुद्ध करके अनुत्तर सम्यक्-सम्बोधिपर्यन्त अभिसम्बुद्ध हो जायेगा।

सर्वज्ञता के सागर में प्रवेश हो जाने पर चिन्तामणि की भाँति समस्त सत्त्वों के उपजीवी गुण-स्कन्ध से भी युक्त है, पूर्व प्रणिधान के फल से सत्कृत किया है, महाकरुणा के स्वभावभूत हुए हैं, अनाभोग से ही नाना उपायों से युक्त है, अपरिमित निर्माणों से अशेष जगत् के सभी अर्थ-अकारों को किया है, सारी गुण सम्पत्तियों के प्रकर्षपर्यन्त में पहुँचा हुआ है, वासना-सहित समस्त दोष मलों का निरास करके सत्त्व-धातु के अन्त-पर्यन्त विहार करने वाले हैं, ऐसा (समझकर) प्रेक्षावान् उस भगवान् बुद्ध के समस्त गुणों के आकार में श्रद्धा उत्पन्न करके उन गुणों की परिनिष्पत्ति के लिए स्वयं सभी तरह के प्रयत्न करे।

अतः भगवान् ने इस प्रकार कहा है—“यह सर्वज्ञ ज्ञान तो करुणा के मूल से प्रादुर्भूत, बोधिचित्त-हेतु से उद्भूत और उपाय से पर्यवसित है।”

सत्पुरुष ईर्ष्यादि मलों को दूर करके, जल से सागर की भाँति गुणों से अतृप्त रहते हैं। विवेचन करके सुभाषितों का ग्रहण करते हैं। जैसे कि प्रसन्न होकर हंस जल से दूध ले लेते हैं ॥ १ ॥

इसलिए विद्वानों को पक्षपात से उद्विग्न मन को दूर करके, बालों से भी सभी सुभाषितों का ग्रहण करना ही चाहिये ॥ २ ॥

इस प्रकार मध्यमक मार्ग का आख्यान करने से, मैंने जो पुण्य प्राप्त किया है, उससे अशेष जनों को मध्यम-मार्ग-प्राप्ति हो ॥ ३ ॥

आचार्य कमलशील द्वारा मध्य में विरचित भावनाक्रम समाप्त हुआ। भारतीय उपाध्याय प्रज्ञावर्म तथा लोचवा वन्द्य ज्ञानसेन द्वारा अनुवाद प्रस्तुत करके निर्णय किया गया है।

द्वितीय भावनाक्रम का हिन्दी अनुवाद समाप्त हुआ।



## तृतीय भावनाक्रम

मञ्जुश्री कुमारभूत को नमस्कार ।

महायानसूत्र-नय के अनुसार प्रवृत्त हो गये लोगों के लिए संक्षेप में भावनाओं का क्रम कहा जा रहा है। उसमें यद्यपि भगवान् के द्वारा बोधिसत्त्वों की समाधि को अपरिमित, अप्रमाण आदि के भेद से कहा गया है, तथापि शमथ तथा विपश्यना से सभी समाधियाँ व्याप्त हैं। इसलिए उसी शमथ तथा विपश्यना से युगनद्धवाही मार्ग को कहने जा रहा हूँ। भगवान् ने कहा है—

“विपश्यना तथा शमथ की भावना करके प्राणी दौष्टुल्य बन्धन और निमित्त-बन्धन से मुक्त हो जायेंगे।”

इसलिए सभी आवरणों का प्रहाण करने के इच्छुकों को शमथ तथा विपश्यना का सेवन करना चाहिये। शमथ के बल से बिना हवा वाले स्थान में रखे गये दीपक की तरह चित्त अपने आलम्बन में निश्चल रहता है, और विपश्यना से अन्धकार में सूर्योदय की भाँति धर्म-तत्त्व का यथावद् ज्ञान होने से सम्यग् ज्ञान का आलोक उत्पन्न होता है और उससे समस्त आवरणों का प्रहाण हो जाता है।

इसलिए भगवान् ने योगियों के लिये चार आलम्बन की वस्तुओं का निर्देश किया है—निर्विकल्प-प्रतिबिम्ब, सविकल्प-प्रतिबिम्ब, वस्तुपर्यन्तता तथा कार्य-परि-निष्पत्ति। वहाँ शमथ से सभी धर्मों के प्रतिबिम्ब तथा बुद्ध आदि की प्रतिमा की अधिमुक्ति करके जो आलम्बन किया जाता है, उसी को निर्विकल्प-प्रतिबिम्ब कहा जाता है। उसे भूतार्थ के निरूपण में निर्विकल्प होने से ‘निर्विकल्पक’ कहा जाता है। सुनने और ग्रहण करने के अनुरूप धर्मों की प्रतिबिम्ब में अधिमुक्ति कराकर आलम्बन करने से प्रतिबिम्ब कहा गया है। जब योगी तत्त्व के अर्थाधिगम के लिए विपश्यना के द्वारा उसी प्रतिबिम्ब का विचार करता है, तब विपश्यना के लक्षण-तत्त्व-निरूपण का विकल्प वहाँ उत्पन्न होने से सविकल्प-प्रतिबिम्ब कहा जाता है, क्योंकि योगी उसी प्रतिबिम्ब के स्वभाव का निरूपण करते हुये सभी धर्मों के स्वभाव का यथावत् अवबोध करता है, जैसे कि-दर्पण के अन्दर अपने मुख के प्रतिबिम्ब का निरीक्षण करने से अपने मुख के दोष का निश्चय हो जाता है। जब वस्तु की पर्यन्तता के



लक्षण वाली तथता का अवबोध होता है तब वस्तु की पर्यन्तता का अवगमन होने के कारण प्रथम भूमि में वस्तु-पर्यन्तता-आलम्बन कहा जाता है। अतः ओषधि की रसायन के उपयोग की भाँति भावनामार्ग के द्वारा शेष भूमियों में क्रमशः विशुद्ध रतम क्षण के प्रादुर्भूत होने से आश्रयपरावृत्ति हो जाने पर जब अशेष आवरण-प्रहाणलक्षण-कार्यपरिसमाप्ति होती है, तब बुद्धभूमि में वही ज्ञान कार्यपरिनिष्पत्ति आलम्बन कहा जाता है।

इस प्रकार से क्या दर्शाया जाता है ? शमथ तथा विपश्यना की भावना से सभी वस्तुओं की पर्यन्तता का अधिगम होता है और उससे समस्त आवरणों के प्रहाण-लक्षण वाली कार्यपरिनिष्पत्ति की प्राप्ति होगी, वही बुद्धत्व है। इसलिए बुद्धत्व का अधिगम करने के इच्छुक को शमथ तथा विपश्यना का सेवन करना चाहिये। जो उन दोनों की भावना नहीं करता उसको न तो वस्तुपर्यन्ता का अधिगम होगा, और न कार्यपरिनिष्पत्ति ही होगी। वहाँ शमथ चित्त की एकाग्रता है, और विपश्यना है भूतप्रत्यवेक्षण, ऐसा संक्षेप में भगवान् ने **आर्यरत्नमेघ** आदि में शमथ तथा विपश्यना का लक्षण कहा है। इसमें योगी की शीलविशुद्धि आदि के द्वारा शमथ तथा विपश्यना के सम्भार में स्थित होकर जिसने सभी सत्त्वों पर महाकरुणा को उत्पन्न करना चाहिये और ठीक से उत्पादित बोधिचित्त के द्वारा श्रवण, चिन्तन तथा भावना का प्रयोग करना चाहिए।

सर्वप्रथम योगी को भावना के समय सभी आवश्यक कार्य समाप्त करके मलमूत्र से निवृत्त होकर चुभने वाली आवाज आदि से रहित और मन के अनुकूल स्थान में स्थित होकर 'मुझे सभी सत्त्वों को बोधि-गर्भ में स्थापित करना है, ऐसा निश्चय करते हुए समस्त जगत् के उद्धार के आशय के साथ महाकरुणा को अभिमुख करके दसों-दिशाओं में स्थित सभी बुद्धों तथा बोधिसत्त्वों के पाँचों अंगों से प्रणाम करके सामने या अन्यत्र बुद्ध तथा बोधिसत्त्वों की मूर्ति, वस्त्र आदि स्थापित करके उनकी यथावत् यथारुचि पूजा तथा स्तुति करके अपने पापों की देशना करके, समस्त जगत् के पुण्यों का अनुमोदन करना चाहिए। अति मृदु-सुखासन पर भट्टारकवैरोचन की भाँति पर्यङ्कबद्ध या अर्धपर्यङ्क करके, आँखों को न तो अधिक खोलना चाहिए और न ही अधिक बन्द करना चाहिए, अपितु नासिका के अग्रभाग पर (दोनों नेत्रों) को टिकाकर, न अधिक झुकाकर न अधिक तान कर शरीर को सीधा करके स्मृति को अन्तर्मुखी करके बैठना चाहिए। इसके बाद दोनों कन्धों को बराबर स्थापित करे। सिर को न ऊँचा और न नीचा रख कर एक ओर



निश्चल रखना चाहिये। नाक को नाभि की सिधार्ई में रखना चाहिये। दन्त और होठों को सामान्य रखना चाहिए और जोभ को ऊपरी दन्तों की जड़ में लगाना चाहिए। आश्वास तथा प्रश्वास भी न शब्दसहित, न स्थूल और न तेज ही करना चाहिये, अपितु विना जाने धीरे-धीरे विना प्रयास के जैसे भीतर आये और बाहर निकले वैसा करना चाहिये।

वहाँ प्रथमतः योगी को जैसा सुना और जैसा देखा है, उसी प्रकार की तथागत की मूर्ति पर चित्त स्थापित करके शमथ को सिद्ध करना चाहिये। तपाये हुए सोने की भाँति चमकदार लक्षणों तथा अनुव्यञ्जनों से अलंकृत, परिवार-मण्डल में बैठे हुए अनेक उपायों से सत्त्वों का हित कर रहे, उस तथागत की प्रतिमा का निरन्तर मनसिकार के द्वारा उसके गुणों की अभिलाषा उत्पन्न करनी चाहिये। लय, औद्धत्य आदि को शान्त करके तबतक ध्यान करता रहे, जबतक उसे सामने रखे हुए की भाँति स्फुटतर न दिखाई पड़े। इसके बाद तथागत की प्रतिमा के प्रतिबिम्ब के आने-जाने का निरूपण करने से विषयना की भावना करनी चाहिये। तत्पश्चात् इस प्रकार सोचना चाहिये कि—जिस प्रकार तथागत की प्रतिमा का प्रतिबिम्ब न तो कहीं से आया है और न कहीं भी जायेगा, वैठी हुई भी स्वभाव से शून्य है और आत्मा तथा आत्मोय से रहित है। उसी प्रकार सभी धर्म स्वभाव से शून्य, आने और जाने से रहित प्रतिबिम्ब की तरह भाव आदि के रूप से रहित हैं, ऐसा विचार करके निर्विकल्प तथा अनिर्वचनीय एक ही रसवाले चित्त के द्वारा तत्त्व की भावना करते हुए जबतक इच्छा हो, बैठे रहना चाहिये। यह समाधि प्रत्युत्पन्न-बुद्धसम्मुखावस्थित-समाधि में निर्दिष्ट है। इस समाधि की अनुशंसा उसी सूत्र में विस्तृत रूप से जाननी चाहिये।

अनेक प्रकार से जो सर्वधर्मसंग्रह होता है, उसी पर चित्त को स्थापित करके लय, औद्धत्य आदि के प्रशमन के लिए शमथ सिद्ध करना चाहिये। संक्षेप में सभी धर्म रूपी तथा अरूपी के भेद से संगृहीत हैं। वहाँ रूपी तो रूप-स्कन्ध में संगृहीत है। वेदना आदि स्कन्ध अरूपी के स्वभाव वाले हैं। यहाँ अज्ञानी लोग सत्ता आदि के ग्रहण में अभिनिवेश करने से विपरीतबुद्धि होकर संसार में परिभ्रमण करते रहते हैं। उनके विपर्यास को दूर करने के लिए, उनके प्रति महाकरुणा को अभिमुख करके, योगी को शमथ सिद्ध होने पर, तत्त्वाधिगम करने के लिए तब से विषयना की भावना करनी चाहिए। भूत-प्रत्यवेक्षण को विषयना कहा जाता है। भूत (सम्यग्) तो पुद्गल तथा धर्म का नैरात्म्य है।



पुद्गल-नैरात्म्य वह है, जो स्कन्धों को आत्मा तथा आत्मीयता से रहित होना है। जो उनकी ही माया की समानता है, वही धर्म-नैरात्म्य है। योगी के द्वारा इस प्रकार का परीक्षण किया जाना चाहिए। पुद्गल रूपादि से भिन्न नहीं है, क्योंकि उसका प्रतिभास नहीं होता है, और रूप आदि में ही 'मैं हूँ' ऐसा ज्ञान उत्पन्न होता है। पुद्गल रूपादि-स्कन्ध के स्वभाव का भी नहीं है, क्योंकि वे रूपादि अनित्यता तथा अनेकता के स्वभाव के हैं, और पुद्गल को नित्य तथा एकरूप वाला अन्यो ने कल्पित किया है। तत्त्व या अन्यत्व से अनिर्वचनीय पुद्गल का वस्तु होना उचित नहीं है, क्योंकि वस्तुसत् का अन्य आकार नहीं होता है, ऐसा विचार करना चाहिए। इसलिए इस प्रकार लोक का यह 'मैं' और 'मेरा' ऐसा कहना झूठा तथा भ्रम ही है, ऐसा निश्चित रूप से जानने लगे तब धर्म-नैरात्म्य-बोध करने के लिए विचार करना चाहिए कि—क्या ये रूपी धर्म चित्त से भिन्न परमार्थ-सत् के रूप में स्थित हैं, या चित्त ही रूपादि में प्रतिभासित होता है, जैसे कि स्वप्न की अवस्था में प्रतिभास होता है, वैसा ही प्रतिभासित होता है। वह उनको परमाणुशः परीक्षण करते हुए परमाणुओं का भी भागों में प्रत्यवेक्षण करते हुए प्राप्त नहीं करता है। इस प्रकार प्राप्त न होने से सत्ता और असत्ता के विकल्पों को निवृत्त करता है।

त्रिधातु भी चित्तमात्र में ज्ञात होता है, अन्यथा नहीं। जैसा कि लङ्कावतार में भी कहा गया है—

“द्रव्य तो अणुशः विभक्त किये जाते हैं, किन्तु रूप में विकल्प नहीं करना चाहिए। चित्तमात्र की व्यवस्था तो कुदृष्टि वालों को अवगत नहीं होगी।”

वह इस प्रकार सोचता है कि चित्त ही अनादिकाल से मिथ्या रूपादि पर अभिनिवेश के कारण स्वप्न में दिखाई पड़ने वाले रूपादि के प्रतिभास की भाँति अज्ञानियों को रूपादि का प्रतिभास बाहर विच्छिन्न-सा आभासित होता है। इसलिए त्रिधातु चित्तमात्र ही है। वह इस प्रकार समस्त धर्म-प्रज्ञप्तियों का चित्त ही है (ऐसा) निश्चय करके उसी में प्रत्यवेक्षण करने पर सभी धर्मों के स्वभाव का प्रत्यवेक्षण हो जाता है, ऐसा चित्त के स्वभाव का भी प्रत्यवेक्षण करता है। वह इस प्रकार विचार करता है, कि परमार्थतः चित्त भी माया की भाँति अनुत्पन्न है। जब मिथ्या स्वभाव वाले रूप आदि का आकार ग्रहण करने से चित्त ही अनेक आकारों में प्रतिभासित होता है, तब इससे व्यतिरेक न होने से उसकी भी रूपादि की भाँति सत्यता कैसे होगी ? जिस प्रकार रूपादि अनेक आकार वाला होने से एक तथा अनेक स्वभाव के



नहीं हैं, उसी प्रकार चित्त भी उससे अलग न होने के कारण एक तथा अनेक स्वभाव का नहीं है। उत्पन्न किया जा रहा चित्त कहीं से भी नहीं आता है और न तो निरोध होते समय भी कहीं जायेगा। परमार्थतः स्व, पर तथा उभय से उत्पन्न होना अनुचित है। इसलिए चित्त भी माया की भाँति है। और चित्त की तरह समस्त धर्म भी माया की भाँति परमार्थतः अनुत्पन्न हैं, ऐसा विचार करना चाहिए।

योगी जिस चित्त से प्रत्यवेक्षण करता है, परीक्षण करने पर उसका स्वभाव भी उपलब्ध नहीं होता है। इस प्रकार योगी की चित्त का जिस आलम्बन पर प्रसरण होता है, उसके स्वभाव का परीक्षण करने पर उसका स्वभाव भी उपलब्ध नहीं होता है। जब उसे नहीं पाता तब सभी वस्तुओं का परीक्षण करके केले के तने की भाँति निःसार जानकर उससे चित्त को निवृत्त कर देता है। तब भाव आदि विकल्पों से रहित हो जाने पर सभी प्रपञ्चों से रहित, अनिमित्त-योग को प्राप्त करता है। जैसा कि **आद्यैरत्नमेघ** में कहा गया है—“इस प्रकार वह दोषों को ( दूर करने में ) निपुण सभी प्रपञ्चों को दूर करने के लिए शून्यता की भावना का योग करेगा। इस प्रकार शून्यता की भावना अधिक करने से वह जिस-जिस स्थान में चित्त फैलाता है, चित्त अभिरत होता है, उन-उन स्थानों की स्वभावता का अन्वेषण करने पर शून्य का अवबोध होता है। जो चित्त है उसका भी परीक्षण करने पर शून्य का बोध होता है। जिस चित्त से वह परीक्षण करता है, वह भी परीक्षण करने पर स्वभावतः शून्य ही ज्ञात होता है। वह इस प्रकार उपपरीक्षण करते हुए निर्निमित्त योग में प्रवृत्त होता है।” वही इससे इस प्रकार का प्रकट होता है कि जो उपपरीक्षण नहीं करता उसका तो निर्निमित्तता में प्रवेश नहीं होगा।

इस प्रकार वह धर्मों के स्वभाव की उपपरीक्षा करते हुए जब नहीं पाता तब ( वह ) ‘है’ ऐसा विकल्प नहीं करता है और ‘नहीं है’ ऐसा भी विकल्प नहीं करता है। क्योंकि जो ‘नहीं है’ ऐसा विकल्प करता है, उसकी बुद्धि में सर्वदा प्रतिभास नहीं होता है। यदि भाव कभी दिखलाई पड़ता, तब प्रतिषेध के कारण ‘नहीं है’ ऐसा विचार करे। जब योगी को प्रज्ञा के द्वारा परीक्षण करने पर तीनों कालों में भी वस्तु उपलब्ध नहीं होती तब किसका निषेध करने से ‘नहीं है’ ऐसा विचार करेगा। इस प्रकार उस समय उसको अन्य विकल्प नहीं होते, क्योंकि भाव तथा अभाव के विकल्पों से सभी विकल्पों पर व्याप्त होने से व्यापक के अभाव से व्याप्य का भी अभाव होगा। ऐसा होने पर निष्प्रपञ्च-निर्विकल्पता में ही प्रवेश होता है और रूपादि पर भी आश्रित नहीं होता। प्रज्ञा से परीक्षण करने पर समस्त वस्तुओं की स्वभावता



की अनुपलब्धि होने से प्रज्ञोत्तर-ध्यायी भी हो जाता है। वह इस प्रकार पुद्गल तथा धर्मनैरात्म्य के तत्त्व में प्रविष्ट होकर अन्य दर्शनीय तथा अन्य परीक्षणीय के न होने से उपरत विचार वाले निर्विकल्प एकरस वाले स्वरसवाही मन से अनभिसंस्कार के कारण योगी उसी तत्त्व की अतिस्फुट रूप से अवधारणा करके बैठे। वहाँ बैठने पर भी चित्त के सन्तान में विक्षेप न करें।

जब बीच में चित्त को बाहर की ओर विक्षिप्त देखा जाय, तब उसके स्वभाव के परीक्षण से विक्षेप को शान्त करके फिर वहीं पर चित्त को स्थापित करना चाहिये। जब उसमें चित्त को अभिरत न देखे, तब समाधि के गुणों को देखने से उसमें अभिरति की भावना करे। विक्षेप में दोष देखने से अरति को शान्त करना चाहिये। यदि स्त्यान तथा मिद्ध का अभिभव हो जाने से जब अस्पष्ट प्रचार के कारण चित्त को लीन देखे अथवा लय में ( है ऐसी ) अभिशंका हो जाये, तब प्रमोद की वस्तु बुद्ध की प्रतिमा आदि या आलोकसंज्ञा को मन में करके लय का उपशमन करे, तब उसी तत्त्व को अतिदृढ़ता से ग्रहण करे। जब योगी जात्यन्ध की भाँति या अन्धकार में प्रविष्ट मनुष्य की भाँति या आँख बन्द किये हुए ( व्यक्ति ) की भाँति तत्त्व की अतिस्फुट अवधारणा नहीं करता, तब चित्त को लीन ( हो जाना ) और विपश्यना से रहित समझना चाहिये। फिर जब पूर्वानुभूत विषय की इच्छा से चित्त में बीच समय में औद्धत्य या औद्धत्य का सन्देह दिखाई पड़े, तब अनित्यता आदि संवेग की वस्तुओं का मनसिकार करके औद्धत्य की शान्ति करे। उसके बाद फिर से उसी तत्त्व में चित्त की अनभिसंस्कारवाहिता में प्रयत्न करे। जब विक्षेप में पड़े हुए पुरुष की भाँति या बन्दर की भाँति चित्त अनवस्थित हो जाये, तब औद्धत्य ( का होना ) और शमथ से विहीनता जाननी चाहिये। जब लय तथा औद्धत्य से विविक्त होने के कारण सम्प्रवृत्त होकर स्वरसवाही उसी तत्त्व में चित्त खूब स्पष्ट रूप से उत्पन्न होता है, तब आभोग को शिथिल करके उपेक्षा करे। तब शमथ तथा विपश्यना में युगनद्धवाही मार्ग को निष्पन्न जाना चाहिये।

जब विपश्यना की भावना करने पर प्रज्ञा अतिरिक्ततर हो जाती है, तब शमथ की अल्पता के कारण प्रवात में रखे हुए प्रदीप की तरह चित्त के चञ्चल होने से तत्त्व अतिस्फुट नहीं दिखलाई पड़ेगा। इसलिए तब शमथ की भावना करनी चाहिये। शमथ के भी अतिरिक्ततर हो जाने पर मिद्ध से अवष्टब्ध मनुष्य की भाँति तत्त्व अतिस्फुट दिखाई नहीं पड़ेगा। इसलिए उस समय में प्रज्ञा की भावना करनी चाहिये। जब दोनों ही समान रूप से युगनद्धवाही दो बैलों की भाँति प्रवृत्त हो जाते हैं, उस



समय अनभिसंस्कार से ही तबतक रुकना चाहिये, जबतक कि काय और चित्त में पीडा न होने लगे।

संक्षेप में सभी समाधियों के छह दोष होते हैं। ( जैसे कि ) कौसीद्य, आलम्बन-सम्प्रमोष, लय, औद्धत्य, अनाभोग तथा आभोग। इनके प्रतिपक्ष में अष्टप्रहाण-संस्कारों की भावना करना चाहिये। ( जो ) इस प्रकार है—श्रद्धा, छन्द, व्यायाम, प्रसन्धि, स्मृति, सम्प्रजन्य, चेतना तथा उपेक्षा। इनमें प्रथम चार कौसीद्य के प्रतिपक्ष हैं, क्योंकि इस प्रकार समाधियों के गुणों में विश्वास-लक्षणवाली श्रद्धा से योगी को अभिलाषा उत्पन्न होता है। तब अभिलाषवान् वीर्य का आरम्भ करता है। तत्पश्चात् वीर्य के आरम्भ से काय तथा चित्त की कर्मण्यता होती है। उससे काय तथा चित्त की प्रसन्धि होने से कौसीद्य की निवृत्ति होती है। इसलिए श्रद्धा आदि के द्वारा कौसीद्य का प्रहाण करते हैं। इसीलिए उनकी भावना करनी चाहिये। स्मृति आलम्बन-सम्प्रमोष का प्रतिपक्ष है, सम्प्रजन्य लय तथा औद्धत्य दोनों का प्रतिपक्ष है, क्योंकि इसी से उन दोनों को जानकर प्रहाण करते हैं। लय तथा औद्धत्य की शान्ति न होने के समय तो अनाभोग दोष होगा, इसलिए उसके प्रतिपक्ष के रूप में चेतना की भावना करनी चाहिये। जब लय तथा औद्धत्य का प्रशमन होने पर चित्त प्रशमवाही हो जाये, तब आभोग दोष होता है। तब उसके प्रतिपक्ष उपेक्षा की भावना करनी चाहिये। यदि चित्त के समप्रवृत्त होने पर आभोग किया जाता है, तब चित्त विक्षिप्त हो जाता है। यदि चित्त के लीन हो जाने पर आभोग नहीं किया जाता है, तब विषयना-रहित हो जाने के कारण अन्धे पुरुष की भाँति चित्त लीन हो जायेगा। इसलिए लीन चित्त का निग्रह करके उद्धत का प्रशमन करना चाहिये और सम्प्राप्त होने पर उपेक्षा करनी चाहिये।

उसके बाद योगी को जबतक इच्छा रहे, तबतक अनभिसंस्कार से ही तत्त्व की भावना करके बैठना चाहिये। काय तथा चित्त में पीडा होने पर बीच-बीच में बार-बार समस्त ही लोक को देखकर माया, स्वप्न, जलचन्द्र तथा प्रतिभास की तरह जानना चाहिये। जैसा कि **अधिकल्पप्रवेश** में भी कहा गया है—“लोकोत्तर ज्ञान के द्वारा सभी धर्मों को आकाश-तल की भाँति सम देखता है। उसके पृष्ठलब्ध से माया, ( मरु ) मरीचि, स्वप्न तथा उदकचन्द्र की भाँति देखता है।” इस प्रकार जगत् को माया को भाँति जानकर सभी सत्त्वों में महाकरुणा के अभिमुख करके इस प्रकार सोचना चाहिये कि ये बालबुद्धि वाले इस प्रकार के गम्भीर धर्म को (ठीक से) न समझने के कारण आदि से शान्ति वाले धर्मों में सत्ता आदि का समारोप करते हैं। और विपर्यास में पड़कर



विभिन्न कर्म तथा क्लेशों का उपार्जन करते हैं। अतः वे संसार में परिभ्रमण करते हैं, इसलिए मैं अवश्य वैसा ही करूँगा, जिससे इनको इस प्रकार के गम्भीर धर्म को समझा सकूँ, ऐसा सोचना चाहिये। इसके बाद विश्राम करके फिर उसी प्रकार सर्वधर्मनिराभास-समाधि में प्रवृत्त हो जायें। फिर चित्त में कष्ट होने पर उसी प्रकार विश्राम करके फिर प्रवृत्त होना चाहिये। इस प्रकार इसी क्रम से एक घड़ी या एक पहर जितने समय तक रहा जा सके, उतने समय तक बैठना चाहिये।

इसके बाद समाधि से उठना चाहें तो पर्यङ्क को विना खोले इस प्रकार सोचना चाहिये कि यदि ये सभी धर्म परमार्थतः अनुत्पन्न हैं, फिर भी माया की भाँति विविध निश्चित हेतु-प्रत्यय-संग्रहों के कारण अनेक प्रकार के अविचार-रमणीय ही प्रादुर्भूत होते हैं। इसलिए उच्छेद-दृष्टि का अवसर नहीं होगा और न तो अपवाद का अन्त भी, क्योंकि प्रज्ञा से परीक्षण करने पर (कुछ भी) उपलब्ध नहीं होता है, इसलिए न तो शाश्वत-दृष्टि का प्रसङ्ग है, और न समारोपान्त का भी। वहाँ जो लोग प्रज्ञाचक्षु से रहित हो जाने के कारण विपर्यस्तबुद्धि होकर आत्माभिनवेश से विविध कर्म करते हैं, वे लोग संसार में परिभ्रमण करते रहते हैं। और जो लोग पूर्णतः संसार से विमुख होकर, महाकरुणा से रहित, सत्त्वों के लिए दान आदि पारमिता को परिपूर्ण करते रहते हैं और अपना दमन मात्र करते हैं, उनका उपाय से रहित होने से श्रावक तथा प्रत्येक बुद्ध की बोधि में पतन होता है।

जो लोग जगत् को निःस्वभाव समझ करके महाकरुणा के बल से समस्त जगत् का उद्धार करने का निश्चय करके मायाकार की भाँति अविपर्यस्त बुद्धि होने से विपुल पुण्य तथा ज्ञान के सम्भारों को निष्पन्न करते हैं, वे लोग तथागत के पद को प्राप्त करके संसार-पर्यन्त अशेष जगत् के सभी प्रकार के हितों तथा सुखों को सिद्ध करते हुए रहेंगे। वे लोग ज्ञानसम्भार के बल से समस्त क्लेशों के प्रहाण के कारण संसार में पतित नहीं होते हैं और सभी सत्त्वों की अपेक्षा से सञ्चित अतिविपुल, अप्रमेय पुण्यसम्भार के कारण निर्वाण में भी पतित नहीं होते और सभी सत्त्वों के उपजीव्य भी हो जाते हैं। इसलिए समस्त सत्त्वों का हित तथा सुख-साधनों के इच्छुक अप्रतिष्ठित निर्वाण की प्राप्ति को चाहने वाले मुझको विपुल पुण्य तथा ज्ञानसम्भार के उपार्जन के लिए सदा अभियोग करना चाहिये, ऐसा सोचना चाहिये। जैसा कि आर्यतथागत-गुह्यसूत्र में भी कहा गया है कि—“ज्ञानसम्भार तो समस्त क्लेशों का प्रहाण करने के लिए होता है, पुण्यसम्भार सभी सत्त्वों की उपजीविका के लिए होता है। भगवन्! इस कारण से बोधिसत्त्व महासत्त्व को पुण्य तथा ज्ञानसम्भारों में सदा



अभियोग करना चाहिये। आर्यतथागतोत्पत्तिसम्भवसूत्र में भी विस्तार से कहा गया है—“और वह यह तथागतों की उत्पत्ति तो एक ही कारण से नहीं होती। वह किस कारण से है? हे जिनपुत्र! तथागत तो सम्यक् सिद्ध अप्रमेय दस लाख कारणों के द्वारा सम्यग् रूप से सिद्ध होते हैं। किन दस प्रकारों से? जैसे कि अप्रमेय पुण्य तथा ज्ञानसम्भारों से अतृप्ति को सम्यक् निष्पन्न कराने वाले हेतुओं से” इत्यादि। आर्यविमलकीर्तिनिदेश में भी “हे मित्र! तथागत के शरीर तो सौ पुण्यों से ही उत्पन्न हैं, सभी कुशलधर्मों से उत्पन्न हुए हैं, अप्रमेय कुशलमूलकर्मों से उत्पन्न हुए हैं”, इत्यादि विस्तार से कहा गया है।

इस प्रकार से धीरे-धीरे पर्यङ्क खोलकर दशदिशाओं में स्थित समस्त बुद्धों तथा बोधिसत्त्वों को प्रणाम करना चाहिये, और उनके लिये पूजा तथा स्तुति करके आर्यभद्रचर्या आदि विपुलप्रणिधानों को करना चाहिये। इसके बाद शून्यता तथा कर्षणा के गर्भवाली अनुत्तरसंबोधि में परिणामना किये गये समस्त दान आदि पुण्य-सम्भारों की उपार्जना में अभियुक्त हो जाना चाहिए।

जो लोग यह मानते हैं कि—‘चित्त-विकल्प से उत्पन्न होने वाले शुभ तथा अशुभ कर्मों के वशीभूत होने से सत्त्व स्वर्ण आदि कर्मफल को भोगते हुये संसार में घूमते रहते हैं, और जो लोग कुछ भी नहीं सोचते हैं और कुछ भी कर्म नहीं करते हैं, वे लोग संसार से मुक्त हो जायेंगे। इसलिए कुछ भी सोचना नहीं चाहिए। दान आदि कुशलचर्या भी नहीं करनी चाहिये (क्योंकि) दान आदि कुशलचर्या तो मूर्खपुरुषों को लक्ष्य करके कही गयी है।’ ऐसा सोच कर बोलते हैं। उनके द्वारा समस्त महायान का प्रतिक्षेप होता है। समस्त यानों की जड़ महायान ही होने के कारण उसका प्रतिक्षेप करने पर समस्त यानों का प्रतिक्षेप हो जायेगा। इस प्रकार ‘कुछ भी नहीं सोचना चाहिए’, ऐसा कहने से तो भूतप्रत्यवेक्षण-लक्षणवाली प्रज्ञा का प्रतिक्षेप हो जायेगा, क्योंकि सम्यग्ज्ञान का मूल तो मूतप्रत्यवेक्षणा है, उसका प्रतिक्षेप होने पर मूल कटने के कारण लोकोत्तर-प्रज्ञा भी प्रतिक्षिप्त हो जायेगी। उसके प्रतिक्षिप्त हो जाने से सर्वाकारज्ञता प्रतिक्षिप्त हो जायेगी। ‘दान आदि कुशलचर्या भी नहीं करनी चाहिये’ ऐसा बोलने से भी दान आदि उपायों का प्रतिक्षेप तो स्पष्ट ही हो जायेगा।

संक्षेप में इतना ही है कि उपाय तथा प्रज्ञा ही महायान है। जैसा कि आर्यगयाशीर्ष में कहा गया है—“बोधिसत्त्वों के मार्ग संक्षेप में दो हैं। कौन से दो



हैं ? इस प्रकार है—उपाय तथा प्रज्ञा ।” आर्यतथागतगुह्यसूत्र में भी—“उपाय तथा प्रज्ञा ये दोनों बोधिसत्त्वों की सभी पारमिताओं के संग्रह के लिये होते हैं,” ऐसा आता है । इसलिये महायान का प्रतिक्षेप करने वाले के द्वारा महान् कर्मावरण किया हुआ हो जायेगा । महायान का प्रतिक्षेप करने वाले, अल्पश्रवण, आत्मदृष्टि-परामर्श वाले, विद्वज्जनों की सेवा न करने वाले, तथागत के प्रवचन की नीतियों को धारण न करने वाले स्वयं विनष्ट होकर और दूसरों को भी नष्ट कर रहें, युक्ति तथा आगमों से विरुद्ध होने के कारण विष से मिले हुये वचनों को सविष-भोजन की भाँति, अपना-हित चाहने वाले बुद्धिमान् व्यक्ति के द्वारा दूर से ही परित्याग कर देना चाहिए ।

इस प्रकार उसके द्वारा भूतप्रत्यवेक्षा के प्रतिक्षिप्त होने के कारण धर्मप्रविचय नामक प्रमुख बोध्यङ्ग ही प्रतिक्षिप्त हो जायेगा । भूतप्रत्यवेक्षा के बिना योगी किस उपाय से अनादिकाल से अभ्यस्त रूपादि भावों में अभिनिवेश वाले चित्त को निर्विकल्पता में प्रवेश करेगा ? यदि ‘सभी धर्मों में अस्मृति तथा अमनसिकार के द्वारा प्रवेश होगा’ ऐसा कहें तो वह भी अयुक्त है, क्योंकि भूतप्रत्यवेक्षण के बिना अनुभूत होने वाले सभी धर्मों में अस्मृति अथवा अमनसिकार नहीं किया जा सकता है । और यदि मुझे इन धर्मों का स्मरण नहीं करना है, मनसिकार नहीं करना है, इस प्रकार भावना करते हुये, उनपर अस्मृति तथा अमनसिकार की भावना की जाये तो, उस समय इनमें ये निश्चित रूप से स्मृत तथा मनसिकृत हो जायेंगे । यदि स्मृति तथा मनसिकार के अभाव मात्र को अस्मृति तथा अमनसिकार स्वीकार किया जाये, तो तब उन दोनों का अथवा किस प्रकार से होगा, यही विचार किया जाना चाहिए । अभाव का हेतु होना अनुचित है । कैसे निर्निमित्त तथा अमनसिकार से निर्विकल्पता होगी ? इसमें से अविकल्पता हो जाये तो, संमूर्च्छित व्यक्ति को भी स्मृति तथा मनसिकार न होने से निर्विकल्पता में प्रवेश का पसङ्ग होने लगेगा । भूतप्रत्यवेक्षा के बिना अन्य उपाय नहीं है, जिसके द्वारा अस्मरण तथा अमनस्कार किया जा सके ।

अस्मरण तथा अमनसिकार संभव होने पर भी भूतप्रत्यवेक्षा के बिना धर्मों की निःस्वभावता का ज्ञान कैसे होगा ? सभी धर्म स्वभाव से शून्यता में स्थित ही हैं, ( किन्तु ) इस प्रकार उस प्रत्यवेक्षा के बिना उनकी शून्यता का प्रतिवेध नहीं होता है । शून्यता का प्रतिवेध न होने से आवरण का ग्रहण सम्भाव नहीं है । यदि ऐसा हो तो सभी की सर्वत्र मुक्ति की प्रसङ्ग होने लगेगा । पुनः यदि उस योगी को सभी धर्मों में मुषितस्मृतिता अथवा मोह के कारण स्मृति और मनसिकार की प्रवृत्ति नहीं



होती, तब अत्यन्त मूढ़ होने से वह योगी कैसे होगा ? भूतप्रत्यवेक्षण के विना अस्मृति तथा अमनसिकार की भावना करने से मोह का ही अभ्यास हो जायेगा । उसी से सम्यग्ज्ञान का आलोक दूर हो जायेगा । यदि वह मुषितस्मृति भी नहीं है और मूढ़ भी नहीं है तो वहाँ भूतप्रत्यवेक्षा के विना कैसे अस्मरण तथा अमनसिकार करने में समर्थ होगा ? स्मरण करते हुये भी स्मरण नहीं करता तथा देखते हुये भी नहीं देखता, ऐसा कहना अयुक्त है । अस्मृति तथा अमनसिकार की भावना से कैसे पूर्वनिवासानुस्मृति आदि बुद्धधर्मों का उदय होगा, क्योंकि विरोध है । जैसे कि उष्ण के विरोधी शीत का सेवन करने पर उष्ण-स्पर्श की वेदना नहीं होती है ।

समाधि में समाहित योगी का यदि मनोविज्ञान हो तो, तब उसे अवश्य ही किसी का आलम्बन करना पड़ेगा । पृथग्जनों को एकाएक अनालम्बनज्ञान नहीं हो सकता है । यदि नहीं है तो किस प्रकार धर्मों की निःस्वभावता का अवबोध होगा ? किस प्रतिपक्ष के द्वारा क्लेश-आवरण का प्रहाण होगा ? चतुर्थ ध्यान की अप्राप्ति वाले पृथग्जन का चित्त-निरोध होना असम्भव है । इसलिए सद्धर्म में जो अस्मृति तथा अमनसिकार कहे गये हैं, उनके भी भूतप्रत्यवेक्षणपूर्वक ही देखना चाहिए । इसलिए भूतप्रत्यवेक्षण से ही अस्मरण तथा अमनसिकार किये जा सकते हैं, अन्यथा नहीं । इस प्रकार जब योगी सम्यक्प्रज्ञा से निरूपण करता हुआ तीनों कालों में कोई भी धर्म परमार्थतः उत्पन्न नहीं देखता है, तब वहाँ स्मरण तथा मनसिकार कैसे करेगा ? जो परमार्थतः तीनों कालों में भी नहाने के कारण अनुभव में नहीं आता है, उसका अस्मरण अथवा मनसिकार कैसे किया जा सकता है और इस कारण सभी प्रपञ्चों के उपशमन-निर्विकल्पज्ञान में प्रविष्ट होता है । उसमें प्रवेश करने से शून्यता का अवबोध करता है, तथा उसका अवबोध होने से समस्त कुदृष्टिजालों का प्रहाण करता है ।

उपाय से युक्त प्रज्ञा का सेवन करने से संवृत्ति तथा परमार्थ सत्यों में पूर्णतः कुशल हो जाता है । अतः अनावरणज्ञान की प्राप्ति होने से सभी बुद्धधर्मों को प्राप्त करता है । इसलिए भूतप्रत्यवेक्षण के विना न तो सम्यक्ज्ञान का उदय होता है, और न क्लेशावरण का प्रहाण ही । आर्यमञ्जुश्रीविकृतसूत्र में भी कहा गया है कि— “हे दारिके ! बोधिसत्त्व संग्राम को कैसे जीतता है ? उत्तर है—मञ्जुश्री बारम्बार विवेचन करने पर सभी धर्मों को उपलब्ध नहीं करता है ।” इसलिए ज्ञानरूपी चक्षु को फेलाकर प्रज्ञा के शास्त्र से क्लेशरूपी शत्रुओं को पराजित करके योगी निर्भय विचरण करता है, न कि भीत पुरुष की भाँति आँखें बन्द करके । आर्यसमाधिराज-सूत्र में भी कहा गया है—



“यदि धर्म पर नैरात्म्य की प्रत्यवेक्षा करे और यदि उनकी प्रत्यवेक्षा करके भावना करे तो, वही निर्वाणरूपी फल की प्राप्ति का हेतु है। अन्य जो हेतु है, उससे शान्ति नहीं होती है।”

सूत्रसमुच्चय में भी कहा गया है कि—“स्वयम् विषयनायोग में लगे रहने पर भी अन्यो को विषयना-योग में अभियुक्त न करना मारकर्म है।”

विषयना तो भूतप्रत्यवेक्षण के स्वभाव की है, ऐसा आर्यरत्नमेघ और सन्धि-निर्मोचन आदि में कहा गया है। आर्यरत्नमेघ में भी—“विषयना का परीक्षण करने से निःस्वभावता का अवबोध होने के कारण निर्निमित्त-प्रवेश कहा गया है।” आर्यलङ्कावतार में भी कहा गया है—“हे महामते ! बुद्धि से परीक्षित किये जा रहे भावों के स्व तथा सामान्यलक्षणों का ज्ञान नहीं हो पाता। इसीलिए ऐसा कहा गया है कि सभी धर्म निःस्वभाव हैं। यदि ‘भूतप्रत्यवेक्षणा’ नहीं की जाती है तो, इस प्रकार भगवान् ने उन सूत्रों में जो भूतप्रत्यवेक्षण अनेक प्रकार के बतलाये हैं, उनका भी विरोध हो जायेगा। इसलिए अल्प-प्रज्ञा और अल्पवीर्य हम बहुश्रुति-अन्वेषण में असमर्थ हैं, ऐसा कहना युक्त है। भगवान् ने बहुश्रुतता की प्रशंसा की थी, इसलिए कदापि उसका प्रहाण करना उचित नहीं है।

ब्रह्मपरिपृच्छा में कहा गया है कि—“जो अचिन्तनीय धर्मों पर चिन्तन विप्रयुक्त है, उसको अयोनिश होती है।” इसमें भी जो लोग परमार्थतः अनुत्पन्न धर्मों के उत्पाद की परिकल्पना करके श्रावक आदि के समान इन पर अनित्य तथा दुःख के रूप में चिन्तन करते हैं, उनकी तो समारोप तथा अपवाद के उन अन्तों में चिन्तन न प्रवृत्त होने से अयोनिश होता है, इस प्रकार उसके प्रतिषेध के लिए जो कहा गया है, वह भूतप्रत्यवेक्षा का प्रतिषेध नहीं है, क्योंकि वह तो सभी सूत्रों में कहा गया है। इस प्रकार ब्रह्मपरिपृच्छासूत्र में ही कहा गया है—“चित्तशूर बोधिसत्त्व ने कहा है कि जो सभी धर्मों को चित्त से सोचता है और वहाँ अक्षत तथा अनुपहत होता है, उसी से वह बोधिसत्त्व कहा जाता है।” फिर उसी में कहा गया है कि—“कैसे वीर्य से युक्त होते हैं ? जब सर्वज्ञता-चित्त को खोजते हुए प्राप्त नहीं करते हैं।” फिर उसी में कहा गया है—“वे बुद्धिमान होंगे जो योनिशः धर्मों की प्रत्यवेक्षणा करते हैं।” फिर उसी में कहा गया है—“वे लोग धर्मों को माया तथा मरीचि की भाँति प्रविभक्त करते हैं।”



यह इस प्रकार जहाँ-जहाँ पर अचिन्त्य आदि शब्दों का श्रवण होता है, वहाँ-वहाँ श्रवण तथा चिन्तन मात्र से ही जो लोग तत्त्वाधिगम मानते हैं, उनके अभिमान के प्रतिषेध के लिये धर्मों की प्रत्यात्मवेदनीयता प्रतिपादित होती है और अयोनिश चित्त का भी प्रतिषेध किया जाता है, ऐसा जानना चाहिए। भूतप्रत्यवेक्षण का प्रतिषेध नहीं होता है। अन्यथा अनेक युक्ति तथा आगमों से विरोध हो जायेगा, जैसा पहले कहा जा चुका है। और श्रवण तथा चिन्तन से होने वाली प्रज्ञा के द्वारा जो भी ज्ञान हुआ उसी की भावनामयी प्रज्ञा के द्वारा भावना करनी चाहिए, दूसरे की नहीं। जैसे देखी गयी धावन-भूमि पर ही घोड़े की दौड़ होती है। इसलिए भूतप्रत्यवेक्षा करनी चाहिए। यद्यपि वह विकल्प-स्वभाव की है, फिर भी योनिशोमनसिकार के स्वभाव की होने से उससे निर्विकल्पक ज्ञान का उत्पाद होता है, ऐसा समझकर उस ज्ञान का इच्छुक होने से उसका सेवन करना चाहिए। निर्विकल्प सम्यग्ज्ञानरूपी अग्नि के उत्पन्न होने पर दो लकड़ियों की रगड़ से उत्पन्न अग्नि से उन लकड़ियों के जलने की भाँति वह भी बाद में उसी से जल जायेगी, ऐसा आर्यरत्नकूट में कहा गया है।

यह जो कहा गया है कि कुशल आदि कुछ भी कर्म नहीं करना चाहिए, कर्म के क्षय से मुक्ति होती है, ऐसा कहने पर वहाँ आजीवकवाद की मान्यता हो जायेगी। भगवान् के प्रवचनों में कर्म के क्षय से मुक्ति होती है, ऐसा अभीष्ट नहीं है, फिर कैसे? क्लेशक्षय से। अनादिकाल से एकत्रित किये गये कर्मों का क्षय करना संभव नहीं है, क्योंकि वे तो अनन्त हैं। दुर्गति आदि में उसके फल का उपभोग करते समय अन्य कर्मों का भी उत्पाद होता है, क्लेशों का अभाव न होकर वह कारण के रूप में स्थित रहने पर कर्म का निरोध नहीं हो सकता है, जैसा कि प्रदीप के निरोध के बिना उसकी प्रभा का निरोध नहीं होता है। उस विषयना का अपवाद करने वाले के क्लेश का क्षय असम्भव है, ऐसा पहले कहा जा चुका है। यदि क्लेश-क्षय के लिए विषयना का सेवन करना चाहिए ऐसा माने तब क्लेश-क्षय से ही मुक्ति सिद्ध होगी, इस प्रकार कर्म-क्षय के लिए परिश्रम व्यर्थ हो जायेगा। अकुशल कर्म नहीं करना चाहिए, यह कहना युक्त है। कुशल का इस प्रकार प्रतिषेध क्यों किया जाता है? यदि संसार का उत्पादक होने से प्रतिषेध किया जाता है, ऐसा कहे तो वह भी अनुचित है। आत्मादिविपर्यास से समुत्थापित जो कुशल कर्म हैं, वही संसारावाहक होते हैं, न कि बोधिसत्त्वों के कर्म महाकरुणा से समुत्थापित और अनुत्तरसम्यक्संबोधि में परिणमित कर्म भी। उसी प्रकार आर्यादशभूमि में भी—वहीं दशकुशल-कर्म-पथ परिणामना आदि परिशुद्धि-विशेष से श्रावकत्व प्रत्येकबुद्धत्व, बोधिसत्त्वता तथा



बुद्धत्व के साधक होते हैं, ऐसा निर्देश किया गया है। **आर्यरत्नकूट** में भी वर्णन किया गया है कि—“महासागर में प्रविष्ट सभी महानदियों के जलराशि की भाँति बोधिसत्त्वों के नाना माध्यमों से संगृहीत ( अर्जित ) कुशलमूल सर्वज्ञता में परिणमित होकर सर्वज्ञता में एक रस हो जाते हैं।”

जो बुद्ध तथा बोधिसत्त्वों के रूप-काय, क्षेत्रपरिशुद्धि, प्रभा, परिवार, महाभोग आदि की सम्पत्ति है, वह तो दान आदि पुण्यसम्भारों का फल है, ऐसा जहाँ-तहाँ सूत्रों में भगवान् के द्वारा वर्णित है, उनका भी विरोध होने लगेगा। कुशल-चर्या के प्रतिषेध से प्रातिमोक्षसंवर आदि का भी प्रतिषेध हो जायेगा। इसलिए शिर तथा मुख का क्षौर, काषायधारण आदि भी व्यर्थ हो जायेगा। कुशल कर्म की अभिसंस्कार से विमुखता हो जाने पर, संसार से विमुखता तथा सत्त्वार्थक्रिया से विमुखता का संसेवन होने लगेगा। इसलिए उससे बोधि भी दूर हो जायेगी। **आर्यसन्धिनिर्मोचन** में कहा गया है कि—“पूरी तरह से सत्त्वार्थक्रिया से विमुख होने वाले, और पूरी तरह से संस्कार के अभिसंस्कार से विमुख होने वाले के लिए मैंने अनुत्तर सम्यक्सम्बोधि को नहीं कहा है।” **आर्योपालिपरिपृच्छा** आदि में भी कहा गया है कि—“संसार से विमुख होना बोधिसत्त्वों का परम दुःशील है।” संसार-परिग्रह तो परमशील है। **आर्यविमलकीर्तिनिर्देश** में कहा है कि—“उपाय से संगृहीत संसारगमन तो बोधिसत्त्वों का मोक्ष है। उपाय से रहित प्रज्ञा बन्धन है। प्रज्ञा से रहित उपाय भी बन्धन है। प्रज्ञासहित उपाय मोक्ष है। उपायसहित प्रज्ञा भी मोक्ष है।” **आर्यगगनगञ्ज** में कहा है कि—“संसार में परिखेद होना बोधिसत्त्वों का मारकर्म है।” **सूत्रसमुच्चय** में भी असंस्कृत का भी प्रत्यवेक्षण होता है और संस्कृत कुशलों से भी परिखेद होना मारकर्म है। बोधिमार्ग का भी प्रज्ञान होता है, पारमिता मार्ग का पर्येषण नहीं करता है, यह मारकर्म है। पुनः उसी में कहा गया है कि—“दान में चित्ताभिनिवेश से प्रज्ञा में चित्ताभिनिवेश तक तो मारकर्म हैं।” वहाँ दान आदि के सेवन का प्रतिषेध नहीं किया गया है, किन्तु अहंकार तथा ममकार में चित्ताभिनिवेश करने वाले, ग्राह्य-ग्राहक में चित्ताभिनिवेश करने वाले, औपलम्भिक के दान आदि में जो विपरीत-अभिनिवेश है, उनका निषेध किया गया है। विपरीत-अभिनिवेश से समुत्थापित दान आदि परिशुद्ध नहीं होते हैं, क्योंकि मारकर्म हैं, अन्यथा ध्यान भी असेवनीय हो जायेगा। इस प्रकार से तो मुक्ति भी कैसे होगी ?

इसलिए औपलम्भिक के सत्त्व-नानात्व की संज्ञा से जो दान देना आदि है वह तो अपरिशुद्ध है, ऐसा प्रतिपादन करने के लिए **आर्यगगनगञ्ज** में भी



कहा गया है—“सत्त्व-नानात्व विपरीत कर्म आदि की संज्ञा वाले दान आदि तो मारकर्म है।” त्रिस्कन्धपरिणामना में भी कहा गया है—“जो मैंने सारा ही दान, शील, शान्ति, वीर्य, ध्यान, प्रज्ञा की समता न जानने से उपलम्भ में पतित के द्वारा दान पर्येष्टित, परामृष्टशील से शील की, रक्षा की, स्व तथा पर की संज्ञा से क्षान्ति की, भावना आदि की प्रतिदेशना करता हूँ।” वहाँ भी उपलम्भिक नानात्व संज्ञा वाले के विपरीत अभिनिवेश के द्वारा समुत्थापित दान आदि अपरिशुद्ध होते हैं, इतना ही कहा गया है, न कि सर्वथा दानादि के सेवन का निषेध। अन्यथा दान आदि की अविशेष रूप से प्रतिदेशना हो गयी होती, न कि केवल विपरीत उपलम्भ में पतित होने की। जो कि ब्रह्मपरिपृच्छा में भी कहा गया है कि—“जितनी चर्यायें हैं, वे सब परिकल्पित हैं। निष्परिकल्प तो बोधि है” इत्यादि। उसके भी उत्पादादि विकल्प-चर्या के सामायिक होने से उसकी भी परिकल्पितता कही गयी है। अनभिसंस्कारवाही निर्निमित्त में स्थित बोधिसत्त्व का व्याकरण है, अन्य का नहीं। इतना मात्र प्रतिपादित किया गया है। दानादि सभी की परमार्थतः अनुत्पन्नता का प्रतिपादन किया गया है, न कि चर्या नहीं करना चाहिये, ऐसा कहा गया है।

अन्यथा दीपङ्कर से पूर्ववर्ती जिन बुद्धों का भगवान् ने सत्कार किया था और जिनके नाम भगवान् कल्प में भी नहीं कह सकते हैं, इन सबके द्वारा भी भगवान् ने बोधिसत्त्व-अवस्था में उन चर्याओं का क्यों प्रतिषेध नहीं किया? दीपङ्कर ने भी उस समय भगवान् की चर्या का प्रतिषेध नहीं किया है। जब अष्टम भूमि में स्थित होकर ये शान्तनिर्निमित्त-विहार में देखे गये तब भगवान् ने उसका व्याख्यान किया है, किन्तु वहाँ उसकी चर्या का निषेध नहीं है। आठवीं भूमि में बोधिसत्त्वों की निर्निमित्त विहार-परमता तो, यहीं उनका परिनिर्वाण न हो जाये, ऐसा दशभूमिसूत्र में बुद्धों के द्वारा प्रतिषिद्ध की गयी है। यदि वह चर्या सर्वथा करणीय नहीं होगी तो पूर्वोक्त सभी का विरोध हो जायेगा।

पुनः वहीं ब्रह्मपरिपृच्छा में कहा गया है कि—“दान भी देता है और उसके विपाक की आकाङ्क्षा नहीं करता है, शील की भी रक्षा करता है, और वह भी समारोपित नहीं हैं” इत्यादि। “हे ब्रह्म! चार धर्मों से युक्त बोधिसत्त्व बुद्धधर्मों में अवैवर्तिक होते हैं। किन चारों से? अपरिमित संसार के परिग्रहण, अपरिमित बुद्धों के सत्कार, पूजा” इत्यादि कहे गये सभी का विरोध हो जायेगा। केवल मृदुन्द्रिय के द्वारा ही चर्या की जानी चाहिये, न कि तीक्ष्णेन्द्रिय के द्वारा, ऐसा कहना उचित नहीं है, क्योंकि इस प्रकार प्रथम भूमि से लेकर दसवीं भूमि तक में प्रतिष्ठित बोधिसत्त्वों की



दान आदि चर्याओं की उत्पत्ति होती है, न कि परिशिष्टों में भी समुदाचार नहीं है, ऐसा कहा गया है। भूमि में प्रविष्ट भी मृद्विन्द्रिय हैं ऐसा कहना उचित नहीं है। जैसा **आर्योपालिपरिपृच्छा** में भी कहा गया है कि—“अनुत्पत्तिक-धर्मक्षान्ति में स्थित होने वाले को ही त्याग, महात्याग, अतित्याग करना चाहिए।” **सूत्रसमुच्चय** में भी “षट्पारमिता आदि प्रतिपत्तियों से युक्त बोधिसत्त्व तथागत की ऋद्धि से चलता है”, ऐसा वर्णित है। तथागत की ऋद्धि की गति से अन्य शीघ्र गति नहीं है, और न षट्पारमिता तथा दश भूमि के अतिरिक्त बोधिसत्त्वों के लिए अन्य मार्ग ही है, जो और अधिक तेजगति वाला हो। स्वर्ण-शुद्धि की भाँति क्रमशः ही चित्त-संतति की शुद्धि होती है, ऐसा सूत्र में कहा गया है। **आर्यलङ्कावतार** तथा **दशभूमि** में भी जब बोधिसत्त्व तथता में स्थित हो जाता है, तब प्रथम भूमि में प्रविष्ट होता है। उसके बाद क्रम से ही पूर्व भूमियों का परिशोधन करके तथा गतभूमि में प्रवेश करता है, ऐसा कहा गया है। इसलिए भूमि तथा पारमिता से अतिरिक्त बुद्धत्वरूपी नगर में युगपत् प्रवेश करने का अन्य द्वार नहीं है, क्योंकि भगवान् ने सूत्र आदि किसी में भी नहीं कहा है।

यदि ध्यान में ही षट्पारमिता का अन्तर्भाव हो जाने से, उसके सेवन से ही सभी पारमिताओं का सेवन हो जायेगा, इसलिए दान आदि अन्यपारमिता का पृथग् रूप से सेवन नहीं करना पड़ेगा, ऐसा कहें तो वह भी ठीक नहीं। इस प्रकार होता तो बुद्ध के गोमयमण्डल में भी षट्पारमिताओं के संगृहीत हो जाने से मण्डल ही करना पड़ेगा, न कि ध्यान आदि। निरोधसमाधि की समापत्ति में प्रविष्ट श्रावक को भी निमित्त आदि असमुदाचार से ही इस प्रकार की षट्पारमिता-परिपूर्णता का प्रसङ्ग हो जायेगा। इसलिए श्रावकों से बोधिसत्त्वों का भेद प्रतिपादित नहीं हो सकेगा। बोधिसत्त्वों को सभी अवस्था में षट्पारमिताओं की परिपूर्ति करनी चाहिए। इसे दिखाने के लिए भगवान् ने एक-एक पारमिता में भी सभी पारमिताओं का संग्रह दिखलाया है न कि एक ही पारमिता का सेवन। इस प्रकार **सर्वधर्मगौपुल्य** में भी कहा है कि—“हे मैत्रेय ! षट्पारमिताओं का समुदागम बोधिसत्त्वों की सम्बोधि के लिए कहा गया है, उसे वे अज्ञानी लोग इस प्रकार कहेंगे कि बोधिसत्त्व को प्रज्ञापारमिता में ही शिक्षित करना चाहिए, शेष पारमिताओं से क्या ? वे अन्य पारमिताओं को दूषित करना चाहते हैं। हे अजित ! तो क्या आप समझ रहे हैं कि क्या वह जो काशी का राजा दुर्बुद्धि था, जिसने कबूतर के लिए अपना मांस बाजपक्षी को दे दिया। मैत्रेय ने कहा, भगवन् ! यह नहीं है। भगवान् ने कहा—मैत्रेय ! बोधिसत्त्व-चर्या का आचरण करते समय मैंने षट्पारमिताओं से युक्त जिन



कुशलमूलों का अर्जन किया, क्या उन कुशलमूलों ने हानि पहुँचायी? मैत्रेय ने कहा—भगवान् ! यह तो नहीं। भगवान् ने कहा है—हे अजित ! आपने भी साठ कल्पों तक दानपारमिता का सम्यग् अनुष्ठान किया है, उसी प्रकार साठ कल्पों तक प्रज्ञापारमिता तक का भी अनुष्ठान किया है। उस पर अज्ञानी पुरुष इस प्रकार कहेंगे कि एक ही नय से बोधि हो सकती है, जैसे कि शून्यतानय से ही। वे लोग चर्या से अपरिशुद्ध हो जायेंगे” इत्यादि। केवल शून्यता का सेवन करने से श्रावक की भाँति निर्वाण में पतित होंगे। इसलिए उपायसहित प्रज्ञा का सेवन करना चाहिए।

इसलिए आचार्य नागार्जुनपाद ने सूत्रसमुच्चय में कहा है कि—उपायकौशल से रहित बोधिसत्त्व को गम्भीरधर्मता से अभियोग नहीं करना चाहिए।” यहाँ भी आर्य-विमलकीर्तिनिर्देश आदि को स्रोतों के रूप में ( उन्होंने ) प्रतिपादित किया है, न कि वे आचार्य नागार्जुनपाद के वचन हैं। युक्ति तथा आगमन से युक्त को त्यागकर, भगवान् के वचनों को छोड़कर विद्वान् प्रेक्षावानों को अन्य मूर्खजनों के वचनों का ग्रहण करना उचित नहीं है। आर्यरत्नकूट में भी कहा गया है—“दान आदि समस्त कुशलों से युक्त सर्वाकारवरोपेतशून्यता की भावना करनी चाहिए, न कि केवल शून्यता की। आर्यरत्नकूट में भी कहा गया है—“काश्यप ! जिस प्रकार मन्त्री सहिता राजा सभी कार्य करता है, उसी प्रकार उपायकौशल से युक्त बोधिसत्त्वों की प्रज्ञा सभी बुद्ध के कार्य करती है।”

इसलिए केवल शून्यता का सेवन करने वाले का क्या निर्वाण में प्रवेश नहीं होने लगेगा ? ऐसा भगवान् ने आर्यतथागतगुह्यसूत्र में भी कहा है कि—एकान्त निरालम्ब-चित्त का सेवन नहीं करना चाहिए। अपितु उपाय-कौशल का भी सेवन करना चाहिए।” यह दिखाने के लिए कहा गया है कि—“कुलपुत्र ! जिस प्रकार अग्नि उपादान से ही जलती है और उपादान न होने से शान्त हो जाती है। उसी प्रकार आलम्बन से चित्त ज्वलित होता है, आलम्बन न होने से चित्त शान्त हो जाता है। इसमें उपाय-कौशल वाला बोधिसत्त्व प्रज्ञापारमिता-परिशुद्ध होने से आलम्बन का उपशम भी जानेगा और कुशलमूल आलम्बन को भी शान्त नहीं करेगा। क्लेश-आलम्बन भी नहीं उठता, किन्तु पारमिता-आलम्बन भी उत्थापित करता है। शून्यता का आलम्बन-प्रत्यवेक्षण करता है, और सभी सत्त्वा की महाकरुणा के आलम्बन को भी देखेगा। कुलपुत्र ! इस प्रकार उपायकुशल प्रज्ञापारमिता से विशुद्ध बोधिसत्त्व आलम्बन में वशिता को प्राप्त होता है।” ऐसा विस्तार से कहकर फिर कहते हैं—“इस प्रकार बोधिसत्त्व का ऐसा कुछ भी



आलम्बन नहीं है, जो सर्वज्ञ के ज्ञान के अभिनिर्हार के लिए स्थित न हो। जिस बोधिसत्त्व के सभी आलम्बन परमबोधि में परिणत हो जाते हैं, वही बोधिसत्त्व उपायकुशल हैं और सभी धर्मों को बोधि में अनुगत देखते हैं। कुलपुत्र! इस प्रकार भी ऐसा त्रिसहस्र-महासहस्र लोकधातुओं में कुछ भी नहीं है जो सत्त्वों के उपभोग के लिये न हो। कुलपुत्र! इसी प्रकार ऐसा कोई भी आलम्बन नहीं है, जिसे उपायकुशल बोधिसत्त्व बोधि में उपकारक नहीं देखता”। ऐसा विस्तार से कहा गया है। इस प्रकार अनन्त-सूत्रों में बोधिसत्त्वों की प्रज्ञा तथा उपाय की प्रतिपत्ति का निर्देश किया गया है। वहाँ वह स्वयं दान आदि पुण्य-सम्भार में वीर्य आरम्भ न कर सके, तो भी अन्यो को इस प्रकार देना युक्त नहीं है, इस प्रकार कहा जाये तो स्व और पर दोनों का द्रोह हो जायेगा।

इस प्रकार बोधिसत्त्व अवश्य ही भूतप्रत्यवेक्षण करके दानादि समस्त पुण्य-सम्भारों को अर्जित करे, ऐसा युक्ति तथा आगमों से प्रतिपादित किया गया है। इसलिए प्रेक्षावानों ने अल्पश्रुत, अभिमानियों के वचनों को विष की भाँति त्याग करके आचार्य नागार्जुन आदि विद्वज्जनों के अमृतवचनों के अनुसार चलकर समस्त सत्त्वों पर महाकरुणा उत्पन्न करके मायाकार की भाँति अविपर्यस्त होकर अनुत्तरसम्यक् सम्बोधि में परिणामित की गई दानादि सभी कुशल-चर्याओं में तथा अशेष जगत् का उद्धार करने में अभियोग करना चाहिये। जैसा कि **आर्यधर्मसंगीति** में कहा गया है—

“जैसे कोई मायाकार निर्मित को मुक्त करने के लिए प्रयास करता है, उसको पहले से वह ज्ञात होता है, अतः उस निर्मित पर असक्त नहीं होता। तीनों भावों को निर्माण की भाँति समझकर सम्बोधि में पारंगत वह जगत् के लिए सन्नद्ध होता है, क्योंकि उसे जगत् पहले से ज्ञात होता है।”

इस प्रकार जो उपाय तथा प्रज्ञा में सदा सत्कार करके अभ्यास करता है, उसकी चित्तसन्तति का क्रमशः परिपाक होने पर उत्तरोत्तर अतिविशुद्ध क्षण का उदय होता है। भूतार्थ में भावना के प्रकर्षपर्यन्त हो जाने से समस्त कल्पनाजाल से रहित, अतिस्फुट धर्मधातु का अधिगम होता है। निर्मल, निश्चल, निर्वाण प्रदीप के समान लोकोत्तर ज्ञान उत्पन्न होता है। तब वस्तुपर्यन्तता-आलम्बन की प्राप्ति होती है और दर्शन मार्ग में भी प्रविष्ट होता है। प्रथम भूमि भी प्राप्त होती है। वह इसके आगे की भूमियों का परिशोधन करते हुए क्रमशः (संतप्त) कनक की भाँति समस्त अर्जित आवरणों के दूर हो जाने पर असक्त तथा अप्रतिहत ज्ञान प्राप्त करके समस्त



गुणों की आधारभूत बुद्धभूमि को प्राप्त करता है और कार्य-परिनिष्पत्तिरूप आलम्बन की भी प्राप्ति हो जाती है। इसलिए बुद्धत्व की इच्छावालों को मध्यम मार्ग पर अभियोग करना चाहिये।

इस प्रकार मध्यम मार्ग के निर्देश से मैंने जो पुण्य प्राप्त किया है, उससे अशेष जनों को मध्यम मार्ग की प्राप्ति हो जाये ॥ १ ॥

सत्पुरुष ईर्ष्या आदि मलों को दूर करके, जल से सागर की भाँति गुणों से अतृप्त रहते हैं और विवेचन करके सुभाषितों को ग्रहण करते हैं, जैसे कि हँस प्रसन्न होकर जल से दूध ले लेते हैं ॥ २ ॥

इसलिए विद्वानों को पक्षपात से क्षुब्ध मन को दूर करके, बालों से भी सभी सुभाषितों का ही ग्रहण अवश्य कर लेना चाहिये ॥ ३ ॥

आचार्य कमलशील द्वारा अन्त में विरचित् भावनाक्रम समाप्त हुआ।

तृतीय भावनाक्रम का हिन्दी अनुवाद समाप्त हुआ।

॥ भावनाक्रम समाप्त ॥

भवतु सर्वमङ्गलम्



... ..  
 ... ..  
 ... ..

... ..  
 ... ..

... ..  
 ... ..

... ..  
 ... ..

... ..

... ..

... ..

... ..

...



परिशिष्ट-भाग

( १-६ )

महामुद्रा

( ३-५ )



(ཁ་སྒྲིན་དང་པོ།)

[illegible]

2. ལྷོ་མཁའ་ལྷོ་མཁའ་ (དབུ་མ་ 'ཀ' 36)

མཐུན་པར་གནས་པ་ཡིན་གྱི། རྒྱང་བ་དང་ཐུན་པ་བཞིན་དུ་མི་མཐུན་པ་མ་ཡིན་ནོ།  
 ཉིང་ངེ་འཛིན་ནི་ཐུན་པ་དེ་ངོ་བོ་ཉད་མ་ཡིན་དེ། ཅི་ཞེ་ན། སེམས་ཅེ་གཅིག་  
 པའི་མཚན་ཉིད་དེ་ནི་མཉམ་པར་བཞག་ན་ཡང་དག་པ་ཇི་ལྟ་བུ་བཞིན་དུ་རབ་དུ་་་་  
 ཤེས་སོ། །ཞེས་བཀའ་སྩལ་བའི་ཕྱིར་དེ། ཤེས་རབ་དང་ཤིན་དུ་མཐུན་པ་  
 ཡིན་གྱི། མི་མཐུན་པ་མ་ཡིན་ནོ།” །ཞེས་གསུངས་སོ།།

དེ་བས་ན་ ཞི་གནས་བསྐྱེད་པ་སེམས་བདུན་པོ་རྣམས་ལ་ནི་རྒྱང་བ་དང་འདྲ།  
 ཤེས་རབ་ཀྱིས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ལ་དབྱེད་པ་ནི་མིག་དང་འདྲ་བར་ཤེས་པར་བྱ་ཡི།  
 ཞི་གནས་ནི་སེམས་མི་གཡོ་བར་ཅེ་གཅིག་དུ་གནས་པ་ཡིན་ལ། ལྷག་མཐོང་ནི་  
 ཡུལ་ལ་དབྱེད་པ་ཡིན་པས། གཅིག་གིས་གཅིག་ལ་གཞོན་པ་ཡིན་ནོ་སྟུང་དུ་  
 མི་གཟུང་ངོ་། །ཡང་ཞི་གནས་དང་བྲལ་བའི་སེམས་རྒྱང་ནང་གི་མར་མེ་བཞིན་  
 དུ་གཡོ་བ་དང་། ཞི་གནས་ཀྱི་སྟོབས་ཀྱིས་ནི་རྒྱང་མེད་པ་ན་གནས་པའི་མར་  
 མེ་བཞིན་དུ་རྒྱུ་ཉིག་གི་རྒྱང་གིས་མི་གཡོ་བར་བཤད་པ་མི་འཐད་དེ། ལྷག་  
 མཐོང་ལ་དབྱེད་སྟོང་བྱེད་པའི་ལུགས་ལ་ཞི་གནས་གྲུབ་ཀྱང་ལྷག་མཐོང་སྟོང་པའི་  
 ཆོ་རྒྱུ་ཉིག་གི་རྒྱང་གིས་གཡོ་བའི་ཕྱིར་རོ་སྟུང་ན། ཞི་གནས་གྲུབ་པ་ལ་བདེན་  
 བས་ལྷག་མཐོང་སྟོང་པ་ན་སེམས་ཀྱི་གཡོ་བ་ཐམས་ཅད་ཐོག་པར་ཁས་ལེན་ན་་་་  
 སྟོན་དེ་ཡོད་ཀྱང་། སེམས་ཀྱི་གཡོ་བ་ཅམ་ཐོག་པ་མིན་གྱི། གཡོ་བའི་སྟོན་ཐོག་  
 བ་ལ་བསམས་ནས་དེ་ལྟར་གསུངས་པའི་ཕྱིར་ངོ་། །གཡོ་བའི་སྟོན་གང་སྟུང་ན།  
 རང་འདོད་པའི་ཡུལ་ལ་སེམས་འཇོག་པ་ན་རང་དབང་མེད་པར་མི་འདོད་པའི་་་་  
 ཡུལ་ལ་སེམས་སྒྲུག་པའོ།།

གོ་ངེས་ངས་ཚུལ་གྱི་སྐབས་སུ། ཞི་གནས་མི་སྐྱབ་པར་དང་པོ་ནས་ལྟ་



ཐོག་དུ་སེམས་གནས་པ་ཙམ་ཞིག་གོས་ས་པར་བྱེད་ན། དེ་ལས་དྲི་ངེ་འཛིན་  
 དེ་འཛིག་དེན་པའི་བསྐྱོམས་ལྷུང་དུ་འགོ་སྤྱིད་ཀྱང་། དེ་འང་ཞི་གནས་བསྐྱོམས་ལྷུང་དུ་  
 སོང་བ་ཡིན་གྱི། ལྷག་མཐོང་བསྐྱོམས་ལྷུང་དུ་སོང་བ་མིན་པས། ད་དུང་ལྷག་མཐོང་  
 བསྐྱོམས་ལྷུང་བསྐྱེད་དགོས་སོ། །དེའི་ཕྱིར་ཞི་གནས་དེ་སྔོན་དུ་བཤད་ནས་དབྱེད་  
 གྲོམ་གྱི་ལྷག་མཐོང་བསྐྱོམས་ལྷུང་སྐྱེད་དགོས་པས། སྔོན་དུ་ཞི་གནས་བསྐྱེད་ས་  
 བས། དེའི་འོག་དུ་ལྷག་མཐོང་སྐྱེད་པ་ལས་མི་འདའོ། དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ལ་  
 དམིགས་པའི་འཛིག་དེན་པའི་བསྐྱོམས་ལྷུང་བསྐྱེད་ཀྱས་ན། དེ་ཙམ་ཞིག་བསྐྱོམས་  
 བས་འཛིག་དེན་ལས་འདས་པའི་བསྐྱོམས་ལྷུང་སྐྱེད་ཀྱས་སོ་ཞེས་ཀྱང་སྒྲུབ་པ་ཀྱས་  
 དེ། འཛིག་དེན་པའི་བསྐྱོམས་ལྷུང་གི་ཡོན་ཏན་ཐམས་ཅད་ལ་དེ་བཞིན་དུ་ཉི་འང་  
 ཐལ་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ།

གཞན་ཡང་མདོ་དགོངས་འགྲེལ་ལས། ཞི་གནས་སྔོན་དུ་སྐྱེད་པ་ལ་བདེན་ནས་  
 དབྱེད་གྲོམ་གྱིས་ཤིན་སྤངས་འདྲིན་ཀྱས་ཀྱས་སུ་ལྷག་མཐོང་བསྐྱོམས་པར་གསུངས་  
 བ་སོགས་ཀྱི་གོ་རིམ་ངས་པ་ཙན་དུ་བཤད་པའི་གཞུང་དུ་མ་དང་འགལ་བའི་ཕྱིར།  
 དེ་ལྟར་འདོད་དུ་མི་བྱང་ངོ། །དེ་ལྟར་ན་ཐོག་པ་གཞན་གྱི་ལྷགས་ལྟར་ཡུལ་ཙན་  
 རྒྱུད་པར་ཙན་གྱིས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་གྲོམ་པའི་སྐབས་ཀྱི་དམིགས་པས་པ་མ་གཏགས་  
 པ་ལྷག་མཐོང་བསྐྱོམས་ལྷུང་སྐྱེད་པ་གསར་དུ་བསྐྱེད་པའི་གནས་སྐབས་  
 ཐམས་ཅད་དུ་ཞི་གནས་སྔོན་དུ་བསྐྱེད་ས་པ་ལ་བདེན་ནས། དབྱེད་གྲོམ་གྱིས་ལྷག་  
 མཐོང་བསྐྱོམས་པར་ངས་པ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ།

གལ་དེ་ཞི་གནས་འཛིག་གྲོམ་གྱིས་སྐྱེད་པ་དང་། ལྷག་མཐོང་དབྱེད་གྲོམ་  
 གྱིས་སྐྱེད་པ་ཡིན་དུ་ཚུགས་ཀྱང་། སྔོན་དུ་ཞི་གནས་བསྐྱེད་ས་པ་ལ་བདེན་ནས།

བྱིས་ལྷག་མཐོང་བསྐྱོད་པའི་གོ་རིམ་ངེས་པར་དགོས་པའི་གྲུ་མཚན་གང་ཡིན་.....  
 ལྷམ་ན། འདྲི་ནི་དོགས་དཀའ་བས་བཤད་པར་བྱ་སྟེ། དཔེར་ན་ལག་པས་སྟ་རེ་  
 བརྒྱངས་ནས་ཤང་སྟོང་གཅོད་པ་ན། ལག་པ་ཤན་དུ་འདར་ན། ལྟ་རེ་ཤིང་སྟོང་ལ་  
 རི་ཅམ་བརྒྱབ་ཀྱང་། ཤང་སྟོང་གཅོད་མི་ལྷམ་པ་བཞེན་དུ། ཞི་གནས་སྟོན་དུ་མ་  
 བྱུང་ན། དཔྱད་པར་སེམས་ལ་གནས་པའི་ཅི་འབྱར་གྱི་མེད་པས་རི་ཅམ་དཔྱད་  
 ཀྱང་མི་མཐུན་ཕྱོགས་འཇམས་པའི་སྟོབས་མི་འབྱུང་ངོ་། །སྟོབས་ལྷན་གྱི་ལག་  
 པ་ཤིན་དུ་བདྲན་པས་ནི་བའི་སྟ་རེ་བརྒྱངས་ནས་བཅད་ན་ཤང་སྟོང་སྟར་དུ་གཅོད་  
 ལྷམ་པ་བཞེན་དུ། ཞི་གནས་ཀྱང་ངེ་འཇོན་ཤིན་དུ་བདྲན་པའི་ལག་པས་བརྒྱང་  
 བའི་སེམས་ཀྱིས་ཤེས་རབ་ཀྱི་མཚན་ནི་ནི་པོ་ཐོགས་དེ དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ལ་དཔྱད་  
 པ་གོམས་ན། མི་མཐུན་ཕྱོགས་འཇམས་པའི་སྟོབས་དང་ལྷན་པར་འབྱུང་ངོ་།

དེ་ལྟར་ཡང་སྒྲོམ་རམ་དང་པོ་ལས། “དེ་ལྟ་བུས་ན་དྲིང་ངེ་འཇོན་གྱི་  
 ལག་པས་སེམས་བརྒྱངས་དེ་ཤིན་དུ་ཆ་སྒྲ་བའི་ཤེས་རབ་ཀྱི་མཚན་གྱིས། གཞུང་  
 ལ་སོགས་པ་ལ་ལོག་པར་ནམ་པར་དོག་པའི་ས་བོན་གྱི་ཆུག་རྩ་སེམས་དེ་ལ་ཡོད་  
 པ་བསལ་བར་བྱའོ། །དེ་ལྟར་བྱས་ན་ཅུ་བ་ནས་སྤྱང་བའི་ཤིང་དག་ས་ལ་མེ་སྐྱེ་  
 པ་བཞེན་དུ་ཅུ་བ་མེད་པས་ན་ལོག་པར་ནམ་པར་དོག་པའི་སེམས་ཀྱང་སྐྱེ་བར་མི་  
 འབྱུང་ངོ་།” ཞེས་གསུངས་སོ། །དེ་ཡང་ལན་རྒྱང་ཤིས་ཤིག་བརྒྱབ་པས་ཤིང་  
 མི་འཆད་པ་བཞེད་དུ། ལན་དུ་མར་ཤེས་རབ་ཀྱིས་མ་དཔྱད་ན་ལྷག་མཐོང་ནས་  
 པ་ཅན་མི་འབྱུང་བས། ཡང་དང་ཡང་དུ་དཔྱད་པར་བྱའོ། །ཡུལ་ལ་ནམ་པ་  
 དུ་མར་དཔྱད་པའི་ཚོ། མི་དཔྱད་པར་ཅེ་གཅིག་དུ་འཇོག་པའི་དྲིང་ངེ་འཇོན་



མེད་མོད་ཀྱང་། ཉིང་ངེ་འཛིན་གྱི་ཅི་བདན་བོ་ཡོད་པས་ནས་བར་མི་རྟོག་པའི་ངང་  
ནས་དབྱེད་པ་སྒྲུབ་ཕྱེད་པ་ཞིག་འོངས་པ་ཤེས་པར་བྱའོ།

གནས་ཆ་ཤིན་དུ་བདན་པའི་སེམས་རྒྱད་ལ། གནས་པའི་ཅི་ན་རེ་འཇུག་  
པས། དེའི་ངང་ནས་ཞེ་སྤང་དང་ཆགས་པ་སོགས་སྦྱེ་བ་ན། སྤང་ཞི་གནས་  
མ་གྲུབ་པའི་དུས་བཞིན་དུ། རྒྱགས་དྲག་པ་དང་བར་མ་ཆད་པ་སོགས་མི་སྦྱེ་བར།  
རྒྱགས་ཞན་པ་དང་རྒྱན་ཅད་ཐུང་བ་སོགས་སྦྱ་སྦྱ་བ་མཐོང་ནས། འདི་ནི་ནམ་རྟོག་  
འབྲོ་བ་མིན་གྱི་ཡེ་ཤེས་འབྲོ་བ་ཡིན་ཟེར་བ་དང་། ཉོན་མོངས་ཡིན་ཡང་ལས་  
གསོག་མི་ལུས་ཟེར་བ་དང་། མཚམས་དེ་ནས་ཉོན་མོངས་སྦྱེ་བའི་རྒྱུ་ལ་ཞུགས་  
ཀྱང་། འཚིང་མི་ནས་བས་ཉོན་མོངས་ལས་དུ་བྱེད་པའི་དུས་ཡིན་ཟེར་བ་སོགས་  
ཉིང་ངེ་འཛིན་གྱི་གོ་བ་ཤིན་དུ་ཆུང་བ་ནམས་ལ་འབྱུང་མོད་ཀྱང་། འདི་ནི་ཕྱི་  
ནང་དང་ཐེག་པ་ཆེ་ཆུང་གཉིས་ཀའི་ཐུན་མོང་བ་ཡིན་པར་ཤེས་པར་བྱའོ།

ཞི་གནས་ཆ་སྒྲོམས་པའི་སྐབས་སུ་ཞི་གནས་ཤས་ཆེན་ཡང་གཉིད་ཀྱིས་  
ལོག་པའི་མི་བཞིན་དུ་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཤིན་དུ་གསལ་བར་མཐོང་བར་མི་འགྱུར་དེ།  
དེ་ལྟ་བུས་ན་དེའི་ཆོ་ཤེས་རབ་བསྐྱེད་པར་བྱའོ། །ཞེས་གསུངས་པ་ལ་ཞི་གནས་  
ཏུ་ཅང་བསྐྱེད་དགས་པས་སྦྱོད་སྦྱིང་མ་འདོད་པ་དང་། དབྱེད་ཀྱང་འབྲོ་མི་ཉན་པར་  
སེམས་གནས་ཆ་ལ་བྱི་པ་བྱལ་འབྲོ་ན། དབྱེད་ནས་སྦྱོང་བ་ནམ་རྟོག་སྒྲོམ་པ་ཡིན་པས།  
དེ་ལས་མི་རྟོག་པ་ཐུན་རེ་སྒྲོམ་པ་ཁྱད་པར་དུ་འཕཇ་སོ་སྒྲོམ་ནས་དབྱེད་སྒྲོམ་དོར་  
བར་མི་བྱ་ཏེ། སྒྲོམ་དཔོན་དབྱིག་གཉིན་གྱིས། “གཞུགས་ན་དབྱེད་པའི་ཐོས་  
པ་ལས་བྱུང་བ་ནམས་ནི། ཐོས་པ་ལས་བྱུང་བ་དང་སྒྲོམ་པ་ལས་བྱུང་བ་ནམས་

ཀྱེ་ཡིན་དེ། བསམས་བ་ལས་བྱུང་བ་ནི་མེད་པ་དེ་ཕྱིར་དོ།” །ཞེས་གསུངས་ལ།  
 དེ་དེ་འགྲེལ་བཤད་ལས།<sup>1</sup> “བསམས་བ་ལས་བྱུང་བ་མེད་པ་དེ་གདན་ཚོགས་ནི།  
 གང་གི་ཚེ་དག་སེམས་པར་ཚུལ་བ་དེ་ཁོ་ན་དེ་ཚོ། དེ་དག་གི་དྲང་ངེ་འཛིན་ཉིད་  
 ཏུ་ཉེ་བར་གནས་པར་འགྱུར་ཞེས་བྱ་བ་ཡིན་པོ།” །ཞེས་གཞུགས་ཁམས་སུ་སྦྱེས་  
 པ་དེ་ཐ་མལ་བ་ནམས་ཀྱང་། བསམས་བྱུང་གི་སེམས་བ་ལ་ཚུལ་བ་བྱས་བ་ན་  
 བསམས་བྱུང་ལ་པར་ལ་མཆེད་མི་ཉན་པར་དྲིང་ངེ་འཛིན་ཉིད་ཏུ་འགྲོ་བར་གསུངས་  
 པ་དེ་ཕྱིར་དོ།

ཞི་ལྷག་གཉིས་པོ་དེ་དེ་ལའང་རི་ལྷ་བ་དང་རི་སྟེང་བ་ལ་དམིགས་བ་གཉིས་  
 གཉིས་ཡོད་པར་ནི། ཤེར་ཕྱིན་མན་ངག་ལས་ཀྱང་།<sup>2</sup> “དེ་ལ་རི་སྟེང་བ་ཡོད་པར་  
 བྱུར་བ་དང་། རི་ལྷ་བ་བཞིན་དུ་བྱུར་བ་ལ། ནམ་པར་མི་དོག་པ་དེ་གཞུགས་  
 བཞུན་དུ་བྱུར་བ་ནི་ཞི་གནས་ཀྱི་དམིགས་པ་ལོ། རི་སྟེང་བ་ཡོད་པར་བྱུར་བ་དང་  
 རི་ལྷ་བ་བཞིན་དུ་བྱུར་བ་ལ་དོག་པ་དང་བཅས་པ་དེ་གཞུགས་བཞུན་དུ་བྱུར་བ་ནི་  
 ལྷག་མཐོང་གི་དམིགས་པ་ལོ།” །ཞེས་གསུངས་སོ། །སོ་སྦྱེད་སར་ཡང་རི་  
 སྟེང་བ་ལ་དམིགས་པ་དེ་ལྷག་མཐོང་བསྟེན་བ་ལ་ནི། ཞི་རགས་ཀྱི་ནམ་བུ་ཅན་  
 ཏུ་སྒྲིམ་པར་མ་ངས་དེ། ཁམས་བཙེ་བུ་དྲ་ཀྱི་མཚན་ཉིད་སོ་སོར་ཡང་དང་ཡང་  
 ཏུ་དབྱེད་བ་ལས་ལྷག་མཐོང་སྟེ་བར་གསུངས་པ་དེ་ཕྱིར་དེ། ཤེར་ཕྱིན་མན་ངག་  
 ལས།<sup>3</sup> “དེ་ནས་ཞི་གནས་དེ་ཉིད་ལ་བརྟེན་དེ། རྣ་ཚོགས་ཀྱི་གཞུགས་བཞུན་

1. ལྷེ་-བཞུན་(མངོན་པ་ 'གྱ' 703)

3. ལྷེ་-བཞུན་(ཞེས་པ་ཅམ་ 'དེ' 722)

1. ལྷེ་-བཞུན་(ཞེས་པ་ཅམ་ 'དེ' 725)



འདི་དག་ཉིད་ནི་འདི་ལྟ་སྟེ། གཞུགས་ཀྱི་ཁམས་ནས་ཡིད་ཀྱི་ཁམས་ཀྱི་བར་འདི་  
 དག་ནི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཅེས་བྱ་སྟེ། དེ་ལྟར་ལན་མང་དུ་ནམ་པར་བྱེ་ནས་ཡོངས་  
 སུ་བདགས་པར་བྱས། ཡོངས་སུ་དབྱད་པར་བྱས་པས་ལྷག་མཐོང་ཆོགས་པར་  
 བྱའོ།” ཞེས་གསུངས་དེ། འདི་ནི་དགོངས་འགྲེལ་གྱི་མདོ་འདི་དོན་དུ་འང་སྤང་ངོ་།  
 ལྷག་མཐོང་འདིས་ནི་ཉམ་མོངས་མངོན་གྱུར་གྱི་གཉེན་པོ་མི་བྱེད་ཀྱང་། དྲིང་ངེ་  
 འཛིན་གྱི་ཅལ་སྤྱོད་བའི་ཕྱིར་དུ་བྱེད་དོ། འདི་ལ་བདེན་ནས་ཇི་སྟེད་པ་ལ་དམིཌ་  
 བའི་ལྷག་མཐོང་གཞན་མང་པོ་ཡང་དོགས་པར་ནས་སོ། ཞེས་ནི་ལྷག་གཉིས་  
 ཀྱི་དཀར་བའི་གནས་ལ་བྱལ་བའི་དགོངས་པ་ཕྱིན་ཅི་མ་ཡོག་པར་བཤད་པ་འདི་  
 ནི། ཞི་ལྷག་གཉིས་ཀྱི་ནམ་འབྱུང་པ་ཆེན་པོ་སྤྱོད་བཟང་གྲགས་པའི་དབལ་གྱིས་  
 སྐྱར་བའོ། འདི་ལ་བདེན་ནས་ཡང་དག་པའི་ལམ་ལ་ཕྱིན་ཅི་ཡོག་དུ་དོག་པའི་  
 དེ་མ་ནི་བར་གྱུར་ཅིག །མཛད་ལོ།

1. གཞུང་ལྟར་བསྐྱམ་རིམ་གྱི་བརྗོད་པའི་གཙོ་བོ་ནི་ལྷག་གི་ནམ་ཐལ་དང་འབྲེལ་ཆེ་ཞིང་།

ནམ་ཐལ་དེ་ལ་བརྟན་པའི་ལོག་པར་རྟོག་པ་ཞི་བ་དང་། དཀའ་བའི་གནས་ནམས་བྱལ་

བའི་དགོངས་པ་བཞེན་གསལ་བར་མཇུག་པ་སོགས་ཀྱི་དགོས་པ་ཆེ་བས་འདྲོད་བཞེད་དོ།

I have been thinking of you very much lately  
 and wondering how you are getting on. I hope  
 you are well and happy. I have been very busy  
 lately but I have managed to find some time  
 to write you. I have been thinking of you  
 very much lately and wondering how you are  
 getting on. I hope you are well and happy.  
 I have been very busy lately but I have  
 managed to find some time to write you.  
 I have been thinking of you very much lately  
 and wondering how you are getting on. I hope  
 you are well and happy. I have been very busy  
 lately but I have managed to find some time  
 to write you. I have been thinking of you  
 very much lately and wondering how you are  
 getting on. I hope you are well and happy.

---

I have been thinking of you very much lately  
 and wondering how you are getting on. I hope  
 you are well and happy. I have been very busy  
 lately but I have managed to find some time  
 to write you. I have been thinking of you  
 very much lately and wondering how you are  
 getting on. I hope you are well and happy.



## द्वितीय परिशिष्ट

शमथ-विपश्यनादुःस्थल-जिनाभिप्रायावविपरीतभाष्यम्

( मूल तिब्बती ग्रन्थ का हिन्दी अनुबाव )

शमथ एवं विपश्यना दोनों में से केवल एक ही से पर्याप्त नहीं, अपितु दोनों का सेवन आवश्यक है। इस सन्दर्भ में आर्यधर्मसंगीतिसूत्र में कहा गया है—“चित्त समाहित होने पर यथावत् तत्त्व का ज्ञान हो जाता है।” इसका तात्पर्य यह नहीं है कि चित्त को एकाग्रता में रखने मात्र का अभ्यास होने से यथावत् तत्त्व का अवबोध हो जायेगा, अपितु ‘समाहित चित्त द्वारा’ यह ( वाक्य ) जोड़ना चाहिये। जिसका अभिप्राय यह है कि समाहित शमथ द्वारा आलम्बन पर चित्त स्थिर करने के पश्चात् प्रज्ञा के द्वारा तत्त्व-परीक्षण करने पर भूतार्थ-अवबोधक ज्ञान का उत्पाद स्पष्ट रूप से कहा गया है। जैसे प्रथम भावनाक्रम में कहा गया है कि “इस प्रकार जब शमथ द्वारा आलम्बन में चित्त स्थिर कर दिया जाता है, तब प्रज्ञा के द्वारा सुपरीक्षण करने पर सम्यग्ज्ञान का अवभास होता है। उस समय आलोक आने पर अन्धकार की निवृत्ति की भाँति आवरण अपगत हो जाता है। ये दोनों भी चक्षु एवं प्रकाश की भाँति सम्यग्ज्ञान के उत्पाद में परस्पर अनुकूल ही स्थित होते हैं, न कि आलोक तथा अन्धकार की भाँति विरोध है। समाधि अन्धकार-स्वभाव का नहीं है। तब क्या है? वह चित्त की एकाग्रता के लक्षण वाला है। समाधि में स्थित होने पर यथावत् तत्त्व का सम्यग्ज्ञान होना कहा गया है, क्योंकि ( यह समाधि ) प्रज्ञा के अत्यन्त अनुरूप है, न कि विरोधी।”

अत एव शमथ की भावना से चित्त-स्थिरता की प्राप्ति आलोक-सदृश है। प्रज्ञा-द्वारा तत्त्व पर परीक्षण करना चक्षु के समान जानना चाहिये। शमथ तो अचल-चित्त की एकाग्रता में स्थित है, और विपश्यना विषयों पर परीक्षण करती है। अतः वे एक दूसरे के बाधक हैं, ऐसा ग्रहण नहीं करना चाहिये। अपि च शमथ-रहित चित्त वायु मध्य में ( स्थित ) दीपक के समान चञ्चल होता है और शमथ के बल से वायु-रहित ( स्थल ) में स्थित प्रदीप की भाँति विकल्प-वायु द्वारा अविचलित कहना युक्त नहीं है, क्योंकि विपश्यना की विचारात्मक-भावना करने वालों के मत में शमथ की सिद्धि होने पर भी विपश्यना की भावना करते समय विकल्प-वायु से ( चित्त ) विचलित हो जाता है, ऐसा माने, तो शमथ सिद्धि के आधार पर विपश्यना की भावना करते समय चित्त की सारी चालन को निवृत्त मानेंगे, तो उक्त दोष होगा, पर वह चित्त की चालन-मात्र की निवृत्ति नहीं है, अपितु चालन के दोष की निवृत्ति के अभिप्राय से



ऐसा कहा गया है। चालन का दोष क्या है ? स्ववाञ्छित विषयों पर चित्त स्थापित करते समय विवश होकर अनिच्छित विषय की ओर चित्त का चला जाना।

क्रम-निर्धारण के सम्बन्ध में शमथ की साधना न कर प्रारम्भ से ही दृष्टि (तत्त्व) में चित्त की स्थितिमात्र का अभ्यास करने पर उससे वह समाधि लौकिक भावनामयी हो सकती है, पर वह शमथ ही भावनामयी हुई है, न कि विषयना-भावनामयी। अतः पुनः विषयना-भावनामयी को उत्पन्न करना पड़ेगा। इसलिए शमथपूर्वक विचारात्मक-भावना द्वारा विषयना-भावनामयी उत्पन्न करनी होती है। अतः पहले शमथसिद्धि के पश्चात् विषयना की साधना करनी होती है। न कि इसके अतिरिक्त। तत्त्वावलम्बी लौकिक-भावनामयी का उत्पाद कर सकता है तो मात्र इतनी ही भावना से लोकोत्तर-भावनामयी का उत्पाद हो जायेगा, ऐसा भी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि लौकिक-भावनामयी वाले सभी गुणों का उसी प्रकार से अति-प्रसङ्ग हो जायेगा।

अपि च सन्धिनिर्माण सूत्र में शमथ को पहले सिद्ध करके उसी के आधार पर विचारात्मक भावना द्वारा प्रश्रब्धि आनीत होने तक विषयना की भावना करनी चाहिये, इत्यादि कथन से (शमथ एवं विषयना का) नियतक्रम बताने वाले अनेक ग्रन्थों का विरोध हो जाने के कारण ऐसा मानना उचित नहीं है। अतएव इतर यान के मतानुसार विशिष्ट विषयी द्वारा तत्त्व-भावना की विशेष अवस्था को छोड़कर विषयना-भावनामयी की पूर्व अनुत्पन्न-उत्पाद सभी अवस्थाओं में शमथ की सिद्धिपूर्वक विचारात्मक भावना द्वारा विषयना की भावना करना सुनिश्चित होता है।

यदि 'शमथ' स्थिति-भावना द्वारा तथा 'विषयना' विचारात्मक भावना द्वारा सिद्ध होती है, तथापि पहले शमथ सिद्ध करके, बाद में विषयना की भावना का क्रम सिद्ध होने का क्या कारण है ? यह दुर्बोध है, अतः कहा जा रहा है। जैसे कि हाथ से कुल्हाड़ी पकड़कर वृक्ष काटते समय हाथ अधिक काँपता है, तब वृक्ष में कुल्हाड़ी का कितना भी प्रहार करें, तो भी वृक्ष नहीं कट पाता, उसी प्रकार शमथ पहले सिद्ध न हो तो विचार-चित्त में स्थिर-रस का उपलेप नहीं होता है। अतः कितना भी परीक्षण किया जाये तो भी विपक्ष-विनाश करने में सामर्थ्य नहीं हो पाता है। बलवान् के अति-स्थिर हाथ से गृहीत तीक्ष्ण कुल्हाड़ी द्वारा काटने पर वृक्ष शीघ्रता से कटने में समर्थ हो जाता है, उसी प्रकार अतिदृढता से युक्त शमथ की समाधि के हाथों से गृहीत चित्त द्वारा प्रज्ञारूपी तीक्ष्ण शस्त्र लेकर तत्त्व-परीक्षण का अभ्यास हो जाने पर विपक्ष-विनाश करने में समर्थ हो जायेगा।



जैसा कि प्रथम भावनाक्रम में कहा गया है—“इसलिए समाधि के हाथ द्वारा चित्त को ग्रहण कर अतिसूक्ष्म प्रज्ञारूपी शस्त्र द्वारा उस चित्त में विद्यमान रूपादि के प्रति होने वाले मिथ्याविकल्प के बीजरूपी रोग का निराकरण करना चाहिए। ऐसा करने पर जैसे मूलतः उखाड़े गये वृक्ष ( पुनः ) जमीन से उत्पन्न नहीं होते हैं, उसी प्रकार निर्मूल होने से मिथ्याविकल्प चित्त का भी उत्पाद नहीं होगा।” वह भी कुछ ही प्रहारों से वृक्ष को कटाई नहीं होती, उसी प्रकार अनेक बार प्रज्ञा के द्वारा परीक्षण न करे तो, सशक्त विषयना की सिद्धि नहीं होगी। अतः पुनः पुनः परीक्षण करना चाहिए। अनेक प्रकार से विषय-परीक्षण करते समय बिना परीक्षण किये एकाग्रता में स्थित-समाधि नहीं होगी, तथापि समाधि का स्थिर रस विद्यमान होने से निर्विकल्परसेन परीक्षण करने का आभास होता है, यह समझना चाहिए।

स्थिति-पक्ष का अतिदृढता वाले चित्त-सन्तान में स्थिति का रस निरन्तर प्रवृत्त होने से उसी प्रवाह में राग, द्वेष आदि उत्पन्न होने पर पहले शमथ असिद्धि की अवस्था के समान तीव्रवेग और नैरन्तर्य आदि न होकर किञ्चित् मन्दगति और अल्पसन्तान आदि उत्पन्न होना देखकर ( कुछ लोगों का ) कहना है कि—यह तो विकल्प का स्फुरण नहीं अपितु ज्ञान का स्फुरण है, क्लेश होने पर भी ( उसके द्वारा ) कर्मसंचय का समर्थ न होना और उस अवधि से क्लेश-उत्पाद के प्रत्ययों में अवतरित हो जाने पर भी बन्धन में असमर्थ हो जाता है। इसलिये यह क्लेश का मार्ग के रूप में उपयोग करने का समय है इत्यादि ( विचार ) समाधि के अल्प ज्ञान वाले लोगों में हो सकता है। पर यह स्थिति बौद्ध, बौद्धेतर तथा महायान-हीनयान दोनों में सामान्य है, ऐसा समझना चाहिए।

शमथ की समता-अवस्था में ‘शमथ की मात्रा अधिक होने से भी सोये हुये मनुष्य की तरह स्फुटतर तत्त्व-दर्शन नहीं होगा। अत एव उस अवस्था में प्रज्ञा की भावना करनी चाहिए।’ उस कथन के अनुसार शमथ के अतिसेवन से ( आलम्बन पर ) विवेचन करने की इच्छा नहीं होती, और विवेचन करने पर भी ( विषय विवेचना की ओर ) न जाकर चित्त स्थिरता की ओर स्वरसेन चलने लगे तो विवेचन के द्वारा अनुवर्तन करना विकल्प-भावना है। अतः इससे तो निर्विकल्प की भावना एक मुहूर्त करना अत्युत्तम है, ऐसा मानकर विवेचनात्मक-भावना नहीं छोड़नी चाहिए। क्योंकि आचार्य वसुबन्धु ने कहा है—“रूपापचर में श्रुतमयी तो श्रुतमयी तथा भावनामयी की है, क्योंकि ( उसमें ) चिन्तामयी नहीं है।” उसके भाष्य ( स्फुटार्थ ) में भी कहा गया है—“( उसमें ) चिन्तामयी न होने का कारण यह है कि



जिस समय वे लोग ( किसी विषय का ) चिन्तन करना आरम्भ करते हैं, उस समय ही वे समाधि में ही उपस्थित होने लगते हैं।” ऐसे रूपधातु में उत्पन्न साधारण लोग भी चिन्तामयी का चिन्तन करना आरम्भ करते हैं तो चिन्तामयी की ओर प्रसृत न होकर समाधि में ही प्रवृत्त हो जाते हैं।

शमथ तथा विपश्यना दोनों में से एक-एक का भी यथावत् और यावत् ( दोनों विषयों का ) आलम्बन करने वाले दो-दो होते हैं, जैसा कि—**प्रज्ञापारमिता उपदेश** में भी कहा गया है कि “उसमें ( जो ) यावत् विद्यमान होने और यथावत् रूप में होने में निर्विकल्प-प्रतिबिम्बभूत तो शमथ का आलम्बन होता है। यावत् विद्यमान होने और यथावत् के रूप में होने में सविकल्प-प्रतिबिम्बभूत तो विपश्यना का आलम्बन है।” पृथग्जन-भूमि में भी यावत् आलम्बन करने वाले विपश्यना के उत्पाद के लिये सूक्ष्म-स्थूल आकार की भावना का निश्चय नहीं है, क्योंकि प्रत्येक अष्टादश धातुओं के लक्षणों का पुनः पुनः परीक्षण करने पर विपश्यना का उत्पाद होना कहा गया है। **प्रज्ञापारमिता उपदेश** में कहा गया है—“तत्पश्चात् उसी शमथ के आधार पर उनका अनेक प्रकार का प्रतिबिम्ब इस प्रकार है—रूपधातु से मनोधातु यावत् इन्हें ‘सर्वधर्म’ कहा जाता है। इस प्रकार अनेक बार विभाजित करके परीक्षण एवं विवेचन से विपश्यना सम्पन्न करे।” यह **सन्धिनिर्मोचनसूत्र** का भी अभिप्राय प्रतीत होता है। यह विपश्यना से प्रत्यक्ष-क्लेशों का प्रतिपक्ष नहीं, तथापि समाधि के पराक्रम के अभ्यास के लिये ( उसकी भावना ) की जाती है। इसके आधार पर अन्य अनेक यावत् आलम्बन करने वाली विपश्यनाओं को भी जाना जा सकता है। यह ‘शमथ तथा विपश्यना के दुःस्थलों का जिन ( बुद्ध ) के अभिप्राय अविपरीत कथन’<sup>१</sup> शमथ एवं विपश्यना के महायोगी चोङ्खापा लोसङ् डगपाई पल (श्रीपाद सुमतिकीर्ति) के द्वारा रचा गया। इससे सम्यग्मार्ग के विपरीत विकल्पमल शान्त हों।

सर्वमङ्गलम्

—: ० :—

१. यह ग्रन्थ तीनों भावनाक्रमों के मुख्य अभिधेय ‘शमथ तथा विपश्यना’ से अत्यधिक सम्बन्धित है। जिस में उन विषयों पर आश्रित मिथ्या-विकल्पों के निवारण तथा कठिन स्थलों के स्पष्टीकरण समुचित प्रकाश डाला गया है। इस प्रयोजन से परिशिष्ट में इसे जोड़ा गया है।



(ཁ་སྒྲན་གཉིས་པ་)

### शमथ भावना विधि: चित्र के रूप में

དེ་དག་ཀྱང་སེམས་གནས་དགུང་ཕྱེ་བ་དང་། དེ་ནས་སྤྱོད་སྤྱུག་གིས་  
འགྲུབ་ཐུགས་དང་། ཡིད་ཤེད་པལྱིར་སྤྱད་ཆུང་ནས་སྤེམ་ཤེས་ན་ཉིང་དེ་འཁོར་སྤྱོད་

1. རྩེ་-བརྩན་(ཁེམས་ཙམ་,པོ་ ༩༩)དེའི་འབྲེལ་བ་སློབ་དཔོན་དཔྱེན་གཉིན་གྱིས་མངའ་ད་པ་(ཁེམས་ཙམ་,པོ་ ༡༩)དེའི་འབྲེལ་བ་པད་སློབ་དཔོན་སློབ་དྲན་གྱིས་མངའ་ད་པ་(ཁེམས་ཙམ་,པོ་ 203)

མེད་བདེ་ཐུག་དུ་འགྲུབ་པར་གསུངས་པས། དབྱ་མ་སྤྱིང་བོ་ལས།<sup>1</sup>

ཡིད་ཀྱི་སྤྱང་བོ་ལོག་འགྲོ་བ།

དམིགས་པའི་ཀ་བ་བདུན་བོ་ལ།

དུན་པའི་ཐག་པས་ངེས་བཅེངས་ནས།

ཤེས་རབ་ལྷགས་ཀྱིས་རིམ་དབང་བྱ། །ཞེས་པ་ལྟར་སྤྱང་བོ་

ཆེ་མ་དུལ་བ་འདུལ་བའི་དཔེ་དང་སྤྱར་དེ་འོག་དུ་རིམ་བཞོད་པ་ནམས་ཀྱི་རོན་...  
རག་རིམ་ཙམ་འགོད་པ་ལ། སེམས་གནས་དགྲ་ནི། སེམས་འཛོག་པ། ལྷན་  
དུ་འཛོག་པ། སྤྱན་དེ་འཛོག་པ། ཉི་བར་འཛོག་པ། དུལ་བར་བྱེད་པ། ཞི་  
བར་བྱེད་པ། རྣམ་པར་ཞི་བར་བྱེད་པ། ཅེ་གཅིག་དུ་བྱེད་པ། མཉམ་པར་  
འཛོག་པ་ནམས་ཡིན་ལ།

དེ་དག་ལྟོབས་དུག་གིས་འགྲུབ་ལྷགས་ནི། སྤྱང་མའི་གདམས་ངག་གོས་  
པའི་ལྟོབས་ཀྱིས་སེམས་གནས་དང་བོ་འགྲུབ། བསམ་པའི་ལྟོབས་ཀྱིས་གཉིས་  
པ་འགྲུབ། དུན་པའི་ལྟོབས་ཀྱིས་གསུམ་པ་དང་བཞི་པ་འགྲུབ། ཤེས་བཞིན་  
ཀྱི་ལྟོབས་ཀྱིས་ལྔ་པ་དང་དུག་པ་འགྲུབ། བཅོན་འགྲུས་ཀྱི་ལྟོབས་ཀྱིས་བདུན་  
པ་དང་བརྒྱད་པ་འགྲུབ། འདྲིས་པའི་ལྟོབས་ཀྱིས་དགུ་པ་འགྲུབ་པ་ཡིན་ནོ།

དེ་དག་ཡིད་བྱེད་བཞིར་སྤྱད་ཚུལ་ནི། དང་བོ་དང་གཉིས་པའི་སྐབས་  
བསྐྱེས་ཤིང་འཇུག་པའི་ཡིད་བྱེད་དང་། བར་པ་ལྔའི་སྐབས་ཆད་ཅིང་འཇུག་པའི་  
ཡིད་བྱེད་དང་། བརྒྱད་པ་ནི་ཆད་པ་མེད་པར་འཇུག་པའི་ཡིད་བྱེད་དང་། དགུ་  
པ་ནི་ལྷན་ཀྱིས་འགྲུབ་པའི་ཡིད་བྱེད་དུ་འཛོག་པ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལྟར་སེམས་གནས་

1. ཐཱ་—བཅུན་(དབྱ་མ་'ཇ'—ལ) ཉིན་དང་འབྲེན་རྟོག་གི་འབར་བ་(དབྱ་མ་'ཇ'—ལ)



དབྱ་རིམ་གྱིས་འབྱུང་བའི་མཐར་ཤིན་སྤངས་མི་གཡོ་བ་ཐོབ་པ་དང་དུས་མཉམ་དུ་  
བསམ་གཏན་དང་པོ་འི་ཉིད་བསྒྲོགས་ཀྱིས་བསྐྱུས་པའི་ཞི་གནས་གྲུབ་པ་ཡིན་ནོ།

དེ་ལྟར་བྱས་ཞི་གནས་གྲུབ་པའི་རྗེས་སུ་ཐབ་མོ་དབྱ་མའི་ལྟ་བུ་ལ་ཅེ་གཅིག་  
དུ་དབྱད་འཛོག་ཆ་མཉམ་དུ་གོམས་པར་བྱས་པས། དབྱད་པ་རང་ལྟོབས་ཀྱིས་  
བྱངས་པའི་ཤིན་སྤངས་ཁྱད་པར་ཅན་ཐོབ་པ་ན། ལྷག་མཐོང་མཚན་ཉིད་པ་ཐོབ་  
པ་ཡིན་ལ། ད་ལྟར་ཚུལ་བཞིན་ཉམས་སུ་སྤངས་ན་ཞི་ལྷག་ཆང་དུ་འབྲེལ་བའི་  
དྲིང་འཛིན་ཤེས་རབ་ཀྱི་རལ་གྱི་ནོན་པོས་སྤང་བྱ་སྒྲིབ་གཉིས་ཀྱི་གཡུལ་ངོ་རིམ་...  
གྱིས་བཅོམ་ནས་སུ་བཞིའི་གྲུ་ཐབས་ཆེན་པོ་མངོན་དུ་བྱས་དེ། ཉམ་མཁའ་ཆེ་  
སྲིད་བར་འགྲོ་བའི་རེ་བ་སྒྲོང་བའི་འཕྲིན་ལས་ལྟན་གྲུབ་གྲུན་མི་ཆད་པ་འབྱུང་བ་...  
ཡིན་ནོ།<sup>1</sup> །

བསྐྱུབ་པ་འདོད་པའི་དགེ་སྤྱོད་དག །

དཔེན་པ་དག་ཀྱང་འཐོབ་པར་ཤོག །

གཡེང་བ་ཐམས་ཅད་སྤངས་ནས་ནི། །

སེམས་ནི་ལས་རྒྱང་སྒྲོམ་གྱུར་ཅིག །

( ཐཱི་-བཙུན་-དབྱ་མ་-'ལ' ༩༩ )

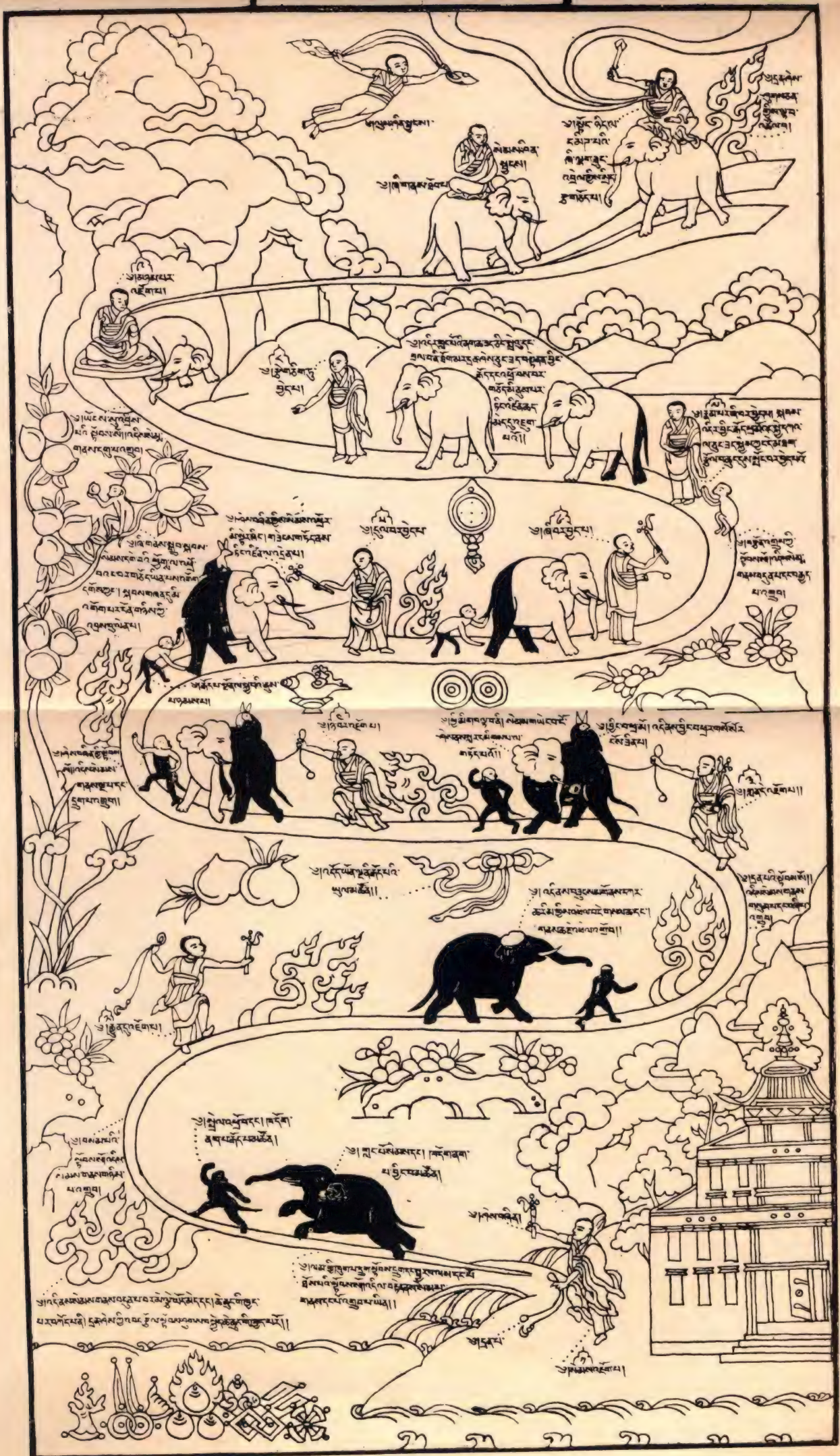
- 
1. གོང་གསལ་ཞི་གནས་སྒྲོམ་ཚུལ་གྱི་ནུས་བཞག་དང་། དཔེ་རིམ་གྱི་བཤད་པ་འདི་ནི་རྒྱབས་ཆེ་  
ཁྱེ་བྱང་རན་པོ་ཆེས་མང་དུ་བཞོ།

The first of these is the fact that the  
the second is the fact that the  
the third is the fact that the  
the fourth is the fact that the  
the fifth is the fact that the  
the sixth is the fact that the  
the seventh is the fact that the  
the eighth is the fact that the  
the ninth is the fact that the  
the tenth is the fact that the

The first of these is the fact that the  
the second is the fact that the  
the third is the fact that the  
the fourth is the fact that the  
the fifth is the fact that the  
the sixth is the fact that the  
the seventh is the fact that the  
the eighth is the fact that the  
the ninth is the fact that the  
the tenth is the fact that the

The first of these is the fact that the  
the second is the fact that the  
the third is the fact that the  
the fourth is the fact that the  
the fifth is the fact that the  
the sixth is the fact that the  
the seventh is the fact that the  
the eighth is the fact that the  
the ninth is the fact that the  
the tenth is the fact that the







## चतुर्थ परिशिष्ट

भोट-संस्कृत शब्दकोश

(अथवा सर्वे शब्दाः कर्तव्यः)

ग

गमिगरेः शुभः पुरुषः वा।	३०	काशिराजोऽभूद्	१७४
गुणः शुभः वा।	१४	समुदाचारः	१७२
गुणः शुभः पुरुषः वा।	८१	सम्मोहबीज०	१८५
गुणः शुभः वा।	१०८	अजीवक	२३७
गुणः शुभः पुरुषः वा।	१३	अवधारयति	१७६
गुणः शुभः पुरुषः वा।	४८	समुदयं नोपलभते	१८३
गुणः शुभः पुरुषः वा।	४३	संवृतिपरमार्थरूपेण	१८०
गुणः शुभः पुरुषः वा।	१०८	संदिष्टधावनभूमि	२३६
गुणः शुभः पुरुषः वा।	८४	प्रत्ययवैकल्य	१८६
गुणः शुभः पुरुषः वा।	४३	कारणाधीन	१८०
गुणः शुभः पुरुषः वा।	११	त्रिकायादि	२००
गुणः शुभः पुरुषः वा।	८	अशरण	१६८
गुणः शुभः पुरुषः वा।	३४	पर्यङ्कमाभुज्य	१८१
गुणः शुभः पुरुषः वा।	८८	अर्धपर्यङ्केन वा	२०८
गुणः शुभः पुरुषः वा।	४८	पर्यङ्कमाभुज्य	१८३



ཕྱེ་བ་དང་འཇིག་པའི་མཚན་ཉིད།	१२	उत्पादभङ्गलक्षण	१६१
ཕྱེ་བ་མེད་པ་མཉམ་པ་ཉིད་ཀྱིས།	१७	अनुत्पादसमतया	१७७
ཕྱེ་བོ་མཁས་པ་ལ་བསྟེན་བཀུར་མ་	१३०	अनुपासितविद्वज्जन	२३३
བུས་པ།			
ཕྱེ་བོ་ལྷན་པོ་འི་དབང་དུ་མཛོད་ནས།	१३४	मूर्खजनमधिकृत्य	२३२
ཕྱེ་བུ་དམ་པ་ལ་བདེན་པ།	८७	सत्पुरुषाश्रयः	२०७
ཕྱེས་རབ།	८७	जातक	२०६
སྒྲུག་པའི་གནས་སྤངས་པའི་ཕྱིར།	१०	त्रासपदपरिहारार्थं	१७७

ཁ

ཁ་ན་མ་གྲོ་བ་མེད་པའི་སྒྲོ་གྲོས་	७०	अनवद्यमति	१६६
ཁས་སྒྲུང་པར་གྱུར་དོ།	३१	अभ्युपेतं स्यात्	१८०
ཁོང་དུ་ཆུད་པར་བྱ།	३०	प्रतिवेदयामि	१८१
ཁུབ་པར་བྱ་བ།	८०	व्याप्य	१८६
ཁུབ་པར་བྱེད་པ་མེད་པ།	८०	व्यापकाभाव	१८६
ཁྱིམ་པ།	८४	गृहस्थ	२०७
ཁྱ།	३०	इयेन	१७४
མཁས་པ་མཐུ་དང་ལྷན་པ།	११	विज्ञातप्रतिबल	१७१
མཁས་པ་བདག་ལཱ་སྲུ་འདོད་པས།	१३०	आत्मकमेन धीमता	२३३
འཁོར་བ་ན་ཀུན་དུ་འཁྲུམ་ཞིང་།	४८	संसारे परिभ्रमन्तो	१६४
འཁོར་བ་ན་འཁོར་དེ།	१३६	संसारे संसरन्ति	२३२

འཁོར་བར་བྱེད་པས་དགག་པ་...	१००	संसाराबाहकत्वात्	२३७
སྒྲིབ་ཏུ་བྱ་ན།		प्रतिविध्यते	
འཁོར་བར་ཡོངས་སུ་སྒྲིབ།	१४१	संसारपरिखेदः	२३८
འཁོར་བའི་འབྲས་བུ།	११	सांसारिकफल	१७५
འཁོར་གྱི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ནང་ན་...	११०	पर्वन्मण्डलमध्यगतं	२२५
བཞུགས་ཤིང་།			

ག

གང་གི་ཆོ་བར་སྐབས་སུ།	१३०	यदान्तरा	२२८
གཞུང་གི་མའི་གྲངས།	१०	गङ्गाबालुकसंख्यानि	१७०
གད་ཀ་ན་འདྲག་པ།	११	प्रपातस्था	२०३
གད་ཀ་ན་འདྲག་པའི་ཤིང་།	७	प्रपातस्थास्तरवः	१६७
གོགས་མེད་པའི་ཕྱིར།	४१	प्रतिबन्धाभावाद्	१६०
གོང་ནས་གོང་དུ་ཤིན་དུ་རྒྱུ་...	१७१	उत्तरोत्तरविशुद्धतरतमक्षण	२४३
བར་དག་པའི་སྒྲིབ་ཅིག།			
གོང་བུ་རྩལ་ལྷན་ཅམ་ཉིད་དུ་འགྱུར་པ།	१०	पिण्डस्याणुमात्रताप्रसङ्ग	१७८
གྲོང་གྲོང་པ་ལྟར།	७१	शून्यग्रामवत्	१६५
སྒྲོང་གི་རྩ།	३१	गोविषाण	१७६
སྒྲོང་པོའི་རྩལ་ལས།	१७	हस्तिकक्षये	१७७
སྒྲིང་མེད་པ།	८	अद्वीपान्	१६८
སྒྲོང་གཞི།	८०	निदान	२०६



श्लोकः	१८१	मूढः	२३४
दशरः वः दः वः दः वः	८०	प्रीतिमुख	१८४
दशरः वः वः दः वः	३५	रतिमुत्पादयति	१८३
दशरः वः दः वः दः वः दः वः	१३७	शुभाशुभकर्मवशेन	२३२
दशरः वः वः दः वः	१८०	दशकुशलकर्मपथाः	२३७
दशरः वः उः वः दः वः	१०	कुशलमूलानि	१६६
दशरः वः उः वः दः वः	१५०	कुशलमूलारम्भणं	२४२
दशरः वः वः दः वः	१३	कल्याणमित्रात्	१७१
दशरः वः वः दः वः	३३	प्रयोजनसम्पादनार्थं	१७५
दशरः वः वः दः वः	१३१	कार्यपरिनिष्पत्ति	२२४
दशरः वः वः दः वः	८	अत्राणान्	१६८
दशरः वः वः दः वः	१४५	निरोधसमाधि	२४१
दशरः वः वः दः वः	४८	निरोधं नोपलभते	१६३
दशरः वः वः दः वः	५	विपरिणामदुःख	१६८
दशरः वः वः दः वः	८४	कौकृत्याभाव	२०७
दशरः वः वः दः वः	१३४	अस्वभावं जगद्	२३१
दशरः वः वः दः वः	१३	सकलजगतो हिताय	१७०
दशरः वः वः दः वः	८१	षड्गतिसंसार	२०५
दशरः वः वः दः वः	४५	जगद्धेतो	१६३
दशरः वः वः दः वः	१३	अम्बरराज	१७१

सुखं तु रजःशुभा	३८	संस्थापयति	१८३
सुखं तु रजःशुभा	८८	सततं स्वरसवाहि	२०८
सुखं तु रजःशुभा	१४०	नानामुखोपचितं कुशलमूलं	२३७
सुखं तु रजःशुभा			
सुखं तु रजःशुभा	१	भावनाक्रम	१६५
सुखं तु रजःशुभा	४४	माया	१६२
सुखं तु रजःशुभा	४७	मायाकार	१६२
सुखं तु रजःशुभा	४८	मायावशाद्	१६२
सुखं तु रजःशुभा	३३	आवरणतमोऽपहीयते	१८०
सुखं तु रजःशुभा	४३	आवरणद्वय	१६०
सुखं तु रजःशुभा	११३	कण्टकस्वररहित	२२४
सुखं तु रजःशुभा	१	प्रतिपत्ति	१६५
सुखं तु रजःशुभा	७	प्रतिपत्तिविकल	१६६
सुखं तु रजःशुभा	११	प्रतिपत्तिसारं	१७०
सुखं तु रजःशुभा	३१	समारोपापवादान्त	१७५
सुखं तु रजःशुभा	३८	आरोपापवाद	१८२
सुखं तु रजःशुभा	७३	कदाचित् किञ्चित्	२००
सुखं तु रजःशुभा	१८०	संमूर्च्छित	२३३
सुखं तु रजःशुभा	१८३	भावनाप्रकर्षपर्यन्तगमेन	२४३
सुखं तु रजःशुभा	३३	भावनामयी प्रज्ञा	१८०



ངན་ངོན་ཅམ།	༥༣	अवरमात्र	२०७
ངན་སོང་ལ་སོགས་པ།	༡༠༥	अपायादिषु	२३७
ངེས་པ་དང་དྲང་བའི་ངོན་ལྷན་པར་...	३३	नीतने पार्था निर्वेधय	१७६
འབྱེད་པ།			
ངེས་པར་འབྱེད་བའི་གློ།	༣३	निर्याणबुद्धिः	१६०
ངེས་པར་འབྱེད་པའི་ཆ་དང་མཐུན་པ།	༩३	निर्वेधभागीय	१६६
ངེས་པའི་ཆོག།	༩༥	निरुक्ति	१७६
ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པའི་དངོས་བོ་	༣༥	निःस्वभावेषु भावेषु	१६३
རྣམས་ལ།			
ངོ་བོ་ཉིད་ཡོངས་སུ་བཅའ་ན།	༡३༥	स्वभावतः परिगवेषमाणः	२२७
དངོས་བོ་འི་མཐུན།	༡३०	वस्तुपर्यन्तता	२२३
དངོས་བོ་འི་མཐུན་ལ་དམིགས་པ།	༡༩३	वस्तुपर्यन्ततालम्बन	२४३
དངོས་བོ་འི་ངོན་གྱི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད།	༩५	वस्तुपरमार्थतत्त्व	१६५
དངོས་བོར་མངོན་པར་ཞེན་པ།	༡༣	भावाभिनिवेश	१५७
མངོན་དུ་སྒྲུགས་པ།	༩༧	अभिमुख	१६८
མངོན་པར་མཐོ་བའི་ཆོས།	༡༠	अभ्युदयधर्म	१७२
མངོན་པར་མཐོ་བའི་འབྲས་བྱ།	༡༠༥	अभ्युदयफल	२१७
མངོན་པར་དྲིགས་པའི་རིགས་ཅན།	༣५	अभिसमयगोत्र	१६०
མངོན་པར་འདྲ་བྱེད་པ་མེད་པར།	३༥	अनभिसंस्कारवाहितायां	१८३





कुं.पे.पं.सुं.पं.पं.पं.	१३८	कदलीस्कन्धवद्	२२७
कुं.पे.पं.	१३९	कदलीवत्	१६५
कुं.पे.पं.पं.पं.	१४०	पयःस्कन्धवद्	२३७
कुं.पे.पं.पं.पं.	८७	उदान	२०६
कुं.पे.पं.पं.पं.	८८	संतुष्टिः	२०६
कुं.पे.पं.पं.पं.पं.पं.	१४१	धर्मकायाभिसमय	१७५
कुं.पे.पं.पं.पं.पं.	१४२	धर्ममुखस्रोत	१७२
कुं.पे.पं.पं.पं.पं.पं.	८९	धर्मप्रवर्षणाद्	१६६
कुं.पे.पं.पं.पं.पं.पं.पं.	९०	अग्रधर्मान्तर	१६६
कुं.पे.पं.पं.पं.पं.	९१	धर्ममेघ	१६६
कुं.पे.पं.पं.पं.पं.पं.पं.	९२	धर्मधातुसमुदागमता	१६७
कुं.पे.पं.पं.पं.पं.पं.	९३	अभिधर्मसूत्र	१६८
कुं.पे.पं.पं.पं.पं.पं.पं.पं.	१४३	सर्वधर्मसङ्गग्रहवंपुल्य	१७४
कुं.पे.पं.पं.पं.पं.पं.पं.	१४४	सर्वधर्मशून्यता	१७३
कुं.पे.पं.पं.पं.पं.पं.पं.पं.	१४५	सर्वधर्मानुपलब्धिः	१७३
कुं.पे.पं.पं.पं.पं.पं.पं.पं.	१४६	धर्मविभक्तितां	१७३
कुं.पे.पं.पं.पं.पं.पं.पं.पं.	१४७	सर्वधर्माणां धर्मता	१७३
कुं.पे.पं.पं.पं.पं.पं.पं.पं.	१४८	धर्मनैरात्म्य	१६०
कुं.पे.पं.पं.पं.पं.पं.पं.पं.	१४९	धर्मप्रज्ञप्ति	२२७
कुं.पे.पं.पं.पं.पं.पं.पं.पं.	९४	खेटपिण्ड	१६७

མཆོག་དུ་དགའ་བའི་དངོས་པོ།	३७	प्रामोद्यवस्तु	१८२
མཆོད་པ་དང་བསྟོད་པ་གསལ་དེ།	४०	पूजास्तोत्रोपहारं कृत्वा	१८४
མཆོད་སྒྲིལ།	४४	यज्ञदत्त	१८२
འཆལ་བའི་ཚུལ་ཁྲིམས་ཀྱི་དྲི་མ།	५४	दौःशील्यमल	१८७
འཆི་འཁོ་བ་དང་སྦྱེ་བ་དང་བྲལ་བ།	३४	च्युत्युत्पत्तिविगताः	१७७

६

རྩི་སྤྱོད་དུ་རྒྱས་པ་དེ་སྤྱོད་དུ།	४७	यावत् शक्नोति तावद्	१८३
འཇམ་དབལ་གྱིས་སྦྱས་པ།	४०	मञ्जुश्रीराह	१८६
འཇིག་རྟེན་མགོན།	११	लोकनाथ	१७०
འཇིག་རྟེན་གྱི་བཟོ།	१३	लौकिकशिल्प	१७१
འཇིག་རྟེན་གྱི་འགྲོ་བ་ཐོས་པ་ཅན་			
ལས་ལོག་པ།	११	लोकसर्वगतिनिवृत्तिः	२२०
འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་བའི་བསམ་			
གཏན།	१८	लोकोत्तरध्यान	१७१
འཇིག་རྟེན་གསུམ་ན་སྤྱོད་པ།	༥	त्रिधातुकावचराः	१६६
འཇིག་པ་དང་འབྱུང་བ་ལ་མངོན་པར་			
ཞེན་པ།	१८	उत्पादननिरोधाभिनिविष्टः	१७६
འཇིགས་བའི་སྤྱོད་ཀྱིས་ཞོན་པ།	५	भयशोकोपहताः	१६७
འཇིགས་བས་ཡིད་འབྱུགས་པ།	४	भयविह्वलमानस	१६७
རྩི་བཙུན་རྣམ་པར་སྤྲང་མཛད།	१३३	वैरोचनभट्टारक	२२४



རྒྱལ་སྤྱི་ཡི་རང་བཤུ་	༡༠	अनुमोदन	१६६
བཟོད་དུ་མེད་པའི་གང་ཟག།	༡༩	अनभिलाष्यपुद्गल	२२६
१			
ཉན་ཐོས་དང་རང་སངས་རྒྱལ།	༡༠	श्रावकप्रत्येकबुद्ध	१६६
ཉན་ཐོས་ཀྱི་ཐེག་པ།	༡༩	श्रावकयान	१६०
ཉལ་ཡང་རྩང་།	༡༠	शयानोऽपि	१६६
ཉེ་བར་འཛིག་གོ།	༩	उपस्थापयति	१८३
ཉན་མོངས་པའི་སྒྲིབ་པ།	༡༠	क्लेशावरण	१८६
གཉིས་མེད་པའི་ཤེས་པ་སྤང་བ་			
མེད་པའི་ཤེས་པ།	༡༠	अद्वयज्ञाननिराभासज्ञान	१८७
གཉིས་སུ་མེད་པའི་མཚན་ཉིད།	༡༩	अद्वयलक्षण	१६६
མཉམ་པར་འཛིག་གོ།	༩	समादधाति	१८३
མཉམ་པར་བཞག་པའི་སེམས།	༩	समाहितचित्त	१८१
མཉམ་པར་བཞག་པ་ལ།	༩	समाधानम्	१७६
མྱིང་རྒྱུ་ཆེན་པོ།	༡	महाकरुणा	१६५
མྱིང་རྒྱུ་ཆེན་པོས་ཀྱན་ནས་བསྐྱེད་པ།	༡༠	महाकरुणासमुत्थापितम्	२३७
མྱིང་རྒྱུ་ཆེན་པོས་བོན་བདེ་ན།	༡༩	करुणाबीजवपने	२०२
མྱིང་པོ་མེད་པར་དྲིགས་ནས།	༡༩	असारमवगम्य	२२७
མྱིང་བཏེ་བ།	༡	कृपा	१६८
བསྐྱེད་བསྐྱེད་མཚན་པ་དེ་དག།	༡༩	पर्युपासिता येषां	२३६





श्रुत्वा श्रुत्वा ५०६५ व. वदे व. वा।	१२३	मृदुतरसुखासने	२२४
श्रुत्वा व. ११८८ श्रुत्वा ११८८ श्रुत्वा ११८८।	१२४	शून्यताकरुणागर्भ	१६४
श्रुत्वा व. ११८८ श्रुत्वा ११८८ श्रुत्वा ११८८।	१२५	अष्टादशप्रकारशून्यता	१६२
श्रुत्वा व. ११८८ श्रुत्वा ११८८ श्रुत्वा ११८८।	१२६	शून्यं प्रतिविध्यति	२२७
श्रुत्वा व. ११८८ श्रुत्वा ११८८ श्रुत्वा ११८८।	१२७	त्रिसाहस्रमहासहस्र	२४२
श्रुत्वा व. ११८८ श्रुत्वा ११८८ श्रुत्वा ११८८।	१२८	बलपारमिता	१६६
श्रुत्वा व. ११८८ श्रुत्वा ११८८ श्रुत्वा ११८८।	१२९	दशबल	१७३
श्रुत्वा व. ११८८ श्रुत्वा ११८८ श्रुत्वा ११८८।	१३०	विचाराक्षमत्वात्	१६२

प्र.

प्र. श्रुत्वा ११८८ श्रुत्वा ११८८ श्रुत्वा ११८८।	१३१	व्यवहारवशाद्	१७७
प्र. श्रुत्वा ११८८ श्रुत्वा ११८८ श्रुत्वा ११८८।	१३२	सर्वव्यवहारातीत	१७६
प्र. श्रुत्वा ११८८ श्रुत्वा ११८८ श्रुत्वा ११८८।	१३३	व्यवहियते	१६२
प्र. श्रुत्वा ११८८ श्रुत्वा ११८८ श्रुत्वा ११८८।	१३४	उपायपर्यवसानम्	१७५
प्र. श्रुत्वा ११८८ श्रुत्वा ११८८ श्रुत्वा ११८८।	१३५	उपायपारमिता	१६४
प्र. श्रुत्वा ११८८ श्रुत्वा ११८८ श्रुत्वा ११८८।	१३६	उपायपरिग्रहण	१६६
प्र. श्रुत्वा ११८८ श्रुत्वा ११८८ श्रुत्वा ११८८।	१३७	उपायरहितप्रज्ञा	१७१
प्र. श्रुत्वा ११८८ श्रुत्वा ११८८ श्रुत्वा ११८८।	१३८	प्रज्ञोपायरूपा	१७१
प्र. श्रुत्वा ११८८ श्रुत्वा ११८८ श्रुत्वा ११८८।	१३९	उपायसेवनकाले	१६५
प्र. श्रुत्वा ११८८ श्रुत्वा ११८८ श्रुत्वा ११८८।	१४०	उपायविकलतया	२३१
प्र. श्रुत्वा ११८८ श्रुत्वा ११८८ श्रुत्वा ११८८।	१४१	उपायकौशलं कतमम्	१७२

समसः तदः सप्तः च त्रिंशद्विंशः च।	१२	सर्वज्ञत्वाधिगम	१६०
समसः तदः सप्तः च त्रिंशद्विंशः च...			
गतिः च।	१२०	सर्वज्ञतैकरसं	२३७
समसः तदः सप्तः च त्रिंशद्विंशः च।	३	सर्वज्ञपदम्	१६६
समसः तदः सप्तः च त्रिंशद्विंशः च।	१२	सर्वत्राव्याहतो	१६०
समः च तदः सप्तः च त्रिंशद्विंशः च।	१२	मोक्षाभावाद्	१६१
समः सप्तः च त्रिंशद्विंशः च।	१२	प्राञ्जलिभूत्वा	१७०
सप्तः च।	१२	विचिकित्सा	१७६
सप्तः च त्रिंशद्विंशः च।	८६	संशयबीज	१८७
सप्तः च त्रिंशद्विंशः च।	८७	संशयान्दोलितयान	२०८
सप्तः च त्रिंशद्विंशः च।	८६	संशयाप्रहाण	१८७
सप्तः च त्रिंशद्विंशः च।	८१	महायान	१८५
सप्तः च त्रिंशद्विंशः च।	१	महायानसूत्र	१६५
सप्तः च त्रिंशद्विंशः च।	१	महायानसंभार	१६६
सप्तः च त्रिंशद्विंशः च।	१२	श्रुतमयीप्रज्ञा	१६७
सप्तः च त्रिंशद्विंशः च।	८८	अनुकूलदेशवासः	२०६
सप्तः च त्रिंशद्विंशः च।	१२	अचिन्त्यशक्तिविशेष	१६०
सप्तः च त्रिंशद्विंशः च।	१२	बलिभिराक्रम्य	१६७



५

५. ५२. ५३. ५४. ५५. ५६. ५७. ५८. ५९. ६०.	प्रत्युत्पन्नबुद्धसंमुखाव-	
वज्रपाशः प. ५६. ५७. ५८. ५९. ६०. ६१. ६२. ६३. ६४. ६५. ६६. ६७. ६८. ६९. ७०.	स्थितसमाधिः	२२५
५. ५२. ५३. ५४. ५५. ५६. ५७. ५८. ५९. ६०.	प्रत्युत्पन्नेऽध्वनि	१७७
५. ५२. ५३. ५४. ५५. ५६. ५७. ५८. ५९. ६०.	अधिवासनशील	१८१
५. ५२. ५३. ५४. ५५. ५६. ५७. ५८. ५९. ६०.	श्रद्धा	१६६
५. ५२. ५३. ५४. ५५. ५६. ५७. ५८. ५९. ६०.	सद्धर्मप्रतिक्षेपकर्माविरण	१७४
५. ५२. ५३. ५४. ५५. ५६. ५७. ५८. ५९. ६०.	शनैः पर्यङ्कं भित्त्वा	२३२
५. ५२. ५३. ५४. ५५. ५६. ५७. ५८. ५९. ६०.	विषसंसृष्टवचनं	२३२
५. ५२. ५३. ५४. ५५. ५६. ५७. ५८. ५९. ६०.	तत्त्वं भावयेत्	१६३
५. ५२. ५३. ५४. ५५. ५६. ५७. ५८. ५९. ६०.	तत्त्व विचाराः	२०८
५. ५२. ५३. ५४. ५५. ५६. ५७. ५८. ५९. ६०.	तत्त्वान्यत्वाभ्याम्	२२६
५. ५२. ५३. ५४. ५५. ५६. ५७. ५८. ५९. ६०.	इतिवृत्तक	२०६
५. ५२. ५३. ५४. ५५. ५६. ५७. ५८. ५९. ६०.	आनन्तर्यसमाधि	१६६
५. ५२. ५३. ५४. ५५. ५६. ५७. ५८. ५९. ६०.	तथतालम्बन	१८५
५. ५२. ५३. ५४. ५५. ५६. ५७. ५८. ५९. ६०.	तथतापरायणम्	२०६
५. ५२. ५३. ५४. ५५. ५६. ५७. ५८. ५९. ६०.	तथागतविग्रह	२२५
५. ५२. ५३. ५४. ५५. ५६. ५७. ५८. ५९. ६०.	तथागतनिमित्तः	१६२
५. ५२. ५३. ५४. ५५. ५६. ५७. ५८. ५९. ६०.	तथागतदिधगतेरन्या	२४०

देदि.हेस.ल.प्रव.वदि.ये.मेस।	११४	तत्पृष्ठलब्धज्ञानेन	२२०
देदि.ल.प्रस.सु.ल.सु.द.ल।	१०८	तत्फलं भुञ्जान	२३७
देदि.द.स.व.द.स.प्रव.वदि.प्रि.र।	१०	परमार्थानुकूलत्वात्	१७६
देदि.द.स.व.द.स.प्रव.वदि.प्रि.र।	११	परमार्थतोऽलीका	१६२
देदि.द.स.व.द.स.प्रि.र.ते.स.ले.व.व।	४०	परमार्थतोऽविपर्यस्त	१८६
देदि.द.स.व.द.स.प्रि.र.ते.स.ले.व.व।	४४	परमार्थतोऽलीक	१६२
देदि.द.स.व.द.स.प्रि.र.ते.स.ले.व.व।	१५	परमार्थक्षान्ति	१७३
देदि.द.स.व.द.स.प्रि.र.ते.स.ले.व.व।	१०	प्रार्थना	१६६
देदि.द.स.व.द.स.प्रि.र.ते.स.ले.व.व।	१८	अर्थक्रियासमर्थ	१७८
देदि.द.स.व.द.स.प्रि.र.ते.स.ले.व.व।	३४	ऋजुं प्रणिधाय	१६१
देदि.द.स.व.द.स.प्रि.र.ते.स.ले.व.व।	८	अभ्युद्धरणप्रतिज्ञय	१६८
देदि.द.स.व.द.स.प्रि.र.ते.स.ले.व.व।	१०	स्मृतिः	१८३
देदि.द.स.व.द.स.प्रि.र.ते.स.ले.व.व।	१०१	मुषितस्मृतित	२३४
देदि.द.स.व.द.स.प्रि.र.ते.स.ले.व.व।	१०२	उष्णस्पर्शसंवेदनं	२३४
देदि.द.स.व.द.स.प्रि.र.ते.स.ले.व.व।	१०	विनेयजनेभ्यो	२००
देदि.द.स.व.द.स.प्रि.र.ते.स.ले.व.व।	३४	अभ्युद्धरणाशयो	१८१
देदि.द.स.व.द.स.प्रि.र.ते.स.ले.व.व।	१३०	आत्मदृष्टि परामृशतः	२३३
देदि.द.स.व.द.स.प्रि.र.ते.स.ले.व.व।	३	स्वात्मनिरपेक्षा	१६६
देदि.द.स.व.द.स.प्रि.र.ते.स.ले.व.व।	१४	स्वपरार्थानुष्ठानाद्	१७२



བདག་དང་གཞན་གྱི་དོན་སྤྲོད་སྤྲོད་...

ཚོགས་པ།

༧༠

स्वपरार्थसम्पत्ति

२००

བདག་དང་གཞན་དུ་འདྲ་ཤེས་པས།

༧༡

आत्मपरसंज्ञिना

२३६

བདག་དང་བདག་གི་བ་དང་བྲལ་བ།

༧༢

आत्मात्मीयरहितं

२२५

བདག་དུ་སྒྲོ་འདོགས་པ།

༧༣

आत्मसमारोप

१८६

བདག་མ་དུལ་ན།

༧༤

नहि स्वयमदान्तः

१७१

བདག་གཞན་གཉིས་ཀྱི་ལས།

༧༥

स्वपरोभयतः

२२७

བདག་གཞན་ལ་འཁྲུ་བ་བྱས་པ།

༧༦

स्वपरद्रोहः कृतः

२४३

བདེ་བ་དང་སྤྲད་པར་འདོད་པའི་རྣམས་པ།

༧༧

सुखसंयोगेच्छाकारा

२०४

བདུད་བདུལ་བའི་ལུ།

༧༨

मारदमनपरिच्छेद

२१८

མདོ་ཀྱན་ལས་བདུས་པ།

༧༩

सूत्रसमुच्चय

२३५

འདས་པའི་དུས་ན།

༨༠

अतीतेऽध्वनि

१७७

འདས་མ་འོངས་ད་ལྟར།

༨༡

अतीतानागतप्रत्युत्पन्न

१६६

འདུ་བྱེད་ཀྱི་སྤྲུག་བསྐྱེད།

༨༢

संस्कारदुःख

१६८

འདུ་བྱེད་མངོན་པར་འདུ་བྱ་བ།

༨༣

संस्काराभिसंस्कार

२३८

འདུ་ཤེས་མེད་པའི་སྒྲོམ་པར་འཇུག་པ།

༨༤

असंज्ञिसमापत्ति

१८७

འདུག་ཀྱང་ཅུང་།

༨༥

निषण्णोऽपि

१६९

འདུན་པ།

༨༦

छन्द

१६९

འདུལ་བར་བྱེད་དོ།

༨༧

दमयति

१८३

འདོད་པ་ལྟར་བ།

༨༨

अल्पेच्छता

२०६

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

तीव्रकामाग्नि-

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

७

सन्दीप्तमानसा

१६७

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

८०

कामतृष्णा

१८४

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

८३

परमाणु

१८५

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

३४

पापदेशना

१८१

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

४

प्रियविप्रयोग

१६७

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

७

दुःखदुःखता

१६८

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

७७

सर्वदुःखसहनात्

१६७

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

८

त्रिविधदुःख

१६६

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

८

दुःखितसत्त्व

१६६

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

१३

संवरग्रहणे

१७१

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

१३

संग्रहवस्तु

१७१

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

१०

पिण्डयित्वा

१६६

९.

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

८०

अध्यात्मसमप्रसादः

१८४

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

३८

सर्वसामर्थ्यशून्यत्वाद्

१७८

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

३८

समर्थस्वभावानुवृत्तौ

१७८

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

८८

अवस्थानलक्षणा

१८८

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

११३

दौष्टुल्य

२१६

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

११७

दौष्टुलबन्धन

२२३



गङ्गा नदी	३	किमधिष्ठाना	१६६
गङ्गा नदी	७८	पर्याय	१६६
गङ्गा नदी नदी नदी नदी			
गङ्गा नदी	११०	एतावता प्रकारेण	२२५
गङ्गा नदी नदी नदी नदी			
गङ्गा नदी नदी नदी नदी	१०३	सर्वाकारवरोपेतशून्यता	२१५
गङ्गा नदी नदी नदी नदी	१२८	सर्वाकारज्ञता	२३२
गङ्गा नदी नदी नदी नदी	१२७	प्रकारान्तराभावात्	२२६
गङ्गा नदी नदी नदी	७३	विमोक्ष	१६६
गङ्गा नदी नदी नदी नदी			
गङ्गा नदी नदी नदी	१२०	सर्विकल्पप्रतिबिम्बकम्	२२३
गङ्गा नदी नदी नदी नदी	८०	विकल्पपरित्याग	२०६
गङ्गा नदी नदी नदी नदी	८७	मिथ्याविकल्प	१८७
गङ्गा नदी नदी नदी नदी			
गङ्गा नदी नदी नदी नदी	११	वैरोचनाभिसम्बोधि	१७५
गङ्गा नदी नदी नदी नदी	१७	अविकल्पधर्मता	१७३
गङ्गा नदी नदी नदी नदी	८०	निर्विकल्पसमाधि	१८६
गङ्गा नदी नदी नदी नदी	१२०	निर्विकल्पप्रतिबिम्बकम्	२२३
गङ्गा नदी नदी नदी नदी			
गङ्गा नदी नदी नदी नदी	८४	अविकल्पप्रवेशधारणी	१८७

कमः वरः वै वरः पुनः नो	८३	व्युपशमयति	१८३
कमः वरः वल्लभा	८८	व्यवस्थाप्यते	१८६
कमः वरः मयि वः सुन्दरः कस	३८	विक्षेपं परिहृत्य	१८३
कमः वरः मयि वरः भूषः व	३४	विक्षेपदोष	१८२
कमः वरः मयि वः सुन्दरः व	४३	विज्ञानवाद	१८१
सुन्दरः वरः वरः नो वः नो वः	८३	आलोकलब्धसमाधि	१८६
सुन्दरः वरः वरः व	८३	निराभास	१८५

व

सुन्दरः वरः वरः व	३	बलकाय	१८५
सुन्दरः वरः वरः वरः व	८०	सविचार	१८४
सुन्दरः वरः वरः वरः व	१३८	प्रतिक्षिप्तं भवेत्	२३२
सुन्दरः वरः वरः वरः व	३८	अष्टौ प्रहाणसंस्कारा	१८३
सुन्दरः वरः वरः वरः व	२०	चर्या चरता	१७४
सुन्दरः वरः वरः वरः व	८८	अवलोकितेश्वर	२११
सुन्दरः वरः वरः वरः व	१४३	यावती चर्या	२३६
सुन्दरः वरः वरः वरः व	१८	निर्माण	१७२
सुन्दरः वरः वरः वरः व	११४	अपरिमितनिर्माण	२२१
सुन्दरः वरः वरः वरः व	३३	प्रोत्साहनार्थम्	१७५
सुन्दरः वरः वरः वरः व	८८	सर्वप्रपञ्चरहित	१८६





ॐ स्वस्ति नमो भगवते वासुदेवाय	१३	आर्यगयाशीर्ष	१७१
ॐ स्वस्ति नमो भगवते वासुदेवाय			
ॐ स्वस्ति नमो भगवते वासुदेवाय	८०	आर्यसंधिनिर्माचन	२०४
ॐ स्वस्ति नमो भगवते वासुदेवाय	७	आर्यराजाववादकसूत्र	१६६
ॐ स्वस्ति नमो भगवते वासुदेवाय			
ॐ स्वस्ति नमो भगवते वासुदेवाय	१०८	आर्यसर्वधर्मवैपुल्य	२१५
ॐ स्वस्ति नमो भगवते वासुदेवाय	१	आर्यधर्मसंगीतिसूत्र	१६५
ॐ स्वस्ति नमो भगवते वासुदेवाय	८	आर्यदशधर्मसूत्र	१६८
ॐ स्वस्ति नमो भगवते वासुदेवाय			
ॐ स्वस्ति नमो भगवते वासुदेवाय	१०३	आर्यमञ्जुश्रीविकुर्वितसूत्र	२३५
ॐ स्वस्ति नमो भगवते वासुदेवाय			
ॐ स्वस्ति नमो भगवते वासुदेवाय	१३	आर्यलोकोत्तरपरिवर्त	१६१
ॐ स्वस्ति नमो भगवते वासुदेवाय			
ॐ स्वस्ति नमो भगवते वासुदेवाय	१४	आर्योपालिपरिपृच्छा	२३८
ॐ स्वस्ति नमो भगवते वासुदेवाय		आर्यमहायानश्रद्धा-	
ॐ स्वस्ति नमो भगवते वासुदेवाय	८७	भावनासूत्र	२०५
ॐ स्वस्ति नमो भगवते वासुदेवाय	१३	आर्यसमाधिराजसूत्र	१७१
ॐ स्वस्ति नमो भगवते वासुदेवाय	३	आर्यश्रद्धाबलाधान	१७२
ॐ स्वस्ति नमो भगवते वासुदेवाय			
ॐ स्वस्ति नमो भगवते वासुदेवाय	१३६	आर्यतथागतोत्पत्तिसंभवसूत्र	२३१



འཕགས་པ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་...		आर्यतथागतज्ञान-	
ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱའི་དྲིང་ངེ་འཛིན།	८	मुद्रासमाधि	१६६
འཕགས་པ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་...			
གསང་བའི་མདོ།	१२७	आर्यतथागतगुह्यसूत्र	२३१
འཕཇ་པ་བདེན་པ་གཉིས་བསྟན་པ།	८०	आर्यसत्यद्वयनिर्देश	१८६
འཕགས་པ་བདེན་པ་གཉིས་ནམ་...			
བར་འབྱུང་པ།	१७	आर्यसत्यद्वयविभाग	१७७
འཕགས་པ་སྤོང་བོ་བཞེད་པའི་མདོ།	११	आर्यगण्डव्यूहसूत्र	१७०
འཕཇ་རྩི་མ་མེད་བར་གྲགས་པས་...			
བསྟན་པ།	१८	आर्यविमलकीर्तिनिर्देश	१७१
འཕགས་པ་ནམ་མཁའ་མཛོད།	१००	आर्यगगनगञ्ज	२१८
འཕགས་པ་དབལ་མཛོག་དང་བོ།	१०७	आर्यश्रीपरमाद्य	२१६
འཕགས་པ་དབལ་སྟོན་གྱིས་ཞུས་པ།	११	आर्यवीरदत्तपरिपृच्छा	१७०
འཕགས་པ་སྐྱུང་ལྷམ་ཡོངས་སུ་...			
དག་པའི་མདོ།	११२	आर्यगोचरपरिशुद्धिसूत्र	२१६
འཕགས་པ་སྒྲོ་གྲིས་མེ་ཟད་པའི་མདོ།	३	आर्याक्षयमतिनिर्देश	१६५
འཕགས་པ་མ་སྟེས་དགའི་འབྱོར་...		आर्याजातशत्रु-	
པ་བསལ་པ།	८४	कौकृत्यविनोदन	२०७
འཕཇ་པ་གཙུག་ན་རིན་པོ་ཆེའི་མདོ།	१०३	आर्यरत्नचूडसूत्र	२१५
འཕགས་པ་བཟང་བོ་སྐྱོད་པ།	४०	आर्यभद्रचर्या	१६४

འཕགས་པ་ཡོངས་སུ་བྱ་ངན་ལས་...

འདས་པ་ཆེན་པོ་འི་མདོ།

༤༩

आर्यमहापरिनिर्वाणसूत्र २०६

འཕགས་པ་ལྟར་གཤེགས་པའི་མདོ།

༥༡

आर्यलङ्कावतारसूत्र ७६-

འཕགས་པ་སངས་ལྷན་བཟོ་བ།

༥༢

आर्यबुद्धसङ्गीति १७७

འཕགས་པ་སྟེང་མེད་གྱི་བྱས་བྱེད་ཀྱིས་བ།

༥༣

आर्यनारायणपरिपृच्छा २०७

འཕགས་པ་ཤེས་རབ་གྱི་པ་རྩེ་ལ་

དུ་ཕྱིན་བ།

༥༤

आर्यप्रज्ञापारमिता १६२

བ་

བ་སྒྲུང་གི་ལྷོ་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་།

༥༥

गोमयमण्डल २४१

བག་ཆགས་དང་བཅས་པའི་ཉེས་པ།

༥༦

सवासनादोष २२१

བག་མེད་པ།

༥༧

प्रमाद २०७

བག་ལ་ཉལ།

༥༨

अनुशय १६८

བར་ས་ཆོད་པ་ལས།

༥༩

अव्यवधाने १७८

བྱ་བ་སང་བོ་ཡོངས་སུ་སྒྲུངས་པ།

༦༠

क्रियाबाहुल्यपरिहारः २०६

བྱང་ཆུབ་གྱི་ཕྱོགས་གྱི་ཆོས།

༦༡

बोधिपक्षधर्म १६७

བྱང་ཆུབ་གྱི་ཆོགས།

༦༢

बोधिसम्भार १७०

བྱང་ཆུབ་སེམས་དབང།

༦༣

बोधिसत्त्व १६५

བྱང་ཆུབ་སེམས་དབང་དབང་བའི་...

སེམས།

༦༤

चित्तशूरो बोधिसत्त्व २३६

བྱང་ཆུབ་སེམས་དབང་འི་སྡེ་སྟོན།

༦༥

बोधिसत्त्वपिटक २०५



सुखसंवा	१०	मैत्रेय	१७४
सुखसंवापक्षेपक्षे	७५	मैत्र्या वासयित्वा	२०२
सुखसंवापक्षेपक्षेपक्षे	७	मैत्रेयविमोक्ष	१६६
सुखसंवापक्षेपक्षेपक्षे	३७	लयौद्धत्य	१८२
सुखसंवापक्षेपक्षेपक्षे	१५	बालपृथग्जन	१७३
सुखसंवापक्षेपक्षेपक्षे			
सुखसंवापक्षेपक्षेपक्षे	५३	सर्वबालविपत्तिसमतिक्रान्त	१६६
सुखसंवापक्षेपक्षेपक्षे	१०२	बालबुद्धयो	२१५
सुखसंवापक्षेपक्षेपक्षे	४५	प्रतिध्वनि	१६२
सुखसंवापक्षेपक्षेपक्षे	४	भृत्यादयः	१६७
सुखसंवापक्षेपक्षेपक्षे	३३	रहितम् इत्यर्थः	१८०
सुखसंवापक्षेपक्षेपक्षे			
सुखसंवापक्षेपक्षेपक्षे	८	अनुत्तरसम्यक्सम्बोधि	१६८
सुखसंवापक्षेपक्षेपक्षे	३८	अवस्थापयति	१८३
सुखसंवापक्षेपक्षेपक्षे	३१	महामते	१७६
सुखसंवापक्षेपक्षेपक्षे	१४४	मृद्विन्द्रिय	२४०
सुखसंवापक्षेपक्षेपक्षे	१४४	तीक्ष्णेन्द्रियेण	२४०
सुखसंवापक्षेपक्षेपक्षे	५१	फेनपिण्डवत्	१६५
सुखसंवापक्षेपक्षेपक्षे	१७	स्वराङ्गविशुद्धि	१७३
सुखसंवापक्षेपक्षेपक्षे	८७	गेय	२०६

ॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡ	१	प्रवृत्तिर्भवति	१६५
ॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡ	५	विपर्यवसानसम्पदो	१६७
ॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡ	१८	अपर्यन्तबद्धाः	१७३
ॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡ	५४	दानपारमिता	१६७
ॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡ	४१	अशिविषयस्य गोत्र	१६०

म'

म'ॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡ	१३०	अविचाररमणीय	२३१
म'ॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡ	१०	अजित	१७४
म'ॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡ	१८	अकृतकभाव	१७८
म'ॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡ	१५	अशान्तानप्रशान्ता	१७३
म'ॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡ	८५	बहुश्रुतपर्येषणा	२०७
म'ॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡ	१४०	दीपङ्कुर	२३६
म'ॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡ	१०३	कातरपुरुष	२३५
म'ॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡ	७७	अप्रतिष्ठितध्यान	२१३
म'ॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡ	१४४	अनुत्पत्तिकधर्मक्षान्ति	२४०
म'ॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡ	१३०	अरति प्रशमयेत	२२८
म'ॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡ	१५	चतुर्वैशारद्य	१७३
म'ॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡ	१०	न हापयिष्यसि	१७०
म'ॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡ	७	न विजहाति	१६६
म'ॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡ	५	अप्रियसंयोग	१६७



མི་གནས་པའི་སྤྲུང་ན་ལས་འདས་པ།	११	अप्रतिष्ठितनिर्वाण	१७५
མི་སྤྲུང་གོ།	१७	मोहपुरुष	१७४
མི་དམིགས་པའི་དམ་པ།	२८	परमोऽनुपलम्भः	१८८
མི་ཚུལ་པ།	३७	अनाभोगः	१८३
མི་གཡོ་པ།	५८	अचल	१९८
མིག་དང་སྤྲུང་པ།	७८	चक्षुरालोक	१८८
མིག་བཟུངས་པ།	७४	निमीलिताक्ष	१८६
མིང་གོའ་གོ།	८०	व्यपदेशं लभते	१८४
སྤྲུང་གས་ཅན་ནམས།	१३	तीर्थिकानाम	१७६
སྤྲུང་ཁྱེད་ན་འདུག་པ།	७५	अन्धकूपावस्थित	१८७
མེ་ཡོང་ལ།	३१	दर्पणे	१४०
མོ་གཤམ་གྱི་སྤྲུ།	१८	वन्ध्यापुत्र	१७८
མོས་པའི་སྤྲོའས་ཀྱིས།	५१	अधिमुक्तिबलेन	१९५
མོས་པའི་དབང་གིས།	११७	अधिमुक्तिवशात्	२२०
མོས་པས་སྤྲོད་པའི་ས།	५२	अधिमुक्तिचर्याभूमि	१९५
དམིགས་པ་བརྩེད་པ།	३७	आलम्बनसंप्रमोषः	१८३
དམིགས་སྤྲུ་ཅུང་པའི་མཚན་ཉིད།	७३	उपलब्धिलक्षण	१८६
དམུས་ཡོང་།	७४	जात्यन्धा	१८६
མེད་ཀྱི་བྱུང་བ་ཚས་ཀྱི་སྤྲུ།	५७	अद्भूतधर्मवर्ग	२०१
མི་ལས་གྱི་གནས་སྤྲུགས།	७१	स्वप्नावस्था	१८५

सुवासः पदः पदः पदः पदः पदः	३७	स्त्यानमिद्धाभिभवाद्	१८२
सुवासः पदः पदः पदः पदः पदः			
पदः पदः पदः पदः पदः पदः	५०	हितसुखाध्याशय	१८४
सुवासः पदः पदः पदः पदः पदः	५१	मरीचिवत्	१८५
सुवासः पदः पदः पदः पदः पदः	१०	प्रणिधि	१८६
सुवासः पदः पदः पदः पदः पदः	११	प्रणिधित्त	१७०
सुवासः पदः पदः पदः पदः पदः	८१	प्रणिधान	१८५

क.

पदः पदः पदः पदः पदः पदः	७७	अरणिमन्थनाग्नि	२१३
कः पदः पदः पदः पदः पदः	८७	उत्खातमूला	१८७
कः पदः पदः पदः पदः पदः	३८	एकोतीकरोति	१८३
कः पदः पदः पदः पदः पदः	३	किमारम्भा	१८६
पदः पदः पदः पदः पदः पदः	५५	वीर्यपारमिता	१८७
कः पदः पदः पदः पदः पदः	३७	व्यायामः	१८३
कः पदः पदः पदः पदः पदः	३७	आभोगदोषः	१८३

क.

कः पदः पदः पदः पदः पदः	१८४	ब्रह्मपरिपृच्छा	२३६
कः पदः पदः पदः पदः पदः	५८	निमित्तकृतव्यवहार	१८८
कः पदः पदः पदः पदः पदः	१३	अप्रमाण	१७१
कः पदः पदः पदः पदः पदः	८७	गाथा	२०६



ཚུལ་ཁྲིམས་ཀྱི་པ་རྩལ་དུ་བྱིན་པ།	57	शीलपारमिता	१६७
ཚུལ་ཁྲིམས་ཀྱི་ལེན།	70	शीलपरिवर्त	२०४
ཚུལ་ཁྲིམས་དང་མ་བུལ་པ།	703	शीलानपगति	२१५
ཚུལ་ཁྲིམས་ནྟམ་པར་དག་པ།	70	शीलविशुद्धिः	२०६
ཚུལ་ཁྲིམས་ཐུན་སྲུང་ཆོགས་པ།	70	शीलसम्पत्	१८८
ཚུལ་བཞིན།	१०	योनिशः	१७७
ཚུལ་བཞིན་མ་ཡིན་པ་ཡིད་ལ་བྱེད་པ།	१०	अयोनिशोमनसिकार	१८६
ཚུལ་བཞིན་ལ་ཁྱུགས་པ།	१०	योनिशः प्रयुक्तः	१८६
ཚུལ་བཞིན་སེམས་པ།	75	योनिशोमनसिकार	२०७
ཆོགས་དོན་མེད་པ།	700	व्यर्थः श्रमः	२३७
ཆོགས་མེད་པར།	70	अकृच्छ्रेण	२०६
ཆོར་མ་ལ་སྒྲུགས་པ།	75	कण्टकादि	१८७
ཆོགས་བསགས་པ།	२	सम्भारोपार्जन	१६६
མཚན་དང་དཔེ་བྱ།	१7	लक्षणानुव्यञ्जन	१७५
མཚན་མའི་འཛིང་པ།	770	निमित्तबन्धन	२२३

ཇོ་

མཇོང་པ་མཐའ་ཡས་པ།	77	अपर्यन्तकृता	१७३
མཇོང་བཤེས་ཀྱི་ཕྱོགས།	77	मित्रपक्ष	१८६
རྩལ་ལྡན་ཀྱི་རྒྱུ་པ།	70	ऋद्धिपादं	१८४
རྩལ་ལྡན་ཀྱི་རྩོམས་ཀྱིས།	773	ऋद्धिबलेन	२२०

ཐུན་པ་ཉིད་ཡིན་པས།	३३	अलीकत्वे	१८०
བུཊུན་པ་འབྱུང་བ།	१३५	अलीकबीभ्रम	२२६
ཞི་			
ཞི་གནས།	३०	शमथ	१८१
ཞི་གནས་ཀྱི་ཚོགས།	३४	शमथसम्भार	१८१
ཞི་གནས་ཀྱིས་དམིགས་པ་ལ།	८७	शमथेनालम्बने	१८८
ཞི་གནས་དང་ལྷན་སྦྱོང་ཟུང་དུ་			
འབྲེལ་བ།	८८	शमथविषयनायुगनद्ध	१८८
ཞི་གནས་ཡོངས་སུ་འཚོལ་བར་			
བརྒྱུད་བ།	८९	शमथपरिगवेषणं	२०६
ཞི་བ་རྣམས་པར་བར་བ།	१५	शान्तविमोक्ष	१७३
ཞི་བར་གནས་པ་ལ།	१५	शान्तविहारिणो	१७२
ཞི་བར་བྱེད་དོ།	३८	शमयति	१८३
ཞིང་ཡོངས་སུ་དག་བ།	१०	क्षेत्रपरिशुद्धि	१७२
གཞན་གྱི་དྲིང་ལ་འཛིག་བ།	३१	परप्रत्ययतः	१७५
གཞན་གྱིས་ཡང་དག་བར་འཛིན་			
དུ་བཅུག་བ།	८	परसमादापन	१६८
གཞན་དག་གིས་བདུགས་པའི་			
ཕྱིར་དོ།	११५	परैरूपकल्पितत्वात्	२२६
གཞི་མེད་པར།	३०	आधारमन्तरेण	१८१





གཟུངས།	७३	धारणी	१६३
གཟུང་བ་དང་འཛིན་པ་ལས་དབན་བ།	८३	ग्राह्यग्राहकविविक्तम्	१८६
གཟུང་བ་དང་འཛིན་པའི་ནྟེ་བར།	३१	ग्राह्यग्राहकाकार	१७६
བཟང་བར་འདྲ་ཤེས་བ།	१०	शोभनसंज्ञाम्	१७४
བཟོད་པའི་པ་རྩ་དུ་ཕྱིན་བ།	७७	क्षान्तिपारमिता	१६७
२			
འོང་བ་དང་འགྲོ་བ་དང་བྲལ་བ།	१३०	आगतिगतिरहिताः	२२५
འོད་ཀྱི་དཀྱིལ་འཁོར་ཚད་མེད་བ།	११	प्रभामण्डलाप्रमाण	१७३
འོད་འཕྲོ་བ་ཅན།	७७	अचिष्मति	१६७
འོད་བྱེད་བ།	७७	प्रभाकरी	१६७
ཡ་			
ཡང་དག་པ་ཁོ་ནའི་དོན།	३३	भूतमर्थ	१७६
ཡང་དག་པ་ཐེ་མུ་བ་བཞིན་དུ་མགྲོང་བ།	१०	यथाभूतदर्शन	१६४
ཡང་དག་པ་ཉིད་ཀྱི་མཆོག་ལ་			
ཞུགས་པས།	८०	परमतत्त्वप्रवेशात्	१८६
ཡང་དག་པ་མ་ཡིན་པའི་གཞུགས་			
ལ་སོགས་པ།	१३१	वितथरूपस्य	२२७
ཡང་དག་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྤང་བ།	८०	सम्यग्ज्ञानावलोक	१८६
ཡང་དག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་	१५	सम्यक्प्रज्ञया	१६३



ཡན་ལག་བརྒྱ་གཅིག་ཡོངས་སུ་

རྒྱལ་ས་པ།

६०

एकादशाङ्गपरिपूरिता

१६६

ཡབ་སྲས་མཇལ་བ་ལས།

१७

पितापुत्रसमागमे

१७७

ཡིད་དུ་འོང་བའི་སྤྱོད་སྤྱོད།

१८

मनोऽनुकूलदेश

१८१

ཡིད་ལ་བྱེད་བ་ཁྲག་སྤྱོད་པ།

१९

जितमनस्कार

१८२

ཡིད་ལ་མི་བྱེད་པ།

२०

अमनसिकार

१८६

ཡིད་མི་བདེ་བ་དང་འཁྲུག་པ།

२१

द्वीर्मनस्यकोप

२०५

ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྒྲོ་བས་མ་གྲིས་མི་ཁྲུབ་པ།

१७

ज्ञानमुखाचिन्त्यतां

१७३

ཡེ་ཤེས་ཀྱི་པ་རོལ་དུ་བྱེད་པ།

२०

ज्ञानपारमिता

१६६

ཡེ་ཤེས་ཀྱི་མིག་བྱེད་པ།

१०३

विस्फारितज्ञानचक्षुः

२३५

ཡེ་ཤེས་ཉེ་བར་སྒྲུབ་པ།

१६

ज्ञानोपसंहारं

१७२

ཡེ་ཤེས་ནམ་པར་དག་པ།

२७

विशुद्धज्ञान

१८८

ཡེ་ཤེས་མངོན་པར་སྒྲུབ་པ།

१७

ज्ञानाभिनिर्हार

१७३

ཡོངས་སུ་སྒྲུབ་པ།

११

परिनिष्पादन

१७५

ཡོངས་སུ་རྟོག་པ་སྤྱོད་དུ་གཏོང་བ་ཉིད།

१२

पर्यवेक्षणपूर्वगामिता

२१३

ཡོངས་སུ་དབྱེད་པ།

२०

पर्यवेक्षण

२०६

ཡོངས་སུ་སྒྲུབ་བ་བྱས་པའི་བྱེད་པ།

१३

परिशुद्धिविशेषण

२३७

བྱུག་ཤིས།

१००

परिपाचनार्थ

१६६

ཡོངས་སུ་སྒྲིན་པར་བྱ་བའི་བྱེད་པ།

३

परिपाचनार्थ

१६६

ཡོངས་སུ་བཅའ་བའི་བྱེད་པ།

१६

पर्येषणाय

१७३

ཡོན་དན་ས་ལུས་པའི་གཞི།	१५३	अशेषगुणाधारा	२४३
གཡན་སྟོ་བ།	१७	उपहत	१७३
གཡོག་འཁོར་མང་བོ།	१८	बहुपरिवार	१७२

२.

རང་གི་སྒྲིག་པ་བཤགས་ནས།	१२३	स्वपापं प्रदेश्य	२२४
རང་གི་མཚན་ཉིད་ཀྱིས་སྟོང་པ་ཉིད།	१५	स्वलक्षणशून्यता	१७७
རང་བཞིན་དང་། བཅས་པའི་ཁ་ན་			
མ་སྟོ་བ།	५८	प्रकृति-प्रतिक्षेपावद्य	२०७
རང་བཞིན་མེད་ལ།	३०	निःस्वभावेषु	१७६
རང་མངས་གྲས།	४४	प्रत्येकबुद्ध	१६२
རབ་ཀྱི་མཚོག།	५३	अधिमात्रतर	१६६
རབ་དུ་དགའ་བ།	५८	प्रमुदिता	१६६
རབ་དུ་རྟོགས་པ།	१	मुप्रतिविद्धः	१६५
རབ་དུ་རྣམ་པར་འབྱེད་པ།	७०	प्रविवेचन	२०६
རབ་དུ་ཞི་བ་བདེ་བའི་ནོར་གྱི་དབྱལ་བ།	५	प्रशममुखधनदरिद्रा	१६७
རབ་དུ་ཤེས་པ།	४१	प्रजानाति	१६०
རབ་བྱུང་།	५४	प्रव्रजित	२०७
རབ་འབྱོར།	४५	सुभूते	१६२
རབ་རིབ་ཀྱི་སྒྲོན།	८७	तिमिरदोष	१८७
རི་བོང་གི་རྩ་ལ་སོགས་པ།	४४	शशविषाणादि	१६२



सैमसः वः दः सुदः मीसा।	३८	युक्त्यागमाभ्यां	१७६
सैमसः वः दः सुदः दः सुदः वः।	१४०	युक्त्यागमोपेतं	२४२
सैमसः वः दः सुदः मीकः दुः मः वः।	१८७	बहुतरं युक्त्यागम	२३६
सैदः दुः मः वः।	५८	दुरङ्गमा	१६८

ल

लमः सवैलः दुः मकैसः वः।	१	करतल्लगता	१६५
लमः वः मीः सवसः मीः दुः मः वः।	११०	उत्थानोपायकाले	२१८
लमः लमः वः।	३३	उन्मार्ग	१७५
लमः दः मीः मीः मीः वः वसमसः वः।	५	क्लेशकर्माण्युपचिन्वन्तः	१६७
लमः दः वः वः।	१	आदिकर्मिक	१६५
लमः वः मीः मीः मीः।	५०	साधुमती	१६६
लमः वः मीः मीः मीः।	१५	साधु साधु	१७२
सुदः मीः मीः।	३३	आगमार्थम्	१७६
सुदः दुः वः सुदः वः।	८०	व्याकरण	२०६
सुदः दः मीः मीः लमः सुः सुदः वः।	३०	कायचित्तकर्मण्यताम्	१८३
लमः लमः।	३०	कौसीद्यम्	१८३
लमः सुदः सुदः मीः वः।	१५	महाभोग	१७२

म

मः सुदः मीः सु।	३	शारद्वतीपुत्र	१६५
मः मीः मीः सुदः वः।	१८८	काण्ठद्वयनिवर्ष	२३७

ཤིན་དུ་དངས་པ་མེད་པ།	༡༠	अत्यन्ताभावा	१८६
ཤིན་དུ་ཆ་སྒྲ་བ།	༧༧	सूक्ष्मतर	१८७
ཤིན་དུ་ཐུལ་བ།	༡༠	अत्यन्तं विनीता	१८८
ཤིན་དུ་སྤྱོད་པ།	༡༠	अत्यन्तशून्य	१८९
ཤིན་དུ་བྱ་དགའ་ཞིང་རྒྱུན་མི་ཆད་པ།	༧༧	अतिदुष्कराविच्छिन्न	२०१
ཤིན་དུ་བྱ་དགའ་ཞིང་ལྷན་རིང་བ།	༩	अतिदुष्करदीर्घकालिक	१६६
ཤིན་དུ་སྤྱང་དགའ་བ།	༩༧	सुदुर्जय	१९८
ཤིན་དུ་སྤྱངས་པ།	༩༠	प्रश्रब्धिः	२०६
ཤིན་དུ་མ་སྤྱོད་པ།	༡༠	अत्यन्ताजात	१८९
ཤིན་དུ་མི་ཟད་པའི་བགྲེས་པ་དང་			
སྒྲོམ་པ།	༧	दुःसहतीव्रभुत्तर्ष	१६७
ཤིན་དུ་མཚན་མ་མེད་པ།	༡༧	अत्यन्तनिर्निमित्त	१८९
ཤིན་དུ་ཤས་ཆེ་བ།	༩༣	अतिरिक्ततरा	१९७
ཤེས་པའི་སྤྱང་བ།	༧༧	ज्ञानालोक	१८५
ཤེས་བྱའི་སྤྱིབ་པ།	༧༩	ज्ञेयावरण	१८९
ཤེས་བཞིན།	༩༩	सम्प्रजन्य	१८३
ཤེས་རབ་ཀྱི་མ་རྩལ་དུ་བྱེད་པ།	༩	प्रज्ञापारमिता	१६९
ཤེས་རབ་ཀྱི་མིག་གིས་བདག་ས་དེ།	༧༧	प्रज्ञाचक्षुषा निरूपयतः	१८६
ཤེས་རབ་ཀྱི་མཚན་གྱིས།	༧༧	प्रज्ञाशस्त्रेण	१८७
ཤེས་རབ་ཀྱིས་ཡོངས་སུ་བློན་པ།	༩༩	प्रज्ञापरिगृहीता	१७६



प्रेषः सवः सङ्गः श्रीः ससमः सङ्गः वा। ७७	प्रज्ञोत्तरध्यायी	२१३
प्रेषः सवः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः। १७	प्रज्ञासहित उपाय	१७१
प्रेषः सवः सङ्गः सङ्गः। ३०	दुष्प्रज्ञः	१७४
सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः। १३३	कृतमूत्रपुरीषः	२२४

सः

सः सङ्गः सङ्गः सङ्गः। १४	दशभूमिसूत्र	१७२
सः सङ्गः सङ्गः सङ्गः। ३०	शालिस्तम्ब	१७६
सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः। ४४	बुद्ध	१६२
सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः		
सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः। १०	सर्वबुद्धधर्मपरिपूरण	१६६
सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः। १७	बुद्धधर्मसमृद्धिः	१७३
सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः। १४८	सर्वबुद्धकार्याणी	२४२
सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः। १०	बुद्धभूमि	१६६
सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः। १४७	बुद्धत्वपुर	२४०
सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः		
सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः। १०	बुद्धबोधिसत्त्व	१६६
सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः		
सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः। ४७	सर्वबुद्धबोधिसत्त्वैः	१६४
सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः। १०	जाग्रदपि	१६६
सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः। १४	भूमिप्रविष्ट	१७२

सोमसः अमुगसः वा	५	आक्षिप्तचित्ता	१६७
सोमसः उक्त्वाः ऋक् षोडशः वरः वा	१७	सत्त्वार्थसंप्रापणं	१७३
सोमसः उक्त्वाः ऋक् वः वा मी...			
सुगसः वा	१४०	सत्त्वार्थक्रियावैमुख्यं	२३८
सोमसः उक्त्वाः षोडशः उक्त्वाः ऋक् षोडशः वरः...			
अर्कः वा	१२५	सर्वसत्त्वोपजीवया	२३१
सोमसः उक्त्वाः षोडशः उक्त्वाः वाः सुक्त्वाः मीः वा	१०	सर्वसत्त्वसाधारणानि	१६६
सोमसः उक्त्वाः अर्कः सुक्त्वाः मीः वा	१८	सत्त्वपरिपाक	१७२
सोमसः अर्कः वा	३८	चित्तस्थापयति	१८३
सोमसः वा	३०	चेतना	१८३
सोमसः उक्त्वाः	४३	चित्तमात्रं	१६१
सोमसः उक्त्वाः वाः अर्कः वरः वा	८३	चित्तमात्रमतिक्रमेत	१८६
सोमसः उक्त्वाः ऋक् उक्त्वाः वा	३७	चित्तैकाग्रता	१८३
सोमसः वाः अर्कः मीः अर्कः वा	५	अस्वाच्छचेतसः	१६७
सोः सोः सुक्त्वाः वीः मीः वा	१०	पृथग्जनानाम्	१६६
सोः सोः अर्कः वरः वीः वा	५८	प्रतिसंविद्	१६६
सोः सोः अर्कः सुक्त्वाः वीः वा	४४	पृथग्जन	१८२
सोः सोः वरः वरः सुक्त्वाः	३७	प्रत्यवेक्षणायम्	१७७
सोः सोः वरः वरः वरः सुक्त्वाः	१४३	प्रतिवेशयामि	२३६
सोः वरः वरः वरः सुक्त्वाः	३१	संभवोऽनुगन्तव्यः	१७५



སྒྲིབ་གསུམ།	१७	त्रिभवं	१६३
སྒྲོག་གི་དབང་བོ།	१	जीवितेन्द्रिय	१६५
སྒྲོབ་དཔོན་ཁྱུ་ཁྱུ་བ་ཀྱི་ཉ་སྒྲ་ནས།	११८	आचार्यनागार्जुनपादै	२४१
གསལ་བར་ངེས་བར་གཞུང་ཞིང་།	१२०	स्फुटतरम् अवधारयन्	२२८
གསལ་ཤིང་ལ་བསྐྱོན་པ།	१	शूलार्पण	१६७
གསེར་དག་པ་བཞིན་དུ།	११७	कनकशुद्धिवत्	२४०
གསེར་བཅོམ་བཞིན།	१२३	उत्तप्तकनकावद्	२२५
བསམ་གདན་གྱི་པ་རེ་ལ་དུ་བྱིན་པ།	७७	ध्यानपारमिता	१६८
བསམ་གས་བའི་བདག་ཉིད།	३०	संचयात्मक	१७६
བསམས་པ་ལས་བྱུང་བའི་ཤེས་རབ།	३३	चिन्तमय्याप्रज्ञा	१७६
བསོད་ནམས་ཀྱི་རྗེས་སྤྱི་ཡི་རང་བ།	३१	पुण्यानुमोदनां	१८१
བསོད་ནམས་བརྒྱ་ལས་ངེས་བར་			
སྐྱེས་པ།	१२१	शतपुण्यनिर्जाताः	२३२
བསོད་ནམས་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཚོར།	१७	पुण्यज्ञानसम्भार	१६२
བསྐྱབ་པ་གསུམ།	१७	शिक्षात्रयं	१६४

དྲ

དྲ་ཅང་ཡང་མི་འདྲུས་པ།	१२३	नातिनिमीलिते	२२५
ཉ་སྒྲིན།	११	देवदत्त	१२६
ཉྒྲ་མཐོང་།	१७	विपश्यता	१६३
ཉྒྲ་མཐོང་གི་གོགས།	८७	विपश्यनाविघ्नः	२०७

झुमःमघेःमिःकैमः।	८६	विषयनासम्भार	२०७
झुमःमदिःकुपःमिःमः।	१०	अधिशीलम्	१६४
झुमःमदिःमेःमः।	१०	अधिप्रज्ञम्	१६४
झुमःमदिःमेःमः।	१०	अधिचित्तम्	१६४
झुमःमिः।	८७	उद्रक	१८५
झुमःमिःमिःमदिःममःमिःकैमः।	११४	अनाभोगनानोपाय	२२१

मङ्गलम्





# पञ्चम परिशिष्ट

उद्धृत ग्रन्थों की सूची

(सुन्दरदेव-देव-प्रसाद-श्री-मन्त्र-सूत्र-संस्कृत-ग्रन्थ।)

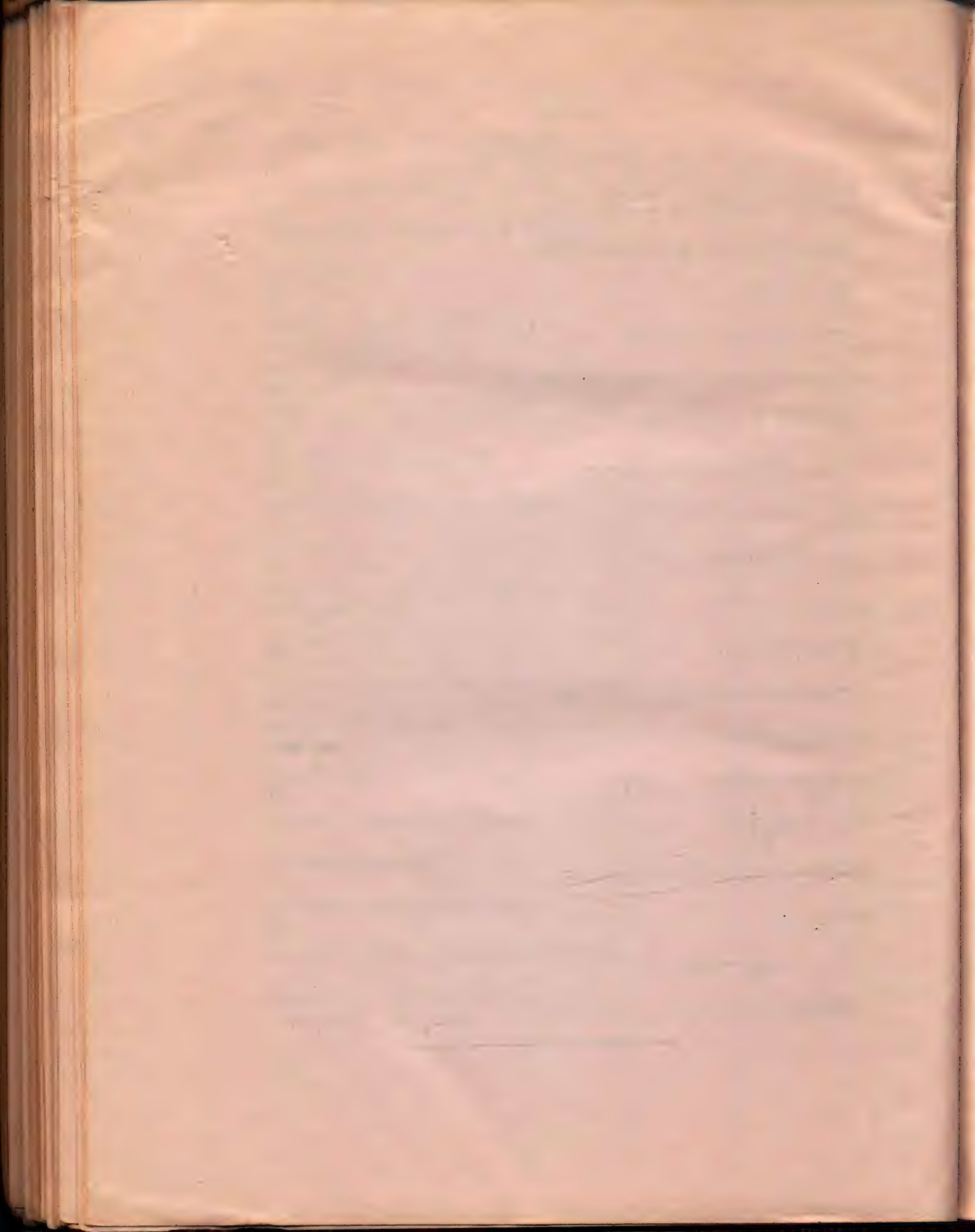
‘सर्ग’	पृष्ठा-संख्या
सुन्दर-देव-प्रसाद	३६
सुन्दर-देव-प्रसाद-सूत्र	११०
सुन्दर-देव-प्रसाद-सूत्र-संस्कृत-ग्रन्थ	७४, १३३
सुन्दर-देव-प्रसाद-सूत्र-संस्कृत-ग्रन्थ	१४३,
सुन्दर-देव-प्रसाद-सूत्र-संस्कृत-ग्रन्थ	४८, ६०, ८०, ८८, १३८, १७७
सुन्दर-देव-प्रसाद-सूत्र-संस्कृत-ग्रन्थ	८३, ८६, १०४, १०८, १४०, १४८,
सुन्दर-देव-प्रसाद-सूत्र-संस्कृत-ग्रन्थ	३, १३, १७, १०६, १३७
सुन्दर-देव-प्रसाद-सूत्र-संस्कृत-ग्रन्थ	७
सुन्दर-देव-प्रसाद-सूत्र-संस्कृत-ग्रन्थ	८०, ८६, ८८, १०८, ११४, १४०
सुन्दर-देव-प्रसाद-सूत्र-संस्कृत-ग्रन्थ	८, १०८
सुन्दर-देव-प्रसाद-सूत्र-संस्कृत-ग्रन्थ	१०७, १४७
सुन्दर-देव-प्रसाद-सूत्र-संस्कृत-ग्रन्थ	१, ३१, ३७, ४७, ६०, ७४, १११
सुन्दर-देव-प्रसाद-सूत्र-संस्कृत-ग्रन्थ	१७३
सुन्दर-देव-प्रसाद-सूत्र-संस्कृत-ग्रन्थ	४३



འཕགས་པ་ཉི་པར་འཁོར་གྱིས་ལྷས་པ།	147
འཕགས་པ་དྲིང་ངེ་འཛིན་གྱི་པ་འི་མདོ།	13, 23, 23, 47, 67, 702
འཕགས་པ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ལ་དད་པ་བསྐྱེད་པའི་མདོ།	43
འཕགས་པ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་སྦྱེ་བ་	
འབྱུང་བའི་མདོ།	135
འཕགས་པ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་	
ཕྱག་རྒྱའི་དྲིང་ངེ་འཛིན་གྱི་མདོ།	4
འཕགས་པ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་གསང་བའི་མདོ།	135, 136, 140
འཕགས་པ་དད་པའི་སྟོབས་བསྐྱེད་པ།	3, 14,
འཕགས་པ་བདེན་པ་གཉིས་བསྟན་པ།	100, 144
འཕགས་པ་བདེན་པ་གཉིས་ནས་པར་འབྱེད་པ།	25
འཕགས་པ་རྩི་མ་མེད་པར་གྲགས་པས་བསྟན་པ།	10, 107, 127, 147
འཕགས་པ་སྟོང་པོ་བཞུགས་པའི་མདོ།	12, 10
འཕགས་པ་ནས་མཁའ་མཛོད།	100, 147, 148
འཕགས་པ་དཔལ་མཛོག་དང་བོ།	105
འཕགས་པ་དཔལ་སྦྱིན་གྱིས་ལྷས་པ།	11
འཕགས་པ་སྦྱོར་ཕྱུ་ཡོངས་སུ་དག་པའི་མདོ།	113
འཕགས་པ་སྟོ་སྟོས་མི་ཟད་པའི་མདོ།	3, 4, 54, 110

འཕགས་བ་ས་སྐྱེས་དགའི་འགྱོད་བ་བསལ་བ།	༥༥
འཕགས་བ་གཙུག་ན་རིན་པོ་ཆེས་ཁྱས་བ།	༡༠༩
འཕགས་བ་ཡོངས་སྤྱ་ལྷ་ལས་འདས་བ་	
ཆེན་པོ་འི་མདོ།	༤༩
འཕགས་བ་ལྟར་ག་ཤེགས་བ།	༩༡, ༩༩, ༡༠༩, ༡༡༩, ༡༢༠
འཕགས་བ་ཤེས་རབ་ཀྱི་པ་ལོ་ལྟ་བུ་ཕྱིན་བ།	༡༩
འཕགས་བ་སངས་རྒྱས་བསྐྱོ་བ།	༩༠
འཕགས་བ་སྤྱད་མེད་ཀྱི་བྱས་ཁྱས་བ།	༤༧
བྱང་ཆུབ་སེམས་པ་འི་སྤྱོད་སྤྱོད།	༤༧
བྱམས་བ་འི་ནམ་བུ་ཐར་བ།	༩
ཆོངས་བས་ཁྱས་བ།	༡༠༥, ༡༡༩, ༡༢༥
ཁྲི་བ་སྐྱོན་མེད་མདོ།	༤༠
ཡབ་སྐུས་མཇལ་བའི་མདོ།	༩༧
ས་བུ་བ་འི་མདོ།	༡༥, ༡༠༩
ས་ལྷ་ལྷུང་བའི་མདོ།	༩༠
‘རྒྱུད།’	
ནམ་བུ་སྤྱང་མཇེད་མཛོན་བར་ཆོགས་བར་	
བྱང་ཆུབ་བ།	༩༩
‘བསྐྱན་བཅོས།’	
མདོ་ཀྱན་ལས་བདུས་བ།	༡༠༠, ༡༡༩, ༡༢༥, ༡༣༤





**षष्ठ परिशिष्ट**  
**उद्धृत ग्रन्थों की सूची**  
**( संस्कृत पाठ )**

सूत्रग्रन्थ-	पृष्ठ संख्या
अविकल्पप्रवेशधारणी	187,230
आर्यगगनगञ्ज	128,218,238,239
आर्यगण्डव्यूह	170,199
आर्यगयाशीर्ष	166,171,216,232
आर्यगोचरपरिशुद्धिसूत्र	219
आर्यतथागतगुह्यसूत्र	231, 233, 242
आर्यतथागतज्ञानमुद्रासमाधि	169
आर्यतथागतोत्पत्तिसंभवसूत्र	231
आर्यदशधर्मसूत्र	168,217
आर्यधर्मसंगोतिसूत्र	165,175,176,193,194,202,219,243
आर्यनारायणपरिपृच्छा	207
आर्यप्रज्ञापारमिता	177,192
आर्यबुद्धसङ्गीति	177
आर्यमञ्जुश्रीविकुर्वितसूत्र	235
आर्यमहापरिनिर्वाणसूत्र	206
आर्यमहायानश्रद्धाभावनासूत्र	205
आर्यरत्नकूट	205,212,216,218,237,242
आर्यरत्नचूड	215
आर्यरत्नमेघ	193,194,208,213,227,235
आर्यराजाववादकसूत्र	169
आर्यलङ्कावतार	179,180,185,190,226,235
आर्यलोकोत्तरपरिवर्त	191
आर्यविमलकीर्तिनिर्देश	171,175,217,232,238
आर्यवीरदत्तपरिपृच्छा	170
आर्यश्रद्धाबलाधान	166,172



आर्यश्रीपरमाद्य	216
आर्यसत्यद्वयनिर्देश	189, 192
आर्यसत्यद्वयविभाग	177
आर्यसन्धिनिर्मोचन	204, 207, 209, 211, 218, 221, 238
आर्यसमाधिराज	171, 176, 181, 205, 209, 235
आर्यसर्वधर्मवैपुल्य	174, 215, 241
आर्याजातशत्रुकौकृत्यविनोदन	207
आर्याक्षयमतिनिर्देश	165, 168, 195, 218,
आर्योपालिपरिपृच्छा	238, 240
चन्द्रप्रदीपसूत्र	206
त्रिस्कन्धपरिणामना	239
दशभूमिसूत्र	172, 237
पितापुत्रसमागम	177
प्रत्युत्पन्नबुद्धसंमुखावस्थितसमाधि	225
बोधिसत्त्वपिटक	205
ब्रह्मपरिपृच्छा	236, 239, 240
मारदमनपरिच्छेद	218
मैत्रेयविमोक्ष	169
शालिस्तम्ब	179
हस्तिकक्षय	177
तन्त्रग्रन्थ-	
वैरोचनाभिसम्बोधि	175
शास्त्रग्रन्थ-	
सूत्रसमुच्चय	235, 238, 240, 241

शुद्धि-पत्र

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

(संस्कृत-वर्णमाला)

वर्णः।	वर्णः।	वर्णः-संख्या।	वर्णः-संख्या।
अ०	अ०	2	4
इ०	इ०	36	5
उ०	उ०	39	13
ए०	ए०	42	7
ऐ०	ऐ०	71	1
ओ०	ओ०	82	9
क०	क०	84	8
ख०	ख०	119	13
ग०	ग०	119	18
घ०	घ०	120	16
(संस्कृत-वर्णमाला)			
अ०	अ०	6	3
सत्त्वसय	सत्त्व	8	21
उ०)	उ०	9	18
काणां	काणां	10	20
नमो	नमो	15	17
२७	२००	16	15



ནོར།	བཅོས།	ཤོག་གྲངས།	ཡིག་ཐེང་།
གསལ་	གསལ་)	17	20
ཚུལ་	“ཚུལ་	24	14
ཡུལ་	ཡུལ་	25	16
བའི་རོ།	བའི་ཕྱིར་རོ།	32	3
རྩ་འབྲུལ་	རྩ་འབྲུལ་	40	2
ཀྱི་	ཀྱི་	53	11
ལྷོ་	ལྷོ་	60	22
བའོ།	བའོ།”	62	8
མེས་ས་བས་	མེས་ས་དབས་	75	6
ངན་ནམ་བ་	ངན་བ་ནམ་བ་	77	13
ལྷ་	ལྷ་	83	20
མི་འབྲུལ་	མི་འབྲུལ་	85	10
ནམ་བ་	ནམ་བ་	95	13
མར་	མར་	146	6
བྱང་	བྱང་	146	14
སྐ་ལེ་—	སྐ་ལེ་—	148	13
ཕྱ་དཔེར་	ཕྱ་དཔེར་	149	18
ཕྱ་དཔེར་	ཕྱ་དཔེ་	150	18
གསལ་	གསལ་	152	16

## शुद्धि-पत्र

अशुद्धपाठ	शुद्धपाठ	पृष्ठ	पंक्ति
आदि	आदौ	175	20,26
०त्तात्	०तात्	189	23
०भवात्	०भावात्	191	25
मित	०मितं	193	4
प्रत्येव०	प्रत्येव०	193	17
विरो०	निरो०	193	19
ज्ञानलो०	ज्ञानालो०	196	7
०णर्थम्	०णार्थम्	201	21
दुख	दुःख	203	2
पर्यावे०	पर्यावे०	203	9
ते	स	209	10
धर्मः	धर्माः	209	11
विविच्यते	विवेचयति	209	13
व्यसे०	व्यासे०	210	13
०लम्बेन	०लम्बने	210	14
परमार्थः	परमार्थतः	211	23
०करो	०कारो	211	23
चित्तं	चित्तम्	214	12
०प्रज्ञान	०प्रज्ञान	215	16
०भाव	०भव	217	4
०पर्याप्त	०पर्यस्त	217	11
०क्रमः	०क्रमो	221	20
०भेदेन	०भेदेन	223	3
०यानं	मानं	227	10
धर्मा०	धर्म०	230	18
अस्मृतिर्मन०	अस्मृतिरमन०	234	19
०पादयते	०पाद्यते	236	15
परंदौःशी०	परमदौःशी०	238	9



## अशुद्धपाठ

निवेशां  
औ  
करनों  
तथा  
चञ्चल  
उद्रेक  
मार्ग  
होत  
ने करके  
०सत्त्वों  
प्रसङ्ग  
नहाने  
अस्मरण  
होजा०  
तथा गत०  
०प्रायार्वावि०  
विधिः  
बोधिसत्त्वेभ्यः

## शुद्धपाठ

निवेशो  
और  
करनी  
तथा-  
चञ्चल  
उद्रेक  
मार्ग  
होता  
करने के  
सत्त्वों  
प्रसङ्ग  
न होने  
स्मरण  
होजा०  
तथागत०  
०प्रायावि०  
विधिः  
बोधिसत्त्वेभ्यः

## पृष्ठ

238  
250  
250  
250  
257  
260  
269  
269  
271  
296  
304  
305  
305  
307  
310  
323  
327  
366

## पंक्ति

17  
22  
23  
30  
16  
20  
12  
29  
8  
22  
23  
18  
19  
16  
11  
2  
4  
18

—: • :—



# केन्द्रीय उच्च तिब्बती-शिक्षा-संस्थान के प्रकाशन

1986

## I भोट-भारतीय ग्रन्थमाला

- |                                                                                                                                                 |                                |
|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------|
| 1. तिब्बती पाठमाला ( Tibetan Reader )                                                                                                           | Rs. 15.00 HB<br>Rs. 10.00 PB   |
| 2. अभिसमयालङ्कारवृत्तिः स्फुटार्था ( संस्कृत तथा तिब्बती एक साथ )                                                                               | Rs. 85.00 HB<br>Rs. 75.00 PB   |
| 3. वज्रच्छेदिका प्रज्ञापारमितासूत्र ( संस्कृत, हिन्दी तथा तिब्बती एक साथ ) आचार्य-असंगकृत त्रिशतिका कारिका सप्तति ( संस्कृत तथा हिन्दी एक साथ ) | Rs. 60.00 HB<br>Rs. 45.00 PB   |
| 4. चौरासी सिद्धों का वृत्तान्त ( हिन्दी तथा तिब्बती एक साथ )                                                                                    | Rs. 150.00 HB<br>Rs. 130.00 PB |
| 5. विमलकीर्तिनिर्देशसूत्र ( संस्कृत, हिन्दी तथा तिब्बती एक साथ )                                                                                | Rs. 200.00 HB                  |
| 6. न्यायप्रवेशसूत्रम् हरिभद्रसूरिकृतवृत्तिसहितम् ( तिब्बती तथा संस्कृत एक साथ )                                                                 | Rs. 140.00 HB<br>Rs. 100.00 PB |
| 7. बोधिपथप्रदीप ( तिब्बती, संस्कृत, हिन्दी तथा अंग्रेजी एक साथ )                                                                                | Rs. 70.00 HB<br>Rs. 50.00 PB   |
| 8. शून्यतासप्ततिः स्वोपज्ञवृत्त्या समन्विता ( संस्कृत, हिन्दी तथा तिब्बती एक साथ )                                                              | Rs. 90.00 HB<br>Rs. 65.00 PB   |
| 9. भावनाक्रम ( तिब्बती, संस्कृत तथा हिन्दी एक साथ )                                                                                             | Rs. ———HB<br>Rs. ———PB         |



**II दलाई लामा भोट-भारती ग्रंथमाला**

- |                                                                                            |                              |
|--------------------------------------------------------------------------------------------|------------------------------|
| 1. The Social Philosophy of Buddhism<br>( English )                                        | Rs. 2.00 PB                  |
| 2. बौद्ध समाज दर्शन ( हिन्दी )                                                             | Rs. 1.00 PB                  |
| 3. प्रतीत्यसमुत्पादस्तुतिमुभाषितहृदयम्<br>( तिब्बती, संस्कृत, हिन्दी तथा अंग्रेजी एक साथ ) | Rs. 60.00 HB<br>Rs. 45.00 PB |
| 4. धम्मपद<br>( पालि, संस्कृत, तिब्बती, हिन्दी तथा अंग्रेजी एक साथ )                        | Rs. 75.00 HB<br>Rs. 55.00 PB |
| 5. बौद्धविज्ञानवाद : चिन्तन एवं योगदान                                                     | Rs. 45.00 HB<br>Rs. 35.00 PB |
| 6. विंशति, भोट उपसर्ग प्रक्रिया<br>( मूल कारिका तिब्बती में तथा स्वभाष्य हिन्दी में )      | Rs. 55.00 HB<br>Rs. 45.00 PB |
| 7. gTam-rGyud-gSer-Gyi-Thaṅ-Ma of<br>dGe-hDun Chos-hPhel ( in Tibetan )                    | Rs. 26.00 HB<br>Rs. 20.00 PB |

**III सम्यग्-वाक्**

- |                                                                        |                              |
|------------------------------------------------------------------------|------------------------------|
| 1. प्रतीत्यसमुत्पाद ( निबन्ध-संग्रह )                                  | Rs. 80.00 HB<br>Rs. 65.00 PB |
| 2. Mādhyamika Dialectic & Philosophy of<br>Nāgārjuna ( निबन्ध-संग्रह ) | Rs. 60.00 HB<br>Rs. 45.50 PB |

**IV Prof. Lal Mani Joshi : Commemorial Series**

- |                       |             |
|-----------------------|-------------|
| 1. Naiḥśreyasa Dharma | Rs. 5.00 PB |
|-----------------------|-------------|

**V दुर्लभ बौद्ध ग्रंथ शोध योजना**

- |                                           |              |
|-------------------------------------------|--------------|
| 1. धी: 1. दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध पत्रिका | Rs. 65.00 PB |
|-------------------------------------------|--------------|



